योरप-यात्रा में छः मास

(सचित्र)

लेखक

रामनारायण मिश्र, बी० ए०

और

गौरीशंकरप्रसाद बी० ए०, एल्-एल्० बी०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९३२

प्रथम बार] [मूल्य

समर्पण

आर्य-संस्कृति और सभ्यता के रक्षक श्रीमान्
पंडित मदनमोहन मालवीयजी के
कर-कमलों में सादर
समर्पित

प्रस्तावना

योरप के देशों की यात्रा में कुछ भी कठिनाई नहीं है। हर एक स्थान में ठहरने, भोजन करने आदि की इतनी सुगमता है कि जिसका अनुमान अनुभव द्वारा ही हो सकता है। पर इन देशों से केवल सैर करके स्वदेश लौटने पर साधारणत: कुछ अधिक लाभ नहीं होता। यों तो नए नए स्थानों को देखने से ज्ञान का क्षितिज बढ़ता ही है, परंतु दिन-प्रति-दिन होटलों में ठहरने से योरप की सामाजिक और धार्मिक शक्ति का और वहाँ की नर-नारियों के हृदय का ठीक ठीक पता नहीं लग सकता।

एक भारतीय यात्री यदि यह समझकर योरप जाय कि हम केवल अँगरेजी भाषा के द्वारा सब देशों को अच्छी तरह देख लेंगे तो उसको कुछ कष्ट होगा। योरप में इँगलैंड के बाहर अँगरेजी बोलनेवाले कम मिलते हैं। जितना इँगलैंड को अपनी मातृ-भाषा से प्रेम है उतना ही हम लोगों ने इटली, फ्रांस, जर्मनी, डेनमार्क-वालों में भी पाया। हाँ, यदि आप खूब रुपया खर्च कीजिए, बड़े बड़े होटलों में ठहरने का प्रबंध पहले ही से टामस कुक, 'अमेरिकन एक्सप्रेस' अथवा अन्य व्यापारियों द्वारा कर लीजिए, तो बेशक स्टेशन से उतरते ही अँगरेजी बोलनेवाला एक आदमी आपको निश्चित स्थान में ठहरा देगा और नगर-प्रदक्षिणा करा देगा। इस प्रकार योरप के बाहरी जीवन का ज्ञान अवश्य हो जायगा।

हमारी सम्मति में भारतवासियों को योरप मंडली बनाकर ऐसे समय जाना चाहिए जब वहाँ के किसी नगर में किसी ऐसे विषय पर महासभा हो जिससे मंडली के सब लोगों को अनुराग हो। चार-पाँच इंजीनियर या डाक्टर या शिक्षक या वैज्ञानिक

या समाज-शास्त्रवेत्ता आपस में मिलकर जायँ और वहाँ की सड़कों या इमारतों, अस्पतालों या स्वास्थ्य-शालाओं, स्कूलों या कालेजों आदि का निरीक्षण करें और अपने विचारों को लेख-बद्ध करते चलें तो सचमुच देश की सेवा हो। इन्हीं बातों में तो हमें योरप से बहुत कुछ सीखना है।

गरमी के दिनों में योरप के अनेक नगरों में महासभाएँ अथवा प्रदर्शिनियाँ हुआ करती हैं। यह अंतर्राष्ट्रीयता का युग है। सभाओं और प्रदर्शिनियों में सब राष्ट्रों के लोग आते हैं। बहुत से नगरों में तो बड़े बड़े भवन बन गए हैं, जहाँ प्रायः सदा एक न एक प्रदर्शिनी होती ही रहती है। ऐसे भवन हम लोगों ने जिनीवा, बर्लिन और ड्रेस्डेन में देखे। जब हम लोग बर्लिन में थे तब दो प्रदर्शिनियाँ हो रही थीं। एक में रेडियोसंबंधी जितने आविष्कार उस समय तक हुए थे दिखलाए जा रहे थे और दूसरी विज्ञापनों की प्रदर्शिनी थी। हम लोगों को दो अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा-महासभाओं में भी जाने का सुअवसर मिला। उनके ही लिये हम वहाँ गए थे। एक का अधिवेशन जिनीवा में हुआ था और दूसरी का एलसिनोर (डेनमार्क) में। इन महासभाओं में अनेक देवियों और सज्जनों से हम लोगों की जान-पहचान हो गई। इससे हमारा बड़ा उपकार हुआ। महासभाओं के बाद इन परिचित मित्रों ने देशाटन में जितनी सहायता दी, उससे हमारे ज्ञान की बहुत वृद्धि हुई।

अमेरिका, जापान और अन्य देशों से इस प्रकार की मंडलियाँ संसारभ्रमण के लिये निकला करती हैं। दो-एक से हम लोगों की भी भेंट हुई थी।

इस यात्रा के लिये सबसे अच्छा समय है मार्च से नवंबर तक हम लोग २ मई १९२९ को बनारस से चले, १५ मई को

(खड़े; बाएँ से) श्री प्यारेलाल, श्री गोकुलचंद कपूर, श्री चंद्रभाल, श्री श्रीनाथसाह । (कुर्सी पर, बाएँ से) श्री गौरीशंकरप्रसाद, श्री श्रीराम वाजपेयी, श्री रामनारायण मिश्र ।

कोलंबो में जहाज पर बैठे, और २८ अक्तूबर १९२६ को बंबई और ३१ अक्तूबर को बनारस लौटे। मंडली में ७ सज्जन थे जिनमें से पं० श्रीराम वाजपेयी पहले भी योरप घूम आए थे। उन्होंने बहुत से स्थानों के स्काउट लोगों को पहले से सूचना दे दी थी जिनकी सहायता हम कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करते हैं। वाजपेयीजी का साथ बर्लिन से छूट गया क्योंकि वे ८ सितंबर को रूस चले गए। श्री चंद्रभालजी और श्रीनाथ साहजी पहले ही भारत लौट आए, इसलिए २६ जुलाई को उन्हेंाने हमें जिनीवा में छोड़ दिया। श्री गोकुलचंदजी कपूर ने हवाई जहाज चलाने की विद्या सीखना शुरू किया, इसलिये हमारा उनका साथ १० जुलाई तक रहा जब हमने लंदन छोड़ा। श्री प्यारेलाल रस्तोगी का साथ ३१ अक्तूबर अर्थात् काशी पहुँचने तक रहा। जिस जहाज से हम गए थे उसी जहाज से श्री शिवप्रसादजी गुप्त और उनकी धर्मपत्नीजी ने तथा श्री अन्नपूर्णानंद जी, कलकत्ते के श्री दामोदरदास खंडेलवालजी, प्रो० विनयकुमार सरकार (अपनी योरोपियन धर्मपत्नी सहित), और श्री बलवीरसिंहजी ने भी यात्रा की थी। इस कारण उन लोगों से भी मिलने-जुलने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा।

यदि इस पुस्तक के द्वारा विदेश जानेवाले यात्रियों या अन्य सज्जनों की कुछ भी सेवा हो सकेगी तो हम लोग अपने को धन्य मानेंगे। विचार है कि योरपीय शिक्षा पर एक दूसरी पुस्तक लिखी जाय।

हमें इस बात का अत्यंत दु:ख है कि इस पुस्तक के प्रकाशित होने में इतनी देर हुई।

रामनारायण मिश्र
गौरीशंकरप्रसाद

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ

चित्र-सूची

विषय | पृष्ठ

विषय		पृष्ठ

विषय		पृष्ठ

विषय			पृष्ठ

विषय			पृष्ठ

विषय			पृष्ठ

विषय | पृष्ठ

विषय			पृष्ठ

जिनेवा और एलसिनोर के शिक्षा-सम्मेलन*

(१)

प्रस्थान

काशी-हिंदू-विश्वविद्यालय के सेंट्रल हिंदू-स्कूल-बोर्ड तथा शिक्षा-समितियों के अखिल भारतीय संघ की ओर से प्रतिनिधि बनकर मुझे जिनेवा (स्विजरलेंड) और एलसिनोर (डेन्मार्क) के शिक्षा-संबंधी सम्मेलनों में उपस्थित होने का सुअवसर मिला था। जिनेवा में २५ जुलाई से ३ अगस्त (सन् १९२९ ई०) तक शिक्षा-समितियों के विश्व-संघ की बैठकें होती रहीं और एलसिनोर में ८ अगस्त से २१ अगस्त तक नवीन शिक्षा-समिति के सम्मेलन की बैठकें हुई। अन्यान्य प्रतिनिधियों के अतिरिक्त अखिल भारतीय संघ ने सुप्रसिद्ध स्काउट-कमिश्नर पं० श्रीराम वाजपेयी और काशी की आर्य्य-विद्या-सभा के मंत्री बाबू गौरीशंकरप्रसादजी को भी प्रतिनिधि बनाकर इन सम्मेलनों में भेजा था। हम लोगों की यात्रा साथ-साथ हुई। इसी समय श्री प्यारेलालजी रस्तोगी (जज) भी हम लोगों में आ मिले। ये सम्मेलन में एक सदस्य के नाते उपस्थित हुए थे। १५ मई को हम लोगों ने स्वदेश छोड़ा था। कोलंबो से चलकर हम लोग २९ मई को नेपिल्स पहुँचे। हम लोगों के मन में आया कि अच्छा हो यदि इँगलैंड की शिक्षा-संबंधी संस्थाओं का निरीक्षण करके, उनकी स्थिति का सम्यक् अध्ययन कर लेने के बाद, हम लोग इन सम्मेलनों की बैठकों में भाग लें। इसी उद्देश्य से हम लोग पहिले इँगलैंड गए।

---

* यह दिसंबर १९२९ के "एज्यूकेशन" पत्रिका में छपे हुए अँगरेजी लेख का अनुवाद है जिसको पं० जनार्दनप्रसाद झा बी० ए० ने किया था और जिसका बहुत सा भाग काशी विद्यापीठ पत्रिका में छपा था।

लंदन में

भारत के हाईकमिश्नर के शिक्षा-संबंधी परामर्शदाता डॉक्टर टी० ए० केल के नाम श्री ए० एच० मैकेंजी, एम० ए०, सी० आई० ई०, ने कृपा कर मुझे एक परिचय-पत्र दे दिया था। उसे दिखाते ही केल साहब ने मेरे लिये प्रसिद्ध प्रसिद्ध विद्यालयों के देखने का प्रबंध कर दिया। इसके लिये मैं मैकेंजी साहब और केल साहब का बहुत ही ऋणी हूँ। उनके कृपापूर्ण प्रोत्साहन ने मेरी बड़ी मदद की। साथ ही आगरे के रेवरेंड डी० पी० हिल तथा बनारस के रेवरेंड जे० सी० जैक्सन और रेवरेंड डब्ल्यू० मैचिन का भी मैं बहुत ही कृतज्ञ हूँ, जिनके दिए हुए परिचय-पत्रों से मैंने इँगलैंड में बहुत ही लाभ उठाया। कहने की आवश्यकता नहीं कि ये परिचय-पत्र मेरे लिये बहुत ही मूल्यवान् सिद्ध हुए। इँगलैंड तथा अन्यान्य योरोपीय देशों में जहाँ लोगों का कार्य्य-काल बहुत ही नियम-बद्ध और निर्धारित होता है, जहाँ लोग अपनी कार्य्य-पद्धति में विशृंखला के लिये स्थान नहीं रखते, इन पत्रों के सहारे बहुत ही शीघ्र परिचय प्राप्त हो जाता है। यदि हो सके तो परिचय-पत्र अपने पहुँचने के पहले ही भेज देना चाहिए जिससे मिलने-जुलने की बातें पहले ही पक्की हो जायँ। पं० श्रीराम वाजपेयी की कृपा से मैंने कुछ बालचर लोगों की भी काररवाईयाँ देखीं और साथ ही कतिपय पाठशालाओं का भी परिदर्शन किया। इस तरह मैं डलिच, ईटन, रगबी और मालबर्न की सार्वजनिक पाठशालाएँ; बालक और बालिकाओं के कुछ कॉउंटी-कौंसिल-स्कूल, कुछ ऐसी शिक्षा-संस्थाएँ जिनमें बालक-बालिकाओं को एक ही साथ शिक्षा दी जाती है, एक ट्रेनिंग कॉलेज, एक अपराधी बच्चों की पाठशाला, ऑक्सफ़ोर्ड और केंब्रिज के विश्वविद्यालय, केंब्रिज पर्स-हाई-स्कूल, प्रेपरेटरी-

स्कूल और लीज-स्कूल को देख सका। इनमें से कुछ संस्थाओं को तो मैंने अकेले देखा और बाकी संस्थाओं को अपने मित्रों के साथ। इन संस्थाओं को देखने में बा० गौरीशंकरप्रसाद ने मेरा अधिक साथ दिया। लंदन के ईस्ट एंड में भी हम लोग गए थे। वहाँ भी हमने शिक्षा-संबंधी बहुत से कार्य्य देखे। हमारे आनंद की सीमा न रही—जब हमने माल्बर्न में ग्रीव्स साहब को, आक्सफोर्ड में सर वर्नी लॉवेट को और लंदन में लेनउड साहब को देखा। इन सभों के साथ हमारा काशी का पुराना परिचय था। ग्रीव्स साहब हिंदी के यशस्वी विद्वान् हैं। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के साथ आपका बहुत ही प्यारा संबंध है। लॉवेट साहब की स्मृति काशी के हरिश्चंद्र हाईस्कूल के साथ मिली हुई है। लेनउड साहब एक उदार पादरी हैं। इनकी सहानुभूति का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। इन लोगों ने हमारी उद्देश्य-पूर्त्ति में जितनी सहायता पहुँचाई, हमारा जितना आदर-सत्कार किया, हमारे आातेथ्य में जिस स्नेह और सौहार्द का परिचय दिया, उसके लिये ये हमारे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं। जिन जिन संस्थाओं में हम गए वहाँ के अधिकारियों ने हमारे निरीक्षण को सुखद और सफल बनाने में पूरी मदद की। मैंने वहाँ जो कुछ देखा और सीखा उस पर कई निबंध तैयार किए जा सकते हैं; किंतु यहाँ मुझे उन सम्मेलनों की ओर अधिक ध्यान देना है जिन्होंने हमें योरप में विशेष रूप से आकर्षित किया था। फिर भी मैं यहाँ इतना अवश्य कह देना चाहता हूँ कि इँगलैंड में जो लोग शिक्षा के समुन्नायक हैं उनके कर्त्तव्य-ज्ञान और उनकी दायित्व-भावना से मैं बहुत ही प्रभावान्वित हुआ। प्रत्येक पाठशाला में हमने देखा—अध्ययन और उल्लास तथा समुन्नति और सौजन्य का एक अपूर्व वातावरण फैला हुआ था। पैरिस

में हम ११ से २१ जुलाई तक रहे; परन्तु वहाँ के स्कूल उस समय बन्द थे। हम मुक्तिफौज की दो संस्थाएँ—एक स्त्रियों संबंधी और दूसरी मर्दों संबंधी—देख सके।

जिनेवा में

हम लोग २२ जुलाई को, सायंकाल, जिनेवा पहुँचे। वहाँ अपने चौदह देश-बंधुओं से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय भी मिलीं। सब लोगों को एकत्र करने के उद्देश्य से भारतीय प्रतिनिधियों की एक सभा की गई। अध्यापक कर्वे सभाध्यक्ष चुने गए और पं० श्रीराम वाजपेयी मंत्री। २८ और ३१ जुलाई को अन्यान्य प्राच्य देशों के प्रतिनिधि भी आमंत्रित किए गए। सर्वसम्मति से यह निश्चित हुआ कि शिक्षा-समितियों के

स्वास्थ्य-सदस्य महासभा (जिनेवा)

अखिल एशिया-संघ का आगामी अधिवेशन १९३० में काशी में हो। जापान के काउंट हयाशी ने इस प्रस्ताव में बड़ी दिलचस्पी दिखाई।

महासभा में भारतीय प्रतिनिधि

जिनेवा अंतर्राष्ट्रीयता की भूमि है। झीलों और पहाड़ियों ने इसे अत्यंत मनोरम और आकर्षक बना रखा है। इसलिये यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि इस सम्मेलन में इतने स्त्री-पुरुष आ जुटे थे कि उनकी ठीक ठीक गणना भी नहीं की जा सकी। अनुमान किया जाता है कि संसार के विभिन्न देशों से आए हुए प्रतिनिधियों की संख्या दो हजार से कम न थी; किंतु, स्वास्थ्य-शिक्षण-विभाग के अध्यक्ष डॉ० टर्नर के शब्दों में, वहाँ अमरीका-वालों का तो 'अविराम आक्रमण' था। महिलाओं की उपस्थिति, सभाओं की गरिमा और सुषमा को और भी बढ़ाए देती थी। मेरा विश्वास है कि स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक थी और सम्मेलन के विचार-कार्यों में उन्होंने जो बौद्धिक सहयोग पहुँचाया, वह बहुत ही ऊँचे दर्जे का था। हमारे सौभाग्य से श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय वहाँ उपस्थित थीं और उन्होंने भारत का नाम ऊँचा किया।

सम्मेलन १९ विभागों में बँटा हुआ था और मुख्यत: इन्हीं के द्वारा सम्मेलन की समस्त काररवाई होती थी। उन विभागों के नाम ये हैं—(१) घर और पाठशाला, (२) स्वास्थ्य-शिक्षण, (३) व्यावहारिक शिक्षा, (४) शिक्षक-समितियाँ, (५) अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव, (६) पाठशालाओं में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, (७) शिक्षकों की तैयारी, (८) बच्चों का सदाचार, (९) ग्राम्य जीवन और ग्रामीण शिक्षा, (१०) प्राक् पाठी शिशु (प्रि-स्कूल-चाइल्ड), (११) शिक्षा-द्वारा समाज-संस्कार, (१२) शिक्षा और समाचार-पत्र, (१३) पुस्तकालय का अंतर्राष्ट्रीय अंग, (१४) पाठशाला से उद्यम की ओर, (१५) प्रारंभिक शिक्षा, (१६) सेकेंडरी एडूकेशन, (१७) कॉलेज और विश्वविद्यालय, (१८) प्रौढ़ शिक्षा और (१९) निरक्षरता।

स्वास्थ्य-परिषद् के सदस्य
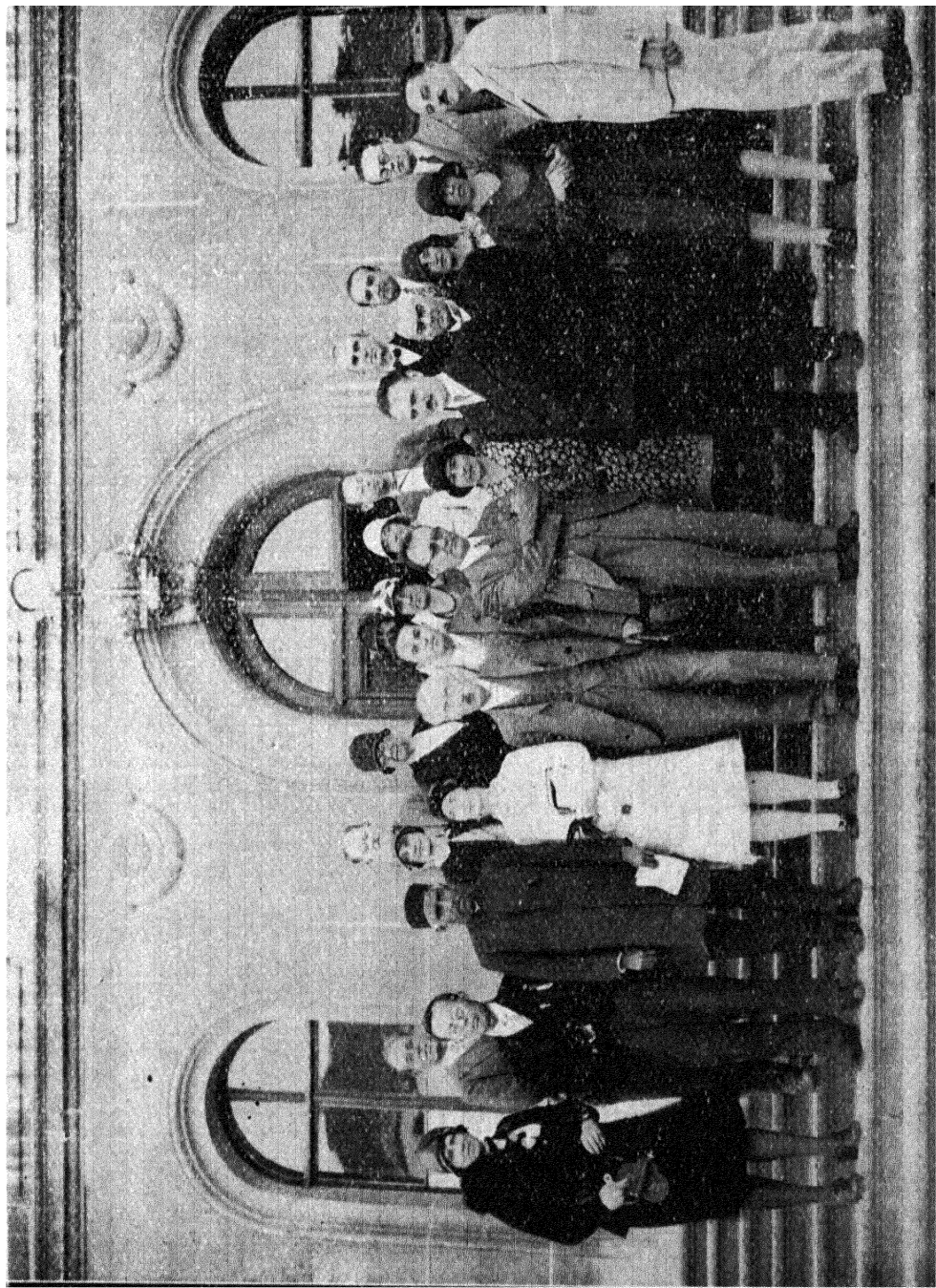
इनके अतिरिक्त, 'हरमन-जॅर्डन' नामक पाँच और सभाएँ थीं जिनके नाम ये थे—(१) शांति के लिये शिक्षा, (२) देश-भक्ति और इतिहास की शिक्षा, (३) अंतर्राष्ट्रीय खेल-कूद, (४) सैनिक शिक्षा और कटिबद्धता, (५) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का सर्वसाधारण साधन। इन समस्त सभाओं और विभागों में स्त्रियों का बड़ा ही सबल प्रतिनिधित्व था और कभी कभी तो मैंने यह देखा कि पति-पत्नी एक दूसरे को सभा-कार्य्य में सहायता पहुँचा रहे थे। 'स्वास्थ्य-शिक्षण'-विभाग तथा 'गृह और पाठशाला'-विभाग की एक संयुक्त सभा में मुझे स्कॉटलैंड के सर लेजली और श्रीमती मैकेंजी से भेंट करने का दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त हुआ था। श्रीमती मैकेंजी ने उस सभा में एक बहुत ही प्रभावोत्पादक तथा ज्ञानवर्द्धक निबंध पढ़ सुनाया और सर लेजली ने बहुत ही सुंदर विचार-पूर्ण भाषण दिया। एक जर्मन अध्यापक सदैव अपनी ही भाषा में वक्तृता देते थे और उनकी सहधर्मिणी उन वक्तृताओं का अँगरेजी अनुवाद कर दिया करती थीं। सभी सभाओं में जर्मन, अँगरेजी या फ्रेंच बोली जाती थी—केवल प्रो० बूवे ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने जर्मन, अँगरेजी, फ्रेंच और एसपरेंटो, इन चारों भाषाओं में अपना स्वागत-संभाषण किया था। मुझे ऐसे अनेक व्यक्ति मिले जो तीन भाषाएँ बोल लेते या कम से कम उन्हें समझ लेते थे। अन्यान्य भाषाओं की अपेक्षा फ्रेंच का अधिक प्रचार है। मेरे जो देशवासी योरप में वाणिज्य या शिक्षा-संबंधी परिभ्रमण करने जायँ, उन्हें मैं सलाह दूँगा कि वे यहाँ से प्रस्थान करने के पहले फ्रेंच और हो सके तो जर्मन भाषा का काम-चलाऊ ज्ञान अवश्य प्राप्त कर लें। एस्परेंटो किसी देश-विशेष की भाषा नहीं है, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए विद्वानों ने इस भाषा को गढ़ा है।

इन विभागों की सूची देखकर हम लोगों ने निश्चय किया कि कम से कम दो सभाओं में अवश्य भाग लिया जाय। बा० गौरीशंकरप्रसाद ने 'निरक्षरता' और 'प्राथमिक शिक्षा'-विभाग की सभाओं में जाने का निश्चय किया और पं० श्रीराम वाजपेयी ने 'गृह और पाठशाला' तथा 'स्वास्थ्य-शिक्षा'-विभागों को चुना। वहाँ इन दोनों सज्जनों ने बड़ा ही अच्छा काम किया। मैंने समझा कि स्वास्थ्य-शिक्षा-विभाग में शारीरिक शिक्षण-पद्धति पर विचार किया जायगा, इसी लिये मैं इसकी पहली बैठक में सम्मिलित हुआ। किंतु देखा गया कि सभा में उपस्थित किए जानेवाले विषयों की सीमा इतनी विस्तृत थी, उनका क्षेत्र इतना व्यापक था, कि सभाध्यक्ष महोदय को निर्धारित बैठकों के अतिरिक्त और भी कितनी ही सभाएँ बुलानी पड़ीं। इसलिये मुझे और और विभागों की सभा में जाने का समय नहीं मिल सका। कार्य-विवरण-तालिका पर सभा का समय, स्थान, वक्ताओं के नाम, उपस्थित होनेवाले विषय, दो भाषाओं में छपवाकर पहले ही से प्रतिनिधियों में बाँट दिए गए थे। वक्ताओं में कुछ तो ऐसे थे जिन्हें सार्वभौम यश प्राप्त है। कहते हुए खेद होता है कि हमारे जिन भारतीय वक्ताओं के नाम पहले ही से घोषित कर दिए गए थे उनमें से कुछ तो सभा में गए ही नहीं और जो गए भी उन्होंने बड़ी उदासीनता के साथ वक्तृता दी। हाँ, अध्यापक कर्वे ने, जो सदैव महिला-विश्वविद्यालय के संबंध में ही भाषण देते हैं, अपने उमंग भरे शब्दों में अच्छी वक्तृता दी। जिन भारतीयों के नाम पहले ही से वक्ताओं की सूची में नहीं छपे थे उनमें से कुछ लोगों ने अवश्य श्रोताओं के ऊपर अच्छा प्रभाव डाला और उन्हें भारत की वास्तविक संस्कृति का मर्म समझने में बड़ी सहायता पहुँचाई। भविष्य में जो भारतीय

सज्जन इन सम्मेलनों में जाकर कुछ कहना चाहें उन्हें चाहिए कि वे पहले ही से इसकी सूचना सम्मेलन के अधिकारियों को दे दें और उन्हें स्पष्ट बता दें कि वे किस विभाग में जाकर अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति किया चाहते हैं। उन्हें अपने विषय पर अच्छी तरह तैयार होकर जाना चहिए। इन शिक्षा-सम्मेलनों में सार्वभौम प्रसिद्धिवाले वक्ता भी अपने लिखित भाषणों को पढ़ना बुरा नहीं समझते। सभाओं में खूब वाद-विवाद होता था। मुझे यह कहते हुए बहुत ही प्रसन्नता होती है कि जिन भारतीय प्रतिनिधियों ने वाद-विवाद में भाग लिया उनकी बातें बड़ी श्रद्धा, सहानुभूति और प्रशंसा के साथ सुनी गईं।

इन वक्तृताओं के अतिरिक्त, और भी कई सार्वजनिक भाषण हुए जो सर्वसाधारण की रुचि से संबंध रखते थे। अध्यापक गिलबर्ट मरे ने 'शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय अंग' पर, फ्रॉउ गर्ट्रूड बाउमर ने 'साधारण संस्कृति तथा व्यावसायिक शिक्षा के पारम्परिक संबंध' पर और डॉ० पाल मुनरो ने 'प्राच्य और पाश्चात्य शिक्षण-पद्धति और दोनों में एक दूसरे के लिये कौन कौन बातें सीखने योग्य हैं'— इस विषय पर वक्तृताएँ दी थीं।

'अपंग शिशु-शिक्षा की अंतर्राष्ट्रीय समिति' का भी एक अधिवेशन हुआ, जिसमें मैं २९ जुलाई को उपस्थित था।

३० जुलाई को डॉ० शिवराम का भाषण संगीत-भवन में हुआ। उपस्थिति अच्छी थी और सभापति के आसन पर डॉ० जिम्मर्न बैठे थे।

अब मैं सर्वसाधारण की रुचि से संबंध रखनेवाली बातों का थोड़ा सा वर्णन करूँगा। इनमें सबसे पहली चीज है—

(१) प्रदर्शिनी

इसमें लोगों को अपनी ओर खींचने का बहुत सामान था। अनेक संस्थाओं ने इसमें अपने यहाँ की चीज़ें भेजी थीं। देखते ही बनता था कि पश्चिम ने अपनी शिक्षा के क्षेत्र में कैसी अद्भुत उन्नति की है। यह संभव नहीं है कि मैंने जो जो वस्तुएँ वहाँ देखीं उनका संक्षिप्त विवरण भी यहाँ दे सकूँ। हाँ, इतना ही कह सकता हूँ कि सैकड़ों मानचित्र, तस्वीरें, छायाचित्र, खिलौने, चित्र-कारियाँ, नक्शे, किंडरगार्टन स्कूल तथा कमजोर बच्चों की पाठ-शालाओं में व्यवहृत होनेवाली सामग्रियाँ तथा और भी ऐसी ही बहुत सी आकर्षक और उपयोगी वस्तुएँ उस प्रदर्शिनी की शोभा बढ़ा रही थीं। उनमें बहुत सी ऐसी सामग्रियाँ थीं जो न केवल बौद्धिक शिक्षा को ही परिमार्जित करती हैं प्रत्युत जिनके सहारे कला की सूक्ष्म भावना और कल्पना के वैभव की भी प्रचुर वृद्धि होती है। मैं कह नहीं सकता, इन वस्तुओं को कभी भारत-महासागर पार करने का मौका मिला है या नहीं; पर इतना तो निश्चित है कि हमारे बड़े से बड़े अध्यापकों में भी ऐसे कितने ही हैं जिनके दृष्टि-पथ पर ये चीज़ें कभी न आई होंगी।

(२) आमोद-प्रमोद

समय समय पर मनोरंजन की व्यवस्था भी होती रही। 'जेक्स डालक्रोज़' नृत्य-कला सिखाने के लिये बहुत ही विख्यात हैं। उन्होंने २७ और २८ जुलाई को सदस्यों के सामने अपनी कला का प्रदर्शन किया। भारत में 'नृत्य' शब्द के साथ एक बहुत ही रूढ़ और अप्रिय भावना मिली हुई है। इस शब्द का उच्चारण करते समय हम अपनी सुरुचि और सहानुभूति की अभिव्यक्ति नहीं करते। किंतु

योरप में 'नृत्य' सचमुच अद्भुत है। इनमें से कुछ तो नियम-बद्ध व्यायाम की तरह हैं—ऐसे हैं जिनको करते समय हमारे देश के बालकों की भी हड्डी-पसली टूट जाय तो कोई आश्चर्य नहीं। किंतु वहाँ ऐसे व्यायामों में सुकुमार बालिकाएँ भी सम्मिलित होती हैं और वहाँ की प्रफुल्ल जातियाँ इन्हें 'नृत्य' के नाम से पुकारती हैं। भारत में हम इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि योरप के स्त्री-पुरुष कितना अधिक शारीरिक व्यायाम किया करते हैं। उदाहरण के लिये मैं जिनेवा-झील का दृश्य उपस्थित किए देता हूँ, जिसमें सैकड़ों स्त्री-पुरुषों को हमने तैरते हुए देखा। साथ ही लंदन की 'कॉउंटी-कॉउंसिल-हाईस्कूल' नामक एक बालिका-विद्यालय की भी बात बताए देता हूँ जहाँ की बालिकाओं के गठे हुए सुदृढ़ शरीर तथा उनके व्यायाम करने की स्वस्थ और सुंदर प्रणाली देखकर हम लोग गद्‌गद हो उठे।

१ अगस्त, स्विजरलैंड का राष्ट्रीय दिवस था। उस दिन सारे काम-काज बंद थे। सम्मेलन के अधिकारियों ने कृपा कर एक जल-विहार की व्यवस्था की। हम लोग ठीक साढ़े नौ बजे सबेरे नौका में जा बैठे। मॉनत्रो में दोपहर का भोजन किया। यह एक अत्यंत मनोरम स्थान है। 'शिलों' का गढ़ देखा और इसी तरह सारा दिवस आमोद-प्रमोद में बीत गया। लौटते समय विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने अपने अपने राष्ट्रीय गीत गाए। उधर नौका संगीत-लहरी पर थिरक रही थी और इधर जिनेवा की उल्लास-मयी नगरी रात्रि के अनुपम आलोक से जगमगा रही थी।

यह हमारा सौभाग्य था कि जिन जिन देशों में हम गए, सभी जगह हमें उनके राष्ट्रीय उल्लास का सुख प्राप्त हुआ। २ जून को हम लोग रोम में थे। रोमन-कैथलिक-संसार के लिये

वह एक खास दिन था। वहाँ हमने दिन में जुलूस देखा और रात्रि में दीपावली। सेंटपीटर का विशाल गिरजाघर मुख्यतः, और समस्त रोम साधारणतः उस दिन उल्लसित हो उठा था। सारा राष्ट्र उमंग-विह्वल हो रहा था।

६ और ७ जुलाई को इंगलैंड, सम्राट् के स्वास्थ्य-लाभ की खुशी में मस्त था—देश में आनंद की अनंत धाराएँ उमड़ रही थीं। हम लोग वहीं थे। ६ जुलाई को क्रिस्टल पैलेस में मुक्ति फौज के जन्मदाता बूथ महोदय की शताब्दि के उत्सव में हम गए और ७ अगस्त को सम्राट् का सार्वजनिक स्वागत हमने देखा—सहस्रों नर-नारी और बाल-बच्चों की भीड़ थी; किंतु उसमें अव्यवस्था, संघर्ष और हो-हल्ला का कहीं नाम नहीं था! उसी समय, जीवन में पहली बार, हमने यह अनुभव किया कि समस्त राष्ट्र के लिये एक स्वर, एक राग, एक लय में, मिलकर गाना बिलकुल असंभव नहीं है।

१४ जुलाई को हम पैरिस पहुँचे। वह फ्रांस का राष्ट्रीय दिवस था। वही आनंद, वही उल्लास, वही आलोक हमने वहाँ भी देखा, परंतु यहाँ नाच रंग की अधिकता थी।

कदाचित् मैं आवश्यकता से अधिक आत्मचरित की बातों में फँसता जा रहा हूँ। मुझे तो यहाँ केवल सम्मेलन के आमोद-प्रमोद की ही बातें लिखनी चाहिएँ। योरप के लोग बड़े हँसमुख हैं। काम करते समय वे कठोर परिश्रम से नहीं घबराते और जीवन का आनंद लूटते समय वे हृदय की समस्त आकांक्षाओं को संतुष्ट कर लेते हैं। अतएव, सम्मेलन में जहाँ एक ओर गंभीरता का अखंड साम्राज्य फैला रहता था, वहाँ दूसरी ओर उल्लास की चहल-पहल भी मची रहती थी। २४ जुलाई को हम लोग 'शामोनी' देखने गए। यहाँ 'मोंब्लां' पर्वत पर बरफ की नदी है। इसी तरह

एकाध और मनोरम स्थानों का दर्शन किया। कई भोजों में सम्मिलित हुए, संगीत सुने, तथा छोटी छोटी आमोद-बर्द्धिनी यात्राएँ कीं। हाँ, इतना और कह दूँ कि ट्रामगाड़ियों तथा स्टीमरों में सम्मेलन के प्रतिनिधियों के लिये खास रियायत का प्रबंध किया गया था।

(३) राष्ट्र-संघ तथा अंतर्राष्ट्रीय श्रम-संघ

सम्मेलन के अधिकारियों ने कृपा कर इसका प्रबंध कर दिया था कि प्रतिनिधि इन संस्थाओं में जाकर वहाँ का काम देख सकें। २ अगस्त को हम लोगों ने इन्हें देखा। कार्य्यालय के पदाधिकारियों में थोड़े से भारतीय सज्जन भी हैं। संघ का कार्य्य-काल उस समय प्रारंभ नहीं हुआ था, फिर भी हमने बहुत कुछ देखा। बच्चों के लिये वहाँ क्या काम किया गया है यह जानने को हम विशेष रूप से उत्सुक थे। सच पूछिए तो वही हमारी स्वाभाविक रुचि का केंद्र था। हमारी उत्सुकता विशेषकर उस वस्तु की ओर झुकी हुई थी जिसे लोग 'जिनेवा की घोषणा' या 'बच्चों की अधिकार-घोषणा' के नाम से पुकारते हैं। सन् १९२४ ई० में राष्ट्र-संघ ने इस 'घोषणा' को जन्म दिया था। इसमें मानव-जाति के हित और काम की बातें हैं इसलिये मैं इसका स्वरूप यहाँ दिखा देना चाहता हूँ। वह इस तरह का है—

(१) बच्चों को, उनके आध्यात्मिक तथा आधिभौतिक विकास के लिये, सारे साधन दिए जायँ।

(२) भूखे बच्चे को भोजन दिया जाय; रुग्ण बच्चे की सेवा की जाय; पिछड़े हुए बच्चे को आगे बढ़ने के लिये सहायता पहुँचाई जाय; अपराधी बच्चे सुधारे जायँ; अनाथ और परित्यक्त बच्चों को आश्रय मिले और उनकी पूरी सहायता की जाय।

(३) आपत्ति-काल में सबसे पहले बच्चों का बचाव किया जाय।

(४) बच्चे की स्थिति ऐसी बना दी जाय जिसमें रहकर वह अपनी जीविका उपार्जन कर सके और हर प्रकार के अपहरण से उसकी सदैव रक्षा की जाय।

(५) भरण-पोषण करते समय बच्चे को सदैव इस बात के लिये सचेत रखना चाहिए कि उसकी सारी योग्यता उसके बंधु-बांधवों की सेवा में खर्च की जायगी।

(४) सम्मेलन के स्वीकृत प्रस्ताव

ऐसी सभाएँ बहुत ही कम थीं जिनमें समस्त प्रतिनिधियों की उपस्थिति आवश्यक समझी जाय। पहले दिन, २५ जुलाई को, योंही एक जमावड़ा हुआ। कोई विशेष काम तो था नहीं, साधारण जलपान हुआ और लोग एक दूसरे से जान-पहचान कर सके। दूसरे दिन, २६ जुलाई को, जिनेवा के नागरिक एवं सांघिक अधिकारियों द्वारा समस्त प्रतिनिधियों का स्वागत किया गया। २९ और ३१ जुलाई को भिन्न-भिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने अपने अपने संदेश सुनाए। भारत की ओर से अध्यापक कर्वे बोले थे। इतने ही में प्रत्येक विभाग से प्रस्ताव और विवरण भी आ गए और उन पर सम्यक् रूप से विचार करने के लिये, दो अगस्त की रातवाली तथा ३ अगस्त की सबेरेवाली छोटी छोटी सभाएँ पर्याप्त ही नहीं, आवश्यकता से अधिक भी थीं। अपने यहाँ हम जिस दुष्ट तर्क, नोच-खसोट और हो-हल्ला के आदी हैं उनका उन सभाओं में कहीं पता ही न था।

(५) भारत और जिनेवा-सम्मेलन

इस अंतर्राष्ट्रीय संघ को चलाने के लिये इस समय १४ सदस्यों की एक संचालक सभा है। इन चौदह सदस्यों में से ५ हैं

इँगलैंड के, ३ हैं अमरीका के (सभापति और मंत्री भी इन्हीं लोगों में से हैं), २ भारत के, १ चीन के, १ जापान के, १ कनाडा के और १ जर्मनी के। श्री शेषाद्रि और श्री इनामदार भारतीय सदस्य हैं। यह परिताप की बात है कि श्री शेषाद्रि सभा की एक भी बैठक में उपस्थित न हो सके। यदि वे जा पाते तो भारतीय पक्ष का बड़ी योग्यता के साथ समर्थन करते। श्री इनामदार ने शायद सभी बैठकों में भाग लिया। उनके हृदय में भारत की भलाई का भाव है, इसमें संदेह नहीं; किंतु फिर भी वे केवल एक देशीराज्य के प्रतिनिधि हैं—चाहे वह देशीराज्य कितना ही उन्नतिशील क्यों न हो। हमारे देश-भाइयों के हृदय में रह रह कर यह भावना उमड़ रही थी कि उस सभा में एक और भारतीय सदस्य रखे जायँ। मैं समझता हूँ, श्री इनामदार ने किसी बैठक में इस भावना की अभिव्यक्ति भी की थी; पर परिणाम कुछ न निकला। वहाँ 'योरपीय प्रतिनिधि' के नाम से एक पदाधिकारी है। एशियावालों का यह कहना है कि 'एशियायी प्रतिनिधि' के लिये भी एक पद की सृष्टि की जाय। मेरा विश्वास है कि भारतीयों का ही नहीं बल्कि समस्त एशिया-वासियों का दावा बहुत ही मजबूत है; पर्याप्त तत्परता, शक्ति तथा उत्साह के साथ इसका समर्थन करना चाहिए।

अब रही अन्तर्राष्ट्रियता की बात। खेद है कि तत्संबंधी विचार अभी फैले नहीं हैं। यह पवित्र इच्छा अभी तक व्यावहारिक क्षेत्र से दूर है; इसे वह रूप नहीं दिया जा सकता है जिसके सहारे पूर्व और पश्चिम की पारस्परिक समता का बोध हो सके। प्राच्य विश्वविद्यालयों में पश्चिमीय संस्कृति के लिये जितनी गद्दियाँ (chairs) स्थापित हैं, पाश्चात्य-विश्वविद्यालयों में पूर्वीय संस्कृति के लिये उतनी नहीं हैं। इसके

अतिरिक्त, न तो अध्यापकों और पुस्तकों का पारस्परिक आदान-प्रदान है और न पूर्वीय और पश्चिमीय संस्कृति-संबंधी सम्मेलन ही होते हैं। हम लोगों ने जिन पाश्चात्य विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय देखे, उनमें भारतीय विषयों पर लिखे हुए ग्रंथ मुझे बहुत ही कम दिखाई पड़े। हाँ, दक्षिण जर्मनी में, संट बेनी डिक्टाइन के बाइरों मैानेस्ट्री में, हमें अलबत्ता चकित हो जाना पड़ा, जहाँ हमने 'सामवेद' की एक प्रति देखी। प्राचीन भारत से संबंध रखनेवाली कुछ और पुस्तकें भी देखीं। जब हम लोग २२ सितंबर को इस मठ में गए तो वहाँ हमारे ठहरने के लिये जो कमरा चुना गया था उसमें एक मेज पर ये पुस्तकें रखी हुई थीं। इसके बाद हम लोगों ने पुस्तकालय देखा और यह देख कर हम प्रसन्न हुए कि भारतीय धर्मों पर लिखी पुस्तकों का वहाँ अच्छा संग्रह है। ये पुस्तकें अधिकतर जर्मन भाषा में लिखी हुई हैं।

एलसिनोर में

५ अगस्त को हम लोगों ने डेन्मार्क के लिये प्रस्थान किया। भावनगर स्टेट के शिक्षा-संचालक श्री वी० एम० मेहता भी हमारे साथ थे। इन सम्मेलनों को देखने के लिये ये अपने राज्य से भेजे गए थे। प्राय: प्रत्येक अवसर पर ये धोती पहने हुए दिखाई पड़े, सिर पर पगड़ी तो वे बाँधे ही रहते थे। ६ अगस्त को हम लोग हैंबर्ग में उतर पड़े और ७ को 'एलसिनोर' (डेनमार्क) पहुँचे। हालसिंगबर्ग (स्वीडन) में, एक बड़े स्कूल के शयनागार में, हमारे ठहरने का प्रबंध किया गया था। सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये हमें प्रतिदिन यहाँ आना पड़ता था। दिन बीतता था डेनमार्क में, रात बीतती थी स्वीडन में! थोड़ी थोड़ी देर पर 'स्टीमर' दौड़ता रहता है, वही हमें इधर से उधर पहुँचा आया करता था। सदस्यों को 'पासपोर्ट' दिखाने की जरूरत नहीं पड़ती

थी। हम लोगों के सिवा, हमारे शयनागार में, इँगलैंड, फ्रांस, जर्मनी और अमेरिका आदि स्थानों के अध्यापकगण थे। भारतीय केवल हमीं लोग थे। योरप भर में अपने साथ बिस्तर ले जाने का रवाज नहीं है। हमें वहाँ भी बिस्तर मिले, किंतु ये बिस्तर थे पुआल से भरे हुए। बड़े सुख और चैन के साथ हम लोग वहाँ ठहरे। तीन भाषाओं में छपी हुई कार्य-विवरण-तालिका हमें दी गई। उसमें भिन्न भिन्न 'कोर्स' और 'ग्रूप' के विषय दिए हुए थे, जिनमें सम्मेलन का सारा कार्य्य ही केंद्रीभूत था। वे 'कोर्स' और 'ग्रूप' इस तरह थे—

'ग्रूप'—(१) वैयक्तिक मनोविज्ञान और उसके प्रकार, (२) बौद्धिक परीक्षा, (३) बच्चों का सुधार, (४) न्यू-स्कूल्स इन ऐक्शन, प्राइवेट, (५) न्यू-स्कूल्स इन ऐक्शन, स्टेट, (६) समुदाय-शिक्षण, इसकी समस्या और समुन्नति, (७) न्यू-स्कूल्स इन ऐक्शन; अबोध बच्चों की पाठशाला और किंडर-गार्टन, (८) न्यू-स्कूल्स इन ऐक्शन; प्रौढ़-पाठशाला, (९) संगीत और कला के सहारे क्रियात्मक अभि-व्यक्ति, (१०) नई शिक्षा; माँ-बाप और शिक्षक, (११) शिक्षकों की शिक्षा, (१२) नई शिक्षा का तत्त्व, (१३) अंतर्राष्ट्रीय धारणा की शिक्षा, (१४) बच्चे और धर्म, (१५) पाठशाला के पुनर्निर्माण से संबंध रखने-वाली सामाजिक अवस्थाएँ और (१६) काम-शास्त्र की सरल शिक्षा।

'कोर्स'—(१) पाठ-क्रम का पुनर्निर्माण, (२) मौंटेसरी-प्रणाली, (३) डेक्रोली-प्रणाली, (४) डाल्टन-प्रणाली, (५) विनेट्का टेकनीक, (६) उद्देश्य-पूर्ण कार्य्य के लिये शिक्षा, (७) व्यक्ति के विकास में अचेतन की महत्ता, (८) 'नृत्य' और (९) मिलकर गाना।

दसवाँ 'कोर्स'—बच्चों की कला, प्रो० चिजेक की अस्वस्थता के कारण, कार्य्य-क्रम से अलग कर दिया गया। किंतु हम लोगों

ने उक्त प्रोफेसर साहब की अद्भुत कला का परिदर्शन ३० सितंबर को 'वियेना' में किया।

किन किन बातों में यह सम्मेलन जिनेवा-सम्मेलन के साथ सादृश्य रखता था और किन किन बातों में विभिन्नता, यह नीचे लिखी पंक्तियों से अवगत हो जायगा।

(१) सम्मेलन के उद्देश्य और उसका क्षेत्र

न्यू-फेलोशिप-कांफ्रेंस में कोई प्रस्ताव नहीं हुआ। यह शिक्षण-नीति तथा उसके संचालन-कार्य्य पर अधिक ध्यान न देकर शिक्षा की बौद्धिक उपलब्धि पर ही विशेष जोर देता है। यहाँ सदस्य-शुल्क में २ पौं० २ शि० लिए गए; जिनेवा में केवल १० शि० लिए गए थे। 'कोर्स' के लिये शुल्क अलग लिया गया था। ये 'कोर्स' इतनी अच्छी तरह संगठित किए गए थे कि जो सदस्य, शिक्षा ही द्वारा अपनी जीविका चलाते हैं, उन्हें इनसे बड़ा लाभ हुआ। कल्पना कीजिए कि वह अवसर कितना अनमोल था जब डा० मौंटिसोरी और डा० डेक्रोली स्वयं अपनी अपनी प्रणाली की व्यावहारिक व्याख्या कर रहे थे, सो भी एकाध घंटे के लिये नहीं, पूरे सप्ताह भर—बल्कि उससे भी अधिक! कुमारी हेलेन पार्कहर्स्ट भी वहाँ उपस्थित थीं।

सम्मेलन की दूसरी विशेषता यह थी कि वहाँ मनोविज्ञान तथा और-और विषयों पर एक व्याख्यान-माला का प्रबंध किया गया था। उन वक्तृताओं के सारांश विभिन्न भाषाओं में छपवाकर बेंचे गए। एलसिनोर की परीक्षा-अनुसंधान-समिति की कार्य्यवाहियों के फल-स्वरूप वहाँ परीक्षा-संबंधी कुछ सिद्धांत स्थिर किए गए। मेरी राय में अखिल भारतीय शिक्षा-संघ को भी, भारतीय परिस्थिति को सामने रखकर, इस ओर ध्यान देना चाहिए।

एलसिनोर के आमोद-प्रमोद भी शिक्षा-संबंधी महत्त्वों से खाली नहीं थे। प्राय: प्रतिदिन छायाचित्रों द्वारा, अमेरिका, इँगलैंड, जर्मनी आदि स्थानों के पाठशाला-जीवन तथा वहाँ के कार्य्यों का प्रतिबिंब दिखलाया जाता था। कुमारी मारजोरी गुल्लन ने भी अपने सांध्य संगीतों से लोगों का मनोरंजन किया। उनके संगीत बहुत ही अच्छे थे।

डेन्मार्क और स्वीडन कृषि-प्रधान देश हैं। उनके प्राकृतिक दृश्यों तथा ग्रामीण जीवन में एक अनुपम आकर्षण है। सम्मेलन की ओर से कुछ शिक्षा-संबंधी सैर-सपाटों का प्रबंध किया गया। उसी में कतिपय पाठशालाओं के उद्यान-परिदर्शन की बात भी सम्मिलित थी। ११ अगस्त स्वीडन का राष्ट्रीय दिवस था। 'ओलिंपिक क्रीडा-स्थल' पर हमने उस दिन जो कुछ देखा, उसकी स्मृति कभी विलीन नहीं हो सकती। स्वीडन-वासियों की कसरतें और उनके नृत्य विलक्षण होते हैं। उनकी अद्भुत आयोजना, सादगी, सुषमा और उपयोगिता देखते ही बनती थी। शरीर-संचालन-क्रिया का ऐसा सुंदर और संगठित प्रदर्शन—जिसमें स्त्री, पुरुष और बच्चे विभिन्न रंगों की पोशाक पहनकर सम्मिलित हुए हों—मैंने जीवन भर में आज तक कभी नहीं देखा था। ग्यारह वर्ष से लेकर चौदह वर्ष के बच्चे ड्रिल कर रहे थे। बालक और बालिकाएँ अलग अलग थीं। सबके पाँव नंगे थे। उनके वस्त्रों के रंग और राष्ट्रीय झंडे के रंग में एक अपूर्व सामंजस्य था। जिस समय वे सब के सब राष्ट्रीय गीत गाते हुए झंडे को साष्टांग प्रणाम करने को झुक जाते थे, उस समय मालूम होता था मानों वह झंडा उन्हें चूमने के लिये स्वयं नीचे आ रहा है। ये दृश्य इतने उल्लासमय थे कि हमारा हृदय गद्गद हो उठा।

डेन्मार्क अपने प्रौढ़ कृषकों की पाठशालाओं (फोक-हाईस्कूलस) के लिये बहुत ही विख्यात है। इन संस्थाओं ने गाँव के किसानों को उनके बौद्धिक विकास में बड़ी सहायता पहुँचाई है। साथ ही इनके द्वारा प्रौढ़-शिक्षा की समुन्नति में भी बड़ी मदद मिली है। 'फ्रेडारिक्सबोर्ग फोक-हाईस्कूल' देखने के लिये, १३ अगस्त को, विशेष प्रबंध किया गया। स्कूल में हर्र-होल्गर-बेगट्रम (सीनियर और जुनियर) के छोटे छोटे भाषण हुए। फोक-हाईस्कूल की शिक्षा के संबंध में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते समय हर्र-होल्गर-बेगट्रम (जुनियर) ने अच्छी योग्यता का परिचय दिया।

१४ अगस्त को 'कोपनहेगन-दिवस' था। उस दिन पार्लिमेंट-भवन, वेड-बाइबोडर-स्कूल तथा ऐसी ही और और जगहें देखने की खास सुविधाएँ थीं। 'टिवोली-प्रमोद-उद्यान' में जो आनंद मनाया गया, वह अनुपम था। बाइस्किल पर का व्यायाम, सिनेमा, मौन-नाट्य, सिनिक रेलवे, दीपावली, कलाबाजी और इसी प्रकार की और-और चीजें, जो हमने वहाँ तथा अन्य स्थानों में देखीं, हमारे हृदय में अनेक प्रकार की भावनाएँ उठा रही थीं। हमारे मन में रह रहकर यह बात उठ रही थी कि हाय, हम भारत-वासी कहाँ हैं! कब और कैसे हम लोग इस प्रकार के उपयोगी खेलों और आमोदप्रद क्रीड़ाओं का ऐसा सुंदर संगठन कर सकेंगे?

१८ अगस्त को वहाँ 'फोक-नृत्य' का एक प्रदर्शन हुआ, जिसमें स्कूल के ३०० बच्चों ने भाग लिया था।

२० अगस्त को अंतर्राष्ट्रीय फोक-स्कूल के प्रधानाध्यक्ष मि० मानीके ने कृपा कर 'ओल्स्टेड' गाँव में जाने का प्रबंध किया। रात्रि हम लोगों ने वहां बिताई। कोई भी अतिथि 'होटल' में नहीं ठहराया गया। वहाँ के अधिवासियों ने उन्हें अपने अपने घरों में

ठहराया। बा० गौरीशंकरजी, 'कोऑपरेटिव-स्टोर्स' के मालिक के यहाँ और वाजपेयीजी तथा रस्तोगीजी किसानों के घर ठहरे। उनके आतिथ्यकार अँगरेजी नहीं बोल सकते थे। इस परिस्थिति ने कई दिल्लगी की बातें उपस्थित कर दीं। यहाँ उनके बताने की जरूरत नहीं। मैं ग्रामीण पाठशाला के प्रधानाध्यापक मि० एंडर्सन के पाले पड़ा। न वही अँगरेजी समझ सकते थे न उनकी स्त्री ही समझती थीं। पर सौभाग्य से मेरे साथ इँगलैंड के 'बेडेल्स स्कूल' के एक अध्यापक—प्रो० बी० पावेल—भी ठहरे हुए थे। उन्हें फ्रेंच और जर्मन भाषाओं का ज्ञान था। हमारे आतिथ्यकार भी अध्यापक थे और हम लोग भी। हम लोगों ने आपस में मिलकर अपने अपने अनुभवों की चर्चा की और एक दूसरे से जो कुछ सीख सकते थे, सीखा। मि० पावेल हैं तो बहुत अधिक अवस्था-वाले, किंतु उन्हें अपने को नवयुवक समझने में बड़ा आनंद आता है। यह एक ऐसा गुण है जिसे मैं प्रत्येक शिक्षक में देखना चाहता हूँ। वे गाते भी बहुत सुंदर हैं। भारतीय संस्कृति के लिये उनके हृदय में बड़ा सम्मान है।

सायंकाल एक पहाड़ी पर सब प्रतिनिधि एकत्र हुए। इसके एक ओर झील है, दूसरी ओर उत्तरी सागर से मिली हुई एक नहर। उस छोटी-सी पहाड़ी पर कई राष्ट्रों के प्रतिनिधि एकत्र थे—चीन और जापान के भी। एक जापानी ने अपने यहाँ का एक गीत गाया और पं० श्रीराम वाजपेयी ने इस देश का। मि० एंडर्सन ने परिदर्शकों का स्वागत किया और उनके स्वागत-संभाषण के जर्मन, अँगरेजी तथा भारतीय भाषाओं में उत्तर दिए गए। दूसरे दिन हम लोग 'डेअरी' देखने गए। चलते समय हम लोगों ने हाथ मिलाए और एक सम्मिलित गीत गाया।

इसी तरह कृषि-संबंधी, इतिहास-संबंधी आदि कितनी ही और यात्राओं का प्रबंध किया गया था।

ऊपर की बातों से पता चल गया होगा कि यह सम्मेलन जिनेवा के सम्मेलन से कितना भिन्न था। एलसिनोर में सदैव अवकाश का-सा वातावरण फैला रहता था। सम्मेलन ने अंतर्राष्ट्रीय गीतों का एक संग्रह प्रकाशित किया था। प्रत्येक व्याख्यान के पहले उसी संग्रह में से एक गीत गाया जाता था। प्रतिदिन प्रातःकाल साढ़े आठ बजे, थोड़ी देर के लिये, मौन धारण किया जाता था।

(२) संचालक का व्यक्तित्व और सम्मेलन में भारत का स्थान

श्रीमती बिएट्रीस एन्सौर सम्मेलन की कार्य्यकारिणी संचालिका थीं। उनमें कार्य्य-संचालन की अद्भुत प्रतिभा और क्षमता है। अँगरेज महिला होने के कारण (सम्मेलन का प्रधान कार्य्यालय लंदन में है) स्वभावतः उन्होंने बहुत से अँगरेज अध्यापकों को कान्फरेंस में आकर्षित किया था। उनके भाषण में प्रवाह और जोर होता है। दूसरे दिन उन्होंने एक सार्वजनिक भाषण-द्वारा यह दिखा दिया कि वे एक असाधारण योग्यता रखनेवाली महिला हैं। इन्होंने सभी 'ग्रूपों' के कार्य्यकर्त्ताओं से मिलने-जुलने की पूरी चेष्टा की।

१६ अगस्त को उन्होंने 'निकट-पूर्व' (*NearEast*) के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया कि वे लोग मिश्र, टर्की तथा इराक की शिक्षा-समस्याओं पर भाषण दें। मिलते समय तथा बातें करते समय उन्होंने सदैव अपने उस असीम प्रेम की अभिव्यक्ति की, जो भारतीय आध्यात्मवाद के लिये उनके हृदय में घर किए बैठा है। भारतीय प्रतिनिधियों ने उन्हें १७ अगस्त को अपने निरामिष भोज
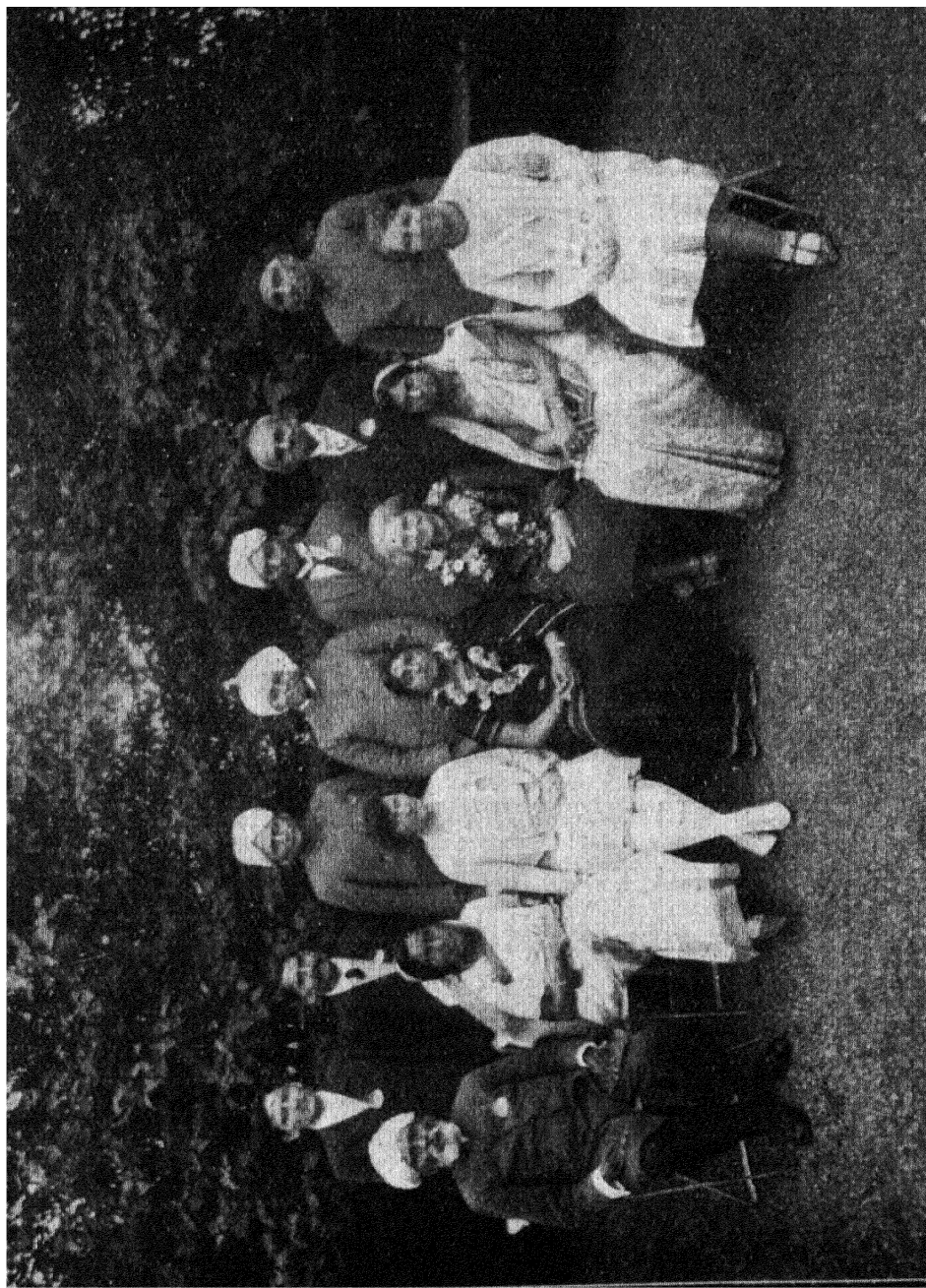
जिनेवा महासभा में भारतीय प्रतिनिधि

में निमंत्रण देकर बुलाया। सम्मानित अतिथियों में डॉ० मैांटेसरी तथा मिस हेलेन पार्कहर्स्ट भी थीं।

१९ अगस्त भारतीय शिक्षा पर भाषण देने के लिये निश्चित किया गया था। मिसेज़ इनसोर के साथ समस्त भारतीय प्रतिनिधियों की एक तस्वीर उतारी गई। श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने आर्य्य-समाज, ब्रह्म-समाज तथा रामकृष्ण-आश्रम के शिक्षा-संबंधी कार्य्यों पर व्याख्यान दिया। अध्यापक कर्वे अपने महिला-विश्वविद्यालय पर बोले। हैदराबाद की मिस पोप, उस्मानिया-विश्वविद्यालय पर बोलीं। मिस लो ने 'मद्रास में शिक्षा' पर भाषण दिया। श्रीयुत मेहता और श्री इनामदार, 'देशी राज्यों में शिक्षा' और 'नवीन भारतीय शिक्षा' पर बोले और मैंने 'काशी-हिंदू-विश्वविद्यालय' पर व्याख्यान दिया। उस समय तो प्रश्नोत्तर के लिये समय नहीं था; पर उसके बाद मुझसे कितने ही स्त्री-पुरुषों ने, हिंदू-विश्वविद्यालय के संबंध में, कई प्रश्न पूछे। उनमें से मैं यहाँ तीन प्रश्नों का उल्लेख किए देता हूँ—

(१) जब आपका स्वयं अपना विश्वविद्यालय है तब आप अपने यहाँ के विद्यार्थियों को तुलनात्मक भाषा-विज्ञान पढ़ने तथा संस्कृत का ऐतिहासिक और आलोचनात्मक अनुसंधान करने के लिये योरप क्यों भेजते हैं?

(२) दर्शनशास्त्र, साहित्य तथा धर्म के क्षेत्र में हिंदू-विश्वविद्यालय ने संसार की विचार-धारा को कितनी प्रगति दी है?

(३) अपने विश्वविद्यालय में आप लोग जर्मन और फ्रेंच क्यों नहीं पढ़ाते?

साफ मालूम होता है कि प्रश्नकर्त्ताओं को यह याद नहीं रहा कि हमारा विश्वविद्यालय अभी कल का बच्चा है।

मिस गुल्लन ने जो गीत गाए थे, उनमें से कुछ कवींद्र रवींद्र के भी थे। कवींद्र का नाम समस्त योरप में विख्यात है।

'सूर्य-नमस्कार' व्यायाम के संबंध में श्री इनामदार ने कुछ फिल्म दिखलाए। ऐसे सम्मेलनों में भारतीय दर्शक इस प्रकार के भारतीय फिल्मों से बहुत काम कर सकते हैं।

कहा जा चुका है कि हम लोग १४ अगस्त को 'कोपनहेगन' गए थे। वहाँ के 'मेयर' ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया था। भिन्न भिन्न देशों के सदस्यों ने उसका उत्तर दिया था। जर्मन, फ्रेंच और अँगरेज, सब के सब, अपनी अपनी मातृभाषा में बोले थे। मुझे लोगों ने भारत की ओर से बोलने को कहा। जब प्रत्येक आदमी वहाँ अपनी ही भाषा में बोल रहा था तब मेरे लिये यह लज्जा की बात होती यदि मैं अपनी भाषा में न बोलता। अस्तु, मैं भी अपनी ही भाषा में बोला। मुझे आश्चर्य हुआ, जब मैंने देखा कि मेरे भाषण के बाद एक ऑस्ट्रियन महिला मेरे पास आकर बोली कि 'यद्यपि मैं भारत नहीं जा सकी हूँ, फिर भी मुझे वहाँ के प्रति बड़ा प्रेम है और मैं हिंदी भाषा समझ सकती हूँ।'

जिनेवा में तो भारतीय महिला केवल श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय ही थीं। एलसिनोर में कुमारी कृष्णादेवी और वीणा दत्त भी आ मिलीं। आप लोग लंदन में पढ़ती हैं और वहीं से आई थीं। ये लोग सदैव अपनी साड़ियों को ही पहने रहती थीं और इन्हें तस्वीर खींचनेवालों से कभी कभी तंग हो जाना पड़ता था।

(३) सम्मेलन में सहयोग का भाव

शहर और राज्य के अधिकारियों ने सम्मेलन को सफल बनाने में बड़ा सहयोग पहुँचाया। स्वीडन के राजा और रानी 'ओलिंपिक क्रीड़ा-स्थल' में उपस्थित थे। और भी कितने ही अनुकूल अवसरों

पर डेन्मार्क के प्रधान मंत्री, शिक्षा-सचिव, 'हेलसिंगर' और 'हाल-सिंगबर्ग' के मेयर तथा अन्यान्य अधिकारी-वर्ग भी आते रहे।

भारत की महिला-प्रतिनिधि

जिनेवा एक सघन और विस्तृत नगरी है। वहाँ की प्रायः सभी वक्तृताएँ और सभाएँ दो ही स्थानों में होती थीं। एलसिनोर एक छोटा सा शहर है, इसलिये वहाँ तेरह से कम मकान नहीं लिए गए होंगे। इसका परिणाम यह था कि भिन्न भिन्न विषयों से रुचि रखने-वाले लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक दौड़ने की जरूरत पड़ती थी। क्रोनबोर्ग, जिसे शेक्सपियर ने अमर बना दिया है, इन

सब मकानों में बड़ा था। इसमें बड़े बड़े कमरे हैं, इसलिये एक ही साथ यहाँ कई सभाएँ हो सकती थीं।

भोजनालय तथा रेलवे और स्टीमरों में सभासदों के लिए खर्च में रियायत की गई थी।

'सोसायटी ऑव फ्रेंड्स' (मित्र-समाज), रोमन कैथोलिक तथा लूथर संप्रदाय ने रविवार के दिन उपासना का आयोजन किया था। अच्छा होता यदि हम लोग भी वहाँ वेदोच्चारण के लिये एक संगठन करते, जिससे योरप के बहुसंख्यक लोग, जिन्हें भारतीय धर्म में बड़ी अभिरुचि है, हमारी ओर आकर्षित होते।

जिनेवा और एलसिनोर दोनों जगहों से प्रति दिन एक अखबार निकाला जाता था। जिनेवा में तो यह बिना मूल्य मिलता था, पर एलसिनोर में थोड़ी-सी कीमत देनी पड़ती थी।

यहाँ और हालसिंगबर्ग में एक प्रदर्शिनी खोली गई थी। पर, यह भिन्न भिन्न मकानों में बिखरी हुई थी। 'मौंटेसरी-काँग्रेस' में वे सभी सामग्रियाँ दिखलाई गई थीं, जिनका उनकी शिक्षा-प्रणाली में उपयोग होता है। नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, जर्मनी आदि सभी जगहों की चीज़ें अलग अलग दिखलाई गई थीं। वहाँ किसानों की कारीगरी तथा पर्य्यटकों की भी एक प्रदर्शिनी थी। अनेक मकानों में छितराई होने के कारण ये चीजें लोगों को उतना आकर्षित नहीं कर सकीं, जितना ये कर सकती थीं।

उपसंहार

जिनेवा और एलसिनोर की यात्रा का यह नीरस विवरण मुझे अब समाप्त करना चाहिए। इससे आपको ऊपरी तौर पर केवल उन्हीं बातों का पता चलेगा, जिन्हें मैं वहाँ देख सका; मैंने वहाँ क्या सीखा, इसके बारे में तो इससे बहुत ही कम बोध हो सकेगा।

एक बात, जो रह रहकर मेरे मन में उठा करती थी, यह थी कि हम अपनी सभाओं को संगठित करने में बहुत पिछड़े हुए हैं और काम करने की प्रणाली में भी हमारा बुरा हाल है। अखिल भारतीय शिक्षा-संघ हमारी सबसे बड़ी शिक्षा-संस्था है, फिर भी कितने लोग इसकी सभाओं में भाग लेते हैं! पहले ही से तैयार की हुई वक्तृताओं की संख्या कितनी अल्प होती है! ठहरने, आमोद-प्रमोद तथा सैर-सपाटों के लिये हमारे प्रबंध-साधन कितने कम और दुर्बल हैं! सर्वसाधारण, रेलवे, नगर तथा सरकारी अधिकारियों की ही ओर से नहीं, बल्कि, स्वयं शिक्षकों से हमें जो उत्तर मिलता है, वह कितना निष्प्राण और बलहीन है! हमारे सम्मेलनों में आजीवन मैत्री की संस्थापना कितनी कम होती है! हमारे निस्वार्थ कार्य्यकर्त्ता, सहयोग के अभाव में, अकेले पड़ कर, कितने क्लांत और अव्यवस्थित हो जाते हैं! उन्हें और कुछ नहीं तो सहानुभूति भर तो दी जानी चाहिए, पर वह भी कहीं से नहीं मिलती। निस्संदेह वे लोग बड़े ही गौरवशाली और सम्मान के अधिकारी हैं, जो, इतनी विघ्न-बाधाओं के रहते हुए भी, कभी अपना पैर पीछे नहीं हटाते। आइए, हम सब लोग अपनी अपनी शक्ति के अनुसार, अपने अपने ढंग से, उन्हें यह भार उठाने में सहायता पहुँचावें। कुछ लोग शिक्षा-संबंधी विषयों पर व्याख्यान दें, कुछ लोग निबंध पढ़ें, कुछ लोग पाठ-संगठन करें और कुछ लोग शारीरिक व्यायाम का प्रदर्शन या ऐतिहासिक सैर-सपाटे का प्रबंध करें, जिससे हमें अनुभव हो कि हम अपने प्रत्येक अधिवेशन में कुछ न कुछ उन्नतिशील होते जा रहे हैं तथा परमात्मा ने हमें देश के युवक-युवतियों को शिक्षित बनाने का जो एक महान् गौरवपूर्ण कार्य्य सौंप दिया है, उसके योग्य हम अपने को बना रहे हैं।

(२)*

योरप के देशों में नए आयोजन, नए प्रयोग, हतोत्साह नहीं किए जाते। जिनके जिम्मे वहाँ पाठशालाओं का काम है, उन्हें, निर्धारित और सीमाबद्ध नियमों के रहते हुए भी, आवश्यकतानुसार, अपने निर्णय-स्वातंत्र्य को काम में लाने तथा विद्यार्थियों के ऊपर अपने व्यक्तित्व की छाप डालने का पूरा अधिकार रहता है। ये प्रयोग मानव-स्वभाव की तरह विस्तृत और बहुरूपात्मक हैं। अपंग, असमर्थ, अपराधी तथा अमेधावी बच्चों तक की शिक्षा में भी इन प्रयोगों से काम लिया जाता है; साधारण बच्चों की शिक्षा से संबंध रखनेवाले प्रयोगों की तो कोई गिनती ही नहीं। सह-शिक्षण, प्राक्-पाठी शिशु, आत्म-शिक्षण तथा मुक्त वायु में अध्ययन करने आदि समस्याओं के संबंध में सदैव चर्चा हुआ करती है। वहाँ आप ऐसी ऐसी पाठशालाओं के नाम सुनेंगे, जहाँ से बच्चों के छोटे छोटे समूह सैर-सपाटों के लिये सुदूर या आसन्न स्थानों में भेजे जाते हैं; अथवा जिनकी नियमावली के अनुसार—'बारह वर्ष तक परीक्षा की कोई प्रणाली ही नहीं'; अथवा जहाँ परंपरागत सौजन्य और शिष्टाचार के आदर्शों की पूर्ण रक्षा करते हुए, स्वातंत्र्य और स्वायत्त शासन द्वारा वैयक्तिक चरित्र का विकास कराया जाता है। जब मैं लंडन में था, उस समय जर्मन और अँग-रेज विद्यार्थियों का एक पारस्परिक विनिमय हुआ था। यह एक

---

* यह लेख उस व्याख्यान के एक अंश का अनुवाद है जो अँगरेजी में १७ दिसंबर १९२९ ई० को हिंदू विश्वविद्यालय के उपाधि-वितरणोत्सव-सप्ताह में, श्रीमान् पं० मदनमोहन मालवीय के सभापतित्व में, पढ़ा गया था और 'कालिजियन' पत्र में छपा था।

ऐसा आयोजन था, जिस पर शिक्षा-क्षेत्र के समस्त कार्यकर्त्ताओं की आँखें गड़ी हुई थीं; सब लोग इसमें बड़ी दिलचस्पी ले रहे थे।

मैं २३ अगस्त सन् १९२९ ई० को बर्लिन पहुँचा। उसके दूसरे दिन बृटिश दूत से मिला। उन्होंने कृपा कर मेरे लिये शिक्षा-सचिव से वहाँ की पाठशालाएँ देखने की आज्ञा प्राप्त कर दी। यह बृटिश दूत अँगरेज हैं, पर इन्होंने निःसंकोच जर्मन शिक्षाप्रणाली की प्रशंसा करते हुए कहा कि उस प्रणाली से हम लोग बहुत कुछ सीख सकते हैं।

बर्लिन में शिक्षा संबंधी एक 'केंद्रीय संस्था' (Central Institute) है। शिक्षा से संबंध रखनेवाली सभी आवश्यक जानकारियाँ इससे प्राप्त होती हैं। सब प्रकार के अनुसंधानों, आविष्कारों तथा समुन्नतियों के साथ इसका लगाव रहता है। भूगोल, इतिहास और विज्ञान पढ़ाने के जितने भी नए साधन उपलब्ध हो सके हैं, उन्हें आप इस संस्था के कमरों में प्रस्तुत पावेंगे। हमारे 'टीचर्स ट्रेनिंग-कालेज' में भी इसी प्रकार की एक संस्था खोली जानी चाहिए। शिक्षा-संबंधी संस्थाओं के परिदर्शनार्थ आए हुए विदेशियों को भी यह संस्था अनेक प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करती है। यह बड़े ही संतोष की बात थी कि शिक्षा-सचिव के आदेशानुसार इस संस्था ने हमारी सहायता के लिये जिन प्रदर्शकों को भेजा था, उनमें एक नवयुवक था। उसने हमें बताया कि कुछ वर्ष पूर्व, वह थोड़े से जर्मन विद्यार्थियों को लेकर हिन्दू-विश्वविद्यालय में आया था और यहाँ के छात्रों ने उसका तथा उसके मित्रों का बहुत ही प्रेम-पूर्वक स्वागत-सत्कार किया था। यह युवक बराबर मेरे साथ रहा।

अपनी यात्रा के सिलसिले में हम लोग 'अल्टेनहोफ '(Altenholf) गए। वर्बेलिन झील के किनारे, पहाड़ियों के बीच में बसा हुआ

यह स्थान बड़ा ही रमणीक है। जर्मन भाषा में झील को see (उच्चारण ज़े) कहते हैं। वहाँ एक घर दिखलाया गया जिसे लोग 'युगेंड-हर-बर्गे—Yugend-her-berge' (अर्थात् 'युवकों का शरण-गृह') कहते हैं। बाहर टीलों के ऊपर, वृक्षों के नीचे और

नवयुवक विश्राम-गृह

खेतों में, छोटे छोटे बच्चों की कक्षाएँ लगी हुई थीं। वे लोग चित्रकारी, भूगोल और जर्मन भाषा की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। प्रत्येक कक्षा एक अध्यापक के अधीन थी। ये तीनों कक्षाएँ अपने अपने अध्यापकों के साथ वहाँ चार सप्ताह के लिये बर्लिन की एक प्रारंभिक पाठशाला से भेजी गई थीं। थोड़ी ही देर बाद वहाँ किसी बालिका-विद्यालय की भी एक कक्षा आ गई जो सैर-सपाटे के लिये बाहर निकली हुई थी। यह एक आह्लादजनक दृश्य था। बच्चे झील में नहा-धो भी रहे हैं, तैर भी रहे हैं, वृक्षों पर चढ़ भी रहे हैं,

स्वच्छंदतापूर्वक खेल-कूद रहे हैं और इधर पढ़ाई का काम भी चल रहा है! उस घर की देख-रेख करनेवाली महिला से ज्ञात हुआ कि उस वर्ष-खंड—'सेशन'—में वहाँ आकर ठहरे हुए बच्चों की संख्या १७००० थी।

उसी दिन हम लोग 'आल्टेनहोफ़' (Altenhof) से 'कोरिन' Chorin) गए। यहाँ एक प्राचीन मठ है और उसी के पास
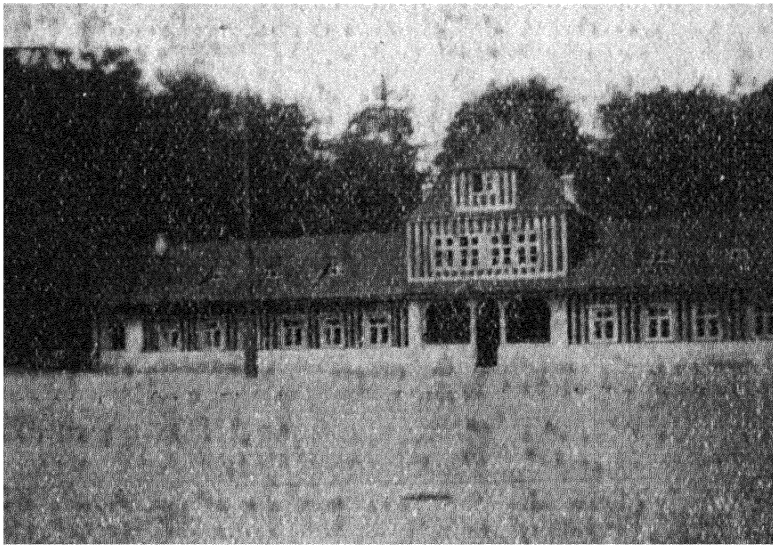
कोरिन (जर्मनी) में नवयुवक-संघ-विश्राम-गृ

युवकों के लिये एक 'शरण-गृह' भी है। वहाँ हमने देखा कि विद्यार्थियों का एक समूह संगीत और नृत्य का तथा दूसरा पाक-विद्या का पाठ पढ़ रहा था। रसोई पकानेवाले छात्रों ने हमारे सामने ही जली हुई लकड़ियों की काली राख तथा अन्यान्य गंदी चीजों को धरती में गाड़ दिया और उस स्थान को पहले ही की तरह स्वच्छ और पवित्र बना दिया।

११ सितंबर को, जब हम लोग 'ड्रेसडन' (Dresden) में थे, हमने सैकसन-स्विजरलैंड (Saxon Switzerland) का एक

दूसरा 'शरण-गृह' (Hohnstein) देखा। यह भवन एक ऊँची पथरीली पहाड़ी पर बना हुआ है। वहाँ भी बालक-बालिकाओं की
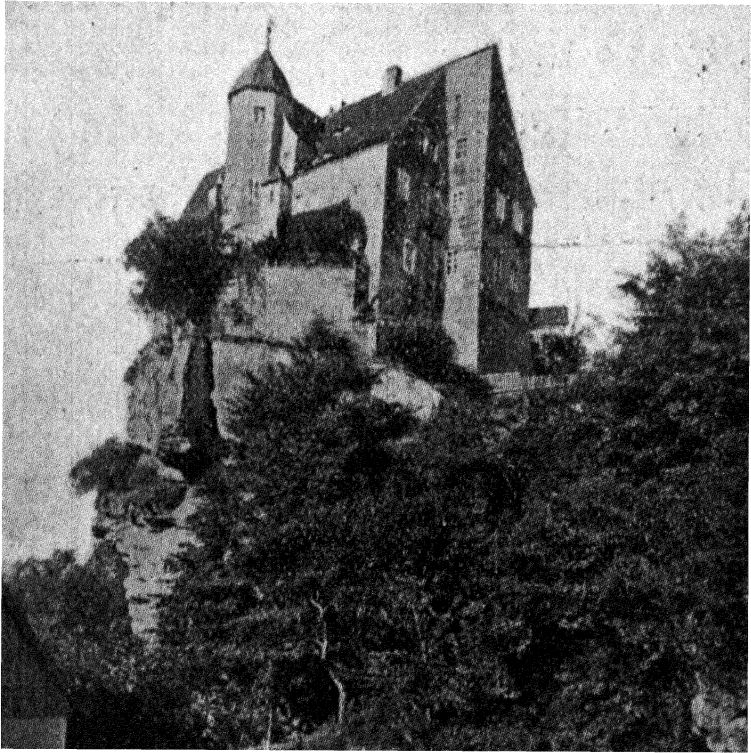
लोहन स्टाइन शरण-गृह

एक बहुत बड़ी संख्या प्रकृति के नीरव प्रदेश में आनंद-पूर्वक अपने अध्ययन का कार्य कर रही थी। हमें विश्वस्त रूप से बताया गया कि उस साल उस स्थान का परिदर्शन करनेवालों की संख्या पचास हजार थी।

योरप के नगरों में लोग यंत्र-चालित (mechanical) जीवन व्यतीत करते हैं। अगर आप पृथ्वी के नीचे चलनेवाली रेलगाड़ी (underground) पर जाना चाहते हों तो नीचे उतारनेवाली सीढ़ी (escalators)पर खड़े हो जाइए। आप अपने पैरों से काम लें या न लें, नीचे अवश्य पहुँच जाइएगा। आपको पहाड़ पर चढ़ना

हो तो आपके लिए (Funicular) फ्यूनिक्युलर रेलवे तैयार है। ड्रेस्डन के पास तो एक लटकती हुई (Schwebe) रेल ऊपर चढ़ी चली जाती है। अगर आप एक सेब या नारंगी लेना चाहते हों, तो यंत्र-विवर (Slot) में एक 'पेनी' डाल दीजिए, आप की इच्छित वस्तु तुरंत बाहर निकल आवेगी ! यंत्र ही से वहाँ भोजन पकाया जाता है, उसी से प्रकाश मिलता है और एक स्थान से दूसरे स्थान तक अथवा ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर पहुँचाने तथा घुमाने-फिराने का काम भी उसी का है। जरमनी में तो प्राय: गाँव गाँव रेल गई है।

पाठशाला का जीवन भी प्राय: मशीन की नाईं हो गया है। घंटी बजी और आप प्रार्थना-भवन में एकत्र हो गए, दूसरी घंटी के बजते ही
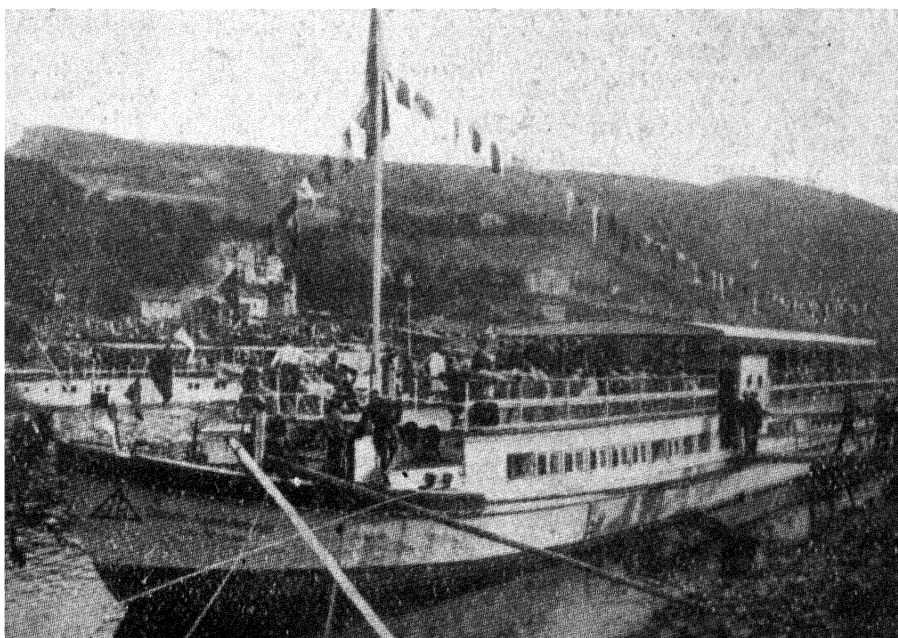
एल्ब नदी पर तैरता हुआ शरण-गृह

आप भरी-पूरी कक्षा में उपस्थित मिलेंगे। इसी तरह वहाँ की दुनिया चलती है। नहाते समय या विश्राम करते समय आप अपने कमरे का द्वार बंद कर लिया करते हैं। बड़े बड़े नगर आपको प्रकृति से दूर हटा

देते हैं। इन्हीं कारणों से जर्मनी में एक आंदोलन खड़ा हुआ है। इसका नाम है 'जर्मन युवक-आंदोलन'। यह यंत्र-चालित जीवन के विरोध में उठाया गया है। जीवन में नवीन स्फूर्ति लाने के उद्देश्य से यह आंदोलन वहाँ के जवान स्त्री-पुरुषों को प्रकृति के निकट वापिस ले

नवयुवक अब मार्च करते हुए आगे चल रहे हैं

चलने का प्रयत्न कर रहा है। यह उस अस्वाभाविक और बनावटी जीवन का प्रतिफल है जो वेश-भूषा और सामाजिक रूढ़ियों की मूढ़ो-

पासना में ही लगा रहता है। मद्यपान, धूम्रपान तथा वासना-त्मक प्रणय-व्यापार जैसे दुर्व्यसनों से (जिनका प्रसार योरप के नगरों में बहुत अधिक है और जिनके चंगुल में विद्यार्थी-समाज भी फँसा रहता है) बचाए रखने का यह एक सबल साधन है। ठीक ठीक न
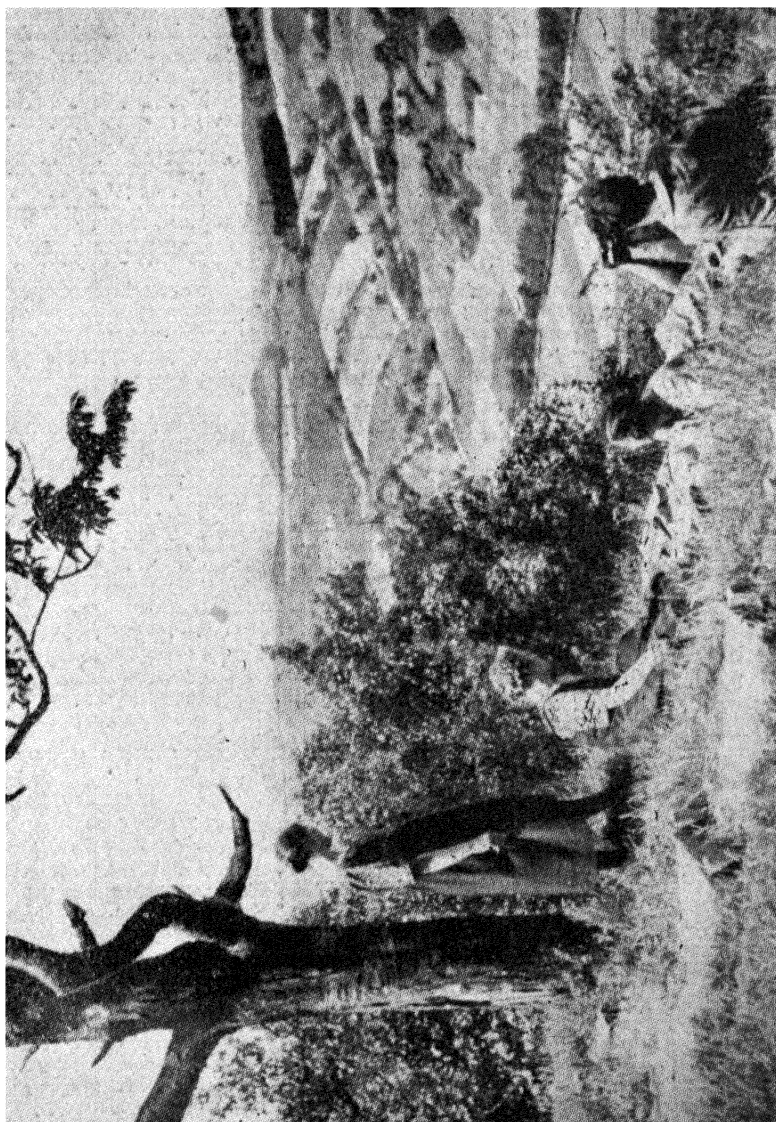
अब उन्हें प्रकृति की गोद में विश्राम करते देखिए

समझ सकने के कारण, प्रारंभ में 'राज्य' और 'धर्म' दोनों ने इस आंदोलन का खूब विरोध किया और इसके दबाने की पूरी चेष्टा की;

परंतु इसका साथ देनेवाले उन स्त्री-पुरुषों ने, जो आह्लादपूर्ण शब्दों में अपने को 'सैलानी-पक्षी' कहा करते हैं, इस आध्यात्मिक उपलब्धि के प्रयास-पथ से अपना पैर न हटाया। अब वहाँ की सरकार स्वयं इस आंदोलन की देख-रेख करती है। बहुत से गढ़, मठ, कारागृह और राजप्रासाद इसके जिम्मे सौंप दिए गए हैं। राज्य युवकों के इन 'शरण-गृह' के संरक्षण में सहायता पहुँचाता है और प्रतिवर्ष गर्मी की छुट्टियों में पाठशाला के बच्चों और अध्यापकों का—जो कई सप्ताह के लिये बाहर भेजे जाते हैं—खर्च भी देता है। ऐसे २५०० 'शरण-गृह' हैं। अपने अपने कंधों पर आवश्यक वस्तुओं से भरी हुई झोली लटकाए बच्चे एक स्थान से दूसरे स्थान तक पैदल ही चला करते हैं। अपनी आवश्यकताओं को कम करना, अपना सामान आप ढोना, वृक्षों की छाया में खाना और सोना, खुली हवा में स्नान करना तथा प्रकृति का सामीप्य-लाभ करना आदि बातें वे इसी से सीखते हैं। वे न तो मद्यपान करते हैं, न धूम्रपान। इन शरण-गृहों में 'चल-चित्र'—सिनेमा—भी दिखाए जाते हैं। इससे लाभ यह होता है कि आसपास के ग्रामीण वहाँ उसके आकर्षण से खिंच आते हैं और इस तरह बच्चों को अपने देश के ग्राम्य जीवन का ज्ञान हो जाता है; वे उसके संसर्ग में आ जाते हैं। इस प्रकार का यह 'घूमना-फिरना' अब वहाँ की शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन गया है और इससे राष्ट्र के सुदृढ़, स्वच्छ तथा आह्लादपूर्ण तारुण्य के विकास में बड़ी सहायता मिल रही है। यह केवल शिक्षणात्मक ही नहीं, आध्यात्मिक भी है। आसन्न देशों के (जर्मन न बोलनेवाले) युवक भी एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते दीखते हैं। अन्यान्य देशों में भी इसी तरह के आयोजन चलाने का प्रयास किया जा रहा है।

भारतीय युवक भी पदार्थवाद की ओर खिसके जा रहे हैं। जीवन के सरल और स्वाभाविक पथ पर रूढ़ियों और शृंगारों का आधिपत्य छा गया है। शिक्षा-संस्थाओं में आए हुए देहाती बालक भी कुछ ही दिनों के नगर-प्रवास से एकदम बदल जाते हैं। वे ऐसे जीव बन जाते हैं जिनको पहचानना कठिन हो जाता है और जब वे अपने जन्म-स्थान को जाते हैं, ऐसा अनुभव करने लगते हैं मानों वे वहाँ अजनवी के रूप में गए हों! उनके पड़ोसी उन्हें देखकर चकित हो जाते हैं और वे इसी में अपनी शान समझते हैं। गाँव और नगर के बीच, शिक्षित और अशिक्षित के बीच, एक खड्ड है। हमें भी आवश्यक परिवर्तन के साथ ऐसा ही 'युवक-आंदोलन' उठाना चाहिए और गाँव गाँव में जाकर इसका प्रचार करना चाहिए, जिससे हम प्रकृति और माँ वसुंधरा का स्पर्श प्राप्त करते हुए अपने निरक्षर भाइयों के अंतस्तल में ज्ञान की ज्योति जगाकर मानवता की सेवा कर सकें।

डेनमार्क के आलस्टेड गाँव में एक रात *

मैं जन्म से दिहाती नहीं हूँ, पर मैंने दिहात की खूब खाक छानी है। सन् १९०० से १९१० तक जब मैं जौनपुर, बस्ती, बनारस तथा बरेली जिलों के स्कूलों के निरीक्षण का काम करता था, दिहाती भाइयों से मेरा हेल-मेल हो गया था। उनके गुण-दोष उस समय से मुझ पर प्रकट हो गए। उनकी सादगी, सहृदयता और शारीरिक कष्ट सहने की शक्ति आदि गुणों ने मुझ पर बड़ा प्रभाव डाला।

डेनमार्क कृषि-प्रधान देश है। उसके एलसिनोर नगर में, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा-महासभा में, जब गत वर्ष मैं गया और वहाँ के 'इंटर-नेशनल

* मार्च सन् १९३० की सरस्वती से उद्धृत—परिवर्तन सहित।

पीपुल्स कालेज' के प्रिंसपल मानीके महोदय (Manniche) ने सभासदों को एक रात दिहात में चलकर रहने का निमंत्रण दिया, तब हम लोगों ने सोचा कि ग्रामीण जीवन देखने का यह अवसर हाथ से न जाने देना चाहिए। अतएव, २० अगस्त की दोपहर को यात्रा
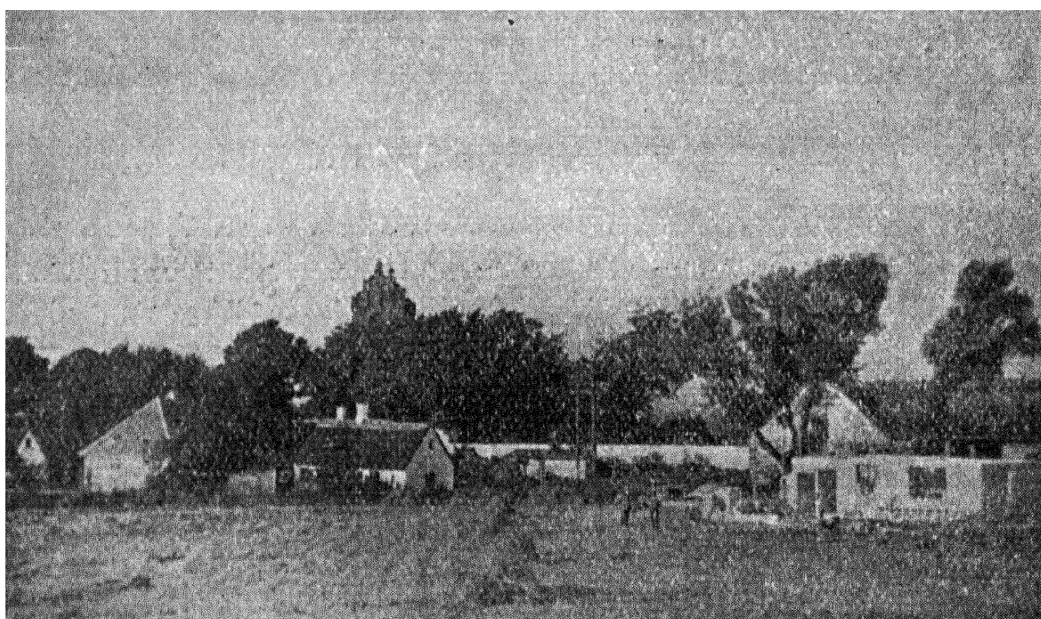
आलस्टेड गाँव और गिर्जा

के लिये हम लोग उक्त कालेज में पहुँच गए। प्रिंसिपल महोदय ने अन्य यात्रियों के साथ हम लोगों को भी भोजन (Lunch) कराया।

योरप के प्राय: सभी देशों में दिन के बारह और दो बजे के बीच में सब लोग भोजन के लिये बैठ जाते हैं, जैसा हमारे देश में भी व्यापारी, खेतिहर और पंडित लोग करते हैं और पहले सभी लोग किया करते थे। दफ्तरों और स्कूलों में, भरपेट खाना खाकर जाना और काम करना, यह हानिकारक प्रथा हमारे देश में नई चली है।

अस्तु, भोजन के उपरांत हम लोग लारी पर बैठे और आलस्टेड (Olsted) गाँव की ओर रवाना हुए। मार्ग का दृश्य बड़ा ही रमणीक था। सड़क के दोनों तरफ की हरियाली बड़ी सुहावनी थी। कुछ दूर तक जंगल मिला, जिसमें एक कस्बा भी देखा। तीसरे पहर हमारी लारी आलस्टेड पहुँच गई। इस गाँव में आठ सौ मनुष्यों की आबादी है। इन लोगों को प्रिंसिपल मानीके से बड़ा प्रेम है, क्योंकि इनके पिता यहाँ की ग्रामीण पाठशाला के मुख्याध्यापक थे और यहीं प्रिंसिपल महोदय का जन्म हुआ था। योरप में यात्री होटलों में ठहरते और भोजन करते हैं, इसलिये होटलों की सब जगह भरमार है।

अध्यापक एंडरसन

इस गाँव के निवासियों ने किसी यात्री को होटल में नहीं ठहरने दिया—सब सज्जनों और देवियों को उन्होंने आपस में बाँट लिया। पंडित श्रीराम वाजपेयी और श्री प्यारेलाल रस्तोगी को दो खेतिहर अपने अपने घर ले गए। बाबू गौरीशंकरप्रसाद स्थानीय को-आपरेटिव स्टोर में ठहरे। मुझे पाठशाला के अध्यक्ष (Rector) एंडरसन महोदय (Anderson) ने अपने यहाँ ठहराया। यह स्कूल-

भवन में ही सपत्नीक रहते हैं। स्कूल-भवन छोटा सा है, परंतु बड़ा सुंदर बना हुआ है। उसके पीछे की तरफ उपवन है, जिसमें
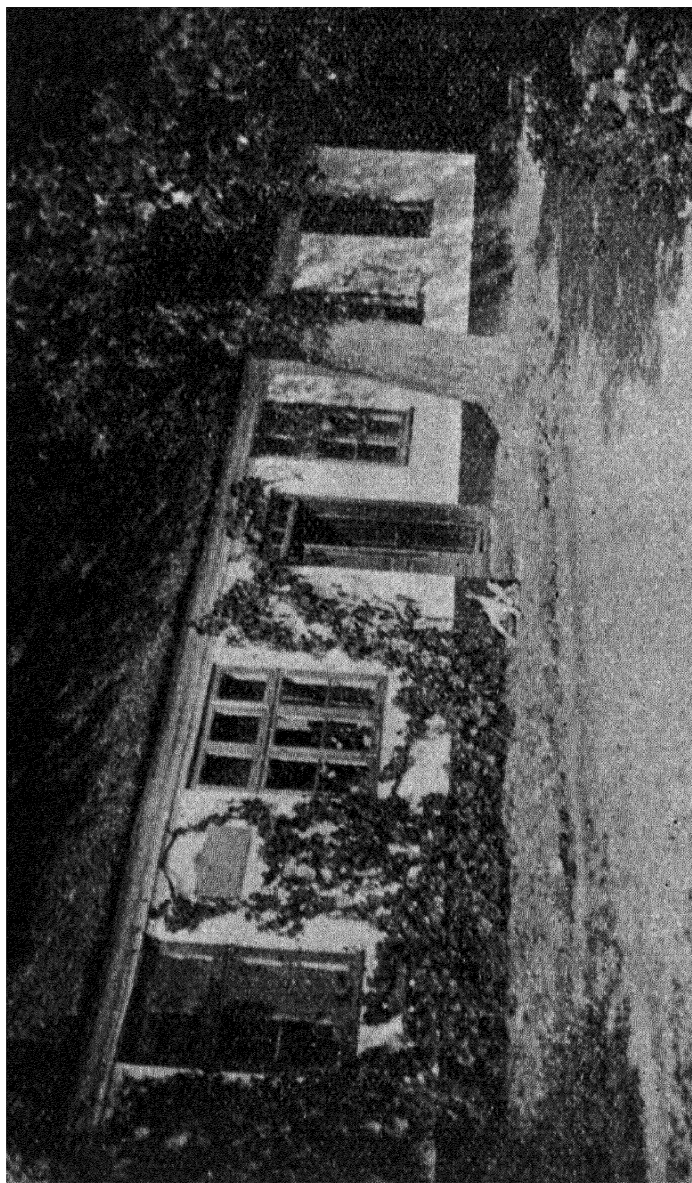
स्कूल-भवन

ट्यूब द्वारा पाताल से पानी निकाला जाता है। इस स्कूल में लड़कियाँ लड़कों के साथ पढ़ती हैं, जिनकी अवस्था सात से चौदह वर्ष तक की है। इस समय स्कूल में ८३ लड़के-लड़कियाँ हैं। एंडरसन महोदय के साथ एक अध्यापिका भी काम करती हैं।

उन देशों में पढ़नेवालों की अवस्था के अनुसार कक्षाएँ होती हैं। हम लोगों से प्राय: लोग पूछा करते थे कि आपके यहाँ प्राइमरी, मिडिल तथा हाई स्कूलों में किस अवस्था से लेकर किस अवस्था तक लड़के-लड़कियाँ पढ़ती हैं। वहाँ शिक्षा अनिवार्य है। छ: वर्ष की अवस्था में हर बालक और बालिका को स्कूल में पढ़ना आरंभ कर देना आवश्यक है। इस अनिवार्य शिक्षा की अवधि किसी देश में बच्चों की १५ वर्ष की अवस्था तक है, किसी में १६, तथा किसी में १८ है। जब प्रत्येक बालक छ: वर्ष की अवस्था में पढ़ना शुरू करेगा तब देश के सब बच्चे प्रत्येक कक्षा में प्राय: एक ही उम्र के होंगे। इसलिये प्रत्येक कक्षा में प्राय: एक ही उम्र के लड़के-लड़कियाँ मिलती हैं, चाहे उनके डील-डौल में कुछ भेद हो। हमारे देश में अनिवार्य शिक्षा न होने के कारण हजारों लड़के पढ़ने ही नहीं आते और थोड़े जो पढ़ने आते भी हैं, अपनी स्थिति और रुचि के अनुसार जब चाहते हैं पढ़ना आरंभ करते हैं, जिसका भयंकर परिणाम यह है कि एक ही दरजे में आठ वर्ष के लड़के भी मिलेंगे और सोलह वर्ष के भी।

अब फिर चलिए आलस्टेड गाँव में। एंडरसन महोदय और उनकी धर्मपत्नी, अँगरेजी नहीं बोल सकती थीं, और मैं उनकी भाषा नहीं बोल सकता था। यही हाल हमारे सब साथियों का हुआ। गाँववालों ने अतिथियों का सत्कार करने के लिये सूअर और खरगोश कटवाए थे। वहाँ के खेतिहर सूअर पालते हैं, उनको अच्छा खाना देते हैं और साफ-सुथरा रखते हैं। ये अनाज, आलू, गोभी के पत्ते, रोटी आदि खाते हैं और मक्खन निकला हुआ दूध पीते हैं। सूअर का मांस यहाँ के लोग विदेश में, विशेषकर इँगलैंड में, भेजते हैं। यहाँ के सूअर सफेद और बहुत बड़े होते हैं।

हमारे मित्र बहुत कठिनाई से यह समझा सके कि हम लोग मांस नहीं खाते। यह कठिनाई मुझे और वाजपेयीजी को नहीं हुई। वाजपेयीजी मांस खा लेते हैं। मेरे सौभाग्य से मेरे साथ मिस्टर औसवल्ड-बी-पावल (Mr. Oswald B. Powell) आकर ठहर गए। यह अँगरेज हैं, परन्तु फ्रेंच और जर्मन बोल सकते हैं। मेरे कहने पर इन्होंने श्रीमती एंडरसन को समझा दिया कि मैं मांस, मछली तथा अंडा नहीं खाता और न चाय पीता हूँ। वे बड़ी घबराईं। बार-बार पूछने लगीं कि तब मैं तुम्हारा सत्कार कैसे करूँ। जब मैंने बतलाया कि मैं दूध पीता हूँ और उबाली हुई तथा मक्खन में तली हुई सब तरकारियाँ खाता हूँ, तब वे थोड़ी देर में मेरे लिये बहुत अच्छा दूध और मुरब्बा ले आईं। मैंने उस समय थोड़ी रोटी और भाजी खा ली। भाजी में आलू, मटर, गाजर और खीरे का सलाद था। यह सलाद भी सारे योरप में मिलता है। इसमें कच्चा खीरा, मूली इत्यादि के कच्चे पत्ते होते हैं। यह बड़ा ही स्वादिष्ट और लाभदायक भोजन है।

श्रीमती एंडरसन

जब हम लोग घूम-फिर कर लौटे, तब श्रीमती एंडरसन ने हमें डेनमार्क का सबसे स्वादिष्ठ भोजन (Rodgrod) खिलाया। इस शब्द का उच्चारण देवनागरी अक्षरों में भी ठीक ठीक लिखना कठिन है। यह करेंट, रैस्पबेरी आदि फलों और दूध से बनता है।

मैं पहले लिख चुका हूँ कि हमारे साथ मिस्टर पावल ठहरे थे। ये इँगलैंड के बिडेल्स (Bedales) स्कूल के अध्यापक हैं। यहाँ ५ वर्ष से लेकर १९ वर्ष तक के लड़के और लड़कियाँ साथ ही रहती और पढ़ती हैं। इँगलैंड के लोग पहले लड़के और लड़कियों को एक साथ पढ़ाने के पक्ष में नहीं थे, इसलिये १८९३ में जब यह स्कूल खुला तब यहाँ केवल ३ लड़के थे, इस समय २४० लड़के-लड़कियाँ हैं। इस स्कूल के संचालक भारतवर्ष से बड़ा प्रेम करते हैं। यहाँ के कुछ अध्यापक और छात्र निरामिष-भोजी हैं। एक बार यहाँ श्री रवींद्रनाथ ठाकुर भी गए थे। मिस्टर पावल वृद्ध हैं, परंतु अपने को नवयुवक कहते हैं। इनको गाने का बहुत शौक है। रात को हम दोनों स्कूल की दूसरी मंजिल में एक ही कोठरी में ठहरे।

योरप में बिछौना अपने साथ ले जाने की प्रथा नहीं है। जहाँ लोग ठहरते हैं, बिछौना मिल जाता है। चारपाई के नीचे अथवा उसके पास छोटी आलमारी में लघुशंका करने के लिये एक पात्र रखा रहता है। ६ महीने की यात्रा में मैं इस पात्र को एक दिन भी काम में नहीं लाया। लघुशंका करने के बाद कमरे में इस पात्र का पड़ा रहना मुझे घृणित मालूम पड़ता है, यद्यपि वह ढका रहता है। इस विषय पर मिस्टर पावल के विचार वही हैं, जो मेरे। उन्होंने मुझे बतलाया कि उनके स्कूल में छात्रों के बिस्तर के नीचे यह पात्र नहीं रखा जाता।

एक बात और रह गई। इस गाँव में एक पहाड़ी टीला है। इसके एक ओर झील है और दूसरी ओर उत्तर-सागर का एक टुकड़ा (kattegat)। सायंकाल हम सब लोग इस टीले पर जमा हुए। उसके ऊपर से जो दृश्य देखा वह चित्त को आकर्षित करनेवाला था। टीले पर और जल के किनारे सब जगह बड़ी सफाई थी। ऐसे स्थानों को हमारे देश के लोग गंदा कर देते हैं। वहाँ शौच जाते

टीले पर से दृश्य

हैं और वहीं दतुअन फेंक देते हैं। हमने योरप में गाँवों के खेत, नाले, नदियाँ, पहाड़ और पहाड़ियाँ देखीं, पर कहीं भी किसी को इन स्थानों को गंदा करते नहीं पाया। उन देशों में सड़कों पर या खेतों में थूकने की बुरी आदत भी नहीं है, इसलिये हर एक जगह साफ रहती है। हमारे देश में लोग गंगा-तट तक को साफ नहीं रहने देते। जहाजों आदि के कारण जिन नदियों का पानी खराब हो जाता (River Pollution) है उनके सुधार के लिये सभाएँ बन गई हैं।

अब चलिए टीले पर चलें। सब लोगों के जमा होने पर ग्रामीण पाठशाला के मुख्याध्यापक ने अपनी मातृभाषा में सब लोगों का स्वागत किया। जर्मनी, इँगलैंड आदि देशों के प्रतिनिधियों ने अपनी अपनी मातृभाषा में उत्तर दिया। उन सबका अनुवाद मानिके महोदय ने किया। वाजपेयीजी ने हिंदी में व्याख्यान दिया और दिहाती गीत गाया। एक जापानी ने जापानी गीत गाया। अतिथियों में एक चीनी भी थे। भिन्न भिन्न जातियों का इस टीले पर मिलना एक अद्भुत दृश्य था। अँधेरा होने पर खूब नाच-गाना और कसरत हुई। थक जाने पर सब लोग अपने अपने स्थान पर लौटे।

दूसरे दिन २१ अगस्त को सबेरे ही से पानी बरसने लगा, जिसके कारण बहुत सरदी मालूम होने लगी। तिस पर भी हम लोग यहाँ का गिर्जा और डेयरी (dairy) देखने गए। डेयरी में हमने देखा—किस प्रकार मक्खन, क्रीम और पनीर बनाया जाता है। योरप में लोग मक्खन, क्रीम और पनीर बहुत खाते हैं। डेनमार्क और हालेंड से पनीर (cheese) बहुत दूर दूर तक बाहर भेजा जाता है। इन देशों में मक्खियाँ कम हैं, फिर भी एक मक्खीमार-यंत्र प्राय: सब स्थानों में लटका रहता है, जिस पर मक्खी आकर फँस जाती है। डेनमार्क में पंचायती डेयरियाँ (co-operative dairies) बहुत हैं जिनके लिये यह संसार में प्रसिद्ध है।

इसके अनंतर हम लोग यहाँ के खेतों को देखने गए। वह देखिए—वहाँ की गाएँ। उनकी पीठ पर कूबड़ नहीं होता। हिंदुस्तान में भैंस के कूबड़ नहीं होता। कुछ लोगों का ख्याल है कि जिस प्रकार योरप के आदमी गोरे होते हैं, उसी प्रकार भैंस भी गोरी होती है और जिनको योरप में गाय कहते हैं वे असल में भैंसें हैं। जो कुछ हो, योरप में दूध अच्छा मिलने के कई कारण हैं।

एक तो वहाँ दूध में कोई पानी नहीं मिलाता; दूसरे उसमें से मलाई नहीं निकालता; जिसको वहाँ क्रीम (cream) कहते हैं वह एक प्रकार की गाढ़ी निमिस या तरावट है; तीसरे वहाँ के लोग गाय की बड़ी सेवा करते हैं, गोशाला में गोबर इत्यादि जमा नहीं होने पाता; चैाथे गाय को चारा बहुत अच्छा दिया
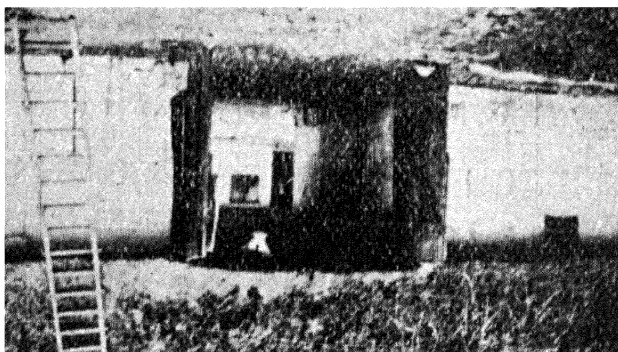
गांव का एक खेत

जाता है; पाँचवें गाय की सेवा करनेवाले ग्वाले पढ़े-लिखे होते हैं, वे अपने विषय के पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ते रहते हैं। १८ जून को जब हम लोग लंदन के बाहर फ़ेंशम हाइट स्कूल के पास गोशाला देखने गए थे तब ग्वाला हम लोगों से बातचीत करता हुआ कृषि सम्बन्धी एक अखबार उठा लाया था।

गोशाला

डेनमार्क का दूध हम लोग आजन्म नहीं भूलेंगे। कहा जाता है कि सम्राट् जार्ज के लिये, उनकी बीमारी की अवस्था में, कुछ दिनों तक डेनमार्क से दूध मँगाया जाता था। इन खेतवालों ने अपने अतिथि-सत्कार का परिचय दिया और चाय, रोटी, मक्खन आदि से सबका सम्मान किया। अंत में नर-नारियों ने एक दूसरे का हाथ पकड़कर मंडल

इनको अच्छा फायदा हो जाता है। ये अपने मकानों, खेतों और सड़कों को बहुत साफ रखते हैं। हमारे देश के दिहातियों की तरह ये लोग शहरवालों से बातचीत में डर नहीं जाते, न उनकी तरह इनमें बोदापन है। स्त्री-पुरुष सब पढ़े-लिखे हैं; समाचार-पत्र और पुस्तकें पढ़ने का सबको शौक है। इनकी रहन-सहन से मालूम होता था कि ये बड़े संपन्न हैं, जैसे हमारे देश में जमींदार होते हैं।

बिदाई के समय का फोटो

जब हम खेतिहर भाइयों से जुदा हुए तब फोटो लिया गया। योरप के लोग बिदाई के समय जब तक अतिथि दिखलाई देता है, अपनी दाहनी बाँह को ऊपर उठाकर रूमाल हिलाते हैं या हाथ नचाते हैं, यहाँ तक कि जब कभी आपकी रेलगाड़ी या मोटर या लारी गाँव में से गुजरेगी, छोटे छोटे बच्चे भी बिना जान-पहचान के ऐसा ही करते दिखलाई देंगे। यह बात हमने योरप भर में देखी। भला बतलाइए तो सही, हमारे देश में बच्चे ऐसी अवस्था में क्या करते दिखलाई देते हैं।

योरप में भारत की चर्चा

भारतवर्ष के संबंध में योरप में, विशेषकर इँगलैंड में, विलक्षण विचार हैं। हम लोग एक दिन कई सज्जनों और देवियों से बात-चीत कर रहे थे, उसी बीच में हिंदुस्तानी मित्रों को आपस में वार्त्तालाप करने की आवश्यकता पड़ी और हम लोग हिंदी बोले।

एक स्त्री ने आश्चर्य प्रकट किया और पूछा—"Have you a language of your own?" अर्थात् क्या तुम्हारी अपनी भाषा भी है? उस स्त्री ने हिंदुस्तानियों को आपस में अँगरेजी ही बोलते सुना था, उसने समझा था कि 'सर्वव्यापिनी' अँगरेजी भाषा ही भारतवासियों की बोली है। जब हमने उसे बतलाया कि हमारे देश में १०० में केवल ८ ही साक्षर हैं और उनमें से भी अँगरेजी जाननेवालों की संख्या बहुत ही कम है, तब उस बेचारी के अभिमान को बड़ा धक्का पहुँचा। सच्ची बात तो यह है कि हमारे हृदय में अपनी भाषा के प्रति प्रेम अभी पूरी तरह से नहीं पैदा हुआ है। अँगरेजी पढ़े-लिखे लोग आपस में मातृ-भाषा बोलते हुए भी अँगरेजी शब्दों का प्रयोग करते हैं। आसाम में खसिया भाषा की कोई लिपि नहीं है, सैकड़ों बरस मारवाड़ी और बंगाली उनके संसर्ग में आए, परंतु उनको अपनी लिपि प्रदान न कर सके। अँगरेजों ने थोड़े ही दिनों में वहाँ रोमन अक्षरों का प्रचार कर डाला। प्राइमरी स्कूलों में खसिया बालक अपनी मातृ-भाषा का ज्ञान रोमन अक्षरों द्वारा प्राप्त करते हैं।

दूसरा विचार हिंदुस्तान के संबंध में यह है कि अँगरेजों ने यहाँ के लोगों को सभ्य बनाया, पढ़ना-लिखना सिखलाया, और भारत की बुरी रस्मों को दूर किया। बहुत जगह लोग पूछते थे कि क्या भारतवर्ष में पहले विधवाएँ जलाई जाती थीं और बच्चे नदियों में मगर के सामने फेंक दिए जाते थे? एक स्त्री ने हम लोगों से पूछा कि क्या यह सच है कि एक विशेष त्योहार पर भले घर की स्त्रियाँ पाँच-छः रोज तक घर से बाहर नहीं निकलतीं, क्योंकि उन दिनों लोग उनको गालियाँ देते हैं और उनसे छेड़-छाड़ करते हैं? वहाँ के लोग समझते हैं कि यहाँ की स्त्रियाँ पिंजरे में

बंद रहती हैं। जब एक सज्जन से मैंने कहा कि बंबई, मद्रास, मध्यप्रदेश और बरमा में बिल्कुल पर्दा नहीं है और पंजाब में बहुत कम है, सिर्फ दो-एक प्रांतों में कुछ अधिक है, वह भी मुसलमानों में, अर्थात् हिंदुस्तान के ज्यादा हिस्से में पर्दा नहीं है, तो उसको इस बात के मानने में संकोच हुआ।

अनेक स्थानों में लोगों को यह कहते सुना कि भारतवर्ष साँपों की, अनेक प्रकार के बुखार की, खटमल और मच्छरों की भूमि है। हमारे एक अँगरेज मित्र बनारस के एक होटल में ठहरे। सोने से पहले उन्होंने नौकर से पूछा कि इस होटल में रात को कहीं साँप तो आकर नहीं काट लेगा और यह भी पूछा कि होटल में ठहरने-वाले कितने हर साल साँप के काटने से मरते हैं। एक साहब से मैंने पूछा कि क्या कभी हिंदुस्तान में आपने हिंदुस्तानी खाना खाया है ? उन्होंने कहा "नहीं, क्योंकि हिंदुस्तान के लोग उबालकर पानी नहीं इस्तेमाल करते, इसलिये बुखार का डर रहता है।" मच्छर की बात तो ठीक ही है। योरप में इटली देश के केवल वेनिस (Venice) नगर में (जहाँ प्रायः प्रत्येक घर के बाहर नाला है) हमको मच्छर मिले, परंतु पहले इटली देश में बहुत मच्छर थे। वहाँ की सरकार के बलशाली प्रयत्नों से ऐसे दलदल के स्थान, जहाँ मच्छर पैदा हुआ करते थे, सुधारे जा रहे हैं।

इँगलैंड के लोगों की यह बँधी हुई धारणा है कि भारत में प्रजा को राज्य में कभी भी कुछ अधिकार नहीं दिया जाता था और यहाँ के लोग अपने प्रतिनिधियों द्वारा शासन करने की योग्यता अब भी नहीं रखते। जब हम उन्हें बतलाते कि इस देश में पहले गाँवों में पंचायतें थीं और अनेक प्रांतों में प्रजातंत्र राज्य थे, तब वे कहते कि यदि ऐसा होता तो इस समय इन पुरानी बातों के कुछ चिह्न मिलते।

एक दिन हम लोग बृटिश म्यूजियम (लंडन का प्रसिद्ध संग्रहालय) देख रहे थे। उसी समय स्कूल के बहुत से बालक अपने अध्यापकों के साथ आए। मैंने उन लोगों से जान-पहचान कर ली; लड़कों से पूछा कि क्या वे हिंदुस्तान के बारे में कुछ जानते हैं ? उन्होंने कहा—"हाँ, वहाँ हिंदू और मुसलमान आपस में लड़ा करते हैं।" हम लोगों से अनेक स्थानों में इस प्रकार के प्रश्न पूछे जाते थे—"क्या यह सच है कि हिंदुस्तान में (क) हिंदू मुसलमान आपस में लड़ा करते हैं और मुसलमान हिंदुओं का गला काट लेते हैं (Cut their throats) ? (ख) बहुत से लोग ऐसे हैं जो अछूत समझे जाते हैं और जिनका ब्राह्मण लोग गला काटते हैं ? (ग) जात-पाँत का भेद एक दूसरे को अलग करता है ? (घ) बहुत से लोग अपनी दौलत गाड़कर रखते हैं और सर्वसाधारण पर प्रकट नहीं करते कि उनके पास कितना रुपया है ? (ङ) सास पतोहू को मारती है ? मर्द अपनी स्त्री को मारते और कई विवाह करते हैं ?" एक प्रसिद्ध हिंदू महिला ने, जो हमें योरोप में मिली थी, हम लोगों से कहा कि एक दिन कुछ हिंदू स्त्रियाँ बर्लिन में भिन्न भिन्न प्रांतों की योरोपियन स्त्रियों के साथ बैठी थीं, जब कि एक गोरी स्त्री ने, एक सीधी-सादी शांत स्वभाव की, कम बोलनेवाली भारतीय कुमारी से पूछा—"क्या आप इस कारण उदास हैं कि आपके पति ने दूसरा विवाह कर लिया है ?"

जिन दिनों हम लंडन में थे और हम लोगों से बाल-विवाह संबंधी प्रश्न किए जाते थे, उन्हीं दिनों हिंदुस्तान में बाल-विवाह रोकने के लिये शारडा-कानून पेश था। वहाँ के अखबारों और सिनेमा-द्वारा यह खबर फैलाई जाती थी कि हिंदुस्तान के लोग इस कानून का घोर विरोध कर रहे हैं।

इँगलैंड में बहुत से भारतीय डाक्टर चिकित्सा करते हैं और वे वहीं बस गए हैं। उनके संबंध में लोगों का यह विचार है कि वे कुछ जादू (Black magic) जानते हैं, जिसके कारण उनके द्वारा रोगी जल्दी अच्छे होते हैं।

ऊपर लिखी हुई बातों से यह न जान लेना चाहिए कि योरप के सभी लोग भारतवर्ष को बुरा समझते हैं। बहुत से लोग भारतवर्ष की पुरानी सभ्यता और संस्कृति के प्रति श्रद्धा का भाव रखते हैं—विशेषकर जर्मनी के अनेक पुस्तकालयों में संस्कृत के ग्रंथ मिलते हैं और जहाँ ये ग्रंथ हैं वहाँ कुर्सियाँ खाली नहीं पड़ी रहतीं, बल्कि अनेक सज्जन वहाँ पुस्तकों को पढ़ते हुए और कुछ लिखते हुए दिखलाई देते हैं। लंडन, पेरिस और बर्लिन का तो कहना ही क्या है, दक्षिण जर्मनी में डैन्यूब नदी के किनारे बैायरों (Beuron) नाम के ईसाइयों के एकांत मठ में भी हमें संस्कृत ग्रंथ और संस्कृत जाननेवाले मिले। अनेक भारतीय विद्यार्थी संस्कृत भाषा और साहित्य को आलोचनात्मक और ऐतिहासिक दृष्टि से पढ़ने जर्मनी जाते हैं। विख्यात संस्कृतज्ञ मोक्षमूलर, बुहलर, जॉली, जैकोबी इत्यादि सब जर्मन थे। जर्मन संस्कृतज्ञों ने वेद, शास्त्र, पुराण आदि पर अनेक ग्रंथ लिखे हैं। जिनेवा विश्वविद्यालय के पास हम क्यूओ वैडिस (Quo Vadis) नाम के पुस्तकालय में गए, वहाँ मिस जोजफाइन स्टोरी (Storey) नाम की एक महिला मिलीं। उन्होंने यह पुस्तकालय खोल रखा है। उनके यहाँ स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, रवींद्रनाथ ठाकुर आदि पर अनेक ग्रंथ देखे। उनको भारत के प्राचीन दर्शन-शास्त्र पर बड़ी श्रद्धा है।

यह साधु सुंदरसिंह के नाम से प्रसिद्ध थे। ईसाई होने पर भी वे भारतीय सभ्यता के बड़े पोषक थे, हिमालय-प्रवास के बड़े प्रेमी थे।

हम लोगों से अनेक ऐंग्लो-इंडियन लोगों से भेंट हुई। ऐंग्लो-इंडियन वे अँगरेज हैं जो हिंदुस्तान में रह चुके हैं। उनमें से बहुत से जब किसी हिंदुस्तानी को योरप में देखते हैं तो हिंदी में बात-चीत शुरू करते हैं। जहाज में, योरप जाते हुए बर्मा से लौटता हुआ, एक अँगरेज मिला, जो अच्छी हिंदी बोलता था। उसी जहाज में आस्ट्रेलिया से लौटता हुआ एक अँगरेज मिला, जिसे हमने अपने छोटे बच्चे को मारते देखा। हमें इस पर आश्चर्य हुआ। मालूम हुआ कि वह पहले संयुक्त-प्रांत में फौजी अफसर था। लड़ाई में बेकाम होने के
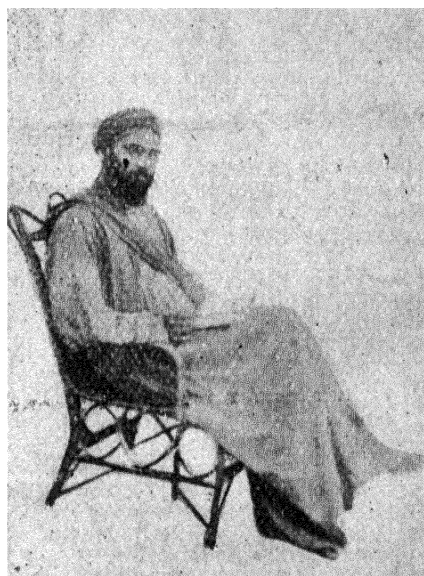
साधु सुंदरसिंह

कारण उसकी नौकरी छूट गई। एक दिन उसने हम लोगों से कहा कि हिंदुस्तान में रहकर अँगरेजों का नैतिक पतन हो जाता है, क्योंकि अँगरेज अफसरों को यहाँ मुफ्त में या सस्ते में बहुत से नौकर मिलते हैं जो उनके इशारे पर छोटे से छोटा काम करने को दौड़ते हैं—जो काम उनको अपने देश में अपने हाथ से करना पड़ता है। इँगलैंड में हमसे अनेक ऐंग्लो-इंडियन लोगों से भेंट हुई। लंडन में १६ जून को हमसे पादरी लेनवुड (Lenwood) से भेंट हुई, जो पहले बनारस में थे। यह और इनकी धर्मपत्नी अपने देश की खूब सेवा

कर रही हैं। ये दोनों बड़े सुशिक्षित हैं। इनकी धर्मपत्नी पार्लमेंट के एक मेंबर की लड़की हैं। दोनों चीन, जापान आदि देशों में भ्रमण कर चुके हैं। इनकी संस्थाओं को देखकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। २० जून को मालबर्न में हम लोगों के पूर्व-परिचित मित्र पादरी ग्रीव्ज मिले, जो हिंदी के बड़े प्रेमी हैं और जिन्होंने वर्षों तक काशी नागरी-प्रचारिणी सभा की सच्ची सेवा की थी। उन्होंने और उनकी धर्मपत्नी ने हमारा बड़ा सत्कार किया। पादरी ग्रीव्ज का जन्म लंडन में ५ दिसंबर १८५४ ई० में हुआ था। भारतवर्ष आकर वे दस बरस तक मिर्जापुर रहे। उसके अनंतर उनका अधिक समय काशी ही में बीता। उन्होंने अँगरेजी में हिंदी भाषा पर कई पुस्तकें लिखी हैं जिनमें हिंदी व्याकरण और हिंदी भाषा का इतिहास प्रसिद्ध हैं। १९१९ में भारत से स्वदेश जाकर वे भारत पर व्याख्यान आदि देते रहे। उसी दिन आक्सफोर्ड में संयुक्त प्रांत के प्रसिद्ध पेंशन-भोगी सिविलियन सर वर्नी लवेट, जो इस समय वहाँ भारतीय इतिहास के अध्यापक हैं, मिले। उन्होंने बड़े प्रेम से हमें आक्सफोर्ड दिखलाया और हम लोगों के हिंदुस्तानी पोशाक में योरप-यात्रा करने की बहुत प्रशंसा की। २३ जून को सनब्रिज स्थान में हम लोग मिस्टर स्ट्रेटफील्ड (Streatfeild)

पादरी एडविन ग्रीव्ज

से मिले, जो किसी समय बनारस के बड़े शिक्षा-प्रेमी कलक्टर थे और इस समय इँगलैंड में पादरी हैं। इनकी कुमारी कन्या केंब्रिज की ग्रेजुएट होने पर भी एक देहाती स्कूल में निस्स्वार्थ सेवा करती हैं। २४ जून को लंडन के केक्सटन हॉल में हिंदुस्तान की रेलों पर हम लोग एक व्याख्यान सुनने गए। उसके सभापति थे भारत के भूतपूर्व वायसराय लार्ड रेडिंग। इसमें बड़े बड़े खुर्रांट ऐंग्लो-इंडियन देखने में आए। हमारे मित्र बाबू गौरीशंकरप्रसाद इस मीटिंग में पगड़ी बाँधकर गए थे। सभा की समाप्ति पर लार्ड रेडिंग ने उनसे हाथ मिलाया। शायद उनको यह भ्रम हुआ कि यह भी कहीं के राजा, महाराजा या तालुकेदार हैं। २५ जून को ईटन का प्रसिद्ध स्कूल देखकर जब हम 'बस' में बैठे तब हमसे एक चेचक के दागवाले अँगरेज ने कहा कि वह पूर्वीय बंगाल में पहले कलेक्टर था और अब ईटन में मास्टर है। जब हम ४ जुलाई को हैडले स्थान में ली-आन-सी के निकट मुक्ति-सेना की एक कृषि-संस्था को देखने गए तो वहाँ बहुत से लोग मिले जो वर्षों हिंदुस्तान में रह चुके थे और जिन्होंने 'दयालसिंह' आदि हिंदुस्तानी नाम रख लिए हैं। ६ जुलाई को 'मुक्ति-सेना' के जन्मदाता जेनरल बूथ की शताब्दी हम लोग क्रिस्टल पैलेस में देखने गए। वहाँ लगभग ८० हजार मर्द और औरतों की भीड़ थी, जिनमें बहुत से गेरुआ-वस्त्रधारी पादरी थे। एक दिन हम लोग लंडन के विक्टोरिया स्टेशन से आ रहे थे कि एक अँगरेज ने हिंदुस्तानी भाषा में हम लोगों को गाली देना शुरू किया, वह शराब के नशे में चूर था। उसके साथ एक स्त्री थी। वह उसकी करतूत पर लज्जित हो रही थी। पेरिस में टामस कुक की दूकान पर एक दिन एक अँगरेज मिला, जो यात्रियों की सेवा कर रहा था। वह हम लोगों से हिंदी में बोला। मालूम हुआ कि

पहले वह हिंदुस्तान में डिप्टी-कमिश्नर था और अब उसने टामस कुक की दूकान में नौकरी कर ली है। इस प्रकार हम लोगों को बहुत से एंग्लो-इंडियन मिले। भीड़-भाड़ में कभी कभी 'चलो, आगे चलो' अथवा कुछ और कहता हुआ कोई कोई हमारे बगल से निकल जाता था। हम लोगों के पहरावे से वे जान लेते कि हम भारतीय हैं।

लंडन के हाइड पार्क में, खुले मैदान, प्रति रविवार को सैकड़ों व्याख्यान होते हैं, कहीं मादक वस्तुओं के निषेध पर, कहीं रोमन कैथोलिक धर्म पर, कहीं पार्लमेंट के किसी कानून पर। हिंदुस्तान पर भी खूब जोरदार लेक्चर हुआ करते हैं। जब हम लोग लंडन में थे तो भारतवर्ष को स्वराज्य देने पर हिंदुस्तानियों, अँगरेजों और देवियों के लेक्चर होते थे। उन देशों में श्रोतागण प्रश्न बहुत करते हैं। यदि वक्ता उन प्रश्नों का तुरंत और करारा जवाब न दे तो उसकी हवाई उड़ जाती है। हाइड पार्क के व्याख्यान गंभीर नहीं हो सकते।

लंडन के वेलसाइज पार्क में सेठ घनश्यामदास बिड़लाजी और अन्य सज्जनों ने 'आर्य-भवन' खोलकर देश का बड़ा उपकार किया है। २४ जून को हम उसे देखने गए और वहाँ हमने भोजन किया। इस भवन में शौचादि का प्रबंध हिंदुस्तानी ढंग का है, शौच-गृह में पानी की कलें हैं। यहाँ हिंदुस्तानी भोजन भी मिलता है। भोजनालय के भीतर शुद्ध पवित्र घी की सुगंध जैसी हमें यहाँ मिली, ६ महीने की यात्रा में कहीं भी न मिली। इस भवन के भीतर मातृ-भूमि के प्रायः सब सुख मिलते हैं। 'आर्य-भवन' के दरवाजे पर हमें एक मशीन रखी हुई मिली, जिसमें सिक्का छोड़ने से सिगरेट बाहर निकल आता है। इसको देखकर हमें दुःख हुआ, क्योंकि भार-

तीय वातावरण में ऐसी चीज के रहने से अँगरेजों को इस भ्रम के हो जाने की आशंका है कि हिंदुस्तानी इसे जीवन की एक आवश्यक सामग्री समझते हैं। यह बात हमने वहाँ की पुस्तक में भी लिख दी।

योरप में मुर्दा जलाने की प्रथा चल निकली है। जर्मनी और आस्ट्रिया में म्युनिसिपैलिटी की ओर से श्मशान-गृह (क्रेमिटोरियम) बन गए हैं। इनमें बिजली द्वारा मुर्दे जलाए जाते हैं जिसमें समय बहुत ही कम लगता है। इन देशों में योरप के अन्य देशों से मुर्दे अधिक जलते हैं। अभी थोड़े दिन हुए, एडिनबरा नगर में Federation of Cremation Authorities की वार्षिक महासभा हुई थी, जिसमें इस बात पर विचार किया गया था कि मुर्दा जलाने में खर्च कैसे कम हो सकता है। १९२९ में ४३५३ मुर्दे जलाए गए। इस विषय पर बहुत से ईसाइयों से हम लोगों की बातचीत हुई। वे सब इस बात को स्वीकार करते हैं कि मुर्दा गाड़ने से जलाने में संसार की अधिक भलाई है, परंतु पुरानी लकीर के फकीर होने के कारण पादरी जलाने का विरोध करते हैं। हम लोगों का विश्वास है कि यदि भारतवर्ष के दो एक विद्वान् योरप के प्रधान नगरों में घूमकर डाक्टरों और अन्य वैज्ञानिक लोगों की सम्मतियाँ जमा करें और म्युनिसिपैलिटियों द्वारा नए श्मशान-गृह बनवाने का आयोजन कर दें, तो मुर्दा जलाने की प्रथा चल निकले।

संगठित रूप से अब तक कोई आयोजन ऐसा नहीं हुआ जिसके द्वारा भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रति योरप के लोगों में श्रद्धा पैदा हो। इस संबंध में बहुत कुछ कार्य थियासाफिकल सोसायटी ने अवश्य किया है। इस सोसायटी की शाखा-सभाएँ योरप के प्राय: हर एक नगर में मिलती हैं, जिनमें भारतीय यात्रियों का स्वागत होता है। निरामिषभोजियों की संख्या भी इसी

सोसायटी के द्वारा बढ़ी है। योग और अन्य आध्यात्मिक विषयों पर स्वाध्याय करनेवाले लोग भी इसके सदस्यों में मिलते हैं।

योरप में स्नान, शौचादि के नियम और बाहरी सफाई

प्रति दिन स्नान करने की आदत रखनेवाले भारतीय जब योरप जायँ तो उन्हें इसके लिये कुछ अधिक व्यय करने को तैयार रहना चाहिए। जहाज में तो स्नानागार बने हुए हैं, पारी पारी से लोग यदि चाहें तो नहा सकते हैं। परंतु, योरप पहुँचकर होटलों में नहाने के लिये पैसा देना पड़ता है। लंडन में जहाँ हम ठहरे थे, वहाँ ठंढे पानी से बिना पैसा दिए नहा सकते थे, परंतु गर्म पानी के लिये तीन पेनी एक सूराख (Slot) में डालनी पड़ती थी। हमारा काम थोड़े ही गर्म पानी से चल जाता था। कहीं कहीं हम लोग ठंढे पानी से ही नहा लेते थे। परंतु गर्मी के दिनों में भी वहाँ इतनी सर्दी रहती है कि गर्म ही पानी अच्छा लगता है। ठंढे पानी से नहाने से थोड़ी ही देर में सर्दी मालूम होने लगती है। फ्रांस में ५ फ्रांक नहाने के लिये और ६ फ्रांक तौलिए के लिये देना साधारण सी बात है। नहाने में हम लोगों का नागा प्रायः कहीं भी नहीं हुआ। होटलों में हम लोग ऐसे कमरे लेते थे जिनमें बहते पानी की कलें होती थीं, जिससे अपनी आदत के अनुसार हम लोगों को हाथ धोने, कुल्ला करने और कपड़ा धोने के लिये खूब पानी मिलता था। उससे हम लोग नहाने का भी काम चला लेते थे। योरप में ३०, ४० वर्ष पहले किसी के घर में भी स्नानागार (Bath) नहीं था। सम्राट् सातवें एडवर्ड के समय में राजकीय महल में सबसे पहले स्नानागार बनवाया गया था। कहीं कहीं सर्वसाधारण के लिये स्नानागार (Public Baths) थे, जहाँ

पैसा देकर गरमियों में दूसरे तीसरे महीने लोग नहा लिया करते थे। कहा जाता है कि सौ वर्ष पहले १८३५ ई० में इँगलैंड में टामस वाकर नाम का एक आदमी था जो बिलकुल नहीं नहाता था और जो कहता फिरता था कि न नहाने ही के कारण उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी है !

नहाने के समय लोग प्राय: एक टब में बैठ जाते हैं, जिसमें पानी भरा रहता है। जब हमारे बदन की मैल धुलकर टब के पानी में मिल जाती है, उसमें बैठे रहना हिंदुस्तानियों को पसंद नहीं है, जब तक कि उसमें पानी बदलने का प्रबंध न हो। टब में बैठकर मैं पानी आने और पानी निकलने के—दोनों रास्ते खोल देता था और लुटिया से सिर पर पानी डालता था। चाँदी की यह लुटिया, जो मैं साथ ले गया था, बहुत काम आई। कहीं कहीं ऊपर से पानी फुहारे द्वारा गिरने का भी प्रबंध रहता है, जिसके नीचे लोग खड़े होकर नहा लेते हैं। अब प्राय: हर एक स्कूल में स्नानागार बनाए जा रहे हैं, जहाँ न केवल नहाने का प्रबंध है बल्कि तैरना सिखलाने का भी। लड़के और लड़कियाँ खूब तैरती हैं। बहुत से नगरों में हमें ऐसे स्नानागार मिले, जो खुली जगह (Open Baths) में बने हुए हैं और जहाँ लोग जाकर बिना पैसा दिए नहाते हैं और तैरते हैं। जर्मनी में ऐसे स्नानागार हमें अधिक मिले। हमारा विश्वास है कि २०, २५ वर्ष के अंदर योरप में एक भी स्त्री पुरुष ऐसा नहीं मिलेगा, जो तैरना न जाने।

शौचादि के नियम भी वहाँ हमारे नियमों से भिन्न हैं। जहाज में पहले ही दिन जब हमने देखा कि दो-चार आदमी निश्चित स्थान पर खड़े होकर पेशाब कर रहे हैं और आपस में बातचीत

कर रहे हैं, तब हमारे पैर कुछ पीछे की तरफ हटने लगे। लघु-शंका के समय पानी का प्रयोग तो भारतवासी भी अब छोड़ते जाते हैं, परंतु वहाँ के लोग शौच के समय भी पानी काम में नहीं लाते। पतला कागज (toilet papers) शौच-गृह में रखा रहता है, इसी से वे काम चलाते हैं। यह कागज वैज्ञानिक रीति से बनाया जाता है और इसके द्वारा अभ्यास हो जाने पर अच्छी सफाई हो जाती है, हाथ भी गंदा नहीं होता; परंतु हमारे विचार से चाहे कितनी ही सफाई हो जाय, थोड़े पानी के प्रयोग की आवश्यकता रह ही जाती है। अब तो हर जगह पानी मिल जाता है। हम लोग ऐसे समय जेब में एक शीशी रख लेते थे, जिसमें पानी भर लिया करते थे, और कागज और पानी दोनों से काम लेते थे। परंतु कमोड पर बैठकर पानी से इस प्रकार काम लेना कि लकड़ी पर या बाहर पानी बिल्कुल न गिरे, पहले पहल बहुत कठिन मालूम होता था, विशेषकर वहाँ जहाँ कि शौचगृह में फर्श बिछा रहता था। यह कठिनाई थोड़े ही दिनों के अभ्यास के बाद दूर हो गई। गीले स्पंज से भी ऐसे समय काम निकल जाता है। हम लोगों से लंडन में एक हिंदुस्तानी अधिकारी ने, जो भारतीय विद्यार्थियों के रहने आदि का सरकार की ओर से प्रबंध करते हैं, कहा कि हिंदुस्तानी लड़कों की इस बात में बड़ी शिकायत है कि वे शौचगृह को बड़ा गंदा कर देते हैं—कमोड पर बैठ जाते हैं और पानी फैला देते हैं। पैरिस में 'मुक्ति-सेना' की एक संस्था को हम लोग देखने गए, वहाँ हिंदुस्तानी ढंग से बैठकर शौच जाने के स्थान बने हुए थे। पता लगा कि फ्रांस में बहुत जगह ऐसा ही प्रबंध है। लंडन में केवल आर्य-भवन में ही ऐसा देखने में आया।

योरप के लोग उठते ही शौच नहीं जाते, यद्यपि बहुत से स्कूलों में यह बात अब सिखलाई जाती है। चाय-पानी पीकर सब अपने अपने काम में लग जाते हैं और जब जिसको हाजत होती है, शौच जाता है। चारों तरफ शौचगृह मिलते हैं—सड़कों पर, थिएटरों में, संग्रहालयों और भोजनालयों में, जहाँ जाइए Lavatory अथवा W. C. अथवा Gentleman लिखा मिलेगा। थोड़ा पैसा देने पर साफ तौलिया और साबुन भी मिल जाता है। रेलों के पाखानों में मुफ्त तौलिये मिलते हैं, वहाँ के लोगों को शौचगृह में बहुत देर नहीं लगती। ये शौचगृह बड़े ही साफ रहते हैं। इस सफाई में इँगलैंड बहुत आगे है। उसके बाद जर्मनी और फ्रांस। इटली बहुत साफ नहीं है, परंतु भारतवर्ष से इस अंश में वह भी अच्छा है। योरप के गाँवों में भी हम लोगों ने बहुत भ्रमण किया, वहाँ कहीं कहीं उठउवाँ पाखाने बहुत गंदे पाए, परंतु खेतों में शौच जाते लोगों को नहीं देखा। देहाती स्कूल देखे, खेतों का निरीक्षण किया, नदी और समुद्र के किनारे गए, परंतु कहीं भी मैदान को गंदा करते नहीं पाया। दो एक जगह बस्ती से दूर मैदान में, भीटों और टीलों पर बिना पहले से बतलाए हुए नदी या समुद्र के किनारे जमीन पर बैठकर हम लोगों ने सभाएँ कीं, पर कहीं गंदगी नहीं पाई। किसी किसी गाँव में लोग बस्ती से दूर गढ़े खोद देते हैं और वहीं शौच जाते हैं। शहरों में उठउवाँ पाखाने अब नहीं हैं। जंजीर खींच देने से पानी-द्वारा सफाई हो जाती है। नगरों में लघुशंका करने के स्थान जो सड़क पर बने हैं, उनमें पानी बहता रहता है। सोने के समय अपनी चारपाई के नीचे एक पात्र रख लेते हैं और रात को उसी में पेशाब करके उसको ढककर रख देते हैं। इस गंदी आदत के अब बहुत

से लोग विरुद्ध होते जाते हैं और हमें कई सज्जन ऐसे मिले जिन्होंने इसको छोड़ दिया है। हमारे देश में नदी के किनारों को और खेतों को, लोग गंदा कर देते हैं। यदि यह प्रथा चल जाय कि लोग गढ़े खोद दें और शौच के अनंतर मिट्टी या बालू से उसे ढक दें तो मक्खियों-द्वारा गंदगी और दुर्गंध न फैले। हम लोग घरों में भी शौचगृह को बहुत गंदा रखते हैं। वहाँ के लोग अपने हाथ से शौच के स्थान को साफ कर लेना बुरा नहीं समझते।

बाहरी सफाई का वहाँ के लोग बहुत ख्याल रखते हैं। ड्रेसडन से कुछ दूर ज़ेको-स्लवेकिया की सरहद पर हम लोग एक स्थान को देखने गए, जहाँ की प्राकृतिक शोभा बड़ी सुंदर है। वहाँ एक बच्चे को देखा जो सड़क के पास ही लघुशंका करने चला था कि इतने में उसकी माँ एक सेकेंड के अंदर उसको कहीं उठाकर ले गई।

वहाँ के लोग अपने दाँतों को साफ़ नहीं रखते। छोटी उम्र में भी उनको बनावटी दाँत लगवाने की आवश्यकता पड़ जाती है। मोती की तरह चमकते हुए सफ़ेद दाँतवाले लोग वहाँ कम मिलते हैं। पर अब लोगों का ध्यान इस ओर हो रहा है। कहीं-कहीं स्कूल में भरती होते ही बच्चों के दाँतों की परीक्षा होती है। इसका सबसे अच्छा प्रबंध हमने डेनमार्क की राजधानी कोपनहेगेन के स्कोलन (स्कूल) वेड नैबोडर में देखा। वहाँ के वृद्ध अनुभवी डाक्टर से दाँतों की सफाई के संबंध में बहुत देर तक बातचीत होती रही। इस स्कूल में दाँतों के इलाज का 'बहुत ही अच्छा अस्पताल है। हमने उन्हें बतलाया कि हमारे देश में भोजन के अनंतर कुल्ला करते हैं जिससे भोजन के कण दाँतों में रह नहीं जाते। इस बात को सुनकर उन्हें बड़ा अचंभा हुआ। इसी विषय पर मैंने एक प्रस्ताव अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा महासभा के स्वास्थ्य-सम्मेलन में उपस्थित

किया था। मेरा प्रस्ताव तो केवल इतना ही था कि स्कूलों में भोजन के अनंतर मुँह धोने का प्रबंध किया जाय परंतु उस सम्मेलन के सभापति डाक्टर टर्नर ने, जो अमरीका के एक प्रसिद्ध डाक्टर हैं, कहा कि गोरे लोगों का भोजन भी उनके खराब दाँत होने का एक कारण है इसलिये प्रस्ताव इन शब्दों में पास हुआ—

"That whereas there is a distinct difference in the dental health of school children in the various countries, further study should be made concerning those factors which contribute to the health of the teeth, including habits of mouth cleansing before and after meals and food habits."

मालबर्न में पादरी ग्रीव्ज के घर जब हम भोजन कर चुके तब पानी कहाँ मिलेगा यह जानना ही चाहते थे कि उन्होंने स्वयं हमसे पूछा, "क्या आप कुल्ला (Rinse your mouth) करना चाहते हैं ?" जब हमने कहा, "जी हाँ।" तब वे बोले, "Keep to that good habit." "इस अच्छी आदत को मत छोड़ो"। वहाँ के लोग भोजन के अनंतर एक कटोरी में से बहुत थोड़ा पानी लेकर उँगलियों से मोछ या होंठ पोंछ लेते हैं। उससे बाहरी सफाई तो हो जाती है परंतु दाँत गंदे ही रह जाते हैं। पैरिस में हम लोग एक अनाथनारी-सदन देखने गए। वहाँ के अध्यक्ष से हमने कहा कि फ्रांस की स्त्रियों को, जो बहुत सुंदर बनने का प्रयत्न करती हैं, भोजन के अनंतर दाँत साफ करना सिखलाइए। अध्यक्षजी ने जो पादरी हैं कहा, "इन स्त्रियों को मुँह पर पाउडर लगाने और होंठ रँगने से तो फुर्सत मिलती ही नहीं, ये कुल्ला क्या करेंगी।" परंतु हम लोग इस नेक सलाह को देने से कहीं नहीं चूकते थे। श्रीरामा

जहाज में योरप जाते समय एक वृद्ध अनुभवी सज्जन ने भारत-वासियों के साफ दाँत देखकर कहा यदि आप हमें दाँत साफ रखने का उपदेश करें तो आप पादरियों से भी अधिक हमारा उपकार करेंगे। इँगलैंड की एक स्त्री जिनसे हमारा परिचय चार वर्ष पहले, जब वे भारत आई थीं, हो गया था हमें पेरिस में मिलीं। उस समय उनकी बहन और भतीजियाँ सब उनके साथ थीं। उनका पूरा परिवार निरामिषभोजी है। १६ जुलाई को उन्होंने हमें भोजन के लिये निमंत्रित किया और भोजन के अनंतर हमसे कहा कि दिखलाओ तुम्हारे देश के लोग किस प्रकार कुल्ला करते हैं। उसके बाद से वे बराबर कुल्ला कर रही हैं। चौथी मार्च १६३० के एक पत्र में उन्होंने मुझे लिखा है, "I rinse out my mouth after every meal now. See what good you passed on to me—so do our habits improve, each nation opening the eyes of another nation's citizen to better ways. Thus should it always be."

"मैं अब प्रत्येक भोजन के बाद कुल्ला करती हूँ, देखिए कैसे उपकार की बात आपने मुझे बतलाई, इसी प्रकार हमारी आदतें सुधरती हैं, एक जाति दूसरी जाति के नागरिक की आँखें उन्नति पथ की ओर खोल देती है। ऐसा ही सर्वदा होना चाहिए।" बहुत से लोग अब प्रातःकाल अपने दाँतों को साफ करते हैं। कोई तो सोने से पहले भी एक बेर और साफ कर लेते हैं।

उँगली, पेंसिल, कलम इत्यादि को मुँह में डाल लेना वे बुरा नहीं समझते। थूक लगाकर चिट्ठी बंद करना, लिफाफे पर टिकट लगाना और पन्ने उलटना, ये बुराइयाँ हमारे देश में भी फैल रही

हैं। हम लोग जहाँ तक हो सकता था इसकी खराबी बतलाते थे, बहुत से सज्जन तुरंत मान लेते थे और कुछ लोग बहस करने लगते थे। एक होटलवाले से हमने कहा कि कम से कम हमारी चिट्ठियों पर टिकट थूक से मत लगाना। थोड़ी देर के बाद हमने देखा कि वह एक गीला स्पंज ले आया और उसी से लिफाफे बंद करता और टिकट चिपकाता। हमारे देश की सफाई के विचार वहाँ से कई अंशों में भिन्न हैं। टेबुल पर खानेवालों की रकाबियाँ यदि एक दूसरे से लग जायँ तो वे उसको जूठा नहीं समझते परंतु जब किसी रकाबी में कोई खा लेगा तब जब तक वह गर्म पानी से धुलकर न आएगी, कोई दूसरा आदमी उसमें नहीं खायगा। हम लोग समझते हैं कि योरप के लोग अपने बर्तनों को अच्छी तरह साफ नहीं करते, यह हमारा भ्रम है। जिस रकाबी में लोग एक बेर खा लेते हैं वह गर्म पानी में अनेक प्रकार के मसालों—जैसे Vim आदि—से साफ की जाती है और भोजन करनेवाले के सामने जब फिर वह लाई जाती है तो गर्म रहती है। कई जगह स्टेशनों पर छोटे-छोटे शीशे के ग्लास में मलाई की बरफ़ बिकते देखी जिसके साथ रबर के फीते से एक छोटा टीन का चमचा बँधा रहता है। इटली देश में तो कहीं कहीं पानी के नलकों पर जंजीर से बँधे हुए गिलास देखे जिनमें राह चलते लोग पानी पी लेते थे। लंडन के ब्रिटिश म्यूजियम के बाहर कल पर जंजीर द्वारा चाँदी का कटोरा बँधा हुआ मिला, पर अन्य देश इस प्रथा को शीघ्रता से छोड़ रहे हैं। कहीं-कहीं, विशेषकर अमेरिका में छोटे-छोटे पद बनाकर बच्चों को सिखलाया जाता है कि जूठे बर्तनों में पानी मत पियो। अँग्रेजी वर्णमाला का एक पद इसके संबंध में नीचे दिया जाता है, जिनको छोटे-छोटे बच्चे याद कर लेते हैं।

" D is Danger
Whenever you choose
To drink from a cup
That other folks use."

बहुत से स्कूलों में जब बच्चों से स्वास्थ्य संबंधी प्रश्न किए जाते हैं तो पूछा जाता है,

(१)

क्या तुम अपनी पेंसिल को मुँह में डालते हो ?

(२)

जिस ग्लास में दूसरा आदमी पानी पीता है क्या उसमें तुम पानी पी लेते हो ? इत्यादि।

कई स्कूलों में हमने देखा कि पाइप खोलने पर पानी की धार नीचे गिरने के बदले ऊपर की तरफ निकलती है और लड़के उस धार पर मुँह रखकर पानी पी लेते हैं, ग्लास की ज़रूरत ही नहीं पड़ती।

योरप के देशों में सफाई के लिये साबुन का प्रयोग बहुत होता है। जर्मनी में हमने साबुन के विचित्र विचित्र खिलौने देखे जो बच्चों को दिए जाते हैं। वे उनके साथ खेलते हुए साबुन का प्रयोग सीख जाते हैं। हमें एक भी बच्चा ऐसा नहीं मिला जिसकी नाक बहती हो। हर एक आदमी चाहे वह नहाए या न नहाए बाहर जाने से पहले हाथ और मुँह जरूर धो लेगा। जिस साबुन और तौलिये को एक आदमी इस्तेमाल करेगा उसको जहाँ तक हो सकेगा दूसरा इस्तेमाल नहीं करेगा। जहाज में जाते ही हर एक आदमी को एक साबुन की बटिया और एक तौलिया मिल जाता है। होटलों में भी इसी प्रकार तौलिया और साबुन मिलता है, पर बहुधा साबुन के लिये अलग पैसा देना पड़ता है। लंडन में लायंस की दुकान पर हाथ धोने के लिये भी पैसा देना पड़ता है।

हमारे देश में लोग मिट्टी से अपना हाथ धोते हैं। जिस मिट्टी से हाथ धोया वह बह गई, दूसरी बेर दूसरी मिट्टी ले ली। यह बात साबुन के साथ नहीं है। योरप के लोग इसका सुधार कर रहे हैं। बुकनी साबुन और पतला (Liquid) साबुन अब चल पड़ा है। पतले साबुन से भरी हुई शीशियाँ किसी किसी जहाज या होटल में लटकी रहती हैं; कलाई की मदद से उनमें से लोग हाथ पर साबुन उडेल लेते हैं। भारतवर्ष में हाथ धोने और बर्तन माँजने के लिये अच्छे लोग अच्छी मिट्टी काम में लाते हैं परंतु सर्वसाधारण जहाँ से चाहते हैं मिट्टी उठा लेते हैं, उनसे हाथ धो लेते हैं या बर्तन माँज लेते हैं। कभी कभी मूँज या नारियल के छिलके में मिट्टी या राख लगाकर बर्तन माँजते हैं परंतु उसी मूँज को बहुत दिनों तक काम में लाते हैं जिससे मँजे हुए बर्तनों में भी बदबू आने लगती है।

इटली छोड़कर और कहीं भी योरप में हमको साधारणतः लोग सड़क पर थूकते या नाक साफ करते हुए नहीं मिले। हमारे देश में सड़कों पर, रेल में, यहाँ तक कि अपने घर के कमरों में भी लोग थूक देते हैं। वहाँ रोगी भी ऐसा नहीं करते। रोगियों के शौचादि का भी बड़ी सफाई के साथ प्रबन्ध किया जाता है। उन लोगों में ये सब सुधार वर्षों के संयम और वैज्ञानिक ज्ञान की वृद्धि के कारण हुए हैं। रेलों में थूकने की मनाही और थूकने के कारण दंड की सूचना लिखी रहती है।

एक दिन लंडन में मैंने देखा सड़क के किनारे पर एक बंद लारी खड़ी है और उसके चारों तरफ लोग जमा हैं। पास जाकर देखा कि सिनेमा के द्वारा लोगों को सफाई की शिक्षा दी जा रही है। वह लारी दिन भर मुहल्ले मुहल्ले घूमती रहती है और स्वास्थ्य संबंधी

शिक्षा देती चलती है। ऐसी अनेक लारियाँ लंडन में हैं। बर्लिन में पेस्टलोज़ी-फ्रोबल नाम की एक शिक्षा संस्था है वहाँ हमें तीन, चार वर्ष के बच्चे मिले जिन्हें शौच आदि जाना, दाँत साफ करना और अनेक प्रकार की स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा दी जाती है।

उन देशों में सड़कों पर, मकानों के अंदर, स्टेशनों पर, कहीं भी रद्दी कागज या लत्ता या अन्य किसी प्रकार की गंदगी देखने में नहीं आती। चलती रेल में भी एक औरत आकर झाड़ू लगा जाती है। सब स्थान स्वच्छ और चमकते हुए मिलते हैं। वहाँ की आबहवा में गर्दा भी कम रहता है। फिर भी नौकरानी अपने कपड़ों पर एक सफेद जामा पहनकर सफाई बड़ी मुस्तैदी से करती है। वह यदि कुर्सी, या मेज साफ करेगी तो केवल ऊपर के हिस्से को ही साफ करके नहीं छोड़ देगी। हम लोग बनियान और लँगोट धोकर सोने से पहले रात को अपने कमरे की अलमारी पर सुखा दिया करते थे। सुखाने से पहले देख लिया करते थे कि अलमारी के ऊपर गर्दा तो नहीं है। बर्लिन में जहाँ ठहरे थे वहाँ गर्दा पाया। घंटी बजाई, नौकरानी आ गई। अलमारी के ऊपर हमने उँगलियाँ रखीं और उसे गर्दा दिखला दिया। वह 'आह' कहती हुई दौड़ गई और तीन चार मिनट में बाल्टी में साबुन घोला हुआ पानी और एक साफ़ झाड़न ले आई और उसने उसको साफ कर दिया। और उसके बाद प्रति दिन साफ करती रही। बड़े से बड़ा आदमी अपने घर को अपने हाथ से साफ करना बुरा नहीं समझता। उलिच स्टेशन पर मैं अपनी रेल के लिये ठहरा हुआ था, देखा एक आदमी खड़ा होकर लंबी झाड़ू से प्लेटफार्म साफ कर रहा है। जब रेल आई तो उस आदमी ने झाड़ू रख दी और वह मुसाफिर से टिकट लेने लग गया। लंडन की काउंटी काउंसिल के सभापति

से, जो एक करोड़पति हैं, मैं मिलने गया। उनकी स्त्री को देखा कि वे अपने मकान को साफ कर रही थीं। स्कूलों में यदि छोटी कक्षा का कोई विद्यार्थी एक कागज का टुकड़ा फेंक देगा तो बड़ी कक्षा का विद्यार्थी पीछे से आकर उसको उठा लेगा। गली गली, बाजार बाजार, रद्दी की टोकरियाँ रखी हुई मिलती हैं, जिनमें लोग ट्रांवे, 'बस' के टिकट और रद्दी फेंक देते हैं। रोम में जब हम थे तो सेंट पीटर्स कैथिड्रल और उसके आसपास एक रात खूब दीपावली हुई थी। उसमें बिजली, बिनौले और मोमबत्ती के दीये थे। दूसरे दिन सबेरे ही जब हम फिर वहाँ गये तो एक भी दीया छत पर अथवा सड़क पर गिरा हुआ या टूटा हुआ नहीं पाया। हमारे देश में दीपावली के महीनों पीछे तक दीया के टुकड़े पड़े हुए मिलते हैं।

दो प्रकार की गंदगी अवश्य योरोपीय देशों में मिलती है, सड़कों पर पालतू कुत्तों की गंदगी और सिगरेट के टुकड़े। सिगरेट की राख के लिये मेज पर एक छोटी तश्तरी पड़ी रहती है, और रेलों में एक डिबिया सी जड़ी रहती है। सिगरेट न पीनेवालों के लिये रेल में अलग डब्बे रहते हैं। थियेटरों में कहीं कहीं कुर्सी पर कटोरी बँधी रहती है।

जर्मनी में हम एक बहुत बड़ी दूकान पर गए। कोने कोने में जमीन पर एक गोलाकार चमकता हुआ बर्तन पड़ा पाया। हमने समझा कि सजावट के लिये कोई चीज रखी गई है परंतु वह थी राखदानी, क्योंकि थोड़ी ही देर में देखा कि नौकर ने मेज की तश्तरियों की राख लाकर उस बर्तन में डाल दी। वह गोलाकार बर्तन पश्चिमी सभ्यता का चिह्न-स्वरूप है; अंदर राख ऊपर से जगमगाहट। पैरिस में बहुत से लोग न नहाने के कारण शरीर से जो बदबू निकलती है उसको सुगंधित चीज कपड़ों पर लगाकर दूर कर लेते हैं।

योरप के देश सर्द हैं इसलिये वहाँ के लोग दिन भर जूता पहने रहते हैं। जूता छूकर या चमड़ा छूकर हाथ धोने की प्रथा जो हमारे देश में है, वहाँ नहीं है। हिंदुस्तान में हर कमरे में जूता ले जाना या हर समय जूता पहने रहना आवश्यक नहीं है। यहाँ की पुरानी सभ्यता यह है कि जूते बाहर छोड़ दिए जायँ और घर के कमरे प्रति-दिन धोए जायँ। यह प्रथा यहाँ के जलवायु के अनुकूल है। हम लोग अब न घर के रहे न घाट के। अपने कमरों में टाट और दरियाँ बिछा लेते हैं जिनके नीचे महीनों का गर्दा जमा हो जाता है।

योरप में गली गली कुत्ते मारे मारे नहीं फिरते। सिवाय पालतू कुत्तों के हमने और कुत्ते नहीं देखे। हिंदुस्तान में रोगी कुत्तों को भी भोजन मिल जाता है, चाहे उनके द्वारा मनुष्यों में रोग फैले। यहाँ बाजारू कुत्तों का अंत करना चाहिए।

हमारे देश में ऐतिहासिक स्थानों को जब लोग देखने जाते हैं तब पेंसिल या कोयले से अपना नाम और पता ठिकाना लिख दिया करते हैं जिससे वह स्थान गंदा हो जाता है। यह बात योरप में हमने बहुत कम पाई।

योरोप में भोजनादि का प्रबंध

हिंदुस्तान के लोग भोजन करते समय खाने की सब चीजें प्रायः एक साथ ही थाली या कटोरियों में अपने सामने रख लेते हैं। योरप में एक समय में एक चीज खाने के लिये सामने आती है। भोजनालयों में मेज पर पहले ही से मेनू (Menu) पड़ा रहता है जिसमें जो पदार्थ तैयार हैं उनकी तालिका रहती है। प्रायः किसी रसेदार वस्तु से आरंभ करते हैं और चाय या काफी से अंत करते हैं। खाना चमचे, छुरी और काँटे की मदद से खाया जाता है। उँगलियाँ भोजन के पदार्थ में नहीं डाली जातीं।

जो लोग मांस नहीं खाते उनके लिये विशेष प्रबंध करना पड़ता है। बहुत कम चीजें ऐसी हैं जिनमें अंडा न पड़ता हो। बिस्कुट, खीर, मलाई की बरफ आदि में भी अंडा रहता है। बहुत से लोग अब शाकाहारी होते जाते हैं पर वे भी अंडा खाना बुरा नहीं समझते। कुछ शाकाहारी मछली भी खा लेते हैं। ऐसे भोजनालयों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है जिनमें निरामिष भोजन मिलता है। बहुत कम नगर ऐसे हैं जहाँ एक न एक ऐसा भोजनालय न हो। लंडन में Eustace Miles, M. C. A., 40 Chandos Street, Charing Cross, London, W. C. 2 और London Vegetarian Society, 8, John Street, Adelphi, W. C. 2 के अनेक भोजनालय हैं और "Health without Meat" और The Vegetarian News नाम के पत्र भी निकलते हैं। हमारे पास ऐसे भोजनालयों की एक सूची है जिससे मालूम होता है कि इनकी संख्या जर्मनी में सबसे अधिक है। हम लोगों को शुद्ध निरामिष भोजन पाने में कहीं कठिनाई नहीं हुई यद्यपि हम लोग मांस, मछली, अंडे और चर्बी में पकी हुई चीजों से परहेज करते हैं। हम तो चाय और काफी भी नहीं पीते। जितना अच्छा दूध, जितने अच्छे फल, मटर, छीमी योरप में—विशेषकर डेनमार्क, इँगलैंड और जर्मनी में साधारणतः मिलते हैं, हमारे देश में धनी लोगों को ही मिल सकते हैं।

योरप के देशों में भोजनालयों की भरमार है। बहुत से स्थान ऐसे हैं जहाँ ठहरने के कमरे मिलते हैं और साथ ही भोजनालय भी। जिधर जाइए, गली-गली, बाजार-बाजार काफ़े (cafe), रेस्टोराँ, (Restaurant Ristorante), बफ़े (Buffet), पेंसियोने (Pensione), होटेल (Hotel) लिखा हुआ मिलेगा। इनमें से कुछ सस्ते हैं कुछ मँहगे। इनकी तड़क-भड़क, शान-शौकत निराले

ढंग की होती है। बहुत से भोजनालय अथवा उपाहारगृह तो सड़क को पटरियों पर और पेड़ों के नीचे मिलते हैं। योरप के तीन चौथाई निवासी घर के बाहर इन्हीं में भोजन कर लेते हैं। प्रातः-काल का जलपान (Breakfast) जहाँ लोग ठहरते हैं वहीं मिल जाता है। इसलिये बहुत से मकानों के बाहर, जिनमें यात्री ठहरते हैं, लिखा रहता है "Rooms and Breakfast" "Bed and Breakfast" अर्थात् यहाँ ठहरने का कमरा मिलता है और सबेरे का भोजन। सबेरे के भोजन में केवल रोटी, मक्खन, मुरब्बा और चाय या काफी होती है। योरप में मक्खन का प्रयोग लोग बहुत करते हैं। मक्खन और रोटी सब जगह मिलती है। रोटी अनेक प्रकार की होती है। फ्रांस की रोटी इतनी लंबी होती है कि छड़ी के समान आप उसे हाथ में उठा लें।

लंच Lunch (दोपहर का खाना) और Dinner डीनर (रात का खाना) के समय बड़ी भीड़ होती है। क्योंकि इन सबका समय निश्चित होता है और उनमें दफ्तरों, कारखानों और दूकानों में काम करनेवाले भी भोजन करने आते हैं। गरीबों के लिये लाइंस (Lyons), एक्सप्रेस (Express) और A. B. C. दूकानें लंडन भर में फैली हुई हैं। इनमें सस्ता खाना मिलता है। इनकी किसी किसी दूकान में एक समय में हजार दो हजार आदमी बैठकर खा सकते हैं। हजारों नर-नारी प्रातःकाल का भोजन घर पर करके अपने काम पर चले जाते हैं और Dinner बाहर करके रात को घर लौटते हैं। जिनके घर में बच्चे हैं उनको वे ऐसी संस्थाओं के सुपुर्द कर जाते हैं जो दिन भर उनको रखने की जिम्मे-दारी अपने ऊपर ले लेती हैं। इसलिये गृहस्थी का बंधन उन देशों में भारतवर्ष की अपेक्षा शिथिल है। हमने ऐसी संस्थाएँ

कई जगह देखीं। उनके प्रबंध से हमें संतोष भी हुआ। निश्चित समय के अतिरिक्त भी लोग कुछ थोड़ा खा पी लेने के लिये इन भोजनालयों में आते रहते हैं। प्राय: जब जाइए उनमें कोई न कोई खाता हुआ मिलता है। श्रीरवींद्रनाथ टगोर ने योरप की सभ्यता को Vast Catering Establishment कहा है अर्थात् भोजन के लिये बृहत् आयोजन।

पानी पीने का रवाज उन देशों में कम है। पानी के स्थान में चाय या सोडावाटर अथवा मिनरल वाटर (प्राकृतिक झरने का पानी) अथवा शराब पीते हैं। जहाँ एक ओर लोग अब मांस खाना छोड़ रहे हैं दूसरी ओर शराब पीना भी छोड़ रहे हैं। हमें सैकड़ों ऐसे आदमी मिले जिन्होंने शराब पीना छोड़ दिया है। दूकानों पर लिखा मिलता है। (Non-alcoholic drinks) अर्थात् यहाँ जो पीने की चीजें दी जाती हैं उनमें शराब नहीं रहती।

झरने का पानी बहुत लाभदायक होता है। हम लोग एक ऐसे झरने को देखने के लिये १९ सितंबर को गए। इसका नाम है बाड किसिंजन (Bad-Kissingen)। यहाँ हम जर्मनी के वूसबर्ग नगर से गए थे। Bad अँगरेजी का (Bath) शब्द है। हमारे देश में ऐसे पानी के चश्मे कई हैं जिनका जल नहाने और पीने के लिये अत्यंत लाभदायक है; परंतु हम उन्हें गंदा रखते हैं। सहस्र-धारा में (जो देहरादून के पास है) हमने लोगों को शौचादि के बाद शरीर धोते देखा। उसके चारों ओर गंदगी पाई परंतु बाड किसिंजन का दृश्य हमें कभी नहीं भूलेगा। मजाल है कि कोई उस पानी को छू ले ? चश्मा शीशे से ढका हुआ है, उसका जल नलों द्वारा चारों तरफ़ पहुँचता है। यदि आपको पानी पीना है तो पानी पिलानेवाले वहाँ मौजूद हैं। यह एक प्रकार का तीर्थ-

बाड किसिंजन का पहला झरना
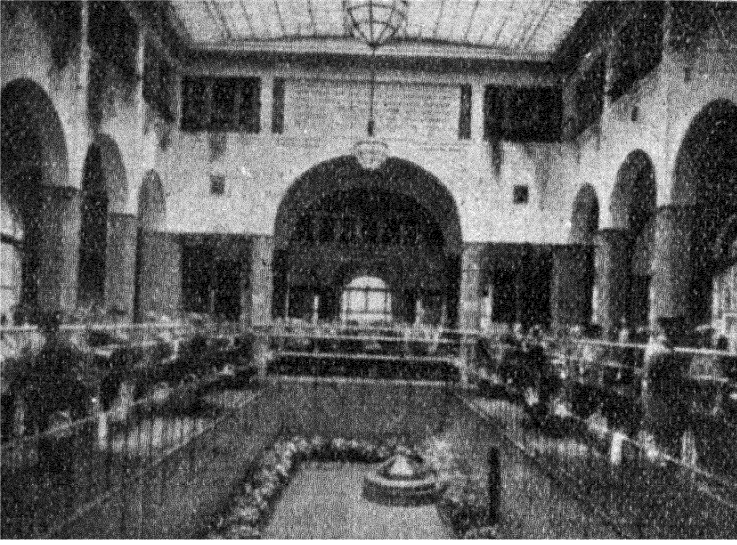
स्थान हो गया है। वहाँ रोगी और सैलानी जाते-आते रहते हैं, बड़ी बड़ी होटलें बन गई हैं, बहुत से डाक्टर बस गए हैं. अनेक
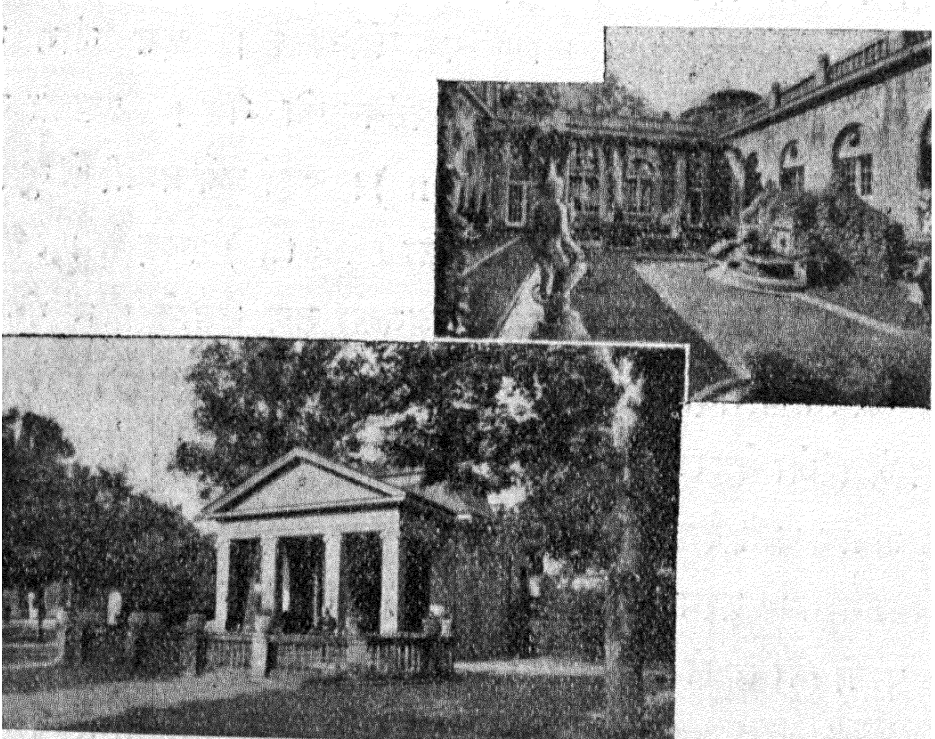
बाड किसिंजन का दूसरा झरना

प्रकार के सुंदर सार्वजनिक बगीचे हैं जिनमें प्राकृतिक शोभा का भी पूरा आनंद आता है।

जब मैं योरप से लौटकर आया, जितने लोग मुझसे मिले उनमें से तीन चौथाई ने यही प्रश्न किया कि आपने वहाँ क्या खाया और क्या पिया। हमारा जवाब यही था कि खूब मक्खन-रोटी खाई और दूध पिया। हमें महासभा में, स्कूलों में और मित्रों के घर पर दावतें खाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, सब जगह हमारी रुचि के अनुसार भोजन मिला। हाँ, दाल-रोटी हमें दो ही एक दिन लंडन में हिंदुस्तानी दूकानों पर मिली। श्री शिवप्रसादजी गुप्त ने निरामिष पदार्थों के मेनू की बहुत सी प्रतियाँ अँगरेजी, जर्मन, फ्रेंच भाषा में छपवा ली थीं और कृपा कर कुछ प्रतियाँ हमें दे दी थीं जिनमें उन पदार्थों के नाम थे जिन्हें भारतवासी खाद्य समझते हैं। उसे हम तीनों भाषाओं में नीचे उद्धृत करते हैं।

Please, supply pure vegetarian

.........Breakfast.

.........Luncheon.

.........Dinner.

By Vegetarian, is meant any food that does not contain, in any form, any flesh, fish, fowl or egg. The dishes must not be cooked in animal fat; they must be prepared in pure butter or pure vegetable oils.

Re Soups—potato, tomato, pea or lentil soups may be supplied. No stock, rennet or any matter which contains any flesh, bones, etc., should be used.

Vegetable cutlets, vegetable chops and all sorts of vegetables may be supplied.

Macaroni cooked with cheese, tomato or onions, without eggs, may be supplied.

Any tinned vegetables (peas, beans, etc.), fruits, (pears, peaches, etc.), or pure vegetable foods, such as spaghetti, etc., may be supplied.

Sweets must be prepared without eggs or jelly. Ice, if without eggs, may be supplied. Foods prepared out of any cereals may be supplied.

Speise-Karte

Ein Wort, bitte, über unsere Speisen-bedürfnisfs

Wir sind absolute Vegetarianer. Zum Frühstück, Mittagbrot sowie zur Abendmahlzeit essen wir ausschliesslich nur Gemüse, Hülsenfrüchte, Graupen, Haferflocken, Gerste, Gries, Reis, Obst u. s. w.

Wir essen überhaupt kein Fleisch, keine Fische, keine Eier, kein Geflügel, keine Austern, etc.

Jede Mahlzeit muss für uns mit reiner Butter oder reinem Pflanzenöl gekocht werden. Jedenfalls darf kein Tierfett gebraucht werden.

Beispiele

1. Suppen : wie—Kartoffel—Tomaten—Erbsen—Linsen—Bohnen u. Gemüse—Suppen. Doch darf keine Fleisch-u.-Fisch-Brühe sowie kein Fleisch-Extrakt zur Zubereitung benützt werden. Aber "Maggi" ist erlaubt.

2. Gemüse-Kroquettes sowie gedünstete Gemüse (frische oder konservierte) aller Art müssen ohne Eier zubereitet werden. Sauerkraut, Kartoffelpuffer sowie alle Salate (mit Essig u. Ol aber ohne Mayonnaise) kommen in Betracht.
3. Nudeln, Spaghetti, Macaroni mit Käse und Tomaten gebraten oder gebacken können gegeben werden.
4 Auflauf, Puddings, und andere Mehlspeisen können wenn sie ohne Eier zubereitet sind gegeben werden, z. B. rote Grütze, Mondamin, Mürbe-Teig, Blätter-Teig, etc.
5. Schlagsahne, frische oder konservierte Früchte, und Apfelmus.
6. Eis ohne Eier zubereitet : am bestens Fruchteis.

Besten Dank !

Menu

Un mot s'il vous plait sur nos demandes

Nous sommes tout-à-fait le′gumistes. Pour tous les re′pas,—le de′jeuner, le second de′jeuner et le diner,—nous mangeons seulement les le′gumes, les ce′reales, les lentiles, les fruits, etc.

La viande de toutes les sortes et de toutes les formes est entierement interdite.

Nous ne mangeons pas ègalement des poissons des oiseaux et des œufs.

Il faut cuisiner tous les re′pas sans aucune graisse animale.

C'est avec la beurre pure ou avee des huiles vegetaux que la cuisiniere doit cuire pour nous.

Exemples

1. Potage: toujours ã la Julienne. On peut employer des pommes de terre, des tomates, des petits pois, ou des lentiles,—mais pas d'ossements, d'aretes ou d'autres choses animales dans la soupe.
2. Côtelettes, etc. : exclusivenment de légumes mais sans œufs et sans graisse animale.
3. Macaroni ou Spaghetti ; cuisiné aux fromages, aux tomates, ou aux oignons : à la beurre pure, mais sans œufs.
4. Toutes les légumes fraiches ou conservées : comme les petits pois, les haricots verts, etc.
5. Tous les fruits frais ou conservés ; comme les pommes, les poires, les péches, etc.
6. Des choses douces (des gateaux) : cuisinées sans œufs et sans gelée.
7. Glace preparée sans œufs.

Merci Bien !

इससे बड़ा सुभीता हुआ।

कहीं कहीं हमें दही (Yoghaurt) खूब मिला; फ्रांस में इसे (Lait Caille) ले काइए कहते हैं। आड़ू, खुमानी, स्ट्राबरी, सलाद, खीरा, खरबूजा, अखरोट, बादाम, मलाई की बर्फ सब जगह मिलती रही। एक दिन म्यूनिक में भूना हुआ करेंट (currant) और वीनिस में उबाली हुई गर्म शकरकंदी मिली। डेनमार्क में एक प्रकार का बहुत स्वादिष्ट भोजन हमें मिला जिसे वहाँ के लोग दूध और करेंट

अथवा स्ट्राबरी से बनाते हैं। उसका नाम लिखते हैं Rodgrod परंतु उसका उच्चारण विलक्षण है। रोम में होरहा मिला। कहीं कहीं स्टेशनों पर कागज की तश्तरी में स्ट्राबरी मिली जिसमें चीनी मिली हुई थी। लंडन में Shearn's और Eustace Miles की food Reform दूकानें हमारे बहुत अनुकूल थीं। Shearn की दूकान पर जाकर अनेक प्रकार के फलों की सुगंध से चित्त प्रसन्न हो जाता था। मांसाहारियों का चित्त शाकाहार की तरफ खींचने के लिये इस दूकानदार ने फल और तरकारियों से ऐसी चीजें बनाई हैं जो मांस की तरह मालूम होती हैं और उनके नाम भी ऐसे ही रख दिए हैं जैसे Mock Turtle बनावटी केकड़ा, Mock Dove बनावटी हंसनी। यहाँ रोटियाँ भी मछली और केकड़े की शक्ल की देखने में आईं।

सावधान रहने पर भी हम इसका दावा नहीं कर सकते कि हम मांस और अंडे से बिल्कुल बचकर आए। एक ही मेज पर हमारे साथ बैठकर लोग मांस खाते थे। हम सबका परोसनेवाला एक ही रहता था, खाना भी एक ही स्थान से बनकर आता था। कहीं कहीं ऐसा भी हुआ कि पैस्टरी, सेंडिच, केक (Pastry, Sandwich, cake) और (Perridge) पारिज (खीर) खा लेने के बाद मालूम हुआ कि उसमें अंडा पड़ा था। जहाज में नौकरों को इनाम देते चलिए तो मन के अनुकूल खाना मिलने की संभावना रहती है। इन सब कठिनाइयों को देखकर बहुत से हिंदुस्तानी भाई अंडा खाने लगते हैं।

हमारे देश के बहुत से नौजवान अब दूध का प्रयोग कम कर रहे हैं—जो गरीब हैं उनको मिलता नहीं, जो धनी हैं उन्हें हजम नहीं होता। कहीं कहीं हम लोग सेर सेर भर दूध एक साथ पी

जाते जिसको देखकर येोरोपियन लोग श्रौर हमारे हिंदुस्तानी भाई भी हँसते थे, परंतु जर्मनी में हमारे साथ बैठकर खानेवालों में कई आदमी भर पेट भोजन करने के बाद दो तीन सेर अनाज से बनाई हुई शराब (Beer) उड़ा जाते थे। उनको देखकर कोई नहीं हँसता था। हमारा विश्वास है कि रोटी, मक्खन, फल, दूध श्रौर मक्खन में उबले हुए आलू मटर इत्यादि से एक निरामिष-भोजी हिंदुस्तानी, गरमियों में योरप की यात्रा कर सकता है। भारतवर्ष में जो मांस खाते हैं उनके लिये तो वहाँ कोई कठिनाई नहीं।

योरप के देशों में खाना केवल उबालकर आपके सामने रख दिया जाता है। नमक मिर्च मसाला उसमें नहीं डाला जाता। जितना आपकी इच्छा हो पीछे से नमक मिला लीजिए, काली मिर्च की बुकनी भी सामने पड़ी रहती है, आप चाहें तो उसको भी मिला सकते हैं। हमारे एक मित्र हर जगह सिरका श्रौर मसटर्ड (राई) माँगा करते थे जो उनको मिल जाती थी। लंडन में ताजमहल, वीर स्वामी श्रौर शफी की दूकानों पर हिंदुस्तानी भोजन मिलता है।

भोजनालय में मेज-कुर्सी लगी रहती है। मेज पर बहुत साफ कपड़ा बिछा रहता है। आपको अंदर जाकर एक कुर्सी पर बैठ जाना चाहिए, थोड़ी ही देर में एक मर्द या स्त्री आपके पास आयगी, आप उसको बतला दें कि मेनू की छपी हुई चीजों में से कौन सी चीजें आप खायँगे, वही चीजें एक दूसरे के बाद आपके सामने लाई जायँगी। भोजन आरंभ करने से पहले एक रूमाल अपनी जाँघ पर रख लेना चाहिए जिसमें यदि खाने की कोई चीज गिरे तो पहिनने का कपड़ा खराब न हो। ये रूमाल (Serviette) साधारण भोजनालयों में कागज के होते हैं, जिन्हें हम एक बार काम

में लाकर फेंक दें। इसी प्रकार कागज के ग्लास, कागज की तश्तरी भी हमारे देखने में आईं।

योरप की स्त्रियाँ

किसी देश की स्त्रियों के संबंध में कुछ लिखते या कहते बड़ा संकोच होता है। जहाज में बैठते ही कुछ असाधारण बातें देखकर भारतीय हृदय को बहुत बड़ा सदमा पहुँचता है। योरप पहुँचकर और वहाँ की बाहरी अवस्था देखकर वह दुःख और भी बढ़ जाता है। स्त्रियों का सिगरेट और शराब पीना साधारण-सी बात है। हमने सुना था कि भोजन के अनंतर सिगरेट पीने के लिये मर्द स्त्रियों से अलग हो जाते हैं; यह बात अब नहीं है। लोगों ने हमें बतलाया कि इन दोनों बुराइयों को वहाँ की स्त्रियों ने लड़ाई के समय सीखा जब वे दिन रात चिंता में रहती थीं। उनके मर्द, भाई, पिता सब लड़ाई में गए थे, उनके ऊपर न केवल बच्चों के पालने का ही भार था बल्कि रुपया कमाने का उत्तरदायित्व भी उनके सिर पर आ पड़ा था। ऐसे समय में वे बेचारी अपने दुःख को दूर करने के लिये थोड़ी मदिरा पी लेती थीं या सिगरेट का प्रयोग कर लेती थीं।

जहाज में, बाग-बगीचों में यहाँ तक कि गिरजाघरों के बाहर भी अँधेरा होने पर औरत और मर्द ऐसा व्यवहार करते हुए मिले जिसके देखने का अवसर हिंदुस्तानियों को अपने देश में नहीं मिलता। इसके लिये लंडन का हाइडपार्क बहुत बदनाम है। ऐसे जीवन का मुख्य कारण शराब है। गंदी बीमारियाँ सारे योरप में बढ़ रही हैं। किसी सभ्य लेखनी द्वारा ऐसी बातों का वर्णन करना कठिन है। वहाँ के लोग निजी (प्राइवेट) जीवन को सार्वजनिक (पबलिक) जीवन से अलग समझते हैं। किसी के

निजी जीवन की जाँच पड़ताल नहीं करते। ऐसी बातों को देखकर बगल से चले जाते हैं।

इटली पहुँचकर हमने देखा कि स्त्रियाँ अपने होठों को लाल रँगती हैं। यह प्रथा फ्रांस में अधिक पाई। रेल में स्त्री मर्द एक ही कमरे में एक साथ यात्रा करते हैं। शीशा, कंघी, पाउडर उनके साथ रहता है। आवश्यकता पड़ने पर वे सबके सामने शीशा निकालकर अपना मुँह देखने लगती हैं। कंघी से अपने बाल सँवार लेती हैं और चेहरे पर पाउडर लगा लेती हैं। पर-पुरुष के सामने खिलखिलाकर हँसना बुरा नहीं समझा जाता है। शरीर को बनावटी तौर पर सुंदर रखने के लिये अनेक प्रकार के साबुन और मक्खन, तरह तरह की बुकनी बाजारों में मिलती हैं। Complexion soap, Complexion cream, cleansing cream, Nourishing cream आदि के इश्तिहार मोटे मोटे अक्षरों में चारों तरफ देखने में आते हैं। अनेक प्रकार की ऐसी वस्तुएँ (Rouge) बिकती हैं जिनसे होठ या गाल रँगे जाते हैं।

हम लोगों का विश्वास था कि हमारे देश में पति-पत्नी-संबंधी (Sex) विचार बच्चों को योरप की अपेक्षा जल्दी हो जाता है जिसके हम तीन कारण समझते थे—एक इस देश की गरमी, दूसरे माता पिता की असावधानी और तीसरे गली बाजारों में रात दिन गालियों का सुनना। गाड़ीवाला घोड़े को, बैलवाला बैल को, माँ बहन की गाली देता है, जिसको लोग बचपन ही से सुनते हैं। परंतु योरोपीय देशों में भी इस संबंध की ऐसी बहुत सी बातें हैं। उनमें से दो एक का उल्लेख हमने ऊपर कर दिया है। दूसरे, माता पिता का सदैव एक बिस्तरे पर सोना। तीसरे, अधिक बच्चों के पैदा होने को रोकने के संबंध की (Birth control) सामग्री का

खुल्लमखुल्ला दूकानों पर बिकना। वीयना में लघुशंका करने के स्थान में रबर की ऐसी एक चीज, जिसका नाम Gummi लिखा है, रखी रहती है। कल में पैसा डालते ही वह बाहर निकल आती है। फ्रांस में गर्मी, सुजाक आदि रोगों से बचने के उपाय कहीं कहीं पेशाबखानों में सचित्र लटके रहते हैं। वहाँ वेश्याओं की सामयिक डाक्टरी परीक्षा होती है। जर्मनी में एक बड़े विद्वान् और अनुभवी मित्र ने हमें बतलाया कि विद्यार्थियों में ये रोग बहुत बढ़ रहे हैं जिसके कारण वहाँ के शिक्षक लोग बहुत चिंतित हैं। दुःख की बात है कि यह शिकायत हिंदुस्तान में भी सुनने में आ रही है। चौथे, योरप भर में नंगी मूर्तियाँ सब जगह मिलती हैं। ऐसी मूर्तियाँ हमें संग्रहालयों में, सड़कों पर, क्रिस्टल पैलेस में और विश्वविद्यालयों के बाहर भी मिलीं। वे कहते हैं कि ऐसी मूर्तियों को मूर्तिनिर्माण-कला की दृष्टि से देखना चाहिए। जहाज में और कई दूसरी जगह जहाँ केवल मर्द ही मर्द नहाते धोते हैं वहाँ कई बेर देखा कि मर्द नंगे होकर सबके सामने तौलिये से बदन पोंछने लगते हैं। बहुत से थियेटर और अन्य तमाशों में स्त्रियाँ प्रायः नंगी होकर खेल दिखलाती हैं। पाँचवें, बड़े बड़े नगरों में इस बात का विज्ञापन रहता है कि आप चाहें तो वहाँ की Night life (निशाचर जीवन) देख लें "Night Life of Paris, Night Life of Berlin" आदि मोटे अक्षरों में लिखा रहता है। जो देखना चाहे उसका प्रबंध गाइड लोग कर देते हैं। यह हवा मिस्र देश की राजधानी तक पहुँच गई है।

केवल येही बातें देखकर यदि हम भारतवर्ष लौट आए होते तो हमें बड़ा दुःख होता और कुछ भी फायदा न होता। जिन महासभाओं में हम गए और वहाँ जिन महिला-रत्नों के हमें दर्शन हुए और जिन बहिनों ने अपने घरों में हमें निमंत्रित किया उन्होंने स्त्री

जाति के लिये हमारे हृदय में सच्चा आदर पैदा कर दिया। हमें यह मालूम हो गया कि अपने अपने देशों का सिर संसार में ऊँचा करने के लिये योरप की स्त्रियों ने पूरा प्रयत्न किया है। शिक्षा-प्रचार में और जनता की सेवा में इनका कार्य अलौकिक है। इस समय सारे संसार में इटली की डाक्टर मांटीसोरी (Dr. Maria Montessori) का नाम फैल रहा है। इन्होंने शिक्षा-प्रणाली में विलक्षण परिवर्तन कर दिया है। यह पहली स्त्री थीं जिन्होंने रोम के विश्वविद्यालय से चिकित्साशास्त्र की डिग्री प्राप्त की। पहले इनको ऐसे स्कूलों के निरीक्षण का भार दिया गया था जिनमें बोदे, कम बुद्धिवाले और कमजोर लड़के पढ़ते थे। ऐसे स्कूल भी योरप में बहुत हैं। कुछ दिनों के बाद इनकी शिक्षा-प्रणाली से बोदे लड़कों की बुद्धि भी चमक निकली। अनुसंधान से पता लगा कि इनके सिद्धांतों के अनुसार यदि साधारण बुद्धि के बालकों को भी शिक्षा दी जाय तो उनका कल्याण हो।

डाक्टर मांटीसोरी

दूसरी महिला-रत्न जिनके अद्भुत वक्तृत्वशक्ति, संगठन-शक्ति और शिक्षा-सिद्धांतों के ज्ञान ने हमें प्रसन्न कर दिया, मिसेज बिट्रसे एनसोर (Mrs. Beatrice Ensor) हैं। यह इँगलैंड देश

से कोई देवी इस नीरस गद्यमय संसार को मधुर काव्य-रस से ओत-प्रोत करने आ गई हैं। बाइबल, मिल्टन, ब्राउनिंग, शेक्सपियर, रवींद्रनाथ टगोर आदि के पद इन्हें याद हैं और वे उन्हें इस प्रकार पढ़ती हैं कि उनके अर्थ चुभते हुए आपके हृदय में जाकर बैठ जाते हैं।

मिस मार्जेरी गुलन

लंडन के ईस्ट-एंड में बहुत गरीब और गंदे लोग रहते हैं। वहाँ के लोगों के सुधार के लिये जितना कार्य स्त्रियाँ करती हैं वह संसार के लिये मनुष्य-सेवा का अद्भुत उदाहरण है। मिस लेस्टर एक महिला हैं जिनको अपने पिता से लाखों की संपत्ति मिली थी। उन्होंने सारी संपत्ति ईस्टएंड के सुधार के लिये दे दी, और आप स्वयं वहीं एक साधारण से मकान में साधारण भोजन पर रहती हैं। एक स्त्री हमें मिलीं जो उच्च कुल में धनी के घर पैदा होकर भी बचपन से ईस्टएंड के लोगों की सेवा अवैतनिक रूप से कर रही हैं, यहाँ तक कि उन्होंने अपना विवाह भी उसी श्रेणी के

एक मर्द से कर लिया है जिसके कारण समाज ने उनका एक प्रकार से बहिष्कार कर दिया है। इन्होंने कृपापूर्वक हमें ईस्टएंड का बहुत सा हिस्सा दिखलाया। इनसे बिदा होते समय मैंने उनका पता पूछा। उन्होंने पता लिख दिया। उनके पति भी उस जलसे में मौजूद थे जहाँ वे मुझे ले गई थीं। इन महिला का नाम मिसेज प्लैटन (Mrs. Platten) है। मैंने इनसे पूछा कि मुझसे पत्र-व्यवहार करने के लिये क्या आपको अपने पति से आज्ञा लेने की आवश्यकता होगी। उन्होंने कहा, "नहीं, वह मेरा विश्वास करते हैं और मैं उनका विश्वास करती हूँ।"

प्राय: जितनी सभा-समितियों में हम लोग गए उनमें स्त्रियों को बहुत काम करते पाया। हम लोगों से वे इतने प्रश्न पूछती थीं कि हम उनकी बुद्धिमत्ता पर चकित हो जाते थे। डेनमार्क में स्त्रियों को प्राय: तीन भाषाएँ बोलते पाया—अँगरेजी, जर्मन और अपनी मातृभाषा।

खाते समय वहाँ प्रत्येक स्त्री के साथ एक पुरुष बैठता है। पुरुष का कर्तव्य होता है कि उसके पास जो स्त्री बैठे उसको वह बातचीत में लगाए रहे। मुझे जब जब किसी स्त्री के पास बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ मैंने उसके ज्ञान का क्षितिज अपने से अधिक विस्तृत पाया। ऐसे समय मैं बहुधा भारतवर्ष की चर्चा छेड़ देता था जिसके संबंध में उनको बहुत कम मालूम रहता था। बात यह है कि योरप के देशों में अनिवार्य शिक्षा है, इसलिये प्रत्येक स्त्री पढ़ी लिखी हैं। वे अपने व्यवसाय संबंधी और अन्य विषयों पर भी पुस्तकें और समाचारपत्र पढ़ा करती हैं। इसके अतिरिक्त योरप में संग्रहालयां और जंतु-शालाओं की इतनी प्रचुरता है कि इनमें एक बेर घूम आने से भी ज्ञान का विस्तार बढ़ जाता है।

रेल के कमरों में भौगोलिक और प्राकृतिक दृश्यों के सुंदर चित्र लगे रहते हैं, गली-गली ऐतिहासिक व्यक्तियों की विशाल मूर्तियाँ वे प्रतिदिन देखा करती हैं, इसलिये कोई आश्चर्य नहीं है कि एक पढ़े लिखे भारतवासी की अपेक्षा एक पढ़ी लिखी योरोपियन महिला अधिक ज्ञान रखती है। पेरिस में हम लोगों को एक महिला मिली जो संस्कृत पढ़ रही थी। उन देशों में ज्ञान उपार्जन के अनेक साधन हैं। बर्लिन और म्यूनिक में हम लोगों ने प्लैनिटेरियम (Planetarium) देखे। कमरों के अंदर लोग कुर्सी पर बैठ जाते हैं और अँधेरा कर दिया जाता है। एक यंत्र के चलते ही आकाश और पृथ्वी चलते हुए मालूम होते हैं। आकाश पर तारे निकल आते हैं। एक सज्जन व्याख्यान द्वारा सब बातें समझाते चलते हैं। इसके अतिरिक्त सामाजिक जीवन के उपयोगी शिक्षा भी उन्हें दी जाती है। रोटी पकाना, सीना-पिरोना, नाचना-कूदना, खेलना इत्यादि जानना आवश्यक है। एक स्त्री ने जहाज में मुझसे कहा ("Your education is incomplete") तुम्हारी शिक्षा अधूरी है, क्योंकि तुम खेल-कूद हँसी-मजाक में तो शरीक होते ही नहीं।

वहाँ की स्त्रियों में एक प्रकार का व्यक्तित्व है। पहले रेल में या ट्रामवे में भीड़-भाड़ के समय मर्द स्त्रियों को बैठने की जगह दे देते थे और आप खड़े रहते थे। यह बात अब बहुत कम हो गई है। स्त्रियाँ अब अपने पैरों पर खड़ा होना पसंद करती हैं। इँगलैंड, फ्रांस और जर्मनी में मर्दों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या अधिक है। लड़ाई में हजारों मर्द मारे गए। ऐसी अवस्था में अनेक स्त्रियाँ बिना व्याही हैं और उनको बिना किसी मर्द की सहायता के अपनी जीविका उपार्जन करनी पड़ती है। वे दूकानें करती हैं, भोजनालयों में खाना परोसने का अथवा खजानची का काम करती हैं,

लोगों के कपड़े धोती हैं अथवा स्कूलों में पढ़ाने का काम करती हैं; पुलीस में कांसटेब्ल भी हैं। इस प्रकार संसार से युद्ध करती हैं और अपने व्यक्तित्व की रक्षा करती हैं। मजाल है कि कोई मर्द उनकी तरफ आँख उठाकर देख ले। हमारे देश में मंदिरों में, घाटों पर, बाजारों में मर्दों का स्त्रियों की ओर घूरना मामूली सी बात है। इसका बहुत बड़ा कारण निरक्षरता और पर्दा है। योरप में कई बार ऐसा देखने में आया कि एक अकेला मर्द एक अकेली स्त्री के साथ किसी दफ्तर में काम कर रहा है अथवा लिफ्ट में ऊपर-नीचे जा रहा है। सर्द देश होने के कारण वहाँ के लोगों को आदत पड़ गई है कि सब काम दरवाजे बंद करके करें। सोने, शौच आदि जाने और नहाने का प्रबंध स्त्रियों के लिये अलग रहता है, परंतु नहाने का कपड़ा पहनकर मर्द और स्त्री एक ही स्थान पर तैरते हुए मिलते हैं। स्त्रियाँ खूब कसरत करती हैं।

वेदों से हमें अभय की शिक्षा मिली है—

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ॥
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥
अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् ॥
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥

(अथर्ववेद)

हम सबको अंतरिक्ष और पृथ्वी अभय प्रदान करें, हम सब पीछे से अभय होवें, आगे से अभय होवें, ऊपर से और नीचे से अभय होवें, हम सब मित्र से अभय होवें, शत्रु से अभय होवें, ज्ञात पदार्थ से अभय होवें, और अज्ञात पदार्थ से अभय होवें, रात को अभय रहें और दिन को अभय रहें, सब दिशाओं के रहनेवाले हमारे मित्र होवें।

ऊपर लिखे हुए वेदमंत्र में "अभय" होने के लिये प्रार्थना की गई है। पर हमारे देश में हो रहा है अब इसका उलटा। हमारी स्त्रियों का जीवन रात-दिन डर ही में बीतता है। वे मर्दों से डरती हैं, अपने पति से डरती हैं, यात्रा करते समय डरती हैं, अँधेरे से डरती हैं, देवी-देवताओं से डरती हैं, भूतों से डरती हैं, इसी का परिणाम है कि हमारे बच्चों को "अभय" का मंत्र सुनानेवाली माताएँ कम मिलती हैं।

योरप देश की यात्रा में स्त्रियों को मैंने "अभय" की मूर्ति पाया, उनमें से कई अकेली संसार की यात्रा कर आती हैं। पैरिस में एक इँगलिश महिला से भेंट हुई, वह ३६ बेर एटलांटिक महासागर पार कर चुकी थी अर्थात् १८ बेर योरप से अमेरिका हो आई थी।

यह हँसता हुआ चित्र १९ बरस की एक जर्मन लड़की का है, उसका नाम है लुई हाफमन (Luise Hoffmon)। उसका जन्म

कुमारी हाफमन

८ जुलाई १९१० को हुआ था और १० जुलाई १९२९ को उसने हवाई

जहाज चलाने की परीक्षा पास की। गत सितंबर में जब मैं जर्मनी में था तब वहाँ उसकी बड़ी चरचा थी। निर्भय होकर यह लड़की आकाश में उड़ती है। उस समय जर्मनी में १३ स्त्रियाँ ऐसी थीं जो हवाई जहाज चलाती थीं पर उनमें सबसे छोटी कुमारी हाफमन थी।

यह तो हुई आकाश की बात। डेनमार्क की मेली गेड (Melly Gade) नाम की स्त्री ने इँगलिश चैनल पार किया। यह समुद्र का एक टुकड़ा है, जहाज साधारणत: सात घंटे में इसको पार करता है। यह निडर स्त्री तैरकर इसको पार कर गई। अभी थोड़े ही दिन हुए कुमारी मरसीडीज डीजे (Mercedes Gleitze) २६ घंटे पानी के अंदर तैरती रही। जुलाई के अंत में जब मैं जनीवा में था, मैंने अनेक स्त्रियों को वहाँ की झील में तैरते हुए देखा। यही बात सारे योरप में पाई। स्कूलों में अथवा सर्वसाधारण के स्नानागारों (Baths) में जिनका प्रबंध वहाँ की म्यूनिसिपैलिटी करती है स्त्रियाँ खूब तैरती हैं, और ऊपर से पानी में बेधड़क कूद जाती हैं।

विस्सूवियस का ज्वालामुखी पर्वत देखने जब हम गए तब वहाँ स्त्रियों को खड्ड में उतरते देखा जिसमें कहीं कहीं आग का धुआँ भी निकलता था। कुछ दिनों के बाद 'शामोनी पर्वत' में जब हम बर्फ की नदी देखने गए तो कई स्त्रियों को ग्लेशियर पार करते देखा और भयानक स्थानों में कलोलें करते पाया। वे बर्फ के गहरे गड़हों में कूद जातीं जहाँ फिर से ऊपर आना उनके लिये मुश्किल हो जाता। ऊपर से हाथ खींचकर या नीचे से ढकेलकर उनके साथी उनको ऊपर चढ़ा देते पर वे फिर नीचे कूद जातीं। इसी प्रकार अनेक टोलियाँ अपने अपने साहस का परिचय देती थीं।

मिस्र देश के अलेकजेंडरिया नगर में पाम्पी (Pampay) नाम का एक स्तंभ है जो ८८ फुट ऊँचा है। कहा जाता है कि मिस

टैलबट नाम की एक योरोपियन महिला उसके ऊपर चढ़ गई और वहाँ बैठकर उसने खाना खाया और एक पत्र लिखा।

जब हम कोलंबो से जहाज पर योरप जा रहे थे, एक स्त्री जाँघिया और तंग कुरती पहने हुए सबके सामने लड़कियों को कसरत करा रही थी। नित्य प्रति वह ऐसा ही करती थी।

२७ अगस्त को बर्लिन में हम वहाँ की सबसे बड़ी व्यायामशाला (Stadium) देखने गए। वहाँ अनेक प्रकार की कसरतों का अद्भुत प्रबंध था। उसकी संचालिका एक स्त्री है। उसका नाम मिस मोगडा कावस्की है। उसके शरीर की सी बनावट, उसका-सा फुर्तीलापन, उसके जैसी सुंदरता हमारे देश में स्वप्न में भी देखने में नहीं आती।
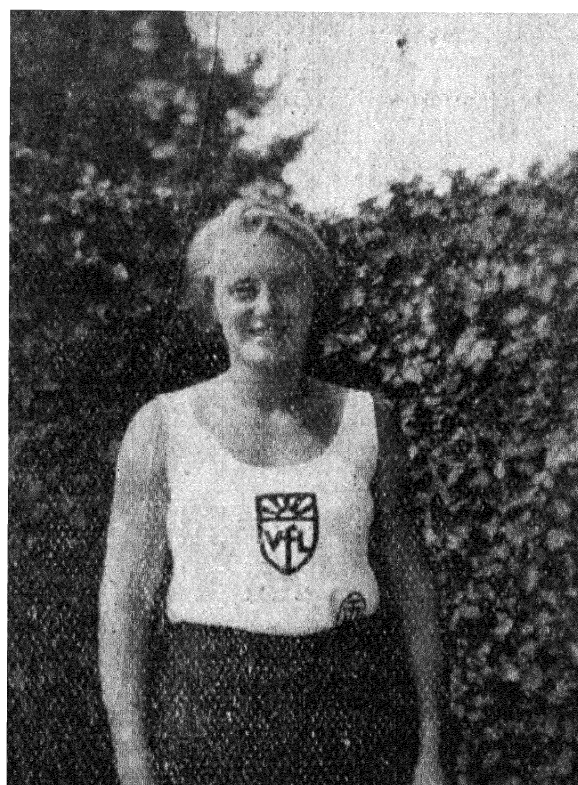
कुमारी मोगडा कावस्की

इन्हीं कारणों से संसार की दौड़ में वहाँ की स्त्रियाँ मर्दों का साथ देती हैं। सभा-समाजों में स्त्रियों की संख्या मर्दों से कम नहीं रहती, और वाद-विवाद में भी उनका हिस्सा मर्दों से किसी तरह कम नहीं होता। ऐसी माताओं की संतान भानमती के पिटारे में रखने लायक बबुए नहीं होते।

उसी बर्लिन की व्यायाम-शाला में जिसका वर्णन ऊपर आया है तालाब के किनारे हम लोग बैठे थे, दूसरी तरफ एक स्त्री और एक मर्द विश्राम कर रहे थे और उनका बच्चा खेल रहा था। खेलते खेलते वह पानी के पास चला आता और फिर चला जाता। कभी कभी पानी में पैर तक डाल देता; उसके माता पिता दूर से देखकर हँसते थे। जहाज में छोटे छोटे बच्चे मस्तूल के रस्सों पर, किनारे के छड़ों पर बेखटके चढ़ जाते हैं। लंडन में एक दिन असबाब लादने की खुली लंबी चलती मोटर गाड़ी पर मैंने एक लड़के को कूदकर पीछे से ऊपर चढ़ते हुए देखा। हमारी माताएँ बच्चों को ऐसा करते देखकर घबरा जाती हैं, चिल्लाने लगती हैं और कभी कभी उनको मार भी देती हैं—यही कारण है कि हम लोग बचपन ही से बोदे, डरपोक और रोगी होते हैं, घर बैठे एक रोटी मिल जाय तो बाहर यदि साम्राज्य भी मिले तो नहीं जायँगे।

छः महीने की यात्रा में हम लोग अनेक नगरों और ग्रामों में गए, अनेक गृहस्थों और व्यापारियों के साथ रहे, साधारणतः कहीं भी रोता हुआ बच्चा नहीं मिला। यह बहुत बड़ी बात है। दिन में बीस दफा रोनेवाले बच्चों की, जवानी में स्वाभाविक रोनी सूरत हो जाती है। योरप की स्त्रियों के लिये यह महान् गौरव की बात है कि उनके बच्चे साधारणतः नहीं रोते। हमारे यहाँ बच्चों का रोना मामूली बात है। वहाँ के छोटे छोटे बच्चे भी निडर होते हैं। १८ जुलाई को एक देवी ने मुझे पैरिस में भोजन के लिये निमंत्रित किया। भारत संबंधी बात-चीत करते रात के ग्यारह बज गए। पैरिस के लोग बड़े रँगीले हैं। रात के समय इतने लोग मोटरों में बाहर निकलते हैं कि सड़क पर एक तरफ से दूसरी तरफ जाना कठिन हो जाता है। देवी की दो छोटी भतीजियाँ थीं, मुझे सड़क

की दूसरी तरफ जाकर पाताल की (Under-Ground) रेल से जाना था। मोटरों की भरमार थी। पटरी से सड़क पर पैर रखने की हिम्मत नहीं थी पर ये दोनों लड़कियाँ सड़क पर उतर ही गई। बच्चों को देखकर वहाँ के लोग गाड़ी की चाल धीमी कर देते हैं।

स्वाभिमान, संयम और निर्भयता आदि गुणों के कारण वहाँ की स्त्रियाँ साहसी, योद्धा और विद्वान् उत्पन्न कर सकती हैं।

जनीवा झील में एक दिन हमने देखा कि एक जहाज छूटने ही वाला था, ठीक समय पर एक मोटर आई उस पर महिलाएँ थीं। जहाज पर एक मेम, जो उनकी मित्र थी, पहले ही चढ़ चुकी थी। वह दौड़ी और उसने उन्हें जहाज पर खींच लिया, तीनों बैठ गई और जहाज खुल गया। एक पिछड़ गई, इसलिये बैठ न सकी। पर वह घबराई नहीं। झट मोटर में आ बैठी और मोटर दौड़ाकर आगे के बंदरगाह पर पहुँच गई, जहाँ उसको वही जहाज मिल गया। यह है उनका साहस और धैर्य।

योरप में प्राय: हर एक बड़े नगर में एक न एक चित्रशाला है। इन चित्रशालाओं में प्राचीन और नवीन चित्रों का अद्भुत और बहुमूल्य संग्रह मिलता है। वहाँ बैठी हुई विशेष विशेष चित्रों की प्रतिलिपि लेती हुई स्त्रियाँ देखने में आई। इन चित्रों द्वारा वे बहुत सा रुपया कमा लेती हैं। हमने एक लड़की को देखा जो एक चित्र तैयार कर रही थी, उसने कहा कि मैं इसको अमुक प्रदर्शनी में भेजूँगी जो एक वर्ष बाद होनेवाली थी। वह उसके लिये पहले ही से तैयारी कर रही थी।

वहाँ की स्त्रियाँ मर्द बनने का प्रयत्न कर रही हैं। बालों को कटवाती हैं, ऊँचा कोट और ऊँचा मोजा पहनती हैं और बहुत तेजी के साथ चलती हैं। हमारे देश में गाँव के लड़के भी शहर के

स्कूलों में आकर बाल रखने और माँग काढ़ने लगते हैं। तेज या दूर तक चलने की उनकी आदत छूट जाती है। एक दिन जब मुझे स्वीडन से जहाज पर बैठकर प्रातःकाल डेनमार्क आना था मैं बड़े सबेरे अपने स्थान से बंदरगाह की ओर तेजी से जा रहा था। मैं समझता हूँ कि तेज चलने का मुझे कुछ अभ्यास है। दूर जाकर मुझे पीछे की तरफ किसी के चलने की आहट मालूम हुई। घूमकर देखा तो दो स्त्रियाँ आती हुई दिखलाई दीं। वहाँ का नियम है कि पटरी पर मर्द सड़क के किनारे की तरफ चलता है। मैं सड़क की तरफ हो लिया और मैंने स्त्रियों को आगे बढ़ जाने के लियं स्थान दे दिया। उन्होंने कहा "क्या आप भी लेक्चर सुनने के लिये उस पार चल रहे हैं ?" मैंने कहा—"जी हाँ।" उन्होंने कहा—"तो तेज चलना जारी रखिए। आप ही को देखकर हम भी तेज आ रही हैं और ट्रामवे में नहीं बैठीं।" हम लोग बहुत दूर तक साथ चले। वे इँगलैंड की रहनेवाली थीं। उन्हें इस बात पर आश्चर्य हुआ कि हिंदुस्तान के (जो गर्म देश है) रहनेवाले भी तेज चल सकते हैं। मैंने उनको बतलाया कि हमारे देश में मुझसे भी बहुत ज्यादा तेज लोग चल सकते हैं।

इँगलैंड में थोड़े दिन पहले तक स्त्रियाँ पार्लामेंट की सदस्य नहीं हो सकती थीं, कैंब्रिज और आक्सफोर्ड में डिग्रियाँ नहीं प्राप्त कर सकती थीं और उनको वोट देने का अधिकार नहीं था। इन सब अधिकारों को प्राप्त करने के लिये उन्होंने घोर आंदोलन किया और आज इँगलैंड की स्त्रियों का मर्दों की दृष्टि में बड़ा ऊँचा स्थान है। नेपोलियन से लोगों ने एक बेर पूछा कि आप लंडन पर कब धावा करेंगे। उसने उत्तर दिया "इँगलैंड के लोग स्पेन, पुर्तगाल आदि देशों की तरह नहीं हैं, यदि उनके मर्द मारे जायँगे तो उनकी स्त्रियाँ युद्ध क्षेत्र में आकर लड़ेंगी।"

स्विजरलैंड, इटली, और फ्रांस में अब तक स्त्रियों को वोट देने का अधिकार नहीं है।

योरप में विवाह की प्रथा हमारे देश से भिन्न है। हमारे यहाँ विवाह एक संस्कार है, उनके यहाँ विवाह एक प्रकार का ठीका है। रेल में एक स्त्री हमें मिली। जान पहचान बढ़ जाने पर उसने कहा "मेरा पति महासमर में गया था, जब मैंने सुना कि वह लुंजा हो गया तब मैंने उसको तिलाक दे दिया और एक दूसरे मर्द से अपना विवाह कर लिया।" हमारे देश में पति के लँगड़े-लूले, अंधे-काने होने पर भी स्त्री उसकी सेवा करना अपना धर्म समझती है। वहाँ पति का चुनाव स्त्री पुरुष एक दूसरे से मिलकर कुछ दिन साथ रहकर अपने आप कर लेते हैं। अभी तक यह प्रथा थोड़ी बहुत जारी है कि अपने माता पिता की अनुमति विवाह से पहले ले लें। पर यह प्रथा अब बहुत कम हो रही है। हमारे देश में पति पत्नी का चुनाव एक संकुचित क्षेत्र में होता है। ब्राह्मण ब्राह्मण में और क्षत्रिय क्षत्रिय में भी विवाह नहीं हो सकता। उन देशों में साधारणत: जो जिससे चाहे विवाह कर सकता है। इँगलैंड में एक स्कूल के हेडमास्टर की धर्मपत्नी ने मुझसे कहा कि मेरा पति पहले एक दूसरे स्कूल में हेडमास्टर था और वहीं मैं मालिन का काम करती थी। यह स्त्री मेरे सामने अपने पति की बड़ी सेवा करती हुई पाई गई। अनेक स्थानों में बुड्ढे स्त्री और मर्दों ने हम लोगों से शिकायत की कि जवान औरतें और मर्द छुट्टीवाले दिन गायब हो जाते हैं और विवाह के कुछ दिनों पहले संबंध निश्चित हो जाने की सूचना देते हैं। राजघराने में और धनाढ्य घरों में अब तक माता पिता की पूर्ण अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।

कोई स्त्री मर्द से अपने विवाह की बातचीत नहीं करेगी, मर्द ही शुरू करेगा। पर मल मास में इसके विपरीत होता है। अधिकतर जब नाच होते हैं या भोज होता है तभी इस प्रकार की जान पहचान हो जाती है। योरप में मर्द का परिचय पहले कराया जाता है, स्त्री का परिचय पीछे। विवाह गिर्जा में होता है और उसकी रजिस्टरी कराई जाती है। बहुत से लोग गिर्जा से अन्यत्र भी विवाह करा लेते हैं। विवाह के समय बहुत से लोग निमंत्रित होते हैं। दूल्हा और दुलहिन बड़े सुंदर कपड़े पहिनकर आते हैं और अनेक प्रकार के धार्मिक कृत्य करते हैं। विवाह हो जाने के अनंतर उन पर चावल की और कहीं कहीं जूतों की वर्षा होती है। मित्र लोग अनेक प्रकार की वस्तुएँ भेंट करते हैं। हमने भी कई विवाह देखे और विवाह की मिठाइयाँ और रोटियाँ देखीं। विवाह की समाप्ति पर स्त्री का नाम अपने पति के नाम पर रखा जाता है। स्वतंत्रता-प्रेमी बहुत सी स्त्रियाँ महिला-सभाओं में अब यह भी प्रस्ताव उपस्थित कर रही हैं कि स्त्री मर्द के नाम से क्यों पुकारी जायँ; क्यों न मर्द स्त्री के नाम से पुकारा जाय।

अंत में दूल्हा और दुलहिन कुछ दिनों के लिये किसी एकान्त स्थान में चले जाते हैं, इस रवाज को 'हनी मून' कहते हैं। एक मर्द एक ही स्त्री से विवाह कर सकता है। उसके मरने पर या उसको छोड़ देने पर दूसरी से विवाह होना संभव है।

प्रत्येक स्त्री के लिये गाना और नाचना जानना आवश्यक है। मर्द भी ऐसे बहुत कम होंगे जो गा और नाच न सकते हों, भोजन के बाद सब लोग खूब नाचते और गाते हैं। बहुत सी कसरतें नाच के नाम से प्रसिद्ध हैं, पर उनमें खेलते कूदते अच्छा शारीरिक परिश्रम हो जाता है। स्त्रियाँ कृत्रिम उपायों से अपनी कमर को

पतली करती हैं। यह उनकी दृष्टि में सुंदरता का एक चिह्न है। वहाँ के लोग अब इसके भी विरुद्ध हो रहे हैं।

जर्मनी में एक संस्था का पता लगा जिसके सदस्य, मर्द और स्त्री सब एक साथ नंगे होकर कसरत करते हैं। इनकी सचित्र पत्रिका की एक प्रति मैं अपने साथ लाया था जिसपर बंबई के कस्टम कार्यालय के लोगों ने बड़ा एतराज किया था। इसमें अनेक चित्र हैं जिनमें स्त्री और मर्दों का बिल्कुल नग्न होकर कसरत करना दिखलाया गया है।

पढ़ाने के काम में स्त्रियाँ बहुत हैं, विशेषकर नीचे की कक्षाओं में। इनका कार्य भी अत्यंत प्रशंसनीय है। पर इँगलैंड में एक दल इसके विरुद्ध खड़ा हो रहा है। अध्यापकों की एक महासभा ने, जो मैनचेस्टर में हुई थी, इस विरोध को इन शब्दों में प्रगट किया, "You cannot feminise the teaching of boys without feminising the nation" अर्थात् लड़कों की पढ़ाई का काम स्त्रियों के हाथ में देने से राष्ट्र में स्त्रीत्व आ जायेगा। इसके विपरीत स्त्रियाँ अपनी महासभाओं में यह प्रस्ताव पास करती हैं कि हर एक व्यवसाय में और जातीय काम में स्त्रियों को स्थान मिलना चाहिए। उनका उद्योग है कि स्त्रियाँ शिक्षा संबंधी, जेल-सुधार संबंधी कमीशनों और कमेटियों की सदस्या बनाई जायँ।

दया के काम करने में स्त्रियाँ सबसे आगे हैं। वे अस्पतालों में रोगियों की सेवा करती हुई मिलती हैं (Sisters of mercy)। एक दिन रविवार के सबेरे लंडन में एक अस्पताल के बाहर कुछ स्त्रियों को मैंने बहुत से फूलों के गुच्छे लिए हुए देखा। पूछने से मालूम हुआ कि प्रति रविवार को बहुत सी स्त्रियाँ रोगियों को फूलों के गुच्छे लाकर देती हैं; और उनके पास बैठकर किस्से-कहानी अथवा धार्मिक कथाएँ सुनाती हैं।

योरप में ईसाई धर्म

मेरा विश्वास था कि ईसाई धर्म केवल दो मुख्य संप्रदायों में विभाजित है—रोमन कैथोलिक श्रौर प्रोटेस्टेंट। पर केवल इँगलैंड ही के प्रोटेस्टेंट लोगों में मुझे Established Church के अतिरिक्त Baptists, Methodists, Quakers आदि मिले जो अपने को प्रोटेस्टेंट कहते हैं। Churchman लोगों का विश्वास है कि न केवल अन्य धर्मावलंबी श्रौर नास्तिक वरंच वे ईसाई भी जो Churchman नहीं हैं नरक में जाएँगे। Quaker लोग कसम नहीं खाते श्रौर लड़ाई का विरोध करते हैं। शांति प्रचार के कारण पूर्वकाल में इन लोगों को बहुत कष्ट हुआ था। इनको मौन पर बड़ा विश्वास है। एक ईसाई संप्रदाय का नाम Unitarian church है। इनके सिद्धांत ब्रह्म-समाज से बहुत मिलते जुलते हैं।

मैं यह भी समझता था कि योरप में मूर्तिपूजा बहुत ही कम है। परंतु जो कुछ देखा उससे ये सब विचार बदल गए। योरप पहुँचते ही रोम में गिर्जा की बनावट, सजावट श्रौर उनके आडंबर देखकर हम अचंभे में पड़ गए। २ जून को सेंट पीटर नामक गिर्जाघर में दीपावली थी। वह दृश्य अब तक आँखों के सामने नाच रहा है। इन गिर्जाघरों में मूर्तिपूजा का रंग ढंग हिंदुस्तान से किसी तरह कम नहीं है। हम लोग एक गिर्जा में पहुँचे। लोगों को देखा घुटने टेककर प्रार्थना कर रहे हैं। जब दर्शकों की संख्या बढ़ गई, तब पुजारी ने एक बटन दबाया। उसके दबाते ही मंदिर का पट खुल गया श्रौर उसमें से एक छोटा सा शीशे का मंदिर निकला जिसके भीतर बहुत सजी सजाई प्रभु ईसामसीह के बाल्यकाल की एक मूर्ति थी।

उसी समय बिजली की रोशनी हो गई, और दर्शक लोग प्रेम से गद्गद होकर द्रव्य और आभूषण चढ़ाने लगे। उनमें से कुछ लोगों ने अपनी मनोकामना को कागज पर लिखकर मूर्ति के चरणों पर रख दिया। पुजारी ने बाल ईसा की एक छपी हुई तसवीर मूर्ति के चरणों से लगाकर दर्शकों को प्रसाद रूप से दे दी। हमने कहीं कहीं मूर्तियाँ बिकती हुई भी देखीं।

रोमनकैथेोलिक लोगों

के सबसे ऊँचे अधिकारी 'पोप' के भवन को भी हम लोग देखने गए। इसको भवन कहें, या प्रासाद ? किला कहें, या नगर! इस स्थान का नाम है वैटिकन (Vatican)। यह रोम के निकट है। इस नगर पर पोप का अखंड राज्य है। संसार का कोई राजा या महाराजा इनकी बराबरी का दावा नहीं कर सकता। इनका साधारण सा पत्र भी रोमन कैथेोलिक जगत् में ईश्वर की आज्ञा के समान माना जाता है। इनसे मिलना कठिन है। कई सप्ताह पहले से यदि आप पत्र-व्यवहार करें तो उनसे मिलने का संयोग हो सकता है। मिलने पर इनको साष्टांग दंडवत् करना पड़ता है। पोप का विवाह नहीं होता। ये बड़े धनाढ्य हैं। उनके महल में एक संग्रहालय है जो संसार में बहुत बड़े संग्रहालयों में गिना जाता है। हम लोग गोपाल-मंदिर और नाथद्वारा आदि के अधिकारियों को वर्तमान युग से कई शताब्दी पीछे समझते थे परंतु जब तक संसार में पोप है तब तक भारतवासियों को इनके कारण शर्माने की आवश्यकता नहीं। इसलाम ने अपने खलीफा को गतरबूद कर दिया पर योरप, जिसे अपनी वैज्ञानिक उन्नति और (Rationalism) विवेक-बुद्धि का अभिमान है, अब तक पोप की जकड़बंदी से अपने को नहीं छुड़ा सका।

जब हम रोम में थे उन्हीं दिनों एक बड़ा भारी धार्मिक मेला था। उसमें एक नगर-कीर्त्तन निकला था। सेंट पीटर के गिर्जाघर में सेंट पीटर की काले पत्थर की मूर्ति है। उसके पैर को छूकर लोग हाथ सिर में लगाते हैं और चूमते हैं, और उसके आगे घुटने के बल झुकते हैं। रोमन कैथोलिक गिर्जे हमने इटली, फ्रांस और दक्षिण जर्मनी में देखे। इन गिर्जों में पादरी लोग, प्रभु ईसा मसीह, उनकी माता 'मेरी' और अन्य संतों की मूर्तियों के सामने मोमबत्ती बालते, धूप जलाते, जल से अभिषेक करते हैं और अनेक मुद्रा से उनकी पूजा करते हैं। लंबे और नीचे कोट पहने हुए कभी सबके सब बैठ जाते हैं कभी उठ जाते हैं, कभी मौन हो जाते हैं, कभी पाठ पढ़ने लगते हैं। इनके सब पाठ लैटिन भाषा में होते हैं जिनकी ध्वनि संस्कृत के समान होती है। कहीं-कहीं दूकानों और कारखानों में भी मूर्तियों के आगे दीये बलते देखे। वेनिस के पास मेरानो स्थान में शीशे की चीज़ों का एक बहुत सुंदर कारख़ाना है। वहाँ के लोगों को हमने देखा कि उन्होंने जब माता मेरी के आगे दीया बाल लिया और सिर झुका लिया तब अपना कार्य आरंभ किया। वीयना के एक गिर्जाघर में अखंड दीया बलते देखा। कहीं कहीं स्त्रियों को माला जपते हुए देखा। सूली पर चढ़े हुए प्रभु ईसा मसीह के लकड़ी के चित्र रोमन कैथोलिक देशों में अनेक जगह खेतों में रखे हुए मिले।

रोमन कैथोलिक लोगों का विश्वास है कि अपने जीवनकाल में अपने पापों को स्वीकार कर लेने से ईश्वर सब पाप क्षमा कर देता है। इसलिये हर एक गिर्जाघर में एक विशेष स्थान (Confession-ary) बना रहता है जहाँ पादरियों के सामने लोग गुप्त रीति से अपने क़सूर बतला देते हैं। रोम में हमको एक अमरीकन पादरी

मिले जो प्रोटेस्टेंट धर्म का प्रचार करते थे। जब हमने उन्हें बतलाया कि ईसाई धर्म में मूर्तिपूजा देखने की हमको आशा नहीं थी तो वह खिसियाने से मालूम पड़े।

मेरिया लाख के मठ का हाता

रोमन कैथोलिक धर्म की अवस्था खूब अच्छी तरह से जानने के लिये उनके संन्यासियों के हमने दो आश्रम (Monasteries)
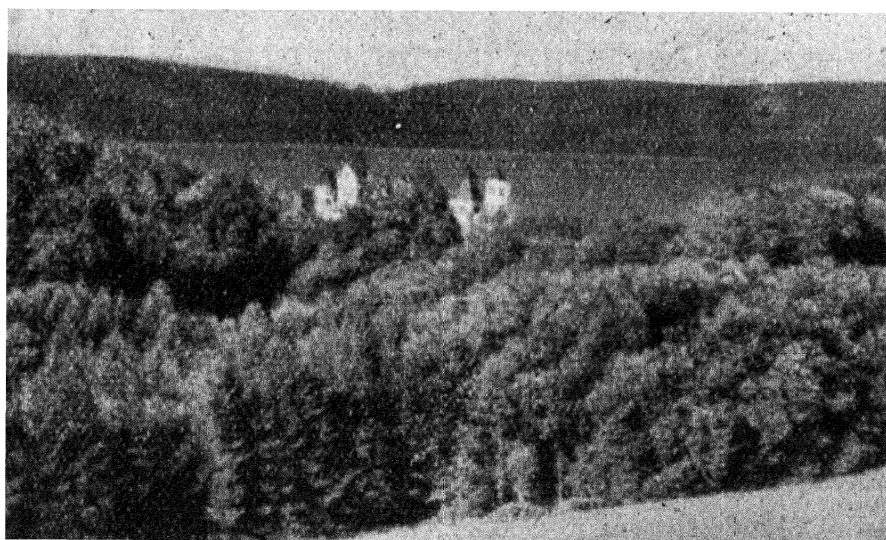
मेरिया लाख के सघन वन का दृश्य

भी देखे। एक कोलोन के पास मेरिया लाख (Maria Lach)

श्रौर दूसरा डैन्यूब के किनारे बायरों (Beuron)। पहला झील के किनारे बड़े सुंदर स्थान में बना हुआ है, वहाँ तक रेल
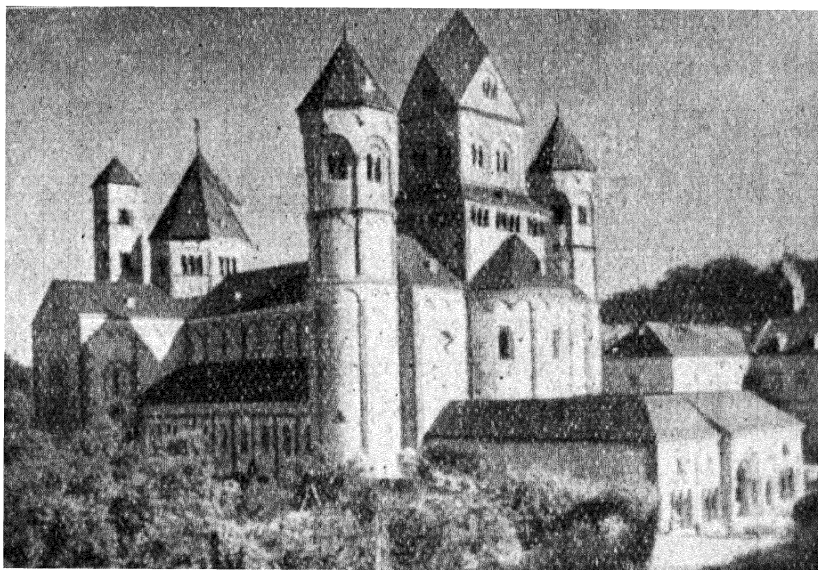
मठ का भवन

नहीं गई है। दूसरा पहाड़ी के बीच में बना हुआ है श्रौर वहाँ
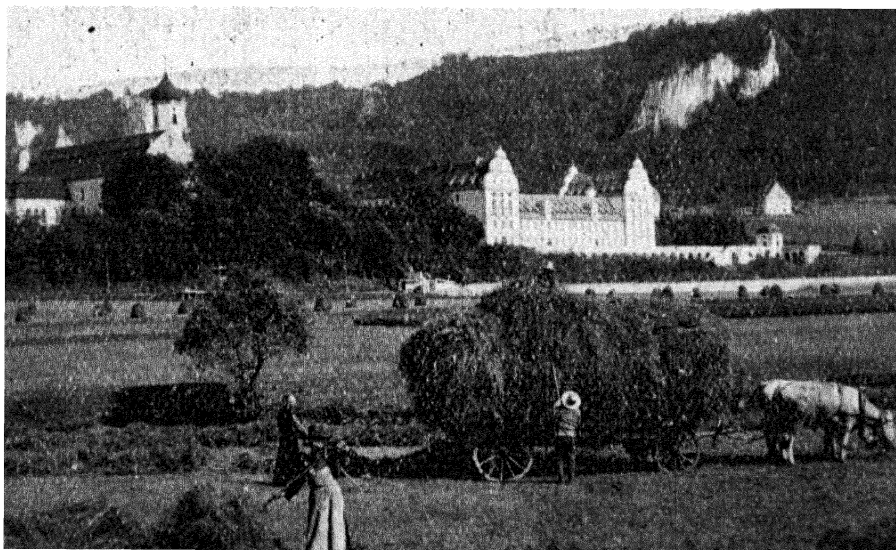
बायरों का मठ श्रौर उसके श्रंतर्गत खेती

तक रेल गई है। दोनों जगह द्वार पर लिखा है कि अतिथि का यहाँ प्रभु ईसा मसीह के समान स्वागत होगा। यहाँ के संन्यासी प्रातःकाल चार बजे उठ जाते हैं और दिन भर अपना समय पढ़ने लिखने, पूजापाठ और सेवा में बिताते हैं। इन दोनों स्थानों में हमें ऐसे लोग मिले जिन्होंने भारतीय दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया है। मेरिया लाख में हम कुछ घंटे ही ठहर सके परंतु वहाँ के एक संन्यासी महाशय से प्रेमपूर्वक बहुत देर तक विवाद हुआ। उस दिन हमारे साथ स्वामी सत्यदेवजी भी थे।

बायरों में हम दो रात रहे। यह मठ चित्रकारी और संगीत के लिये प्रसिद्ध है। बड़े संन्यासी जिन्हें फादर (Father) कहते हैं पढ़ने-पढ़ाने में लगे रहते हैं; परंतु छोटे जिन्हें ब्रदर (Brother) कहते हैं खेती, गौशाला, सोनारी आदि का काम करते हैं। दोनों ही बिना ब्याहे रहते हैं। आश्रम के अंदर स्त्रियाँ नहीं जाने पातीं। कोउन्टेस आइडा काउडे-नहोवे महिला भी, जिन्होंने हमारा परिचय यहाँ के लोगों से कराया था और जिनके हम अनेक प्रकार से अत्यंत ऋणी हैं, आश्रम के बाहर ही रहीं। यहाँ के लोग प्रातःकाल चार बजे से ही पाठ करना शुरू कर देते हैं। सुनारी आदि का काम
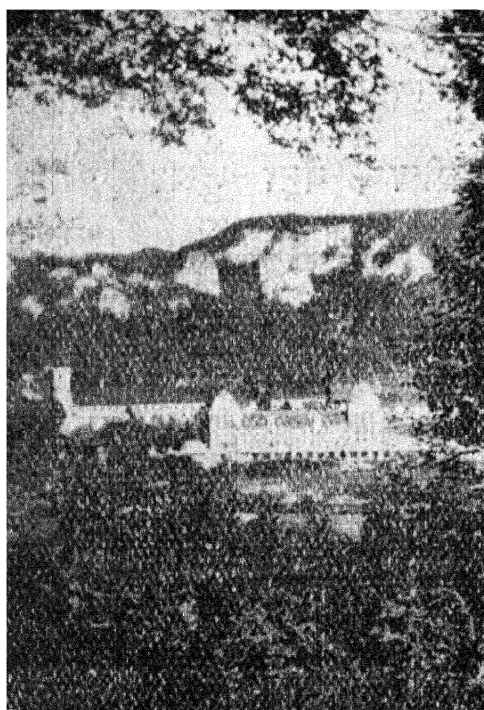
बायरों का संन्यासाश्रम

करनेवाले हाथ से काम करते हैं और मुँह से पाठ पढ़ते चलते हैं। भोजन से पहले सब प्रार्थना करते हैं और जब भोजन करते रहते हैं एक आदमी धर्मपुस्तक से पाठ सुनाया करता है जिसमें भोजन के समय लोग व्यर्थ की बातचीत न करें। उनमें एक पादरी राजघराने का था, जो अब संसार की संपत्ति से कोई संबंध नहीं रखता। एक पादरी ने Ultra-violet rays (एक प्रकार की रोशनी) के द्वारा पुरानी रद्दी में से ऐतिहासिक लेख निकाले हैं। जर्मनी में पहले
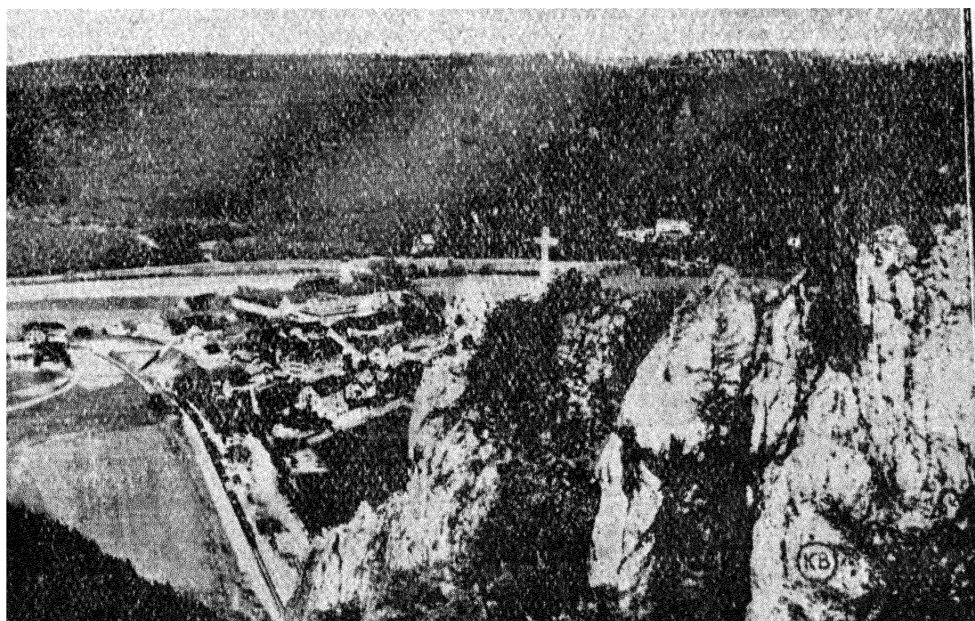
बायरों का प्राकृतिक दृश्य

सूअर और गदहे के चमड़े का कागज बनता था। कुछ अर्से के बाद जब उस पर की लिखावट फीकी पड़ जाती थी तब साधारण लोग उस पर अपना हिसाब किताब लिख दिया करते थे। इन पादरी महोदय ने इस रोशनी के द्वारा फीकी लिखावट को पढ़ डाला। उसमें बड़े महत्त्व की ऐतिहासिक बातें मिली हैं, जिनको वह आश्रम की पत्रिका में छाप रहे हैं। गिर्जाघरों को सजाने का सामान भी

यहाँ बनता है जिसको बहुत दाम पर दूर दूर के लोग मँगवाते हैं। यहाँ का चित्रकारी का काम तो सारे संसार में प्रसिद्ध है। ये चित्र ईसाई धर्म की कथाओं से संबंध रखते हैं और इनकी भी बहुत बिक्री है। इन सब चीजों की आमदनी आश्रम में जाती है। काम करनेवाले पादरी केवल रोटी और कपड़ा लेते हैं। ऐसा आत्मसमर्पण इतने ऊँचे दर्जे की कारीगरी जाननेवालों में बहुत कम देखने में आता है।

इन आश्रमों को देखकर मालूम होता है कि ईसाई धर्म अभी तक जीवित और जागृत है। ऐसे ही आश्रम स्त्रियों के भी हैं। उनमें मर्द नहीं जाने पाते। योरप में स्त्रियों की संख्या अधिक होने के कारण इन ईसाई वैरागिनियों (Nuns) की संख्या भी बहुत अधिक है। ये केवल ज्ञान ध्यान में ही अपना समय नहीं बिताती, कैथोलिक देशों में प्राय: जितने अस्पताल हैं उनमें ये सेवा का काम करती हैं। विशाल बर्लिन नगर में भी बहुत छोटे बच्चों के स्कूल, कन्या-पाठशालाएँ, अध्यापक और अध्यापिकाओं के ट्रेनिंग स्कूल, और बहुत से बोर्डिंग स्कूल इन्हीं त्यागी स्त्रियों के हाथ में हैं। देश के अनाथालयों, लँगड़े, लूले और पागल बच्चों के विश्रामगृहों का संचालन भी ये ही करती हैं। मर्द संन्यासी दस ग्यारह वर्ष विशेष शिक्षा प्राप्त करके देहातों में काम करने लगते हैं। वे थोड़ी डाक्टरी जानते हैं, इतना कानून सीख लेते हैं कि लोगों का झगड़ा तै कर सकें। आवश्यकता पड़ने पर गाँववालों को यह भी बतलाते हैं कि रुपया कहाँ और कैसे जमा किया जाय। शिक्षा प्रचार में इन पुरोहितों ने अद्भुत कार्य किया है, योरप में यदि आज साक्षर लोगों की संख्या अधिक है तो उसका यश भी इन्हीं पादरियों को प्राप्त है। बौद्धदेशों में भारतवर्ष की अपेक्षा साक्षरता की अधिकता बौद्ध पुजारियों के कारण है। हिंदू पुजारी अपने कर्तव्य को भूल गए।

आर्य समाज के उपदेशक, हिंदू विश्वविद्यालय के धर्माचार्य और हमारे साधु संत यदि ग्राम-सुधार का काम संगठित रूप से अपने हाथ में ले लें तो देश में निरक्षरता घट जाय, मुकदमेबाजी कम हो जाय और गरीबी दूर हो जाय।

इतना लिख देना आवश्यक है कि इन मठों में बहुत व्यभिचार फैल गया था, जिसके कारण उस समय के सुधारक दल ने इनके विरुद्ध बहुत बड़ा आन्दोलन उठाया था; इसलिये बहुत से मठ बंद कर दिए गए थे। उनके भवन जर्मनी में इस समय उन विद्यार्थियों के काम आते हैं जो भिन्न भिन्न स्कूलों की ओर से प्राकृतिक जीवन व्यतीत करने को देहातों में भेजे जाते हैं। इस तरह के पुराने मठ के भवन को हमने ३१ सितंबर १९२९ को जर्मनी में देखा जिसके बड़े बड़े दालान, ऊँची खिड़कियों और दीवारों पर छः सौ वर्ष पुरानी मुर्झाई हुई तसवीरें देखने के योग्य हैं।

कोरीन का पुराना मठ

इँगलैंड में, जहाँ प्रोटेस्टेंट धर्म माना जाता है, प्रायः हर एक बड़े स्कूल या कालेज के साथ एक गिरजा है। इस देश के ईसाई अद्भुत लोक-सेवा करते हैं। उनमें मुक्तिफौज का कार्य बड़ा व्यापक है। इस दल के संस्थापक जेनरल विलियम बूथ संसार के विलक्षण पुरुषों में हुए हैं। ६ जुलाई १९२९ शनिवार का दिन, जब हम
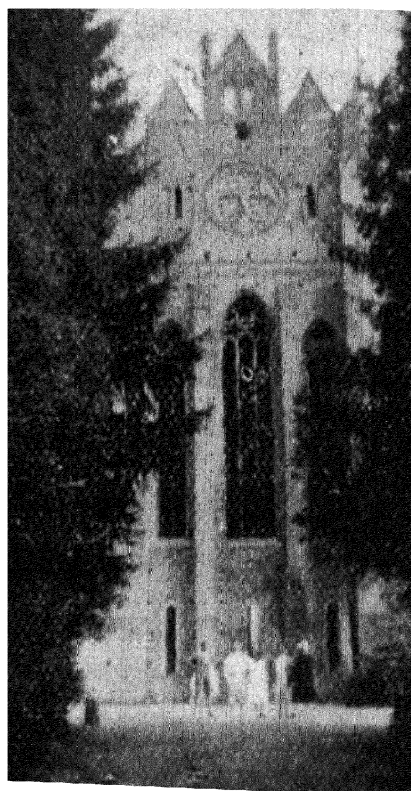
इनके जन्म-शताब्दी के उत्सव में क्रिस्टल पैलेस लंडन में शरीक हुए थे, हमारे जीवन की एक पवित्र स्मृति रहेगी। वह अद्भुत समारोह, वह
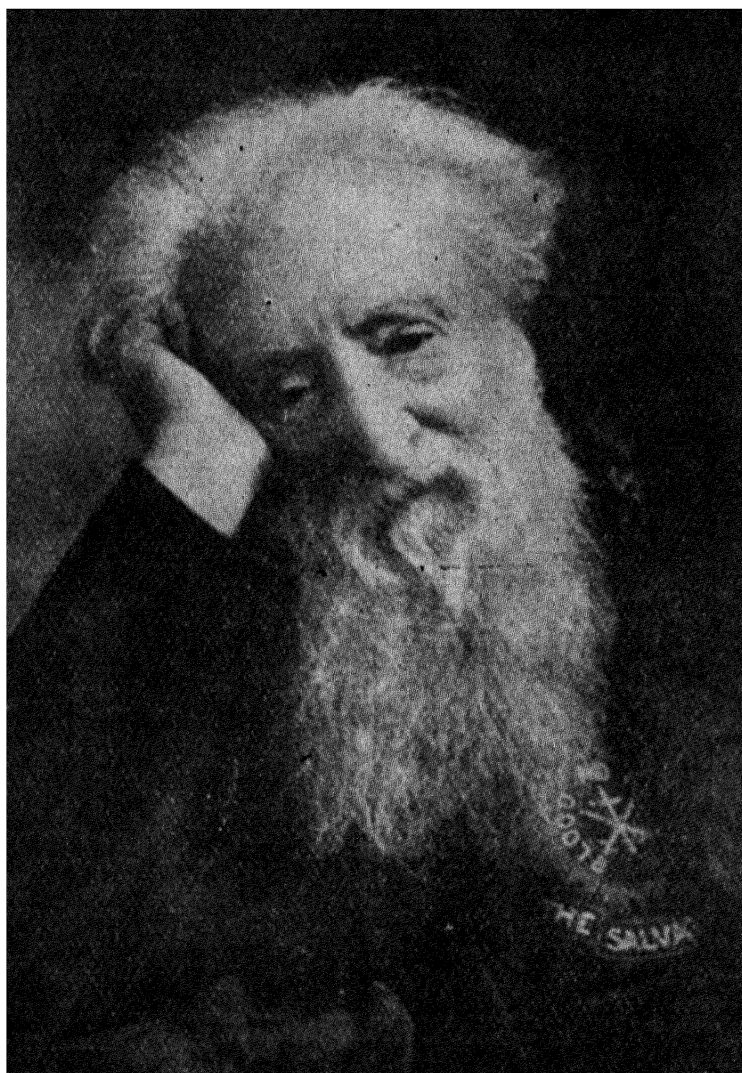
जेनरल विलियम बूथ

सुंदर संगठन, वह उत्साहवर्द्धक जोश बिरले ही देखने में आता है। वहाँ वे नर-नारियाँ जमा हुई थीं जिन्होंने भिन्न भिन्न देशों में रोगियों की सेवा करने, बच्चों में शिक्षा-प्रचार करने, अनाथों की रक्षा करने, चोरों और उचक्कों को अच्छे रास्ते में लाने, मैले कुचैले लोगों में

सफाई फैलाने के अनेक आयोजन कर रक्खे हैं। ये लोग अपनी कार्यप्रणाली फौजी रखते हैं। भारत में आकर ये लोग अपना नाम और भेष बदल देते हैं। इसी प्रकार अन्य देशों में भी करते हैं। जेनरल बूथ ने जब काम शुरू किया था उस समय Darkest England नाम की एक पुस्तक लिखी थी जिसमें अपनी जन्म-भूमि इँगलैंड की भयानक सामाजिक अवस्था का स्पष्ट शब्दों में वर्णन किया था—वहाँ की गरीबी, गंदगी आदि को संसार के सामने प्रकट कर दिया था जिसके कारण उनके बहुत से दुश्मन हो गए थे परंतु इन्हीं बुराइयों को दूर करने के लिये उन्होंने इतना काम किया कि आज इँगलैंड को उनकी संस्थाओं का अभिमान है। हमने इनकी कई संस्थाएँ देखीं।

योरप के महासमर से ईसाई धर्म को बहुत धक्का पहुँचा। आपस में युद्ध करनेवाली जातियाँ प्राय: सब ईसाई थीं। तिस पर भी एक दूसरे को मारने काटने के अतिरिक्त देवालयों को नष्ट-भ्रष्ट करने से भी वे नहीं चूके। पैरिस में हमने एक गिरजा देखा जिसकी मूर्तियों को लड़ाई में जर्मन लोगों ने तोड़ डाला था।

योरप में हजारों नर-नारी अपने को अब ईसाई नहीं कहते; विशेषकर मजदूर दल के लोग। जो ईसाई कहते भी हैं उन पर से पादरियों का प्रभाव कम होता जाता है। जब हम लोग हिंदुस्तान लौट रहे थे, एक दिन जहाज पर रात के एक बजे तक नाच रंग होता रहा। बहुत से लोग डेक (Deck) पर सोया करते थे, उनमें हम भी थे; इसलिये हमको ११ बजे के बाद उनके नाचने और शराब पीने से कष्ट हो रहा था। हमारे साथ दो तीन पादरी थे, वे भी सोने के लिये व्याकुल थे। हम लोगों ने उनसे कहा "आप तो लोगों की आत्मा के रक्षक हैं, जाइए

अपनी आवाज उठाइए और समझाइए कि नाच रंग बंद करें।" वह सनीचर की रात थी, रविवार को नाच आदि बंद रहते हैं। इसलिये उसकी कसर सनीचर की रात को ही लोग निकाल लेते हैं। हमारे पादरी मित्रों ने कहा "हमारी कोई नहीं सुनता," "हमारी कोई परवाह नहीं करता"। एक पादरी इँगलैंड के थे, दूसरे डेनमार्क के, तीसरी एक महिला थी, वह भी डेनमार्क की थी। दूसरे दिन रविवार को जहाज के नोटिसबोर्ड पर लिखकर सूचना दी गई कि आज भोजन के कमरे में सायंकाल प्रार्थना होगी। हम भी प्रार्थना के समय गए पर वहाँ बहुत कम उपस्थिति पाई। यही हाल योरप भर में देखा। गिर्जा जानेवालों की संख्या बहुत कम पाई। रविवार को लोग घर छोड़कर किसी पार्क में अथवा नदी के किनारे अथवा जंगल में चले जाते हैं और वहाँ पढ़ते पढ़ाते और विश्राम करते हैं। उस दिन शराब की दूकानों पर भीड़ लगी रहती है। जो गिर्जा जाते भी हैं वे बहुत सज धजकर। गिर्जा जाना एक फैशन सा हो गया है। रविवार को शराब-खाने में हम लोगों ने कई जगह बहुत भीड़भाड़ पाई।

वीयना में एक दिन हमारे गाइड ने रूसी गिर्जा दिखलाया जिसमें ताला बंद था। इस बात की चर्चा उस समय सारे योरप में फैली हुई थी कि अधिकांश रूसी लोग ईसाई धर्म पर अब विश्वास नहीं रखते। उनका प्रभाव और देशों पर भी पड़ रहा है। उन्होंने रविवार को अपने सप्ताह में से, जो अब केवल ५ दिन का होता है, निकाल दिया है। इसके अतिरिक्त बड़े दिन का और ईस्टर का त्योहार मनाना भी छोड़ दिया है। इन सब त्योहारों-वाले दिन भी मजदूर, दूकानदार और अन्य लोग अपने अपने सांसारिक कामों में लगे रहते हैं। सेंट सिमियन (St. Simion),

सेंट मार्टिन (St. Martin) और सेंट निकोलस (St. Nicholas) इत्यादि मठ भी, जो पहले बड़े आदर की दृष्टि से देखे जाते थे, अब बंद कर दिए गए हैं। गिर्जों और मठों की संपत्ति पर अब पादरियों का कोई अधिकार नहीं रहा। उसकी आमदनी सर्व-साधारण के खर्च में लगाई जाती है।

[लेनिनग्राड में सड़क चौड़ी करने के लिये एक गिर्जाघर गिराया जा रहा है।]

कई हजार गिर्जों में ताले बंद कर दिए गए हैं, अथवा उनमें
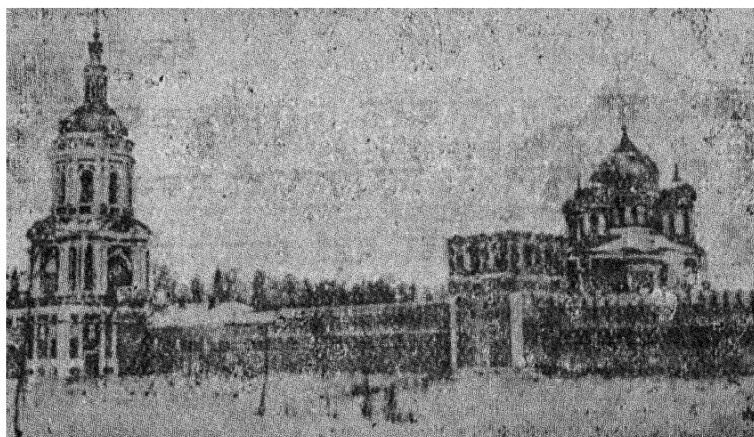
[मास्को का एक प्रसिद्ध मठ जिसको लोगों ने अब गिरा दिया।]

दूकानें, क्लबघर और संग्रहालय खोल दिए गए हैं। थिएटर और सिनेमा धर्म के विरुद्ध दृश्य दिखलाते हैं। कहीं कहीं पादरियों को दंड भी दिया जा रहा है। वहाँ के लोग कहते हैं कि जब रूस के भूतपूर्व सम्राट् ज़ार के अत्याचार से लोग दुखित थे उस समय पादरी लोग प्रजा का साथ नहीं देते थे बल्कि सम्राट् से कहते थे "आप धर्मावतार हैं, आप सर्व-शक्तिमान् हैं, इत्यादि।" पादरियों ने उस समय अत्याचारों के विरुद्ध अपनी आवाज नहीं उठाई, इसका फल यह हुआ कि वहाँ की प्रजा अब न केवल पादरियों पर अत्याचार कर रही है बल्कि निरीश्वरवाद की ओर झुक रही है। बहुत से लोग अपने को निरीश्वरवादी समझना अभिमान की बात समझते हैं, नास्तिकों ने बड़ी बड़ी सभाएँ खोल रखी हैं, और रूस देश के बड़े बड़े नेता उसके सभासद हैं। इस पर पोप ने और इँगलैंड के अग्रगण्य पादरियों ने अपना कोप प्रकट किया है। वे ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि रूस के लोग फिर से सत्य के मार्ग पर आ जायँ। रूसी इसके उत्तर में यह कहते हैं कि क्रिसमस,

[कीफ़ नगर का प्रसिद्ध गिर्जाघर जो अजायब घर में परिणत कर दिया गया है।]

ईस्टर अथवा रविवार को न मानने से कोई आदमी अधर्मी नहीं हो जाता, और यह जो कुछ हुआ है, अधिकारियों के दबाव से नहीं वरंच प्रजा की इच्छा से। हजारों आदमी अभी ईसा पर विश्वास रखते हैं। रूस की सरकार ने आज्ञा दी है कि प्रत्येक धार्मिक संस्था की, जिसके २० सदस्य हों, रजिस्टरी की जाय और १८ वर्ष के नीचे के लड़कों और लड़कियों को किसी विशेष धर्म की शिक्षा न दी जाय; इस कारण स्कूलों में धार्मिक शिक्षा देना मना है।

[बोगोरोडस्क का एक गिर्जाघर, जो मजदूरों का क्लब बना दिया गया है।]

रूस साम्यवाद का गढ़ है; वहाँ प्रजा में शासन, समाज, अर्थ संबंधी नए नए सिद्धांतों का प्रचार किया जा रहा है और इस बात का भी प्रयत्न किया जा रहा है कि उन सिद्धांतों पर लोग चलें। ऐसी अवस्था में यह असंभव था कि लोगों के धार्मिक विचार पुराने ही बने रहते।

योरप से लौटते हुए इजिप्ट में हमें काप्ट (Copt) नाम के ईसाई मिले। ऐसा कहा जाता है कि इनके बाप दादा मिश्र देश के आदि निवासी थे। इनका एक गिर्जा १२ अक्तूबर को हमने कैरो में देखा।

ईसाइयों का विश्वास है कि माता मेरी ईसा की जान बचाने के लिये यहाँ एक सुरंग में छिपी थीं। वह सुरंग भी हमें दिखलाई गई। इस गिर्जे के पास ईसाइयों को हमने भीख माँगते देखा। ये लोग अपने शरीर पर क्रास का गुदना गुदवाते हैं और बहुत गंदी जगह पर टाट बिछाए बैठे रहते हैं। १४ अक्तूबर को हमें एक गूलर का पेड़ और

काहिरा का पवित्र गूलर वृक्ष

एक कुवाँ दिखलाया गया जिसको अंग्रेजी में Holy Tree and Joseph's Spring कहते हैं। कुएँ का पानी मीठा है और उसे लोग बड़ी श्रद्धा से पीते हैं। पेड़ सूख चला है, हमें केवल एक डाल हरी मिली। इस पेड़ पर ईसाई लोग लत्ते या चिथड़े चढ़ाते हैं। कहा जाता है कि यह पेड़ दो हजार बरस का पुराना है। इस पेड़ के नीचे भी मेरी ईसा को लेकर छिपी थी।

ईसाई धर्म स्वतंत्र विचारों का गला घोटने में किसी से पीछे नहीं रहा। बहुत से वैज्ञानिक अपने सिद्धांतों के कारण जला दिए गए या अन्य प्रकार से मार डाले गए। अभी थोड़े दिन

पहले ब्राडला और उनके साथियों को, जो निरीश्वरवाद का प्रचार करते थे, अनेक प्रकार से कष्ट पहुँचाया गया था। रोमन कैथोलिक और यहूदी इँगलैंड की पार्लमेंट के मेंबर नहीं हो सकते थे। लार्ड रिपन का भारत के वायसराय नियुक्त होने पर केवल इस कारण विरोध हुआ था कि वे रोमन कैथोलिक थे। अब भी अनेक पद ऐसे हैं जो रोमन कैथोलिक देशों में प्रोटेस्टेंट को और प्रोटेस्टेंट देशों में रोमन कैथोलिक को नहीं मिलते।

योरोपीय लोगों की कुछ विशेषताएँ

प्रत्येक देश की कुछ विशेषताएँ होती हैं जिन पर यात्री का ध्यान तुरंत जाता है। उनमें से कुछ विशेषताओं का उल्लेख नीचे किया जाता है।

(१) इश्तिहारबाजी :—योरप के लोगों को अपनी चीजों को प्रदर्शित करने अथवा उनके संबंध में विज्ञापन निकालने का बड़ा शौक है। एक जगह (Sandwiches) एक प्रकार की रोटी की प्रदर्शनी हो रही थी। बर्लिन में इश्तिहारबाजी की एक प्रदर्शनी हमने देखी। उसी के पास रेडियो-प्रदर्शनी थी। उसके बाहर आकाश के ऊपर हवा से एक कपड़े का गुब्बारा उड़ रहा था जिसमें से बाजे की आवाज आ रही थी। ऊपर निगाह उठाकर देखा तो मालूम हुआ कि यह रेडियो का इश्तहार है। रेडियो का आविष्कार संसार की विलक्षण चीज है। ८ जुलाई को लंदन में हम एक सज्जन से मिलने गए; उनकी लड़की अध्यापिका है। जलपान के अनंतर यह महिला हम लोगों को एक कमरे में ले गई। वहाँ एक यंत्र को कान में लगाते ही हमने शिक्षा पर एक बड़ा जोरदार व्याख्यान सुना जो लंदन के एक कोने में डाक्टर बैलार्ड दे रहे थे और जिसको शिक्षा से रुचि रखनेवाले लोग घर बैठे सुन रहे

थे। इसी प्रकार जहाज में हम गीत सुनते आए। अस्तु, इस इश्तिहारबाजी के प्रमाण सड़कों पर, रेलों में, मोटर लारियों में, दूकानों में मिलते हैं। कहीं कहीं सड़कों पर गोल खंभे बने हैं या तख्ते लगे हैं जिन पर इश्तिहार चपके रहते हैं। सायंकाल जब सब दूकानें बंद हो जाती हैं तब बिजली की रोशनी से शीशे के अंदर की सब चीजों को सजी सजाई आप देख सकते हैं। कभी कभी ये चीजें ऐसी आकर्षक बना दी जाती हैं कि लोग खड़े होकर उनको देखने के लिये बाध्य हो जाते हैं। कहीं अंधेखाने का विज्ञापन है जिसके लिये आपसे सहायता माँगी जाती है। एक यंत्र चल रहा है, आप चोंगे में पैसा डालिए आपके सामने ही वह गोलक में चला जायेगा और पर्दे के ऊपर Thank you (आपको धन्यवाद) शब्द आ जायेंगे। कहीं एक चौकीदार की मूर्ति खड़ी है जो गर्दन हिला रही है या विज्ञापन बाँट रही है। कहीं एक स्त्री, जो शीशे में बहुत छोटी मालूम होती है, एक चित्र के बाद दूसरा चित्र दिखला रही है। इस चित्र को देखकर विशेष कौतूहल हुआ। दूकान के अंदर जाने पर मालूम हुआ कि यह सचमुच जीवित स्त्री थी, जो शीशे में बाहर बहुत छोटी मालूम होती थी। इस प्रकार के अनेक हिलते डुलते इश्तिहार देखे। कहीं पानी बहता हुआ दिखलाई दे रहा है, कहीं कोई नए प्रकार के उस्तरे से हजामत बना रहा है, कोई अपने पैर के घाव की दवा कर रहा है, कोई शानदार स्त्री नया कपड़ा पहन रही है। ट्राम्बे में या मोटर लारियों में जब भीड़ बहुत हो जाती है और बैठने की जगह नहीं रहती तो लोग खड़े रहते हैं। जो लोग खड़े रहते हैं उनके पकड़ने के लिये छत में एक कड़ी सी लटकी रहती है, कहीं कहीं उसके ऊपर भी किसी न किसी चीज का इश्तिहार लगा रहता है।

(२) कार्यदक्षता तथा संगठन शक्ति :—जिस दिन से आदमी जहाज में बैठता है उसी दिन से योरपवालों की कार्यदक्षता, संगठन शक्ति, क्रमबद्ध कार्य करने की आदत का परिचय मिलता है। जहाज चला जा रहा है, चारों ओर पानी ही पानी दिखाई देता है परंतु जहाज के ऊपर पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर लोग पढ़ रहे हैं, कसरत करनेवाले कसरत कर रहे हैं, एक तरफ झूला पड़ा है जिस पर लड़के झूल रहे हैं, साधारण तख्ते बाँधकर एक तालाब बना लिया जाता है जिसमें पाइप द्वारा पानी आ जाता है, उसमें लोग नहाते और तैरते हैं। जहाज के नीचे के कमरों में भी शुद्ध वायु पहुँचाने का प्रबंध (enforced draught) रहता है, बेतार के तार आते हैं, संसार के समाचारों की प्रति दिन सूचना मिलती चलती है। कभी कभी भोजन के सूचीपत्र (Menu) के पीछे सूचनाएँ छपी रहती हैं। एक कमरा है जिसमें बैठकर लिखने पढ़ने का काम कीजिए। दूसरे कमरे को सिगरेट पीनेवाले धुएँ से गंदा करते हैं। चाय पानी, खाना पीना, शराब, नाच रंग, सिनेमा और अन्य प्रकार के आमोद प्रमोद जारी रहते हैं। प्रति दिन हर एक स्थान साफ किया जाता है और बाहरी हिस्से धोए जाते हैं। समय समय पर सब यात्री जमा किए जाते हैं। एक प्रकार का बेल्ट उनके गले में लटकाया जाता है और उनको बतलाया जाता है कि जब कभी जहाज के डूबने का डर हो वे इन लाइफ बेल्ट्स को पहिनकर लाइफ बोट्स में बैठ जायँ, ऐसा करने से डूबने का डर नहीं रहता। लाइफ बेल्ट्स पहिनकर जब लोग खड़े किए जाते हैं तो सबसे आगे बच्चे रहते हैं, उनके पीछे स्त्रियाँ, उनके पीछे मर्द, और उनको बतलाया जाता है कि इसी क्रम से खतरे के वक्त में लोग लाइफ बोट्स में बैठें।

योरप के बड़े बड़े नगरों में जैसे लंदन, पेरिस आदि में सड़कों पर बड़ी भीड़ रहती है, मोटरों की भरमार के कारण पैदल चलनेवालों को एक पटरी से दूसरी पटरी पर जाना मुश्किल हो जाता है, परंतु पुलिस के सुप्रबंध के कारण बहुत कम दुर्घटनाएँ होती हैं। लंदन में गाड़ियों और लोगों की भीड़ को रोकने का दिग्दर्शन वहाँ के एक प्रसिद्ध मुहल्ले टाटनहमकोर्ट रोड के चित्र से मालूम हो जायगा।

टाटनहमकोर्ट रोड

बड़ी बड़ी सड़कों की मोड़ पर सफेद लकीर खींची रहती है, पुलिस कान्स्टेबल के हाथ उठते ही सब गाड़ियाँ रुक जाती हैं, सफेद लकीर के आगे नहीं आतीं। जर्मनी में सड़क की मोड़ों पर हरे और लाल रंग के शीशे लटके रहते हैं, थोड़ी थोड़ी देर पर हरे शीशे के स्थान पर लाल शीशा आ जाता है और उस तरफ़ की मोटरें सब रुक जाती हैं। इसी प्रकार हर तरफ की सड़कों के शीशे के रंग बदलते रहते हैं और गाड़ियाँ रुक जाती हैं या चलने लगती हैं। जब गाड़ियाँ रुक जाती हैं तब जो लोग पटरी पर खड़े रहते हैं वे पटरी के दूसरी तरफ चले जाते हैं। यहाँ के लोग कलों से बहुत काम लेते हैं। प्लैटफार्म टिकट बेचने की और तौलने की कलें तो हिंदुस्तान में भी आ गई हैं परंतु जितना काम विज्ञान द्वारा वहाँ के लोग करते हैं उसका अनुभव यहाँ बैठे होना कठिन है। डाक के टिकट, सेब, नारंगी, दूध, शराब, जेबी रूमाल, दियासलाई, सिगरेट, चिट्ठी का

कागज और लिफाफा इत्यादि आप कलों द्वारा ले लीजिए। एक दो जगह ऐसी कल भी देखी जिससे आप अपनी किस्मत पूछ लीजिए। पैसा डालिए और एक छपा हुआ कार्ड निकल आवेगा जिसमें आपके स्वभाव का वर्णन होगा तथा भविष्य के लिये कुछ संकेत होगा। लिफ्ट से तो हिंदुस्तान के लोग परिचित हैं। कलकत्ते बंबई में इसी पर बैठकर लोग मकान के एक खंड से दूसरे खंड में चढ़ते उतरते हैं। वहाँ के देशों में नीचे ऊपर ले जाने के अनेक यंत्र हैं। लंदन में मकानों के नीचे रेलें चलती हैं, उनके स्टेशनों पर नीचे जाने के लिये चलती फिरती सीढ़ियाँ हैं, पहली सीढ़ी पर खड़े हो जाइए वह दूसरी पर चली जाएगी तब तीसरी पर; इसी तरह से ऊपर आने की सीढ़ियाँ हैं। पेरिस, बर्लिन इत्यादि नगरों की दुकानों में भिन्न भिन्न प्रकार के ऊपर नीचे ले जानेवाले यंत्र देखे।

एक दिन हम लोग पेरिस की अंडरग्राउंड (Under-ground) रेल में चढ़ने के लिये स्टेशन के पास पहुँचे ही थे कि रेल आ गई। हममें से एक रेल के फाटक पर रुक गए। उन्होंने बहुत धक्का दिया पर फाटक न हिला, हमें आश्चर्य हुआ क्योंकि हम उसी फाटक से निकल आए थे। जब रेल चल दी, फाटक फिर ढीला हो गया। मालूम हुआ कि रेल के ठहरते ही फाटक आप ही आप बंद हो जाता है और उसके चले जाने पर खुल जाता है (Automatique)। लंदन की Under-ground रेलवे में रेल चलते ही कमरों के सब फाटक अपने आप ही बंद हो जाते हैं। योरप के देशों में स्टेशनों पर रेलें बहुत कम ठहरती हैं परंतु थोड़े ही समय में बिना शोर मचाए स्त्री, पुरुष, बच्चे सब फुर्ती से बैठ जाते हैं। कमरे के अंदर एक आदमी, एक ही आदमी की जगह लेता है, हिंदुस्तान की तरह से लोग दो, तीन आदमियों की जगह अपने कब्जे में

नहीं कर लेते या लेट नहीं जाते। कोंटिनेंट की रेलों में बैठने की जगह पर नंबर लगा रहता है, रेल का एक आदमी दरवाजे पर इस बात की सूचना लगा देता है कि किस नंबर की जगह खाली है (free) और किस नंबर की जगह पर कोई बैठा है (Occupied)। रेलों में, होटलों में और अन्य स्थानों में शौचगृह के अंदर जहाँ कोई गया और बाहर अपने आप Occupied लग गया और बाहर आया और free लग गया, इसलिये पंचायती शौच-गृहों में भी दरवाजों को खटखटाने या बाहर से शोर मचाने की जरूरत नहीं पड़ती।

बर्लिन में हमने देखा कि बड़े बड़े पैकेट पाइप द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान में क्षण भर में पहुँचा दिए जाते हैं। पाइप के अंदर की हवा, यंत्र द्वारा एक तरफ कर ली जाती है और उसी तरफ पार्सल डाल दिया जाता है, हवा के झोंके से पार्सल दूर पहुँच जाता है। दस सितंबर को डेस्डन नगर में हम लोगों ने पहाड़ी पर एक बड़ी ही सुंदर स्वास्थ्यशाला देखी। उस पहाड़ी पर जिस रेल गाड़ी से हम ऊपर गए वह लोहे के रस्सों से लटकती हुई बराबर दौड़ती हुई ऊपर जा रही थी और नीचे उतर रही थी। उसे लोग Schwebe (लटकती हुई) गाड़ी कहते हैं। जरमन भाषा में गाड़ी के लिए संस्कृत शब्द वाहन (Bahn) का प्रयोग करते हैं।

योरोपीय कार्य-दक्षता का मूल कारण मौन है। हर एक आदमी कम बोलता है और धीरे से बोलता है, इस गुण के लिये इँगलैंड सर्वश्रेष्ठ है। मेज पर यदि चार आदमी भोजन करने बैठेंगे तो हर एक आदमी अपने बगलवाले ही से बात करेगा। भीड़भाड़ के स्थान पर लोग पाँति बाँध लेते हैं। यदि स्टेशन पर टिकट लेना होगा तो जो पहले आवेगा वह आगे खड़ा हो जायगा, इसी प्रकार एक के पीछे दूसरा खड़ा हो जाता है। इँगलैंड में इसको क्यू (Queue) कहते हैं। थिएटरों

के बाहर इस प्रकार की कतार बहुत लंबी हो जाती है। एक हिंदुस्तानी सज्जन पीछे आए और जगह निकालकर आगे खड़े हो गए, एक सेकंड में पुलिस के सिपाही ने बहुत नम्रता-पूर्वक उनको सबसे पीछे लाकर खड़ा कर दिया। पुलिस के सिपाही 'सर' अथवा 'मेडम' कहकर लोगों को संबोधित करते हैं। जनीवा आदि में तो यदि आप उनसे कुछ प्रश्न पूछने जाइए तो वे आपको सलाम करते हैं।

अस्तु, पाँति बाँधकर टिकट लेना अथवा संग्रहालयों की वस्तुओं को देखना यह एक साधारण सी बात है। इटली देश में भी, जो इन बातों में योरप में सबसे पीछे है, हमने स्कूल के बालकों को एक गिर्जे से दूसरे गिर्जे में पाँति बाँधकर जाते देखा। इस विषय में इँगलेंड का तो कहना ही क्या है। वहाँ के नर-नारी 'क्यू' बनाने में सबसे आगे हैं। इस प्रकार काम भी जल्दी होता है और धक्कमधुक्का नहीं होता। हमारे देश में स्त्रियों के लिये टिकट लेना तो आफत है परंतु वहाँ इस क्यू में स्त्रियों का और बच्चों का भी अच्छी तरह निर्वाह हो जाता है। इस संबंध में प्रसिद्ध हैरो (Harrow) स्कूल के हेड मास्टर डा० नौरवुड (Dr. Norwood) का कथन है कि भीड़भाड़ में ऐसे सुंदर व्यवहार का कारण इँगलेंड की प्रारंभिक शिक्षा है "The wonderful behaviour of the English crowd is a product of the elementary school" वे कहते हैं कि साठ वर्ष पहले बच्चे शिष्टाचार और सद्व्यवहार में ऐसे अच्छे नहीं थे (There has been an enormous improvement in manners and general character)।

टिकट देनेवाला भी बड़ा मुस्तैद और कार्यदक्ष होता है, हमारे देशवालों की तरह सुर्ती फाँकने या गप्प मारने में समय नष्ट नहीं करता। वह सबसे 'सर' या 'मेडम' कहकर बातचीत करता

है, चाहे यात्री फर्स्ट क्लास का टिकट ले या थर्ड क्लास का। इँगलेंड में सेकेंड क्लास नहीं होता।

कार्यदक्षता का दूसरा बहुत बड़ा कारण उस देश की साक्षरता है। सब लोग पढ़े लिखे हैं, हर एक आदमी अपने कर्तव्य को जानता है। धोबी न केवल आपका कपड़ा अच्छा धोकर लावेगा बल्कि यदि कपड़ा फटा होगा तो उसको सी लावेगा, बटन टूटा होगा तो नया

आर्क डी० ट्रायम्फ़ (पैरिस)

बटन लगा लावेगा। स्कूलों के चौकीदारों को भी हमने अपने देश के कई अध्यापकों से अधिक मुस्तैद पाया। वहाँ किसी स्कूल अथवा कालेज को देखने जाना हो तो पहले पोर्टर से मिल लेना आवश्यक है। वह पूछेगा कि क्या आपने हेड मास्टर से समय निश्चित कर लिया है इत्यादि। मालवर्न स्कूल के पोर्टर ने अपने स्कूल के हर एक विभाग का हमें इतना अच्छा हाल बतलाया कि हम लोग चकित हो गए।

(३) जात्यभिमान:—योरप के सभी देशों में जात्यभिमान के प्रमाण गली गली मिलते हैं, देशभक्तों की मूर्तियाँ बड़े बड़े

नेलसन स्मारक

चित्र आदि मिलते हैं। Dear old London, Picturesque London आदि पुस्तकों के नाम ही बतला देते हैं कि लोगों को अपने नगर से कितना प्रेम है। नर, नारी, युवा, वृद्ध, राजा, रंक सबको अपने देश से प्रेम है। इँगलैंड छोड़कर जब हम फ्रांस आने के लिये १० जुलाई को चैनल में जहाज पर बैठे वहाँ लिखा हुआ पाया, (Beware of Pickpockets) गिरहकट लोगों से बचो। हमने अपने अँगरेज पोर्टर (कुली) से पूछा, "क्या यहाँ भी गिरहकट होते हैं?" उसने तुरंत उत्तर दिया, ("Not on this side of the channel, Sir, but on the other side.") चैनल के इस पार अर्थात् इँगलैंड में नहीं, बल्कि दूसरी तरफ अर्थात् फ्रांस, जरमनी आदि में।

क्रामवेल स्मारक

रेलों में और अन्य स्थानों में साधारण फ्रेंच अँगरेजों की ओर
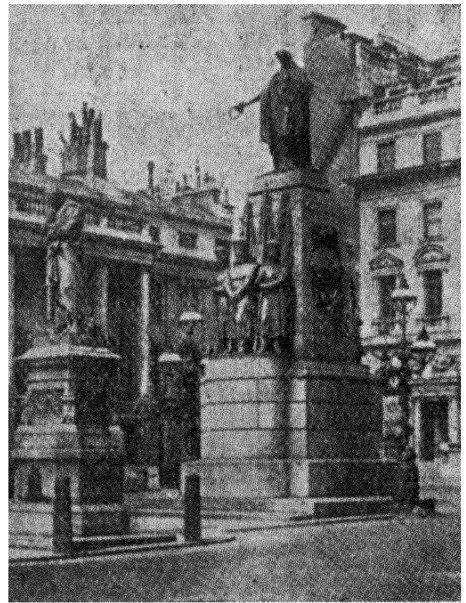
अँगरेज जर्मन लोगों की निंदा करते हुए मिले परंतु उच्च श्रेणी के लोगों में अब अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव (international goodwill) बढ़ रहा है। योरप की भिन्न भिन्न जातियों में परस्पर प्रेम और एक दूसरे के गुणों को सीखने की लालसा बढ़ रही है।

आपको हर एक नगर में जात्यभिमान के प्रमाण मिलेंगे। युद्ध में जिन लोगों ने अपने प्राण दिए, उनके नाम खंभों पर खुदे हुए—स्कूलों और कालेजों के अंदर अथवा सड़क पर—मिलते हैं। यदि उनके नाम नहीं मालूम हो सके तो केवल यही खुदा हुआ मिलेगा (To the unknown soldiers) अज्ञात वीरों की स्मृति में।

यात्रा संबंधी कुछ मजेदार बातें

(१)

जिस जहाज में हम लोग योरप गए थे उसमें नौकर चाकर अँगरेज थे, बिछौना बिछानेवाले, भाड़ू देनेवाले, शौचगृह और स्नानागार साफ करनेवाले सब गोरे थे। ये नौकर यात्रियों को 'सर' कहते हैं। दो एक हिंदुस्तानी भाई, जिन्हें हिंदुस्तान में अँगरेजों को 'सर' कहने का अभ्यास पड़ा हुआ था, उलटे ही इनको 'सर' कहते थे। दो चार दिन में उनकी यह आदत छूट गई।

(२)

लंदन में पहुँचकर एक दिन हम लोगों ने परोसनेवाली स्त्री से एक रोटी और माँगी, उसने अँगूठा दिखलाकर पूछा "एक ?" हम लोगों को उसका अँगूठा दिखलाना बहुत बुरा लगा, परंतु कुछ दिनों के बाद यह साधारण सी बात हो गई क्योंकि प्रायः हर जगह हमने 'एक' का संकेत अँगूठे ही से करते देखा।

(३)

मालबर्न में हम लोग पादरी ग्रीव्ज़ के मेहमान हुए। उन्हें मालूम था कि हम मांस नहीं खाते, परंतु उन देशों में मांस न खाने-वाले लोग अंडा खा लेते हैं। श्रीमती ग्रीव्ज़ ने हमारे भोजन का बहुत सुंदर प्रबंध किया था। जब हमारे सामने खीर आई तब हमने पूछा कि इसमें अंडा तो नहीं पड़ा है। उन्होंने कहा कि हाँ, पड़ा है। हम लोगों ने खीर खाने से इन्कार कर दिया। उन्होंने और उनके साथियों ने कहा, "खा लीजिए, इसमें थोड़ा ही सा तो अंडा है।" इतना कहने पर भी जब हमने खीर नहीं खाई तो उनको आश्चर्य हुआ, क्योंकि वे इस बात को न समझ सके कि हम लोग धार्मिक सिद्धांत के कारण अंडे आदि से परहेज करते हैं। वे समझते हैं कि डाक्टर ने मना किया है इसलिये अगर थोड़ा सा खा ही लिया तो क्या हर्ज है।

(४)

एक मित्र लंदन में एक मोची से सड़क पर जूता काला करवाने के लिये बैठे। वहाँ के मोची, हज्जाम आदि बड़े बातून होते हैं। मोची जूता काला करता जाता था और हमारे मित्र से बात-चीत करता जाता था। मोची ने पूछा, "What do you think of *our* rule in India, sir?" अर्थात् भारतवर्ष में **हमारे** शासन को आप कैसा समझते हैं? हमारे मित्र ने हँसी में कहा, कि क्या वहाँ मोचियों का शासन है। उसने उत्तर दिया, "आप तो जानते ही हैं कि आजकल मजदूरदल राज्य कर रहा है।"

(५)

इँगलैंड में एक हिंदुस्तानी सज्जन एक मेम के घर में रहते थे। मेम तो उनका सब काम करने के लिये उनके सामने आती थी पर

उसका बच्चा उनके बहुत बुलाने पर भी उनसे दूर ही रहता था। उसकी माता ने पूछा, "उनके पास क्यों नहीं जाते ?" उसने जवाब दिया, "वे साबुन नहीं लगाते, इसलिये उनका रंग सदा काला ही रहता है।"

(६)

एक भारतवासी से इँगलैंड में एक दस वर्ष की लड़की ने पूछा, "आपका देश कहाँ है ?" उसने कहा, "हिंदुस्तान।" लड़की ने कहा, "पागल (silly) हो, हिन्दुस्तान तो हमारा है। तुम्हारा देश कौन है ?" यह कहते हुए, दौड़कर वह एक पुस्तक उठा लाई जिसमें एक पाठ का शीर्षक था "भारतवर्ष हमारा है।"

(७)

जनीवा में शिक्षा-महासभा के अनंतर एक धनाढ्य अमरीकन महिला ने कुछ लोगों को भोजन के लिये निमंत्रित किया। कृपा-पूर्वक वह मुझे भी नेवता देने आई। मैंने उससे कहा, "मैं मांस नहीं खाता, इसलिये मुझे ले जाकर आपको व्यर्थ कष्ट होगा।" उसने कहा "तो आप मछली खा लीजिएगा।" मैंने कहा, "हम मछली भी नहीं खाते।" बोली, "अंडा सही।" मैंने कहा, "हम अंडा भी नहीं खाते, बल्कि काफी और चाय भी नहीं पीते।" तब उसने कहा, "What on earth do you eat, then ?" "आखिर तुम खाते क्या हो ?" तिसपर भी उसने आग्रह किया कि मैं चलूँ। मैंने स्वीकार कर लिया। भोजन के समय मेरे टेबुल पर बहुत से फल रखे गए और मेरे लिये खीर, दूध, मक्खन, रोटी, भाजी आदि का बहुत सुंदर प्रबंध था। धन्यवाद देते समय मैंने अपनी महिला मित्र से कहा, "आपने देख लिया मैं क्या खाता हूँ। जो पदार्थ आपने मुझे दिए वे दूसरों के पदार्थों से अधिक स्वस्थ्य और सुस्वादु थे।" इस पर बहुत देर तक हँसी होती रही।

(८)

जरमनी के लोग अब अपना रंग साँवला (Brown) बनाना चाहते हैं, इसलिये धूप में घूमना, खुले में नहाना, मकान के ऊपर खुली छत रखना वे पसंद करते हैं। नार्वे की रहनेवाली एक महिला ने कहा, "(Brown) साँवली बनने मैं जर्मनी जाती हूँ, नार्वे लौटकर फिर गोरी हो जाती हूँ, तुम लोग बहुत अच्छे हो जिनका रंग सदा साँवला ही रहता है।"

(९)

दक्षिण जरमनी के एक नगर में एक दिन एक महिला ने हमारी मित्र-मंडली को भोजन के लिये निमंत्रित किया। जब हम लोग भोजन कर रहे थे, उन्होंने हर एक से पूछा कि हम लोग किस अभिप्राय से योरप गए। किसी ने उत्तर दिया, "शिक्षा-संस्थाओं को देखने के लिये।" किसी ने कहा, "बालचर संस्थाओं को देखने के लिये।" हमारे एक मित्र ने उन दिनों अपनी मोछ मुड़वा ली थी, इसलिये ५२ वर्ष की अवस्था होने पर भी वे ३० या ३५ वर्ष के नौजवान मालूम पड़ते थे। उस बुड्ढी महिला ने उनकी तरफ देखते ही कहा, "क्या आप बीबी लेने योरप आए हैं ?"

(१०)

वीयना विश्वविद्यालय के पास हम लोग एक भोजनालय में खाने बैठे। परोसनेवाले ने नियमानुसार पहले (Soup) रसेदार भोजन रखा। हमने पूछा, "इसमें गोश्त तो नहीं है ?" उसने कहा, "तनिक सा मुर्गी का शोरवा इसमें मिलाया गया है।" यह कहकर उसकी वह बहुत तारीफ करने लगा और जब अंत में हमने उसे उठाकर ले जाने के लिये कहा तो यह बात उसकी समझ में न आई।

(११)

काहिरा में हमारा पथ-प्रदर्शक (Guide) एक पुरानी चाल का बुड्ढा आदमी था। वह लिखना पढ़ना नहीं जानता था पर अँगरेजी अच्छी बोल लेता था। एक स्थान पर उसने हम लोगों से कहा, "आप जरा ठहर जाइए, I want to bray।" हम चकराए। पीछे मालूम हुआ कि मिस्र की भाषा में "प" नहीं है इसलिये वहाँ के लोग उसका उच्चारण "ब" करते हैं।

(१२)

काहिरा में दो दिन रहने के बाद मेरी नाक में फुंसी हो गई। भैंस का दूध पीने से मुझे ऐसा हो जाता है। मैंने होटलवाले से पूछा कि क्या तुम्हारा दूध भैंस का है। उसने कहा "हाँ।" मैंने कहा, मुझे भैंस का दूध पसंद नहीं है। उसने तुरंत जवाब दिया ("Then, sir, it is cow's milk") "महाशय, तब वह गाय का दूध है।"

(१३)

बुधवार का दिन था। जुलाई १९२९ की १० तारीख थी। हम लोग लंदन से पैरिस जा रहे थे। फोकस्टोन (Folkstone) में इँगलिश चैनल पार करने के लिये जहाज पर बैठे। पोर्टर (कुली) हमारा असबाब रेल से लाकर जहाज में एक तरफ रखता जाता था, इसी बीच में हमारी निगाह दीवार पर जड़ी हुई एक तख्ती पर पड़ी जिस पर अँगरेजी भाषा में छपा हुआ था "गिरहकट लोगों से बचो"। हमने अपने पोर्टर से पूछा "क्या तुम्हारे देश में भी चोर होते हैं ?" उसने हँसते हुए, तख्ती की तरफ देखकर, तुरंत जवाब दिया ("It is not for this side of the channel, Sir, it is for the other side.") महाशय ! यह चैनल के

इस पार के लिये नहीं, यह तो दूसरी तरफ के लिये है, अर्थात् इँगलैंड में चोर नहीं हैं, फ्रांस आदि में हों तो हों।

(१४)

बुधवार दूसरी अक्तूबर को वीयना से वेनिस जाते हुए जब आस्ट्रिया की सरहद समाप्त हुई और इटली की सरहद शुरू हुई तब चुंगी (Customs) के अधिकारियों ने हमारे कैमेरा पर, जो हमारे गले में लटका हुआ था, चुंगी माँगी। हम लोगों ने समझाया कि हमारे कैमेरा नए नहीं हैं, हम लोग इनसे काम लेते आए हैं। परंतु उन लोगों ने बहुत शोर मचाया। न हम उनकी भाषा समझते थे, न वे हमारी। अंत में टूटी-फूटी अँगरेजी में उनमें से एक ने अपना निश्चय यह बतलाया कि जब हम इटली की सरहद से बाहर जायँ तो चुंगी का रुपया वापस ले लें। हम लोगों ने रुपया दे दिया।

शनिवार पाँच अक्तूबर को जब वेनिस से इजिप्ट के लिये रवाना होने लगे तब चुंगी के अधिकारी के पास रुपया वापस माँगने गए। हम लोग एक अफसर के यहाँ से दूसरे अफ़सर के यहाँ भेजे जाते थे, पर काम कहीं भी नहीं निकलता था। अँगरेजी बोलनेवाला केवल हमारा एक इटैलियन गाइड था। अंत में यह सोचा कि चलें उस दफ्तर के सबसे बड़े अफसर के यहाँ। वह हम लोगों को अपने देश की पोशाक में देखकर चकराया। बहुत देर बातचीत करने के बाद उसने कहा आप लोगों को उचित था कि कमरे में आने से पहले टोपी उतार देते, इत्यादि, इत्यादि। हम लोगों ने उसको बतलाया कि हमारे देश में ऐसा नहीं करते। अंत में बहुत कठिनाई से रुपयां वापस मिला।

(१५)

जरमन लोगों की बातचीत में 'नाई, नाई' (Nein) और 'या, या' (Ia) शब्द बहुत आते हैं, जिनका अर्थ है, 'नहीं' और 'हाँ'। इसी प्रकार फ्रांस में 'वी, वी' (Oui) और इटली में 'सी, सी' (Si) का प्रयोग होता है। सीमा प्रांतों में जहाँ पता लगना मुश्किल होता था कि कौन किस देश की बोली बोल रहा है, हम लोग अनुभव प्राप्त करने के बाद ऊपर लिखे हुए शब्दों को सुनकर प्राय जान लेते थे कि कौन किस देश का है।

बिदाई के समय जरमन एक दूसरे से कहते हैं 'आ विडाशेन' (Auf Wieder Schen) अर्थात् आशा है कि आप से फिर मिलेंगे। फ्रांस में बिदाई के समय कहते हैं (Ayou Revoir) अर्थात् 'जब तक हम फिर न मिलें'।

(१६)

योरप में बखशीश देने का रवाज बहुत है। खाना परोसनेवाले को, मोटरवाले को, थिएटर में जगह बतलानेवाले या वाली को इनाम जरूर देना चाहिए; नहीं तो आप असभ्य माने जाएँगे। इँगलैंड में उसके लिये Tip शब्द का प्रयोग होता है। हमारे देश में मजदूर लोग मजदूरी के ऊपर कुछ 'तम्बाकू' के लिये माँगते हैं। यहाँ की यह बखशीश है। फ्रांस के लोग Pourboire माँगते हैं अर्थात् "पीने की शराब"। यह उनकी बखशीश है।

(१७)

पैरिस में कहीं कहीं भोजन के पदार्थों के साथ पानी का दाम भी गिन लेते हैं। शराब के दाम का आधा हिसाब में लगा देते हैं। एक सज्जन ने पूछा कि पानी का दाम क्यों लगाया? भोजनालय के मालिक ने कहा "आप हमारी जातीय शराब का अपमान

करें और हम पानी का दाम भी न लें। शराब और पानी देने में मेहनत तो उतनी ही पड़ती है" !

यों तो योरप में शराब सभी जगह पी जाती है, पर फ्रांस के लोग रँगीले और रसीले हैं। रविवार १४ जुलाई को हमने उनका जातीय त्योहार देखा। जिस प्रकार मिर्जापुर में बीच सड़क पर और गलियों में स्त्रियाँ कजली गाने लगती हैं उसी प्रकार फ्रेंच मर्द और औरत दूकानें छोड़ छोड़कर सड़क पर उतर आते हैं और शराब पीकर नाचने लगते हैं। गाड़ियों का आना जाना भी बंद हो जाता है।

इँगलैंड में ऐसा देखने में नहीं आता। वहाँ संयम अधिक है। (Queue) 'क्यू' की प्रणाली शुरू हुई फ्रांस से पर इँगलैंड के लोग इसके बहुत अधिक पाबंद हैं अर्थात् स्टेशनों पर टिकट लेने में या थिएटरों इत्यादि में पाँति बाँधकर जाने में बहुत आगे हैं। फ्रेंच लोगों को सुंदरता प्यारी है, अँगरेजों को दृढ़ता। कहा जाता है—
"Frenchmen make all things beautiful, Englishmen make all things durable."

(१८)

स्वीडन के हेलसिंगबर्ग नगर में टौनहाल के ऊपर हम लोग कचहरी देखने गए। कचहरी बंद थी पर जजों की कुर्सियों की दोनों बाँहों पर लकड़ी के उल्लू बने हुए थे। पूछने से मालूम हुआ कि उन देशों में उल्लू न्याय का चिह्न है।

(१९)

सोमवार ३० सितंबर को टामस कुक की दूकान से हम लोग सड़क पर जा रहे थे, रास्ते में बहुत भीड़ देखी। मकान की खिड़कियों से भी लोग झाँक रहे थे। पता लगा कि अमेरिका से

एक रेड इंडियन आया है। रेड इंडियन अमेरिका के आदि-निवासी माने जाते हैं। हम लोग भी उसको देखने के लिये आगे बढ़े। एक दूकान के बाहर, जहाँ ज्याद: भीड़ थी, एक गाड़ी खड़ी थी जिसमें अनेक प्रकार की चिड़ियों के पर लगे हुए थे। मालूम हुआ उसी दूकान के ऊपर के हिस्से में वह रेड इंडियन गया हुआ है। पुलीस ने दूकान के अंदर लोगों का जाना बंद कर दिया था। हम लोग अपनी हिंदुस्तानी पोशाक में थे, इसलिये हम लोगों को किसी ने नहीं रोका। हम लोग सीधे उसके पास पहुँचे। उसकी पोशाक विचित्र थी। वह अँगरेजी बोलता था। हम लोगों से वह बड़े तपाक से मिला। बोला ("I am a world Teacher") मैं जगद्गुरु हूँ। मैं तुम्हारे गाँधी को जानता हूँ, इत्यादि। वह शराब के नशे में था। हमने कहा—"आप तो मस्त हैं, आप संसार को क्या सिखाते हैं।" बोला, "स्वतंत्रता; जो चाहे खाओ, जो चाहे पीओ, जहाँ चाहे जाओ; बंधन तोड़ो"।

(२०)

हम लोग एक दिन कई सज्जनों और देवियों से बातचीत कर रहे थे, इसी बीच में हिंदुस्तानी मित्रों को आपस में हिंदी में बातचीत करते हुए सुनकर एक देवी ने आश्चर्य से पूछा (Have you a language of your own) अर्थात् क्या आपकी अपनी भाषा भी है ?

वहाँ बहुत से लोग समझते हैं कि भारत में कोई व्यक्तित्व नहीं है। वे कहते हैं हमने सुना है ब्रिटिश इंडिया, डच इंडिया, फ्रेंच इंडिया, पोर्चुगीज इंडिया—बस !

यात्रा के लिये आवश्यक सामान*

यात्रा में साथियों का प्रश्न भी एक विचारणीय विषय है। हम लोगों की मण्डली आरम्भ में आठ साथियों की थी। धीरे धीरे लोग अलग होते गए, अंत में तीन साथी साथ लौटे। मंडली बड़ी होने के कारण बीच बीच में कई अड़चनें पड़ जाती थीं। कुछ बातें तो स्वाभाविक होती थीं जिनके कारण सब को विलंब तथा अन्य प्रकार की असुविधाएँ उपस्थित हो जाया करती थीं। इस अनुभव के बाद मेरी सम्मति में साथी दो या तीन से अधिक न हों तो अच्छा होगा और उनके चुनने में इस बात का पूरा ध्यान रहना चाहिए कि सब हों यथासंभव एक अवस्था, एक मनोवृत्ति, एक स्वभाव के।

सामान की सूची देने से पहले कुछ अनुभव की हुई बातें निवेदन कर देना चाहता हूँ। हम लोगों को तो भारतीय वेष में रहने से बहुत सुविधा हुई। साथियों में कई सज्जन अँगरेजी ढंग के कोट, पतलून, नेकटाई, कालर और हैट धारण किए हुए थे—किंतु ऐसा करने से कोई विशेष प्रतिष्ठा देखने में नहीं आई। हाँ, यह अवश्य होता था कि भीड़भाड़ में वे छिप जाते थे, उन्हें खोजने में प्रायः विलंब होता था। जैसे भारतवर्ष में कई नगर 'नफासत' के लिये प्रसिद्ध हैं वैसे विलायत में लंदन और पैरिस नगर समझे जाते हैं, जहाँ

---

* 'आवश्यक सामान', 'पासपोर्ट' और 'विलायती सिक्के', ये लेख बाबू गौरीशंकरप्रसाद लिखित हैं।

हर समय तथा अवसर के लिये भिन्न भिन्न प्रकार के वस्त्र पहिनने की प्रथा है। संध्या समय और रात को लोग काले रंग की नेकटाई या "बो" लगाया करते हैं। यदि उस व्यवहार से परिचय न रखते हुए कोई भिन्न रंग की "टाई" या "बो" लगाए होता है तो उस पर लोगों का ध्यान जाता है, उसकी ओर लोग देखते और एक दूसरे को संकेत द्वारा दिखाकर हँसते हैं, चाहे ऐसा पहिरनेवाला इसे समझ सके या न समझे। सड़कों पर ऐसे पोशाकवालों को देखकर उन्हें भ्रम हो जाता है कि यह सज्जन अफ्रीका या किसी ऐसी जगह के रहनेवाले हैं जहाँ के लोग गोरे रंग के तो नहीं होते किंतु अँगरेजी ढंग का पहिरावा पहिनते हैं, परंतु यदि आप भारतीय वेष में हैं तो इस का ज्ञान उन्हें हो जाता है कि यह भारतीय हैं। देश संबंधी न तो भ्रम होता है न हँसने का ही अवसर मिलता है। कुछ लोग यह समझते हैं कि अँगरेजी ढंग के पहिरावे से विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त होगी, किंतु यह भी नहीं है। विलायती लोग और विशेष करके इँगलैंड-वाले इतने एकाग्री हैं कि बाहरी व्यक्ति से चाहे वह किसी वेष में क्यों न हो जब तक परिचय या संबंध न हो जाय खुलकर नहीं मिलते-जुलते, न उससे आत्मीयता का व्यवहार ही करते हैं। जिस काम के लिये आप उनसे मिलें उसी काम तक उनका नाता या उनसे बातचीत हो सकती है। यदि उनके किसी मित्र या पूर्व परिचित व्यक्ति का परिचय करानेवाला पत्र लेकर आप उनसे मिलने जाना चाहते हैं तो आपको उनसे पहिले से ही पत्र-व्यवहार करके समय, तिथि और स्थान निश्चय करके ठीक उस समय पर पहुँचकर संक्षेप में बात-चीत करके छुट्टी लेनी होगी। यदि आपसे विशेष परिचय हो गया और अधिक बातचीत करने का अवसर वह आपको देना चाहते हैं तो आपको वह चाय पीने के लिये निमंत्रण देंगे, उस समय जाकर

बातचीत कीजिए। यदि और भी अधिक आत्मीयता बढ़ गई तो आप उन्हें चाय पीने या खाने के लिये बुलाइए। किसी होटल या भोजनालय में प्रबंध कीजिए, वह कृपा करके वहाँ आवेंगे और बात-चीत करेंगे। किंतु इन पारस्परिक व्यवहारों में भी वस्त्र के कारण बाधा नहीं होती—भारतीय वेष में साफ अच्छा कपड़ा आप पहिरे होंगे तब भी आपकी प्रतिष्ठा वह उन वस्त्रों के कारण कम नहीं किंतु अधिक करेंगे। यदि आप अँगरेजी चाल के वस्त्र पहिरे होंगे तो भी प्रतिष्ठा मनुष्यत्व के नाते या परिचय के दर्जे के अनुसार ही करेंगे। उसमें डर इस बात का अवश्य है कि यदि वहाँ की प्रथा के अनुसार किसी कपड़े की बनावट, सिलाई, कटाई, रंग, ढंग में तनिक भी भेद पड़ा तो आप हास्यास्पद हो जायँगे। किंतु यदि आपका वस्त्र भारतीय ढंग का है तो न उसमें इतनी बारीकी ही है कि उसमें फ़र्क पड़ेगा न किसी ऐसी बारीकी से वहाँवाले परिचित ही होते हैं कि वे उस पर विचार कर सकें। हाँ, यदि भारतीय वस्त्र आप वहाँ बनवाना चाहें तो विशेष प्रबंध करना पड़ेगा और विशेष दाम भी लगेगा। इसलिये यदि आप वहाँ भ्रमण करने जानेवाले हैं तो भारतीय वस्त्र पहिरना चाहिए और साथ ले जाना चाहिए। लोग कहते हैं कि वहाँ पढ़नेवालों को अँगरेजी पहिरावा रखना चाहिए। किंतु हमें भारतीय विद्यार्थी भारतीय वेष में सिर में साफा बाँधे, शेरवानी या लंबा कोट पहिरे हुए भी मिले। उनसे मालूम हुआ कि उनके साथ कोई भेद-भाव का बर्ताव नहीं हुआ, न उन्हें कोई कठिनाई उपस्थित हुई। इस बारे में भी भ्रम निर्मूल ही जान पड़ता है। वास्तव में बात तो यह जान पड़ती है कि यदि आपका हृदय पुष्ट है, भारतीय वस्त्रों से आप को प्रेम है तो कहीं बाधा नहीं पड़ेगी। यदि आप ही के मन में भूत बैठा है कि "लाखों मनुष्य क्या, सभी लोग जहाँ कोट, पतलून

नेकटाई, कालर लगाए हैं, वहाँ मुझे भारतीय वस्त्रों में घूमते भला, लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे" ऐसी अवस्था में उन वस्त्रों का तो कोई कसूर है नहीं आपके निर्बल मन का ही दोष है। इसके साथ ही उस संकल्प-विकल्प में आपको यह भी विचारना चाहिए कि "जहाँ सभी लोग गोरे रंग के हैं वहाँ हमारे ऐसे रंगवाले को लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे?" यदि आप वस्त्रों के बारे में लजाते हैं तो रंग के बारे में कम लजाने की बात नहीं होनी चाहिए। यदि आप अपने रंग से संतुष्ट हैं, उसे नहीं बदल सकते तो कपड़ों में भी बलपूर्वक दृढ़ रहना चाहिए—वैसे ही खान-पान की बात है। यदि आपके मन में यह बात आती है कि "जहाँ सभी लोग प्राय: मांसाहारी, मद्य-पान करनेवाले हैं वहाँ मैं अपने को शाकाहारी निरामिषभोजी कहूँगा तो लोग क्या कहेंगे, यदि चुरुट पाने के लिये कोई देगा तो भला हम कैसे इनकार कर देंगे, शराब का प्याला या गिलास भरकर देगा तो हम किस मुँह से नहीं कहकर उसे अस्वीकार करेंगे" तो आपकी आत्मा में ही बल की कमी है। उसे पुष्ट करने और संस्कार सुधारने की आवश्यकता है। यदि कभी किसी सज्जन ने हम लोगों को ऐसी चीज़ देना चाहा तो हम लोगों ने धन्यवादपूर्वक अस्वीकार करके अवसर पर ऐसी वस्तुओं को गिना दिया जिन्हें हम व्यवहार में नहीं लाते और संक्षेप से कारण तथा सिद्धांत भी बता दिया। प्राय: ऐसा हुआ कि उन्होंने हमारे सिद्धांत की सराहना की और हमारे साथी भी बन गए। इन बातों पर पहले से ही अपने जीवन तथा संस्कार और सिद्धांत को निश्चय कर लेना चाहिए, फिर उस पर विना संकोच के दृढ़ रहना चाहिए। व्यवहार में सदा आपके सिद्धांतों की जय होगी, परमात्मा सहायक होगा।

इतनी बातें ध्यान में रखते हुए हमारी सम्मति में नीचे लिखी वस्तुएँ यात्री के लिये आवश्यक हैं—

१ सिर में बाँधने के दो साफे हल्के रंग के, जिनमें एक रेशमी हो तो अच्छा होगा।

२ टोपी जैसी आप प्रायः पहिनते हों।

३ लम्बा कोट पार्सियों के ढंग का, बंद गले का या शेरवानी जो आप पहिनते हों, एक रेशमी, एक काले अलपाके का, एक जाड़े के लायक गर्म, एक सूती गर्दखोरा हल्के रंग का पट्टू या खद्दर—सब मिलाकर चार।

४ पैजामा चूड़ीदार सफ़ेद चार और एक जाड़े के गर्म कपड़े का।

५ दो पैजामे के नीचे पहिरने का ड्राअर या गंजी का पैजामा।

६ दो जोड़ पैजामा, कुर्ता, ढीला रात को पहिरकर सोने के लायक।

७ चार गंजी—दो मोटी, दो पतली खद्दर की।

८ चार कुर्ते या कमीज़ खद्दर के, हाथ में बटन लगे हों तो अच्छा होगा। दो मोटे, दो पतले—कालरदार या ऊपर से लगाने के कालर सहित।

९ लँगोट या जाँघिया जो आप पहिरते हों, चार—ये हल्के चिकने खद्दर के हों।

१० अँगौछे खद्दर के दो, एक हल्का एक मोटा।

११ मुँह पोंछने के रुमाल जेबी हल्के खद्दर के छः या आठ।

१२ जाड़े की ऊनी, पट्टू की, भर बाँह की गंजी के ढंग की बनी कोई चीज़ जिसे आप स्वेटर की जगह पर पहिर सकें, शरीर में सट जाने लायक।

१३ बिना बाँह या आधे बाँह की ऊनी फतुही या वेस्ट-कोट (यदि आप चाहें) पट्टू की।

१४ ऊपरी (ओवर) कोट लम्बा—यह भी देशी पट्टू का अच्छा बन सकता है। गर्दखोरे रंग का।

१५ एक कम्बल जो अवसर पर ओढ़ने या बिछाने का काम दे।

१६ खद्दर की मोटी चादर ओढ़ने या बिछाने का काम देने लायक।

१७ मोजा देशी सूती दो जोड़ा हल्के रंग का।

१८ जूता फीते का मज़बूत।

१९ चट्टी नहाने और सोने के कमरे में काम देने लायक।

२० मंजन, जीभी, कूँची जैसी आप काम में लाते हैं।

२१ किमोनो खद्दर का जापानी हल्के गर्दखोरे रंग का—सूती हल्का, होटलों में और जहाज इत्यादि पर जब आप शौच या स्नान करने जाते हैं उस समय रात के सोनेवाले कपड़ों के ऊपर से पहिरने और उन कपड़ों को ढक लेने के लिये इसकी आवश्यकता होती है।

२२ हजामत बनाने का सामान।

२३ साबुन कपड़ा धोने और शरीर धोने का अलग। शौच से आकर हाथ धोने का साबुन अलग।

२४ शौच में पानी ले जाने के वास्ते शीशी, जो जेब में आ सके।

२५ फौंटेन कलम।

२६ एक चमड़े का बक्स, ऊपर के सामान (छाता छोड़कर) रखने के लायक, बहुत मजबूत, तालेवाला।

२७ एक हाथ में लटकाने का बेग या छोटा बक्स जिसमें हजामत, शौच, इत्यादि का सामान, रात के पहिरने का एक जोड़ा कपड़ा, चट्टी इत्यादि अँट जाय।

२८ छाता एक।

२६ रुपया ले जाने की रीति—यदि आप रुपया इकट्ठा कर सकते हों तो सबसे अच्छी रीति यह मालूम होती है कि इंपीरियल बंक में गवर्नमेंट प्रामेसरी नोट खरीदकर रख दीजिए, उस पर आपको ब्याज मिलता रहेगा और उसी की जमानत पर लेटर आफ क्रेडिट या साखपत्र ले लीजिए। जहाँ जितने रुपए की आवश्यकता हो वहाँ उतना ले लिया कीजिए। जिस दिन आप रुपया लेंगे उस दिन से लिए हुए रुपयों पर ब्याज आपको देना पड़ेगा। इस रीति से ब्याज का घाटा आपको नहीं उठाना पड़ेगा—प्राय: लोग रुपया जमा करके यात्रा का चेक ले लेते हैं। इसमें पहले से एकदम रुपया दे देने के कारण उस पर ब्याज कुछ नहीं मिलता—रुपया जैसे उन चेकों का मिलता है वैसे ही साखपत्र पर भी मिलता जाता है।

विलायत में तीसरे दर्जे की रेल गाड़ियों में भी बैठने के हर स्थान के पास उसकी गिनती की संख्या लगी रहती है। हर आदमी एक संख्या के स्थान को चाहे तो पहले से सुरक्षित कर ले सकता है। गिने हुए स्थान रहने के कारण गिनती से अधिक संख्या यात्रियों की नहीं होने पाती। योरप महाद्वीप की प्राय: सभी रेलगाड़ियों में एक छोर से दूसरे तक जाने-आने के लिये गली बनी रहती है, इस कारण यात्रियों को स्थान मिलने और खोजने में बड़ी ही सुविधा होती है। गाड़ी ज्यों ही खड़ी हुई उसमें जहाँ कहीं रास्ता मिला, आप घुस पड़े; फिर गाड़ी चलती रहने की अवस्था में भी घूम घूमकर आपको जहाँ स्थान खाली मिले बैठ जाइए। लंबी यात्रावाली ट्रेनों में भोजन की गाड़ियाँ लगी रहती हैं। उनके अध्यक्ष से यदि आप पहले से अपनी इच्छा प्रकट कर देंगे तो वह शाकाहारी निरामिष भोजन बना देगा, किंतु दाम विशेष

लेगा। हाँ, यदि आप भोजनालयवाली गाड़ी में जाकर उनकी सूची में से अपने इच्छानुसार निरामिष वस्तुओं को चुनकर ले लेंगे ते। यथेष्ट सामान इच्छा-पूर्त्ति के योग्य मिल जायगा और विशेष दाम न देना पड़ेगा। रेल गाड़ी में बैठने मात्र के लिये ही स्थान पाने के आप अधिकारी हैं। यदि रात को सोने का प्रबंध आप चाहते हैं तो ऊँचे दर्जे का टिकट और सोनेवाली गाड़ी का विशेष भाड़ा देने और पहिले से ठीक कर लेने पर ऐसा प्रबंध हो सकता है। इसलिये बिस्तरा साथ में ले जाना व्यर्थ बोझ ढोना है। योरप भर में आप जहाँ भी जाइए कहीं धर्मशाला या उस प्रकार का ठहरने का स्थान नहीं मिलेगा। आपको अपनी सामर्थ्य या पूँजी और इच्छानुसार चुनकर होटल या "पेंशियों" इत्यादि में ही ठहरना पड़ेगा। वहाँ दाम के अनुसार पलँग, गद्दा, ओढ़ना, तौलिया इत्यादि सब सामान मिलेगा। वहाँ भी बिछौना ओढ़ना साथ में ले जाने की कोई आवश्यकता नहीं होती। जहाजों में भी सिवाय डेक पैसें-जरों के (जो खुले स्थान पर या बोरों, बक्सों के बीच पड़े रहते हैं, भाड़ा सस्ता होने के कारण उस दर्जे में जाते हैं किंतु कष्ट उठाते हैं) और सब दर्जेवालों को—जिन्हें कैबिन या कमरा मिलता है सोने का पलँग, बिछाने का गद्दा-चदरा, ओढ़ने का कंबल-चदरा, तौलिया इत्यादि सब सामान मिलता है इस कारण बिछौना, ओढ़ना ले जाना भारी भूल है।

कई सज्जनों ने मुझसे पूछा कि यात्रा में कुल क्या व्यय हुआ— उन्हें तो मैंने बता दिया किंतु ऐसी ही इच्छा अन्य सज्जनों की भी होगी। हमारा कुल व्यय साढ़े तीन हज़ार रुपया लगा। इसमें पाँच सौ के दाम की वस्तुएँ मोल ली गई थीं। उसे छाँट देने पर तीन हज़ार ही व्यय पड़ा। इसमें से एक हजार तो आने-जाने का मार्ग-व्यय

और दो हजार में पाँच महीना भ्रमण, विश्राम में सब मिलाकर व्यय पड़ा। इँगलैंड की रेल गाड़ियों में तीसरे दर्जे में भी मखमली गद्दे प्राय: लगे होते हैं। हाँ, उसके साथ ही भाड़ा भी बहुत अधिक होता है किंतु योरप की तीसरे दर्जे की गाड़ियों में लकड़ी के ही बेंच ढालू होते हैं। साथ में एक कंबल और एक चादर रहने से उन बैठकों पर कई पर्त्त करके बिछा लेने से बैठने में कष्ट नहीं होता। हम लोग प्राय: तीसरे ही दर्जे में रेलों में यात्रा करते थे और दिन में ही प्राय: रेल-यात्रा करते थे। इस कारण भी व्यय में कमी ही रही। ठहरने के लिये प्राय: थोड़े ही दाम के होटल या पेंशियों चुनते थे जिनमें तीन रुपए के अंदाज दैनिक भाड़ा देना होता था। कहीं कहीं इससे अधिक भी देना पड़ा। बहुधा बड़े बड़े होटल भी हमारी पार्टी के लिये किफायत कर देते थे। "बेड ऐंड ब्रेकफास्ट" रहने और जलपान के स्थान ही सुविधाजनक प्रतीत हुए। इनमें आपको ठहरने का स्वच्छ कमरा, पलँग, मोटा गद्दा, ओढ़ना, टेबुल, कुर्सी, बिजली की रोशनी इत्यादि और सबेरे साढ़े आठ बजे जलपान मिल जायगा। उसके बाद आप घूमते देखते जहाँ खाने का समय हो गया, निकट ही के भोजनालय में जाकर इच्छानुसार भोजन कीजिए और वहीं से फिर भ्रमण करने लगिए। संध्या समय भी जहाँ इच्छा हो भोजन करके स्थान पर आकर विश्राम कीजिए। यदि ठहरनेवाले स्थान पर भोजन के लिये आप बँध जायँगे तो उसके समय से आप को वहाँ लौट आना पड़ेगा या उसका दाम व्यर्थ जायगा। स्नान का हाल दिया ही जा चुका है।

पासपोर्ट

देश से बाहर जाने के लिये सबसे पहली और बड़ी आवश्यकता की चीज "पासपोर्ट" है, जिसका हमेशा साथ रखना बहुत ही

अनिवार्य है। यह भारतवर्ष के हर सूबे की सर्कार से मिल सकता है। इसके लिये जिलाधीश (कलक्टर) द्वारा छपे फार्म पर, जो उनके कार्यालय से, मिल सकता है खानापुरी करके प्रार्थना-पत्र देना होता है। इसके साथ तीन प्रतियाँ अपने फ़ोटो की, जो प्राय: तीन इंच लंबी और दो इंच चौड़ी हों जिसमें आपका मुख स्पष्ट हो, देनी होती हैं। उस प्रार्थना-पत्र के ऊपर आपका हस्ताक्षर भी हाकिम के सामने होना चाहिए। हाकिम उस पत्र पर आपके जाने हुए होने का प्रमाण लिखकर प्रांतीय सर्कार के यहाँ भेजेंगे और वहाँ से चीफ सेक्रेटरी के हस्ताक्षर से एक छोटी पुस्तिका, नंबर इत्यादि के साथ, आवेगी। उसमें आपका पूरा पता, आपका फ़ोटो हस्ताक्षर-सहित प्रमाणित होकर दिया रहेगा। इसकी फ़ीस ३) प्रार्थना-पत्र के साथ ही जमा कर देनी होती है। जिन जिन देशों में जाने के लिये उस प्रार्थना-पत्र में आपने आज्ञा माँगी होगी उनमें से जहाँ-जहाँ जाने की आज्ञा सर्कार आप को देगी उनकी सूची भी इस पुस्तिका में दी होगी। आप उन्हीं देशों में जा सकेंगे जिनका नाम उस पुस्तिका में लिखा होगा, अर्थात् जिन देशों में जाने के लिये सर्कार आज्ञा देती है। इस सूची में यदि कोई देश और बढ़ाना हो तो इसका प्रबंध इँगलैंड अथवा किसी दूसरे देश के बृटिश सर्कार के प्रतिनिधि (जो वहाँ हो) के कार्यालय से भी हो सकता है। इसकी कुछ बँधी हुई फीस देनी पड़ती है और जिस पंडा (यात्रा कंपनी या यात्रावाल) द्वारा आप यात्रा करते हों उनके कार्यालय में उनकी भी फीस देने से इसका प्रबंध हो सकता है। जब आप किसी देश में प्रवेश करना चाहें तो उसकी सीमा के भीतर जाने से पहले आपका पासपोर्ट जाँचा जायगा। भारतवर्ष से बाहर जाने के पहले इसकी जाँच जहाज ही पर होगी। जाँच करनेवाले प्राय:

अपनी मुहर उस पुस्तिका में लगा देंगे जिससे यह जाना जा सके कि आपका "पासपोर्ट" जाँचा गया और अमुक तारीख को उस देश में आपने प्रवेश किया। इस तरह पर हर यात्री को दोहरा प्रमाण चाहिए। एक तो अपनी सर्कार की आज्ञा अमुक देश में जाने के लिये और दूसरी उस देश की सर्कार की आज्ञा उस देश में प्रवेश करने के लिये। कहीं कहीं उस देश में प्रवेश करने से पहले उसके प्रतिनिधि फीस लेकर ऐसी आज्ञा देते हैं जिसका प्रबंध यात्रा कंपनियों द्वारा हो सकता है।

रजिस्टरी चिट्ठी, पार्सल, मनीआर्डर अथवा बंक से रुपया इत्यादि भी आपका पासपोर्ट देखकर आपकी शकल और हस्ताक्षर, उसमें दिए हुए फोटो और हस्ताक्षर, से मिलान करके आपको दिया जायगा।

इसको पास में रखने की आवश्यकता एक घटना के उल्लेख से और भी स्पष्ट हो जायगी। जब हम लोग लंदन से पैरिस गए तब हमारे कई साथी हवाई जहाज द्वारा गए और उनका असबाब हमारे साथ रेल द्वारा गया। एक सज्जन का पासपोर्ट असबाबवाले बक्स में बंद था। जब वह हवाई जहाज से पैरिस नगर के बाहर उतरे तब उनका पासपोर्ट माँगा गया। उनके साथी स्टेशन पर आकर हम लोगों से मिले और जब हम लोगों के साथवाले बक्स को खोलकर उनका पासपोर्ट वहाँ भेजा गया, उसकी जाँच हो गई, तब उन्हें नगर के भीतर आने की आज्ञा मिली। उतनी देर तक उन्हें वहाँ ठहरे रहना पड़ा।

इसलिये ज्यों ही देश से बाहर यात्रा करने का ध्यान आपके मन में आवे आपको चाहिए कि पासपोर्ट ले लें और उसे सदा साथ में रखें। यदि कहीं यह खो जायगा तो बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

कहीं कहीं चेचक के टीका लगाने का प्रमाणपत्र भी माँगा जाता है। यात्रा से सात वर्ष के भीतर टीका लगा हुआ होना चाहिए, जिसके सफल होने (दाना निकलने) का प्रमाण हेल्थ अफसर द्वारा, चलने से पहले, ले लेना चाहिए।

विलायती सिक्के

भारतवर्ष एक बहुत बड़ा देश है। यहाँ अनेक देशी राज्य भी हैं। अँगरेजी भारत में तथा ब्रह्म देश में एक ही प्रकार के सिक्कों द्वारा लेन-देन होता है। किसी किसी रियासत में अलग अलग सिक्के ढलते हैं, जिन पर उस रियासत का नाम मुद्रित रहता है जिसके वे होते हैं। किंतु मूल्य तथा आकार में समता होने के कारण अपरिचित यात्री को भी विशेष कठिनाई नहीं होती, न उसे विशेष भाँज या बट्टा द्वारा हानि उठानी पड़ती है। यों तो साधारण सर्राफ के पास एक रुपए की रेजगी या पैसा इत्यादि लेने आप जाते हैं तो एक पैसा या एक अधेला वह एक रुपए पीछे भाँज का काट लेता है। नोट का रुपया भँजाने में भी कभी कभी लोगों को बट्टा देना पड़ता है। किंतु विलायत में सिक्के हर देश के स्वतंत्र, अनोखे तथा असमान मूल्य, नाम और आकार प्रकार के होते हैं इससे यात्रियों को बहुत कठिनाई और घाटा सहना पड़ता है। गत लड़ाई के पहले, लड़ाई के समय में और लड़ाई के कुछ बाद भी सिक्कों की बहुत कठिनाइयाँ थीं। जरमन मार्क से वहाँवाले और दूसरे देशवाले कितने ही पिस गए, अकिंचन हो गए, लाखों की हैसियत रखनेवाले दरिद्र हो गए। लड़ाई के बाद जब अच्छी तरह शांति स्थापित हुई उस समय अनेक देशों में नए सिक्के चले और उनके मूल्य भी एक प्रकार से स्थिर हुए। ऐसी अवस्था हो जाने पर हम लोगों की यात्रा विलायत के कई देशों में हुई। कुछ छोटे बड़े देश छूट भी

गए, किंतु जिन जिन देशों में जाने और भ्रमण करने का अवसर मिला उन देशों के सिक्कों सम्बन्धी अनुभव में बहुत कठिनाई और कुछ हानि भी उठानी पड़ी। हर देश में भिन्न भिन्न सिक्कों और नोटों के चालू होने से बंकों, यात्रा-कंपनियों और सर्राफों को, बट्टा लेने का बहुत अवसर मिलता है। हम लोगों ने टामस कुक को, जिनकी धाक और साख भूमंडल में ख़ूब है, अपना पंडा बनाया था। इनका यात्रा-चेक ले लिया गया था, जिसे भँजाने में इनकी शाखाओं के अतिरिक्त प्राय: सभी देश के बंकों द्वारा द्रव्य मिल जाता है। किंतु बट्टा काटने में सभी बड़े कुशल होते हैं। इन चेकों पर तो यह छपा रहता है कि दर्शनी हुंडी के भाव के अनुसार पूरा द्रव्य इस चेक का दे देना, किंतु व्यवहार में भेद दीख पड़ता है। कलकत्ता, कोलंबो, लंदन इत्यादि में पूरे दाम लेकर उतने दामों के पूरे चेक मिले, किंतु जब इन चेकों का रुपया भँजाने गए तो इटली, फ्रांस, जरमनी ,आस्ट्रिया, डेनमार्क इत्यादि सभी देशों में नवग्रह की पूजा देनी पड़ी। चेक पर इतने का स्टाम्प लगना चाहिए, रुपया भँजाने में इस देश का इतने का स्टाम्प लगता है, हमारे यहाँ का भाव इतना ही है, पौंड नोट खरीदने का एक भाव और बेचने का दूसरा, इस पर इतना इस देश का टिकट देना पड़ेगा इत्यादि अनेक नाम से बहुत बट्टा कट जाया करता था। इनके अलावा लंदन से जब आपका रुपया आपको देने के लिये समाचार दूसरे देश में उन्हीं के कार्यालय में आता है तो वह कहते हैं कि हमारे पास तो इसी देश के नोट हैं और इतने ही भाव में हम देंगे, यदि अँगरेजी पौंडों के नोट लोगे, तो आठ आने सैकड़े बट्टा काटकर तथा अमुक अमुक बट्टा काट-कर मिलेगा। यदि आपने उनसे उसी देश के नोट ले लिए और वहाँ व्यय करने के बाद चलने और दूसरे देश का द्रव्य लेने का

अवसर आया तो फिर वैसी ही पूजा करनी पड़ती है। बाहरी यात्री अपरिचित तो होता ही है, समय की भी कमी रहती है, विवश होकर उसे मुँह-माँगा बट्टा देकर काम निकालना पड़ता है। जब सार्वदेशिक परिषद् बनी है जिसमें सभी देशों के प्रतिनिधिगण सभा में अनेक गहन विषयों पर विचार करते और अनेक प्रश्नों का निर्वाह निकालते हैं तो क्या यह संभव नहीं है कि एक नाम, दाम आकार-प्रकार के सार्वदेशिक सिक्के उस परिषद् में सम्मिलित देशों के लिये प्रचलित कर दिए जायँ ? कितने ही प्रतिष्ठित बंक ऐसे हैं जिनकी शाखाएँ और आढ़तें प्रायः संसार के सभी देशों में होंगी। क्या यह अनहोनी बात है कि उनके चलाए नोट सभी देशों में, बिना बट्टा कटे, बे रोकटोक पूरे दाम पर चला करें ?

भारतवर्ष के अनेक देशी रुपयों पर भिन्न भिन्न छाप लगे होते हैं। उसी प्रकार यदि योरपवाले अपने अपने छाप पर हठ करें तो वैसा छाप भी लगा करे किंतु बहुत अच्छा तो यही होगा कि सार्वदेशिक परिषद् की ओर से एक सार्वदेशिक बंक हो जिसका सार्वदेशिक नोट हर देश में बिना बट्टे के सर्वमान्य हो। एक ही सार्वदेशिक टकसालघर हो जहाँ से एक ही नाम, दाम, आकार, प्रकार के सिक्के ढलें और सभी देशों में बराबर बरते जायँ।

भारतवासी विद्यार्थियों को बाल्यावस्था से ही अँगरेजी और देशी भाषाओं के अंकगणित की पढ़ाई में दो ही प्रकार के सिक्कों की शिक्षा दी जाती है। एक भारतीय रुपया, आना, पाई और दूसरा अँगरेजी पौंड, शिलिंग, पेंस। दोनों ही में विभाग की रीतियाँ निराली हैं। गुणा, भाग, जोड़, घटाने इत्यादि की क्रिया में एक प्रकार से कठिनाई होती है। इँगलैंड को छोड़कर प्रायः सभी बाहरी देशों ने अपने प्रधान सिक्कों के सौ भाग करके उसके टुकड़े प्रचलित कर

रक्खे हैं, यह उनमें एक बहुत बड़ा गुण है। ऐसा होने से उन देशों के द्रव्य संख्या की जोड़, बाकी, गुणा, भाग की क्रिया में बड़ी ही सुविधा होती है। उनके व्यवहार में भी सुगमता होती है। इसी प्रकार तौल और नाप में भी मेट्रिक सिस्टेम (दशमलव प्रथा) है—जैसे, लम्बाई की मुख्य नाप मीटर है जो सवा तीन फुट के करीब लंबा होता है। उसी का सौ भाग सेंटीमीटर, हजार भाग मिलीमीटर और उसी मीटर का हजार गुना किलोमीटर, ग्यारह सौ गज़ या ५/८ मील के करीब होता है। ऐसे ही तौल में मुख्य बटखरा ग्राम है जो साढ़े पंद्रह ग्रेन अँगरेजी तौल के बराबर होता है, उसी का हजार गुना किलोग्राम सवा दो पौंड या एक सेर के करीब होता है। दूध इत्यादि नापने का लिटर पौने दो पाइंट के करीब होता है। इस गणित क्रिया की सुगमता की दृष्टि से अँगरेजी सर्कार मेट्रिक (दशमलव) रीति मान ले और दूसरे देशवाले पौंड को प्रधान मुद्रा मान लें, इस रीति या किसी अन्य सुगम रीति को मानकर ये समझौता कर लें और सार्वदेशिक तौल, नाप, दाम एक हो जाय तो सबको सुविधा हो जाय। जिन देशों में हम लोग गए उन देशों के सिक्कों का ब्योरा इस भाँति है:—

(१) सीलोन—सिंहलद्वीप या लंका।

चाँदी का १) एक रुपया जैसे भारतवर्ष में है उसी के सौ भाग सेंट हैं।

चाँदी के ५० सेंट = ॥) २५ सेंट = ।) ताँबे का १ सेंट = १/३ पैसा।

(२) इँगलैंड—सोने का सावरेन = १३।-)। या ३ पौंड = ४०) रुपया

चाँदी के बीस शिलिंग का एक पौंड होता है। बारह पेंस का एक शिलिंग और चार फार्दिंग का एक पेनी, ये सिक्के हैं।

आधा क्रौन चाँदी का	ढाई शिलिंग	१।।।) रुपए
फ्लारिन ,,	दो शिलिंग	१।=)॥ ,,
शिलिंग ,,	एक ,,	॥≡)
आधा शिलिंग ,,	छः पेंस	।–)॥
चौथाई ,, ,,	तीन ,,	=)।।।
पेनी ताँबा	एक पेनी	–) के करीब
आधा पेनी या हे-पेनी	)।।।	
फार्दिंग या चौथाई पेनी	)॥	

सावरेन या पौंड, दस शिलिंग और ऊपर पाँच, दस, बीस, पचास, सौ इत्यादि पौंडों के नोट प्रचलित हैं।

(३) फ्रांस का मुख्य सिक्का फ्रांक कहलाता है। लड़ाई से पहले इसका मूल्य ऊँचा था यानी सवा फ्रांक का एक शिलिंग होता था, जैसा इस समय स्विज़रलैंड के फ्रांक का मूल्य है। किंतु इन दिनों इसका दाम बहुत गिर गया है। सवा छः फ्रांक का एक शिलिंग यानी एक फ्रांक पौने दो आने के बराबर होता है। इसके सौवें भाग को सेंटिम कहते और व्यवहार में लाते हैं। प्रचलित सिक्के ये हैं:—

दो फ्रांक तथा एक फ्रांक काँसे के।

आधा फ्रांक (५० सेंटिम), २५, १० और ५ सेंटिम निकल के और दस, पाँच, दो और एक सेंटिम ताँबे के चलते हैं।

पाँच, दस, पचास, सौ, पाँच सौ, हजार इत्यादि फ्रांकों के नोट चलते हैं।

(४) स्विज़रलैंड में भी मुख्य सिक्का फ्रांक है जो "स्विस फ्रांक" कहलाता है। यह अँगरेजी सवा शिलिंग के बराबर होता है। इसके भी सौ भाग सेंटिम करके व्यवहार में लाते हैं। एक फ्रांक पौने चौदह आने के करीब दाम में होता है। प्रचलित सिक्के ये हैं:—चाँदी के

पाँच, दो, एक और आधा फ्रांक; निकल के पाँच, दस, बीस सेंटिम और दो, एक सेंटिम ताँबे के, इन पर रोमन अक्षरों में "हेल्वे-टिया" छपा है।

(५) जरमनी का प्रधान सिक्का "मार्क" है जिस पर "डिउशेज़ राइश" छपा रहता है। यह चाँदी का होता है, जिसका मूल्य प्रायः अँगरेजी शिलिंग यानी ग्यारह आने के बराबर है किंतु यह कुछ विशेष बट्टे पर चलता है। अँगरेजी पौंड के टामस कुक, अट्टा-बट्टा काटकर, प्रायः बीस मार्क, बीस सेंटिम देते हैं। एक मार्क का एक सौ "फीनिग" होता है। ये सिक्के चलते हैं। पाँच, तीन, दो और एक मार्क चाँदी के, पचास, दस और पाँच फीनिग निकल और काँसे के भी होते हैं। कुछ पुराने सिक्के अलुमिनियम के भी चले थे जो बंद हो गए। पाँच, दस, बीस, पचास, सौ, हजार इत्यादि मार्कों के नोट चलते हैं। ता० १ नवंबर सन् १९२३ ई० के मार्कवाले नोट सब रद्दी हो गए जिसके द्वारा बहुतों का दिवाला हो गया।

(६) नार्वे, स्वीडन और डेनमार्क—ये तीनों छोटे छोटे देश उत्तरी योरप से सटे हुए हैं। इन तीनों के सिक्के क्रोना और क्रोन कहलाते हैं, जिन पर इन देशों के नाम (नार्वीजेस, स्वीरिजेज, डान-मार्क) अलग अलग छपे होते हैं। अठारह क्रोन एक पौंड का मिलता है। एक क्रोन बारह आने के बराबर होता है। क्रोन का सौ भाग "ओर" होता है। नार्वे और स्वीडेन के चाँदी के पुराने सिक्कों पर दोनों देशों के सम्मिलित नाम थे किंतु अब ये अलग अलग ढलते हैं। इन दोनों देशों के क्रोना, और पचास, पचीस तथा दस "ओर" के सिक्के चाँदी के और पाँच, दो, एक "ओर" ताँबे के हैं। डेनमार्क का क्रोन और आधा क्रोन काँसे का, पचीस और दस "ओर" निकल के, पाँच, दो, एक "ओर" ताँबे के हैं। डेनमार्कवाले सिक्के नार्वे और स्वीडन में

कुछ बट्टे पर लिए जाते हैं किंतु डेनमार्क में उन देशों के नोट और सिक्के बड़े चाव से लिए जाते हैं। डेनमार्कवाले निकूल और ताँबे के सिक्कों में बीच में छेद होता है।

(७) आस्ट्रिया में मुख्य सिक्का चाँदी का शिलिंग है, जिसके सौ भाग ग्रोशेन होते हैं। ये सिक्के मार्च सन् १९२५ से चले हैं। पुराना सिक्का क्रोनेन कहलाता है। एक हजार क्रोनेन का मूल्य एक शिलिंग लगाया जाता है। यहाँ के चौंतीस शिलिंग का अँगरेजी एक पौंड समझा जाता है। भँजाने में चौंतीस के ऊपर बीस, तीस, पचास ग्रोशेन भी मिल जाते हैं। ऐसा एक शिलिंग सवा छः आने के बराबर होता है। दो, एक और आधे शिलिंग चाँदी के, दस ग्रोशेन निकूल के और दो, एक ग्रोशेन ताँबे के होते हैं।

(८) इटली—यहाँ का मुख्य सिक्का "लीरा" कहलाता, है जिसके सौ भाग "सेंटेसिमी" होते हैं। लड़ाई के पहले पचीस लीरा का एक पौंड होता था। अब इसका मूल्य भी बहुत गिर गया है। एक पौंड का साढ़े बानबे लीरा इस समय है। पुराने नोटों का मूल्य अब नहीं रह गया। एक लीरा सवा दो आने का है। बीस, दस, पाँच लीरा चाँदी के; दो, एक लीरा और पचास, बीस सेंटिसिमी निकूल के होते हैं। दस, पाँच, दो, एक सेंटिसिमी ताँबे के होते हैं। पचास, सौ, पाँच सौ, एक हजार इत्यादि के नोट जो "बैंक डि इटालिया" के चलाए हैं प्रचलित हैं। पुराने नोट रद्द हो गए।

मिस्र देश (ईजिप्ट) का प्रधान सिक्का "पियास्टर" है जिसके दस भाग "मिलियम" होते हैं। अँगरेजी एक पौंड के सत्तानबे या साढ़े सत्तानबे पियास्टर मिलते हैं। यहाँ एक सौ पियास्टर का मिस्रानी पौंड है। व्यवहार में यदि साफ अँगरेजी पौंड न कह दिया जाय

तो वे एक सौ पियास्टर एक पौंड के बदले माँगते हैं। एक पियास्टर प्राय: सवा दो आने का होता है। बीस, दस, पाँच, दो, एक पियास्टर चाँदी के; दस, पाँच, दो, एक मिलियम निकल के और आधे चौथाई मिलियम ताँबे के होते हैं। नये सिक्कों पर इस समय के यहाँ के राजा की मूर्ति छपी है और अँगरेजी में सिक्के का दाम तथा सन् भी दिया रहता है। पुरानों पर अरबी में सन् और दाम इत्यादि बिना मूर्ति के रहता है। पचास, सौ, पाँच सौ और हजार पियास्टरों के नोट होते हैं।

टामस कुक के यहाँ से ढाई शिलिंग, पौने दो रुपए का योरप के रेलों का टाइम-टेबुल मिलता है, जो प्राय: हर महीने नया छपता है। उसके आरंभ में प्राय: सभी देशों के सिक्कों का हाल छपा रहता है। इन तथा अन्य अनेक देशों के सिक्के काशी सेंट्रल-हिंदू-स्कूल और दयानंद हाई-स्कूल में संग्रहीत हैं, जो उन स्कूलों के हेड मास्टरों द्वारा देखे जा सकते हैं।

— —

इच्छा का अंकुर*

जब सन् १८९६ ई० में स्कूल की फाइनल परीक्षा में मेरा नाम उच्च श्रेणी में आया, मेरे फुफेरे भाई परलोकवासी पूज्य राय श्यामकृष्ण जी ने एक दिन कहा कि तुम्हें विलायत जाकर पढ़ना चाहिए। उस समय यह बात मुझे गाली की तरह लगी; और क्यों न लगती? मुझसे पहले मेरे कुटुम्ब में किसी ने अँगरेजी नहीं पढ़ी थी। मेरे जन्म से पहले, जो संवत् १९३२ के ज्येष्ठ मास में हुआ था, मेरे एक ताऊ बाबू गंगाप्रसादजी ने फारसी पढ़ी थी, उनका थोड़ी ही अवस्था में शरीर छूट गया था। मेरी दादी कहा करती थीं कि हमारे यहाँ फारसी, अँगरेजी पढ़ना नहीं सहता। मैंने रसड़ा (बलिया जिला) में बाल्यावस्था में प्राचीन प्रणाली के अनुसार गुरुजी के यहाँ पहाड़ा इत्यादि पढ़ा; फिर कुछ दिनों वहाँ के हिंदी मिडिल स्कूल में थोड़ी हिंदी पढ़ी और बाद कपड़े की दूकान पर महाजनी हिसाब-किताब, बही-खाता सीखकर मैं काम करने लगा। मेरा विवाह १३ वर्ष की ही अवस्था में कर दिया गया था। उस समय हम तीन भाई थे। हमारे पिताजी से उनके एक मित्र ने कहा कि एक लड़के को अँगरेजी पढ़ाइए। पूज्य पिताजी ने हम तीनों भाइयों से पूछा और अक-

---

* यहाँ से यात्रा का सविस्तर वर्णन आरम्भ होता है। यह बाबू गौरीशंकर प्रसाद का लिखा हुआ है और "आज" में छपा था। सम्पादकजी की आज्ञा से वह इस पुस्तक में, बहुत कुछ घटा बढ़ाकर, छापा जाता है।

स्मात् मैं बोल उठा कि मैं अँगरेजी पढ़ूँगा। वहाँ एक मास्टर साहब निजी तौर पर लड़कों को अँगरेजी पढ़ाते थे। उनसे मैंने भी १४ वर्ष की अवस्था में अँगरेजी पढ़ना आरंभ किया। अगले वर्ष बड़ा सूर्य-ग्रहण नहाने मैं पिताजी के साथ काशी आया। वहीं अँगरेजी स्कूल में मेरा नाम लिखा दिया गया। बाल्यावस्था के संस्कार, अग्रवाल-वैश्य-कुल और देहात का रहन-सहन, रामानंदी वैष्णव सम्प्रदाय का अनुयायी—ऐसे आदमी को जब वह सुन चुका हो कि विलायत जाने-वाला बिना मांस, मछली, मदिरा ग्रहण किए नहीं बच सकता, वहाँ जाने की सलाह गाली के समान लगे तो आश्चर्य ही क्या? बात भी उस समय साधारण सी ही थी, उसमें वास्तविकता का लेश भी न था। जब मैं चार वर्ष बाद बी० ए० पास हुआ तो मेरे पिता जी का परलोकवास हो गया। कुछ कमाने की आवश्यकता सिर पर आ पड़ी। कानून की पढ़ाई से नाम कटाकर मल्लापुर (सीतापुर जिले) में १००) महीने की नौकरी करनी पड़ी। वहाँ से १९०४ की जुलाई में नौकरी छोड़ मैंने फिर कानून के दर्जे में नाम लिखाया और सन् १९०६ ई० में पास होकर मैं वकालत करने लगा। कमाने की आवश्यकता ने पिंड न छोड़ा। न तो पास में धन था, न किसी की ऐसी सहायता ही थी जिससे विलायत जाना होता। किंतु अब धीरे धीरे विलायत देखने की इच्छा अंकुरित होने लगी।

सन् १९१० ई० में जब परलोकवासी श्री लक्ष्मीचंद विलायत से आए तो अग्रवाल स्पोर्ट्स क्लब के युवक सदस्यों ने उनके साथ भोजन किया और हम लोग, जो अग्रवाल समाज के सदस्य थे, उसकी सराहना करनेवालों और समर्थकों में थे। उस समय इस आशय की विज्ञप्ति निकाली गई, जिस पर स्वर्गीय श्रीगोविंददासजी इत्यादि अग्र-वाल-समाज के नेताओं के साथ मेरा भी हस्ताक्षर था, कि विद्यो-

पार्जन तथा व्यापार के निमित्त समुद्रयात्रा और विलायत जाना उचित तथा धर्मसंगत है। काशी की अग्रवाल बिरादरी में घोर आंदोलन मच गया। सैकड़ों कविताएँ और छोटे छोटे नाटक इत्यादि दोनों ओर से छाप छापकर बाँटे गए। हम लोग "संसर्गी के संसर्गी" और श्री लक्ष्मीचंद के साथ खानेवाले "संसर्गी" नाम से पुकारे जाने लगे। उस समय की अग्रवाल बिरादरी के चौधरी तथा उनके पायकों ने पञ्चायत करके संसर्गियों तथा संसर्गियों के संसर्गियों को, बिना उनका जवाब सुने, बिना पंचायत की सूचना दिए, जाति से खारिज कर दिया। मैं उस समय काशी से बाहर बारात में गया था। आने पर मैंने यह समाचार सुना तब चौधरीजी की सेवा में पत्र लिखा और तजवीजसानी की दर्ख्वास्त की। मगर वहाँ सुनवाई क्यों होती ? उस समय से मेरे चित्त में विलायत जाने की इच्छा और भी प्रबल हो चली। पर बंधनों ने मुझे और भी जकड़ रखा था। जब विलायतवालों की कथा वहाँ से लौटे हुए मित्रों से सुनता था तब वहाँ जाने की इच्छा और भी प्रबल हो उठती थी। राजनीतिक संस्थाओं में भाग लेने और भारतवासियों की राजनीतिक तथा आर्थिक जकड़बंदियों की ओर विशेष ध्यान होने से वहाँ जाने की इच्छा दिन दिन अधिक होती गई। सन् १९१३ के करीब जब मैं आर्यसमाज में सम्मिलित हुआ उसके पहले ही से खान-पान के छूत के भूत ने साथ छोड़ दिया था, किंतु खाद्य, अखाद्य पदार्थ का विवेक और निरामिष भोजन की दृढ़ता मेरे चित्त में बराबर वैसी ही बनी रही जैसी पहले थी, अब भी है और आशा है कि जीवन-पर्यंत रहेगी। किंतु तब भी विलायत जाना असंभव सा ही प्रतीत होता था।

निश्चय और तैयारी

गत कार्तिक मास में श्री रामनारायण मिश्र ने मुझसे प्रस्ताव किया

कि कुछ मित्र विलायत-यात्रा के लिए तैयार हो रहे हैं और व्यय भी थोड़ा ही होगा। उस समय मैंने भी इच्छा प्रकट की, प्रस्ताव का अनुमोदन किया। किंतु कई कठिनाइयाँ रास्ते में दीख पड़ीं। उनकी ही सलाह से—कि न भी जाना हो तो पासपोर्ट तो प्राप्त कर लो—अवसर अनुकूल देख मैंने उद्योग किया इसके लिये आधे कार्ड-साइज के तीन फोटो, जिला मजिस्ट्रेट के यहाँ से छपा फार्म लेकर उसे भरकर ३) फीस सहित देने होते हैं। पासपोर्ट नवंबर मास ही में आ गया। दिसंबर के अंत में श्री श्रीराम वाजपेयी ने पूज्य श्री भगवानदास जी के घर पर कुछ ऐसे लोगों की बैठक बुलाई जो समझे जाते थे कि विलायत जायँगे। उनमें मेरा भी नाम उन लोगों ने लिख रखा था। वहाँ भी मैंने निश्चित रूप से स्वीकृति नहीं दी, किंतु ११ जनवरी सन् १६०६ ई० के "लीडर" में एक सूची विलायत जानेवालों की वाजपेयीजी ने छपवा दी जिसमें मेरा नाम भी दे दिया था। अब तो धीरे धीरे यात्रा निश्चित हो चली, मुझे भी पक्का वचन दे ही देना पड़ा और तैयारी होने लगी। १ या २ मई को काशी से चलना होगा, यह भी निश्चय कर दिया गया। कई दिन पहले से मित्रों ने बिदाई के उपलक्ष में बुला बुलाकर खिलाना-पिलाना और शुभ-कामना प्रकट करना आरंभ कर दिया। कुछ कपड़े भी विशेष रूप से बनवाए गए। यह प्रश्न बारंबार उठता था कि विलायत में किस ढंग का कपड़ा पहना जाय। कई मित्रों की यह सम्मति होती थी कि अँगरेजी कोट, पतलून, हैट, नेकटाई, कालर इत्यादि पहनना आवश्यक तथा वहाँ के मेल का होगा। अन्य मित्रों की राय थी कि अँगरेजी ढाँचे का कपड़ा पहनने में वहाँ की रीति के अनुसार भिन्न भिन्न समय के अवसरों के भिन्न ढंग के पहिरावे होते हैं, इसका निबाहना हमारे लिये

बहुत ही कठिन होगा। मैं तो बराबर बंद कालर का लंबा कोट और पैजामा पहिना करता था, इस कारण मैंने अपने ढंग के ही कपड़ों का पहिनना निश्चय किया और बनवाया, किंतु पैजामा चूड़ीदार बनवाया। कुछ सामान रास्ते में लेना पड़ा और कुछ वस्तुओं के बिना कुछ असुविधा हुई भी, इसलिये पूरी आवश्यक वस्तुओं की सूची पहले दे दी गई है। हाँ, यह मोटी बात यहीं कह देनी चाहिए कि जितना कम सामान साथ रहता है उतना ही कम कष्ट होता है। कपड़े तो मैंने इस कारण बनवाकर ले जाना आवश्यक समझा कि जहाँ तक संभव हो विदेशी वस्त्रों तथा सिलाई में पैसा न व्यय करना पड़े।

काशी से जाने के पहले जिन जिन संस्थाओं से मेरा संबंध था उनके कार्यों का भार उनकी प्रबंध समितियों द्वारा दूसरों को सौंपकर मैंने लोगों के देने-पावने का हिसाब निपटाया और १ मई को अपना वसीयतनामा, जो बदरी-केदार यात्रा के अवसर पर छः वर्ष पहले ही लिख रखा था, एक संशोधन-पत्र के साथ लिफाफे में बंद कर मुहर लगा दयानंद स्कूल के हेडमास्टर के पास स्कूल की लोहे की आलमारी में सुरक्षित रखवा दिया। इंपीरियल बंक से लेटर आव क्रेडिट (साखपत्र) लिया जिसमें रास्ते की आवश्यकता से अधिक द्रव्य की जोखिम साथ में न ले जानी पड़े। हम लोगों ने "ओरामा" जहाज से, जो कोलंबो से १५ मई को खुलनेवाला था, तीसरे दर्जे में जाने के लिये टामस कुक कंपनी के द्वारा बंबई के दफ्तर से पत्र-व्यवहार कर और भाड़ा अगाऊ भेजकर नाम लिखा लिया, क्योंकि पहले से ही ऐसा न कर लेने से जगह मिलना अनिश्चित क्या असंभव हो जाता है। हम लोगों ने तीसरे दर्जे के मध्यम श्रेणी के कमरे के लिये प्रति यात्री २८ पौंड = ३७९) दिया। यह भाड़ा कोलंबो से लंदन तक का मय भोजन

इत्यादि के था, किंतु यात्री चाहे बीच ही में उतर जाय, जैसा हम लोगों ने किया। उस भाड़े में ११) सीलोन रेलवे का भाड़ा मुजरा कर दिया गया था।

काशी से बिदाई

२ मई को बनारस छावनी स्टेशन से ४॥ बजे श्री रामनारायण मिश्र, श्री गोकुलचंद कपूर, श्री श्रीनाथ साह, श्रीअन्नपूर्णानंद तथा मैं, कुल पाँच यात्री रवाना हुए। स्टेशन पर कई सौ मित्रों, पूज्य पंडितों तथा अन्य सज्जनों ने यात्रियों को माला पहना, फूल के गुच्छे, नारियल, मिठाई इत्यादि भेंट दे, गले लग लगकर शुभाशीर्वाद दिया। यात्रियों ने भी बड़ों के चरण छू, बराबरवालों तथा दूसरों से गले मिल प्रेमाश्रु बहाकर बिदाई ली। सैकड़ों मित्र तो मोगल-सराय स्टेशन तक आए और वहाँ भी वैसा ही दृश्य रहा। श्री दामोदरदास खंडेलवाल और श्री वाजपेयीजी कलकत्ते में मिले। टामस कुक के कार्यालय में कलकत्ते से कोलंबो तक रेल का दोयम दर्जे का टिकट ८३॥।) प्रति यात्री देकर लिया गया। टिकट लेने में पहले से कुछ भूल तथा भ्रम हो गया था, इस कारण पहलेवाले टिकट लौटा-कर दूसरे लिए गए। टामस कुक से सीधे बनारस से जहाज तक, अर्थात् कोलंबो या बंबई जहाँ से जाना हो वहाँ तक का एकदम टिकट ले लेना अच्छा होता है। उसमें यह सुविधा होती है कि इन टिकटों को लिए हुए जहाँ चाहें रास्ते में उतरें और ठहरें। ये एक प्रमाण-पत्र देते हैं कि यह यात्री विलायत जानेवाला है, इसके साथ दो मन तक सामान रह सकता है। हर जगह टिकट लेने का बखेड़ा भी छूट जाता है। बनारस से कोलंबो का ११३॥।) एक आदमी का रेलभाड़ा दूसरे दर्जे का लगा। कोलंबो काशी से बहुत दूर है और वहाँ जाने में व्यय और कष्ट भी अधिक है, इससे बंबई नगीच पड़ता

है। रेल तथा जहाज का भाड़ा और यात्रा में समय भी कम लगता है। किंतु ऐसा करने के लिये कई कारण थे। हम लोग कोलंबो जाते हुए रास्ते के स्थान सीलोन (लंका) टापू इत्यादि भी देखना चाहते थे। तीसरे दर्जे के मुसाफिर ले जानेवाला कोई जहाज बंबई से इतनी अनुकूल तारीख को खुलनेवाला नहीं था। मई से पहले अर्थात् अप्रैल में यात्रा करना बहुत अच्छा होता। भारतवर्ष में मई की गरमी से बचते और समुद्र भी शांत मिलता, किंतु मैं अप्रैल में घर छोड़ नहीं सकता था और कई अन्य साथी भी मई के पहले नहीं चल सकते थे। मई में इस समय यही जहाज कोलंबो से जाने के लिये मिल सकता था।

भावी यात्रियों के लिये

यात्रियों को चाहिए कि कम से कम ६ महीना पहले से पत्र-व्यवहार करके तिथि, जहाज और जहाँ से समुद्र की यात्रा आरंभ करनी हो वह स्थान निश्चित कर लें। यात्रियों का प्रबंध करनेवाली कई कंपनियाँ हैं जिनके कार्यालय भूमंडल में जगह जगह हैं। इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध टामस कुक है। इसका प्रधान कार्यालय लंदन में है; पता है मेसर्स टामस कुक ऐंड संस लिमिटेड, बार्कले स्ट्रीट, पिकडली। लंदन में इसके कई और कार्यालय हैं। भारतवर्ष में भी कलकत्ता, शिमला, दिल्ली, मद्रास, बंबई, कोलंबो, रंगून, सिंगापुर में इसके कार्यालय हैं जिनमें भिन्न भिन्न विभागों द्वारा खूब काम होता है। मेल-डाक विभाग में यात्रियों के नाम की चिट्ठियाँ इत्यादि जाकर रखी रहती हैं, जो माँगने पर मिल जाती हैं या जहाँ मँगाइए भेज दी जाती हैं। यात्रियों की सुविधा के लिये ये सब प्रकार का काम कर देते हैं। संसार भर की यात्रा का प्रबंध—रेल का, जहाज का, मोटर का—कर देते हैं। स्थान स्थान पर इनके "गाइड"

(पथ-प्रदर्शक) और "इंटरप्रेटर" (दुभाषिया) मिलते हैं। हर जगह की यात्रा की सूची समय-विभाग सहित ये बना देते हैं, स्थानों की, अलग अलग विवरण सहित, पुस्तिकाएँ, बिना मूल्य देते हैं, कोठीवालो का काम करते हैं किसी देश का रुपया या नोट किसी दूसरे देश के रुपए या नोट में बदल देते हैं, विदेश का साखपत्र (लेटर आव क्रेडिट) और यात्रियों के चेक "ट्रवलर्स-चेक" भी देते हैं जिसे जिस देश में चाहिए भुना लीजिए। इन चेकों में साधारण नोटों की अपेक्षा यात्रा में जोखिम बहुत कम रहती है। आपका माल-असबाब बीमा या बिना बीमा किए जैसा आप चाहें लेकर आप जहाँ कहिए, वहाँ समय से पहुँचा देते हैं। यात्रा का भोजन सहित प्रबंध बहुत अच्छा करते हैं। यह प्रबंध कुछ महँगा पड़ता है, किंतु इसमें समय और झंझट की बड़ी बचत होती है। अकेले जानेवाले ऐसे यात्री को, जो कुछ अधिक व्यय कर सकता है, यह प्रबंध बहुत ही सुगम होता है। हमने भी यात्रियों के पाँच पाँच पौंडवाले चेक टामस कुक द्वारा डेढ़ सौ पौंड के लिए। ये एक "इंडिकेशन लेटर" देते हैं जिस पर आप का हस्ताक्षर अपने सामने कराते हैं और चेकवाली किताब अलग होती है। जब आप चेक भुनाना चाहें, चेक पर रुपया देनेवाले बंक के कार्यालय में उसके मुख्य कार्यकर्त्ता के सामने आपको हस्ताक्षर करना होगा। वह हस्ताक्षर "इंडिकेशन लेटर" वाले आपके हस्ताक्षर से मिलाकर उतनी मुद्रा या उसके बराबर उस देश की मुद्रा जहाँ आप भुना रहे हों, आपको मिल जायगी। यह "इंडिकेशन लेटर" और चेकवाली किताब अलग अलग रखना आवश्यक है क्योंकि दोनों किसी के हाथ पड़ जायँ तो वह आपके हस्ताक्षर का जाल बनाकर चेक भुना ले सकता है।

हिंदुस्तानी जज लोग भी धोती पहने नंगे पैर बैठे दिखाई दिए। यहाँ की गरमी में ऐसा होना बहुत स्वाभाविक है। बड़ी बड़ी सभी इमारतें, कालेज इत्यादि समुद्र के किनारेवाली सड़क पर हैं। सड़क के एक ओर ये विशाल भवन और दूसरी ओर समुद्र बहुत ही शोभायमान है। इस सड़क पर घूमने या गाड़ी-मोटर में वायु-सेवन करने से बहुत आनंद मिलता है। श्री संजीवकामट ऐडवोकेट ने हम लोगों को दिन में जल-पान और रात को भोजन कराया। यहाँ सेवा-समिति तथा आर्यसमाज भी हैं, किंतु हम लोग वहाँ न जा सके। यहाँ गरमी से कष्ट रहा। खद्दर-भण्डार से कपड़ा लिया। बाजार से एक एक रुपए जोड़ा अच्छी चट्टी ली। यहाँ के स्काउटों से हम लोगों को बड़ी सहायता मिली। बाजार से और भी कुछ सामान खरीदा गया। खद्दर के पूरं और आधे बाँह के कुरते बनवाये गए। ८ मई की रात ८ बजेवाली छोटी लाइन की गाड़ी से हम लोग एगमोर स्टेशन से रवाना हुए। पहले से यहाँ भी रिजर्व करा लेने से स्थान ठीक मिला, नहीं तो बड़ी भीड़ और कठिनाई का सामना करना पड़ता।

त्रिचनापली

९ तारीख को सबेरे ७ बजे त्रिचनापली स्टेशन पर हम लोग उतर पड़े और तीन तीन रुपए में ३ घंटे के लिये मोटर भाड़ा करके ६ मील की दूरी पर जाकर हमने श्री रंगनाथ का मंदिर देखा। यह विष्णु भगवान् और वैष्णव संप्रदाय का बहुत बड़ा मंदिर है। हम लोगों ने घूम घूमकर बड़े हाते के भिन्न भिन्न भागों को देखा। एक अँगरेजी जाननेवाले ने हमें यहाँ का सब हाल समझाया। यहाँ की पत्थर की कारीगरी, चित्रकारी और मंडपम् की बनावट देखने योग्य है। इस मंदिर का प्रबंध गवर्न्मेंट द्वारा होता है।

कहा जाता है कि इसमें एक लाख रुपए की वार्षिक आमदनी है। दक्षिण के अन्यान्य मंदिरों की तरह यहाँ भी देवदासियों की प्रथा है। अपनी कन्याओं को लोग देवता को चढ़ा देते हैं। वे बिना ब्याही रहती हैं, किंतु संतति उत्पन्न करती हैं। मंदिर से ही उन्हें जीविका मिलती है। प्रदर्शक को कुछ पारितोषिक दे जल्दी से हम लोग चल पड़े। यहाँ लोग ठहरते और मंदिर का भोग, जो बहुत अधिक लगता है और बिकता है, लेकर भोजन करते हैं। रास्ते में पहाड़ पर किला और मंदिर है जिसे समयाभाव से हम लोग न देख सके। स्टेशन पर लौटकर स्नान आदि कर कुछ साथियों ने होटल में और हम लोगों ने हिंदू-भोजनालय में मद्रासी भोजन आनंदपूर्वक किया। यहाँ से ११॥ बजे की गाड़ी से चल पड़े और ३॥ बजे तीसरे पहर—

मदुरा

पहुँचकर स्टेशन पर ही ऊपर एक कमरा "रेस्ट हाउस" लेकर ठहरे। दो दो रुपए पर फिटन (विक्टोरिया) गाड़ी कर और एक पथ-प्रदर्शक साथ ले मीनाक्षी देवी का विशाल मंदिर देखा। इसमें बड़ा तालाब और कई मंजिल ऊँचे, मूर्तियों से सुसज्जित, कई शिखर बने हैं, जो फाटकों पर हैं। बाद में शहर और यहाँ के प्राचीन राजा का महल देखा, जहाँ अब जजी कचहरी होती है। यहाँ से थोड़ी ही दूर पर एक बहुत बड़ा तालाब देखा जिसके बीच में बगीचा और मकान बना है, जिसमें नाव पर लोग जाते हैं। यहाँ का कपड़ा बुनने और रँगने का व्यवसाय बहुत प्रसिद्ध है। हम लोगों ने एक व्यापारी की दूकान पर कुछ कपड़े देखे। किसी किसी ने कुछ लिया। गरमी के मारे व्याकुल हो स्टेशन पर हम लोग लौट पड़े। स्नान-भोजन कर खुली छत पर पड़ रहे। १॥ बजे ही से उठकर तैयारी की गई और ३ बजे रात की गाड़ी से चलकर सबेरे १० तारीख को—

पहुँचे। स्टेशन से बैलगाड़ी कर मंदिर गए जो करीब एक या डेढ़ मील है। यह शैवमंदिर भी बहुत बड़ा है। इसके हाते में बहुत से कुएँ हैं। इनमें से एक पर हम लोगों ने स्नानकर मंदिर देखा। बाजार से पूरी बनवाकर साथ ली और १०॥ बजे की गाड़ी से लौट पड़े। मंडपम् स्टेशन आकर यहाँ से डाक्टरी जाँच के बाद सर्टिफिकेट ले ३ बजे की सीलोन-मेल से धनुषकोटि स्टेशन गए। सीलोन गवर्न्मेंट की ओर से यहाँ डाक्टर नियुक्त हैं, जब इनकी जाँच के बाद सर्टिफिकेट लेकर यात्री जाता है तभी सीलोन टापू में घुसने पाता है। धनुषकोटि स्टेशन से उतरकर ट्रेन के बराबर ही जो स्टीमर खड़ा था उसपर सवार हो गए। स्टीमर के कुलियों ने ही हम लोगों का सामान पहुँचाया। यहाँ से भारत-माता को प्रणाम कर, बिदा हो ५ बजे स्टीमर में चले और ७॥ बजे सीलोन तलाई-मानार स्टेशन पहुँच रेल में सवार हुए।

लंका

स्टीमर पर रुपया बदलनेवाला घूमता और भारतीय मुद्रा के बदले सीलोन की मुद्रा बराबर देता था। लंका का रुपया तो भारतीय मुद्रा के बराबर ही है, किंतु एक रुपए के सौ सेंट होते हैं जो पैसे से छोटा होता है। ५०, २५, १० और ५ सेंट के सिक्के भी होते हैं जिनके द्वारा लेन-देन होता है। पहले से तार दिलवा दिया गया था, इस-लिये शाकाहारी भोजन हम लोगों को इसी ट्रेन के भोजनवाले डब्बे में मिला, जिसका तीन तीन रुपया प्रति व्यक्ति दिया गया। रोटी, मक्खन, हरा मटर और आलू की तरकारी, मुरब्बा इत्यादि मिला। दूसरा प्रबंध खाने का यहाँ होना असंभव था। रात को नींद अच्छी आई। इधर वृष्टि हो जाने से गर्मी शांत हो गई थी। सबेरे दोनों

ओर खेतों की छटा, पानी का प्रवाह, नारियल के विस्तृत जंगल देखते हुए चले। इधर ही से गरी का गोला, नारियल इत्यादि भारत ओर दूसरे देशों को जाता है।

कोलंबो

११ मई को ८॥ बजे सबेरे कोलंबो फोर्ट स्टेशन पहुँचे और पास ही वाई० एम० सी० ए० में ठहरे। पहले से ठीक न कर लेने के कारण हम लोगों को हवादार स्थान नहीं मिला। यह ईसाइयों की बहुत बड़ी संस्था है। यहाँ युवक लोग दोनों समय व्यायाम करते हैं। स्नान और भोजन कर वे अपने अपने काम पर जाते हैं। भोजन सस्ता है; करीब ।≈) में साधारण दाल, भात, साग एक समय मिल जाता है। इसके अतिरिक्त और जो जो वस्तुएँ लीजिए उनका अलग दाम देना होता है। शौच, स्नान आदि का प्रबंध बहुत ही अच्छा है। ठहरने का कमरा, ओढ़ना, बिछौना १॥) २) रोज में मिल जाता है। यहाँ के टामस कुक के कार्यालय में, जो पास ही है, यात्रा संबंधी पूछ-ताछ कर पहले की रसीद के बदले जहाज का टिकट लिया। यहाँ का समुद्र-तट और भी मनोहर है, जहाँ भ्रमण करने में बहुत आनंद आता है। यह शहर प्रायः अँग-रेजी ढंग का है। १२ तारीख को यहाँ की सरकार के ग्रीष्म-निवास

कान्डी

को, जो ७० मील दूर ऊँचे पहाड़ पर है, ५०) रुपए में मोटर करके सबेरे गए और संध्या को लौटे। रेल भी जाती है और भाड़ा भी कम लगता है किंतु घूमने के विचार से मोटर ले ली गई। मार्ग बड़ा ही सुंदर था और बदली के कारण और भी मनोहर हो गया था। रास्ते में एक विचित्र जंतु-संग्रहालय और एक गाँव का साप्ताहिक बाजार देखा और ताजा काजू खरीदा। रबर के जंगल देखे। इसके वृक्ष

बहुत बड़े होते हैं, पत्तियाँ आमले की पत्ती की सी होती हैं। छाल एक जगह से चारों ओर काटकर छील दी जाती है। वहाँ दूध की
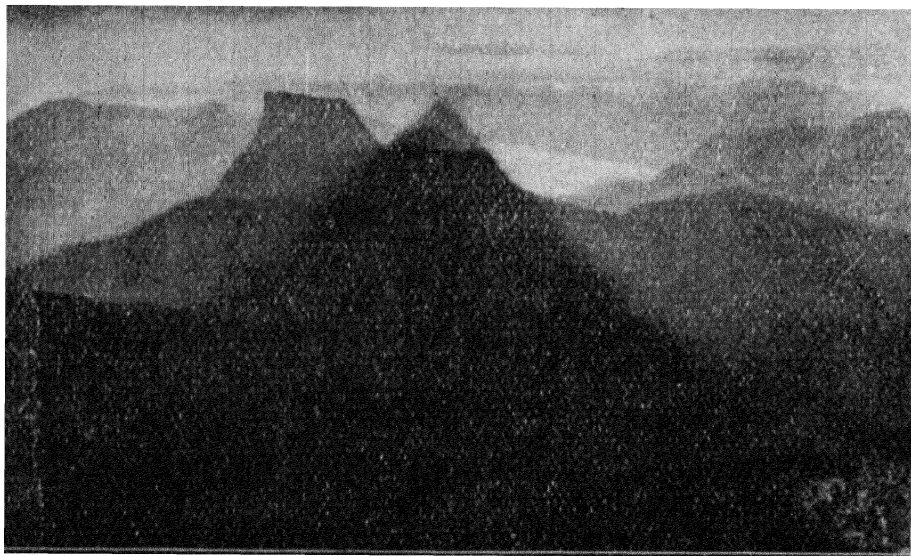
एडम्स की चोटी की परछाईं

तरह रस बहकर चमड़े की लंबी धज्जी के रूप में जम जाता है, उसे छुड़ाकर इकट्ठा करते और कारखाने में उसे गला, छानकर जमाते और
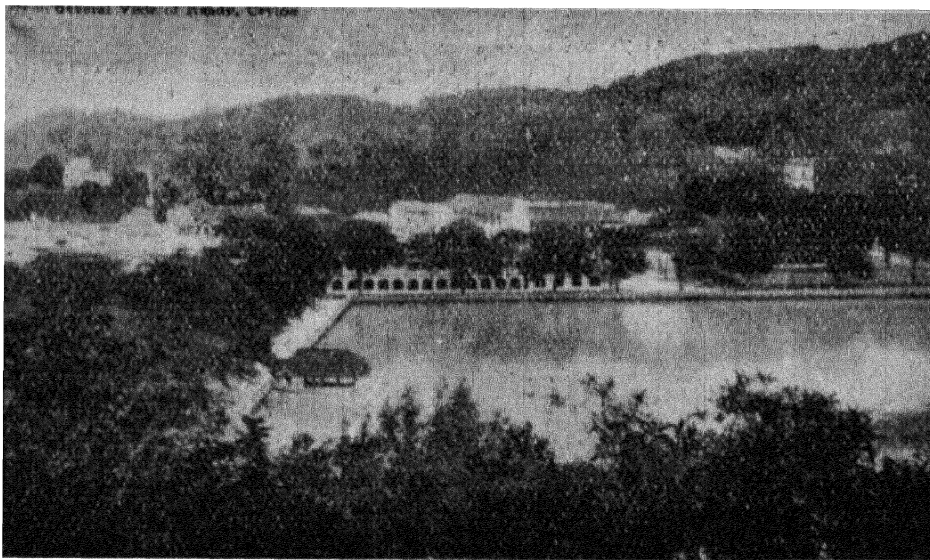
कानूडी का दृश्य

चादर की तरह बनाकर विलायत भेजते हैं। वहाँ से रबर की अनेक

वस्तुएँ बनकर भारतवर्ष आती हैं। इसका कारखाना भी देखा, जहाँ चाय का बगीचा था। चाय की पत्तियाँ तैयार करके बक्सों में भरकर चालान की जाती हैं। नैनीताल की भाँति कान्डी अँगरेजी ढंग की बस्ती है। यहाँ बड़े ताल में नाव पर भी लोग जल-विहार करते हैं। होटल में २) फी आदमी देकर—चावल, भाजी, मक्खन, रोटी, फल खा थोड़ा विश्राम कर बौद्ध मंदिर—जहाँ बुद्धदेव का दाँत रक्खा हुआ है और बौद्ध धर्म के ग्रंथों का संग्रह है—देखा। पाली तथा संस्कृत की अनेक प्राचीन पुस्तकें ताड़पत्र पर दिखाई गईं। वहाँ के पुंगी (बौद्ध संन्यासी) ने ताड़पत्र पर सूई की लेखनी से लिख और मसी चढ़ाकर प्राचीन लिपि प्रणाली का नमूना दिखलाया। लौटती बार थोड़ी ही दूर पर एक बहुत सुंदर अद्भुत वनस्पति-संग्रहालय (बोटानिकल गार्डन) देखा, जिसे लोग कहते हैं

बोटानिकल बाग में ताड़ का पेड़

कि संसार में अद्वितीय है। इसमें लौंग, मिर्च, इलायची, जायफल के भी बड़े बड़े प्राचीन वृक्ष देखे और थोड़ा विश्राम किया। चार

बजे चलकर बदली में मनोहर वृक्षावली में से होते हुए, जिनमें नारियल के ही पेड़ बहुत थे, संध्या समय समुद्र-तट पर वायु-सेवन-कर कोलंबो लौटे। कोलंबो में विक्टोरिया पार्क तथा वहाँ का अद्भुत संग्रहालय (अजायब-घर या म्यूजियम) देखा।

१४ मई को धूप बहुत कड़ी थी। रेल से मौंट लैवेनिया गए। यहाँ समुद्र के किनारे किनारे रेल गई है। समुद्र का दृश्य अपूर्व दिखाई पड़ता है। वहाँ २ घंटे वाई० एम० सी० ए० में ठहर-कर लौट आए।

कलानी गंगा के पार बुद्धदेव का मंदिर, जिसमें बहुत ही विशाल मूर्त्तियाँ हैं, देखा। शहर में अनेक हिंदू तथा बौद्ध-मंदिर देखे। लंका भारतवर्ष का ही अंग बहुत बातों में दीख पड़ा। यहाँ की सिंघली बस्ती, बाजार, दूकानें, रहन-सहन आदि भारत से बहुत ही
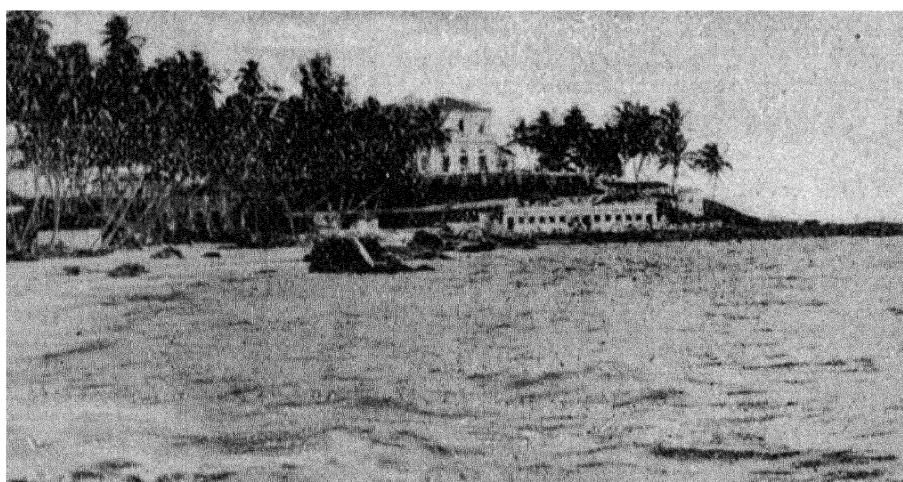
लावेनिया की पहाड़ी, कोलंबो

समता रखती दीख पड़ीं। यहाँवाले नदियों के नाम के साथ 'गंगा' शब्द जोड़कर संबोधित करते हैं। यहाँ क्रिस्तानों की तरह

बौद्धों का भी असोसियेशन है। एक बौद्ध धोबी लड़के से १) में दस के हिसाब से एक दिन में कपड़ा धुलाया। वह टूटी-फूटी अँगरेजी में बातें करता था। पूछने पर उसने अपना धर्म बौद्ध बताया। उसने हमसे पूछा—"मास्टर, बौद्ध गुड आर नो गुड" मैंने उत्तर दिया, "बौद्ध वेरी गुड" और उससे पूछा, "बौद्ध गुड आर क्रिश्चियन गुड" उसने कहा "क्रिश्चियन नो गुड" और अँगुली पर अँगुली रगड़कर बताया कि वे जीव मारते हैं, हत्या करते हैं। यह सिंघल-द्वीपी था। इसका नाम जोज़ेफ़ था। यहाँ के लोग अँगरेजी चाल-ढाल पकड़ते जा रहे हैं। यहाँ आर्य-समाज, हिंदू तथा बौद्ध मिशनों के काम करने के लिये विस्तृत क्षेत्र है। गाँवों में बौद्धधर्मावलंबियों की बहुतायत है। ये लोग बर्मावालों की तरह लुंगी, कुर्ता पहनते और सिर पर लंबे बाल रखते और जूड़ा बाँधते हैं, किंतु इन्हें मूँछें होती हैं। औरतें भी लुंगी और कमर तक के छोटे कुर्ते पहनती हैं, पर्दा नहीं करतीं। रेल और ट्राम-गाड़ियों में मर्द-औरत साथ बैठते और सफर करते हैं। यहाँ चार दिन में केवल दो घोड़े दिखाई पड़े। मोटर और रिक्शा गाड़ियाँ बहुत चलती हैं। साधारण जन और थोड़ा असबाब रिक्शा पर ही चलता है। यहाँ का समुद्र-तट बहुत ही मनोहर है। अनेक जहाज यहाँ आते-जाते हैं और माल भी विदेशों से बहुत आता-जाता है। जानेवाली चीजें नारियल, चाय, रबर, केला, अनन्नास इत्यादि हैं और आनेवाली आटा, चीनी, विलायती कपड़ा इत्यादि।

कोलंबो में इसीपतन आराम और देहीवाला मंदिर देखने-योग्य है, विशेषकर बुद्धदेव के चरित्र-संबंधी प्लास्टर आव पैरिस के चित्र, घंटाघर पर रोशनी का चक्कर, समुद्र के किनारे की सड़क, संग्रहालय आदि इस नगर की शोभा को बढ़ाते हैं। एक

मोहल्ले का नाम स्लेव आइलेंड है, जहाँ डच लोग गुलामों को ठहराते थे।

१५ तारीख को बड़े सबेरे ही उठ हम लोगों ने फिर से असबाब ठीक करके अलग अलग बक्सों में बंद किया। उन पर कागज चिपका अपने अपने नाम लिखे और कहाँ उतरना है इसका छपा लेबूल चिपकाया, टामस कुक के यहाँ से और भी काम निपटाया। यहाँसे बिछौना इत्यादि बनारस वापस भेजने का सामान अलग छाँटकर वापस जानेवालों के सपुर्द किया। सबेरे ही से खबर फैल गई कि 'ओरामा' जहाज, जिसमें हम लोग जायँगे, पहुँच गया है जो आधी रात को खुलेगा और उसमें ४॥ बजे सवार हो जाना चाहिए।

बड़ा बड़ा सामान तो टामस कुक को ही सहेज दिया गया। एक रुपया प्रति बक्स लेकर, हमारे स्थान से सामान ले जाकर, उनके आदमी ने हम लोगों के कमरों में पहुँचा दिया। यों भी नाववाले आठ आना प्रति बक्स पर ले जाने को तैयार थे, किंतु टामस कुक पर भरोसा अधिक होने से ऐसा किया गया। यदि नाववाले के साथ हम लोग भी जाते तो कोई हर्ज न था। हाथ के छोटे बैग इत्यादि रिक्शा मे रखकर घाट पर गए। समय से पहले जाने के कारण आठ आठ आने स्टीम लांच का भाड़ा देना पड़ा। जहाज पर हम लोग ३॥ बजे ही पहुँच गए, किंतु जब पाँच बजे डाक्टरी और टिकट की जाँच हो गई तब हम लोगों के बिस्तरों का नंबर बताया गया। वहाँ जाकर हम लोगों ने अपने अपने स्थान पर बक्स रखे हुए पाए। यात्री को अधिकार है कि जिस असबाब की आवश्यकता जहाज पर न हो उसको जहाजवालों के सपुर्द कर दे। ऐसे असबाब पर "Not wanted voyage" का लेवल लग जाता है। जो असबाब

अपने साथ रखना हो उसके लेवल पर (Cabin) छपा रहता है। हिंदुस्तानियों को अपने साथ बहुत असबाब रखने की आदत है। घूम घूमकर जहाज देखा और काशी लौट जानेवाले साथियों से गले मिलकर उन्हें बिदा किया। हम लोगों को कोलम्बो में जहाज़ तक पहुँचाकर लौटनेवाले राजेन्द्रस्वरूप (श्री प्यारेलालजी के पुत्र), श्रीशचन्द्र शर्मा (श्री रामनारायण मिश्र के पुत्र) और श्री रामनारायण दूबे थे।

जहाज से ऑस्ट्रेलिया से आए हुए आटे के बोरे उतारे और कोलंबो से चाय इत्यादि के बक्स और नारियल के हजारों मन के बोरे इत्यादि पेंच द्वारा सुगमता से चढ़ाए गए। यह काम प्रायः आधी रात को समाप्त हुआ और तब जहाज खुला। यहाँ की पृथिवी और भारत-माता को प्रणाम कर हम लोग पश्चिमाभिमुख हुए। तट की जगमगाहट धीरे धीरे लोप होने लगी और हम लोगों ने भी बिस्तरे बिछा जहाज की छत पर शयन किया। बैठने ओठँगने के लिये किरमिच की घटने बढ़नेवाली कुरसियाँ, चार चार शिलिंग यानी २।||) भाड़ा देकर, ली गईं। हमारे एक साथी ने तीसरे दर्जे के प्रबंध से असंतुष्ट हो पहले दर्जे का टिकट दोनों ओर का बनवाया, जिसमें उन्हें बारह सौ रुपए के करीब अधिक देने पड़े, किरमिच की भाड़ेवाली कुर्सियाँ भी संतोष-दायक न होने से शहर में आदमी भेजकर बीस रुपए के करीब खर्च कर नई कुरसियाँ मँगवाईं। यह सब काम जहाज खुलने से पहले हो गया था।

ओरामा जहाज

ओरिएंट स्टीम नेविगेशन कंपनी के ६ बड़े बड़े जहाज चला करते हैं। "ओरामा" उसी कंपनी का जहाज है। यह ६५८ फुट अर्थात् एक फर्लांग लंबा, करीब ८० फुट चौड़ा, १४ मंजिल ऊँचा—

७ पानी के नीचे ७ ऊपर—है। इस कंपनी का यह सबसे बड़ा जहाज है जो विशेषकर आस्ट्रेलिया और लंडन के बीच डाक तथा यात्रियों के लाने, ले जाने के लिए, बनाया गया है। इस कंपनी के सभी जहाजों में केवल दो ही श्रेणियाँ पहली और तीसरी रखी गई हैं। दोनों श्रेणियों के सभी विभाग अलग अलग हैं, एक दर्जे का यात्री दूसरे दर्जे से कोई संबंध—आना-जाना—नहीं रख सकता। औवल दर्जे में सबसे अधिक सुखद कमरे दो दो यात्रियों के हैं, जिनके साथ स्नान, शौचादि का कमरा लगा हुआ है। उसका भाड़ा कोलंबो से लंदन का ८२ पौंड प्रति यात्री और ५० पौंड स्नानवाले कमरे का अधिक अर्थात् करीब
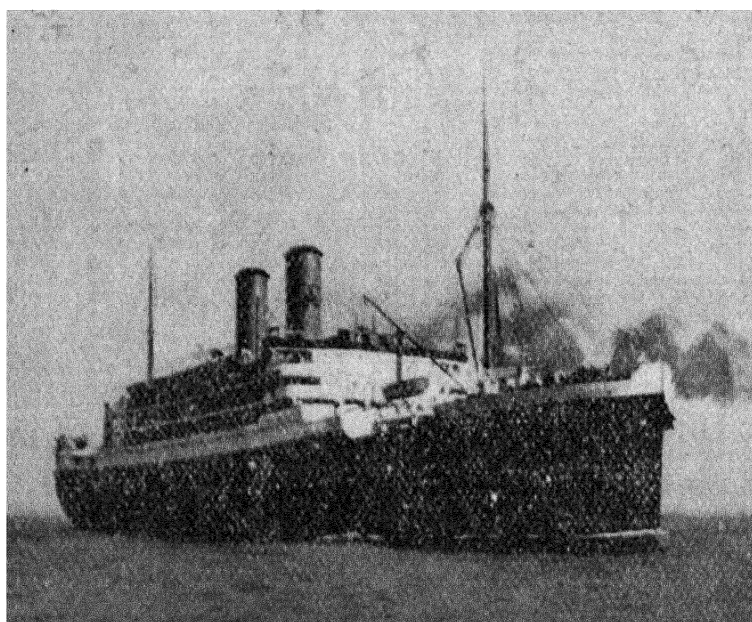
ओरामा जहाज

२६००) रुपए पूरे कमरे का है। इस दर्जे में भी तीन श्रेणियाँ हैं। भोजन का बड़ा हाल, बैठक, पुस्तकालय तथा सिगरेट आदि पीने के

अलग अलग हाल हैं, तैरने के लिये लकड़ी के तखतों के तालाब बना दिए जाते हैं, जिनमें समुद्र का जल नित्य कल द्वारा भरा और निकाल दिया जाता है। इस जहाज में दोनों श्रेणियों के लिये दूकानें, हजामत की दूकान, बंकघर, डाकघर, बेतार के तारघर, टेलीफोन, चढ़ने-उतरने का बिजली का कटघरा (प्रथम श्रेणी में ही) इत्यादि के प्रबंध हैं।

जहाज क्या है एक शहर है। इस समय इसमें करीब ४०० प्रथम श्रेणी के और करीब ११०० तीसरी श्रेणी के यात्री हैं, जिनमें करीब ५० भारतीय होंगे। बाकी सब यात्री तथा करीब ४५० नौकर-चाकर अफसर सभी गौरांग हैं जो हर प्रकार का काम करते हैं। अधिक माल तथा यात्रियों के लिये स्थान खाली है। तीसरे दर्जे में भी शौचादि का जनाना, मर्दाना स्थान अलग अलग है। मर्दाने में २० शौचागार, २५ मुँह धोने की टोटियाँ (अथरी सहित), १२ लघुशंका करने के स्थान तथा १० स्नान करने के कमरे हैं। नहाने के कमरों में ठंढे और गरम समुद्री जल की टोटियाँ हैं। समुद्र का जल नमकीन होता है इसलिये उससे स्नान करने पर बदन चटचटाने लगता है। इसलिये उसके बाद थोड़े मीठे पानी से लोग नहा लेते हैं। मीठा पानी गरम और ठंढा अलग मिलता है। इसमें बरफखाना, छापाखाना भी है। इस जहाज की तौल बीस हजार टन अर्थात् साढ़े पाँच लाख मन है और इसमें २०००० घोड़े की ताकत का इंजन है। इसका वर्णन करने में एक पोथी लिखी जा सकती है, जिसके लिये न स्थान ही है न समय। विद्या, बुद्धि और कार्य-कुशलता का यह जाज्वल्यमान उदाहरण है। प्रति घंटा १८ मील इसकी चाल है। नित्य सब छतें पानी से धोकर चमाचम कर दी जाती हैं। सभी भाग नित्य धोए, पोंछे और साफ किए जाते हैं।

लड़कों के लिये झूले पड़े रहते हैं। दिन में कई प्रकार के खेल-कूद कसरत इत्यादि हुआ करते हैं और रात को अँगरेजी गाना-बजाना, नाच, सिनेमा, थिएटर इत्यादि होते चलते हैं। खुली जगहों में लोग दौड़ते, टहलते कसरतें करते हैं। मीठे पानी का भी बहुत बड़ा ढका तालाब है जो पीने, मुँह-हाथ धोने तथा शुद्धोदक स्नान के काम में आता है। यह मीठा पानी तथा अन्य खाद्य पदार्थ स्थान-स्थान पर, जहाँ जहाज ठहरता है, भर लिए जाते हैं। अकस्मात् यदि मीठा पानी चुक जाय तो इंजिन द्वारा समुद्र के जल की भाप बनाकर उससे मीठा पानी बना लिया जाता है। हरी तरकारी, फल तथा बिगड़नेवाली दूसरी खाने की चीजों को बरफ के तालाब में रखकर ले जाते हैं। इससे वे सड़ने नहीं पातीं। दो हजार मनुष्यों को पाँच बार अनेक प्रकार के पदार्थ तैयार करके खिलाया जाता है और तनिक भी बोलचाल सुनाई नहीं पड़ती, यह प्रशंसा की बात है।

हर कोठरी को नित्य साफ करने के लिये आठ आठ दस दस कोठरी पीछे एक 'साहब' खिदमतगार रहता है जो अपनी कोठरियों के संबंध का सभी काम करता है। हर कोठरी में पलँगों पर खूब मोटा गद्दा, जिस पर साफ खोल चढ़ा रहता है, बिछा रहता है। दो दो नरम तकिए, एक सूती पतली और एक मोटी चादर, दो दो कंबल और दो दो तौलिए रहते हैं। हाथ-मुँह धोने के लिये पानी की टोटी, साबुनं, पीने के लिये बड़ी बोतल में ठंढा जल और काँच के कई गिलास रखे रहते हैं। इस जहाज में कोयले के बदले बिना साफ़ किया किरासन का गाढ़ा लाल तेल जलाया जाता है। उसी की गर्मी से बैलर में पानी खौलता और भाप बनकर इंजिन को चलाता है। हर सप्ताह मुसाफिरों की कवायद

लाइफ बेल्ट पहनकर कराई जाती है ताकि अकस्मात् जब कभी कोई भय का अवसर आ जाय तो सब को बचाने का प्रबंध प्रस्तुत रहे। इस कवायद में बिगुल द्वारा लोग बुलाए जाते हैं (One prolonged blast of the Syren)। बच्चे आगे खड़े किए जाते हैं, उनके पीछे स्त्रियाँ तब मर्द। लाइफ बोट लटका दी जाती है, बाहर के लैंप बल जाते हैं। हर कोठरी में बिजली की रोशनी और यंत्र द्वारा हवा भी पहुँचाई जाती है (enforced draught)। प्रथम श्रेणी में बिजली का पंखा भी लगा रहता है। जहाज़ की बनावट और प्रबंध देखकर बुद्धि चकरा जाती है। न जाने कब वह दिन आवेगा जब हमारे भारतवासी भी विद्योपार्जन करके जहाज इत्यादि बनाने के कामों को करने पावेंगे। इस जहाज की तसवीरें तीन तीन पेंस (=)॥) को बिका करती हैं जिनको पीछे के भाग में चिट्ठी लिख टिकट लगाकर मित्रों के पास भेजा जाता है। चिट्ठी लिखने का कागज, लिफाफा जहाज की कंपनी बिना मूल्य देती है।

भोजनवाले हाल में बड़े पैमाने पर बना हुआ नकशा लगा रहता है। उसमें जहाँ दोपहर तक जहाज पहुँचा होता है उसका संकेत कागज की पताका खोंसकर बना दिया जाता है। उसके पास ही लिखा रहता है कल से आज दोपहर तक जहाज इतनी मील आया और यह भी लिखा होता है कि आज आधी रात को इतने मिनट घड़ी घटा या बढ़ा दी जायगी। ज्यों ज्यों पश्चिम जहाज जाता है घड़ी पीछे कर दी जाती है और पूर्व की ओर लौटती बेर बढ़ा दी जाती है। बेतार के यंत्र द्वारा मुख्य मुख्य समाचार नित्य ही आया करते हैं। ये छापकर भोजनवाले स्थान के बाहर लगा दिए जाते हैं। और भी जो जो सूचनाएँ देनी होती हैं वहाँ पर लगा दी जाती हैं।

भोजन-प्रबंध

सबेरे उठने से पहिले कैबिन •बाय (कमरेवाला साहब नौकर) कमरे में जो चाहें उनको चाय पहुँचा देता है। सात बजे घंटा
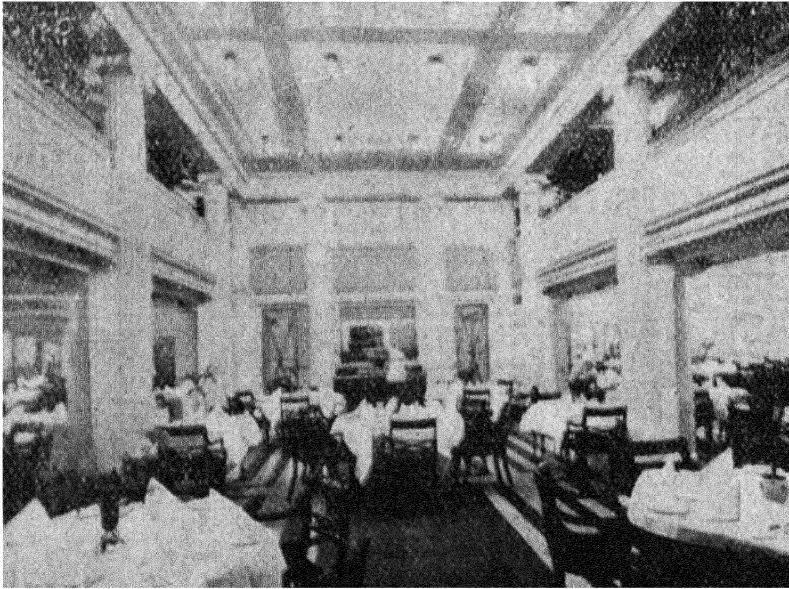
ओरामा का भोजनालय—प्रथम श्रेणी

बजाता हुआ एक साहब नीचे-ऊपर घूमता है जिसका अभिप्राय यह होता है कि अब आप लोग उठ जाइए। लोग उठ उठकर शौचादि हो कपड़े बदल टहलने, घूमने-फिरने लग जाते हैं। ८ बजे भोजन का घंटा बजता है तो पहली पाँत बैठती है, ८॥ बजे दूसरी और ९ बजे तीसरी। हर बार घंटा द्वारा सूचना पाकर अपनी पारी के अनुसार लोग जाकर अपने अपने निश्चित स्थान पर बैठ जाते हैं। साहब लोग दौड़ते हुए जल्दी जल्दी सामान देते जाते हैं और यात्री खाते जाते हैं। इस भोजनालय में भी हवा और रोशनी बिजली द्वारा खूब ही पहुँचाई जाती हैं। भोजन की मेजों पर साफ कपड़ा

बिछा रहता है। गुलदस्तों में फूल-पत्ती लगाकर टेबुल सजा रहता है। हर भोजन के बाद दस्तरखान बदल दिया जाता है। नमक, मिर्च,

भोजनालय—तृतीय श्रेणी

राई, सिरका, चटनी की शीशियाँ—चार चार यात्री के बीच में एक एक—रखी रहती हैं। पानी पीने का काँच का साफ गिलास आदमी पीछे एक रखा रहता है और एक शीशे के बड़े बर्तन (जग) में ठंढा पानी रख दिया जाता है। चीनी की रिकाबियों में भोजन के पदार्थ आते जाते हैं और छुरी-काँटा तथा चिम्मच द्वारा लोग खाते जाते हैं जिसमें हाथ में न लगे और खाना छितराय नहीं। अपनी-अपनी रुचि के अनुसार लोग नमक इत्यादि मिला लिया करते हैं। कान्यकुब्जों के यहाँ जैसे बिना नमक की तरकारी परोसी जाती है वैसे ही यहाँ भी है। एक रूमाल हर स्थान पर रहता है, उसे अपने आगे लोग फैला लेते हैं कि खाते समय कपड़े पर भोजन का कोई अंश न गिर पड़े। ये रूमाल सब धोए, साफ किए, तहाए हुए रहते हैं। छुरी काँटा, चिम्मच, इतनी अधिक संख्या में रहते हैं कि हर चीज की

रिकाबी के साथ काम में लाया हुआ सामान हटा दिया जाता है और नया स्वच्छ सामान नई रिकाबी के साथ रख दिया जाता है। सबेरे के भोजन के बाद इसी तरह दोपहर को १२ बजे से पंगत लगती है और फिर ५ बजे से और ८ बजे रात से। इस प्रकार पाँच बार भोजन मिलता है। भण्डार-विभाग अलग, पाकशाला-विभाग अलग, परोसने का विभाग अलग और परोसनेवाले अलग होते हैं। हर भोजन के समय जो जो वस्तुएँ तैयार हुई रहती हैं उनकी छपी सूची कार्ड पर भोजन के टेबुल पर उस दिन और हर समय पर रखी रहती है। खानेवाले को जो पसंद हो परोसनेवाले से कह दे। वह लाता जायगा और आपके सामने रखता जायगा। जब एक चीज आपने खा ली तब दूसरी आवेगी। हाँ, रोटी मेज पर एक रिकाबी में रखी रहेगी, उसे आप उठा उठाकर लेते जाइए, कम हो जाय तो और मँगा लीजिए। कभी कभी भोजन के पदार्थों के सूचीपत्र के पीछे यह सूचना भी छपी रहती है कि कल जहाज अमुक स्थान पर पहुँचेगा इत्यादि। खानेवाले बड़े कमरे (हाल) के बाहर तम्बाकू इत्यादि पीने का एक कमरा है। उसके एक कोने पर शराब की दूकान है, जहाँ प्रायः भीड़ लगी रहती है; किंतु खरीदनेवाले शोर-गुल नहीं करते, एक के पीछे दूसरा खड़ा होता जाता है और पारी से लोग खरीदते और हटते जाते हैं। एक ओर मर्दों की, दूसरी ओर औरतों की पंक्ति लगी रहती है। पहले औरतों को देकर तब मर्दों को सौदा दिया जाता है। इसी प्रकार अस्पताल का भी हाल है। सबेरे ९ बजे से जहाज के खलासियों को और ९। बजे से यात्रियों को तथा संध्या समय ५ बजे से खलासियों और ५। बजे से यात्रियों को बारी बारी भीतर डाक्टर के पास जाकर दवा इत्यादि लेने का अवसर दिया जाता है। यदि किसी को जल्दी हो तो अपने आगेवाले से प्रार्थना करके उसके

स्थान पर जा सकता है। टिकट इत्यादि लेने की जगहों तथा दूकानों पर भी ऐसे ही पारी के साथ लोग चुपके से लेते और हटते जाते हैं। कोई भी किसी को न तो धक्का देता है न शोर मचाता है।

जहाज पर एक पर्सर का कार्यालय है। इनके यहाँ सभी प्रकार का प्रबंध होता है। कहाँ की चिट्ठी का क्या महसूल लगेगा पूछ लीजिए, चिट्ठियाँ तौलवा लीजिए, जोखिमवाली चीजें धरोहर रख दीजिए, जहाज का टिकट लीजिए, चिक भुनाइए, सब प्रकार की सहायता इस कार्यालय द्वारा दी जाती है। आप खिड़की के पास जाकर खड़े हो जाइए, भीतर से एक साहब आकर आपकी बातें सुनेगा और काम कर देगा। आप अपनी पारी लेकर हट जाइए तब आपके पीछेवाले का काम होगा। एक बार एक ही आदमी का काम होगा, बीच में आप बोल या विघ्न-बाधा डाल नहीं सकते। सबके साथ ऐसी ही सभ्यता और शिष्टता का व्यवहार होता है, कोई भेद-भाव नहीं बर्ता जाता। सब काम बड़ी शीघ्रता के साथ लोग करते हैं। एक बात को दोबारा कहने की आवश्यकता नहीं होती। एक बात को यदि आप व्यर्थ दोहरावेंगे तो असभ्यता-सूचक और समय व्यर्थ नष्ट करने का उद्योग समझा जायगा।

हमारा भोजन

एक ही प्रकार के यात्री होने के कारण जहाज के भांडार में सब मांसादि-युक्त भोजन बनाया तथा दिया जाता है। किंतु हम लोगों ने पहुँचते ही पहला भोजन तो जो उस छपी सूची में से तथा माँगने पर अनाजी मिल सकता था उसे ही लिया और भविष्य के लिये कुछ पुरस्कार देकर तै कर लिया कि हममें से हर एक को ⟌।।। के करीब दूध सबेरे ६ बजे और संध्या के ६ बजे के भोजनों में

मिला करे और साग, भाजी, मक्खन, रोटी अनाजी निरामिष भोजन मिले और बराबर ऐसा ही होता रहा। हम दो तीन आदमी तो केवल दो बार सबेरे ९ बजे और संध्या के ६ बजे भोजन लेते थे, और साथी लोग इच्छानुसार तीन या चार या कभी पाँचों पाँत में भी सम्मिलित हुए। हर बार हर दिन प्रायः नया सामान नए ढंग से बना हुआ हम लोगों को मिलता था। यथेष्ट तथा सुस्वादु भोजन मिलता था। किसी प्रकार से कोई भी कष्ट नहीं हुआ। भोजन के पदार्थ प्रायः ये होते थे——डबल रोटी, मैदे की सफ़द और आँटे की मटमैली गोल रोटी, भात——सादे या कभी कभी उबले फलों के साथ——केक, जई तथा गेहूँ का दलिया पकाकर दूध चीनी मिलाकर, खीर जिसे पारिज कहते हैं, साबूदाने की खीर, मुरब्बा कई प्रकार का, तरकारी और फल में लौकी, कुम्हड़ा, आलू, चुकंदर, गाजर, मूली, शलगम, सेम, साग, फूल, पात तथा गाँठ गोभी, अनन्नास, शफतालू, सेब, नासपाती, आलूबुखारा, आलूचा, सेम के बड़े बड़े बीज, टोमाटो, पँचमेल तरकारी, प्याज, खूबानी इत्यादि। बहुतों का तो मुरब्बा भी होता था। ये सब बहुत ही स्वादिष्ठ और बड़े बड़े होते थे, कदाचित् आस्ट्रेलिया से लाए गए थे। मक्खन चीनी सभी सामान पुष्कल रहता था और किसी तरह खाने का कष्ट नहीं हुआ। हाँ, किसी किसी ने चाहे स्वाद के लिये हो चाहे स्वास्थ्य के लिये हो अंडे तक को पावन किया, किंतु इस लेखक के विचार में यह अनावश्यक सा ही जान पड़ता है। श्री शिवप्रसाद गुप्तजी ने खाने के पदार्थों की एक अँगरेजी सूची छपवा ली थी और उसका अनुवाद फ्रेंच तथा जर्मन भाषाओं में छपवाकर एक एक जिल्द हम लोगों को दे दी थी। उसमें से एक प्रति भोजन बनानेवाले को पहले से दे देने पर प्रबन्ध में सुगमता होती थी। वह सूची इस पुस्तक में अन्यत्र छपी है।

एक बड़ा कमरा बैठक के रूप में था जिसमें पुस्तकावलोकन, लिखने-पढ़ने का काम तथा कुछ खेल इत्यादि होते थे। इसी में कई
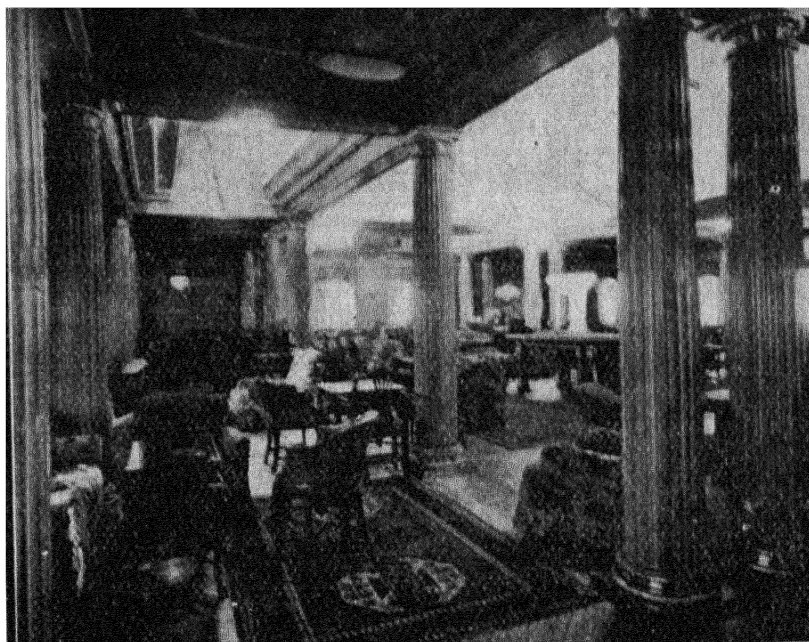
ओरामा में ठहरने की जगह

टेबुल चारों ओर कुर्सियों सहित लगे हैं। एक पुस्तकालय है जिसका अध्यक्ष डाक का टिकट बेचता और चिट्ठी का कागज, लिफाफा देता है। इस पुस्तकालय में उपन्यास अधिक हैं। यहाँ टेबुलों पर कलम, दावात, सोखता रखे रहते हैं। ऊपर की मंजिल में कई मैदानवाले डेक हैं जिन पर लोग दिन भर प्राय: बैठते, दौड़ते, टहलते, नाच-गाना, खेल, कसरत इत्यादि करते हैं। सबसे ऊपरवाले डेक पर हम लोग संध्या तथा व्यायाम किया करते थे जो ६ साढ़े ६ बजे ही निपट जाता था, क्योंकि हम लोग तो प्राय: ४ बजे ही उठकर सब काम से निवृत्त हो जाते थे, तब साहब लोगों को जगानेवाला घंटा बजता था।
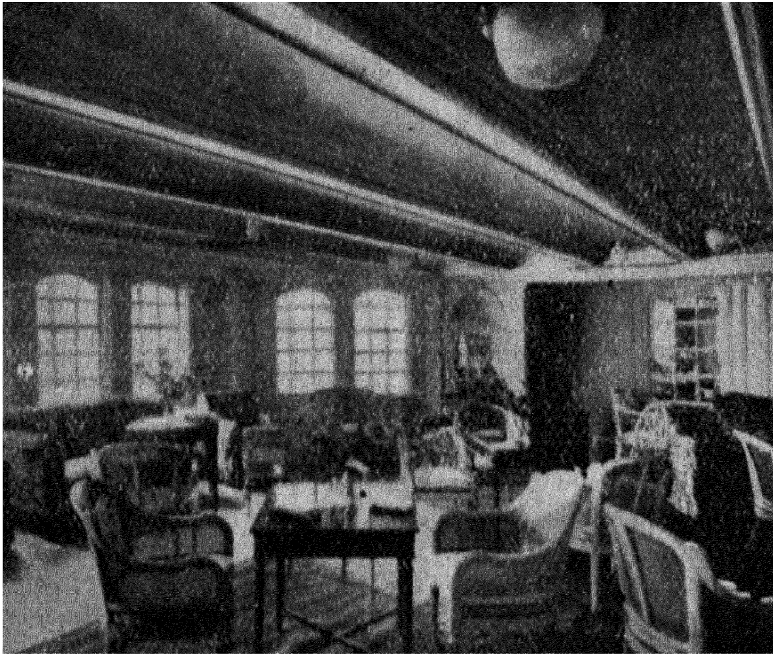
ओरामा में लिखने-पढ़ने का घर

जहाज पर गौरांग-चरित

हम भारतवासियों को तो प्राय: उन्हीं गौरांगों के दर्शन हुआ करते हैं जो शासक होकर हमारे देश में आते हैं। इनके अतिरिक्त गोरे सिपाही, पलटनवाले तथा कालेजों के बड़े-बड़े अध्यापकों से भी बातचीत का अवसर मिलता है, इसलिये उनका आतंक भारत-वासियों के चित्त पर पड़ता है। इनका वास्तविक जीवन देखने का अवसर तो कदाचित् ही किसी को मिलता हो। भारतीयों पर इनका ऐसा प्रभाव पड़ता है मानों ये ऊँचे दर्जे के आदमी हैं और खास बैकुंठ से आए हुए हैं, जो कुछ ये करते या कहते हैं वही सत्य और उचित है और हम भारतीयों की सभी बातें हेय हैं। किंतु जहाज पर इनको देखने से इनकी वास्तविक अवस्था का कुछ भीतरी हाल मालूम हो जाता है। विलायत में भी भारतीयों को

इनका भीतरी जीवन देखने का अवसर कम ही मिलता है। जहाज पर ही ऐसा अवसर मिल सकता है। इन लोगों में बहुत से गुण हैं जिनका अनुकरण करने से भारतीयों को लाभ हो सकता है। दृढ़ता इनमें बहुत है। शांतिपूर्वक काम करने की लगन भी प्रशंसनीय है। जो काम ये जिस समय करते हैं उसको खूब दत्तचित्त होकर करते हैं। जब खेलते हैं तो उसी में निमग्न हो जाते हैं—कसरत करते समय ये तद्रूप हो जाते हैं। यही कारण हैं कि थोड़े समय में काम अधिक और अच्छी तरह से कर सकते हैं। कितने ही भारतीय भी, जो एकाग्रचित्त हो काम करते हैं और विघ्न-बाधाओं को पास फटकने नहीं देते, अच्छी तरह से थोड़े समय में बहुत काम कर सकते हैं; किंतु जो सदा ही खिचड़ी पकाया करते हैं वे कोई काम पूर्ण रूप से नहीं कर पाते। पढ़ते-लिखते समय कहीं खेल की बातें सोचने लगते हैं तो दो में से एक भी पूरी तरह नहीं हो पाता, और जो कुछ होता है वह भी कच्चा ही रहता है ठोस नहीं होता।

हमारे जहाज पर प्रायः डेढ़ दो हजार गौरांग थे। इनमें पाँच सौ तो अवश्य ही स्त्रियाँ होंगी और सौ के करीब छोटे बच्चे होंगे। किंतु बच्चों के रोने की आवाज कभी नहीं सुनाई पड़ी। माताएँ गोद में ही उन्हें ऐसी आदत लगा देती हैं कि रोएँ नहीं। यदि कोई बच्चा रोता भी था तो बहुत धीमी आवाज से जिसे उसकी माता के सिवाय कदाचित् ही कोई दूसरा सुन सके। सभी बच्चे खूब खेलते-कूदते, झूला झूलते, जहाज के मस्तूल के रस्सों पर बंदरों की तरह चढ़ते उतरते थे, किंतु किसी को कोई मना नहीं करता था, माता-पिता देखा करते थे कि वे हिम्मत के साथ शरीर के अंगों का उपयोग करना सीख रहे हैं। स्त्री-पुरुष, लड़के, लड़की सभी

स्वच्छंदता के साथ मिलते जुलते, बातें करते, घूमते, टहलते, चलते-फिरते थे। सबसे बड़ी बात तो यह देखने में आई कि सभी कमरे खुले रहते थे, सभी चीजें पड़ी रहती थीं, किंतु कोई तिनका भी विचलित नहीं हुआ। एक कोठरी का यात्री दूसरे की कोठरी से कोई संबंध नहीं रखता, न उसमें जाता है। हमारी कोठरी में जो बिजली जलती थी एक रात को जलती ही रह गई। बगल की कोठरीवाले ने दूसरे दिन हमसे बड़ी नम्रता के साथ कहा कि आपकी कोठरी के लंप का प्रकाश मेरे ठीक मुख पर ऊपर से होकर आता था जिसके कारण मुझे नींद अच्छी तरह नहीं आई। मैंने उनसे क्षमा माँगी और दूसरे दिन से हम बराबर रोशनी बुझा दिया करते थे, तब ऊपर सोने जाते थे। उस बेचारे ने इतना कष्ट उठाया किंतु यह नहीं किया कि हमारी कोठरी में जाकर बत्ती बुझा देता। सैकड़ों कपड़े लोग धोकर सुखाते थे, किंतु ऐसा कभी नहीं हुआ कि दूसरे का कपड़ा किसी ने ले लिया हो। हमारे एक साथी का एक कपड़ा किसी के कपड़े में मिल गया था, खोजने पर नहीं मिला, किंतु थोड़ी देर बाद फिर वह उसी स्थान पर लटकाया हुआ प्राप्त हुआ।

ये लोग बोलते बहुत कम हैं किंतु काम खूब करते हैं; डींग नहीं हाँकते हैं किंतु कर दिखलाते हैं; मुँह से बड़बड़ाते नहीं किंतु करते हैं। हम लोग रात और प्रायः दिन डेक ही पर रहा करते थे। जिस स्थान पर हमने अपनी कुर्सियाँ या बिस्तरा लगा लिया फिर कोई दूसरा, चाहे उसका चमड़ा कितना ही गोरा क्यों न हो, उसे हटाकर अपनी कुरसी या अपना बिस्तर नहीं लगाता था, चलते-फिरते बहुत बचाकर चलता था। यदि कहीं अचानक ठेस लग गई तो तुरंत ही खेद प्रकट करता था; यह नहीं समझता था कि

है, इसे ठेस लग गई तो क्या हुआ या उसी को डाँट था। हाँ, यह बात और है कि भारत में गोरांग के आगे-पीछे अगल-बगल कई बैरा, चपरासी रहते हैं जो : करते चलते हैं कि जिसमें साहब के ऊपर दूसरे रंग- की परछाहीं न पड़ जाय। वह अवस्था तो यहाँ थी हाँ तो सभी बराबर भाड़ा देकर एक साथ समान अधिकार के . . . हैं। भारतीय रेलों की तरह यहाँ भेद भाव नहीं है। यहाँ "केवल विलायतियों के लिये"—चाहे "विलायती" केवल कपड़ों ही के नाते विलायती क्यों न बना हो—कोई स्थान नहीं है। ये लोग प्रायः मंजन नहीं करते और शौच की शुद्धि कागज द्वारा ही करते हैं। हममें से कई तो जल लेकर शौच-स्थान के भीतर जाते थे और मंजन करते थे। मेरा अनुमान है कि कई ने देखा-देखी शौच के लिये जल ले जाना और मंजन करना आरंभ कर दिया। जिन गोरांगों से हमारी बात-चीत हुई उन्होंने इन दोनों आदतों को अच्छी बताया। इनमें परदे का रिवाज नहीं है। इसकी भी सीमा से ये बाहर चले गए हैं। मर्दों के स्नान के स्थान में कई एकदम नंगे होकर दूसरों के सामने निःसंकोच खुले आम सब अंग धोते और पोंछते हैं। स्त्रियों और लड़कियों को चूमना तो कोई गुनाह ही नहीं है। सिनेमा में एक दृश्य के बाद और दूसरे दृश्य से पहले थोड़ी देर के लिये जो अँधेरा हो जाता है, उसमें हमने कहीं कहीं मर्दों को स्त्रियों का चुंबन करते देखा। यहाँ तक देखने में आया कि एक स्त्री को दो पुरुष बीच में दबकाए कंबल ओढ़े थे।

नाच

नाच इनका विचित्र होता है। काशी में तथा मसूरी, नैनीताल के पहाड़ों पर जब इनका "बाल-डांस" नाच होता था, कोई बाहरी

नहीं देखने पाता था, किंतु यहाँ तो खुले आम सभी दे
का हाल उन भारतीयों को, जिन्होंने नहीं देखा है, रो
फर्श पर खड़िया मट्टी बारीक बूककर छिड़क दी जाती है
का जूता फिसले, नाचने में रुकावट न हो। एक मर्द
को लेकर बाजे की गत पर नाचता है। मर्द का दहिना ह
की कमर तक लिपटा रहता है और औरत का बायाँ हा
कंधे पर। दूसरे दोनों हाथ एक दूसरे को पकड़े रहते हैं नों
प्राय: सटकर एक अंग की तरह हो जाते हैं और गत पर नाचते रहते
हैं। इसमें कसरत भी खूब हो जाती है। भारतीय सभ्यता
कदाचित् ही यह पसंद करे कि कोई मर्द या युवक किसी भी
युवती को अपनी सहचरी बनाकर इस तरह से अंग मिला और
सटाकर नाचे। इसे देखकर हम लोगों में से कई ने तो आँख फेर
लीं। इतना ही नहीं तीन-टंगी दौड़ाई इस प्रकार की होती थी।
कोई युवक अपनी एक टाँग किसी युवती की एक टाँग में बाँध-
कर दोनों एक दूसरे को दबकाए एक अंग होकर दौड़ते थे। ऐसे
कई जोड़ छूटते थे, जो जोड़ा निश्चित स्थान पर पहले पहुँचा वही
विजयी माना गया। संध्या हो जाने पर प्राय: स्थान स्थान पर
एकांत ढूँढ़कर कितने ही ऐसे जोड़े एकांत में बैठते, सोते और जो
जी में आता करते थे; कोई तीसरा, या यदि उस हुर्दंगे में दो से अधिक
सम्मिलित हैं तो कोई बाहरी चाहे उसका रंग गोरा हो या न हो
दखल देने या उधर ताकने तक का अधिकार नहीं रखता। ऐसी
ही कलोलें करते प्राय: कितने ही जोड़े दृष्टिगोचर होते थे।

और बातें

एक मेम ईसाई मिशनरी इस जहाज पर थी जो मसीही
पुस्तिकाएँ बाँटा करती थी। लड़कों, लड़कियों को इकट्ठा कर

मसीही भजन गवाती थी और एक लंबे कपड़े पर "तुम्हें फिर अवतार लेना चाहिए" लिखकर लोगों को दिखाया करती थी, किंतु इस बेचारी की शिक्षा पर न तो किसी का ध्यान जाता था और न उसे कोई मानता था। जहाँ दो चार व्यक्तियों को बैठे, खेलते या अनाचार करते देखती थी वहाँ पहुँचकर अपना पोस्टर दिखाती थी, किंतु वे लोग मुँह फेरकर हँस देते थे। उस देवी से हमने पूछा कि क्या पहले जो कुछ शिक्षा प्रभु ईसा मसीह दे गए हैं वह पर्याप्त नहीं प्रतीत हुई? क्या पुनर्जन्म में तुम्हारा विश्वास है? किंतु बिना उत्तर दिए वह अन्यत्र चली गई। एक बुढ़िया ७४ वर्ष की अवस्थावाली १८ मई को जहाज ही पर गत हो गई। संध्या के सात बजे उसकी अर्थी बनाई गई। ईसाई पादरी ने परमात्मा की प्रार्थना पढ़ी। सब यात्री शांतिपूर्वक खड़े हो गए। एक मिनट के लिये जहाज थम गया। उसके शव का जहाजियों ने शांतिपूर्वक समुद्र में प्रवाह कर दिया, फिर जहाज चल पड़ा और घंटे भर के बाद ही फिर नाच-गाना बड़े उत्साह के साथ हुआ। एक माता को जहाज पर ही बच्चा पैदा हो गया। उसका नाम बादशाह और जहाज के नामों को लेकर "जार्ज ओरामा" रखा गया। सूचना-पट्ट पर एक विज्ञापन लगा था कि वह गरीब देवी है, उसके सहायतार्थ दान दो। लोगों ने दिया भी। जहाज पर जुआ भी होता था। ११ बजे के करीब रोज इस बात पर बाजी लगती थी कि आज बारह बजे दिन तक कितने मील जहाज चलेगा। जिसकी संख्या सही निकलती थी वह जीतता था।

प्रायः सभी साहब और मेम लोग साबुन से अपने कपड़े साफ करके सबसे ऊपरवाली छत पर तार की डोरियों पर सुखाते थे और सूख जाने पर इस्त्री करके ठीक करते थे। हम लोगों ने एक

बार जहाजी साहब धोबी से कपड़ा धुलाया, उसने एक लंबे कोट का १॥) (दो शिलिंग), मामूली कुर्ते इत्यादि का ।≈) लिया। फिर साहबों और मेमों को कपड़ा धोते देखकर हम लोगों ने भी सनलाइट सोप से अपने अपने कपड़े बारी बारी से साफ कर लेना सीखा और ऐसा ही बराबर करते रहे। "फैंसी बाल डांस" भी हुआ जिसमें अनोखे स्वाँग बना बनाकर मर्द औरत आते और नाचते थे। एक बुढ़िया क्वीन विक्टोरिया की नकल बनकर आई थी। उसी को औवल दर्जे का इनाम जजों ने दिया। बच्चों का भी विचित्र पोशाकों में प्रदर्शन हुआ। लोगों ने इनाम देने के लिये चंदा माँगा। हम लोगों की मंडली से भी दस शिलिंग दिया गया। इन विचित्र स्वाँगों में स्पष्ट मालूम होता था कि खूब सोच-विचारकर ये बनाए गए हैं। बड़े उत्साह से सैकड़ों स्वाँग हर श्रेणी में दिखाए गए थे। एक प्रदर्शनी छोटे बच्चों की भी हुई। जिसका बच्चा सबसे हृष्ट-पुष्ट पाया गया उसे पारितोषिक मिला। खेल कसरतों में रस्सा खींचने का खेल अँगरेजों और स्काटलैंडवालों में हुआ, जिसमें स्काटलैंडवाले जीत गए। टेनिस बैडमिंटन तथा अन्य प्रकार के बहुत से खेल और कसरतें लोग किया करते थे। एक मेम लोगों को कसरत सिखाती थी, इन खेलों में मर्द औरत सभो सम्मिलित रहा करते थे और खूब कसरत करते थे। तालाब, जो लकड़ी के तख्तों को खड़ा करके बनाया गया था, करीब तीस फुट चौड़ा और चार फुट गहरा था, समुद्र के जल से भरा जाता था। उसमें लड़के, लड़कियाँ, युवक और युवतियाँ कूदते, तैरते, नहाते थे। जाँघिया जाकेट एक ही में बना हुआ पहिने रहते थे, जिसमें जाँघ तक पैर तथा पूरी बाँहें खुली रहती हैं। मेमें सिर में मोमी टोपी बाँध लेती थीं। सब कलोलें करते थे। औरतें मर्दों

की तरह बाल कटवाती हैं और मर्दानगी की ओर हर काम में झुक रही हैं।

हम लोगों की जहाजी यात्रा

१५ मई की आधी रात को जहाज खुला और बराबर रात दिन चलते चलते २४ तारीख की रात को स्वेज नहर के मुहाने पर नौ दिन में पहुँचा। समुद्र का जल बहुत शांत था, यात्रा बराबर बिना कष्ट के हुई। किंतु एक दिन तारीख १९ को दोपहर से हवा तेज हो गई, समुद्र के जल में लहरें उठने लगीं और जहाज कुछ अधिक हिलने लगा। हम लोगों में से कई के सिर में चक्कर आया। मुझे मिचली भी आई। तीसरे पहर डाक्टर को दिखाया। उन्होंने पीने की दवा दी जिससे कुछ अवकाश मिला। नीबू चूसने और नीबू का अचार खाने से लाभ होता है। हम लोगों ने भी ऐसा किया। कितने ही तो अपने अपने कमरों में जाकर चुपचाप पड़ रहे, इससे भी विश्राम मिलता है। यह अवस्था २० तारीख के दोपहर तक रही, फिर हवा कम हुई और शांति स्थापित हुई। बराबर जल ही जल देखते देखते बहुतों का जी ऊब गया था (Sea Sickness)। समुद्र-यात्रा में बहुत से लोगों का जी मिचलाने लगता है। जब लहरें बहुत जोर से उठती हैं तब किसी किसी के वमन होने लगता है। इससे बहुत कष्ट होता है। ऐसी अवस्था में कम खाना, (बिल्कुल न खाना भी अच्छा नहीं) और लेटे रहना अच्छा होता है। यदि हो सके तो ऐसी जगह लेटा रहे जहाँ वायु शुद्ध हो। २० तारीख को तीसरे पहर अफ्रीका के पूर्वी किनारे के पहाड़ दीख पड़े, जिनमें से किसी किसी पर लाइट-हौस था। सभी उत्साह से दूरबीन लिए देखने लगे। ता० २१ को लाल सागर में जहाज प्रविष्ट हुआ। इस समुद्र की गरमी से लोगों ने पहले से हम

लोगों को बहुत डरा दिया था, किंतु हम इसमें तीन दिन से अधिक रहे, कुछ भी कष्ट नहीं हुआ। हवा बराबर सुखद थी। लाल सागर के एक ओर अरब का सूखा रेगिस्तान है और दूसरी ओर अफ्रीका की मरुभूमि। इधर गर्मी बहुत रहती और दुःख-दायी होती है। इस जल-भाग का नाम लाल सागर (रेड सी) है परंतु यहाँ का जल लाल नहीं है। लोग कहते हैं कि इसके अंदर लाल घास मिलती है। कदाचित् अधिक गर्मी के कारण इसका नाम ऐसा हो।

इसे पार करने पर स्वेज नहर का मुहाना ता० २४ की रात को मिला। ता० २५ को सबेरे ही एक स्टीमर की बावली में पीने का मीठा पानी आया और जहाज में भरा गया। कुछ तरकारी भाजी भी जहाज ने ली। मिस्र देश के बहुत से सौदागर छोटी नावों पर नीबू, नारंगी और बहुत सा सामान लेकर बेचने आए। ये एक प्रकार की कोंहड़ेपाग की तरह सूखी मीठी बर्फी डब्बों में बेचते थे, बहुत मोल-भाव करते थे; यहाँ तक कि स्वेज नहर का नकशा, जिस पर डेढ़ शिलिंग दाम छपा था, एक शिलिंग पर मैंने लिया। बहुत सी तसवीरें भी ली गईं। अंबर की माला मेमों ने पहनने के वास्ते ली। गलीचा, आसन, पर्दे तथा अन्य बहुत सामान बेचनेवाले लाए थे। यहाँ के आदमी भारतवर्ष के से ही देख पड़ते थे। हाँ, इनकी भाषा दूसरी थी, किंतु ये लोग दो-चार टूटे-फूटे हिंदी और अँगरेजी के शब्द बोल और समझ लेते थे। कुछ यात्री जहाज छोड़कर मिस्र का देश देखने चले गए; अगले दिन पोर्ट सय्यद में दोपहर से पहले आ मिले। हम लोगों ने समय बहुत कम समझकर ऐसा नहीं किया और लौटती बार वहाँ जाने का निश्चय किया।

स्वेज नहर

वहाँ से जहाज दस बजे दिन को स्वेज नहर में चला। यह इंजिनियरी का काम बहुत ही विचित्र है, जिसके द्वारा पूर्व से पश्चिम

स्वेज की नहर

की यात्रा में कई हजार मील की कमी हो गई। हम नहर के दोनों ओर सुंदर शोभा-युक्त दृश्य देखते हुए चले। जहाज की गति इसमें धीमी थी। इसकी चौड़ाई कम होने से एक ही जहाज एक बार जा सकता है। हाँ, छोटी-छोटी नावें और स्टीमर इसकी अगल-बगल से आते जाते थे। यह नहर ८७॥ मील लंबी है, बीच बीच की झीलों को मिलाकर बनाई गई है। रात को ८ बजे के करीब जहाज नहर के दूसरे सिरे पर सय्यद बंदर पहुँचा और रात भर वहीं ठहर गया। सबेरे ही यहाँ भी नावों पर सामान लेकर लोग बेचने आए और खरीदनेवालों ने खरीदा। हम लोग ६ बजे ही दो दो शिलिंग का टिकट लेकर स्टीमर पर सवार हो किनारे गए। वहाँ पहुँचने पर हमारी चीजों की जाँच हुई। साथ तो कुछ ले ही नहीं गए थे।

टटोलकर जाँचनेवाले ने जेब इत्यादि देख लिया। फिर हम लोग शहर घूमे। मोल-भाव यहाँ भी बहुत ज्यादा होता है। समुद्र-किनारे ही स्वेज नहर के बनानेवाले इंजीनियर जेसेप की विशाल मूर्ति बनी है। यहाँ का अजायबघर देखा। यह छोटा है। इसमें मिस्र के चार हजार वर्ष के पुराने मुरदे लकड़ी के बक्सों में रखे हुए हैं। और भी प्राचीन वस्तुएँ देखीं। यहाँ का रखवाला छ: छ: पेंस लेता है। फिर यहाँ का एक इटालियन कान-वेंट स्कूल देखने गए, जिसमें एक मेम अँगरेजी बोल सकती थी। उसके साथ स्कूल देखा। बहुत ही स्वच्छता थी और सुप्रबंध था। इनका गिरजाघर बहुत अच्छा और शांत था। ईसा की जीवनी की तसवीरें थीं। यह शहर योरोपियन ढंग पर बसा है। यहाँ पुलिसवाले तुर्की टोपी पहनते हैं। यह स्थान बहुत गरम है। यहाँ के निवासी भी शकल-सूरत में भारतीयों की तरह हैं। पैजामा, कोट या घुट्टी तक का लबादा पहनते हैं। औरतें काला बुर्कादार घटाटोप पहनती हैं। बाहर बहुत कम औरतें देख पड़ीं। यहाँ के बहुत लोग गाँधी टोपी जैसी टोपी पहने दीख पड़े। यहाँ फ्रेंच

पोर्ट सय्यद, जेसेप की मूर्ति

भाषा का प्रयोग अधिक होता है। हिंदी बोलनेवाले भी बहुत से दूकानदार मिले।

दोपहर को जहाज खुला और भूमध्य सागर में प्रवेश करते ही ठण्डक बढ़ी। जाड़े का कपड़ा निकालकर पहनना पड़ा। ता० २६, २७ और २८ को हवा बहुत तेज थी। कभी कभी पानी भी बरस जाता था। जाड़ा बहुत था। ता० २७ मई के सबरे जहाज के सब अफसरों और नौकरों ने अपनी पोशाक बदल ली। सबने काले रंग के मोटे कपड़े पहन लिए। ऊपर सोनेवाले सभी अपने अपने कमरों में घुसकर सोए, किन्तु पंडित रामनारायण मिश्र और हम अधिक कंबल ले लेकर खुली छत पर ही सोते रहे। आड़ की जगह तजवीज कर वहीं सोया करते थे। हम लोगों ने ता० २९ को सबेरे नेपल्स में जहाज छोड़ देना तै कर लिया था। जिनके पास बड़े-बड़े बक्स थे उन्होंने जहाजवाले को अपने नाम इत्यादि लिखकर कुंजी सहित बक्स सपुर्द कर दिए। लंदन में उनके मिलने का पता लिखा दिया और जहाजवालों ने उन पतों पर सब पहुँचा दिए। बक्स पीछे साढ़े आठ आठ शिलिंग घाट से घर तक पहुँचवाई के लिये देने पड़े। जहाज का भाड़ा कुछ नहीं, क्योंकि उसी भाड़े में लंदन तक हम लोग जा सकते थे। बहुत से साहेब लोग तो जहाज ही पर खाते-पीते उसी भाड़े में लंदन तक गए। हम लोगों ने एक सप्ताह का समय बचाकर उधर के देश देखने तथा समुद्र की यात्रा से छुट्टी पाने के विचार से नेपल्स में ही उतरना निश्चय किया था। रात ही को सामान ठीक कर लिया गया। २८ तारीख की दोपहर से ही इटली के देश का कुछ भाग दीख पड़ने लगा। मसीना, सिसली टापू तथा उसके ज्वालामुखी पर्वत, एटना, का धुँधला रूप दिखाई पड़ा। रात को प्रसिद्ध विसूवियस ज्वालामुखी पहाड़ की ज्वाला दीख पड़ी।

इटली की सैर

ता० २९ मई को सबेरे से ही उतरने की तैयारी होने लगी। हमने ३३१० मील की समुद्र-यात्रा समाप्त की, इसलिये हम लोग बहुत ही प्रसन्न थे। ८।। बजे हम लोगों को भोजन करा दिया गया, ९ बजे जहाज नेपल्स में घाट पर लगा। इसके पहले ही डाक्टरी परीक्षा तथा पासपोर्ट पर मुहर हो गई। करीब डेढ़ सौ साहेब कुली कंधों पर चमड़े का तसमा लटकाए पाँती बाँधकर जहाज पर आए और उन्होंने हम लोगों का असबाब नीचे उतारकर लाद लिया। वे कस्टम-हौस (चुंगीघर) ले गए। वहाँ विशेष जाँच तंबाकू (चुरट) इत्यादि तथा नमक की होती है। वहाँ से हम लोगों को कुछ स्काउट मिले जिन्होंने एक बोर्डिंग-हौस में ले जाकर हमें ठहरा दिया जिसका नाम Casa Dello Studente है और जो विश्वविद्यालय के पास ही है।

नेपल्स

नेपल्स नगर, जो यहाँ नेपोली कहा जाता है, समुद्र के किनारे पहाड़ियों पर बसा है। सड़कें दो दो तीन तीन मंजिल ऊँची-नीची हैं। मकान बहुत ऊँचे ऊँचे प्राय: पत्थरों के बने हैं। सड़कें पत्थरों की चट्टानों और पत्थरों के ढोकों से बनी हैं, ट्रामकार मोटर गाड़ियाँ खूब दौड़ा करती हैं, घोड़ा गाड़ियों पर सामान लादा जाता है। मोटरों पर कूड़ा भी लादा जाता है। साहेब कुँजड़े साग-भाजी ठेलागाड़ियों पर लादे घूम-घूमकर बेंचा करते हैं। घोड़े प्राय: डील-डौल के बड़े दीख पड़ते हैं। समुद्र किनारे ऊँचे-ऊँचे मकानों का दृश्य काशी के गंगा किनारे के मकानों का स्मरण दिलाता है। हम सान मार्तीनो पहाड़ पर बिजलीवाली रेल में बैठकर गए। वहाँ से शहर का अपूर्व दृश्य दिखाई देता है। समुद्र का

सान्निध्य ऊँचे ऊँचे मकानों के दृश्य की छटा को कई गुना बढ़ा देता है। जहाँ-तहाँ वाटिकाओं में अंगूर की लताएँ फैली दिखाई देती हैं, अनेक प्रकार के फलों के वृक्ष और भी शोभा को बढ़ा देते हैं। सान मार्तीनो की प्राचीन मोनास्टरी (मठ) देखी जिसमें पुरानी कारीगरी, चित्रकारी तथा शिल्प के नमूने उस समय के विद्या-वैभव को प्रमाणित करते हैं। इसमें लकड़ी के हॉल (बड़े बड़े कमरे) बने हैं जिनमें बोलने से प्रतिध्वनि (आवाज की गूँज) तनिक भी नहीं होती। एक ऐसा भी कमरा है जिसमें दीवार की ओर मुँह करके कोई धीरे से बोलता है तो दूसरी ओर की दीवार में कान लगानेवाले को स्पष्ट सुनाई देता है। दीवारों में बहुमूल्य रंग-बिरंगे पत्थरों की पच्चीकारी के बेल-बूटे इत्यादि बने हैं जो आगरे के ताज की याद दिलाते हैं। लकड़ी में उठी हुई खोदाई के काम की तसवीरें भी शिल्प-कौशल के अद्भुत नमूने हैं।

वहीं अजायबघर भी देखा जिसमें एक गाँव का नमूना बहुत ही मनोहर बना है। उसमें बादल का नमूना बनाकर तीन सतहों में गाँववालों को दिखाया है। रोशनी की झलक ऐसी पड़ती है कि ऊपरवाली सतह की मूर्तियाँ बहुत दूर जान पड़ती हैं। काँच की टट्टियाँ ऐसी कारीगरी से लगी हैं कि उन पर प्रकाश का प्रतिबिंब पड़ने से जल के बहाव तथा तालाब का होना जान पड़ता है। हाथ की लिखी पुरानी बाइबिल की पोथियाँ, जो करीब पाँच सौ वर्ष की बताई जाती हैं, बहुत अच्छे अक्षरों में लिखी हैं। पोपों (ईसाई धर्म के महंतों) के कपड़े, आभूषण इत्यादि उनके प्राचीन वैभव को सूचित करते हैं। छतों में अद्भुत चित्रकारी है। पुराने हथियार, बड़ी भारी आठ घोड़ों से खींची जानेवाली बहुमूल्य गाड़ी और उस समय की नावें हैं। पुराने तैलचित्र (आइल पेंटिंग) कम से कम

दो सौ वर्ष पुराने बताए गए। पत्थरों के बक्स के नमूने इत्यादि का संग्रह है जिनमें मुर्दे रखकर गाड़े जाते थे।

अजायबघर से लौट बाजार देखते हुए निवास-स्थान पर आए। बाजार में हम लोगों को देखने के लिये भीड़ लग जाती थी। हम लोगों में से कई ने अँगरेजी कोट पतलून नेकटाई कालर हैट पहन लिया था, किंतु बाकी लोग स्काउट पोशाक में थे, इसलिये दर्शकों के लिये तमाशा हो गए थे। जैसे भारत के किसी ऐसे गाँव या छोटे नगर में कोई अँगरेजी भेषवाला जा पड़े जहाँ उस प्रकार का कोई आदमी कभी न दिखाई पड़ा हो तो वहाँ जो हाल होता है वही हाल यहाँ भी दिखाई पड़ा।

यहाँ के जल-जंतु-संग्रहालय में बड़े बड़े विचित्र जंतु हैं। उसमें जाने से पहले एक मनोहर वाटिका मिलती है, जिसमें से घूमते हुए हम लोग संग्रहालय में गए। प्रति व्यक्ति १० लीरा का टिकट लगा। वहाँ काँच की दीवार के भीतर कई कोठरियों में—जल में—ये जंतु जीते रखे हैं और स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। इनके वर्णन की एक पुस्तक छपी है जो वहाँ बिका करती है। अँगरेजी का संस्करण हम लोगों ने लिया। सवा सौ पन्ने की सचित्र पुस्तक आठ लीरा में मिली। यहाँ का सिक्का लीरा कहलाता है जिसका मूल्य अन्य देशों के सिक्कों में घटा-बढ़ा करता है। इस समय एक अँगरेजी पौंड के ९२ लीरा मिलते हैं। इस तरह एक लीरा करीब सवा दो आने का हुआ। लीरा के सौ भाग कर दिए गए हैं जो सेंटिम कहलाते हैं। सेंटिम के सिक्के एक, दो, पाँच, दस, बीस, पचास तक के ताँबे और निकिल के होते हैं। एक दो लीरा के सिक्के भी निकिल के होते हैं। उसके ऊपर पाँच, दस, बीस लीरा के चाँदी के सिक्के, पचास, सौ, पाँच सौ, हजार, दस हजार लीरा के, नोट होते हैं।
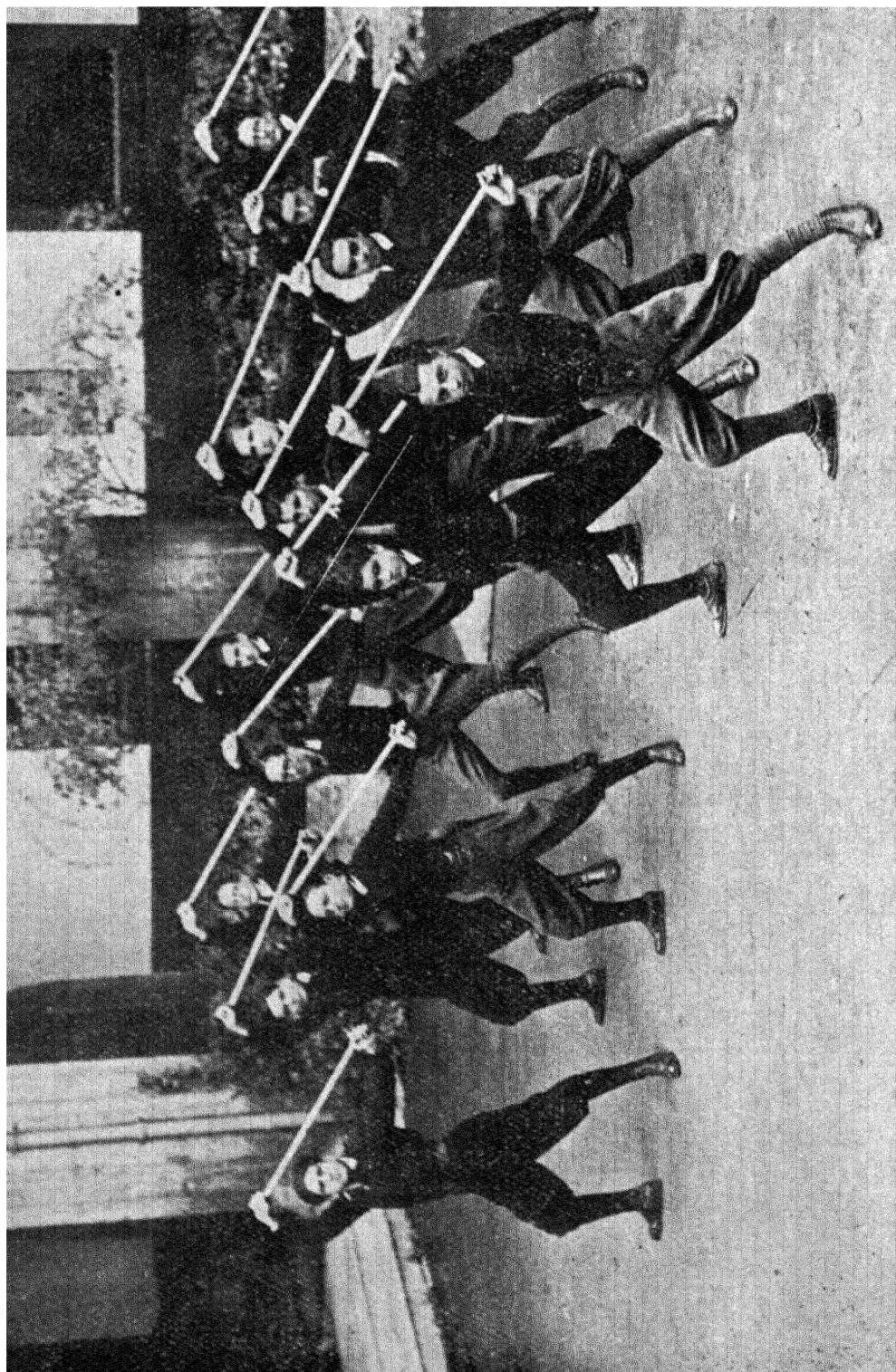
बलीला दल कसरत कर रहा है

मसोलिनी के चित्र और उनके चुभते हुए वाक्यों की पटरियाँ हर जगह स्कूलों में लगी हैं, जिनके द्वारा बालक-बालिकाओं के हृदय में स्वदेश-प्रेम भरा जाता है और जिनकी बदौलत भविष्य में सारा देश आत्मरक्षा के लिये सर्वस्व अर्पण करने को तैयार हो जाने-वाला है। उनमें के एक छोटे वाक्य का अनुवाद यहाँ दिया जाता है—

मसोलिनी

"छोटे वलीला के प्रति; अच्छे बालक बनो, उत्साही बनो, शुभचिंतक बनो, नवीन इटली बनो।" यहाँ हवाई जहाज, मोटर, जल-यान से लेकर सूई, दिया-सलाई तक सभी वस्तुएँ तैयार की जाती हैं। वलीला दल की बरात बड़ी भारी निकली थी, जिससे इस देश की भावी शक्ति तैयार हो रही है।

भाषा की कठिनाई से हम लोगों को इटली देखने का पूरा आनन्द नहीं मिला। जहाँ हम लोग पूछते थे कि अँगरेजी जानते हो वहाँ मुँह बिचकाकर लोग गर्दन हिला देते थे। कहीं टूटी-फूटी अँगरेजी के सौ दो सौ शब्द जाननेवाला कोई मिल जाता था तब हम लोग कुछ कह या पूछ सकते थे, नहीं तो गूँगे, बहरों की तरह पूछते

या बताते थे। खाने के समय छोटा शब्द-कोष लेकर बैठते और उसके द्वारा खाद्य वस्तु माँगते थे। मसोलिनी के ताम्रचित्र लिए हुए लड़के इस अद्भुत जल-जंतु संग्रहालय में घूमते मिले और उनसे चित्रों को मोल ले लेकर साथियों ने अपने कोट में लगा लिए जैसे कि महात्मा गाँधी के चित्र भारतवर्ष में लगाए जाते हैं। लड़के, पैसे और सिगरेट माँगते हुए अनेक स्थानों में मिले। वे सड़कों पर तसवीरें महँगे दाम पर बेचते घूमते थे। इस जल-जंतु-संग्रहालय में ऐसे ऐसे विचित्र जीव हैं जिनके आकार और चाल-ढाल की कल्पना स्वप्न में भी नहीं हो सकती, न उनका वर्णन यहाँ हो सकता है। उसके बाहर चौड़ी सड़कें ऐसी हैं जिनका एक भाग छायादार वृत्तों के लखराँव द्वारा पैदल चलनेवालों के लिये अलग कर दिया गया है। फिर एक भाग घोड़दौड़ के लिये नर्म मिट्टी का है और उसके बाद पत्थरों की सड़क है, जिस पर मोटरें, ट्रामगाड़ियाँ और घोड़ा-गाड़ियाँ दौड़ा करती हैं। सड़कों पर दाहनी ओर से गाड़ियों इत्यादि के लिये तथा बाईं ओर से पैदलों के चलने की प्रथा है। संध्या समय हम लोगों ने यहाँ का बड़ा गिरजाघर देखा जो एक बहुत बड़ा भवन है। इसमें प्रभु ईसा मसीह के चित्रों द्वारा उनकी जीवनी दिखलाई गई है। ईसाई लोग (रोमन कैथलिक) यहाँ मूर्तियों के सामने पूजा, वंदना पाठ करते हैं। इटली देश में रोमन कैथलिक धर्म माना जाता है। एक स्काउट ने हम लोगों से पूछा कि क्या आप लोग रोमन कैथलिक हैं? हिंदुस्तान की तरह यहाँ भी सड़कों पर भीड़ जमा हो जाती है और कहीं कहीं सड़कों पर लोग थूक भी देते हैं। यहाँ औरतों को अपने होठ लाल रँगते देखा।

पांपिइआई

दूसरे दिन सवेरे ही दो मोटरें दिन भर के लिये डेढ़ डेढ़ सौ लीरा प र करके हम लोग प्राचीन नगर पांपिइआई देखने गए जो यहाँ
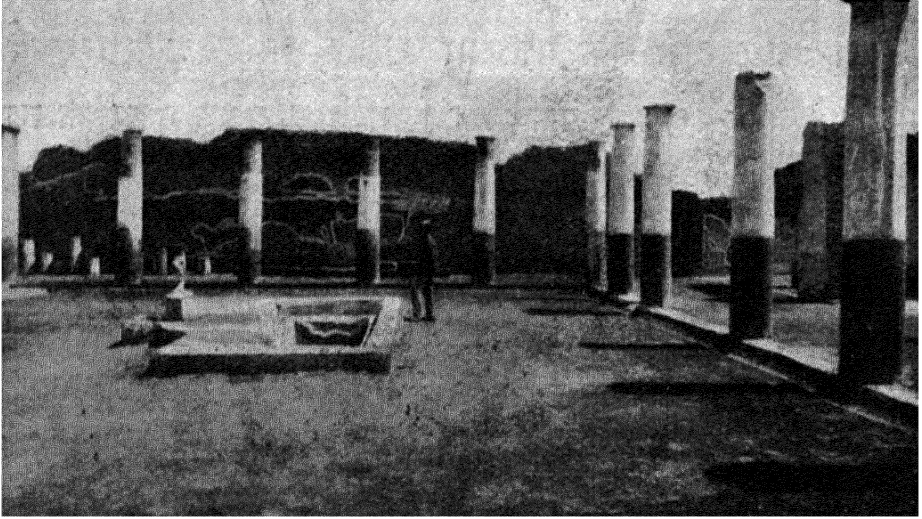
पांपिइआई का खंडहर

से पंद्रह-सोलह मील पर है। रास्ते में लोगों के बगीचे सहित सुंदर भवन मिले जहाँ अंगूर की टट्टियाँ तथा अनेक फल-फूल दिखाई पड़ते थे और बड़े ही मनोहर थे। रास्ते में घोड़े-गाड़ियों पर और हाथ-गाड़ियों पर साग-भाजी इत्यादि के ढेर के ढेर बिक्री के लिये लेकर बेचनेवाले घूमते थे। पांपिइआई नगर देखने के लिये टिकट लेकर दस बजे के करीब घुसे और एक प्रदर्शक (गाइड) भी साथ में लिया। जो सज्जन पैदल नहीं चल सकते थे वे कुर्सियों में बैठकर चले। उनमें दो लंबे लकड़ी के डंडे लगे थे जिन्हें पकड़कर एक साहेब कुली आगे और एक पीछे हाथों में लिए टाँगे हुए चलता था। गिरे पड़े नगर तथा उसके संग्रह को दो घंटे तक घूम घूमकर देखा। यह नगर विसूवियस ज्वालामुखी पर्वत के नीचे के भाग में समुद्र की ओर बसा था। दो हजार वर्ष हुए उस पहाड़

के भीतर से गले हुए पत्थर की धारा निकलकर समुद्र की ओर बहती हुई इस नगर को नष्ट-भ्रष्ट करती चली गई। इस नगर के जीव-जंतु सभी प्राणी और सामान उस ज्वालामुखी के नीचे विलीन हो गए। खोदाई होने से यह सब दृष्टि-गोचर हुआ। इस शहर की आबादी, बाजार, कचहरी, नागरिकों के घर बड़े ही विचार और बुद्धिमत्ता के साथ बने थे। जले हुए मनुष्य, जानवर, खाद्य पदार्थ तथा गृहस्थी के सामान जो खोदने पर निकले हैं यहाँ संगृहीत हैं। उसके संबंध की पुस्तक "पांपिइआई" अँगरेजी में २० लीरा अर्थात् तीन रुपए में ली गई। यह डेढ़ सौ पन्नों की चित्रों और नकशों सहित पुस्तक उस प्राचीन काल की रहन-सहन, विद्या तथा शिल्प का पूरा हाल बताती है। इस प्राचीन नगर में घरों में पानी पाइपों द्वारा पहुँचाया जाता था। इसमें नहरें थीं, रास्तों में जल पीने के पाइप थे, आटा पीसने की चक्कियाँ, रसोईघर, शराब बनाने और बेचने की दूकानें, तेल के दीए तथा मोमबत्ती के शमादान, लिखने की दावात, कलम, तराजू, काँच के बर्तन इत्यादि भी मिले हैं जो उस जमाने की सभ्यता के प्रमाण देते हैं। दूकानें दो मंजिला हैं जिनके ऊपरवाले भाग में दूकानदार सकुटुंब रहता था। एक धनिक का मकान मय बगीचा इत्यादि के था, जिसमें बनी हुई तसवीरें अब तक चित्र-कला की कुशलता का प्रमाण देती हैं। कई आसनों की अश्लील तसवीरें भी दीवारों में बनी हैं। इसमें पच्चीकारी के फर्श हैं, जिनमें जानवरों की शकलें बहुत अच्छी बनी हुई हैं। स्नान करने, सोने, खाने, बैठने इत्यादि के अलग अलग विभाग हैं। बहुमूल्य सामान रखने के मजबूत बक्स और अलमारियाँ हैं। यह प्राचीन नगर नष्ट होने से अनुमानतः सात सौ वर्ष पहले बसा था और हर प्रकार से सुसंपन्न था। इसकी खोदाई करीब दो सौ वर्ष हुए

आरंभ हुई थी। इसके बहुमूल्य सामान नैशनल म्यूजियम में रखे हुए हैं जिसको हम लोगों ने दूसरे दिन देखा। अब तक खोदाई का काम जारी है और सामान निकलता ही जाता है।

विसूवियस ज्वालामुखी

बाहर आकर एक होटल में हम लोगों ने भोजन किया। अनाजी भोजन तथा साग-भाजी, मक्खन, दूध, फल मिला। इटालियन

विसूवियस की फ्युनीकुलर रेलवे

बाजा और गाना भी सुना। फिर हम लोग बिजली की रेलगाड़ी (Funicular Railway) में २ बजे सवार होकर विसूवियस पहाड़ पर ज्वालामुखी देखने गए। इस रेल का भाड़ा एक ओर का ६० लीरा (साढ़े आठ रुपया) है और आने-जाने का ९० (तेरह रुपया) लीरा। इटली-वालों से २२ ही लीरा (तीन रुपया) लिया जाता है। युगलियानो स्टेशन से चले। कई जगह तो ५५ प्रति सैकड़े की खड़ी चढ़ाई पड़ी। दोनों ओर अंगूर की लताएँ, फल के वृक्षों के बाग, आलूचा, खूबानी, शफतालू इत्यादि के पेड़ लगे थे। इस पर से

सारे शहर तथा समुद्र का अपूर्व दृश्य दिखाई देता है। करीब ३७०० फुट ऊँचाई पर जाकर रेल से उतरे। आध या पौन मील पैदल जाकर विसूवियस के पास से उसके भयानक दृश्य को देखा। उसके मुख से गर्जन के साथ लाल ज्वाला में मिले भाप के खंभे निकलते थे, मानो लाल और सफ़ेद रूई धुनकर ढेर की ढेर ऊपर फेंकी जा रही हो। जहाँ हम लोग खड़े थे उससे नीचे उतरकर ज्वालावाले टिब्बे की कमर के पास भी लोग जाकर देखते हैं, किंतु वह स्थान बहुत दुरूह और भयानक है। विशेष प्रदर्शक साथ लेकर नीचे उतरा जाता है, नीचे हर ओर से भाप निकला करती है। यहाँ इस पहाड़ से निकले जले पत्थरों के रंग-विरंग के टुकड़े लोग बेचते हैं और बड़ा मोल-भाव करते हैं। हमने करीब १६ टुकड़े ८ लीरा (एक रुपया दो आना) में खरीदे जिनका वह ३२ लीरा माँगता था। वहाँ से लौटकर हम लोग घूमते घामते रेजिनी होटल गए, जहाँ हम लोगों के साथी श्री शिवप्रसाद गुप्त सकुटुंब ठहरे हुए थे। यहाँ समुद्र किनारे और अन्यत्र भी बहुत बड़े बड़े होटल हैं।

आज शहर में ईसाइयों के एक त्योहार की छुट्टी थी। शहर में एक नगर-कीर्तन देखा (Processione del Corpus Domini)। इसमें ईसा की कागज की बहुत बड़ी तसवीर मुसलमानों के ताजिने की तरह उठाकर ले जाते देखी, बड़ा धक्कम-धुक्का था, कई दल गाना गाते हुए चलते थे। बड़ा शोर था, मकानों के ऊपर से भी हज़ारों जन इस नगर-कीर्तन को देखते थे।

३१ मई को एक म्युनिसिपल स्कूल देखा। सब विद्यार्थी एक ही प्रकार के कपड़े पहने थे। स्त्रियाँ पढ़ा रही थीं, देश-सेवा के भजन और कवायद भी सिखाई जाती थी। मुर्दा ले जाने की आठ घोड़ों

की काली गाड़ी देखी। इसके बाद दो बजे से नैशनल म्यूजियम (सार्वजनिक संग्रहालय) देखा। यह बहुत बड़े भवन में है। इसका प्रवेश-शुल्क १२ लीरा (पौने दो रुपया) प्रति दर्शक लगता है। एक प्रदर्शक ५० लीरा पर तय किया गया। यदि मोल किया जाता तो यह बीस पचीस पर भी स्वीकार कर लेता। उसी हतभाग्य पांपिइआई नगर तथा उसके साथ ही नष्ट हुए दूसरे नगर हर्कुलेनियम में मिली हुई मूर्तियाँ तथा दूसरी चीजें यहाँ संगृहीत हैं। इसकी भी एक सचित्र पुस्तक अँगरेजी में तीन सौ पन्ने की १८ लीरा में खरीदी गई। दो घंटे तक भागाभाग इसको हम लोगों ने देखा। यदि अच्छी तरह देखा जाय तो दस पंद्रह घंटे भी कम होंगे। कुश्ती करने के लिये तैयार पहलवानों का तथा अन्य मूर्तियों की बनावट बड़ी कारीगरी की है। अंगों के पुट्ठे, चमड़े की सिकुड़न, चादरों और कपड़ों की सिकुड़न, नग्न मूर्तियों का और बड़े बड़े विद्वानों की मूर्तियों की बनावट बहुत ही उत्तम है। लाल कत्थई रंग के पत्थर की अपालो की मूर्ति बहुत ही भव्य है। चित्तीदार पत्थर के खंभे भी बड़े ही मनोहर हैं जो हर्कुलेनियम से प्राप्त हुए हैं। पांपिइआई की दीवारों के पलस्तर में जो बड़ी रंगीन तसवीरें बनी थीं, उन्हें पलस्तर सहित निकालकर चौखटों में मढ़कर लगा दिया गया है, जो बहुत ही अच्छी हैं। बारीक पच्चीकारी में खंभे, गायकों और बाजा बजानेवालों की मंडलियाँ बहुत ही निपुणता से भूमि में बनी हैं, जो पांपिइआई से लाकर यहाँ रखी गई हैं। एक चित्र में चिड़िया को बिल्ली ने दबोचा है। उसे देखकर दर्शक चकित हो जाता है। छतों की रंगीन चित्रकारी के टुकड़े भी यहाँ लाकर सुरक्षित रखे हैं। काँसे की मूर्तियाँ और बड़े बड़े बक्स देखने योग्य हैं। कुर्सियों के टुकड़े, गोटियाँ, टिकट, तेल जलाने के काँसे के झाड़,

अनेक प्रकार के दीपक, तराजू, कलम, दावात, परकार, चीड़-फाड़ के नश्तर, बाँसुरी, जली रोटी, अंडा, अनाज, मट्टी के रोगनदार बर्तन, काँच के बर्तन, शीशा, हाथी-दाँत की सलाई, कंघी, डब्बा, डिबिया, काले काँच के बर्तन में सफेद काँच के उभड़े हुए बेल-बूटे, स्फटिक की माला, सोने .चाँदी के अनेक गहने और बर्तन, एक अनोखे पत्थर के प्याले में उठा हुआ सफेद काम बना है जो दूसरी ओर से एक विचित्र दृश्य दिखाता है। अंबर की माला, जवाहिरों के अनेक आभूषण इत्यादि भी देखने योग्य हैं। लड़ाई के हर अंग के रक्षक, काँसे के बक्तर और हथियार भी हैं। मूँगे का एक मुर्गा और प्राचीन सिक्के भी सराहने योग्य हैं। दीवारों में टँगे लड़ाई के बिने हुए चित्र जो प्रसिद्ध चित्रकार राफेल के बनाए नमूने से बीने गए थे, अच्छे हैं। इनके वर्णन करने की न तो शक्ति है न समय।

यहाँ के होटलवाले साहब की मेम ने हम लोगों के कपड़े खूब साफ कर इस्त्री इत्यादि कर दी। जितना सोचा गया था, उससे अधिक दाम हम लोगों से होटलवाले ने ले लिया, किंतु खाने का सामान, कई तरह की तरकारी, अनाजी चीजें, दूध, मक्खन, मुरब्बा, फल इत्यादि द्वारा संतुष्ट कर दिया था। यहाँ की बलीला संस्था के प्रधान प्रोफेसर उर्वानो सोरेंटिनो से हम लोग मिले। उन्होंने हम भारतीयों की बड़ी खातिरदारी की और हस्ताक्षर करके फोटो दिया।

१ जून को सबेरे ही स्नान आदि कर हम लोग रोम को चल दिए। बिजली के इंजिन द्वारा रेलगाड़ी चलाई गई। रास्ते में खेती, गाय, बैल, घोड़े, बकरी, तथा भेड़ चराते कोट-पतलूनधारी गौरांग साहेब लोग दिखाई पड़े। खेतों में वे बड़ी मुस्तैदी से काम कर

रहे थे। यहाँ प्राय: सभी चीजों की खेती होती दिखाई देती थी। जौ, गेहूँ, धान, सरसों, शाक तरकारी। फलों में स्ट्राबेरी और अंगूर की खेती बहुत दिखाई दी। १०॥ बजे हम लोग रोम पहुँचे। स्टेशन पर वाजपेयीजी की जान-पहचानवाली एक मेम साहिबा आई और हम लोगों को एक होटल में ले जाकर उन्होंने ठहरा दिया। उसका नाम पेंशियोनी रोजेट्टी Pensione Rossetti है, जो पियाजावर्वि-योंनी के पास है।

इटली का सिपाही

रोम

यह रोम नगरी प्राचीन काल में होली (पवित्र) रोमन-साम्राज्य की राजधानी थी और अब भी इटली का प्रधान राजस्थान है। यहाँ के लोग इसको रोमा कहते हैं। यह शहर भी समुद्र के पास टाइबर नदी के दोनों किनारों पर बसा हुआ है। यहाँ शहर भर में अनेक गिरजाघर विशाल और छोटे छोटे गली गली हैं, मकान भी यहाँ बड़े ऊँचे हैं। यह भी पहाड़ पर बसा है और सड़कें पत्थर की बहुत ढालू कई मंजिल

ऊँची-नीची हैं। ट्रामगाड़ी, मोटरें और घोड़ा-गाड़ियाँ गली गली चलती हैं। बीच बीच में बड़े बड़े मैदान हैं जिन्हें पियाजा कहते हैं। जगह जगह पानी के कितने ही छोटे-बड़े फौआरे बड़े मनोहर हैं। जहाँ-तहाँ प्राचीन काल की भारी भारी मूर्तियाँ भी हैं।

इटली भर में बहुत मोल-भाव होता है। सौदा खरीदते डर लगता है कि कहीं ठगे न जायँ। एक चीज का दाम एक ने १० लीरा माँगा, हमने पाँच कहा और उसने चट दे दिया। इससे जान पड़ा कि कदाचित् और कम पर दे देता।

यहाँ भी टामस कुक से चेक का लीरा लिया गया और रोम से सीधे लंदन का तीसरे दर्जे का टिकट ४०१) लीरा (छप्पन रुपए) का लिया गया; जिसमें बार बार टिकट लेने का बखेड़ा न रहे। इटली और स्विज़रलैंड की रेलों में बिना महसूल असबाब ले जाने का नियम नहीं है। हम लोगों के छोटे छोटे बक्स और बेग जो हाथ में लटकाकर उठाए जा सकते थे वही गाड़ियों में मचानों पर रख लिए जाते थे। जिनके साथ बड़े बड़े बक्स थे उन्होंने टामस कुक को सहेजकर लंदन भेज देने के वास्ते दे दिया। बक्सों के साथ कुंजी भी दे देनी चाहिए, क्योंकि जब सरहद बदलती है तब सामान की जाँच होती है। हमारे साथियों से कुंजी भूल से नहीं ली गई, इस कारण बक्स रास्ते में ही रुक गए। लंडन से कुंजी भेजी गई तब पीछे से असबाब आया। दूसरे दर्जे का सवा छः सौ (छियासी रुपए) और औवल दर्जे का साढ़े नौ सौ लीरा (एक सौ तीन रुपए) लंदन तक का लगता है किंतु सभी दर्जों में बैठने के लिये ही स्थान मिलता है; हाँ, यदि औवल दर्जे का और सोनेवाली गाड़ी का विशेष भाड़ा दिया जाय, जो बहुत हो जाता है, तो सोने-

वाली गाड़ी में स्थान मिलता है। हम लोगों ने निश्चय किया कि दिन की गाड़ी में यात्रा करके देश देखते चला करेंगे और रात को टिककर विश्राम करेंगे, जिसमें सो भी सकें और देश-दर्शन भी होता चले। यहाँ होटलवाले भी बहुत ही मोल-भाव करते हैं। एक होटलवाला १०० लीरा एक दिन का माँगता था और ४५ लीरा पर राजी हो गया। हम लोग ३० लीरा रोज पर मय भोजन के दूसरी जगह ठहरे, जहाँ अन्न तथा शाक इत्यादि भोजन, दूध और मक्खन सहित मिलता था।

ता० २ जून को यहाँ बहुत बड़ा धार्मिक तथा राजनीतिक मेला था जिसके लिये दूर दूर से लोग आए थे। सभी होटल प्राय: भरे पड़े थे। इस दिन सब काम-काज बंद था। सवारियाँ खूब दौड़ती थीं और गिरजाघरों में लोग सज-धजकर जाते और पूजा-पाठ करते थे। रास्तों में यात्री बहुत दीख पड़ते थे। करीब ढाई हजार वर्ष से अधिक पुराना फोरम देखा जो गिरी पड़ी अवस्था में है। यहाँ प्राचीन काल में राजनीतिक तथा धार्मिक सार्वजनिक कार्य होते थे और उस समय का यह बाजार था। इसका तथा इटली या रोम के अद्भुत स्थानों का वर्णन बड़ी मोटी-मोटी पोथियों में हुआ है। टामस कुक ने रोम पर अँगरेजी में एक पुस्तक करीब ढाई सौ पन्ने की संक्षेप में कुछ चित्रोंसहित छपवाई है जो १३।। लीरा पर यहाँ और ढाई शिलिंग पर अन्यत्र बिकती है। यहाँ की प्राचीन इमारतों तथा विद्या-वैभव पर बड़ी बड़ी पोथियाँ हैं। हम संक्षेप में ही उन स्थानों का हाल लिखेंगे जिन्हें हम लोग दो दिन के थोड़े समय में देख सके। यहाँ के स्थानों को देखने के पहले इस संबंध की पुस्तकें, चाहे छोटी ही हों, पढ़ लेनी चाहिएँ। साथ में ऐसा कोई हो जो वहाँ की बोली समझकर आपको समझा

सके, या आप वहाँ की बोली से परिचित हों तो अच्छा है, अन्यथा पूरा आनंद नहीं आता। हमें एक अँगरेजी जाननेवाले सज्जन मिल गए थे जिन्होंने साथ जाकर दिखाया और बताया। लोग बताते हैं कि यह फोरम प्राचीन समय के मूर्ति-पूजकों के अधिकार में था। उसके बाद जब ईसाई-धर्म का प्रभुत्व हुआ तब खोद खोदकर इसके बहुमूल्य इमारती मसाले इत्यादि गिरजाघरों के बनाने में लगाए गए। वह तहस-नहस कर दिया गया और गिर पड़कर दबा रहा। जब खोदाई हुई है तब यह पुराना बचा बचाया स्थान दृष्टिगोचर हुआ, जिससे प्राचीन समय के वैभव का पता चलता है।

इसके बाद कोलोसियम देखा। यह बड़े विस्तृत क्षेत्र में प्राचीन काल का अखाड़ा था, जिसमें केवल मनुष्य ही नहीं लड़ाए जाते थे, किंतु बड़े बड़े जानवरों की भी भिड़ंत होती थी। इसी में व्याघ्र ऐसे जानवर भी रखे जाते थे, जो मनुष्यों पर छोड़ दिए जाते थे। कितने ही आरंभिक ईसाइयों को इस प्रकार जान गवाँनी पड़ी थी। तमाशा देखनेवालों के लिये चारों ओर कई मंजिलों का बहुत ऊँचा चौतरा बना था जिस पर पचासों हजार दर्शक बैठकर तमाशा देखते थे। दर्शकों का स्थान कई दर्जों में विभक्त था। राज-परिवार, राजकर्मचारी, गण्यमान्य तथा साधारण जनता के लिये अलग अलग स्थान नियत थे। यहाँ भी अँगरेजी गाइड (प्रदर्शक) होते हैं जो दक्षिणा लेकर दिखाते और बताते हैं।

इसके पास ही किंग इमैनुएल का स्मारक है। संगमर्मर का विशाल सफेद भवन है जिसके आगे विस्तृत मैदान है। बादशाह इमैनुएल की बड़ी मूर्ति सुनहले घोड़े पर सवार है और दोनों ओर सोने की परियाँ एक एक पैर से खड़ी हैं। यह कई मंजिला ऊँचा,

विचित्र चित्रकारी के साथ बना हुआ विशाल भवन है। यहाँ से नगर का दृश्य अच्छा दिखाई पड़ता है।

विचित्र मूर्तिपूजा

इसके पीछे ही एक गिरजाघर है। इस मुहल्ले का नाम "कैपिटोलाइन हिल" है। वहाँ सेंट मराया गिरजा है। उसमें एक ओर पर कई मूर्तियाँ हैं जहाँ ईसाई लोग पूजा-पाठ करते हैं। एक जगह डोली में एक स्त्री की मूर्ति सोई हुई है जिसकी छाती पर त्रिशूल (क्रास) रखा है। इसके पास ही कोने में जो एक गली गई है उसमें घुसते ही एक कोठरी है, जिसके भीतर विचित्र मूर्ति-पूजा दीख पड़ी। उस कोठरी में एक पट बंद मंदिर है। जब दर्शक वहाँ पहुँचता है, वहाँ का ईसाई पुजारी एक बटन दबाता है। इस पर झट दोनों पल्ले खुल जाते हैं और एक शीशे का छोटा मंदिर एक भव्य मूर्तिसहित निकलकर सामने आ जाता है। मूर्ति करीब एक हाथ ऊँची है। सिर पर मुकुट और गले में बहुत प्रकार के सोने मणि इत्यादि के आभूषण लदे हैं। बिजली की रोशनी हो जाती है और देदीप्यमान मूर्ति के दर्शन होते हैं। पुजारी मूर्ति की छपी हुई तसवीर उठा और मूर्ति से छुलाकर आपको प्रसाद रूप देता है। दर्शक श्रद्धानुसार द्रव्य, आभूषण चढ़ाता है और जो मनोरथ होता है उसको चिट्ठी में लिखकर मूर्ति के चरण के पास छुआकर प्रार्थना करता हुआ आशा करता है कि उसकी इच्छा पूरी होगी। ईसाई लोग दूसरे मूर्ति-पूजकों पर हँसते हैं, पर इस मूर्ति पूजा को जारी रखे हुए पैसा देते और पैदा करते हैं।

आज एक अमरीकन प्राटेस्टेंट मिशन के पादरी रेवरेंड मेनार्ड मिले। एपिस्कोपलमेथोडिस्ट चर्च में उनसे प्रायः पौन घंटे बातचीत

हुई। दो बड़े बड़े गिरजाघर देखे जो एक दूसरे से करीब एक मील की दूरी पर हैं। चर्च संता मेरिया मंगोरिया और दूसरा सान लेठारेनो देखे। इनके आगे मैदान में बहुत ऊँचे खंभों पर क्रास सहित मूर्तियाँ हैं। भीतर बहुत बड़ा मंदिर है। करीब पचीस पचीस फुट ऊँचे दस बारह फुट गोल बीसों बड़े सुंदर रंगीन चित्रकारी के संगमर्मर के खंभे, बीच का विस्तृत हाल तथा दोनों ओर के विस्तृत दालानों में दीवारों के भीतर अनेक प्रकार की ईसा मसीह तथा उन के धर्म के अनुयायी महात्माओं की विशाल मूर्तियाँ हैं। फर्श खूब साफ, स्वच्छ, छतों में उभरी हुई रंगीन सुनहरी तसवीरें बनी हैं, बड़ी और खूब मोटी मोमबत्तियाँ जलती हैं। ईसाई लोग इन मूर्तियों के सामने घुटनों के बल खड़े हो प्रार्थना या पाठ करते हैं। सब कार्य शांतिपूर्वक होता था, तनिक भी बोल-चाल सुनाई नहीं देती थी। एक मंदिर में एक युवक का एक युवती के साथ विवाह होते देखा। वहाँ के पादरी ने विवाह कराया। मंदिर में भीतर और बाहर बुढ़ियाँ भिक्षा माँगती थीं और बाहर मूर्तियाँ तथा गाइड बुक्स जिनमें उन गिरजों तथा इटली के प्राचीन वैभव-संबंधी वर्णन हैं, बिक रही थीं। छोटे छोटे लाकेट की तरह की पत्थरों में बनी हुई अच्छी बारीक तसवीरें भी बिक रही थीं। किसी स्कूल की बहुत सी लड़कियों का झुंड, एक ही प्रकार का कपड़ा पहने, अध्यापिका के साथ गिरजाघर में आया और वंदना कर दूसरे गिरजाघर में गया। मैदान में प्रायः १०० फुट ऊँचे मोटे खंभे के ऊपर कुमारी मेरी की मूर्त्ति विराजमान है जिसकी गोद में बालक ईसा मसीह विराजते हैं। दूसरी ओर से ईसाइयों की बहुत बड़ी मंडली सड़क के एक किनारे से चलती हुई आई। आगे आगे एक पादरी बाबा नंगे सिर हाथ में त्रिशूल लिए कुछ गाते हुए चले जाते थे; काला

कपड़ा पहने हुए थे। उनके पीछे पीछे बहुत से पुरुष, स्त्री, बाल, वृद्ध गाते चले जाते थे। वे उससे निकलकर दूसरे गिरजाघर को चले। सड़क के किनारे बहुत अच्छा लखरांव है। काश्मीर के चनार की तरह के वृक्ष हैं जो काश्मीर के सुंदर लखरांव की याद दिलाते हैं। वारामूला से श्रीनगर जाते हुए सड़क पर दोनों ओर जैसी सुंदर वृक्षों की श्रेणी पड़ती है उसका स्मरण हो रहा था। चलते हुए रास्ते में एक बुढ़िया मेम कुँजड़िन हरे चने, जिसका नाम वह चेंची बताती थी, डंठल समेत बेच रही थी। एक अँटिया का दाम उसने दस दस सेंटिम के दो पैसे दिखाकर माँगा। हमने वैसा ही एक पैसा उसके हाथ पर रखा और वह संतुष्ट हो गई। चने बहुत बड़े और मीठे थे।

लेटरोनो चर्च के आगे भी मैदान में बहुत ऊँचे खंभे पर त्रिशूल बना है और खंभे भर जंतुओं की तसवीरों द्वारा लेख, जो अक्षरों का काम देता है, बना है जिसे ईजिप्शियन हारोग्लिफिक्स कहते हैं। चर्च के भीतर जाने पर बहुत ही सुंदर विशाल भवन दीख पड़ा। उसकी छतों में सुनहली मूर्तियों-सहित विचित्र चित्रकारी हैं। रंगीन संगमर्मर के बड़े ऊँचे, बहुत मोटे खंभे हैं। दीवारों और छतों में बाइबिल की कथाओं का चित्रों में वर्णन अंकित है। बीच बीच में मंदिर और उसके नीचे ईसाई संतों की जो समाधियाँ हैं उनकी ईसाई लोग परिक्रमा करते थे और घुटनों के बल खड़े होकर वंदना करते थे। बुढ़ियाँ माला जपती थीं। एक मंदिर खोलकर उसके संरक्षक पादरी ने हमें भीतर ले जाकर दिखाया। पच्चीकारी में बहुत अपूर्व बारीक काम की तसवीरें दिखाई पड़ीं। ३८ सीढ़ी नीचे उतरकर एक प्राचीन पोप की समाधि देखी। इसमें रंगीन संगमर्मर की दीवार ऐसी चमकती थी कि दूसरी ओर का प्रतिबिंब आइने की तरह

झलक रहा था। इतने ही में पादरियों की एक बड़ी मंडली के आगे आगे दो आदमी आसा लिए और मोमबत्ती जलाए आए। वे कुछ गाते थे। पोप की सुनहली कुर्सी पर प्रधान पुजारी जी आ बैठे और अपनी बोली में सब प्रार्थना करने और गाने लगे। गाने और बाजे की ध्वनि भारतीय राग से मिलती-जुलती जान पड़ती थी। लौटती बेर रास्ते में एक मेम दौड़कर भीतर से कई आदमियों को बुला लाई और हम लोगों को दिखलाने लगी। हम भी खड़े हो गए और उनके आ जाने पर हमने कहा "इंडियानो टूरिस्टो" यानी हम लोग भारतीय यात्री हैं। तब वे हँसकर चले गए। आज रात को दीपावली की तरह चारों ओर बड़ी रोशनी हुई, घर घर उत्सव मनाया जा रहा था।

सेंट पीटर्स गिरजा

सेंट पीटर्स चर्च यहाँ का सबसे बड़ा गिरजाघर है। उसे देखने के लिये लाखों आदमियों की भीड़ एकत्र हुई। हम लोग भी पैदल रोशनी देखते गए। रास्ते में हाईकोर्ट का विशाल भवन, पार्लमेंट भवन और मसोलिनी का कार्य्यालय देखा। सेंटपीटर्स कथीडरल बहुत ही बड़ा है, इसके आगे बहुत विस्तृत मैदान है। इसके भीतर, बाहर, ऊपर खूब दीपावली हो रही थी। हजारों बत्तियाँ बिजली, बिनौले तथा मोमबत्तियों की जल रही थीं। रात को भीतर तो हम लोग नहीं जाने पाए। रोशनी देखी। दूकानों पर, बाहर पटरी पर बहु-संख्यक लोगों को काफी चाय शराब पीते देखा। दूसरे दिन सबेरे ९ बजे इस कथीडरल को फिर जाकर देखा। बाहर के मैदान में बहुत ऊँचे खंभे पर त्रिशूल है, और दोनों बगल रात-दिन बड़े बड़े फौवारे चला करते हैं। बाहर फौवारों के बाद दोनों ओर

अर्धचंद्राकार विशाल खंभों के बड़े बड़े दालान हैं। भीतर का भवन इतना बड़ा है कि कम से कम पचास हजार आदमी बैठकर साथ वंदना कर सकते हैं। लाल, सफेद, तथा अन्य रंगों के बड़े मोटे मोटे बहुत ऊँचे ऊँचे अनेक खंभे लगे हैं। बड़े ऊँचे सुनहरे शमादानों में मोटी मोटी मोमबत्तियाँ जला करती हैं। लाल, पाले, आसमानी, हरे, सफेद अनेक रंगों की संगमर्मर की दीवारें, खंभे तथा चबूतरे बने हैं, जिन पर इस धर्म के संतों की मूर्तियाँ विराजमान हैं। काले पत्थर की एक संटपीटर की मूर्ति है जिसके पैर को लोग छूकर सिर में लगाते और चूमते हैं, हाथ बाँधकर प्रार्थना और झुककर सलाम-वंदना-स्तुति इत्यादि करते हैं। बहुत से छोटे छोटे मंदिर दीवारों की कच्छों में बने हैं। सेंट मेरी की गोद में प्रभु ईसा मसीह का मृत शरीर बहुत अच्छी तरह दिखलाया है—कई लकड़ी की कोठरियाँ बनी हैं जहाँ लोग जाकर अपने पापों को स्वीकार करते हैं और पादरी बाबा उन्हें क्षमा-दान देते हैं।

इस गिरजाघर के बाहर बहुत गहरी नहरें हैं और पीछे की ओर इसी विशाल हाते में पोप जी का किला है। इनकी फौज इत्यादि एक और ही रंग-रूप की वर्दीवाली है। कुछ जमाना हुए पोप की संपत्ति यहाँ के सम्राट् ने अपहरण कर ली थी, किंतु थोड़े दिनों से उन्हें बहुत कुछ लौटा दिया गया है। पोप जी बड़े संपत्ति-शाली हैं। इनके धन को कोई कूत नहीं सकता।

वैटिकन संग्रहालय

इसके बाद वैटिकन गैलरी है जो पोप की निजी संपत्ति है। यह स्थान ९ बजे से २ बजे तक उनकी आज्ञा से साधारण लोगों

के लिये खुला रहता है। रविवार को बंद रहता है, महीने के आखिरी शनिवार को बिना शुल्क और बाकी सब दिन प्रति व्यक्ति ५ लीरा का टिकट लेकर देखा जा सकता है। प्रदर्शक (गाइड) फीस लेकर घूम घूमकर बताते हैं। जल्दी में ५० लीरा पर गाइड ठीक किया गया, मोल-भाव होता तो कम पर भी राजी हो जाता। करीब तीन घंटे तक दौड़ दौड़कर हम लोगों ने इसे देखा, थक गए, प्यास भी लगी। यह अद्भुत संग्रहालय क्लिमेंट १४ वें पोप ने सन् १७६९ में स्थापित किया था और उसके बाद इसमें बराबर वृद्धि होती रही है। देश-देश के राजाओं, सम्राटों ने जो अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ पोपों के भेंट की थीं, इस संग्रहालय में सुरक्षित हैं। इसकी चीजों को देखकर दर्शक चकित हो जाता है। अरबों रुपए व्यय करने पर भी ऐसी ऐसी वस्तुओं का संग्रह करना असंभव है। यह विशाल भवन सुंदर बना है। इसके बड़े लम्बे लंबे दालान और कमरों में वस्तुएँ संगृहीत हैं। एक स्थान पर बहुमूल्य पत्थर के अनेक बर्तन हैं जिनके पत्थरों तथा बनावट की सराहना लेख द्वारा असंभव है। इसके पास ही अनेक विशाल मूर्तियों का संग्रह है। बिनाई में भी विचित्र मूर्तियाँ बनी हैं जिनमें ऐतिहासिक दृश्य दिखलाए गए हैं। कहा जाता है कि पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में प्रसिद्ध चित्रकार राफेल ने इन्हें अंकित किया था। इनके कई चित्र तो बाइबिल में वर्णित कथाओं को प्रदर्शित करते हैं। एक बहुत बड़े कमरे में दीवारों पर देश देश के भौगोलिक चित्र प्राचीन काल के बनाए हुए हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि किस समय कौन देश किस अवस्था में था और उसमें कैसे परिवर्तन हुआ। यह कहा जाता है कि यह भवन ग्यारहवीं शताब्दी का बना हुआ है। उसके बाद मरम्मत इत्यादि होती गई। सफेद

संगमर्मर का एक रथ है जिसमें पहिया, घोड़े इत्यादि सब उसी पत्थर के हैं। एक शिवलिंग मय जलधरी के भी पाया गया। रत्न और सुवर्ण के अनेक बहुमूल्य आभूषण एक कमरे में खूब सजे हैं। प्राचीन काल के बहुत से मुर्दे (ममीज) मय बक्सों के संगृहीत हैं। काले चित्तीदार पत्थर की बड़ी बड़ी सुंदर मूर्तियाँ हैं। हाथी-दाँत तथा पत्थरों की भी अच्छी मूर्तियाँ हैं।

इस संग्रहालय में बड़ा भारी पुस्तकालय भी है। कहा जाता है कि इसमें बीस लाख पुस्तकें हैं। बाइबिल की हजारों जिल्दें हैं। बहुत बड़ी बड़ी पुस्तकें चाँदी, सोने इत्यादि के जवाहिरों से जड़ी जिल्दों में हैं जो पोपों को लोगों ने समय समय पर भेंट की थीं। बहुत बड़ी तथा बहुत ही छोटी प्रतियाँ भी प्रदर्शित हैं। प्रसिद्ध चित्रकार राफेल और माइकेल एंजेलो की कारीगरी अनेक रूप में दिखाई देती हैं। हीब्रू, लाटिन तथा अनेक अन्य भाषाओं में भी प्रतियाँ हैं जो सात आठ सौ वर्ष की बताई जाती हैं। यहाँ से पोप जो की सुंदर वाटिका भी दीख पड़ती है, जहाँ वे विराजते हैं। दो संगमर्मर की पच्चीकारी के कामवाले सुंदर टेबुल बड़ी कारीगरी के साथ बने हुए हैं। पाँच सौ वर्ष की पुरानी छापे की कल और ४०० वर्ष का पुराना जहाजी नकशा है। पोप की मूर्ति शीशे में बड़ी अच्छी रँगी हुई है। पोप का निजी छोटा एक गिरजाघर है जो बहुत ऊँचा है। फर्श में पच्चीकारी का विचित्र काम है। दीवारों और छतों में माइकेल एंजेलो के बनाए नमूने के चित्र बड़े ही मनोहर हैं। यहाँ लोग बैठे इन सुंदर चित्रों की नकल किया और बेचा करते हैं। छतों की रंगसाजी ऐसी है मानो पत्थर में नक्काशी की हुई है और एक जगह ऐसा अच्छा रंग दिखाया है कि पत्थर चिहरा हुआ मालूम पड़ता है। इस स्थान की रँगाई

माइकेल ऐंजेलो ने स्वयं चार वर्ष निरंतर काम करके की थी। सारे भवन में कहा जाता है कि एक हजार कमरे हैं जिसके एक छोटे भाग में पोप स्वयं रहते हैं, बाकी सब ऐसे ही सुसज्जित हैं। इन सब पर पोप का ही पूरा अधिकार है, कमरे जब चाहें बंद कर दें। बड़े बड़े बक्स सुंदर चित्तीदार पत्थरों की मूर्तियों-सहित प्रदर्शित हैं। एक कमरे में अनेक जानवरों की पत्थर की बहुत अच्छी अच्छी आकृतियाँ रखी हैं। अलाबास्टर पत्थर का एक बहुत बड़ा नहाने का कुण्ड है। जो जो मूर्त्तियाँ हैं प्राय: सब में पुट्ठों की मरोड़, नसों की नलियाँ और चर्म की सिकुड़न ऐसी अच्छी तरह से बनाने-वाले ने दिखलाई है मानो असली ही है। एक मूर्ति अति उत्तम है, उसके पुट्ठे बहुत अच्छे बने हैं। कहा जाता है कि अंधे हो जाने पर माइकेल ऐंजेलो उस मूर्त्ति पर हाथ फेर फेरकर उसकी बना-वट से बड़े ही प्रसन्न होते और उसकी मुक्त कंठ से सराहना करते थे। प्रसिद्ध चित्रकार राफेल और माइकेल ऐंजेलो के बनाए अनेक कारीगरी के नमूने हैं। विलक्षण प्रतिभाशाली राफेल की अवस्था जब उनका देहांत हुआ ३७ वर्ष की थी। इस संग्रहालय में यूरोप और खासकर इटली के बड़े बड़े इतिहास-प्रसिद्ध विद्वान्, कवि, दार्श-निक, चित्रकार, योद्धा तथा वीरों की मूर्तियाँ हैं और देवी देवताओं की भी हैं जिनके वर्णन की पुस्तकें छपी हैं और बिकती हैं। इसके बाहर एक दूसरे भवन में केवल तसवीरों की पिक्चर-गैलेरी है जिसका प्रवेश-शुल्क अलग दो लीरा है। इसमें भी बड़े मनोहर ऐतिहासिक चित्र हैं। यह सभी संग्रहालय पोप जी की निजी सम्पत्ति है। टामस कुक ने एक बहुत छोटी पुस्तक (साइट्स आव रोम) रोम पर अँगरेजी में यात्रियों के सुविधार्थ ढाई सौ पन्नों की छपवाई है। उसमें भी इसका कुछ वर्णन है, किन्तु

जो वस्तुएँ संगृहीत हैं—"अवसि देखिए, देखन योगू" हैं। उनका वर्णन असंभव है।

एक बड़ा हाईस्कूल देखा, जिसमें युवा बालक और बालिकाएँ साथ ही पढ़ते थे। हम लोगों को भारतीय भेस में देख वे उत्सुक होकर सहायता देने के लिये और हमारा हाल जानने के लिये छटपटा जाते थे, फिर टूटी-फूटी अँगरेजीवाला कोई खोजकर बुला लाते और उसके द्वारा कुछ बातचीत होती। वहाँ के एक अध्यापक ने हमें स्कूल तथा अपने दर्जे को पढ़ाते दिखाया। वहाँ से एक अध्यापक हमें विश्वविद्यालय लिवा गए जिसे वहाँ "यूनिवर्सिटा" कहते हैं—"यूनिवर्स" (विश्व) शब्द में अँगरेजों ने 'सिटी' लगाकर और इटालीवालों ने "सिटा" लगाकर 'विद्यालय' का अर्थ व्यंजित कर लिया है—इसे भी घूमकर देखा। सभी विभाग देखे। "सिनेटहाउस" देखा। बाहर से तो मामूली घर जान पड़ता था, भीतर जाकर विशाल भवन पाया। वहाँ के लोगों ने घूम घूमकर हमें सब कार्यालय तथा सिनेट-हाल दिखाया। यह बहुत ही सुंदर है, बैठने की मखमली गद्दीदार कुर्सियाँ चारों ओर सीढ़ी की तरह लगी हैं। करीब ५०० सदस्यों तथा उतने ही दर्शकों के बैठने के लिये स्थान बना है। राजकुल के लोगों के लिये भी अलग स्थान नियत हैं।

पैंथियन

इस सिनेट हाउस और 'युनिवर्सिटा' के नगीच यह एक बहुत ही प्राचीन स्थान प्राय: दो हजार वर्ष का है। बाहर से तो पुरानी ईंटों का मामूली ऊँचा घर जान पड़ता है, भीतर से भी बहुत बड़ा तो नहीं है किन्तु यह एक बहुत प्राचीन और प्रसिद्ध स्थान

ऐतिहासिक घटनाओं से पूर्ण बहुत ऊँचा गोलाकार है। इसके बीच के ऊपरी भाग में छत प्राय: तीस फुट व्यास की खुली हुई है जिसके द्वारा प्रकाश तथा वायु भीतर अच्छी तरह पहुँचती है। यह पहले मूर्ति-पूजकों का प्राचीन स्थान था। फिर जब ईसाइयों के अधिकार में आ गया तब से इसमें प्राचीन ऐतिहासिक व्यक्तियों की लाशें गाड़ी जाने लगीं। इसे मार्कस ग्रिपा ने, जो आगस्टस के दामाद थे, ईसा से २७ वर्ष पहले स्थापित किया था। उस समय की इसकी दीवारें अब तक वही हैं, यद्यपि मरम्मत इत्यादि कई बार हुई है और इस समय भी मरम्मत में हाथ लगा है। इसमें राफेल तथा अन्य प्रसिद्ध कला के आचार्यों की समाधियाँ हैं। दूसरे विक्टर इमैनुअल की, जो इटली के संयुक्त होने पर पहले राजा हुए, तथा हर्बर्ट प्रथम की कब्रें इसी में हैं। यहाँ एक रजिस्टर है जिसमें और दर्शकों की तरह हमसे भी नाम पता लिखाया गया। रोम की ऋतु साधारणत: आज कल गर्म ही है।

रोम से जिनोवा

ता० ४ जून को सबेरे की गाड़ी से हम लोग यहाँ से चल पड़े। यहाँ की रेलगाड़ी अच्छी है। तीसरे दर्जे में भी सभी प्रकार का आराम है। हाँ, बैठने की बेंच लकड़ी की किंतु ढालुवाँ आराम की है। रास्ते में मनोहर दृश्य, खेती, साहबों को हल चलाते, बैलगाड़ी हाँकते, जंगलों से लकड़ा काटकर लाते, अंगूर तथा अन्य फलों और अनाज, तरकारी की खेती करते देखते और रास्ते में स्टेशनों पर अनाजी सादी डबल रोटी मक्खन फल इत्यादि लेकर खाते चले। दो बजे के करीब रेलगाड़ी से ही "पीजा" का झुका धरहरा देखा। इसे देखने के लिये लोग प्राय: यहाँ उतरकर जाते हैं। यह एक अच्छा शहर भी है, किंतु यह तो इसी झुके धरहरे

के लिये विख्यात है जो रेलगाड़ी से ही दीख पड़ा। यहाँ की पत्थर की कारीगरी बहुत प्रसिद्ध है। कई मंजिल की यह एक ऊँची गोल इमारत है, इसमें हर मंजिल में खिड़कियाँ बनी हैं। सफेद रंग और बनावट अच्छी, सुघड़ है। कहा जाता है कि इंजिनियर ने इसे बनाना आरंभ किया तो नींव एक ओर अधिक धँस गई और यह टेढ़ा हो गया। तब उसी को उसने बुद्धिमानी से और ऊँचा बना दिया और यह वैसे ही झुका हुआ खड़ा है। पुस्तकों में यह एक बड़ा आश्चर्यजनक भवन प्रसिद्ध है। इसके झुकाव को देखकर काशी के सुंदर टेढ़े संधिया घाट का स्मरण हो आया। कदाचित् उसका टेढ़ापन उसके सौंदर्य को कम कर रहा है, इसी कारण वह किसी गिनती में नहीं है।

रेलगाड़ी जब यहाँ के स्टेशन से खुली तब चलते हुए दाहिने हाथ की ओर यह देख पड़ा था। इसे देखने मात्र के लिये हमारे साथियों की प्रबल इच्छा यहाँ उतरने की थी, किंतु रेल से देखने पर वे संतुष्ट हो गए। रास्ते में कई बार बदली उठी, कुछ वर्षा भी होती गई, जिससे यात्रा में कष्ट कम हुआ और दृश्यों में सुंदरता बढ़ती गई। स्वीजरलैंड का जिनोवा, जो प्रसिद्ध जिनीवा झील के किनारे है और जहाँ प्राय: यूरोपियन देशों की अन्तर-राष्ट्रीय सभाएँ होती हैं, दूर है। हम जहाँ आज संध्या समय उतरनेवाले हैं वह "जिनोवा" इटली में है, यह समुद्र-तट पर बंदरगाह भी है।

जिनोवा

जिनोवा पहुँचने से पहले कई मील इधर ही से जब जिनोवा की खाड़ी आरंभ हुई, समुद्र के किनारे से रेलगाड़ी चलने लगी। पहाड़ों के नीचे से सुरंगों में तथा समुद्र पर पुलों पर होकर गाड़ी जाती थी। सामने कितने ही स्थानों पर पहाड़ों के ऊपर हरे

वृत्त तथा भवन समुद्र के किनारे विचित्र छटा दिखाते थे। बदली होने के कारण इस छटा के घटा से सम्मिलित हो जाने पर दृश्य बहुत मनोहर हो गया था। जिनोवा के बड़े स्टेशन पर ६। बजे हम लोग उतरे। वहाँ श्री कैपिटानों-ई-प्रेसेंडा, वाजपेयीजी के मित्र, मिले। उनके साथ हम लोग मोटर में शहर गए। यह इटली के प्रसिद्ध नगरों में है और बहुत उन्नति कर रहा है। यह भी पहाड़ियों पर बसा है। मोटरें, ट्रामगाड़ियाँ खूब दौड़ा करती हैं। मकान भी बहुत अच्छे साफ पक्के बने हैं। दो बड़े बड़े टनलों (सुरंगों) को पार कर हम लोग शहर में गए।

नगर-भ्रमण

हम "फ्रांस होटल" में जा ठहरे। ४५ लीरा, ६।) रुपए, भोजन-सहित प्रति व्यक्ति ठहरने का दाम तै हुआ। शाकाहारी निरामिष भोजन का प्रबंध हुआ। होटल के पास ही बहुत बड़े बाजार में घूमे। मोल-भाव बहुत होता था। दूना तिगुना मोल कई चीजों में पाया गया। भोजन करने के बाद शहर घूमने गए। शराब और काफी की दुकानें बहुत थीं और हर दूकान पर शराब पीनेवालों की भीड़ थी। दूसरे दिन सबेरे ही तैयार होकर कैपिटानों महाशय के साथ घूमने चले। इनकी अवस्था ४५ वर्ष की है, पर इसी महीने के अंत में अब इनका विवाह होनेवाला है। ये बड़े हृष्ट-पुष्ट, लाल चेहरे के युवक हैं और पलटन में इनका दरजा कैप्टन का है। पहले यहाँ के प्राचीन गिरजाघर में गए, जो बहुत पवित्र माना जाता है। बहुत से ईसाई लोग पूजा कर रहे थे। उसके बाद इतिहास-प्रसिद्ध अमरीका का पता लगानेवाले दृढ़-प्रतिज्ञ साहसी 'कोलंबस' का घर देखा। इसकी छतें तो गिर गई हैं किंतु खंभे और वाटिका हैं। यह छोटा सा घर

ऐतिहासिक है। हम लोग समुद्र-तट पर, जहाँ जहाज खड़े होते हैं, गए। यहाँ आठ आठ दस दस बारह बारह मंजिल के मकान ऊँचे और भूमि के भीतर, नीचे दो-तीन मंजिल बने देखे। समुद्र का जल यहाँ से विचित्र दीख पड़ा, सफेद, काला, हरा; कदाचित् गहराई के कम बेश से या सूर्य की किरणों के कारण, इसका कारण कोई बता न सका। यहाँ पलटनवालों को तोप चलाने की शिक्षा दी जा रही थी। शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। साथ ही यहाँ जहाज के कैबिन आदि में सेवा करना सिखलाने का विभाग है। यहां के स्कूलों में विद्यार्थी बहुत शोर मचाते हैं। अध्यापकों के उपस्थित रहने पर भी शांत नहीं होते। बलीला संस्था के कार्यालय में गए। वहाँ उन लोगों की शिक्षा, कार्य-कुशलता इत्यादि देखी। यहाँ मालूम हुआ कि इटली में बलीला लोगों की संख्या १५०००००० के करीब है, यद्यपि इसको स्थापित हुए अभी ७ ही वर्ष हुए हैं। बलीला संस्था का जन्म २४ अक्तूबर १९२२ को हुआ था। फिर हम लोग एक स्कूल में गए जो गरीब विद्यार्थियों के लिये निःशुल्क है। इस स्कूल में स्वागत इत्यादि हुआ। यहाँ लड़कियों को सिलाई, कपड़ा धोना, इस्त्री, कलफ करना, भोजन बनाना, आरंभिक चिकित्सा फूल-बूटी-चित्रकारी इत्यादि की भी शिक्षा दी जाती है। दर्जों में यह सब काम हम लोगों को दिखाया गया। लड़कों के दर्जों में भी पढ़ाई देखी। बहुत से ऐसे लड़के यहाँ पढ़ते पाए गए जो संध्या समय होटलों में नौकरी करके जीविका चलाते हैं, जिनके घर पर नौकरी-चाकरी से निर्वाह किया जाता है। गरीबों के लिये ऐसी अनेक पाठशालाएँ यहाँ हैं। पढ़ने लिखने तथा काम करने योग्य बनाने की आठ वर्ष की शिक्षा है। यहाँ के प्रधान शिक्षाध्यक्ष जी भी आए थे। उनसे मालूम हुआ कि इस

शहर में ५५६०० पढ़नेवाले विद्यार्थी २५०० अध्यापक तथा ८६ अध्यापिकाएँ हैं। सभी स्कूल निःशुल्क हैं जिन पर छः करोड़ रुपया यहाँ की म्युनिसिपैलिटी हर साल व्यय करती है। शिक्षा अनिवार्य है।

मिलान

यहाँ से ३ बजे तीसरे पहर की गाड़ी में चलकर ६ बजे मिलान, जिसे यहाँ 'मिलानो' कहते हैं, पहुँचे। यह एक बहुत बड़ा व्यापारिक नगर इटली के उत्तरी भाग में है। स्टेशन से कांटिनेंटल होटल का मालिक मोटरों में हम लोगों को असबाब-सहित लिवा गया। यह होटल बहुत बड़ा है। सातों आदमियों के एक दिन ठहरने और खाने का १००० लीरा (करीब डेढ़ सौ रुपया) माँगता था। मोल-भाव करने पर साढ़े छः सौ लीरा (नब्बे रुपया) तय हुआ। स्नान भोजन किया। भोजन में सब सामान, अनाजो मय तरकारी, फल और दूध-मक्खन के, अच्छा मिला। कमरे भी ठहरने के बहुत अच्छे, स्वच्छ, सुसज्जित थे। बिजली के पिंजड़े चढ़ने उतरने के लिये थे। हम छठी मंजिल पर ठहराए गए। होटल में कई सौ यात्री ठहरे थे। प्रबंध बड़े ऊँचे दरजे का और ठाट-बाट का था। हम लोगों के कमरे का खिदमतगार एक गौरांग साहब था। हमारे साथियों में से एक ने परोसनेवाले गौरांग को "थैंक यू सर" (महाशय धन्यवाद) कह दिया जिस पर दूसरे पूर्व-परिचित साथी ने उन्हें डाँट बताई कि थैंक यू (धन्यवाद) कहना तो ठीक है मगर "सर" (महोदय) का शब्द नहीं प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत में अँगरेजों को "सर" कहने की आदत पड़ गई है, इसलिये वैसे ही गौरांग देखकर मुँह से "सर" का शब्द निकल गया। तब उन्हें समझाया गया कि किस दरजे के लोग "सर" और कौन "सर" कहा जाता है, चाहे

रंग गोरा हो या कैसा ही हो। उनकी धारणा थी कि गौरांग सभी "सर" हैं, चाहे वे कोई भी काम करते हों।

साढ़े आठ बजे संध्या होते ही हम लोग मोटर ले घूमने निकले और दो तीन घंटे खूब घूमे। सबसे सुंदर स्थान यहाँ का चर्च (गिरजाघर) देख पड़ा। उसके बाहरी भाग भी मूर्तियों, चित्र-कारियों से अच्छे बने हैं और उसके सामने एक बड़ा भारी मैदान पत्थरों और गचों से बना हुआ है। दूसरी ओर घास की बनी क्यारियों में रंग-रंग के फूल लगे हैं। दूर से जान पड़ता है कि ये गलीचे हैं। इनके बीच बड़े बड़े सुंदर मार्बल के रंग बिरंग चित्ती-वाले पत्थरों के खंभे लगे हैं जिन पर बिजली की रोशनी छटा को बढ़ाती है। कालीन सरीखे घासों के बाद तीनों तरफ दूकानें जगमगाती हैं। वहाँ शराब पीनेवालों की भीड़ खूब जमा रहती है। समय अधिक न होने से इस शहर को भी हम लोग अच्छी तरह न देख सके। भाषा की कठिनाई भी कम बाधक न थी।

इटली से लंदन

ता० ६ जून को ४ बजे ही उठ स्नान-जलपान कर होटलवाले की मोटर में सवार हो ६॥ बजे स्टेशन पहुँच गए। वहाँ से ६॥ बजे पेरिस जानेवाली ट्रेन चली। इसमें भी यात्रियों के लिये प्रबंध अच्छा है। तीसरे दरजे में भी हर गाड़ी के अंत में शौच, जल इत्यादि का प्रबंध है। हाथ धोने की जगह साबुन और मुँह-हाथ पोंछने के लिये एक भंडरिया में बहुत सा कागज का रूमाल रखा था। ट्रेन बहुत लंबी थी। एक सिरे से दूसरे तक भीतर ही भीतर जाने का रास्ता बना था। भोजन की गाड़ी भी इसमें जुड़ी थी। निरामिष भोजन की आज्ञा देकर हम लोगों ने भी वहाँ जा भोजन किया। एक बार का २) २॥) लगा। दूध अच्छा मिला। चलते समय

बदली हो आई। रास्ते भर मनोहर दृश्य देखते चले। जैसे पोर्ट-सय्यद से चलकर जहाज के भूमध्यसागर में प्रवेश करते ही ठंढक बढ़ गई थी और जाड़े का कपड़ा निकालकर पहनना पड़ा था उसी तरह यहाँ गाड़ी चलने पर एक घंटे के भीतर ही ठंढक बढ़ी और गाड़ी में ही बक्स से निकालकर गर्म कपड़ा पहनना पड़ा। कंबल निकाल बिछाकर नर्म और गर्म बैठने का स्थान सबने बनाया। सवा आठ बजे से ही बड़े मनोहर दृश्य दीख पड़ने लगे। लेसा, स्ट्रेसा, नवीनो स्टेशनों के पास बड़े अच्छे दृश्य थे। एक कागज की सुंदर रिकाबी में, जिसके किनारे लहरियादार थे, चीनी छिड़ककर स्ट्राबेरी पाव डेढ़ पाव रखी बिकती थी। एक रिकाबी ३—३॥ लीरा (सात आठ आने) पर ली गई। बहुत स्वादिष्ठ थी। एक झील के किनारे से हम लोगों की गाड़ी चली। इटली के उत्तरी भाग का लेक-डिस्ट्रिक्ट (झील का जिला) प्रसिद्ध है जहाँ छुट्टियों में मनोहर दृश्य देखने और मनबहलाव करने के लिये यूरोप के दूर दूर देशों से लोग आया करते हैं। उन झीलों में एक बड़ी झील मैगियोरी ४० मील लंबी है। इसके बीच में कई टापू ऐसे हैं जिनमें बड़े सुंदर भवन और वाटिकाएँ बनी हैं। इस झील के किनारे किनारे हरे भरे पहाड़ हैं जिन पर भवनों और वृक्षों की शोभा देखने ही योग्य है। कहीं जल के किनारे किनारे सुंदर मकान और सड़कें बनी हैं, जिनके एक या दोनों ओर सघन वृक्ष और जल का सान्निध्य शोभा को अपूर्व ही बना देते हैं। यह सब दृश्य गाड़ी से देखते चले। सोचते थे कि समय होता और भाषा की कठिनाई न होती तो उतरकर वहाँ कुछ दिन ठहरते और इस अनुपम स्थान को अच्छी तरह देखते। इटली की सरहद को हम लोग प्रायः पार कर रहे हैं। इसेल इटली की हद वाली जगह है। यहाँ स्टेशन पर इधर के झीलवाले स्थानों के

मनोहर दृश्यों की तसवीरें (फोटो तथा रंगीन) पोस्टकार्ड पर बिकती हैं जिन्हें हम लोगों ने ३० सेंट यानी तीन पैसे को खरीदा। इकट्ठा लेने से सस्ती भी मिलती हैं।

यहाँ से गाड़ी खुलते ही दूसरे राज्य (स्वीजरलैंड के) कर्मचारी गाड़ी में पासपोर्ट तथा असबाब की जाँच करने लगे और टिकटों की भी जाँच होने लगी। यहाँ से बिजली का इंजिन लगा। रास्ते में सिंपलन सुरंग से होकर गाड़ी चली। यह सुरंग साढ़े बारह मील लंबी है। इसके भीतर गाड़ी चलती रहती है और जाँच-परताल होती रहती है जिसमें ईसल या बृग में, जो स्वीजरलैंड का पहला स्टेशन है, देर तक गाड़ी को खड़ा न रहना पड़े। बिजली का इंजिन इसलिये लगाया जाता है कि धुएँ से या देर तक सुरंग में रहने के कारण यात्रियों को कष्ट न होने पावे। इसी मनोहारिणी झील मैगियोरी के उत्तरी भाग पर लोकार्नो शहर दस हजार जन-संख्या का है जहाँ लोग सैर करने जाते हैं और इस बड़ी झील में स्टीमर पर घूमते हैं। यह नगर यद्यपि स्वीजरलैंड की हद के भीतर है तथापि सब बातों में इटली के ही रंग-ढंग का है।

स्वीजरलैंड

यहाँ से आगे बढ़ने पर स्वीजरलैंड के प्रसिद्ध आल्प्स पहाड़ों की श्रेणियाँ मिलीं। दोनों ओर पहाड़ों के मनोहर दृश्य और हरे-भरे वृक्षों, नदियों तथा खेतों का वर्णन असंभव है। इन पहाड़ों पर प्राय: बरफ जमी थी। बदली होने से दृश्य और भी सुहावना हो गया था। इन दृश्यों को देखने के लिये संसार के दूर दूर देशों से लोग बहुत द्रव्य व्यय कर और नाना प्रकार के कष्ट उठाकर आया करते हैं। यहाँ की छटा देखकर काश्मीर की घाटियाँ याद आती हैं, किंतु कई बातों में दोनों असमान हैं। इसकी उपमा

किसी दूसरे स्थान के दृश्य से देना अन्याय है। "गगनं गगनाकारम्" या "रामरावणयोर्युद्धं, रामरावणयोरिव" ही कहना पड़ता है। काश्मीर की शोभा काश्मीर की सी और आल्प्स की शोभा आल्प्स की सी अद्वितीय है। कई जगह झरनों की मधुर झरझराहट केदारेश्वर पर्वत के झरनों की याद दिलाती थी। रास्ते में कई जगह ऊँची खड़ी चढ़ाइयों पर बिजली की रेलगाड़ियों में लोग सैर करने जाते दीख पड़े जो ब्रिगब्रिग और विसवीग स्टेशनों के पास थे। नहरें खूब चल रही थीं। सरो की तरह के वृक्षों की अपूर्व छटा थी। लिउकलिउश स्टेशन के आसपासवाले पहाड़ों पर बरफ खूब जमी दीख पड़ी। कहीं कहीं सुरंग बीच बीच में पड़कर पटाक्षेप का काम देती थी। यह मनोहर दृश्य सीरा-साइडर्स तक जारी रहा। चलती गाड़ी में मेम झाड़ू देकर गाड़ियों को साफ करती जाती थी। दिन में चलने के कारण स्वीजरलैंड का देश सौभाग्य-वश हम लोग गाड़ी से ही देखते चले। थोड़ी ही दूर बाद स्वीजरलैंड की प्रसिद्ध झील जिनोवा के उत्तरी किनारे से होकर गाड़ी चली। प्रसिद्ध नगर जिनोवा, जहाँ अनेक राज्यों के प्रतिनिधि प्रायः सभा किया करते हैं, इसी झील के दक्षिणी सिरे पर है। हम लोग इसके उत्तरी भाग को अपने बाँएँ हाथ की ओर देखते चले। इसका दृश्य भी बहुत मनोहर है। इसके किनारे दो प्रधान स्टेशन, आरंभ में मान्त्रो और अंत में लुसान, पड़े। इन दोनों शहरों में, जो बड़े बड़े हैं, बहुत बड़े बड़े भवन, होटल इत्यादि दीख पड़े। इन शहरों में भी गर्मी में अमरीका और अँगरेजी तथा अन्य यूरोपियन देशों से बहुत यात्री आते और इस प्रसिद्ध झील की सैर करते हैं। हम लोगों को जिनोवा जुलाई के अंतिम सप्ताह में आना होगा इस कारण यात्रा-सूची में अभी यहाँ

उतरना नहीं रखा गया। लुसान से आगे चलकर बहुत ही हरे-भरे मैदान दीख पड़े जहाँ खेती खूब अच्छी होती है। यहाँ मधु-मक्खियों को पालकर लोग शहद निकालते और उसका व्यापार करते हैं। मक्खियों को बिना कष्ट दिए, बिना मारे और बिना उनका छत्ता उजाड़े ही शहद धीरे से निकाल लेते हैं।

इसके बाद ही वेलार्वी स्टेशन पड़ा जहाँ से फ्रांस का राज्य आरंभ होता है। यहाँ भी वैसे ही पासपोर्ट तथा सामान की जाँच हुई, किंतु बहुत साधारण, क्योंकि हम लोगों के पास लंदन का सीधा टिकट होने से ये लोग अच्छी तरह जान गए कि हम लोग रास्ते में इनके देश में संभवत: नहीं उतरेंगे या ठहरेंगे और सामान के बक्स भी छोटे छोटे होने से निजी आवश्यक वस्तुओं का ही होना इनके जी में बैठ गया। पूछते अवश्य थे कि तंबाकू या कोई ऐसी चीज तो नहीं है। एक यात्री ने, जो भयंकर सिगरेटबाज थे और एक दिन में प्राय: एक सौ सिगरेट द्वारा अग्निहोत्र किया करते थे, संग-साथ के कारण शपथ ली और सिगरेट या सिगार पीना यूरोप में आकर छोड़ दिया, यद्यपि उन्हें इस संकल्प से कई दिनों तक बहुत कष्ट होता रहा। दूसरों को पीते देख कदाचित् उनका मन भी चल जाया करता था। उन्हें दिखाकर जाँच करने-वाले से हँसी में मैंने कहा कि सिगरेट तो हम लोगों के पास नहीं है किंतु सिगरेट से पगी हुई एक भारी वस्तु है। उसने भी हँसी का उत्तर हँसी द्वारा देते हुए कहा—ये चुंगी की सूची में नहीं आते। खेद है कि उनका यह प्रण निभ न सका।

फ्रांस देश में भी दिन रहते दृश्य अच्छे दीख पड़े। संध्या का भोजन उसी भोजनवाली गाड़ी में किया गया। रोटी, मक्खन, दूध और कई प्रकार की अच्छी तरकारियाँ मिलीं। अँधेरा हो

चला इस कारण इधर के दृश्य अच्छी तरह नहीं देख सके। रात को दस बजे के बाद गाड़ी पेरिस पहुँची। वहाँ हम लोगों को उतरना पड़ा। एक ही साहब कुली हम लोगों का सब असबाब एक ठेले पर लादकर बाहर खींच ले गया। दो मोटरों में असबाब रख, सवार हो हम लोग (नार्ड) उत्तरी स्टेशन पर एक दम चले गए। यहाँ से लंदन के लिये गाड़ी जाती है। रात को यहाँ शहर के भीतर से चलते हुए बड़ी चहल-पहल दीख पड़ी। बिजली के प्रकाश द्वारा यहाँवालों ने रात को दिन बना रखा है, भोग-विलास के लिये तो पेरिस संसार में प्रसिद्ध है। यहाँ रात को हम लोग ठहरते तो सबेरे ही चलने की धुन होती और रात में होटल इत्यादि खोजना पड़ता इसलिये रात्रि का कष्ट उठाना हम लोगों ने पसंद न किया और नार्डवाली गाड़ी में सवार हो गए। सौभाग्य से भीड़ नहीं थी और हम लोग बेंचों पर सोए सोए चले।

सबेरे पाँच बजे ही फ्रांस के छोटे छोटे गाँवों का नमूना देखते कैले पहुँचे। कैले स्टेशन पर उस समय कोई मोटर नहीं था। गाड़ी में शौच आदि नहीं जा सके थे, इसलिये इस स्टेशन पर शौच-स्थान की खोज की। इँगलैंड यहाँ से थोड़ी दूर चैनल पार ही है, किंतु अँगरेजी भाषा बोलने या समझनेवाला यहाँ भी कोई नहीं था। इस भाषा की यहाँ भी बड़ी दुर्गति देख पड़ी। होटलों या दूकानों पर भले ही लोग अँगरेजी बोलते हों किंतु स्टेशन पर कुली या स्टेशन के कर्मचारी तक अँगरेजी नहीं समझ सकते थे। किसी तरह उस कुली से 'ईश्वरीय ज्ञान' द्वारा सान बुझाकर पूछा तब वह एक जगह ले गया जहाँ केबिनेट का बोर्ड लगा था। वहाँ शौच-मंजन आदि किया तब से मोटर आई और कैले घाट गए। यहाँ बहुत ठंढी हवा बड़े झोंके के साथ चल रही थी। हम लोग

एक वेटिंग रूम में ठहरे और होटलवाले से अनाजी भोजन और दूध ले खाना खाया। यहाँ से १ बजे स्टीमर पर चले। पासपोर्ट की जाँच हुई। पहले सुना था कि इँगलिश चैनल में लहरें बहुत उठती हैं, और समुद्री बीमारी होती है, किंतु हम लोग सकुशल इसे भी पारकर तीन बजे डोवर पहुँचे।

लंदन में

ता० ७ जून शुक्रवार को ५ बजे तीसरे पहर हम लोग लंदन के विक्टोरिया स्टेशन पर पहुँचे। पहले ही से इस अतिविख्यात विशाल नगर की शोभा दृष्टिगोचर होने लगी। स्टेशन पर उतरे तो उसके विस्तार से चकित होने लगे। एक बूढ़े साहब कुली तथा रेल के गार्ड ने हम लोगों का असबाब एक ही ठेले में रखा और कुली ने खींचकर उसे बाहर पहुँचा दिया। कुलियों को यहाँ पोर्टर (बोझ ले जानेवाला) कहते हैं। मोटरों में बैठकर हम लोग अपने नियत स्थान की ओर रास्ते का दृश्य देखते हुए चले। गावर स्ट्रीट नंबर ११२ में वाई० एम० सी० ए० (यंग मेंस क्रिश्चियन असोसियेशन) की एक शाखा है जिसका नाम यहाँ इंडियन स्टूडेंट्स यूनियन (भारतीय छात्र-संघ) है। इसमें स्थान पर्याप्त न होने के कारण यहाँ वालों के प्रबंध से हम लोग अन्यत्र ठहराए गए, किंतु भोजन प्रायः यहीं किया करते थे। कई पूर्व-परिचित सज्जन यहाँ मिले। खाने का सामान यहाँ भारतीय ढंग का मिलता है, जैसे मक्खन, दूध, दाल, भात, रोटी, तरकारी, पापड़ी, खिचड़ी इत्यादि। दूध इँगलैंड भर में बहुत ही अच्छा और सस्ता तथा बहुतायत से प्राप्य है। डेढ़ पाव आध सेर के गिलास का दाम होटलों में तीन चार आना लगता है। ठहरने के स्थान पर अपना सामान रख निश्चित हो वहाँ जा भोजन किया। यहाँ हर वस्तु का अलग अलग दाम निश्चित रहता

है। छपी सूची मूल्य-सहित टेबुल पर रखी रहती है। उसमें से छाँटकर जो जी चाहे मँगाइए। परोसनेवाली मेमें, जो कई हैं, ला देती हैं और अंत में बिल बनाकर दे देती हैं। यहाँ एक बेर के भोजन का ।॥) से डेढ़ दो रुपए तक लगता था। यदि बहुत दाम की चीजें लीजिए तो अधिक भी बैठ जा सकता है।

यहाँ के होटल प्राय: ऐसे हैं जहाँ रहने और सबेरे के जलपान का प्रबंध रहता है। दोपहर और संध्या का भोजन चाहे आप जहाँ करें। हम लोग जहाँ ठहरे थे उसका भाड़ा ३१॥ शिलिंग साप्ताहिक तय हुआ था अर्थात् ३=) प्रतिदिन प्रति व्यक्ति। इसमें कमरा मय पलँग, बिस्तरा, ओढ़ना, तौलिया, पानी, रोशनी, सफाई के अलावा सबेरे ८॥ बजे का भोजन अर्थात् मक्खन, रोटी, मुरब्बा, दूध दो दो प्याला शामिल था। जो लेना चाहते उन्हें चाय, अंडा भी मिल जाता। जलपान क्या एक प्रकार से पूरा पेट-भराव हो जाता था। इसके बाद जहाँ चाहे घूमते, खाते पीते रहिए और जब चाहे आकर रहिए सोइए। नहाने के लिये गैस से पानी गरम किया जाता था। बड़े होटलों में इसका दाम अलग नहीं लगता, किंतु यहाँ गैस का दाम देना पड़ता था। इसका भी विचित्र प्रबंध है। एक बक्स लगा है, जिसमें आप ताँबे की पेनी जो एक आने मूल्य की होती है डाल दीजिए, फिर गैस की टोंटी में दियासलाई से गैस जलाकर काम लीजिए। यह हमें बताया गया कि तीन पेनी डालने से नहाने के लिये सोने की लंबाई और डुबान की गहराई का जो टब रखा है उसमें गरम पानी भर जायगा। हमने इसमें किफायत की। यहाँ लोग प्राय: दूसरे-तीसरे दिन या साप्ताहिक स्नान किया करते हैं किंतु हमारा यथासंभव नित्य स्नान किए बिना जी नहीं मानता था, इस-लिये एक पेनी से कुछ गुनगुना पानी, आधे से अधिक टब भर

तैयार करके खूब स्नान कर लिया करते थे। हाँ, लोटा साथ में नहीं लाए थे न यहाँ कोई उस चाल का बर्तन ही मिला जिससे नहाने का भारतीय ढंग चालू रहे, इसलिये जहाज ही पर से घोड़-स्नान करने लगे अर्थात् तौलिए से पानी सिर पर खूब डाल डाल और सारे शरीर को रगड़ रगड़कर स्नान करते थे। श्री रामनारायण मिश्र अपने साथ एक चाँदी की लुटिया लाए थे। शरीर से लगनेवाला वस्त्र अर्थात् भीतरी पैजामा, रूमाल, लँगोट और गंजी नित्य छाँट डालते थे, और प्रायः साबुन लगा लिया करते थे। इससे इन कपड़ों को धुलाने की आवश्यकता नहीं होती थी। होटलवाले तौलिया और पलँग की चादर बदल दिया करते हैं। अच्छे से अच्छे बहुत खर्चवाले और बहुत कम खर्चवाले, हर प्रकार के होटल यहाँ हजारों हैं। यात्री को चाहिए कि ठहरने का कोई स्थान यहाँ आने से पहले निश्चित कर ले, नहीं तो बहुत कष्ट होने का डर है।

लंदन शहर ७०० वर्ग मील में बसा है और इसकी आबादी अस्सी लाख के करीब है। बाहर के निकटस्थ स्थानों को सम्मिलित करके यह संख्या एक करोड़ तक पहुँच जाती है। संसार में यह सबसे बड़ा शहर है। इसमें प्रवेश करते ही मनुष्य की वही अवस्था हो जाती है जैसी किसी छोटी मछली की महासागर में छोड़ देने से हो सकती है। यहाँ बरसात की ऋतु नहीं होती, गरमी और जाड़ा ये ही दो ऋतुएँ होती हैं। अप्रैल से अक्तूबर तक गरमी और बाकी जाड़ा। यहाँ की गरमी काशी के जाड़े के समान है, जाड़े में तो यहाँ बरफ गिरती है, कितने ही जीवधारियों के प्राण निकल जाते हैं, बादल और पानी तो यहाँ बारहों महीने दो-दो चार-चार दिन पर आ जाते हैं। आजकल जून मास में भी जब ठंढी हवा चलती है, बादल उठ आते हैं, पानी बरसने लगता

है, और जाड़ा बढ़ जाता है। इसलिये यहाँ छाता, बरसाती कोट, जाड़े का पूरा कपड़ा मोटा-पतला साथ में रहना आवश्यक है, यहाँ सभी चीजें बहुत महँगी मिलती हैं, इसलिये आवश्यक सामान जहाँ तक हो साथ लाना अच्छा है। मैं छाता साथ नहीं लाया, आवश्यकता पड़ने पर एक मित्र से पूछा तो उन्होंने कहा कि मामूली छाता १५ या २० शिलिंग यानी १० या १२ रुपए का मिल जायगा।

एक मामूली ओवरकोट ४५ शिलिंग (३० रुपए) का हमने लिया। पानी बरसने पर हमारे जूतों में पानी चला आया, मोजा भीग गया। काशी में ही एक मित्र ने कहा था कि लंदन पहुँचते ही एक जोड़ा उमदा जूता खरीद लेना। तलवों को गरम रखना और ठंढक से बचाना जरूरी है, इससे २५ शिलिंग (१७ रुपए) का एक नया जोड़ा जूता खरीदा। पुराने की मरम्मत कराना, जिसमें पानी भीतर न आ जाय, उचित समझा। इसके लिये एक साहब मोची की दूकान पर, जहाँ मरम्मती काम होता था, गए। उन्होंने कहा जब तक इस जोड़े को ले न आइएगा हम कुछ बात नहीं कर सकते, व्यर्थ समय नष्ट होगा, अर्थात् इसे छोड़ जाने को तैयार होकर आइए। फिर दूसरी दूकान पर नया जूता खरीदने के बाद पुराने को डब्बे में रख कागज में लपेटकर ले गए। एक लड़की थी उसने ६॥ शिलिंग (४॥ रुपए) नए तल्ले लगाने और एँड़ी ठीक करने का माँगा और दो तीन दिन में बना दिया। वह मोची की लड़की रूप रँग पहिरावा शकल सूरत बोल चाल में किसी कलक्टर कमिश्नर की लड़की से कम नहीं थी। हाँ, उसके यहाँ कोई चपरासी खानसामा अरदली नहीं था पर काम चमड़े का होता था।

ठहरने के खयाल से लंदन शहर से बाहर एकांत में रहना और आवश्यकतानुसार शहर में आकर देख-भालकर वापस जाना

अच्छा होता है, और स्वास्थ्य के लिये भी लाभदायक हो सकता है। लंदन से थोड़ी दूर बाहर सिडनहम हिल एक सुंदर पहाड़ी स्थान है। वहाँ इंटरनेशनल गेस्ट-हाउस [अंतर्राष्ट्रीय अतिथि-गृह] उसी नाम के स्टेशन के पास है जहाँ भारतवासियों के लिये हर प्रकार का सुन्दर प्रबंध है। वहाँ पहले से ठीक कर लिया जाय तो बहुत अच्छा है। पत्र-व्यवहार करके भारत से ही इसका प्रबंध हो सकता है। वहाँ से लंदन आने-जाने का साप्ताहिक, मासिक या दैनिक रेल का टिकट लेने से व्यय कम पड़ेगा। बीमार होने से यहाँ बहुत ही कठिनाई होती है, व्यय बहुत पड़ता है। करीब दो तीन सौ भारतीय डाक्टर यहाँ अपना व्यवसाय करते हैं। महल्ले-महल्ले के डाक्टर बँधे हैं। फीस बहुत है। सेवा-शुश्रूषा की कठिनाई होती है, इसलिये बीमारों को यहाँ "नर्सिंग होम" (परिचर्या-गृह) में भेज दिया जाता है। इस वास्ते इस प्रकार सँभलकर रहना चाहिए कि बीमार होने की नौबत न आने पावे। बाजारों को छोड़कर जिस सड़क पर निकल जाइए, सब मकान बंद रहते हैं। जिसे खोलवाना हो बटन दबाइए, भीतर घंटी बजेगी तब कोई आकर किवाड़ खोलेगा। आप बात करके चले आइए फिर दरवाजा बंद। किवाड़ में चिट्ठी डालने का छेद बना रहता है। डाकिया उसी में चिट्ठी डाल देता है। दूध बेचनेवाले गाड़ियों पर बोतल में बंद दूध लाकर जितने की बंधी बँधी है उतनी बोतलें दरवाजे पर रखकर और खाली बोतल जो पहले से बाहर रखी हुई होती है, उठाकर ले जाते हैं। रोटी-साग-भाजी इत्यादि भी इसी प्रकार गाड़ियों पर लाकर लोग घर घर देते चले जाते हैं। यहाँ किसी को भी इतना अवकाश नहीं कि ठहरकर समय नष्ट करे। सब लोग दौड़ते भागते रहते हैं। यहाँ लोग प्राय: १२ या १ बजे

अब लंदन की भिन्न भिन्न बातों के संबंध में अलग अलग कुछ लिखा जाता है।

सवारियाँ

माल असबाब मोटर लारियों और घोड़ा-गाड़ियों पर जाता-आता है। यहाँ कोई छोटा या हीन, दुर्बल घोड़ा नहीं दीख पड़ता। जो घोड़े दिखाई पड़े वे बड़े और हाथी के से डोल-डौल के। उनके टाप बड़े भारी होते हैं। मुर्दा ले जाने की बहुत सुंदर गाड़ी में काले घोड़े ही जोते जाते हैं। कुछ बड़े धनी लोग सवार होने की गाड़ियाँ भी रखते हैं जिनके साहेब कोचवान ऊँची छतरीदार टोपी पहनते हैं। मोटरों की भरमार है। जहाँ चाहिए मोटरें (टैक्सी) मिलती हैं और मीटरों द्वारा भाड़ा लगता है। साथ में माल ले जाइए तो उसका भाड़ा फी अदद अलग देना पड़ता है। जो अपनी मोटर नहीं रखते वे टैक्सियों में जाते हैं। भाड़ा भी बहुत हो जाता है। उसके बाद मोटर-बसें हैं। दोमंजिला लंबी हजारों मोटरें कंपनियों की चला करती हैं। जेनरल मोटर-बस कंपनी की कई हजार बसें हैं। रास्तों के नंबर हैं। उन रास्तों पर ख़ास नंबरों की गाड़ियाँ चला करती हैं। शहर के नकशे मुफ़्त मिलते हैं। उनके देखने से आप समझ सकते हैं कि कहाँ जाने के लिये किस नंबर की बस में आपको जाना चाहिए। उसी पर दूरी के हिसाब से एक दो तीन पेंस, या जितना हो, भाड़ा लगता है। उसके बाद साधारण जनता के लिये ट्राम गाड़ियाँ और रेल गाड़ियाँ भी शहर में चलती हैं।

अचंभे की सवारी सुरंग रेल (अंडर-ग्राउंड या ट्यूब रेलवे) है, जो एक दो और कहीं तीन तीन मंजिल जमीन के नीचे सुरंगों में बिजली के जोर से दौड़ा करती है। उसके स्टेशनों या प्लेटफार्म

पर जाने के लिये सीढ़ियों से या बिजली के बड़े पिंजड़ों (लिफ्ट) द्वारा नीचे जाते या ऊपर आते हैं और कई जगह तो दौड़ती हुई सीढ़ियाँ हैं, जो हमेशा ऊपर नीचे चढ़ा उतरा करती हैं। आप उस पर खड़े हो जाइए। ऊपर या नीचे, जिधर को वह जाती होगी, आप पहुँच जायँगे। उसकी चाल के अलावा आप पैर भी चलावें तो और भी जल्द चढ़ या उतर जायँगे। यह ट्यूब रेलवे भीतर भीतर बहुत तेज दौड़ा करती है। दो दो मिनट पर गाड़ियाँ आया-जाया करती हैं। यात्रियों की, विशेषकर कार्यालयों के समय, बड़ी भीड़ हुआ करती है; किंतु बड़े आश्चर्य और प्रशंसा की बात है कि कोई किसी को न तो जरा भी धक्का देता है, न बोलचाल होती है। सब, एक के पीछे दूसरा, पंक्ति बाँधकर अपनी पारी से चलते जाते हैं। किसी की कोई परवाह नहीं करता। टिकटों के लेने का विचित्र हाल है। जैसे भारतवर्ष के बड़े स्टेशनों पर कल में एकन्नी डालने से प्लेटफार्म टिकट मिल जाता है, वैसे ही यहाँ टिकटों की कलें बहुत रखी रहती हैं, जिनके द्वारा किसी कल में एक, किसी में दो, किसी में तीन, पेनी डालने से उतने दाम के टिकट नियत स्टेशनों के निकल आते हैं। इस तरह लोग हजारों की संख्या में आते, टिकट लेते और यात्रा किया करते हैं। इन सुरंगों में बिजली द्वारा दिन की तरह पूरा प्रकाश रहता और खूब शुद्ध वायु का संचालन हुआ करता है। नीचे ही दूकानें, शौच आदि के स्वच्छ स्थान इत्यादि भी बने हैं।

यहाँ शहरों का तो कहना ही क्या है, बाहर के प्रायः छोटे छोटे स्टेशनों पर भी कलों द्वारा चुरुट, दियासलाई, मिठाई (चाकलेट), रूमाल इत्यादि बिकते हैं। शहर में फल, मिठाई, खिलौने इत्यादि भी नियत दाम पर ऐसी ही कलों द्वारा बिका

करते हैं, जिनमें आदमी के रहने या बोलने-चालने की कुछ भी आवश्यकता नहीं होती। ऐसे ही डाक का टिकट भी कई जगह बिकता है। ट्यूब रेलवे के नकशे भी मुफ्त में इसके हर स्टेशन पर मिलते हैं, जिनको देखकर आप तुरंत पता लगा सकते हैं कि कहाँ से कैसे कहाँ जाना होगा, कहाँ बदलना होगा। गाड़ियों के संबंध में हर जगह सब स्पष्ट लिखा रहता है, जिससे किसी से पूछने की कोई बात नहीं रहती। गाड़ी धड़ाके से पहुँची, बिजली के द्वारा सब गाड़ियों के दरवाजे खुले, उतरनेवाले पारी से पंक्ति बाँधकर उतरे और चढ़नेवाले वैसे ही चढ़े। दरवाजे बंद, गाड़ी चली। सब एक मिनट में हो जाता है। कहीं किसी से धक्का लगा तो वह तुरंत कह बैठता है—आई एम सारी (मुझे खेद है)। गाड़ियों में थूकना जुर्म है। एक बार थूकने का दो पौंड (सत्ताइस रुपए) और बाद को पाँच पाँच पौंड (साढ़े सड़सठ रुपए) जुर्माना होता है।

साधारण सड़कों पर प्राय: रुकावट होने से देर लगती है, किंतु सुरंग रेल-द्वारा बहुत शीघ्र थोड़े भाड़े में आना जाना होता है। असबाब ढोनेवाली कंपनियाँ बहुत हैं। उन्हें सहेज देने से उनके आदमी गाड़ी लेकर आते हैं और आपके स्थान से असबाब लेकर जहाँ के लिये आप आज्ञा दिए रहते हैं वहाँ पहुँचा देते हैं। इसी में सुविधा और खर्च की कमी होती है।

सिक्का

भारतवासी, जिन्होंने हिंदी में भी अंकगणित पढ़ा है, जानते हैं कि यहाँ का द्रव्य पौंड शिलिंग और तौल पौंड टन इत्यादि होता है। यहाँ का साधारण सिक्का चाँदी का शिलिंग है, जिसका बारहवाँ भाग पेंस है। छ: पेंस और तीन पेंस की अठन्नी, चवन्नी, शिलिंग का आधा और चौथा भाग, तथा दो शिलिंग का फ्लारेन

श्रौर ढाई शिलिंग का अर्ध क्राउन बहुत चलता है। इसके ऊपर दस शिलिंग, एक पौंड, पाँच पौंड, दस पौंड इत्यादि के नोट होते हैं, जो पतले श्रौर बहुत ही चिमड़े कागज के होते हैं। यूरोप में प्राय: सभी छोटे छोटे राज्य अपना अपना सिक्का अलग रखते हैं, उनके देश के भीतर उन्हीं के सिक्कों द्वारा क्रय-विक्रय, लेन-देन, होता है। टामस कुक कंपनी के हर देश के कार्यालय में उस देश के तथा दूसरे देशों के सिक्कों के अदल-बदल सुगमता से हो जाते हैं, किंतु कई बड़े बड़े बंकों की अपेक्षा ये अधिक बट्टा काट लेते हैं। इसलिये जिस देश में जाना हो उस देश का सिक्का थोड़ा साथ में ले लेने से स्टेशन पर उतरते ही काम में हाथ नहीं रुकता। नहीं तो काम रुकने के अतिरिक्त वहाँ भँजाने में बट्टा अधिक लगता है।

धार्मिक संस्थाएँ

यहाँ का प्रधान धर्म ईसाई है श्रौर अधिक लोग प्रांटेस्टेंट हैं, जो बिना मूर्ति के गिरजाघरों में आराधना करना मानते हैं, श्रौर बाइ-बिल पुस्तक का पाठ करते हैं। यह रविवार को होता है। अधिकतर लोग तो कामकाजी ही दीख पड़े। गिरजाघरों के जानेवाले कम प्रतीत होते हैं। रविवार को भी, जो देवाराधन का दिन समझा जाता है, शराब की दूकानों को गुलजार किए रहते हैं श्रौर शहर से बाहर विहार के स्थानों में, जिनकी संख्या यहाँ बहुत है, चित्त-विनोद तथा मनफेर के लिये चले जाते हैं। जो इतना व्यय नहीं कर सकते वे शहर में ही बड़े बड़े उद्यानों श्रौर सार्वजनिक विहारों में, जिनकी संख्या भी बहुत है, रविवार को जाते श्रौर वहाँ घासों पर पड़े विश्राम करते, खाते-पीते, गुलछर्रे उड़ाते, रात तक रहते हैं। इन उद्यानों में हाइड पार्क बहुत प्रसिद्ध है। इसका कुछ

हाल अन्यत्र लिखा जायगा। यहाँ के बड़े धर्मालयों में सेंट पाल्स कथीड्रल है, जैसे रोम का बड़ा सेंट पीटर्स है। किंतु दोनों में कोई भी समता नहीं है। यह प्रोटेस्टेंट चर्च है, वह रोमन कैथलिक। इसमें एक ऊँचा धरहरा है, जिसके ऊपर जाने का शुल्क लगता है। वहाँ से शहर का दृश्य अच्छा दीख पड़ता है। और भी छोटे बड़े बहुत से चर्च हैं, किंतु इस प्रकार की धार्मिकता का भाव यहाँ बहुत कम लोगों में प्रतीत होता है।

सेंट पाल्स कथीड्रल

जंतु-संग्रहालय

यहाँ का "जू" यानी जंतु-संग्रहालय संसार में सबसे बड़ा बताया जाता है—रीजेंट्स पार्क में कैमडेन टौन स्टेशन के पास ही यह है। बस या सुरंग-रेल दोनों से जा सकते हैं। इसमें जाने का समय, रविवार के सिवा, नित्य सबेरे ९ बजे से सूर्यास्त तक है। नित्य एक शिलिंग का, और सोमवार को आधा, टिकट लगता है। इसकी पुस्तक भी एक एक शिलिंग की नकशे-सहित वहाँ मिलती है। यह बहुत विस्तृत हाते के भीतर अलग अलग विभागों में है। इसके भीतर भोजनालय तथा उपाहार-गृह कई स्थानों पर हैं।

आकाश, भूमि तथा जल के सभी जीव-जंतु इसमें संगृहीत हैं। बाघ, चीता, हाथी, ऊँट और भालू से लेकर चुहिया, मछली, सर्प, बिच्छू, मोर, कोयल, तोते इत्यादि तक हैं। ये अनेक देशों से इकट्ठे किए गए हैं। भिन्न भिन्न देशों के एक प्रकार के जानवर एक श्रेणी में रखे गए हैं, जिसमें तारतम्य सुगमता से मालूम हो जाय। चौपायों में लंबी गर्दन के जिराफ, धारीदार जेबरा, बड़े आकार, बड़े थूथुन और लाल-लाल आँखवाले भयानक हिपोपोटेमस, गैंडा, हाथी, अफ्रीका का दाँत और सींगवाला सूअर, अफ्रीका के जंगली कुत्ते और बिल्लियाँ, अनेक प्रकार के उलूक, चमगीदड़, मुर्गे, मोर, कोकिल, बत्तक कई सौ प्रकार के सुग्गे, अफ्रीका के काले हुँड़ार, स्यार, घूँइस, बैक्ट्रिया और सीरिया के बिना बालोंवाले दो-दो कुब्बेधारी सफेद ऊँट। उत्तरी ध्रुव के भूरे बालोंवाले विचित्र भालू, अनगिनत ढंग के बंदर जिनमें एक मनुष्य से बड़ी समानता रखनेवाला चिंपैंजी, सर्प तथा अन्य पन्नग (पेट के बल चलनेवाले) छिपकिली, गिरगिट, बिसखोपड़ा, नाना प्रकार के विषैले जंतु, कई रंगोंवाले, जल का व्याघ्र, जो काला, छोटे कानों और कुछ गलमुच्छों का, चार पैरोंवाला और दुमदार जल में रहने-वाला भयानक जंतु होता है तथा व्याघ्र की तरह चिग्घाड़ मारता है, इत्यादि देखने योग्य हैं। इसी हाते में एक अलग विभाग जल-जंतुओं का है जिसका छः पेंस टिकट लगता है। यह संग्रह नेपल्सवाले से कहीं बड़ा, अद्भुत और स्वच्छ है। इसके जंतु भी बड़े ही आश्चर्य-जनक हैं। मूँगे के कई रंग के वृत्त, सफेद हरे कछुए, घोड़मुहें लंबे सर्प या मछलियाँ, लाल केकड़े तथा अनेक निराले आकार-प्रकार के मत्स्य देखने योग्य हैं। कहीं न ठहर जल्दी जल्दी चलकर दो घंटों में हम लोगों ने इसे देखा।

मैडम तुसाड़ का प्रदर्शन

यह एक विचित्र, देखने योग्य, अपने ढंग का निराला. प्रदर्शन—मालबर्न रोड के उत्तर, बेकर स्ट्रीट स्टेशन मेट्रोपालिटन रेलवे के पास—बड़े भवन में है। यहाँ मोम की बनी हूबहू मनुष्य की तरह मूर्तियाँ हैं। इसका प्रवेश-शुल्क सवा शिलिंग है। इसकी पुस्तिका ८० पेजवाली छः पेंस को मिलती है। इसके तीन मंजिले विस्तृत हालों में श्रेणीबद्ध मूर्तियाँ पाँच सौ के करीब सुसज्जित लगाई हुई हैं। सीढ़ी पर चढ़ते ही एक सिपाही वर्दी और हथियार लिए ऐसा जान पड़ता है कि जीवधारी है और सभी मूर्तियों को देखकर असली होने का धोखा हो जाता है। राज-परिवार, राजवंश के कुटुंबी जन, पार्लमेंट के मुख्य नेता (गत तथा वर्त्तमान), एक सुंदरी महिला की, बिजली द्वारा साँस लेती, सोती हुई मूर्ति, लड़ाई के प्रसिद्ध योद्धा, दूसरे देशों के नरेश तथा अमेरिका के प्रमुख राष्ट्रपतिगण, प्रसिद्ध पोप और धार्मिक संस्थाओं के नेता, दूसरे देशों के प्रधान नेता-गण, प्रसिद्ध विद्वान्, दार्शनिक, कवि, वैज्ञानिक, ग्रंथ-रचयिता, गत राजा लोग जो इँगलैंड की राजगद्दी पर होते आए, आरंभ में विलियम से लेकर इस समय तक के, सभी मूर्ति रूप में सचमुच, केवल प्राण-रहित, प्रदर्शित हैं। तीसरी मंजिल में बड़ी बड़ी प्रसिद्ध ऐतिहासिक मार-काट, धर-पकड़, खून-खराबी, हार-जीत दिखाई गई है। इसी मंजिल के दूसरे विभाग में लड़कों के विनोद की मूर्तियाँ तथा जानवरों की प्रतिमाएँ बहुत अच्छी तरह से प्रदर्शित की गई हैं। नीचे के हाल में कार्यालय है। उसके नीचे, भूगर्भ में, एक भयानक भवन है जिसका छः पेंस प्रवेश-शुल्क अलग लगता है। इसमें ऐतिहासिक ठगी, बटमारी, कैद, फाँसी इत्यादि के व्यक्ति तथा उनके वास्तविक दृश्य बड़ी विचित्रता से दिखलाए गए हैं। सभी

मूर्तियों के शरीर के असली रंग, पहिरावा, चमड़े की झुर्री, मसा इत्यादि हूबहू बनाए गए हैं। एक ओर जापानी उद्यान भी छोटा सा बना हुआ है।

अजायबघर

यह बहुत विशाल भवन इसी नाम की सड़क पर, इसी नामवाले सुरंग-रेल के स्टेशन के पास, है। रसेल स्क्वायर तथा होवार्न स्टेशन से भी नजदीक है। मोटरबस जो, आक्सफोर्ड स्ट्रीट को जाती है, उससे भी निकट ही है। यह अजायबघर दस बजे से संध्या के ४, ५ या ६ बजे तक, ऋतु और दिन के अनुसार, खुला रहता है। रविवार को २ बजे से खुलता है। प्रवेश-शुल्क कुछ नहीं लगता। इसके संबंध की बड़ी बड़ी पुस्तकें कई जिल्दों में विभाग के अनुसार वहीं बिका करती हैं। बयालीस विभागों की अलग अलग छोटी-बड़ी पुस्तकें हैं जिनमें से कई के कई भाग भी हैं। फाटक से जाते ही बड़ी अच्छी हरी घास के गलीचे (लान) हैं। ऊँचे ऊँचे भारी मोटे खंभों की यह विशाल इमारत है। इसके बाहर दोनों ओर पीने का स्वच्छ जल टोंटी द्वारा बहा करता है और चाँदी का कटोरा सिकड़ी में बँधा रखा रहता है। उसमें रोपकर या चिल्लू से जल पी सकते हैं। हर विभाग में एक एक अध्ययन-भवन है, जहाँ विद्यार्थीगण विशेष आज्ञा प्राप्तकर जाते और एकांत में अध्ययन करते हैं। एकदम सन्नाटा रहता है। हर विभाग में अनेक पहरेवाले रहते हैं। बाहरी भवन देखने से कुछ भी पता नहीं चल सकता कि इसके भीतर कितना सामान है। हम लोगों ने केवल दिग्दर्शन मात्र दो दिन में किया। इसका सबसे बड़ा विभाग, पुस्तकालय तथा वाचनालय, बीच में है। पुस्तकों की सूची, एक हजार जिल्दों में गोलाकार अलमारियों में, इसके अध्यक्ष को घेरे हुए है। पुस्तकों की संख्या

(१९२५ में) चालीस लाख से अधिक है। पुस्तकों के सब भाग तथा एक एक रचयिता की कई पुस्तकें हैं। एक लाख के करीब पुस्तकें वार्षिक आ रही हैं। विस्तार का अनुमान यों हो सकता है कि अलमारियों में पुस्तकें जितनी रखी हैं उनकी श्रेणी की लम्बाई सन् १९२५ ई० में अड़तालिस मील थी जो अब करीब पचपन मील के होगी। ऐसा बड़ा पुस्तकालय संसार में दूसरा नहीं है। इसके बीच में एक बेर जाकर खड़े होने ही जान पड़ता है कि विद्या के महासागर में प्रवेश कर गए। इतना विस्तार रहते हुए भी प्रबंध ऐसा अच्छा है कि जो पुस्तक चाहिए दस मिनट के भीतर पढ़ने-वाले के सामने लाकर रख दी जायगी। इसके गोल हाल और गोलाकार छत की बनावट रोम के सेंट पीटर्स के गुंबज से बड़ी है। इसके भीतर प्राकृतिक प्रकाश भी बहुत अच्छा रहता है। यहाँ राजकीय दान से भी बहुत पुस्तकों की अट्टालिकाएँ मिली हैं। इसके ऊपर बहुत विभाग हैं। देश देश की प्राचीन वस्तुओं का संग्रह अपूर्व है। बाएँ हाथ की ओर ऊपर चढ़ते ही भारत-सचिव का अर्पण किया हुआ अमरावती का बौद्ध स्तूप, बुद्धदेव की बड़ी मूर्ति, तथा उस समय का बहुत ऐतिहासिक सामान है। इसका मुख्य स्थान तो काशी के सारनाथ का संग्रहालय होना चाहिए, न जाने क्यों यह यहाँ लाया गया है। इसमें मूर्तियों का संग्रह भी विचित्र है। शेषशायी विष्णु भगवान्, श्रीकृष्ण, शिवालय, हनुमान् जी, गणेश जी, रथयात्रा के रथ का नमूना तथा अनेक देवी देवताओं का संग्रह है। मिस्र तथा बेबिलन, जिनका लेख-बद्ध इतिहास चार हजार वर्षों तक का प्राप्त है तथा अन्य देशों के संबंध की वस्तुओं का संग्रह श्रेणी-बद्ध और अद्भुत है। मिस्र के पुराने मुर्दों का साढ़े छः हजार वर्ष तक का पुराना संग्रह यहाँ मौजूद है।

चित्रों का संग्रह भी अद्भुत है। पुरानी घड़ी सन् १५८९ की, साढ़े तीन सौ वर्ष की पुरानी है। मिट्टी, चीनी मिट्टी, काँच, धातु के बर्तन, अनेक आभूषण, मणि, मुक्ता आदि हैं। प्राचीन काल की लड़ाई का सामान, चेहरा, बख्तर इत्यादि का भी हर देश का विचित्र संग्रह है।

नैशनल गैलरी तथा नैशनल पोर्ट्रेट (चित्र गैलरी) ट्राफलगर स्क्वायर के पास है। इसमें चित्रों का संग्रह है। ट्राफलगर स्क्वायर भी एक देखने

ट्राफलगर स्क्वायर, नैशनल गैलरी, नेल्सन का मीनार

योग्य स्थान है। यह एक बड़ा मैदान है, जिसके बीच नेल्सन की मूर्ति ऊँचे खंभे पर लड़ाई के जीतने के स्मारक में बनी हुई है। उसके पास पानी के बड़े कुंड तथा फव्वारे हैं। चार बड़े व्याघ्रों की मूर्तियाँ बनी हैं। यहाँ कबूतर दाने चुगा करते हैं। इसके पास ही दोनों गैलरियाँ

हैं। ये दोनों बिना शुल्क के सोमवार, मंगल, बुध और शनिवार को १० बजे से ६ बजे तक तथा रविवार को २ बजे से ६ बजे तक खुली रहती हैं। इनमें हजारों तसवीरें, मूर्तियाँ, चित्र—राजाओं, योद्धाओं, वीर पुरुषों, राजनीतिज्ञों, धार्मिक नेताओं, विद्वानों, कवियों, वैज्ञानिकों, न्यायाधीशों, दार्शनिकों, चित्रकारों के—भिन्न भिन्न समय के बनाए हुए संगृहीत है। कला के आचार्य इन्हें भली भाँति देख और विवेचन कर सकते हैं। ईसा मसीह की कई अवस्थाओं की, कई चित्रकारों द्वारा बनाई गई, कई रंग की बहुत ही अच्छी अच्छी तसवीरें हैं। इनके वर्णन की पुस्तिकाएँ भी इनके द्वार में जाते ही बिकती मिलती हैं, जो छोटे बड़े कई भागों में कई दामों की होती हैं। इनमें इनका पूरा हाल दिया हुआ होता है।

लंदन की प्रिवी कौंसिल

भारतवर्ष की हाईकोर्टों के फैसलों की अपील यहाँ प्रिवी कौंसिल में सुनी जाती हैं। यह संस्था यहाँ डौनिंग स्ट्रीट में नं० ११ के भवन में है। यह १० बजे खुलता है और १०॥ बजे से इजलास आरंभ होता है। उपनिवेशों ने अपनी हाईकोर्टों की अपील यहाँ होने से रोक लिया। इस समय इसमें दो विभाग हैं। एक कनाडा का और दूसरा भारतवर्ष का। पहले विभाग में पाँच जज बैठे थे। कमरा कुछ बड़ा था और बारिस्टरों की संख्या कुछ अधिक थी। दूसरे में चार जज बैठे थे। कमरा छोटा था और बारिस्टर भी थोड़े ही थे। दोनों ही में जजों और सबके बैठने की जगह एक ही सतह में कुर्सियों पर है। जजों के पीछे एक ओर एक सहायक बैठे थे और एक पोर्टर, जिसे लाइब्रेरियन कहिए या जो कहिए, था। वह पुस्तकें निकालकर देता और पीने का पानी

लाकर हाजिर रहता था। बहस करनेवाले बारिस्टर मध्यवर्ती जज के सामने बीच में एक ऊँचे टेबुल के पास खड़े होकर बहस करते हैं। अपीलांट के पक्षवाले जजों की दाहिनी ओर तथा विपक्षी बाईं ओर बैठते हैं। उन्हीं की तरफ सालिसिटर भी अपनी अपनी श्रेणी में बैठते और अपने पक्षवाले बारिस्टर को पूछने पर बातें बताते हैं। बारिस्टर लोग सिर पर एक बाबरीदार सफेद कुलही की तरह टोपी पहनते हैं, जिसमें दो दो चुटियाँ भी पीछे लटका करती हैं, कदाचित् जूट, सन या किसी दूसरी चीज की बनी होती हैं। गले में सफेद बैंड बाँध लेते हैं। यहाँ के बारिस्टरों और सालिसिटरों की फीस बहुत ज्यादा होती है। परमात्मा न करे किसी को इस अदालत की शरण लेनी पड़े। एक मुकदमे का हाल एक मित्र कह रहे थे कि बहस होते समय एक पक्षवाला जीतने का पूरा भरोसा रखता था। उसके बारिस्टर ने भी पूरा भरोसा दे दिया था। दुर्भाग्य-वश छुट्टी हो गई। कई महीने बाद जो फैसला सुनाया गया तो उसके विरुद्ध! भारत को भी चाहिए कि अपना सर्वोच्च न्यायालय भारत में ही स्थापित करके उपनिवेशों की तरह यहाँ से इस विषय में छुटकारा ले और बहुत से धन का अपव्यय बचाकर उसे अपने देश में ही यथासंभव रखने का प्रयत्न करे।

इंस ऑव कोर्ट्स

यहाँ कानूनी पढ़ाई के कालेजों के अतिरिक्त चार ऐसी बड़ी संस्थाएँ हैं जहाँ और विषयों की तरह कानून भी पढ़ाया जाता है। ये हैं—लिंकंस इन, ग्रेज इन, मिडिल टेंपुल और इनर टेंपुल। इनमें प्राचीन समय में केवल कई बार भोज में सम्मिलित होने और भोज की नियत संख्या पूरी हो जाने पर

बारिस्टरी का प्रमाण-पत्र दे दिया जाता था पर अब वह बात जाती रही। अब परीक्षा होती है और पास होने पर ही प्रमाण-पत्र दिया जाता है; किंतु भोज में सम्मिलित होना और शुल्क देना अब भी जारी है। पहले तो जो भारतवासी ज्यादा पढ़े-लिखे भी नहीं होते थे, थोड़ी सिटपिट अँगरेजी बोल लेते थे, यहाँ भोज खा-खिलाकर बारिस्टर बन जाते थे। परंतु अब वह बात नहीं रही। अब बिना पास हुए यहाँ भी भर्ती नहीं करते। कानूनी विषयों पर विद्वानों के व्याख्यान होते हैं, परीक्षा ली जाती है, तब पास होने पर प्रमाण-पत्र दिया जाता है। इन चारों संस्थाओं के हाते और भवन यहाँ की अदालतों के पास ही हैं। बड़े बड़े विस्तृत हातों में बड़े बड़े मकान हैं, जिनके छोटे कमरों में बारिस्टर लोग किराए पर रहते और अपना व्यवसाय करते हैं। हर एक में बड़े बड़े हाल और अच्छी लाखों पुस्तकों की लाइब्रेरी (पुस्तकालय) हैं। यहाँ ऐसा नहीं होता कि बारिस्टर जो चाहें सब काम करें। खास खास विषयों के बारिस्टर अलग अलग होते हैं। जैसे कोई मानहानि का विशेषज्ञ है तो कोई विवाह-संबंधी कानून का, कोई रेहननामा का काम करता है तो कोई मुआहिदे का या मुआवजे का।

अदालतें

यहाँ की हाईकोर्ट इँगलैंड भर की जजों की कचहरी है। जूरी द्वारा मुकदमों पर विचार होता है। बीसों जज हैं। हम जिस दिन देखने गए थे लार्ड चीफ जस्टिस के इजलास में मोटर द्वारा हानि पहुँचने के मुआवजे का मुकदमा चल रहा था। बहुत रोब-दाब का ऊँचा इजलास था। जूरी के बारह सदस्य बैठे थे, जिनमें तीन मेमें भी थीं। बारिस्टरों के पीछे नीचे की मंजिल में तथा ऊपरी गैलरी में भी दर्शक बैठे थे। नीचे ही ऊँचाई पर

इजलास था। एक ही साहब नौकर था जो पुस्तकें निकालकर देता और अन्य काम भी करता था। हाँ, पेशकार बारिस्टरी का लिबास पहने जज महोदय के चौतरे से नीचे उनके आगे बैठा था। इस कचहरी में बहुत से इजलास हैं। नीचे बड़ा भारी हाल है। बारिस्टरों के गौन पहिनने का कमरा अलग है। जब इजलास पर जज बैठ जाते हैं तब कमरे का दरवाजा खुलता है और बारिस्टरों को मुकदमे की सूचना देकर बुला लिया जाता है। फीस और अन्य व्यय अंधाधुंध है। दस पौंड के मुकदमे में कई सौ पौंड व्यय हो जाता है और सब व्यय विपक्षी पर चढ़ जाता है। सालिसिटर लोगों के द्वारा मुकदमे हुआ करते हैं, जैसे कलकत्ता, बंबई आदि की प्रथा है। इस अदालत के मुकाबिले में प्रिवी कौंसिल की कोई शान ही नहीं मालूम होती।

अन्य राजनीतिक संस्थाएँ

इसी सड़क पर (डॉनिंग स्ट्रीट में) एक बड़े भवन में एक ओर परराष्ट्र विभाग का कार्यालय है। आँगन के बाद उसी हाते में भारत-सचिव का कार्यालय है। यह भी बहुत विस्तृत कई मंजिलों का है। बिजली के पिंजड़ों द्वारा चढ़ना उतरना बड़ी सुगमता से होता है। इसमें प्रायः सभी विभाग अलग-अलग बँटे हैं। श्री रघुनाथ पुरुषोत्तम परांजपे महोदय से मैं मिला। वह यहाँ के एक सदस्य हैं। पूर्व-परिचित होने के कारण वे बड़ी खातिर से मिले। यहाँ रेकार्ड विभाग में "लीडर" समाचार पत्र पढ़ा।

इसी सड़क पर नं० १० का भवन प्रधान मंत्री के निवास तथा कार्यालय का स्थान है। अन्य कार्यालय भी इसी के आसपास हैं। इसी में कौंसिल (केबिनेट) की बैठकें हुआ करती हैं।

घोड़सवार पहरेदार

उसके पास ही एक फाटक है जहाँ काले घोड़ों पर चमकीली वर्दी पहने कलँगीदार टोपवाले दो सवार खड़े पहरा दिया करते हैं। उस फाटक से भीतर जाते ही एक बहुत बड़ा मैदान है जिसकी दाहिनी तरफ जल-सेना का प्रधान कार्यालय है। इसमें ऊपर बेतार के तार का यंत्र लगा है जिसके द्वारा लड़ाई के समय हर जहाज के कार्यकर्त्ताओं से सीधे बातचीत हुआ करती थी। उस समय समाचार का आना-जाना भी इसके द्वारा होता था। इस विशाल हाते में बायें हाथ की ओर प्रसिद्ध बकिंगहम महल दूर से दीख पड़ता है। लंदन नगर में जब यहाँ के राजा रहते हैं तब इसी में निवास करते हैं। बाहर से ही इसे देख सकते हैं। इस हाते में कई स्मारक मूर्तियाँ तथा स्तंभ हैं। बगीचा बहुत सुंदर है। दूर के एक स्कूल के लड़के-लड़कियों को भ्रमण कराने के लिये एक अध्यापक साथ लाए थे और उन्हें सब दिखा-दिखाकर समझाते और प्रश्नोत्तर करते-कराते जाते थे। थोड़ा और आगे बढ़ते ही सुरम्य सेंट जेम्स पार्क है जिसमें हरी घासों का तथा फूलों की सुहावनी क्यारियाँ लगी हैं। छायादार वृक्ष, छटा और झीलों का दृश्य अपूर्व है। यह उद्यान बहुत ही विस्तृत है। उसमें घूमते दृश्यों को देखते सड़क पार कर—

लंदन म्युजियम

में गए। इसमें जाने के लिये नजदीक स्टेशन डोवर स्ट्रीट तथा सेंट जेम्स पार्क हैं। इसमें १० बजे से संध्या ६ बजे तक नित्य जा सकते हैं। रवि, सोम, शुक्र और शनि को बिना शुल्क, मंगल को एक शिलिंग तथा बुध और बृहस्पति को आधा शिलिंग शुल्क लगता है। यहाँ के वर्णन की छोटी-बड़ी बहुत पुस्तकें बिका

करती हैं। संक्षेप पुस्तिका बीस पेज की तीन आने में मिलती है। भूधरी में प्राचीन लंदन नगर के भिन्न भिन्न भागों के दृश्य
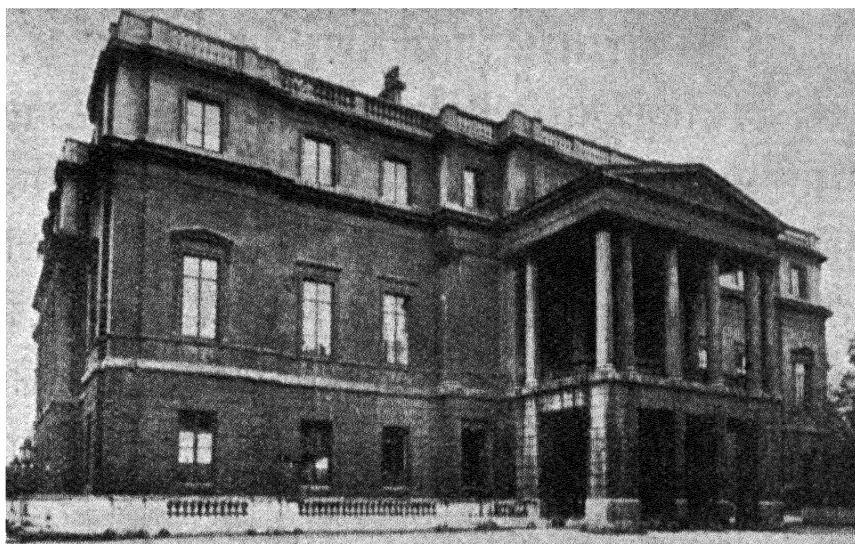
लंदन म्युजियम

चित्रों तथा नमूनों द्वारा भली भाँति प्रदर्शित हैं। आग लगने का दृश्य बहुत ही अच्छा है। पुराना सेंट पाल्स कथीड्रल (गिरजाघर), टावर आव लंदन (पुराना शाही जेलखाना), शराब की उस समय की दूकानों का नमूना भी अच्छा है। इसमें एक बहुत बड़ी घड़ी चलती है, जिसमें बहुत से प्रधान देशों का भिन्न भिन्न समय ज्ञात होता है। ऊपर के दो मंजिलों में भिन्न भिन्न समय की गृहस्थी के अनेक सामान, जो लंदन में काम में लाए जाते थे, दिखलाए गए हैं। लड़ाई के समय के दृश्य भी अपूर्व हैं। जर्मनीवालों ने बमगोला द्वारा यहाँ के बड़े बड़े मकानों को कैसे नष्ट-भ्रष्ट किया ये सब नमूनों तथा चित्रों द्वारा दिखाए गए हैं। पहले के थिएटर, पुराने सिक्के, नोट इत्यादि, लंदन के पुराने पुल, जवाहिरात, पन्ने के एक बड़े टुकड़े में घड़ी, बहुमूल्य पत्थरों में बारीक चित्र

इत्यादि कारीगरी के बड़े अच्छे नमूने हैं। दूसरी ओर ग्रीन पार्क का बड़ा भारी उद्यान है, जहाँ धूप और छाँह में हजारों आदमी बैठे, पड़े, चलते-फिरते विहार किया करते हैं।

लंदन का संग्रहालय तथा विद्यालय

लंदन नगर विद्या का भी बड़ा भारी केन्द्र है, सौथ केसिंगटन तथा उसके इर्द गिर्द बड़ी बड़ी अनेक शिक्षा-संबंधी संस्थाएँ हैं। वहाँ जाने के लिये सौथ केसिंगटन रेल का (सुरंगी) स्टेशन निकट है। नं० २१ क्रामवेल रोड पर एक बड़ा मकान भारत-सरकार ने भारतीय विद्यार्थियों के आते ही उतरने तथा ठहरने के लिये ले रखा है। पास ही विक्टोरिया अलबर्ट म्युजियम बहुत ही बड़ा है जो ठीक
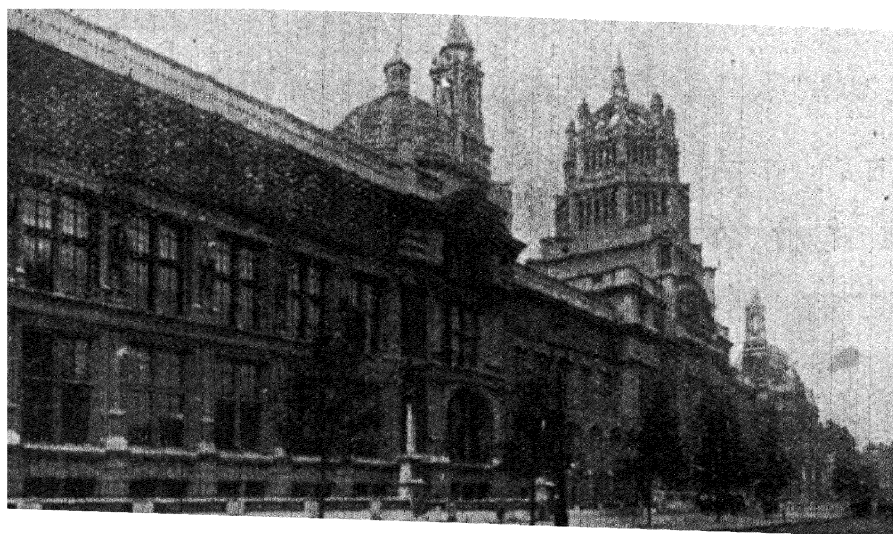
विक्टोरिया और अलबर्ट का अजायबघर

दस बजे खुलता है। इस प्रांत के सभी म्युजियम दस बजे दिन से छः बजे संध्या तक खुले रहते हैं और निःशुल्क हैं। इसके कमरों में घूमने में सात मील चलना पड़ता है। भीतर बड़ा भारी आँगन है जिसके बीच में फौवारा छूटता रहता है। चारों ओर फूल और घास की हरी

क्यारियाँ हैं और इसके चारों ओर तीन और चार मंजिल ऊँची तथा दो मंजिल भूधरी की इमारतें हैं, जिनमें संसार की उत्तमोत्तम वस्तुओं का अपूर्व और अद्भुत संग्रह है। इसकी नित्य ही वृद्धि हुआ करती है। करीब एक सौ साहब तो कमरों के पहरेदार हैं और पचासों साहब भाड़-पोंछ करने पर तैनात हैं। इसके भीतर ही होटल तथा शौच आदि का स्थान है। इसके वर्णन की बड़ी बड़ी पुस्तकें फाटक के भीतर बिकती हैं। निकास के कई फाटक हैं। यूरोप के बड़े बड़े विद्वानों की मूर्तियाँ, चाँदी, सोने, जवाहिरों के आभूषण और बर्तन, सिक्के, बहुत छोटी छोटी घड़ी में लगाने के परिमाण की खुदी बहुमूल्य तसवीरें हैं। हर अलमारी के साथ दृश्यवर्धक आइने लटकते हैं। सुंदर पच्चीकारी के काम का बहुमूल्य टेबूल, फ्रांस के सत्रहवीं शताब्दी के लकड़ी, लाह, शीशे, चीनी, मिट्टी और कागज के अनेक बर्तन, जिनमें जड़ाऊ तथा पच्चीकारी के काम हैं, कारीगरी की पराकाष्ठा दिखलाते हैं। हर देश की वस्तुएँ अलग अलग तथा समय-विभाग द्वारा श्रेणी-बद्ध करके सजाई हुई हैं। फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्पेन, पुर्तगाल, हालैंड, स्विजरलैंड, जापान, चीन इत्यादि देशों के सामान हैं। हाथी-दाँत की बारीक कामों की छड़ियाँ, हथियारों की मूठ, पंखियाँ, कलमदान, डब्बे इत्यादि सराहने-योग्य शिल्प-कला के नमूने हैं। पुस्तकों और चित्रों का भी अपूर्व संग्रह है। इसका वर्णन सामर्थ्य के बाहर है। इसे देखने और मनन करने के लियं महीनों का समय चाहिए। इसी का एक अंग पास ही दो-मंजिले बड़े भवन में अलग—

भारतीय संग्रहालय

बहुत अच्छा है। इसमें अनेक शहरों के मकानों के नमूने, लकड़ी तथा पत्थर इत्यादि के, बहुत अच्छे हैं। आगरे का ताजमहल,

अमृतसर, बुलंदशहर, दिल्ली दरबार, काशी का विश्वनाथ-मंदिर, चंदन की लकड़ी तथा चाँदी एवं हाथी-दाँत के मकान, गौतम बुद्ध की जीवनी चित्रों द्वारा (जातक), अजंता भूधरा, देव मूर्तियाँ, तोप, हथियार, सोने-चाँदी के आभूषण, पंजाब-केसरी महाराज रणजीत-सिंह जी की गद्देदार सुवर्ण की कुर्सी, बहुमूल्य रत्न, पच्चीकारी तथा जड़ाऊ काम के बर्तन, गहने, अन्य बहुमूल्य पत्थरों के नकाशीदार बर्तन, चँवर, छुरों की मूठें, गुड़गुड़ी, पेचवान, चिलम, गाने-बजाने के सामान, लकड़ी की कारीगरी, हाथी-दाँत की दशभुजी देवी की सुंदर मूर्ति सिंह पर सवार, दिल्ली की शाही मसजिद के सामान, सींक, हाथीदाँत, लकड़ी, आबनूस, चंदन तथा धातुओं और मिट्टी के सुंदर कलायुत बर्तन, गलीचे, पोशाक, काश्मीर के बारीक पश्मीने का शाल और बनारस के कमख़ाब, इत्यादि इत्यादि इकट्ठे श्रेणीबद्ध प्रदर्शित हैं—जो देखने ही योग्य हैं।

विज्ञान संग्रहालय

उसी के निकट एक बहुत बड़े पाँच मंजिल के भवन में विज्ञान संग्रहालय कई मंजिलों में है। हवाई जहाज किस तरह से आरंभ हुआ और धीरे धीरे किस किस तरह इस समय की अवस्था तक पहुँचा, रेल गाड़ियाँ, इंजिन, समुद्री जहाज, जितने देशों में भिन्न भिन्न कंपनियाँ तथा राज्य चला रहे हैं सभों का नमूना, रसायन (केमिस्ट्री), भौतिक (फिजिक्स), ज्योतिष इत्यादि के सूक्ष्म से सूक्ष्म आविष्कारों के बड़े ही अद्भुत नमूने श्रेणीबद्ध प्रदर्शित हैं। प्राचीन समय की नौका, पालों से चलनेवाले पुराने जहाज, धीरे धीरे कैसे आज दिन के बड़े से बड़े प्रसिद्ध जहाज़ों के रूप में बढ़े, इनका इतिहास जहाजों के बड़े बड़े नमूनों द्वारा खूब दिखलाया है। इसी तरह रेल गाड़ियों और इंजिनों, फोटोग्राफी, टेलिसकोप, बिजली द्वारा जितने काम

हो रहे हैं उनका नमूना, पानी खींचने और बड़े बड़े शहरों में पहुँचाने के यंत्रों से लेकर शौच-स्थान के भिन्न भिन्न प्रकार के स्वच्छ शौचालय इत्यादि सभी देखने और शिक्षा ग्रहण करने योग्य हैं। सर्वग्रास सूर्यग्रहणों के चित्र, तारागण इत्यादि के भौगोलिक चित्र इत्यादि सभी विभाग खूब ही शिक्षाप्रद तथा आश्चर्य-जनक हैं। हार्मोनियम, टाइपराइटर, हिसाब जोड़ने, रखने इत्यादि की कलें भी विचित्र हैं। यहाँ प्राय: सभी दूकानों पर ऐसे यंत्रों द्वारा हिसाब रखा, दाम लिया-दिया जाता है। नकशा खींचना, सर्वे करना इत्यादि गणित विभाग, प्राचीन काल के हाथवाले तथा इस समय के कलोंवाले हथियारों से कैसे काम होते हैं इनका मुकाबिला करके खूब दिखाया है। विज्ञान-शास्त्र के सभी अंगों द्वारा सभी आविष्कार भली भाँति प्रदर्शित हैं। जिस विभाग का विद्यार्थी हो उसके शिक्षा ग्रहण करने के लिये यहाँ पूरा सामान प्रस्तुत है।

प्राकृतिक संग्रहालय

यह भी बहुत ही बड़ा और मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद है। इसमें जलचरों में ह्वल से लेकर झिंगा मछली तक; नभचरों में गरुड़ से लेकर मच्छरों, मक्खियों तक; थलचरों में शेर, गैंड़ा, हाथी से लेकर छोटी-छोटी चुहिया तक सभी जीव देश देशांतर से संग्रह करके भूसा भरे श्रेणी बद्ध दिखाए गए हैं। इसमें खनिज तथा जलमग्न पदार्थ देश देशांतर के भी खूब संगृहीत हैं। ऐसे वृक्ष और वनस्पति हैं जो जंतुओं को खा जाते हैं। सब प्रकार के देश देश के जीव अलग अलग श्रेणीबद्ध कई मंजिल के मकान में, जिसे देखने में कोसों चलना पड़ता है, खूब इकट्ठा करके दिखलाए गए हैं। एक ओर देखिए तो हजारों प्रकार की तितलियाँ हैं, दूसरी ओर कहीं सैकड़ों प्रकार के मूँगा सरीखे रंग-विरंग के जलजंतु हैं। घोंघा,

शंख, सीप अनगिनत हैं। मछलियों का तो कुछ कहना ही नहीं। आश्चर्य तो इस खोज और संग्रह का है। बड़े-बड़े आविष्कार करनेवालों की मूर्तियाँ भी हैं। हर विभाग में उससे संबंध रखने-वाला पुस्तकालय साथ ही साथ लगा हुआ है। एक बहुत सुंदर
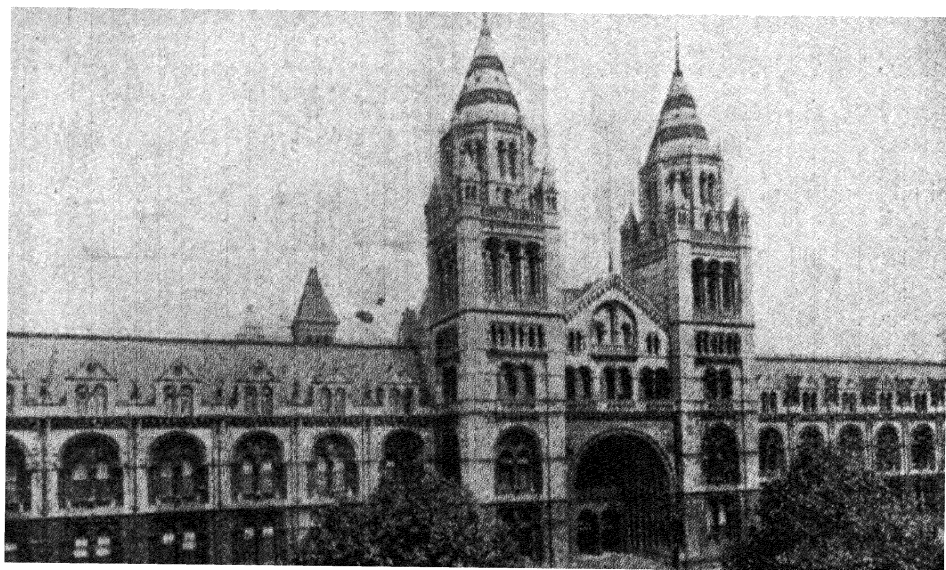
नेचुरल हिस्ट्री म्युजियम

पच्चीकारी का संगमर्मर का टेबुल है, जिसमें कई सौ रंग के विचित्र पत्थरों द्वारा पच्चीकारी की हुई है। कुत्ते, बिल्ली, व्याघ्र, भालू, घोड़े, हाथी, ऊँट, गाय, भैंस, हरिन, जब्रा, जिराफ, बंदर, लंगूर, बनमानुस, तोता, मैना, गिलहरी इत्यादि इत्यादि जीव तथा हर प्रकार के रासायनिक धातु देश देश के सब श्रेणीबद्ध सुसज्जित हैं। जीवित जंतु संग्रहालय से कई गुना अधिक संख्या में यह संग्रह है। देखते बुद्धि चकरा जाती है। मक्खियों मच्छरों से बीमारी कैसे फैलती है, उसका निवारण कैसे होना चाहिए इत्यादि दिखलाया गया है। कहाँ तक कहा जाय, यह अकथनीय संग्रह है।

१३२४ वर्ष के एक बहुत बड़े पेड़ का कटाव दिखलाया है। उसकी इतनी उम्र का कैसे हिसाब लगा है, यह भी उसमें दिखाया गया है। सर्पों की श्रेणी में बड़े भारी भारी अजगर तथा एक बहुत बड़ा जानवर ८४ फुट ६ इंच लंबा है।

लंदन का साम्राज्य संग्रहालय

यह भी उसके निकट ही कई मंजिलों के भवन में है। इसमें ब्रिटिश साम्राज्य के भिन्न भिन्न देशों में क्या क्या पैदा होता है, कैसे पैदा किया जाता है, उन देशों की रहन-सहन इत्यादि तसवीरों, नमूने के खिलौनों तथा वास्तविक पदार्थों द्वारा प्रदर्शित की गई है। हर देश के पदार्थ अलग अलग विभक्त हैं। भारत के विभाग में काश्मीर की "डल" झील, उदयपुर का "झील-महल" इत्यादि के विचित्र दृश्य हैं। खेती का ढंग, उपज—जैसे, चाय, अन्न, कपड़ा इत्यादि—आरंभिक अवस्था से तैयार हो जाने तक, रबर की उपज और तैयारी, फल-फूल इत्यादि दिखलाए गए हैं। भारत के अलावा मलय, पूर्वी तथा दक्षिणी अफ्रीका, माल्य, साइप्रस, कनाडा, जंजीबार, फिलिस्तीन, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड इत्यादि सब जगह के अलग अलग विभाग हैं। कौन धातु कहाँ किस रूप में निकलती और कैसे तैयार की जाती है सब बताया गया है।

साम्राज्य युद्ध संग्रहालय

यह भी दो मंजिले बड़े भवन में इसके पास ही है। इसमें लड़ाई के सभी सामान बंदूक, तोप, जंगी-जहाज इत्यादि तथा लड़ाई के मैदान में सेना कैसे लड़ती थी, स्त्रियाँ घायलों की कैसे सेवा करती थीं इत्यादि बड़े विस्तार से दिखाया गया है। दृश्यों के चित्र, फोटो, खिलौने बहुत अच्छे हैं। गाँव के गाँव कैसे तहस-नहस किए गए थे उनका भी नमूना अपूर्व है।

अन्य संस्थाएँ

इसी महल्ले में लंदन विश्वविद्यालय का बहुत बड़ा परीक्षा-भवन और बड़े बड़े अनेक कालेज—जैसे, विज्ञान तथा कल-कारखानों के बड़े दर्जे के शिक्षालय—हैं जिनमें रसायन, भौतिक विज्ञान इत्यादि के अलग अलग विभाग हैं। संगीत विद्यालय भी बहुत बड़ा है। कला, शिल्प नकशा, चित्रकला, नक्काशी, मूर्ति खोदाई, मट्टी, धातु इत्यादि के बर्तनों के बनाने की कला, इत्यादि का बड़ा विद्यालय है। यहाँ सुई के काम सिखाने का भी एक बड़ा विद्यालय है। इस महल्ले के अनेक बड़े बड़े विद्यालयों के अतिरिक्त अन्यत्र बड़े बड़े कालेज जैसे युनिवर्सिटी कालेज, मेडिकल कालेज इत्यादि भी फैले हुए हैं। हम लोगों के पड़ोस में ही एक बहुत बड़ा नया भवन 'गर्म देशों के रोगों का विद्यालय' नाम का बन रहा है जिसके बाहर मच्छरों, मक्खियों इत्यादि की बड़ी बड़ी मूर्तियाँ दूर से ही दीख पड़ती हैं। इसके पास की भूमि का बहुत बड़ा चक लंदन विश्वविद्यालय की ओर से लिया जा रहा है, जिस पर अनेक विद्यालय बनाये जाएँगे। यह तो उच्च शिक्षा के विद्यालयों का हाल है। इनके अतिरिक्त सैकड़ों लड़कों, लड़कियों, तथा दोनों के साथ पढ़ने के हाईस्कूल, मिडिल स्कूल, प्राइमरी स्कूल गली गली हैं। बड़े से बड़े दर्जे की पढ़ाई के अनेक विषयों के अनेक विद्यालय हैं। जिस विषय में जो शिक्षा प्राप्त करना चाहे उस प्रकार के कई विद्यालयों में से चुनकर जहाँ चाहे पढ़े।

पालिटेक्निक (बहुविद्या) शिक्षालय

यह विद्यालय कास रोड पर है। बाहर से तो बहुत ही छोटा प्रतीत होता है—किंतु भीतर जाते ही एक विश्वविद्यालय का आकार

प्रदर्शित करता है। इसमें दो हजार विद्यार्थी पूरे समय दिन में पढ़ते हैं और चौदह हजार विद्यार्थी पारी बाँधकर संध्या समय शिक्षा ग्रहण करते हैं। यह छः मंजिल ऊपर, दो मंजिल भूधरी में और एक धरातल में, कुल मिलाकर नौ मंजिलों का बना हुआ है। इसका एक हाईस्कूल है। इसमें लड़के लड़कियाँ सभी साथ शिक्षा पाते हैं। यह चंदे से ही चलता है। सरकारी सहायता से कोई संबंध नहीं। इसमें यूरोप की सभी विदेशी भाषाएँ तथा विदेशियों को अँगरेजी भाषा सिखाई जाती है। सभी कलाओं और काम-काज के सिखाने का विभाग है। बाइसिकिल चलाना, निर्जीव तथा जीवित नमूने से उसके चित्र बनाना, तार और बेतार की खबर देना-लेना, व्यापार-संबंधी हिसाब रखना, चिट्ठी पत्री लिखना, रोजगार करना, विज्ञान के सभी विभागों की मध्यम श्रेणी की शिक्षा, लंदन मैट्रिक तथा इंटर सायंस की दी जाती है, जिसके बाद विद्यार्थी चाहे किसी काम में लग जाय, कमाने लगे या उच्च श्रेणी के विद्यालय में प्रवेश करे। कोई विद्यार्थी किसी अध्यापक से घर पर नहीं पढ़ता। स्वयं ही पढ़ता और शिक्षा ग्रहण करता है। इंजिनियरी की भी कई अंगों की शिक्षा दी जाती है; जैसे लकड़ी का काम, धातु का काम, बिजली का काम, नकशा खींचना, फोटोग्राफी। व्यायाम विभाग में बहुत प्रकार की कसरतें सिखाई जाती हैं। मुक्की, फरी, गदका, तलवार, बंदूक, पैंतराबाजी, कुश्ती, तैरना, नाव खेना इत्यादि। इसका एक और बड़ा भवन बन रहा है। यह सब काम चंदे द्वारा होता है। कई पढ़ानेवाले बिना वेतन लिए ही समय देकर अन्य कामों के अतिरिक्त इसमें पारी बाँधकर शिक्षा देने आ जाया करते हैं।

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय

लंदन से थोड़ी दूर पर आक्सफोर्ड नामक प्रसिद्ध विद्यापीठ और अच्छा सुंदर शहर है। लंदन से रात-दिन पचासों रेलगाड़ियाँ पैडिंगटन तथा यूस्टन स्टेशनों से और मोटर बसें आती-जाती रहती हैं। यहाँ बहुत से प्राचीन तथा प्रसिद्ध कालेज उच्च शिक्षा के हैं, जिनमें देश-देशांतर के विद्यार्थी आकर शिक्षा प्राप्त करते हैं। यहाँ होटल, ठहरने और भोजन आदि के स्थान अनेक हैं। इनके वर्णन की भी अनेक छोटी-बड़ी पुस्तकें मिलती हैं। तेरहवीं शताब्दी के विद्यालय सबसे आरंभ के हैं. यहाँ एक भारतीय शिक्षण-गृह (इंडियन इंस्टिट्यूट) है जिसमें भारतीय भाषाएँ तथा इतिहास पढ़ाने का प्रबंध है। काशी के एक पुराने कलक्टर तथा कमिश्नर श्री लवेट पेंशन पाकर इसी विद्यालय में भारतीय इतिहास पढ़ाते हैं। २० जून को जब हम आक्सफोर्ड गए तो इनसे भेंट हुई। पूर्व-परिचित होने के नाते ये बड़े प्रेम से मिले। हम लोगों का भारतीय पहिरावा देखकर वे प्रसन्न हुए और उन्होंने साथ में जाकर यहाँ के विद्यालयों को दिखलाया। काशी के संबंध में उन्होंने बहुत से प्रश्न पूछे और कहा कि काशी-नरेश मुझे अब तक बड़े दिन पर याद करते हैं। बिदाई के समय उन्होंने कहा कि हरिश्चंद्र स्कूल को मेरा प्यार कहना। यहाँ साहित्यिक तथा अन्य दार्शनिक इत्यादि विषयों के विद्वान् और शिक्षक प्रसिद्ध हैं। प्राचीन पुस्तकालय बाडलियन लाइब्रेरी का विशाल भवन है जिसमें कई लाख उच्च श्रेणी की पुस्तकें हैं। ब्रिटिश म्युजियम के बाद इसकी गिनती है। शहर के इर्द-गिर्द कालेजों के सुंदर बड़े बड़े भवन हैं और नदी में हर कालेज की नावें हैं। कालेजों के साथ बड़े बड़े उद्यान तथा विस्तृत व्यायामक्षेत्र हैं। सभी स्थान बड़े

मनोरम हैं। यहाँ का वायुमंडल विद्या से परिपूर्ण है। यहाँ के शिक्षा-प्राप्त बड़े बड़े विद्वान् जगत्-प्रसिद्ध हो गए हैं। ये विद्यालय दान की पूँजी, स्थायी कोशों, की आय से ही चल रहे हैं।

कैंब्रिज विश्वविद्यालय

पहली जूलाई को हम कैंब्रिज गए। जैसे साहित्यिक विषयों के लिये आक्सफोर्ड प्रसिद्ध है वैसे ही वैज्ञानिक और गणित विषयों के लिये कैंब्रिज प्रसिद्ध है। दोनों अपने अपने ढंग के बड़े ऊँचे दर्जे के हैं। यहाँ के प्राचीन कालेज भी तेरहवीं शताब्दी के हैं। इस समय करीब तीस ऊँचे दर्जे के विद्यालय यहाँ हैं। यहाँ भी लंदन से अनेक रेलगाड़ियाँ लिवरपुल स्ट्रीट स्टेशन से रात-दिन आती-जाती हैं और मोटरें भी अनेक चला करती हैं। यहाँ के भी सभी कालेज दान की संपत्ति के ब्याज तथा आय से चलते हैं। यहाँ विज्ञान के भिन्न भिन्न विषयों की, उच्च कोटि की, शिक्षा दी जाती है और देश-देशांतर के विद्यार्थी यहाँ आकर विद्या प्राप्त करते हैं। कई कालेजों के साथ गिरजाघर भी लगे हैं। यहाँ एक बड़ा अस्पताल "एडेंब्रुक्स हास्पिटल" चंदे द्वारा बना है और चल रहा है। यहाँ भी नदी किनारे कालेज तथा नदी में सब कालेजों की नौकाएँ हैं। यहाँ अद्भुत पदार्थ-संग्रहालय भी है। यहाँ भी कई स्कूल हैं, जिनमें से दो बहुत अच्छे हैं। एक "पर्स" १६१५ ईस्वी का स्थापित तथा दूसरा "लीज" देखा। ये बड़ी अच्छी तरह शिक्षा देते हैं। लीज स्कूल में नए ढंग के विज्ञान के सामान बहुत बड़े मैदान में कई भवनों में हैं। इनका काम भी बिना सरकारी सहायता के ही चलता है। ऐसे यहाँ कई स्कूल हैं। इनमें शिक्षा पाकर निकलते ही १६-१७ वर्ष के लड़के

लड़कियाँ काम-काज करने और कमाने लगते हैं, या उच्च शिक्षा के लिये कालेजों में जाते हैं।

किउ उद्यान

यहाँ का यह बड़ा बगीचा अद्भुत वनस्पति-संग्रहालय है।

नया बाग

इसके लिये मोटर-बसें तथा सुरंग-रेल भी जाती है। इसका प्रवेश-शुल्क मंगल और शुक्र को ६ पेंस और नित्य एक पेनी है। दस बजे से ६ बजे संध्या तक जा सकते हैं। इसका क्षेत्रफल २८८ एकड़ है। इसके पश्चिम पीछे टेम्स नदी और पूर्व किउ सड़क है। इसमें करीब दो सौ आदमी, माली इत्यादि काम करने के लिये, नौकर हैं; कई झील, तालाब हैं; शीशे के सोलह घर और पाँच अद्भुत संग्रहालय हैं, जिन्हें जनता देख सकती है। इनके अतिरिक्त और भी हैं जो सुरक्षित हैं। एक सब से बड़ा काँच का महल तीन मंजिल ऊँचा और करीब दो ढाई सौ फुट लंबा तथा डेढ़ सौ फुट चौड़ा है। उसमें ऊँचे नारियल, बाँस, खजूर, ताड़ के सुंदर वृक्ष भी हैं। भिन्न भिन्न काँच के महलों में भिन्न भिन्न देशों के अनेक विचित्र वृक्ष, फूल-पत्तियाँ लगी हैं, जिन्हें देख चित्त चकरा जाता

है। एक में गर्म देश के वृक्ष हैं, जिसके भीतर गर्म पानी द्वारा गर्मी रक्खी जाती है। थर्मामेटर लगा है। आवश्यकतानुसार गर्मी कम और ज्यादा की जाती है। यह उद्यान ऐसा विस्तृत और स्वच्छ सुंदर पुष्पों, वनस्पतियों से सुसज्जित है कि इसे घूम घूमकर देखते ही रहने का मन चाहता है। यह संसार में अद्वितीय बताया जाता है। फाटक से घुसते ही बाएँ हाथ एक म्युजियम तीन मंजिलों का है, जिसके कमरे अलमारियों से भरे हैं और जिनमें फल, फूल, वनस्पति, उनके बीज, लकड़ी इत्यादि के सूखे नमूने श्रेणीबद्ध सजे हैं। एक ओर शीशे में रंगीन बारह चित्रों द्वारा "रूई का जीवन-चरित्र" बहुत अच्छा दर्शाया है। बोते, उगते, लोढ़ते, गाँठें बाँधते, लादते, जहाज पर, समुद्र में, फिर जहाज से उतारते, गाड़ियों पर लादते, ले जाते, मैंचेस्टर में फिर उतारते, कलों में कातते, बीनते, तथा पहिननेवालों को विधिपूर्वक चित्रों द्वारा दिखलाया है। तालाब के चारों ओर घास के फर्श पर क्यारियाँ बनी हैं और उनमें भाँति भाँति के रंगोंवाले फूलों के पौधे इस ढंग से लगे हैं मानों हरे गलीचों में फूलों के नकशे बीने हुए हैं। उसके बाद ही बहुत बड़ा काँच-घर तीन मंजिलोंवाला है जिसमें अनेक वृक्ष बाँस, नारियल, ताड़, खजूर, आम, केले लगे हैं। ऐसे सोलह घर हैं। एक में काँटों-वाले वृक्ष सेहुँड़, नागफनी के कुटुंब के ही हजारों प्रकार के हैं। एक बड़े काँचघर में भीतर तालाब है जिसमें कई रंग के कमल फूले हैं। एक विक्टोरिया रेजिना नाम का कमल लगा है, जिसके सात बहुत बड़े बड़े पुरइन के पत्ते चार चार पाँच पाँच हाथ के ऐसे हैं जिन पर मनुष्य लेट जाय। एक ओर ऐसे वृक्ष हैं जिनमें लुटिया की शकल के पत्ते लगे हैं और उनमें पानी भरा है। एक काँचघर में गर्म भारतवर्ष ऐसे देशों के वृक्ष वनस्पतियाँ

लगी हैं। एक में साधारण उष्णता के। एक में हरी ही वस्तुएँ हैं। एक में अनेक प्रकार के क्रोटनों की भरमार है। अनगिनत पहाड़ी वनस्पतियाँ एक हरे घर में हैं। एक में दूर दूर देशों के बड़े ही सुंदर पत्तोंवाले वृक्ष "डिक्सोनिया, एंटार्क्टिका", न्यूजीलैंड, पेरू, चीन, जापान इत्यादि देशों से लाकर लगाए गए हैं। एक में अनेक रंगों के कुमुद (कोई) के फूलों-सहित सरोवर सुहावना बना है। उसी में विचित्र पत्तोंवाली ककड़ी, लौकी लटकती हैं और फूलों की क्या ही सुंदर क्यारियाँ हैं। एक म्यूजियम में, जहाँ लकड़ियों के नमूने खूब सजे भरे हैं, लकड़ियों से निकलनेवाले तेल, नील, चाय, लाह की जीवनी खिलौनों द्वारा खूब ही दिखाई गई है। लकड़ी की कई मंजिलोंवाली निराधार सीढ़ी तथा संसार के कई प्रसिद्ध ताजमहल के से भवनों के नमूने सजे हैं। उसी के बाहर हरी घास की लंबी सीधी बहुत चौड़ी सड़कें बनी हैं, जिनमें कई लाइनों में सरो की पत्तियों के से कटीली पत्तियों के लखराँव लगे हैं। एक चीनी पगोडा का दस मंजिलों का मकान बहुत ऊँचा है। इसी हाते में "किउ पैलेस" प्राचीन राजगृह उद्यान निवासस्थान है। बड़े काँच-घर के पास हरी घास की फर्श पर कटीले सरो की सी पीली पत्तियों के छाते के समान बनाए वृक्षों की श्रेणी बहुत ही भली दीखती है। एक स्थान पर "राडा डेंड्रान" के फूलों को सुगंध तथा मनोहर दृश्य अपूर्व हैं। यहाँ के हर काँचघर तथा म्युजियम की पुस्तकें बड़े वृत्तांतों की बिकती हैं और सबके संक्षेप विवरण की पुस्तिका एक शिलिंग की सचित्र तथा छः पेंस की बिना चित्रों की है। यह एक विचित्र उद्यान है जिसमें वनस्पति-शास्त्र के उच्च कोटि के विद्यार्थियों को शिक्षा-वृद्धि करने तथा साधारण बुद्धिवालों को प्रकृति की महिमा और संग्रहकर्त्ता की बुद्धिमत्ता देखने का अपूर्व अवसर

मिलता है। इसको देखने के लिये जैसी बुद्धि हो या जितना अवकाश हो उतना अधिक समय लग सकता है।

हैंपडन कोर्ट

वाटर्लू स्टेशन से रेल द्वारा इसे देखने जाना होता है। यह

हैंपडन कोर्ट का महल

विशाल प्राचीन महल बड़े भारी बगीचे में है। इसमें जाने का शुल्क मंगल को एक शिलिंग, रविवार को कुछ नहीं तथा अन्य दिन ६ पेंस देना होता है। एक बड़ा आँगन पार करके ऊपर जाने पर लकड़ी की नकाशीदार दीवारों, छतों और भूमि को देखते ही प्राचीन कारीगरी का नमूना प्रत्यक्ष होता है। दीवारों में प्राचीन प्रसिद्ध चित्रकारों के चित्र अथवा उनके प्रतिबिंब बहुत अच्छे अच्छे लगे हैं। ये कला के आचार्य स्पेन, डेनमार्क, इटली, फ्रांस, जर्मनी इत्यादि देशों के थे। इन चित्रों में से कई का मूल्य दस हजार पौंड (करीब डेढ़ लाख रुपयों के) बताया जाता है। दो बच्चों का बहुत सुंदर चित्र एक इटालियन का बहुत ही मूल्यवाला बतलाया जाता है। कमरों की प्रायः तीन श्रेणियाँ हैं—(१) बादशाह, (२) महारानी मेरी, तथा (३) प्रिंस आव वेल्स की। कई

सामान्य श्रेणियाँ भी हैं। हर श्रेणी में दस दस बारह बारह कमरे बहुत सजे हैं। बादशाह के सोनेवाले कमरे में तथा अन्यत्र नग्न युवती सुंदरियों के चित्र अनेक हैं। मुलाकात करने, बैठने, सोने, खाने, कपड़ा पहनने, लिखने इत्यादि नाम से हर श्रेणी में कमरे हैं। एक छोटा और एक बड़ा पूजागृह भी है। बड़े चापेल (पूजागृह) की छत ओक (बहुमूल्य लकड़ी) की बहुत अच्छी नकाशीदार बनी है। नीचे उतरकर एक बहुत बड़े उद्यान में प्रवेश करते हैं जिसका मनोहर दृश्य ऊपर के कई कमरों से भी देख पड़ता है। इसमें झील, तालाब, घास का मखमली विस्तृत फर्श, जिस पर सरो की सी पत्तीवाले छाते की तरह कटे बहुत से वृक्ष सुंदर श्रेणी में लगे हैं, बहुत ही सुहावने दीख पड़ते हैं। ऐसे वृक्ष पाँच सड़कों के किनारे लगे हैं। ये पाँचों सड़कें भीतरी फाटक से पाँच ओर को उस बगीचे में गई हैं और इन सड़कों के बीच बीच हरे फर्श तथा लखराँव लगे हैं। इस दृश्य का शब्दों द्वारा वर्णन करना इस लेखक की शक्ति के बाहर है। इसी बगीचे में फाटक से दाहिनी ओर जाकर एक दर्वाजा मिलता है। उसके भीतर प्राइवेट गार्डन (बाग) और भी सुंदर सजा है। इसमें तालाब, कुंड, फौवारे हैं। एक ओर उठी हुई कई रंगों की घास की दीवारों की क्यारियाँ और पार्चे बने हैं। उनमें से हरएक में बहुत ही सुंदर रंगों के फूल लगे हैं। थोड़ा और आगे जाकर एक पेनी शुल्क देने से एक काँच के बड़े घर में जाने पर प्राचीन समय सन् १७६८ (डेढ़ सौ वर्ष) का लगा हुआ अंगूर का बहुत भारी वृक्ष फैला हुआ दीख पड़ता है। इसमें अंगूर के गुच्छे लटक रहे हैं। इसके पास ही एक बड़ा हाल है जिसमें तीन पेंस देकर जा सकते हैं। इसमें बहुत तसवीरें हैं। इन सबको देखने के लिये भी

एक दिन पूरा लगे तो अच्छी तरह देख सकते हैं। कई प्राचीन काल के कमरे बंद हैं या उनमें साधारण जनता जाने नहीं पाती। जितना देखा जा सकता है वह कुछ वर्षों से ही खोल दिया गया है। बड़े फाटक के बाहर कई होटल तथा उपाहार-गृह हैं। यहाँ अन्नाहारी, फलाहारी भोजन, दूध इत्यादि मिलता है और दूकानें भी हैं।

गिल्डहाल

गिल्डहाल लंदन का टौनहाल, बैंक स्टेशन के पास किंग्स स्ट्रीट में बहुत प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है। इसमें ऊपर दो मंजिलों के कमरों में बहुत अच्छे अच्छे चित्रों का संग्रह है। इन चित्रों में कई तैल के, बहुत से पानी के रंगों के और फोटो तथा अनेक छोटे हाथ के चित्र बहुत अच्छे हैं। जिन दृश्यों के चित्र हैं वे बड़े मनोहर हैं। कई चित्ताकर्षक हैं। दूसरी ओर वाचनालय है जिसमें सैकड़ों समाचार-पत्र आते हैं और जनता के लिये प्राप्य हैं। ढालू टेबुलों पर ऐसे ढंग से ये लगे रहते हैं कि खड़े खड़े बिना उथल-पुथल किए अच्छी तरह पढ़ सकते हैं। उसके पास ही दूसरे बड़े भारी हाल में अच्छा पुस्तकालय है जिसमें दो लाख के करीब पुस्तकें हैं जो जनता को बिना शुल्क वहाँ पढ़ने देखने के लिये मिल सकती हैं। दूसरी ओर सटा हुआ अद्भुत संग्रहालय है जिसके ऊपरी भाग में हजारों घड़ियों का संग्रह है। इनमें कई बहुत अच्छी हैं। नीचे दो मंजिलों में प्राचीन वस्तुओं का अच्छा संग्रहालय है जिसमें रोमन साम्राज्य के समय के प्राचीन सिक्के, हथियार, मिट्टी इत्यादि के बर्तन, जो लंदन की खोदाई में प्राप्त हुए थे, सजे हैं।

क्रिस्टल पैलेस

विक्टोरिया स्टेशन से क्रिस्टल पैलेस स्टेशन को रेल गई है। यहाँ उतरकर प्रसिद्ध काँच के बने बड़े भारी महल में जाना होता है।

इसका हाता बड़ी सुंदरता से सजाया हुआ है। यह महल १६०० फुट लंबा है और इसके दोनों किनारों पर दो धरहरे २८२ फुट
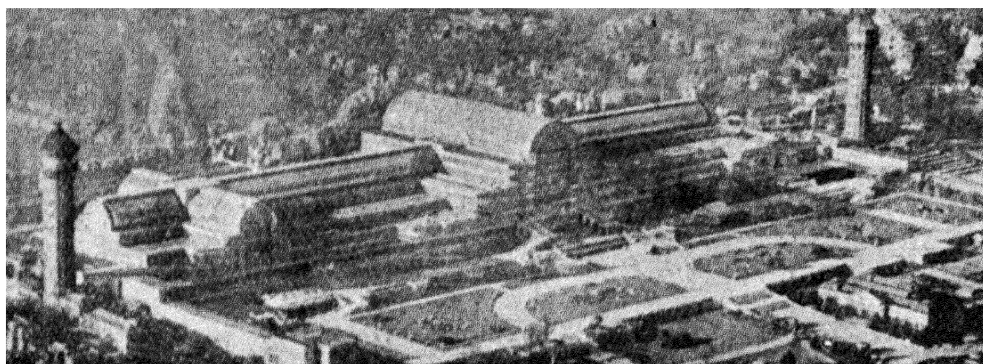
क्रिस्टल महल

ऊँचे हैं। सन् १८५१ ई० में हाइड पार्क में एक बड़ी भारी प्रदर्शिनी हुई थी। उसी का सामान लाकर इस विस्तृत भूमि में यहाँ यह महल पंद्रह लाख पौंड (दो करोड़ रुपया) व्यय करके खड़ा किया गया था। इसके हाते का क्षेत्रफल दो सौ एकड़ से अधिक है। गत जर्मन युद्ध के समय यह हाता तथा महल जल-सेना विभाग के काम में आता था। इसमें जाने का टिकट सवा शिलिंग है। गर्मी में हर बृहस्पतिवार को यहाँ आतिशबाजी छूटती है। उस दिन टिकट लेने में ढाई शिलिंग लगते हैं। उत्तरी धरहरे पर चढ़ने का छः पेंस टिकट है।

इसके विस्तृत हाल में वीरों, योद्धाओं, प्राचीन सन्तों, देवताओं इत्यादि की बहुत सी प्राचीन मूर्त्तियाँ हैं। एक काँच का कुंड है, जिसमें ऊँचा काँच का ही फौवारा छूटा करता है। स्त्रियों और पुरुषों के लिये, सैकड़ों के एक समय जाने के लायक, अलग अलग शौचादि का बहुत स्वच्छ स्थान कई जगह बना है। कई होटल, भोजनालय तथा उपाहार-गृह इसमें बराबर चला करते हैं। इसके बड़े भारी हाल में कई जगह कलों के द्वारा खेल-तमाशा हुआ

करता है। कहीं एक कहीं दो पेनी डालकर कल घुमाने से तमाशा होने लगता है। ये अनेक प्रकार के हैं। कहीं क्रिकेट का तो कहीं फुटबाल का खेल है; कहीं बंदूक से गोली चलती और निशाना लगता है; कहीं लड़ाई का दृश्य दीख पड़ता है; कहीं आपकी तौल होकर भविष्य प्रारब्ध का छपा कार्ड निकल आता है; कहीं मिठाई, कहीं चुरुट, कहीं दियासलाई इत्यादि निकल आती हैं; कहीं बाजा बजने लगता है। इन तरकीबों से पैसा कमाने और दर्शकों के मनोरंजन के सामान यहाँ बहुत हैं।

हाथीदाँत की खुदाई और कटक के चाँदी के साज की तरह कटाव का काम बना हुआ चीन देश के हौस-बोट का एक नमूना बहुत ही सुंदर है जो कारीगरी का अच्छा नमूना है। इसी बड़े हाल के एक कमरे में बहुत सफेद मूर्तियाँ हैं। प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुरुषों—जैसे सर आइजक न्यूटन, ग्लैडस्टन, जान ब्राइट इत्यादि—की मूर्तियाँ हैं। इसी के भीतर डाकघर, तारघर इत्यादि भी हैं जिनमें नित्य काम हुआ करता है। एक बड़े भारी कमरे में बादशाहों, राजवंशजों तथा प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुरुषों की हजारों मूर्तियाँ हैं। इसके बाहर नीचे भारी मैदान में फल-फूलों का बहुत अच्छा बाग है, बड़े मनोहर तालाब और फौवारे हैं।

जिस दिन (६ जुलाई को) हम लोग इसे देखने गए थे, उस दिन वहाँ मुक्तिफौज के प्रधान जेनरल बूथ की जन्म-शताब्दी का बड़े समारोह से उत्सव मनाया जा रहा था। उसमें देश-देशांतर की मुक्तिफौज में काम करनेवाली मंडलियाँ वीर पुरुषों की वर्दी में, मय अपने अपने बैंड बाजा के, आई थीं और शरीक थीं। संसार भर के कार्यकर्ता, जिनकी संख्या संभवतः पचास हजार होगी, उत्सव में सम्मिलित थे। करीब एक लाख आदमियों का समारोह था, किंतु

कहीं शोर-गुल या धक्का-धुक्की का नाम न था। भारी मैदान में हर स्थान की मंडली अपने अपने नाम के झंडे आगे आगे लिए बैंड बजाते निकली थी जिसको देखकर स्वामी दयानंद की जन्म-शताब्दी का, जो वृंदावन में हुई थी, स्मरण हो आया। उसमें भी भीड़-भाड़ बहुत थी और गरीब भारतीय इस शान शौकत की वर्दी बिना ही उपस्थित थे, किंतु इसमें सब एक सी वर्दी पहने थे।

भारतवर्ष के कई मुख्य कार्यकर्ता स्त्री-पुरुष हम लोगों को भारतीय पहिरावे में देखकर हमारे पास आए और उनसे बातचीत हुई। ये ईसाई लोग बड़ी ही लगन से जनता का उपकार तथा साथ ही अपने धार्मिक जनों की मंडली बढ़ाने का काम करते हैं। लंदन में इनका बहुत बड़ा केंद्र है और संसार भर में शाखाएँ हैं। इन्हें द्रव्य की तथा राजकीय अन्य सहायता बहुत मिलती है जिसके द्वारा काम करनेवाले भी बहुत और आत्मत्यागी मिलते हैं एक स्थान पर कई बड़े बड़े लेख रखे थे। बड़े मोटे अक्षरों में अँगरेजी में लिखा था कि भारत के बत्तीस करोड़ (पाप के) गुलामों का उद्धार करना है। ऐसे ऐसे विज्ञापनों द्वारा इन्हें बड़े बड़े कोटिध्वज लाखों करोड़ों की संपत्ति दे दिया करते हैं जिसके द्वारा ये खूब काम करते हैं।

उसके बाद बाहर ही मैदान में एक जगह डर्ट रेस (राख धूल में बाइसिकिल की दौड़) हुई। उसके पास ही कई होटल, जुआ, शराब, खेल-तमाशे के अड्डे थे। हवाई जहाज का तमाशा था; यहाँ लोग पैसे दे देकर उड़ने का अनुभव करते थे। एक ऊँचे से नीचे सर्पाकार छलकौवा खेल था, जिसमें लड़के अधिक छलकते-फिसलते थे। एक बिजली की रेल चघोटती थी, जिसमें टिकट देकर लोग रेल में दौड़ने का चित्त-विनोद करते थे। इस प्रकार के

अनेक खेल होते थे। सात बजे संध्या से बहुत बड़ी एक रंगशाला (आरचेस्ट्रा) में, जो दस मंजिल की है, एक एक शिलिंग का टिकट लेकर ऊपर तथा सामने हाल में और छः छः पेंस के टिकट द्वारा गैलरी में करीब पचास हजार आदमियों की भीड़ एकत्र हो गई। गैलरी में करीब दो हजार बैंड बजानेवाली भिन्न भिन्न मुक्तिफौजों की मंडलियोंवाले अपनी अपनी टोली बाँधकर बैठ गए। उन्होंने एक साथ तथा पारी पारी से कई बार एक घंटे तक सुंदर बाजा बजाया। एक गीत उन लोगों ने गाया था जिसकी टेक थी "नेवर, नेवर, नेवर गिव अप" (कभी मत, कभी मत, कभी मत छोड़ो) जिससे लगन की दृढ़ता टपकती थी। इसके बीच बीच में ईश-वंदना और भजन ईसाई ढंग पर हुए जिनमें कमर कसकर काम करने की दृढ़ता की शिक्षा भरी हुई थी। महाराज जार्ज के यहाँ से भी उत्साहवर्द्धक संदेश, इनको बधाई देते हुए, आया था जो सुनाया गया। कई जगह लाउड-स्पीकर (गूँजनेवाले प्रतिध्वनि यंत्र) लगे थे जिनके द्वारा दूर तक सब सुन पड़ता था। एक स्थान पर अनाथालय के बच्चों का गान हुआ था जो संभवत: मुक्तिफौज द्वारा संचालित संस्था के थे।

हम लोग ९ बजे विचार करने लगे कि इसकी समाप्ति पर बड़ी भीड़ होगी, कैसे जायँगे, रेलगाड़ी में भी भीड़ होगी, इत्यादि। किंतु बाहर निकलते ही देखा कि सैकड़ों बड़ी बड़ी मोटर-बसें और मोटर गाड़ियाँ लगी हैं। रेलवे स्टेशन पर और ट्रेनों में भी पूरी शांति थी। लोग लाइन बाँधकर बराबर पारी से उतने ही आदमी एक गाड़ी के खाने में बैठते थे जितने का नियत स्थान उसमें रहता था। सब शांतिपूर्वक बिना तकरार धक्का-धुक्की कहा-सुनी गाली-गलौज के रवाने होते जाते थे। स्टेशन पर टिकट

लेने या उतरकर बाहर जाने में भी हर जगह किउ (Queue) की लाइन बन जाती है। यदि कोई अपना स्थान छोड़कर आगे बढ़ने की चेष्टा करता है तो उसे अपना पहले का स्थान खोकर सबके अंत में जाना पड़ता है। यह किउ की प्रथा सारे यूरोप में, किंतु इँगलैंड में, खासकर लंदन में, खूब ही काम करती है।

बैंक आव इँगलैंड तथा रायल एक्सचेंज

बैंक स्टेशन के पास ही ये प्रसिद्ध संस्थाएँ भी हैं। यहाँ बैंकों की भरमार है, थोड़ी थोड़ी दूर पर बीसों बड़े बड़े बंकों की शाखाएँ

रायल एक्सचेंज

हैं। इनकी संख्या कई हजार होगी। इनमें बराबर काम हुआ करता है। जब आपका खाता एक बार यहाँ के किसी बंक में खुल गया तब फिर आपके चेकों का रुपया खड़े खड़े पलक भर में दे दिया जाता है। इस बात की जाँच नहीं की जाती कि आपके हिसाब में रुपया है या नहीं। इतनी जाँच-पड़ताल करें तो यहाँ का

कितना काम अटक जाय। लोगों को इतना अवकाश कहाँ कि खड़े या ठहरे रहें। यदि आपके हिसाब में रुपया नहीं है तो आपको सूचना दे दी जायगी, आप हिसाब पूरा कर देंगे।

बैंक आव इँगलैंड में विशेषता यह है कि यह यहाँ का वैसा ही सरकारी बैंक है, जैसे भारत में इंपीरियल बैंक है और उससे भी विशेषता इसमें यह है कि इसे नोट छापने और चलाने का अधिकार प्राप्त है। इसके नोट बड़े साफ, पतले किंतु मजबूत कागज के होते हैं। सफाई का कारण यह है कि एक बार लौटकर नोट जब बैंक में पहुँच गया तो फिर वह रद्दी करके जला दिया जाता है, दोबारा बाजार में नहीं जाता, हमेशा नया नोट यहाँ से दिया जाता है। इसका कारोबार बहुत बड़ा है।

इसी तरह रायल एक्सचेंज सरकारी संस्था है, जिसमें जनता को जाने के लिये विशेष आज्ञा प्राप्त करनी पड़ती है। इसमें एक प्रकार की चित्रकारी देखने योग्य है, जो बड़े निपुण प्रसिद्ध चित्रकारों की हैं। यहाँ भी रुपए-पैसे के अदल-बदल का बहुत बड़ा कामकाज हुआ करता है। इसमें बहुत ही अच्छी अच्छी पचीसों तसवीरें हैं जिन्हें देखने के लिये बहुत लोग जाते हैं। इसके सामने ही बाहर लड़ाई का एक स्मारक है जो सन् १९२० ई० में स्थापित किया गया था।

पुलिस

इसके पास चौरस्ते पर मोटरों और पैदल चलनेवालों की बड़ी खचाखच भीड़ रहती है, किंतु यहाँ की पुलिस तथा चलने चलानेवालों की बुद्धिमत्ता है कि लोग बिना घायल हुए आते जाते हैं। यद्यपि यहाँ बहुत लोग ऐसे घमासान में मर और घायल हो जाते हैं, किंतु इस कचापची को देखकर वह संख्या बहुत कम ही मालूम होती है। यहाँ की पुलिस संसार भर में बड़ी प्रसिद्ध है। हम

लोगों को इनसे बड़ी ही सहायता मिलती थी। जिस स्थान को पूछिए बहुत ठीक बताते थे। बस का नंबर इत्यादि सटीक बताते थे। एक ओर से दूसरी ओर जाने के लिये बड़ी फुर्ती से मोटरों को रोकते और भीड़ को निकाल देते थे। बच्चों बूढ़ों को हाथ का सहारा देकर निबाह देते थे। हम लोगों को भारतीय पहिरावे में देखकर और भी अधिक सहायता देते थे। सबको 'सर' कहकर संबोधन करते हैं। ये वास्तव में अपने को जनता का सेवक (Public servant) मानते हैं और वैसा ही बर्ताव भी करते हैं। अमेरिका तथा अन्य कई देशों के यात्रियों से भी यही सम्मति मिली कि उनके देशों में ऐसी अच्छी पुलिस नहीं है। यहाँ की पुलिस संसार में बड़ी ही निपुण समझी जाती है। पुलिस के जवान बड़े तगड़े हैं। प्राय: कोई छ: फुट से कम नहीं हैं। ये काली वर्दी में बड़ी मुस्तैदी से जनता की सेवा करते रहते हैं। औरतें भी यहाँ पुलिस का काम करती हैं।

टावर आव लंदन

सुरंग-रेल से 'मार्कलेन' स्टेशन पर उतर प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान "लंडन टावर" (धरहरा) देखने गए। टेम्स नदी के किनारे पर यह बहुत प्राचीन ऊँचा धरहरा है। दस बजे से ६ बजे तक खुला रहता है। शनिवार को नि:शुल्क तथा अन्य दिन प्रवेश-शुल्क सब विभागों का सवा शिलिंग लगता है। इसकी विवरण-पुस्तिका छोटी दो पेंस की तथा बड़ी और भी अधिक दामों की मिलती हैं। इसमें चारों कोनों पर चार बहुत ऊँची ऊँची बुर्जियाँ हैं जिन पर चढ़कर दृश्य देख सकते हैं।

इसमें देखने की मनोहर वस्तु राज्य-रत्न-भंडार है। एक मंजिल ऊपर एक बड़े गोल कमरे में शीशे की कोठरी में जवाहिरों की खूब सजावट है। इसी में जवाहिरों से जड़े हुए सम्राट् के

कई मुकुट रखे हैं। उनमें से एक में वह प्रसिद्ध भारतीय बड़ा हीरा 'कोहेनूर', जो पहले मोगल बादशाहों के पास था, जड़ा है। उसी के

लंदन का धरहरा

पास इस कोहेनूर की, पहले के आकार की, नमूने की बहुत बड़ी प्रति अलग भी दिखलाई गई है। इसके अतिरिक्त और कई राज-मुकुट हैं जिनमें बड़े बड़े बहुमूल्य हीरे तथा अन्य मनोहर रत्न जड़े हैं। इनमें कई अच्छे सुंदर रंगवाले पन्ने और माणिक साधारण दृष्टिवालों के लिये बड़े मनोहर हैं। उनका मूल्य कूतना तो बड़े बड़े जौहरियों तथा विशेषज्ञों का ही काम है।

इसी काँच की कोठरी में राजदंड (असा) रखे हैं जिन पर बहुत बड़े खूब चमक-दमकवाले हीरे और पन्ने लगे हैं। हाथी-दाँत की लम्बी एकपोरी छड़ियाँ, सुवर्ण के थाल तथा अन्य अँग-

रेजी ढंग के बर्तन श्रेणीबद्ध सजे हैं। बिजली का प्रकाश इन पर ऐसा डाला गया है कि इनका सौंदर्य कई गुना बढ़ जाता है। राज्याभिषेक के कई बहुमूल्य सामान भी इस स्थान पर प्रदर्शित हैं। कई बड़े सुंदर चाँदी के नकाशीदार और सादे बर्तन सोने की कलई के तथा गंगाजमुनी भी यहाँ सजे हैं। इनके अतिरिक्त कई प्राचीन ऐतिहासिक रत्न और पदक इत्यादि भी दिखाए गए हैं। पाँच और भीतरी कमरे हैं जिनको वहाँ का रक्षक कहने पर दिखा देता है। इसके बाहर दूसरी ओर हथियारों, तोपों, बंदूकों, जिरहबक्तरों इत्यादि का बहुत अच्छा संग्रह कई बड़े बड़े कमरों में तीन मंजिलों तक सजा है। इनमें समय-विभाग तथा राजत्व-काल के अनुसार श्रेणियाँ बनाई गई हैं जिनके द्वारा सुगमता से यह मालूम हो जाता है कि कैसे परिवर्तन होता आया। इस टावर के कई नमूने भिन्न भिन्न समय के बने हैं जिनसे इसके रूपांतर का ज्ञान होता है।

इसके अन्य ऐतिहासिक स्थान भी हैं जहाँ बड़े बड़े राजा-रानी इत्यादि बंदी बनाकर कारावास में रखे गए थे और वह स्थान भी है जहाँ उनको प्राणदंड दिया गया था। दीवारों पर कैदियों के हाथ के लिखे हुए चिह्न अब तक दिखाए जाते हैं। इस प्रकार के कई ऐतिहासिक स्थान यहाँ हैं। इसमें पलटन भी रहती है। इसके बाहर नदी पर दो-मंजिला बहुत बड़ा पुल है जो सन् १८८६–१८६४ में, १४ लाख ६० हजार पौंड (दो करोड़ रुपए) की लागत से, बना है। जहाजों के जाने के समय इसका निचला हिस्सा पेंच द्वारा उठा दिया जाता है।

मालबर्न कालेज

२० जून को रेल से बहुत सबेरे हम लोग मालबर्न नगर गए। यह एक छोटा सा सर्वांगपूर्ण नगर पहाड़ी पर बसा है। यहाँ

की जन-संख्या सत्रह हजार के करीब है। यहाँ जाने का मुख्य उद्देश्य अपने पुराने मित्र श्री एडविन ग्रीव्स से मिलना था। ये काशी में कई वर्ष तक पादरी थे। नागरीप्रचारिणी सभा काशी की इन्होंने बड़ी सेवा की है। वहाँ जाते समय रास्ते का दृश्य बहुत ही मनोहर पाया। गाँवों के खेत खूब हरे भरे तथा मेम और साहब लोग परिश्रम से खेती का काम करते दीख पड़े। इनका काम कलों द्वारा बहुत होता है। स्टेशन पर ७४ वर्ष की अवस्थावाले वृद्ध ग्रीव्स मिले। उन्होंने अपनी सुंदर कुटिया में ले जाकर हम लोगों को अपनी धर्मपत्नी तथा अन्य कुटुंबियों से मिलाया और अपना छोटा सा सुंदर बगीचा दिखाया जिसमें फल-फूल तथा हरी तरकारियाँ पैदा होती हैं। उन्होंने सुस्वादु फलाहारी तथा अनाजी भोजन द्वारा बड़ा सत्कार किया और संग ले जाकर यहाँ का कालेज दिखाया।

इसको स्थापित हुए ६४ वर्ष हुए। यहाँ के हेड मास्टर प्रेस्टन महोदय से मिले। यहाँ के छात्र तेरह से उन्नीस वर्ष तक की उम्र के हैं। ५७० छात्रों में केवल पाँच बाहर, बाकी ५६५ वहीं छात्रावास में, रहते हैं। इनकी फौजी कवायद तथा सैनिक शिक्षा देखकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। फौजी वर्दी में बाजों के साथ विस्तृत मैदान में इनकी कवायद हो रही थी। ये किसी पल्टन से कम नहीं मालूम होते थे। करीब दो सौ पौंड सालाना व्यय हर लड़के के संरक्षक को देना पड़ता है। चालीस के करीब अध्यापक हैं। ११ छात्रावास हैं जिनको "हाउस" (घर) कहते हैं। पचास-साठ विद्यार्थी एक एक घर में रहते हैं। हर घर में एक अध्यापक (हौस मास्टर) रहता है। ये सब एक लंबे बड़े कमरे में रात को सोते हैं जिसे डार्मिटरी कहते हैं और इनके पढ़ने इत्यादि का स्थान अलग

होता है। यहाँ के विद्यार्थियों में से ४५७ युवक सन् १९१४-१८ वाली लड़ाई में काम आए। इस कालेज के साथ एक बड़ा गिरजा-घर ७०० आदमियों के एक साथ प्रार्थना करने लायक, सुंदर सागवान की लकड़ी का बना है, जिसमें उभरी नकाशी बहुत अच्छी है। वाचनालय और पुस्तकालय भी बहुत सुंदर हैं। पुस्तकालय में भारतवर्ष पर केवल दो पुस्तकें मिलीं। रबर की सीढ़ियाँ और फर्श हैं जिन पर चलने में तनिक भी शब्द नहीं होता। लड़कों के लिये कसरत करना तथा सैनिक शिक्षा में सम्मिलित होना वैसा ही अनिवार्य है जैसा अन्य विषयों की शिक्षा प्राप्त करना। इसका सुंदर विस्तृत मैदान क्रीड़ा तथा व्यायाम के लिये बहुत ही अच्छा है। वर्दी पहने एक शिक्षित चपरासी ने हमें सब घुमाकर दिखाया और समझाया। उसकी जानकारी इतनी अच्छी थी कि हमारे यहाँ कुछ शिक्षक लोग भी उतनी जानकारी नहीं रखते। इस देश में स्कूल के लेखक (क्लार्क) को सेक्रेटरी कहा जाता है।

इस नगर में भी छोटी म्युनिसिपैलिटी द्वारा सफाई, जल-कल, बिजली इत्यादि का प्रबंध बहुत उत्तम है। कई उद्यान हैं जहाँ जन-समुदाय वायु तथा सूर्य-किरणों का सेवन करता है। यहाँ एक बड़े मनोहर उद्यान में झील है जहाँ लोग नौका खेते हैं। एक बड़ा घिरा हुआ तालाब है जहाँ म्युनिसिपैलिटी की ओर से नहाने और तैरने की सुगमता है। इस उद्यान में व्यायाम इत्यादि का भी प्रबंध बहुत अच्छा है। अनिवार्य शिक्षा तो देश भर में है। यहाँ लड़कियों का भी कालेज है और प्रारंभिक शिक्षा की बहुत सी पाठशालाएँ हैं जिनमें दो सहस्र बच्चे शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस प्रकार के प्रसिद्ध कालेज और भी देखे जिनमें ईटन और रगबी बहुत विख्यात है।

ईटन कालेज

यह बहुत पुराना प्रसिद्ध स्कूल है। हमने इसे २५ जून को देखा। इसमें पढ़े हुए विद्यार्थी बड़े ऊँचे ऊँचे पदों पर पहुँचे हैं जिनकी नामावली लकड़ी की दीवारों पर खुदी है। उनमें से दो एक हिंदुस्तान के वाइसराय और गवर्नर भी हुए। बारह तेरह सौ विद्यार्थी इसमें शिक्षा पाते और रहते हैं। यहाँ सत्तर के करीब अध्यापक हैं। विनयन (डिसिप्लिन) के लिये यह बहुत ही प्रसिद्ध है। यहाँ की इमारतें बहुत पुरानी जर्जर हैं और पढ़ने-लिखने के सामान बेंच, डेस्क सब पुरानी चाल के हैं। यदि भारत-वर्ष के इन्सपेक्टर महोदयों के अधीन यह स्कूल कर दिया जाय तो वे तुरंत ही इसे अयोग्य बताकर इसकी समाप्ति करा डालें। जो भवन नए बने हैं वे अच्छे हैं। हर घंटे के बाद लड़के एक कमरे से दूसरे कमरे में जाते हैं। यहाँ के विद्यार्थियों की एक प्रकार की वर्दी होती है, वे काली ऊँची छज्जेदार टोपी पहनते हैं, जैसी लंदन के घोड़ागाड़ी हाँकनेवाले कोचवान पहनते हैं। कई बोर्डिंग-हौसों में लड़के मास्टरों और प्रीफेक्टों की अध्यक्षता में रहते हैं। एक साथ खाना-पीना होता है।

गिरजाघर जाना भी अनिवार्य है। इन्हें अच्छी सैनिक शिक्षा भी दी जाती है। यहाँ के विद्यार्थियों में से भी हजार से अधिक गत महासमर में काम आए थे जिनके नाम स्मारक रूप से दीवारों पर अंकित हैं। गिरजाघर में भी इनके स्मारक हैं। अध्यापक-गण युनिवर्सिटी-गौन और टोपी पहने हुए अध्यापन का काम करते हैं। यहाँ की पढ़ाई में खर्च बहुत होता है, इसलिये इसमें पैसेवालों के ही बालक भेजे जाते हैं। स्याम देश के राजा का भतीजा यहाँ पढ़ रहा है। हेड मास्टर के कमरे में, जो पुराने ढंग का बना है

और जिसमें हवा और रोशनी कम आती है, अलमारी के भीतर एक झाडू (Birch) रहठे या झाऊ की तरह की लकड़ी की है। उसके द्वारा भारी अपराधी लड़के को हेड मास्टर दंड देते हैं। इस संस्था के संबंध में छोटो-बड़ी अनेक पुस्तकें मिलती हैं।

यह स्कूल अपने कठोर शासन के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ के हेड मास्टर प्रतिदिन अपने सहायक अध्यापकों की सभा करते हैं जिसमें हर एक अध्यापक अपनी कक्षा की अवस्था हेड मास्टर को सूचित करता है। जिस समय हम इस स्कूल में पहुँचे, अध्यापकों की सभा होनेवाली ही थी। स्कूल, बोर्डिंग-हाउस और प्ले-ग्राउंड दिखलाने के लिये हमारे साथ एक विद्यार्थी कर दिया गया। ईटन में यह नियम है कि प्रतिदिन एक विद्यार्थी क्लास छोड़कर हेड मास्टर की सेवा के लिये तत्पर रहता है। उसको प्री-पास्टर (Pre-postor) कहते हैं। जो विद्यार्थी हमारे साथ भेजा गया था, वह उस दिन प्री-पास्टर था।

यहाँ के हेड मास्टर का व्यवहार हम लोगों के प्रति रूखा था, यद्यपि हिंदुस्तान से चलने के पहले और ईटन पहुँचने के दो दिन पहले तक हम लोगों से पत्र-व्यवहार हो चुका था और एक प्रतिष्ठित अँगरेज पादरी ने, जो ईटन में पहले अध्यापक रह चुके थे, पत्र द्वारा यहाँ के हेड मास्टर से परिचय करा दिया था। कृतज्ञतापूर्वक इतना लिख देना आवश्यक है कि अन्य स्कूलों के अधिकारियों ने सारे योरप में हम लोगों का बड़ा सत्कार किया।

विंडसर कैसिल (राजमहल)

इसको भी ईटन यात्रा में देख लेना चाहिए। नदी-किनारे यह महल बड़ी ऊँचाई पर बना है। सम्राट् के यहाँ रहते

समय भीतरी भाग देखने के लिये जनता नहीं जाने पाती। फाटक पर बड़े रोबदाब के सिपाहियों का पहरा रहता है जो दर्शकों को
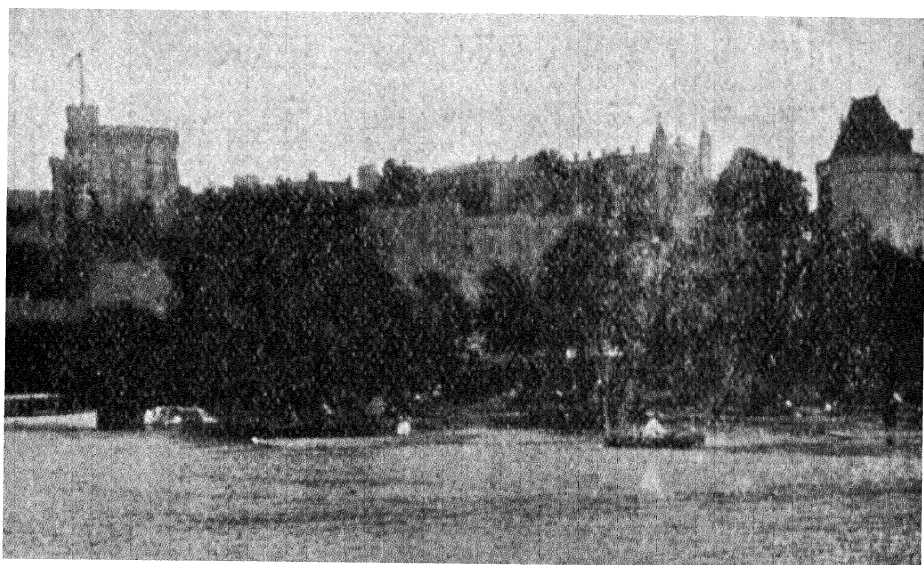
विंडसर कैसिल (राजमहल)

भीतर जाने के लिये बता देते हैं। बाहरी भाग में घूमकर सुंदर उद्यान इत्यादि सब देख सकते हैं। नदी का दृश्य इसके पुश्ते पर से अच्छा देख पड़ता है। लोग नदी में नौका और स्टीमर पर सैर करते हैं। कस्बे में अच्छे अच्छे भोजनालय, उपाहार-गृह तथा होटल हैं।

रगबी कालेज

यह भी ईटन की तरह एक बड़ा प्रसिद्ध स्कूल है। इसको हमने २ जुलाई को देखा। यहाँ के अनुभवी हेड मास्टर महोदय ने पूरी तरह से यह संस्था दिखलाई। इसमें ६३० बालक पढ़ते हैं जिनमें तीस बाहर और छः सौ छात्रावास में रहनेवाले हैं। यहाँ की शिक्षा-सामग्री भी हमारे भारतीय शिक्षा-विभाग के प्रतिकूल ही है। पुरानी चाल के डेस्क तथा बेंच इत्यादि काम में लाए जाते

हैं। कितने ही अध्यापक बिना विशेष शिक्षा प्राप्त किए हुए हैं जिनमें कोई भेद-भाव नहीं किया जाता। यहाँ का विस्तृत मैदान खेलने और कसरत के लिये बहुत अच्छा है। चालीस अध्यापक हैं। आठ अलग अलग बोर्डिंग-हौस हैं जिनमें एक एक हौस-मास्टर और एक एक सहायक होते हैं। लड़के यहाँ भी डार्मेटरी में सब एक साथ अलग अलग पलँग पर बड़े बड़े हालों में सोते हैं। पढ़ने और खाने का स्थान बिलकुल अलग है।

पर्स और लीज स्कूल

जिस दिन हम लोग कैंब्रिज गए थे उस दिन वहाँ ये दोनों प्रसिद्ध स्कूल भी देखे थे। पहला तो बहुत पुराना, तीन सौ वर्ष से अधिक का, है; किंतु दूसरा नया है। पर्स में दो विभाग हैं। एक ऊँचा दूसरा प्रारंभिक जिसमें करीब पाँच वर्ष की उम्र से ही बच्चे भर्ती हो जाते हैं और मेमों द्वारा शिक्षा पाते हैं। छोटी उम्र में इनकी पढ़ाई चित्रों, खिलौनों इत्यादि द्वारा रुचिकर बनाई जाती है और ये स्वयं भी खिलौने चित्र बनाते हुए पढ़ते हैं। यहाँ के सब बालकों की टोपी एक ही तरह की होती है।

लीज स्कूल सायंस तथा इंजिनियरी की शिक्षा के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ के विद्यार्थी ऊँचे दर्जे की इंजिनियरी और डाक्टरी के कालेजों में सुगमता से कम समय में डिग्री प्राप्त कर लेते हैं। यहाँ का सामान नए ढंग का है। इसमें संग्रहालय इत्यादि भी हैं जिसके द्वारा शिक्षा में सुगमता होती है।

पार्लमेंट हिल हाई स्कूल

यह लड़कियों का हाई स्कूल है। इसे हमने ३ जुलाई को देखा। इसमें स्त्रियाँ ही शिक्षिका तथा प्रधानाध्यापिका हैं। लड़कियाँ खूब कसरत करती हैं। इन्हें पढ़ाई के साथ सायंस, सीना, सुई

के बेल बूटे का काम, गाना, भोजन बनाना, चित्रण-कला इत्यादि गृहस्थी के सभी काम सिखाए जाते हैं। यहाँ की शिक्षा-प्राप्त बालिकाएँ दूकानों तथा व्यवसाय के कार्यालयों में सब काम करने योग्य होती हैं। यूरोप में बहुत सा काम स्त्रियों के द्वारा होता है। रेलघरों, दफतरों, होटलों इत्यादि में सभी जगह ये बड़ी निपुणता से काम करती हैं और मर्दों से किसी प्रकार कम योग्यता की नहीं होतीं। कसरत द्वारा शारीरिक बल की भी वृद्धि हो रही है और आगे चलकर संग्राम में मर्दों की तरह कठोर काम भी ये करेंगी।

एवेरी ट्रेनिंग कालेज

यह लड़कियों को अध्यापन-कार्य की शिक्षा देने का कालेज है। एलथम पार्क रेलवे स्टेशन के पास लंदन कौंटी कौंसिल द्वारा यह संचालित है। इसमें तीन सौ से अधिक लड़कियाँ अध्यापन का ढंग सीखती हैं। इनमें अस्सी तो ऐसी हैं जो सबेरे आतीं, यहीं काम सीखतीं, खातीं और संध्या समय अपने घरों को चली जाती हैं। बाकी ढाई सौ के करीब यहीं बोर्डिंग हौस में रहती हैं। इसमें जूनियर (नीचे) और सीनियर (ऊँचे) दर्जे की शिक्षा दी जाती है। ऐसा एक और कालेज इस कौंसिल द्वारा ही संचालित है।

इस कालेज का ही अंग-स्वरूप निर्बल बालकों का आश्रम है जिसमें सात वर्ष से सोलह वर्ष की अवस्था तक के अनाथ या निरा-श्रय बालक रहते और शिक्षा पाते हैं। इस कालेज का भवन बड़ा भारी महल है जिसे एक धनाढ्य इंजीनियर ने बनवाया था। इसमें बड़ा भारी हाल है जिसमें बड़े सुंदर रंगीन हरे तथा अन्य रंगों के संगमर्मर के खंभे लगे हैं। हर एक खंभे का मूल्य पंद्रह हजार रुपए के करीब बताया गया। यहाँ के अनाथ बच्चों की देख-रेख

यहाँ की महिलाएँ मातृवत् करती हैं और इन बालकों को शिक्षा देकर या तो कहीं काम में लगा दिया जाता है या योग्यता अधिक हुई और होनहार बालक प्रतीत हुआ तो उसे और उच्च शिक्षा के लिये बड़े विद्यालय में भेज दिया जाता है।

फार्निंघम बाल आश्रम

डार्टफोर्ड स्टेशन से तीन चार मील की दूरी पर यह उपयोगी विद्यालय एक पहाड़ी पर है। यहाँ अवस्था के अनुसार बालकों की श्रेणियाँ हैं। यह आश्रम अनाथ बालकों के लिये है। इसमें १७ वर्ष की अवस्था तक के बालक रहते हैं। पढ़ने-लिखने के अलावे बालकों को खेती, बढ़ईगिरी, जूता बनाना, सिलाई, भोजन बनाना, छापाखाने इत्यादि के प्रायः सभी काम सिखाए जाते हैं।

१७ वर्ष की अवस्था को पहुँचते ही इन्हें काम में लगा दिया जाता है और ये अपनी जीविका उपार्ज़न करने लगते हैं। यहाँ से जाने के समय इन्हें एक जोड़ अच्छे कपड़े और सामान से सुसज्जित करके काम में लगा दिया जाता है। यहाँ बहुत अच्छा तालाब नहाने और तैरने के लिये भीतर छाया हुआ बना है जिसमें गर्म या ठंढा, जैसा मन हो, पानी भर दिया जाता है। हर विभाग में उस विभाग के एक एक, दो दो ज्ञाता अध्यापक के साथ सब काम लड़कों के द्वारा कराया जाता है। यहाँ की आवश्यकता का प्रायः सभी सामान यहीं तैयार होता है।

इस संस्था को खुले अभी केवल तीस वर्ष हुए हैं। इसके मुख्य संचालक डाक्टर जान आर्थर बेल महोदय हैं जो इसके लिये धन भी एकत्र करते हैं। इसके संचालन का श्रेय इन्हीं को है। इस संस्था में करीब पाँच सौ बालकों का प्रबंध किया जाता है। ऐसी कई और भी संस्थाएँ चल रही हैं और यह काम धनी लोगों

के दान द्वारा हो रहा है। इन लड़कों के सोने के लिये भी बड़ा हाल बना है। सबकी सफाई बालकों द्वारा ही होती है।

इसेक्स होम

चेम्सफोर्ड स्टेशन से थोड़ी दूर पर यह बहुत सुंदर स्कूल है। इसे हमने २४ जून को देखा। इसमें मजिस्ट्रेटों या कमेटी द्वारा भेजे हुए ऐसे ही लड़के लिए जाते हैं जो सुधार के लिये भेजे गए हों। इसमें ७ से १४-१५ वर्ष तक के लड़के करीब पाँच सौ के होंगे, जिन्हें थोड़ा पढ़ना-लिखना किंतु अधिकतर हाथ से काम करना सिखाया जाता है। बढ़ई, दर्जी, मोची, बावर्ची वगैरह का तथा खेती का काम सिखाकर वे अपना गुजर करने लायक बना दिए जाते हैं। एक संस्था है जिसके द्वारा इस प्रकार के चालीस स्कूल चल रहे हैं। इसमें भी ४०-४० लड़कों के एक साथ सोने के बड़े बड़े कमरे एक एक अध्यापक के सुपुर्द हैं। इसेक्स कौंटी का छोटा सा मुख्य नगर चेम्सफोर्ड बड़ा ही साफ-सुथरा कस्बा है। इसमें खेती का एक बड़ा भारी स्कूल, लड़कियों का हाई स्कूल तथा चार ग्रामर स्कूल चल रहे हैं।

नवीन प्रणाली का स्कूल

फार्नहम रेलवे स्टेशन से तीन मील पर यह नए ढंग का स्कूल है। इसे हमने १८ जून को देखा। इसमें बच्चों को महिलाएँ वृक्षों के नीचे या कमरों में खेलाते हुए New Education Fellowship के सिद्धांतों के अनुसार शिक्षा देती हैं। इस स्कूल का स्थान दो सौ एकड़ का बहुत ही मनोहर है। पहाड़ी के ऊपर चौतरफा सुहावना दृश्य है। इसके पीछे झील है। उम्र के अनुसार श्रेणियाँ बनी हैं। बालकों को यहाँ भी सब काम सिखाया जाता है। जिस बालक की जैसी रुचि देखी जाती है उसी ढंग की शिक्षा उसे दी

जाती है। यह संस्था दान-द्रव्य के ब्याज से चल रही है। यहाँ एक स्त्री खँजड़ी बजाकर उसके ताल के अनुसार बालकों को नंगे पैर घास पर दौड़ाती और कसरत करना सिखाती थी। यहाँ की शिक्षा का सिद्धांत यह है कि बच्चों में जिस प्रकार की प्रवृत्ति हो उसी प्रकार की शिक्षा उन्हें देनी चाहिए। इसमें, लड़के लड़कियाँ साथ पढ़ते और सभी प्रकार के काम सीखते हैं। यहाँ का पाठ-क्रम यहीं के शिक्षक लोग निर्धारित करते हैं। कोई बाहरी हस्तक्षेप नहीं होता। बढ़ई इत्यादि का उपयोगी काम सिखाया जाता है। लड़के जल्द काम करके कमाने लायक स्वावलंबी बनाए जाते हैं।

गोशाला

इस स्कूल के पास ही एक साहब खेतिहर की गोशाला बहुत ही स्वच्छ थी। गायों की देख-रेख, सफाई वगैरह प्रशंसनीय थी। इनके यहाँ दूध मक्खन का भी व्यवसाय है। कलों द्वारा मक्खन निकालकर बचा दूध गायों के बच्चों को पिलाते हैं। पैदा होने पर एक महीने तक तो थन से दूध पिलाते हैं फिर इसी दूध को पिलाकर पालते हैं। यहाँ खेती के काम में बैल नहीं लगाए जाते। घोड़ों, मशीनों या मोटरों द्वारा हल जोतने इत्यादि का काम लिया जाता है। गाय दूध मक्खन के लिये ही पालते हैं। बछिया को पालकर गाय बनाते हैं, किंतु बछड़ों को कसाई के हाथ बेच देते हैं। इनके यहाँ चार ऐसे सुंदर होनहार बछड़े थे जिन्हें यह कसाई के हाथ बेचकर अच्छा दाम पाने का घमंड कर रहे थे। ऐसे बछड़े भारतवर्ष में खूब काम करने के योग्य होते किंतु यहाँ ये मांसाहारियों के पेट पालने के काम में ही लाए जायँगे। पूछने पर जान पड़ा कि यहाँ शीतप्रधान देश होने के कारण बैलों से खेती का काम नहीं हो सकता, न वे यहाँ का जाड़ा सहन कर सकते हैं।

प्रौढ़ पाठशालाएँ

लंदन में और बाहर भी युवकों तथा दलितों के सुधार के लिये बहुत काम हो रहा है। बड़ी उमरवाले पुरुषों तथा स्त्रियों को शिक्षा देने के लिये भी बहुत सी संस्थाएँ हैं। इनका केंद्रीय कार्यालय लंदन में है और इसका स्कूल नं: ७ और ८ यूस्टन रोड पर है। इस स्कूल के भवन में उन्नीस कार्य्यालय हैं। इस स्कूल में प्रति सप्ताह पारी पारी से पहले के चुने हुए विषयों पर अच्छे अच्छे योग्य व्यक्ति व्याख्यान देते और प्रश्नोत्तर करते हैं। इस संस्था द्वारा बहुतों को शिक्षा मिली है और कितने ही लोग सुधरे हैं। कहा जाता है कि पचास वर्ष पहले जिन घरों में कलवरिया और व्यभिचार के अड्डे थे उनमें ऐसे स्कूल खोलकर वहाँ आनेवालों को शिक्षा दी जाने लगी और आज दिन ये स्थान पवित्र सुधार के मंदिर हैं।

इसके कार्यकर्त्ता प्राय: ईसाई पादरी और महिलाएँ हैं। हम लोग २७ जून को प्रौढ़ पाठशाला में गए थे। उस दिन श्रीमती पार्कर का व्याख्यान मादक-द्रव्य-निषेध पर था। उन्होंने व्याख्यान में अच्छी तरह दिखलाया कि मदिरा का प्रचार इँगलैंड में कितना भीषण रूप धारण कर चुका है और उससे बचने के लिये स्त्रियों को इस काम में उद्यत होने की कितनी आवश्यकता है। हम लोगों ने भी इस संबंध में अपने विचार, अनुभव तथा भारत में यह कितना बुरा माना जाता है आदि बताया। श्रीमती पार्कर ने नीचे लिखी संख्या द्वारा मदिरा-प्रचार की भीषणता दिखलाई थी जिससे स्पष्ट है कि—

विलायत में शराब

का खर्च बहुत ज्यादा है। शराब की दूकानों पर भीड़ लगी रहती है। दूकानें भी बहुत हैं। इनका इश्तहार भिन्न भिन्न रूपों में सुरंग रेलगाड़ियों में, स्टेशनों पर, गली गली में चिपका रहता

है। रविवार को गिरजाघरों के बदले बहुत लोग शराब की दूकानों पर ही जाते हैं। बिलकुल न पीने तथा बहुत कम पीने का प्रचार करनेवाली संस्थाएँ बढ़ रही हैं। कितने ही लोग बिलकुल नहीं या बहुत कम पीनेवाले भी हैं। तिस पर भी ग्रेट ब्रिटेन में—जिसकी आबादी ४ करोड़ ४१ लाख ८५ हजार है—सन् १९२७ ई० में शराब पर कुल २९ करोड़ ८८ लाख पौंड व्यय हुआ था, जो प्रति व्यक्ति ६ पौंड १५ शिलिंग ३ पेंस औसत में पड़ता है। यह रकम करीब चार अरब रुपए के बराबर है, जो प्रति व्यक्ति सवा नब्बे रुपए साल पड़ता है। जन-संख्या में कितने ही बच्चे होंगे, कितने ही बीमार, अपाहिज, गरीब तथा सिद्धांत के अनुसार न पीनेवाले या कम पीनेवाले भी होंगे। इससे अनुमान किया जा सकता है कि ज्यादे पीनेवालों या औसत पीनेवालों का इसमें कितना व्यय पड़ता होगा। इस औसत सालाना व्यय में तो कितने ही भारतवासी अपना जीवन निर्वाह कर सकते हैं और अधिकांश करते ही हैं। कितने ही तो इतना पैसा पैदा भी नहीं कर पाते। विलायती शराब का प्रचार धीरे धीरे भारतवासियों में बढ़ने लगा है जिसका परिणाम बहुत भयानक दीख पड़ता है।

जाति-भेद

यों तो विलायत में जात-पाँत का भेद भाव नहीं माना जाता किंतु यहाँ की दर्जेबंदी कम नहीं है। यहाँ का समाज प्राय: तीन श्रेणियों में विभक्त है—(१) धनाढ्य लोग, (२) मध्यम श्रेणीवाले तथा (३) श्रमजीवी या मजूर लोग। इनका भेद-भाव प्राय: वैसा ही कठोर है जैसा भारत के जाति-भेद का है। श्रमजीवियों की दशा बहुत शोचनीय है। इनकी अधिक आबादी शहर के पूर्वी भाग में है। इन लोगों के रहने का स्थान बहुत गंदा, रहन-सहन बहुत भद्दा,

लड़कों की नाक बहा करती है। ये जुआ खेलते हैं, मैले कपड़े पहने रहते हैं। यहाँ के लोग अनजान लोगों को घेर लेते हैं जैसा कि इटलीवाले करते हैं। दिन के समय जब लोग बेकार होते हैं, अपने घर के बाहर जमा हो जाते हैं। उनका उच्चारण विचित्र होता है इसलिये उनकी अँगरेजी समझना कठिन होता है। वे लिखने में भी व्याकरण की और हिज्जे की भूल करते हैं। अनि-वार्य शिक्षा हो जाने से अब यह त्रुटि कम हो रही है। मदिरा का प्रचार बहुत है। इन्हें मजूरी या नौकरी का पैसा हर शुक्रवार को मिलता है और शनिवार तथा रविवार को ये दिवाली मनाते हैं। कबूतर के दर्बे की तरह एक एक छोटी कोठरी में (Slum) साहब, मेम, उनके छ: छ: सात सात बच्चे जीवन-निर्वाह करते हैं। उसी एक कोठरी में खाना, कपड़े धोना, सामान रखना, रात को सोना इत्यादि सब काम करना पड़ता है। ये अपना जीवन बड़ी गरीबी के साथ निबाहते हैं, तो भी भारतवासी गरीबों से ये अच्छे हैं।

इनमें विद्या का प्रचार करने, सफाई सिखाने और बुराइयों को दूर करने या सुधारने के लिये कई संस्थाएँ हैं जिनमें लोगों ने अपना सर्वस्व दे, द्रव्य और शरीर से, इनकी सेवा की है और कर रहे हैं। इनमें मिस लीस्टर का नाम बहुत ही प्रसिद्ध है। इन लोगों की गंदगी तथा दुर्दशा पर "मदर इँगलैंड" नाम की बड़ी भारी पोथी लिखी जा सकती है। यहाँ रेलगाड़ियों में थूकने की मनाही बहुत कड़ी है। थूकने से जुर्माना होता है किंतु इतने पर भी ईस्ट एंड के लोग चुरुट पीते और थूका करते हैं। हाँ, आँख बचाकर कोने अँतरे में, रेलगाड़ियों पर तथा सड़कों और पटरियों पर सभ्य कह-लाने वाले लोग भी प्राय: थूकते पाए गए हैं। कदाचित् मिस मेयो ने

इन लोगों का हाल नहीं देखा या इनके बारे में उनकी लेखनी नहीं उठी। धनाढ्य या मध्यम श्रेणी का यदि कोई इस समाज में विवाह कर लेता है तो वह ऊपर से गिरे हुए बंदर की तरह बहिष्कृत समझा जाता है। श्रमजीवियों की आबादी सौथ ईस्ट लंदन की तरफ भी है।

जैसे गरीबों के अलग महल्ले हैं वैसे ही धनाढ्यों के रहने के भी कई सुरक्षित महल्ले हैं। एक तो पैलेसग्रीन, केनसिंगटन पैलेस रोड है। यह बड़ी लम्बी स्वच्छ सड़क है जिसके दोनों छोर पर फाटकबंदी है। इसी सड़क के किनारे धनी लोगों के रहने के बड़े बड़े महल हैं। इस सड़क पर बड़ौदा-नरेश का नं० २४ का भवन 'बड़ौदा हौस' है। इस सड़क से बाहरी लोगों की मोटरें नहीं जाने पातीं। इस पर जाने ही से मालूम होता है कि यह महल्ला बड़े धनिकों का है। एक ओर बहुत से महल बने हैं, बीच में लखरांँव-सहित स्वच्छ सड़क है और दूसरी ओर हरी घास की सुहावनी भूमि है। सड़क के दोनों छोरों पर पहरा रहता है।

पार्लमेंट

ब्रिटिश-साम्राज्य का शासन पार्लमेंट द्वारा होता है। अभी नया चुनाव हुआ है जिसमें श्रमजीवी सिद्धांतवाले अधिक संख्या में चुने गए हैं। देखना है, भारत को ये अपना कैसा परिचय देते हैं। इनकी सभा का स्थान हौसेज आव पार्लमेंट है। इनमें दो विभाग हैं—लार्ड सभा और साधारण सभा। जब सभा होती रहती है तब विशेष आज्ञापत्र द्वारा और अन्य समय योंही जनता सभा-भवन देख सकती है। यह बहुत बड़ा भवन है जिसके एक भाग में लार्ड सभा और दूसरे में साधारण सभा के बैठने का प्रबंध है।

लार्डोंवाली सभा में सम्राट् और सम्राज्ञी के सिंहासन हैं और दोनों ओर सदस्यों के लिये गद्देदार जगहें बनी हैं। बीच में क्लर्क

पार्लमेंट भवन

बैठता है और नियम आदि की पुस्तकें रहती हैं। लकड़ी के चित्र-कारी के काम की दीवारें हैं। बड़े बड़े प्रसिद्ध राजनीतिज्ञों की मूर्तियाँ, उनके कार्यों के संक्षिप्त उल्लेख सहित, मध्यवर्ती हाल में और अन्यत्र जहाँ तहाँ बनी हैं। साधारण सभावाले हाल के बीच में सभापति (स्पीकर) का स्थान है और उसके सामने क्लर्कों की मेज है। दोनों ओर सदस्यों के बैठने की जगह है और ऊपर गैलरी में दर्शकों तथा समाचार-पत्रों के प्रतिनिधियों के लिये स्थान है। साधारण सभा-भवन के बाहर भी प्रमुख राजनीतिज्ञों—ग्लैडस्टन, अर्ल रसेल, नार्थकूट, क्रामवेल इत्यादि—की मूर्तियाँ बनी हैं।

टामस रो, जिन्होंने सन् १६१४ में भारत के मोगल सम्राट् से मिलकर अँगरेजों के लिये रास्ता खुलवाया था, बर्क और पिट इत्यादि ऐतिहासिक पुरुषों की भी विशाल मूर्तियाँ हैं। यह भवन ग्यारहवीं शताब्दी का बना हुआ है। इसमें एक और गिरजाघर भी है।

हम लोगों ने एक सदस्य से पत्र लिखवाया। भारत-सचिव के कार्य्यालय से तीन तीन टिकट एक एक दिन के वास्ते मिले। ऐसे ही हर देश के सचिव अपने देश से संबंध रखनेवाले दर्शकों को नियत संख्या में टिकट देते हैं। उनको लेकर हम लोग पार्लमेंट का अधिवेशन १५ जून को देखने गए। दर्शकों की भीड़ स्थान से अधिक थी। डेढ़ घंटा प्रतीक्षा करने पर हम लोगों की पारी आई तब शांतिपूर्वक दर्शकों के स्थान में जा बैठे। करीब एक घंटे तक बहस सुनी और चले आए।

वेस्ट मिन्स्टर ऐबी

इसके पास ही वेस्ट मिन्स्टर ऐबी है। यह एक प्राचीन ऐतिहासिक धार्मिक स्थान है। यह गिरजाघर है। इसका हाल बहुत बड़ा हजारों आदमियों के बैठने के योग्य है। इसके बगल-वाले स्थान में यहाँ के सम्राटों की समाधियाँ हैं। इसी गिरजा-घर में यहाँ के सम्राटों का राज्याभिषेक होता है। इसमें बड़े बड़े कवियों, राजनीतिज्ञों, वीर पुरुषों इत्यादि की समाधियाँ तथा उनके स्मारक हैं। गत जर्मन महासमर में जिन्होंने अपना जीवन अपने देश के लिये अर्पण कर दिया था उनके भी यहाँ स्मारक हैं। इसके भीतर जाने पर तीन जगह कुल मिलाकर सवा शिलिंग टिकट लगता है। एक स्थान पर तीन पेंस देकर ऐबी म्युजियम में प्राचीन

वस्तुओं का संग्रह और बादशाहों की मूर्तियाँ देख सकते हैं। एक स्थान "चैप्टर हैास" है जिसमें जूतों के ऊपर खास जूता पहनकर जाना होता है जिससे उसका फर्श ख़राब न हो। ऐसा योरप के अनेक सुन्दर भवनों के अन्दर जाने के समय करना पड़ता है। उस गृह में मध्यकालीन ईंटें, दीवारों पर तसवीरें और काँच की अलमारियों में सनदें तथा मुहरें भिन्न भिन्न राजत्व-काल की संचित हैं। एक शिलिंग देकर दो और स्थानों को देख सकते हैं। एक पुराने बादशाहों और राज-वंशवालों की कबरों का स्थान है जिसके हाल की छत बहुत विचित्र है। बहुत मोटी मोटी मोमबत्तियाँ वहाँ लगी हैं। दूसरे स्थान पर जाकर बादशाहों की मोम की मूर्तियाँ वस्त्रा-भूषणों से सजी हुई दिखाई जाती हैं। वह प्राचीन कुर्सी भी एक जगह रखी है जिस पर राज्याभिषेक किया जाता है। दूर दूर से अध्यापक लोग विद्यार्थियों की टोलियाँ लाकर इन स्थानों को दिखाते, भ्रमण कराते और पुस्तकों का हवाला दे देकर समझाते रहते हैं। इस कार्य को शिक्षा का आवश्यक अंग

वेस्ट मिन्स्टर ऐबी

समझा जाता है। इनसे शुल्क नहीं लिया जाता और इनको मार्ग-व्यय के लिये सरकारी सहायता मिलती है।

लंदन शहर की दूकानें

लंदन शहर टेम्स नदी के उत्तर दक्षिण दोनों किनारों पर बहुत दूर तक बसा है। इस नदी पर बीस से अधिक पुल हैं। नदी के नीचे से सुरंग का पुल भी है जिसके द्वारा रेल पानी के नीचे नीचे होकर इसे पार करती है। इसकी मुख्य सड़कें--जिन पर सदा ही भीड़ रहती है—आक्सफोर्ड स्ट्रीट, टाटनहम कोर्ट रोड, न्यू आक्सफोर्ड स्ट्रीट, चेयरिंग क्रास रोड, होवर्न, हाई होवर्न, होवर्न वायाडक्ट, पिकाडिली इत्यादि हैं, जिन पर बड़ी बड़ी छः छः आठ आठ मंजिलों की इमारतें हैं और जिनमें दूकानें, बंक तथा अनेक कार्यालय हैं। बंक तो हजारों की संख्या में हैं। किसी किसी बंक की चार चार पाँच पाँच सौ शाखाएँ हैं। इसी तरह कई दूकानों की भी हजारों शाखाएँ हैं। वूलवर्थ की एक ऐसी दूकान है जहाँ एक से लेकर छः पेंस तक की ही चीजें बिकती हैं। गृहस्थी का सारा सामान तिमंजिली दूकानों में भरा बिकता है। एक एक मंजिल में बेचनेवाली कई सौ मेमें हर विभाग में रहा करती हैं। इस दूकान की शहर भर में पाँच सौ से अधिक शाखाएँ हैं। थोड़ी थोड़ी दूर पर इसकी दूकानें हैं जहाँ हजारों की संख्या में ग्राहकों की भीड़ लगी रहती है। सूई, आलपीन, दियासलाई से लेकर बगीचे, मकान इत्यादि तक आवश्यकता की सभी चीजें यहाँ मिल जाती हैं। इसी प्रकार की अनेक दूकानों द्वारा थोड़े मूल्य की चीजें खरीदनेवालों की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। सबेरे ९ बजे से साढ़े ७ बजे संध्या तक ये दूकानें खुली

रहती हैं। दूकानों की सफाई खूब रगड़-रगड़कर नित्य होती है। यहाँ बहुत बड़ी बड़ी दूकानें भी हैं जिनमें संसार भर की चीजें मिल सकती हैं।

सेलफ्रिज

ऐसी एक विशाल दूकान सेलफ्रिज की है। इसका एक भवन साढ़े पाँच सौ फुट लंबा, करीब डेढ़ सौ फुट चौड़ा, छ मंजिल जमीन के ऊपर और तीन मंजिल जमीन के नीचे बना है। संध्या के ६ बजे तक इसमें हजारों आदमी भिन्न भिन्न विभागों में संसार भर की चीजें बेचा करते हैं। इसमें कई जगह बिजली के पिंजड़ों और दौड़ती हुई सीढ़ियों द्वारा दर्शक तथा ग्राहक उतरा चढ़ा करते हैं। इसी में भोजनालय इत्यादि भी हैं। सबसे ऊपरवाले "टिब्बे" पर से सारे शहर का विचित्र दृश्य दिखाई देता है। पाँचवीं मंजिल पर बड़ा भारी बाग लगा है। उसके एक तरफ बनावटी पहाड़, झरने और झील हैं। घास के हरे फर्श पर फौवारे छूटते रहते हैं। फूलों की क्यारियों में रंग-बिरंग के फूल शोभा देते हैं। बेतार के समाचार का स्टेशन है। रेडियो द्वारा सुहावना बाजा बजा करता है। झीलों में रंगीन मछलियाँ अपने अनेक रूप दर्शाती हैं। ग्राहक-वृंद बैठे आनंद करते और अपनी रुचि के अनुसार खाने-पीने का सामान ले लेकर कपड़े के छातों के नीचे कुर्सियों पर बैठे जलपान करते रहते हैं। सिनेमा और थिएटर भी इसी भवन में हैं। औरतों, मर्दों और बच्चों की आवश्यकता की वस्तुओं के भिन्न भिन्न विभाग हैं। एक पुस्तक-विभाग है, जहाँ अच्छी अच्छी हजारों पुस्तकें बिकती हैं। लिखने-पढ़ने के सामान का विभाग तथा अंतर्विभाग भी है। इसके वर्णन में एक पुस्तक लिखी जा सकती है। कई भवनों में इसके अनेक विभाग हैं। बिजली के प्रकाश द्वारा दीवार पर चलती हुई संसार

की ताजी खबरें भी बाहर खड़े लोग पढ़ा करते हैं। इसमें जाने से कुछ न कुछ खरीदना ही पड़ता है। मन को रोकना असंभव है। इस दूकान में तारघर, डाकघर और टामस कुक का यात्रियों के प्रबंध का भी एक कार्यालय है। इस प्रकार की और दूकानें भी लंदन नगर में हैं।

अन्य दूकानें

एक दूकान ऐसी है जिस पर अंधों की बनाई अनेक चोजें बिकती हैं। विज्ञापन खूब होता रहता है। सभी दूकानों पर अनेक रीतियों से विज्ञापन हुआ करता है। रात को जब दूकानें बंद रहती हैं तब भी बिजली के प्रकाश द्वारा शीशे की दीवारों के भीतर हर प्रकार का सामान, कीमत का लेबुल लगा हुआ, दिखाई पड़ता है। ठीक आदमियों जैसी शकल की मूर्तियाँ कपड़ा पहने विज्ञापन दिया करती हैं। बिजली की कलों द्वारा घूमते हुए विज्ञापन की पोथियों के पन्ने उलटा करते हैं। कहीं विज्ञापन के लिये टाइप राइटर की मशीनें चला करती हैं। विज्ञापन देना भी इन्होंने एक बड़ी भारी कला बना ली है। दूकानों की सजावट की भी शिक्षा दी जाती है। किंतु यहाँ सभी चीजों का दाम बहुत ज्यादा लगता है और वस्तुएँ भी वही मिलती हैं जिनकी बिक्री यहाँ बराबर हुआ करती है। इसका कारण यह है कि दूकानों का किराया, सजावट, सफाई, नौकराना खर्च इत्यादि बहुत ही ज्यादा है।

मेम और साहब लोग सबेरे से ही दूकान खुलने के पहिले सारी दूकान की सफाई इस तरह करते हैं जैसी दीवाली पर भी भारतवर्ष में नहीं की जाती। आपको यदि यहाँ एक जोड़ा धोती लेनी हो तो नहीं मिल सकती यद्यपि लाखों जोड़ा धोतियाँ यहीं के कल, कारखानों से बनकर बाहर बाहर भारतवर्ष में जाती है। हमने चूड़ीदार

पैजामा बनवाना चाहा तो दूकानदार ने कहा कि नमूने के मुताबिक बना तो देंगे किंतु सिलाई के बीस शिलिंग यानी १३॥) लेंगे। तैयार पतलून, जो साढ़े बारह शिलिंग का मिलता है, वैसा ही अपने नाप का उसी कपड़े का बनवाइए तो तीस शिलिंग दाम बैठ जायगा। जो यात्री यहाँ आवें उनको अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ साथ लानी चाहिएँ। मामूली साहब खिदमतगार या मेम दाई पचीस तीस शिलिंग साप्ताहिक पर काम करती हैं। ऊपर से भोजन भी देना पड़ता है। किंतु पढ़ा लिखा होने के कारण यहाँ का एक आदमी भारतीय मजूरों या नौकरों से चौगुना काम करता है। होटलों और घरों की सफाई भी नित्य ही खूब होती है। द्वार पर की सीढ़ियाँ तक नित्य धोई, पोंछी तथा चूने से स्वच्छ कर दी जाती हैं। मेम लोग सबेरे ही से ये काम करने लगती हैं। हाँ, लंदन की चिमनियों द्वारा इतनी कालिख उड़ती है कि सभी मकान काले होते हैं, मानों उन पर हल्का काला रंग पुता हुआ है।

आमोद-प्रमोद

जैसे कामकाज की इतनी भीड़ रहती है वैसे ही आमोद-प्रमोद के भी बहुत साधन हैं। दिन-रात सिनेमा, टाकीज (बोलता हुआ सिनेमा) थिएटर, नाच, गाना, वरायटी (पचमेल तमाशा) इत्यादि हुआ ही करते हैं। इनके टिकट गली गली दूकानों पर बिका करते हैं। उन तमाशाघरों के फाटकों पर भी लंबी, लाइन बँधी, दर्शकों की भीड़ जाती है। जरा भी शोर-गुल धक्कम-धुक्का नहीं होता। सब पारी से, चींटी की लकीर की तरह, चले जाते हैं। यहाँ के साधारण थिएटरघर भी आठ दस मंजिल ऊँचे बने हैं। पाँच पाँच सात सात हजार की भीड़ एक बार हो जाती है। इनके पर्दे, सीन, नाटक, अभिनय-कला सभी प्रशंसा के योग्य होते हैं।

उद्यान

जिस तरह यह शहर बड़ा है उसी तरह यहाँ बगीचे और उद्यान भी बहुत हैं। सबसे प्रसिद्ध हाइड पार्क ३६४ एकड़ का
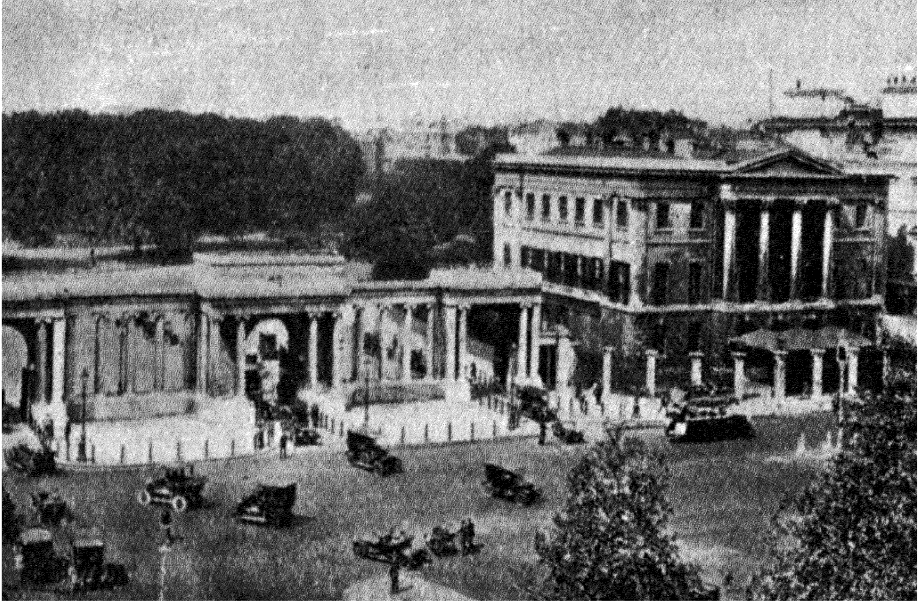
हाइड पार्क

बहुत लंबा चौड़ा उद्यान है, जिसमें नित्य ही हवा और धूप खानेवालों की भीड़ रहती है। शनिवार और रविवार को विशेष भीड़ होती है। रविवार को खुले मैदान यहाँ अनेक विषयों पर व्याख्यान होते हैं। लकड़ी के प्लेटफार्म बना लिए जाते हैं। थोड़ी थोड़ी दूर पर वक्ता खड़े हो जाते हैं और बोलना शुरू कर देते हैं। कभी कभी व्याख्यानदाता से थोड़ी ही दूर पर स्त्रियाँ धार्मिक भजन गाने लगती हैं, परंतु उन सब में लड़ाई नहीं होती। व्याख्यान देनेवाला व्याख्यान जारी रखता है और गानेवाली गाना जारी रखती हैं। सुननेवाले लोग खड़े रहते हैं। एक

दिन हमने बारह सोसाइटियों की तरफ से मर्दों और औरतों को व्याख्यान देते देखा। एक सज्जन बड़े जोर से मुक्तिफौज की ओर से ईसाई धर्म पर बोल रहे थे, परंतु उनके सामने एक भी श्रोता नहीं था। एक स्त्री आयर्लैंड पर व्याख्यान देती थी। इस प्रकार से राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक व्याख्यान रविवार से बराबर होते हैं। भारतवर्ष-संबंधी व्याख्यानों की अपेक्षा अन्य विषयों पर व्याख्यान सुनने लोग अधिक आते हैं।
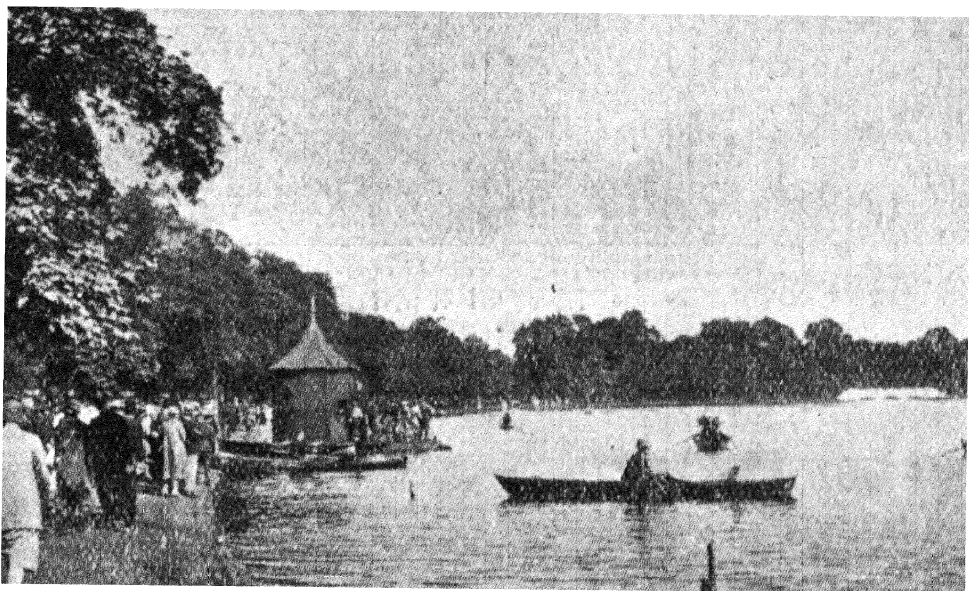
सर्पेंटाइन झील (हाइड पार्क)

रात को यहाँ ऐसे दृश्य देखने में आते हैं कि मुँह मोड़कर हट जाना पड़ता है।

इसमें सर्पेंटाइन नाम की एक बड़ी झील भी है। इसमें लोग तैरते, नाव खेते और नहाते हैं। इस पार्क में संगमर्मर का एक मकान है जो धुएँ से काला हो गया है। हाइड पार्क में

संगमर्मर का मकान

किनारे किनारे एक सड़क घोड़दौड़ के लिये बनी हुई है जिसको
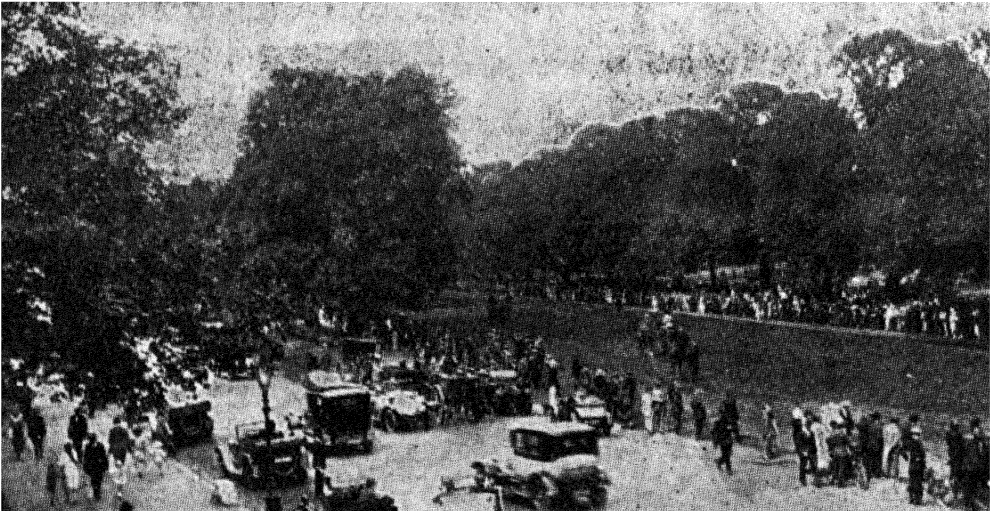
रैटन रो

रौटन रो कहते हैं। झील के किनारे पर एक दूसरी वाटिका में पीटर पैन की मूर्ति है। बच्चे यहाँ आना बहुत पसंद करते हैं। इस मूर्ति के नीचे खरगोश, चूहे, गिलहरी, परी बनी हुई हैं। ऐसे बड़े बड़े सार्वजनिक उद्यानों की संख्या पचासों है। इनके अतिरिक्त शहर भर में कदाचित् ही कोई सड़क या मुहल्ला ऐसा हो जहाँ कोई बगीचा (स्क्वेयर) न हो। महल्ले महल्ले ऐसे स्क्वेयरों द्वारा वायु भी शुद्ध रहती है और उसके पास के रहनेवालों को हरियाली तथा घूमने-फिरने का स्थान भी मिल जाता है। ये छोटे छोटे स्क्वेयर भी कई

पीटर पैन

एकड़ों के होते हैं। इनके चारों ओर लोहे की ऊँची रेलिंग लगी रहती है। फाटकों की ताली पार्क के चारों ओर वाले हर मकान में एक एक रहती है। जिस मकानवाले की इच्छा हुई ताला खोलकर उसमें बैठता, पढ़ता-लिखता, टहलता, हवा और धूप खाता है। किसी से पूछने या कहने की कोई आवश्यकता नहीं। इन स्क्वेयरों में भी प्रायः प्रसिद्ध पुरुषों के स्मारक में मूर्तियाँ बनी हैं, जिनके दर्शन तथा गुणावली पढ़ने से उनकी कीर्तियों का स्मरण हुआ करता है। भावी नागरिकों को इनके चरित्र द्वारा शिक्षा मिलती है और बच्चे इतिहास का बहुत सा अंश इन मूर्तियों द्वारा ही जान जाते हैं।

खाने, पीने और ठहरने का प्रबंध

बाहर से आनेवालों की भीड़ तो ऐसे बड़े नगरों में रहा ही करती है। यहाँ के स्थायी निवासी भी, ऐसे धनाढ्यों को छोड़कर जिनके निजी मकान हैं या जो किराए के मकानों में अपना निजी प्रबंध करके रहते हैं, प्राय: होटलों में रहते और अच्छी तरह जीवन व्यतीत करते हैं। होटल भी सस्ते महँगे हर प्रकार के गली गली हैं। कितने ही ऐसे हैं जिनमें भोजन भी मिलता है और बहुत से ऐसे हैं जिनमें निवास और जलपान का प्रबंध मात्र रहता है। लोग जलपान कर करके अपने अपने काम पर चले जाते हैं। दोपहर बाद लंच, संध्या समय डिनर (ब्यालू), तीसरे पहर चाय ले थिएटर तमाशा देखकर होटल में विश्राम करते हैं। ऐसे स्थानों को, जहाँ केवल भोजन आदि का प्रबंध होता है Restaurant (उपाहार-गृह) कहते हैं। ऐसे उपाहार-गृह यहाँ हजारों की संख्या में हैं। प्रसिद्ध उपाहार-गृह जे० लायन कंपनी, ए० बी० सी० कंपनी, एक्सप्रेस डेयरी कंपनी इत्यादि की शाखाएँ हजारों की संख्या में हैं। पचास पचास पग पर इनकी दूकानें हैं जहाँ बहुत सस्ते दाम पर अनेक प्रकार का भोजन मिल सकता है। इनमें दूध बहुत अच्छा और सस्ता मिलता है। शाकाहारी भोजन भी इनके यहाँ अनेक प्रकार का मिलता है। इन दूकानों में परोसनेवालों को बख्शिश (टिप) देने की चाल नहीं है।

लायन की एक बहुत बड़ी दूकान आक्सफोर्ड स्ट्रीट और टाटनहमकोर्ट-रोड के कोने पर है जो रात भर खुली रहती है। इसका बहुत बड़ा हाल सुंदर बहुरंगे मार्बल के खंभों और दीवारों से बिजली की झाड़ों-सहित ऐसा अपूर्व सजा है जैसा राजा-महाराजा का महल भी शायद ही होता होगा। इसमें एक बार दो ढाई

हजार आदमी बैठकर भोजन करते हैं। ऐसा ही ऊपर का भी बड़ा हाल है। दस बारह आदमी मधुर तान से बैंडबाजा बजाते और भोजन करनेवालों को प्रसन्न करते रहते हैं। इसमें कई सौ परोसनेवाले हैं। इस खास दूकान में तथा दूसरे लोगों की दूकानों में बख्शिश देने की प्रथा है। प्राय: दो पेनी साधारणत: हर व्यक्ति भोजन कर चुकने पर अपने टेबूल पर छोड़ देता है। इन संस्थाओं के अलावे शाकाहारी भोजन प्राय: सभी भोजनालयों में मिला करता है। किंतु विशेष रीति से "शर्न" की दूकान तो फलों, तरकारियों की ही है। इसमें मेवा, फल और तरकारियाँ बहुत अच्छी मिलती हैं और निरामिष भोजन ही यहाँ दिया जाता है। ऐसी ही दूकानें भोजन-सुधार-समिति इत्यादि की भी हैं। ताजमहल, वीरास्वामी और शफी के यहाँ भी भारतीय भोजन हर प्रकार का मिलता है। श्रीबिड़ला जी के उद्योग से बेलसाइज पार्क में "आर्य भवन" खुला है। इस भवन में पंद्रह आदमियों के ठहरने का प्रबंध है और शुद्ध निरामिष भोजन मिलता है। पहले से सूचना देने पर वहाँ न रहनेवालों के लिये भी बहुत अच्छा भोजन बन सकता है। नं० २४ कांस बरोटिरेस में बीबी नाइट ने होटल खोल रखा है जहाँ प्राय: भारतीय विद्यार्थी रहते हैं और वे स्वयं नाना प्रकार के निरामिष भोज्य पदार्थ बनाती और खिलाती हैं। वहाँ भी पहले सूचित कर देने पर बाहरी आदमियों के लिये भोजन मिल सकता है। नं० ११२ गावर स्ट्रीट में करीब एक सौ विद्यार्थियों के लिये और बाहरी लोगों के लिये भी, जो समय पर आ जायँ, ठहरने का, और सस्ते दाम पर भारतीय भोजन मिलने का अच्छा प्रबंध है। नं० २१ क्रामवेल रोड पर भारत-सरकार की ओर से भारतीय विद्यार्थियों के ठहरने का जो स्थान है वहाँ भी इच्छानुसार निरामिष भोजन मिलता है।

यहाँ (विलायत) वालों में भी निरामिष भोजन की उपयोगिता पर आंदोलन चल रहा है। जो मांसाहारी हैं वे भी जल-पान में चाय के साथ निरामिष भोजन ही लेते हैं और लंच तथा डिनर में भी फल, अनाज और शाक का बहुत अंश लेने लग गए हैं। इसी कारण प्राय: हर भोजन की दूकान पर शाकाहारी पदार्थ बहुतायत से मिलता है और किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। यह बिलकुल झूठी बात है कि बिना मांस मछली अंडा और मदिरा के कोई रह ही नहीं सकता। हम लोग एक महीने से अधिक लंदन शहर में रहे, बाहर भी घूमे; किंतु हर जगह हमारी इच्छा के अनुकूल निरामिष भोजन बराबर मिलता रहा।

शहद

मैं भारतवर्ष में जब कभी यह सुनता था कि यह विलायती शहद है तब मन में यही भाव उत्पन्न होता था कि सब कच्चे माल की तरह भारतव से शहद भी विलायत जाता और शुद्ध होकर बोतलों में भरकर वापस भेज दिया जाता होगा। पर विलायत आकर देखने पर आँख खुल गई। शहद पैदा करना भी यहाँ का एक बड़ा व्यवसाय है। शहर में और बाहर भी बगीचों और घरों में शहद खूब पैदा किया जाता है। एक लकड़ी के बक्स में छत्ता लगाने के लिये कई पटरियाँ, जो खास ढंग की बनी होती हैं, एक एक इंच की दूरी पर लटका दी जाती हैं। इन बक्सों में मधु-मक्खियाँ पाली जाती हैं। बक्स की पेंदी के ऊपरवाली दीवार के एक तख्ते में मक्खियों के आने-जाने के लिये छोटा रास्ता कटा रहता है। उसी रास्ते से ये बाहर आती और फूलों, फलों तथा पत्तियों इत्यादि से रस चूसकर फिर भीतर जाती और जमा करती हैं। इन बक्सों में ऐसा प्रबंध रहता है कि छत्ता उजाड़े या मक्खियों को

मारे या कष्ट दिए बिना ही शहद निकाल लिया जाता है और मक्खियों के खाने के लिये काफी शहद छोड़ भी दिया जाता है। बहुत ही साफ और रवेदार शहद होता है। सुगंधित और गुणकारी भी होता है। इस तर्कीब से यदि भारत में शहद पैदा किया जाय तो बहुत अच्छा हो।

मुख्य हाट

लंदन नगर यों तो व्यापार-व्यवसाय के लिये भी वैसा ही बड़ा केंद्र है जैसा विद्योपार्जन के लिये, किंतु इसके हाट भी देखने योग्य हैं। कावेंट गार्डन मार्केट में फल-फूल और साग-तरकारी ढेर की ढेर बिकती है। सबेरे चार बजे से नौ बजे तक ही यह हाट लगता है। सस्ते दामों पर अच्छी चीजें यहाँ से दूकानदार और गृहस्थ अपने खर्च के वास्ते ले जाते हैं। नौ बजे सबेरे ही यह बाजार बंद और साफ हो जाता है। इसी तरह सौथ वर्क कथीड्रल के पास बरो है जहाँ फल और तरकारियों का ही बाजार है। ऐसे ही मछलियों के और जानवरों के अनेक भारी भारी बाजार हैं जहाँ ये सामान थोक बिक्री के वास्ते लाए जाते और बिकते हैं। चिड़ियों की दूकानें और बाजार भी बहुत हैं।

विद्या-प्रचार

इँगलैंड में विशेषत: और सारे यूरोप में साधारणत: शिक्षा का बहुत प्रचार है। यहाँ अनपढ़ों का वैसा ही अभाव है जैसा भारत में शिक्षितों का। अंतर यह है कि भारतीय भाई पढ़-लिखकर नौकरी या दो एक खास व्यवसाय में ही घुसना चाहते हैं और यहाँ-वाले शिक्षा प्राप्त कर सभी काम करते हैं। इसी कारण यहाँ के साधारण श्रमजीवी भी अनपढ़ भारतीयों की अपेक्षा कई गुना अधिक काम करते हैं। शिक्षित होने के कारण जिस काम के लिये यहाँ दो या

एक ही आदमी काफी होता है उसी काम के लिये भारत में कई आदमियों की आवश्यकता पड़ती है। छोटे छोटे स्टेशनों पर देखने में आया कि एक ही पोर्टर सफाई का, मुसाफिरों से टिकट लेने का, टिकट बाँटने का, माल ढोकर गाड़ी में लादने का और पता पढ़ पढ़कर श्रेणी के अनुसार ब्रेकवान में उन्हें सरियाने का सारा काम भली भाँति कर लेता है। किंतु भारतीय स्टेशनों पर टिकट देने-लेने और माल पर का पता पढ़ने के लिये क्लार्क, माल उठाने के लिये पल्लेदार, सफाई के लिये दूसरा ही आदमी रखने की आवश्यकता होती है। यहाँ सभी यात्रियों के पढ़े-लिखे होने से और स्टेशनों पर नकशे तथा सूची इत्यादि लगी रहने से किसी को किसी से कुछ पूछने की आवश्यकता नहीं पड़ती। ऐसे बड़े नगर में, जहाँ ऊपरी रेलों के पचासों, सुरंग-रेलों के सैकड़ों और मोटर-बसों के हजारों स्टेशन हैं तथा जहाँ एक एक दो दो मिनट पर भिन्न भिन्न स्थानों के लिये गाड़ियाँ आया करती हैं, बिरला ही कोई व्यक्ति किसी से कुछ पूछता है। किस स्टेशन को गाड़ी किस समय और किस नंबर के प्लेटफार्म से जायगी, इसकी सूची स्टेशन पर लगी रहती है। उसे देखते लोग चले जाते हैं। उस सूची की एक गाड़ी के निकल जाते ही दूसरी गाड़ी का समय और प्लेटफार्म-नंबर तुरंत लगा दिया जाता है। सुरंग की रेलें बिजली के बल से दौड़ा करती हैं। प्राय: हर मिनट पर गाड़ियाँ हर स्टेशन से छूटती रहती हैं। स्टेशनों पर तथा गाड़ियों के डब्बों में इतने स्थानों पर सूचियाँ लगी रहती हैं और सुरंग-रेलों तथा मोटर-बसों के इतने नकशे बिना मूल्य बँटा करते हैं कि बिना किसी से पूछे ही लोगों को सब बातों का पता लग जाता है। किउ (Qneue, पारी) की प्रथा होने से एक दूसरे से धक्कम-धक्का, कहा-सुनी और लड़ाई-झगड़ा नहीं होता।

लाखों आदमी इधर से उधर दौड़ा और यात्रा किया करते हैं। देखकर आश्चर्य होता है कि मशीन और बिजली की तरह सब मनुष्य किस तरह समय का उपयोग करते और काम करते चले जाते हैं। इसके साथ ही यह बात भी है कि यदि इनमें से किसी को कोई व्यग्रता अथवा सोच की अवस्था में देखता है तो सहायता करने के लिये उद्यत हो जाता है। लंदन नगर में, कानून के अनुसार, कोई भिक्षा नहीं माँग सकता। सड़कों पर अपाहिज लोग विचित्र ढंग से भिक्षा प्राप्त करते हैं। बूढ़े लोग चुरुट और दियासलाई की डिबिया लिए खड़े रहते हैं। लोग समझ जाते हैं। एक या दो पेनी दे देते हैं। भिक्षुक कहीं सड़कों की पटरियों पर खड़िया मिट्टी से चित्र खींचकर बैठे रहते, कहीं बाजा बजाते, कहीं गले में पटरी लटकाए रहते हैं जिस पर लिखा होता है कि मैं अंधा हूँ, मेरी एक टाँग रेल में कट गई है इत्यादि। लोग उन्हें कुछ दे देते हैं। बड़ी भीड़वाली सड़कों पर भी किसी की बोली या हल्ला-गुल्ला कहीं नहीं सुनाई पड़ता। हाँ मोटरों, बसों और हाथी ऐसे बड़े बड़े घोड़ों की टाप के शब्द अवश्य सुनाई पड़ते हैं। यदि किसी को कुछ कहना होता है तो वह पास जाकर धीरे से कहता है। न तो पुकारता न चिल्लाता है, इस कारण भी लोगों की शक्ति काम करने और सोचने में अधिक लगती है और बकवाद द्वारा शक्ति का ह्रास नहीं होता। कई स्टेशनों पर अंधेखाने इत्यादि के लिये सहायता माँगने की बिजली की मशीनें चला करती हैं जिनमें बिजली के प्रकाश द्वारा यह लेख दिखाई पड़ता है कि अमुक संस्था के लिये सहायता दीजिए और कटोरियों की माला घूमा करती है। आपने एक पेनी उस कटोरी में डाला वह घूमती हुई बक्स के भीतर गई और आपके सामने ही रुपयों के ढेर में आपकी पेनी

कटोरी उलटकर गिरा दी गई और तुरंत ही एक धन्यवाद का प्रकाशमय लेख आपके सामने बक्स की दीवार पर चमक उठा। ऐसे तालाबंद बक्स कई स्टेशनों पर भिक्षा माँगते रहते हैं। बिजली द्वारा अनेक काम ऐसी सुगमता से स्वयं होते रहते हैं जिनमें मनुष्य के फँसने की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

आतिथ्य तथा भेंट

लंदन में रहते हुए कई भारतीय मित्रों से तो भेंट हुई ही, इनके अतिरिक्त शहर में तथा बाहर कई अँगरेज सज्जनों से भेंट हुई। उनमें एक सज्जन श्री स्पेंसर हैं। यह केंटकौंटी की स्काउट-संस्था के मंत्री हैं। इन्होंने तीन चार बार हम लोगों को अपने स्थान पर बुलाकर जल-पान कराया और स्काउटों के पवित्र कार्य और परीक्षा इत्यादि दिखलाए। उनके साथ हम लोगों ने भी लंदन में सहभोज किया जिसमें स्वच्छ निरामिष भोजन उन्हें भी खिलाया जिसे उन्होंने बहुत पसंद किया। इनके साथ मोटर पर हम लोग कई जगह गए। "सेवन ओक्स" एक स्थान है जहाँ जाते समय रास्ते में बहुत ही मनोहर दृश्य पड़े। वहाँ हम लोग बनारस के भूतपूर्व कलेक्टर श्री स्ट्रेटफील्ड से मिले जो अब पादरी बन गए हैं। श्री स्पेंसर की कृपा से यहाँ के स्काउटों के कार्य देखे। ये लोग छोटी छोलदारी और सब सामान पीठ पर लादे बाइसिकिल पर पचासों मील चलकर रात को मैदान में रहे। अपना भोजन आदि स्वयं बना, खा, स्थानों का चित्र तथा अपनी दिनचर्या परीक्षकों को दिखला और पारितोषिक आदि पा ये कूच कर जाते थे। ऐसे कई मेले देखे। ये युवक स्काउट स्वावलंबन और तत्परता की अच्छी शिक्षा प्राप्त करते हैं। ऐसे कई सज्जनों से परिचय हुआ। आतिथ्य द्वारा उन्होंने हमारा सत्कार किया।

अँगरेजों से सीखने योग्य बातें

सबसे पहली बात विद्या-प्रचार की है। हमें अच्छी तरह भारतवर्ष में विद्या-प्रचार करना चाहिए। पिछले लेखों द्वारा स्पष्ट हो गया होगा कि विद्या से शक्ति कितनी बढ़ जाती है और इसके द्वारा ही ज्ञानचक्षु खुलकर अनेक आवश्यक सुधार हो सकते हैं। यहाँ पर शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है। यहाँ साधारण दाई, मजदूरिनें, मजूरे, पल्लेदार, कोचवान, मोटर-ड्राइवर इत्यादि सभी शिक्षित ही मिलते हैं। इस कारण वे अपने काम शीघ्र और अच्छी तरह से करते हैं। उन्हें अपने अधिकारों का पूरा ज्ञान रहता है और वे उसका उपयोग करते हैं। पर यही ब्रिटिश सरकार भारतवर्ष में शिक्षा अनिवार्य करने में असमर्थ है। हम लोगों को चाहिए कि अपने अवकाश के समय अड़ोसी-पड़ोसी तथा जहाँ तक संभव हो अनपढ़े भाइयों को पढ़ा देने का संकल्प करके इस ओर धन या समय देकर इस पुनीत काम को अवश्य करें।

सफाई भी इनसे सीखनी चाहिए। ये घर, कपड़ा, अड़ोस-पड़ोस खूब स्वच्छ रखते हैं, नित्य हजामत बनाते और जूते में नित्य स्याही लगाकर खूब चमाचम रखते हैं। थूक लगाकर लिफाफा और टिकट चिपकाने की बड़ी गंदी बान इनमें है। यदि इसे छोड़ दें और शौच के समय जल को काम में लावें जो बहुत ही सुगमता से ये कर सकते हैं, मंजन से दाँत साफ करें, भोजन के बाद कुल्ला कर डाला करें और स्नान को क्रोड़ा न बनाकर साधारण दिनचर्या में सम्मिलित कर लें तो सफाई की सब बातें इनमें मिल सकेंगी। यह कमी इन्हें भारतीयों से सीखनी चाहिए।

चाहे और व्यवहार कैसा ही हो, ईमानदारी इनके यहाँ बहुत दीख पड़ती है। होटलों में अपने कमरों में सब सामान बक्स

इत्यादि खुला छोड़ दिया जाता है। आपके बाहर चले जाने पर कमरों में नौकर चाकर झाड़-पोंछ बराबर करते हैं, किंतु एक सुई भी गायब नहीं होती। दूकानदारों को सौदे का दाम दे दीजिए और उन्हें अपने ठहरने के स्थान का पता बता दीजिए, खरीदी हुई चीजें आपके स्थान पर ठीक पहुँच जायँगी। इसका एक कारण यह हो सकता है कि सभी शिक्षित हैं, काफी पैसा पैदा करते और संतुष्ट रहते हैं। अन्य देशों में गरीबी के कारण किसी किसी में चोरी की बान आ जाती है।

समय का मूल्य

यहाँ लोगों का काम देखकर भली भाँति जाना जाता है कि ये *लोग समय का मूल्य खूब समझते हैं।* सब लोग तेजी के साथ अपने अपने कामों पर दौड़े चले जाते हैं। बिजली तथा अन्य कलों द्वारा समय बचाने का बहुत ही यत्न किया गया है जिससे परिमित जीवन के परिमित समय में अधिक से अधिक काम कर डालने का उद्योग सफल होता है। नियत समय पर सब काम मशीन की तरह बड़ी तेजी से होता रहता है जिससे किसी का समय व्यर्थ नष्ट नहीं होने पाता। यदि किसी दूकानदार या व्यापारी ने आपको कोई वस्तु किसी नियत समय पर देने या भेजने का वादा किया है तो क्या मजाल है कि वादा टले या समय पर आपको वह वस्तु न मिल जाय। समय की पाबंदी रहने से दोनों पक्षवालों को लेन-देन में सुविधा रहने के साथ ही वचन का भरोसा और एतबार बहुत ज्यादा रहता है; बार बार किसी काम के लिये तगादा करने में व्यर्थ समय नष्ट नहीं होता और मन में संदेह भी नहीं रहता कि समय पर हमें वह वस्तु मिलेगी या नहीं।

लगन

जिस काम को ये करते हैं बड़ी ही तत्परता और लगन के साथ करते हैं। इनका सिद्धांत "कार्यं वा साधयामि शरीरं वा पातयामि" रहता है। अर्थात् अपने काम को पूरा करूँगा या शरीर को ही त्याग दूँगा। जो काम करना होता है तन-मन-धन से खूब मुस्तैद हो करते हैं। इसी कारण सफलता भी प्राप्त करते हैं। हार मान-कर किसी काम को छोड़ देना ये नहीं जानते। इसी की बदौलत बड़े से बड़े कठिन कामों को सिद्ध करते हैं। एक दिन एक तमाशे में चक्करवाली मशीन के एक घोड़े पर एक या डेढ़ वर्ष के बालक को उसके माता-पिता ने बैठाया। अनेक जानवरों, डोलियों, इत्यादि में बहुत से बच्चे विनोद कर रहे थे। वह छोटा बच्चा घूमने के डर से रोने लगा। माता-पिता ने उसे उठाकर गोद में नहीं छिपा लिया, किंतु पिता उस चक्कर पर थोड़ी देर के लिये खड़ा हो गया और फिर उतर पड़ा। लड़का रोता किंतु उस चक्कर पर घूमता ही रहा। अंत में रोना बंद हो गया। चक्कर पर चलने का काम जब समाप्त हुआ तब वह उतार लिया गया। इससे उसकी हिम्मत खुल गई और भविष्य में रोकर जान छुड़ाने की बान नहीं पड़ी और कायरता की जड़ जमने नहीं पाई। इसी रीति से बच्चे बड़े बड़े कामों के लिये छोटी उम्र से ही तैयार किए जाते हैं।

व्यायाम

छोटी उम्र से ही बच्चे अनेक रीतियों से व्यायाम करते हैं। स्कूलों में राग-तान के साथ दौड़ होती है, गेंद तथा अन्य अनेक खेलों द्वारा कसरतें खूब करते और शरीर को बलिष्ठ बनाते हैं। इनके नाचों में भी पूरी कसरत होती है। लड़कियाँ भी उसी प्रकार से खूब कसरत करती हैं जैसे लड़के। जब स्त्री-पुरुष

शरीर से हृष्ट-पुष्ट होते हैं तभी इनकी संतति भी बलिष्ठ होती है। हम लोग अपने पूर्वजों की पुरानी कथाएँ भूल गए हैं। इसी कारण हमारी संतति भी भीरु और निर्बल होती है। जो लड़के हमारे यहाँ खेलते या कसरत करते हैं उन्हें उनके माता-पिता नीची दृष्टि से देखने लगते हैं और पढ़ने में तीव्र होने की ही सराहना करते हैं। यहाँ यदि कोई बालक पढ़ने में तेज हो और नटखट या खेलवाड़ी न हो तो उसकी निंदा की जाती है। शरीर और बुद्धि दोनों की पुष्टि बड़ी ही आवश्यक है।

देश-भक्ति

इनमें स्वदेश-भक्ति और प्रेम की मात्रा बहुत ही बढ़ी चढ़ी है, यहाँ तक कि इँगलैंड भर को ये अपना घर (Home) कहते हैं, विदेशी वस्तु न मोल लेते न काम में लाते हैं। प्राय: सभी वस्तुओं पर लिखा रहता है "ब्रिटेन का बना हुआ"। सिद्धांत रूप से तो मुक्त-द्वार वाणिज्य की घोषणा की जाती है, किंतु विदेशी माल आवे भी तो चलने नहीं पाता। स्वदेश-प्रेम के साथ इनका मातृभाषा का प्रेम भी सराहने योग्य है। यह इस हद तक बढ़ा है कि इँगलैंड और फ्रांस बिल्कुल पड़ोसी हैं, केवल इँगलिश चैनेल बीच में पड़ता है, किंतु एक देश में दूसरे देश की भाषा सुनाई नहीं पड़ती। अपने ही अपने देश की भाषा द्वारा ये लोग सभी काम करते और उसी की उन्नति में लगे रहते हैं।

भीख न माँगना

भीख न माँगना इनका बहुत बड़ा गुण है। यह मनुष्यों को स्वावलंबी और पुरुषार्थी बनाता है। सबको इस बात की चिंता रहती है कि उपार्जन करके खाना चाहिए। इसी कारण ये नाना

प्रकार के व्यवसाय भी ढूँढ़ निकालते हैं और दूसरों के उपार्जित द्रव्य पर तनिक भी मन नहीं चलाते।

सब वस्तुओं को काम में लाना भी इनका विशेष गुण है। ये आर्थिक हानि नहीं होने देते। कारखानों में कोई वस्तु निकम्मी निकल जाती है तो उसे भी काम में लाते हैं। उसे व्यर्थ नष्ट नहीं करते। दूकानों पर अनेक वस्तुएँ ऐसी बनी हुई दीख पड़ती हैं जो भारतवर्ष में फेक दी हुई चीजों से बन सकती हैं और उपयोग में आ सकती हैं। गाँवों में खाद के वास्ते गड्ढे होते हैं जिनमें खाद का पानी भी उसी में रहता है। भारत में पानी बह जाया करता और खाद कमजोर हो जाया करती है।

थूकने और नाक छिनकने में ये बड़े सावधान रहते हैं क्योंकि इसके द्वारा बहुत बीमारियाँ फैलती हैं। इसके कारण गंदगी भी बहुत होती है। थूकने की बान छोड़ देनी चाहिए। नाक किसी रूमाल या कपड़े में छिनककर उसे खूब धो डालना चाहिए।

इनसे न सीखने लायक बातें

इनमें कई बुरी बातें भी हैं जिनका भारतवासी अंध अनुकरण करने लग गए हैं। हमें सचेत होकर उनसे परहेज करना चाहिए। पहली बात है शराब पीना। इससे कितनी हानि हो रही है, यह पहले निवेदन किया जा चुका है। भारतवासी अँगरेजों की नकल करके शराब पीना सीखने लग गए हैं। अभी से सचेत न होंगे तो न जाने क्या भीषण परिणाम इसके प्रचार द्वारा होगा। दूसरी बात है चुरुट पीना। यह भी बड़ा भयंकर रूप धारण कर रहा है।

खाने के बाद मुँह धोने और कुल्ला करने की बान अँगरेजों की नकल करनेवाले भारतीय भाई छोड़ते जा रहे हैं, वे रूमाल से

मुँह पोंछकर ही सफाई मान लेते हैं। ऐसे ही कुछ हिंदुस्तानी भाई पाखाना जाने के बाद केवल कागज द्वारा शुद्धि करने लग गए हैं। अँगरेजों की नकल करके अब ऐसे हिंदुस्तानी भी मांस खाने लग गए हैं जिनमें मांस खाने का रिवाज बिलकुल न था। इसका भी परिणाम अच्छा नहीं देख पड़ता।

विलासिता

भोग-विलास की मात्रा भी भारतीय भाइयों में और खासकर उन लोगों में जो अँगरेजी पढ़ने लगे हैं बढ़ती जा रही है। इससे खर्च बढ़ जाता है और काम की योग्यता में बाधा पड़ती है।

हमारे यहाँ सात्त्विक जीवन की जो प्राचीन पद्धति चली आई है उसे लोग छोड़ते जा रहे हैं जिससे बड़ी हानि होती है। इसके कारण धार्मिकता और दया-भाव की भी कमी होती जा रही है। थूक लगाकर लिफाफा या टिकट चपकाने की बान भी लोग सीख रहे हैं। कई अँगरेजों से इसके तथा मुँह न धोने और शौच के बाद जल को काम में लाने की बात कही गई तो उन्होंने स्वीकार किया कि ये आदतें उनमें बड़ी गंदी और हानिकारक हैं। कितनों ही ने तो इस पर ध्यान दिलाने के बाद थूक से टिकट-लिफाफा चपकाना हम लोगों के सामने बंद कर दिया और वे पाखाना जाने के बाद कागज के बाद पानी का भी प्रयोग करने लगे।

पैरिस नगर

लंदन शहर तो इतना बड़ा है कि उसको या उसके आस-पास के स्थानों को देखने के लिये बरसों का समय चाहिए। कोई कल-कारखाना देखने का प्रबंध नहीं हो सका। उनके संचालक बाहरी आदमी को देखने नहीं देते। कोई ऐसा परिचित नहीं था जिसके द्वारा इसके लिये उद्योग करते। यात्राक्रम में १० जुलाई को पैरिस जाना निश्चित था इसलिये दो दिन पहले ही से टामस कुक के यहाँ पैरिस का टिकट लिया, डाक इत्यादि आगे भेजने का प्रबंध किया और फ्रांस देश का नोट खरीदा। १० जुलाई को सबेरे पैरिस की यात्रा की। वहाँ की भाषा भिन्न होने के कारण यात्रियों के लिये उपयोगी एक छोटी सी पुस्तिका मोल ले ली गई जिसमें अँगरेजी शब्दों तथा वाक्यों का अनुवाद फ्रेंच, जर्मन तथा इटालियन भाषाओं में साधारण बोलचाल के लिये दिया हुआ है।

इस बार दूसरे रास्ते से समुद्र पार कर वलोन नगर (फ्रांस) में उतरे। यहाँ आते ही अँगरेजी भाषा की दुर्गति हुई, कोई भी इसका बोलने या समझनेवाला नहीं मिलता था। अमेरिकन यात्रियों के सुभीते के लिये कहीं कहीं दूकानों पर या पुलिस की वर्दी पर English spoken लिखा रहता है, पर उनकी अँगरेजी बहुत टूटी-फूटी होती है।

साथ में कुछ भोजन लाए थे, उसे रेलगाड़ी में खाया। साथियों में से श्री गोकुलचंद कपूर हवाई जहाज चलाना सीखने के लिये लंदन

रह गए। श्री श्रीनाथ साह, श्री प्यारेलाल और श्री श्रीराम वाजपेयी हवाई जहाज से पैरिस आए। पूना महिला-विश्वविद्यालयवाले,
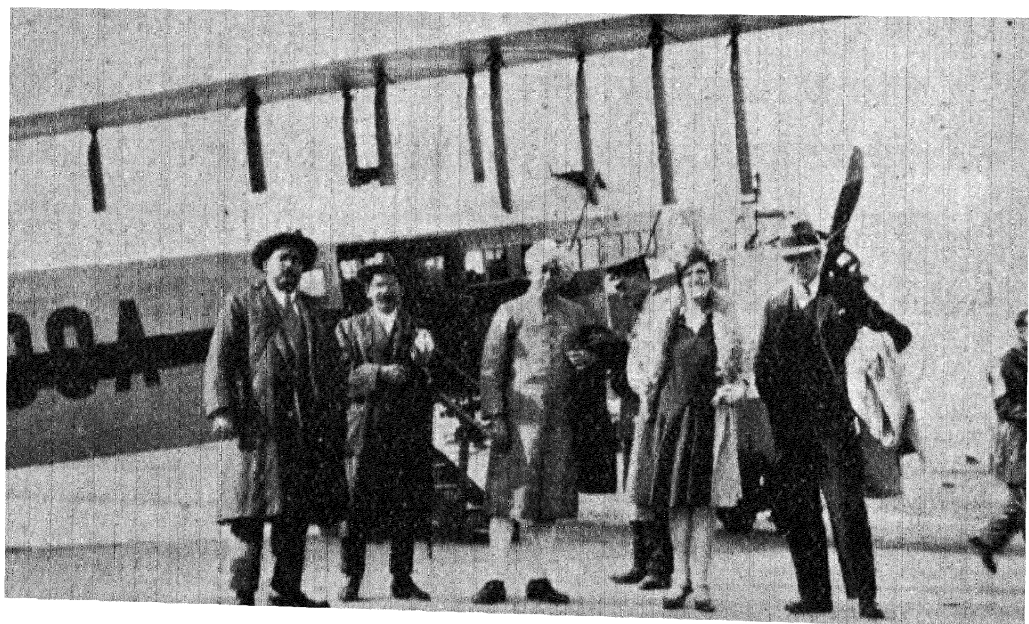
हमारे साथी उड़ने के लिये तैयार

हम लोगों के पूर्व स्नेही, श्री दिवेकर जी मिले। इन्होंने हम लोगों के ठहरने के लिये होटल ठीक कर रक्खा था। वहाँ सब लोग जाकर ठहरे। वहीं हवाई यात्री भी आ मिले।

यहाँ का सिक्का फ्रांक कहलाता है जो अँगरेजी एक पौंड में करीब १२३, १२४ मिलता है। एक फ्रांक हिंदुस्तानी सात पैसे के बराबर होता है। ये सिक्के काँसे के होते हैं। इसका विभाग १०० से करके उसे सेंटिम कहते हैं। पाँच सेंटिम, दस सेंटिम, पचीस सेंटिम, पचास सेंटिम निकल के, एक फ्रांक और दो फ्रांक काँसे का और इसके ऊपर कागज के नोट पाँच, दस, पचास, सौ, पाँच सौ, हजार फ्रांक के होते हैं। जहाज पर भी

सिक्का बदलनेवाले मिले। फुटकर अँगरेजी सिक्कों और नोटों को उन से बदल लिया।

जिस होटल में हम लोग ठहरे वह अच्छा था। नहाना यहाँ भी विलास में सम्मिलित है। एक बार के स्नान का होटलवाले छः फ्रांक लेते थे। इस कारण हम लोगों के ठहरने के कमरों में पानी की जो टोंटी अथरी में लगी थी उसी में तौलिया भिंगाकर हम लोगों का स्नान हो जाया करता था। बिना स्नान के जी भी नहीं मानता था और नित्य अधिक व्यय अखरता था। भोजन के समय परोसने-वाली मेम से हमने दूध और रोटी माँगी। वह अँगरेजी नहीं समझ सकती थी। हमने अपनी पुस्तिका देखकर उससे "डूपेन" और "डूलेट" लाने को कहा। वह कुछ न समझ सकी। तब मैंने उन शब्दों को उसे पुस्तिका में दिखलाया। अक्षर तो अँगरेजी ही की तरह प्रायः सारे यूरोप में लिखे जाते हैं इस कारण कुछ सुगमता थी। वह देखते ही चिल्ला उठी अहा! "डु पाँ", "डु ले" और दौड़कर रोटी और दूध ले आई। इसके पश्चात् हमने एक और पुस्तिका यहाँ खरीदी जिसमें उच्चारण भी दिए हैं, किंतु प्राय: लिखा हुआ ही दिखलाने से काम चलता था।

यहाँ भी खाने पीने का सामान साग, भाजी, फल, दूध मक्खन, मुरब्बा इत्यादि अच्छा मिलता था। दूध, मक्खन भी खूब मिलता था। किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता था। यहाँ हम लोग तेरह दिन रहे। भाषा की कठिनाई तो अवश्य थी किंतु अक्षर एक होने से कुछ सुगमता होती थी। यदि अक्षर भी अँगरेजी से भिन्न होते तो कठिनाई और बढ़ जाती। यहाँ, यूरोप भर में, थोड़ी थोड़ी दूर पर, भाषा निराली है। हर देश की जुदा जुदा भाषा है, किंतु अक्षर प्रायः एक ही हैं। हाँ, उनका उच्चारण

भिन्न भिन्न होता है। यह देश और नगर भी अँगरेजी देश तथा उसके प्रधान नगर लंदन से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। यह भी नदी के दोनों किनारे बसा है, यहाँ सेन नदी है। यहाँ के मकान भी उसी ढंग के आठ-दस मंजिलों के होते हैं। हाँ, भेद यह देख पड़ा कि यहाँ की सड़कें बड़ी दूर तक सीधी चली गई हैं और बहुत चौड़ी हैं। दोनों ओर खूब चौड़ी पटरियाँ हैं और प्रायः वृक्षों की पाँत लगी हुई होने से छायादार हैं। बगीचे तथा खुले मैदान यहाँ बहुत सुंदर हैं, जल-प्रपात बहुत हैं। यहाँ प्रायः ९ बजे से १२ बजे तक और फिर २ बजे से, बंकों में ४ बजे तक और दूकानों में ६ बजे तक काम होता है। बारह बजे से दो बजे तक भारतवर्ष की प्राचीन प्रणाली के अनुसार भोजन और विश्राम के लिये सब काम-काज स्थगित कर दिया जाता है।

यहाँ भी मई, जून और जुलाई के महीने भारतीय यात्रियों के लिये बहुत अच्छे हैं। कभी कभी गर्मी बढ़ जाने से कष्ट होता है। किंतु इन्हीं महीनों में यात्रियों की भरमार होती है। अमरीका के यात्री यहाँ भी बहुत आते हैं। इस कारण कितने ही होटलों और दूकानों में अँगरेजी बोलनेवाले विशेष रूप से नौकर रखे जाने लग गए हैं। यों तो कई बड़ी बड़ी पुस्तकें पैरिस (फ्रांस में इसे पैरी कहते हैं) और आस-पास के स्थानों के संबंध में हैं, पर डेलीमेल पाकेट गाइड से संक्षेप में यहाँ की देख-भाल का काम सुगमता से चल जाता है। यहाँ का साधारण व्यय आठ रुपए दैनिक में चल सकता है। स्थायी रूप से तथा संकोच से रहने में कम पड़ सकता है। बड़े बड़े बहुत विलास के होटलों में ठहरने और उस प्रकार की रहन-सहन में तो चालीस-पचास रुपए दैनिक व्यय भी थोड़ा ही प्रतीत होगा।

यहाँ भी सवारी टैक्सी मोटर हैं। लंदन में हिंदुस्तान की नाईं गाड़ियाँ अपने बाएँ चलती हैं, परन्तु यहाँ अपने दहने। जन-साधारण मोटर-बसों, ट्रामगाड़ियों और बिजली की सुरंग रेलगाड़ियों द्वारा आते-जाते हैं। यहाँ इनके दो दर्जे अव्वल और दोयम होते हैं। सुरंग-रेल का, जिसे मेत्रो (Metro) कहते हैं, भाड़ा बँधा हुआ है। अव्वल दर्जे का एक फ्रांक और दोयम का ६० संटिम लगता है; चाहे जहाँ भीतर भीतर चले जाइए। गाड़ी पहुँचते ही प्लैटफार्म का दर्वाजा बिजली द्वारा तुरंत बंद हो जाता है, आप प्लैटफार्म पर नहीं जा सकते। पहले पहल हमारे पहुँचते ही ऐसा हो गया। हम धक्का देकर चाहते थे कि दरवाजा खुल जाय, हम उसी ट्रेन में बैठ जायँ, किंतु न खुला। जब गाड़ी चली गई तब खुल गया और यह हाल मालूम हुआ। हर मिनट या दूसरे मिनट ये गाड़ियाँ आती-जाती रहती हैं। यहाँ रेलों और दूकानों पर काम करनेवाली स्त्रियाँ बहुत देख पड़ीं। टिकट बेचने, जाँचने, रास्ता बताने इत्यादि सभी कामों में स्त्रियाँ लगी हुई हैं। सौदा इत्यादि बेचने में भी इनकी संख्या बहुत है। कार्यालयों में भी ये बहुत हैं। शारीरिक बल और शिक्षा में ये लंदन की स्त्रियों से बढ़ी चढ़ी देख पड़ती हैं। जैसा पैरिस में भोग-विलास बढ़ा चढ़ा होना सुनते आए थे, और है भी, उसी तरह यहाँवाले शारीरिक बल में भी बढ़े-चढ़े हैं। यहाँ की सफाई, सजावट, सुंदरता इत्यादि अँगरेजों से किसी प्रकार कम नहीं है। विद्या-प्रचार भी विशेषकर संगीत और कला संबंधी खूब है। यहाँ भारतीय छात्रों की एक समिति है, जहाँ भारतीय विद्यार्थी रहते और अध्ययन करते हैं। पैरिस में करीब दो सौ भारतीय व्यापारी रहते हैं।

यहाँ सभी विषयों की उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त करने के बड़े बड़े विद्यालय हैं, जहाँ साहित्य, विज्ञान, कला-कौशल इत्यादि की अच्छी शिक्षा मिलने का साधन है। भारतीय विद्यार्थी आँख मूँदकर लंदन ही चले जाते हैं। यदि वे पैरिस, जिनीवा, बर्लिन इत्यादि स्थानों के विद्यालयों में अध्ययन करें तो अच्छे विद्वान् हो सकते हैं और अधिक सहानुभूति के साथ इन स्थानों के शिक्षकों द्वारा सहायता पा सकते हैं। पैरिस नगर का राष्ट्रीय पुस्तकालय बहुत ही बड़ा है जिसे यहाँ के लोग संसार भर में सबसे बड़ा बताते हैं। लंदन के ब्रिटिश म्युजियमवाले पुस्तकालय को वहाँवाले बड़ा महत्त्व देते हैं। यहाँवालों ने भी यह स्वीकार किया कि लंदनवालों की सूची और पुस्तकें रखने तथा बहुत शीघ्र निकाल लाने का प्रबंध बहुत अच्छा है।

फ्रांस भी कई सौ वर्ष पहले राजा के अधीन था, किंतु यहाँ प्रजातंत्र राज्य स्थापित हो गया। अब यहाँ राष्ट्रपति का चुनाव हुआ करता है जो अपनी परिषद् की सहायता से शासन का काम करता है। इस देश के राष्ट्र भर के रहनेवालों को समान अधिकार प्राप्त है चाहे वह गोरा हो या अफरीका का हबशी हो। सभी लोग फौज में ऊँचे से ऊँचे पद पर नियुक्त हो सकते और होते हैं, सब प्रकार के शासन-प्रबंध में भाग ले सकते हैं। राजाओं के जितने महल थे, उनमें अद्भुत संग्रहालय हैं।

पैरिस नगर की जन-संख्या करीब तीस लाख है। नगर की सीमा बढ़ाई जा रही है। उसके बढ़ जाने पर जन-संख्या करीब साठ लाख हो जायगी। इस नगर का केंद्रीय स्थान आपरा है। यह बहुत बड़ा थिएटर है। यों तो यहाँ अनेक थिएटर सिनेमा इत्यादि हैं किंतु यह मुख्य है। हम लोगों ने भी इसे एक दिन

देखा। यह भीतर से एक बहुत ही विशाल महल सरीखा है। दर्शकों के बैठने की दस मंजिलें हैं। बिजली का झाड़ बहुत बड़ा
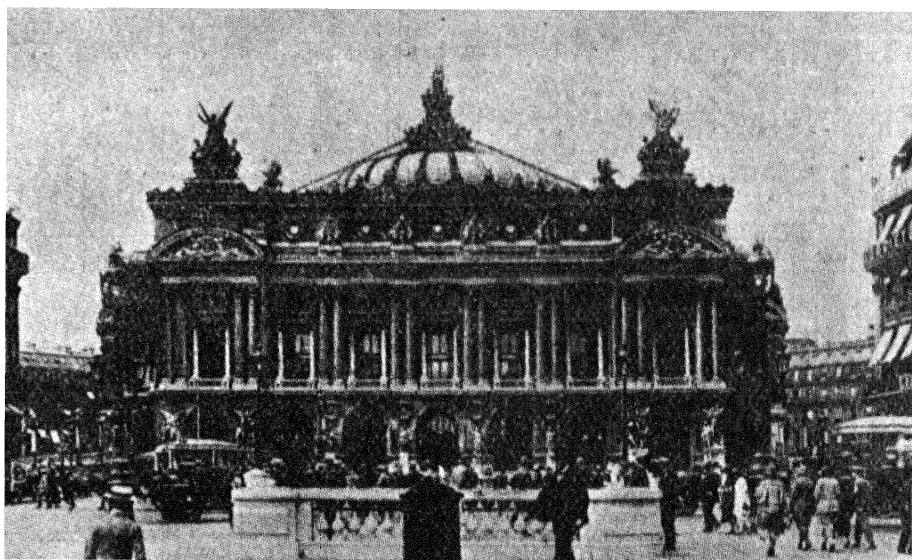
पैरिस नगर का प्रधान नाचघर (ऑपरा)

बीच में दिन की तरह उस विस्तृत भवन को प्रकाशित किए रहता है। लोग कहते हैं कि यह संसार भर में सबसे बड़ा थिएटरघर है। कई खेल नित्य दिखाए जाते हैं। हम लोग संध्या के ८ बजे से होनेवाले खेल में गए थे। स्टेज के नीचे साठ आदमियों की मंडली बाजा बजाती थी। दो सौ से अधिक पात्र काम करनेवाले देख पड़े। प्रसिद्ध जर्मन कवि गेटे का फास्ट (फ्रांसीसी अनुवाद) खेला गया था। भाषा तो हम लोग समझ ही नहीं सकते थे, किंतु भाव-प्रदर्शन, पर्दों की सुंदरता और विचित्रता, बिजली के प्रकाश द्वारा अनेक रंगों के दृश्यों की छटा ऐसी देखी जिसका वर्णन नहीं कर सकते। ऐसे अनेक दृश्य दर्शकों को मुग्ध करते थे। इसमें लड़कियों की अनेक कसरतें (नाच) दिखाई गईं। कई सौ आदमियों की एक बड़ी बारात सुसज्जित स्टेज पर निकली जिसका

सामान देखकर हम लोग दंग हो गए। एक पर्दे में प्रभात की बड़ी मनोहर छटा दिखाई गई थी। बादल और उसमें धीरे धीरे लाली का आगमन, खपरैल पर बर्फ का पड़ना और जमना ऐसा देखा जिसका लिखना कठिन है। करीब ११ बजे तक तमाशा देखा। प्राय: आठ-दस हजार दर्शक रहे होंगे। बीच में आधे घंटे का अवकाश दिया गया। उस बीच उसी भवन के दूसरे भाग में लोग खाते पीते, आमोद-प्रमोद करते देख पड़े। शराब खूब उड़ती थी। यह भाग भी बड़ा भारी महल है। लंबे लंबे हाल हैं जिनमें कई हजार दर्शक घूमते थे। मखमली गलीचे बिछे थे। बड़े बड़े आइने लगे थे जो दृश्य को कई गुना बढ़ा देते थे। स्थान स्थान पर बिजली के प्रकाश द्वारा अनेक चित्ताकर्षक विज्ञापन बड़ी होशियारी से दिखाए जा रहे थे। वहाँ अलग ही उस समय के मनोरंजन के लिये गाना-बजाना और नाच हो रहा था। दर्शकों का आमोद-प्रमोद भी एक विचित्र दृश्य था।

नाच की यहाँ बड़ी प्रशंसा सुनकर एक दिन दूसरे नाचवाले थिएटर (Folies Bergere) में गए। इसमें नाचों के बड़े ही अपूर्व दृश्य देखे जिनमें कसरतें भरी हुई थीं। स्त्रियाँ, विशेषत: लड़कियाँ, इन कसरत भरे नाचों में कई सौ की संख्या में थीं जिनकी करामातें, पोशाक, शरीर की साधना और नृत्य देखकर लोग हैरान हो जाते थे। एक पैर से खड़ी हो दूसरा पैर सीधे ऊपर को कर, पैर के एक अँगूठे के बल अनेक प्रकार के अकथनीय नृत्य उन्होंने दिखाए। लड़कियों को फौजी पोशाक में कवायद करते हुए देखने से मालूम होता था कि एक बड़ी अच्छी पलटन कवायद कर रही है और लड़ाई के लिये तैयार है। ऐसा अनुमान होता है कि यदि, ईश्वर न करे, फिर कोई लड़ाई छिड़ी तो ये महि-

लाएँ भी हथियार लेकर अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग करेंगी और घमासान युद्ध में पूरी तरह सम्मिलित होंगी। कितनी लड़कियाँ तो प्रायः नग्न होकर नाचती थीं, केवल कमर के पास कुछ वस्त्र विशेष अंगों को ढके होता था। उनके शरीर और पुट्ठों को देखकर मालूम होता था कि ये खूब कसरत करती हैं और बड़े बड़े मर्द पहलवानों को जीतने के लिये तैयार हैं।

एक खेल में पशुओं की नकल बच्चों द्वारा दिखलाई गई, जिसमें भालू और लंगूर इत्यादि की शकलें, हाव-भाव, दौड़, उछल-कूद सचमुच उन जानवरों के से ही थे। इस थिएटर में भी पर्दे, सीन सीनरी बहुत ही अच्छी थी। पानी की लहरें खूब ही दिखाई गई थीं। एक बड़ा तालाब पानी से भरा था। उसके किनारे टेबूल पर खानेवाले बैठे थे। उनको भोज्य पदार्थ परोसनेवाला पानी में खड़ा धँस गया और ताजी मछली और केकड़ा पकड़कर ऊपर ले आया। उसके कपड़ों से पानी बहता था। तब टेबूल मय खानेवालों के पानी में धँस गया और परोसनेवाले लोग रिका-बियों में भोजन लिए जल-मग्न हो गए; फिर टेबूल सब सामान और व्यक्तियों सहित ऊपर आ गया। ऐसे कई आश्चर्यजनक दृश्य दिखाए गए। इसमें भी बीच में अवकाश के समय दूसरे भाग में दर्शक, जिनकी संख्या कई सहस्र रही होगी, खान-पान इत्यादि में मग्न थे। उस हाल में भी दूसरे ढंग का नाच-गाना, बाजा इत्यादि होता था। इन थिएटरों में जब आप टिकट लेकर भीतर जाते हैं तब मेम साहबा आपके बैठने का स्थान बताती हैं और कुछ दक्षिणा—एक या दो फ्रांक—लेती हैं। लघुशंका करने या जल पीने आप उधर के कमरे में गए तो वहाँ की बुढ़िया मेम साहबा ने चट सर्विस माँगा। कुछ देना ही पड़ता है। होटलों इत्यादि में और मोटर-

वालों में तो यह प्रथा यहाँ तक दृढ़ हो गई है कि जितना रहने का भाड़ा या भोजन का दाम या मोटर-टैक्सी का किराया हुआ उसका दसवाँ हिस्सा नौकराना या पुरस्कार हिसाब लगाकर बिल में सम्मिलित करके ले लिया जाता है, चाहे यह प्रथा कैसी ही हो किंतु इसके अनुसार चलना ही पड़ता है।

स्वतंत्रता-दिवस

जैसे इटली में तारीख २ जून महत्त्व का दिन है वैसे ही फ्रांस में तारीख १४ जुलाई को उत्सव मनाया जाता है। स्वतंत्रता का यह वार्षिक दिवस है। इस दिन दूकानें तथा सभी काम-काज बंद रहते हैं। नाच, गाना, जूआ, खान-पान, रोशनी घर घर तथा सार्वजनिक स्थानों में होती है। इसे हम लोगों ने देखा। सड़कों पर रात-दिन नाच होते थे। काफी और शराब की पिलाई, बाजों का बजना, गान इत्यादि खूब हुए। आतिशबाजी छूटी, खेल-तमाशा बहुत ही होता था। वे अपने त्योहारों को यों ही मनाते हैं। यहाँ के लोग बड़े रँगीले हैं। जोश में जल्दी आ जाते हैं। एक दिन दो मोटरवालों को हाथा-बाँही भी करते पाया। तरकारी बाजार में भी लोगों को लड़ाई करते देखा।

इस दिन सबेरे ही हम लोग आर्च "त्रायम्फ"* (Triomphe) गए जो लूव्र महल (म्युजियम) से करीब तीन मील की दूरी पर है। यह रास्ता बहुत ही स्वच्छ और सुंदर बहुत चौड़ा और सीधा है।

---

* फ्रेंच भाषा में 'ट' और 'ड' का उच्चारण नहीं है, उन्हें क्रमशः 'त' और 'द' ही कहते हैं। फ्रेंच भाषा का उच्चारण विचित्र है। उदाहरणार्थ—Fountainebleau फौंतैनब्लो, Pantheon पांत्यों, Neuilly नय्यी, Millet मीए, Place St. Michal प्लस सां मिशल, Lausanne लोज़ान, Institute आंसतित्यू, Auteil अतेए Lait Caill लेकाईये (दही)।

दोनों ओर वृक्षों की पंक्ति है। स्थान स्थान पर कुंडों के किनारे रंगबिरंगे फूलों की क्यारियाँ लगी हैं और फुहारा चल रहा है। यह आर्च दोमंजिला बहुत ऊँचा स्वतंत्रता-प्राप्ति के स्मारक-स्वरूप बना है। यहाँ कई मूर्तियाँ भी हैं। बीच में देश के लिये जीवन अर्पण करनेवालों की स्मारक-स्वरूप समाधि है जहाँ अखंड दीप की तरह ज्वाला उठा करती है। संभव है, पाइप द्वारा जलने-वाला तेल या पेट्रोल वहाँ पहुँचा करता हो। इस बड़े स्मारक-स्थान से बारह सीधी सीधी सड़कें बारह ओर गई हैं। उस दिन यहाँ बहुत भीड़ थी, इस कारण ऊपर नहीं जा सके। प्रति वर्ष यहाँ फौज की कवायद आज के दिन हुआ करती थी, परंतु इस वर्ष अधिक गर्मी होने के कारण न हो सकी। यहाँ भी खान पान का सामान बहुत बिकता था और लोग परस्पर मिलते थे।

एक बड़े मैदान के बीच में, जिसका नाम बस्ताई है, बहुत ऊँचे खंभे पर "स्वतंत्रता" की मूर्ति है। इस पर तथा इसके चारों ओर खूब बिजली का प्रकाश हुआ और बहुत प्रकार के खेल, तमाशे, नाच, गाना, खान-पान इत्यादि रात भर होते रहे। शहर में अन्य स्थानों पर भी उस दिन तथा उसके दूसरे दिन खूब उत्सव मनाया गया। काम-काज बंद रखकर लोग उत्सव में मग्न थे। रेलगाड़ियों में, सड़कों पर तथा मोटर-बसों और ट्राम में बहुत बड़ी भीड़ यत्र-तत्र जाती आती थी।

ईफ़ल टावर

सेन नदी के ऊपर सोलह पुल तो हमने गिने। उसी में से एक पर पार होकर इस अद्भुत टावर को देखने गए। बहुत सुंदर विस्तृत उद्यान में विद्या तथा कला-कौशल का यह नमूना खड़ा है। यह टावर (धरहरा) लोहे के गर्डरों इत्यादि का बना है। इसके

संबंध की एक पुस्तक मिलती है जिसमें इसका पूरा इतिहास दिया है। यह एक हजार फुट ऊँचा है। यह संसार में सबसे ऊँचा
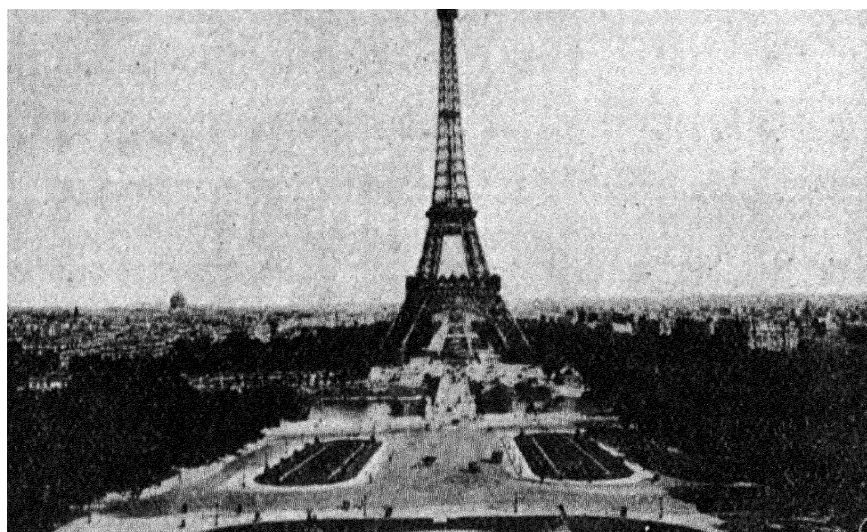
ईफूल टावर

धरहरा बताया जाता है। सन् १८८९ में जो जगत्-प्रसिद्ध प्रदर्शिनी पेरिस में हुई थी उसके वास्ते इसको ईफूल इंजिनियर ने बनवाया था। इसके बनने में बड़ी ही बुद्धिमत्ता प्रदर्शित की गई है। यह चार मंजिलों का है। इसके बनाने में उस समय के अठत्तर लाख सिक्के व्यय हुए थे। इसमें लोहा एक लाख मन के करीब लगा है। करीब दो हजार सीढ़ियाँ ऊपर तक चढ़ने के लिये हैं। एक ओर के एक खंभे से चढ़ और दूसरे से उतर सकते हैं। दो खंभों से बिजली की रेल के डब्बे चढ़ते उतरते हैं। ये चारों खंभे मेहराबदार गर्डरों से जकड़े हुए हैं। नींव बहुत गहरी और दृढ़ चारों कोने चौमुखी दी हुई है। इस पर दस हजार दर्शक एक साथ अँट सकते हैं। ५ फ्रांक टिकट देकर ऊपर जाना होता है। ऊपर की हर मंजिल

में बहुत विस्तृत मैदान है जिसका क्षेत्रफल ऊपर जाते हुए कम होता जाता है। पहली मंजिल पर बड़ा भारी होटल (भोजनालय) है जहाँ हजारों आदमी एक बार भोजन कर सकते हैं। ऊपर की दो मंजिलों में भी खान-पान, शौचालय इत्यादि का अच्छा प्रबंध है। सबसे ऊपरवाली मंजिल पर चढ़कर पूरे नगर तथा इर्द-गिर्द का बहुत ही मनोहर दृश्य देख पड़ता है। वहाँ कई दूरबीनें लगी हैं जिनसे देखने की एक फ्रांक दक्षिणा वहाँ की नौकरनी मेम साहबा ले लेती है।

ऊपर की मंजिलों में अनेक दूकानें हैं जिनमें इस धरहरे की तथा पैरिस नगर इत्यादि संबंधी अनेक वस्तुएँ और पुस्तकें चित्रों सहित बिकती हैं। यह धरहरा क्या है, मानो आकाश में एक नगर बसा है। ऊपर की हवा बहुत ही स्वच्छ है। वहाँ से नीचे की जमीन पर चलती हुई मोटरें, रेलगाड़ियाँ इत्यादि चींटी की तरह देख पड़ती हैं। ऊपर सादे पानी की भी एक बोतल एक फ्रांक में मिलती है। लेमनेड इत्यादि चार-पाँच फ्रांक फी बोतल मिल जाता है। ३४७ सीढ़ी चढ़कर पहला मैदान है, जिसका क्षेत्रफल करीब पाँच हजार वर्गगज के होगा। इसी से इसके विस्तार का अनुमान हो सकता है। उस प्रदर्शिनी के अवसर पर बीस लाख मनुष्य इस पर चढ़े थे जिससे साठ लाख रुपए टिकट से मिले थे। इसमें बिजली की रोशनी की बत्तियाँ भी खूब गुथी हैं और उस उत्सव के दिन यह विचित्र प्रकाश बड़ी दूर से देख पड़ता था। इस पर फोटो खींचनेवाले भी हैं जिनके कहने में आकर शीघ्रता से लोग तसवीरें खिंचवा लेते हैं। पहले ही चित्रकार साहब मूल्य ले लेते हैं और तब चित्र देते हैं जो थोड़ी देर बाद काला पड़ जाता है और पैसा व्यर्थ जाता है। हम लोगों का चित्र देखिए।

गिरजाघर

फ्रांस की अधिकांश जनता प्राय: ईसाई धर्म के रोमन कैथोलिक पंथ को माननेवाली है। पैरिस नगर में तीन गिरजाघर हम लोगों ने

ईफल टावर पर हम लोगों का फ़ोटो

देखे। एक मैदेलीन, (Madeleine) दूसरा नात्रदम (Notre-Dam) और तीसरा यूस्तश। तीनों ही बहुत बड़े बड़े भवन हैं। इनमें

लोग पूजा पाठ करते हैं, बुढ़िया मेमें भीख माँगती हैं। मूर्त्तियों के पास तथा यत्र-तत्र छेदवाले बक्स लगे हैं और उन पर लिखा है
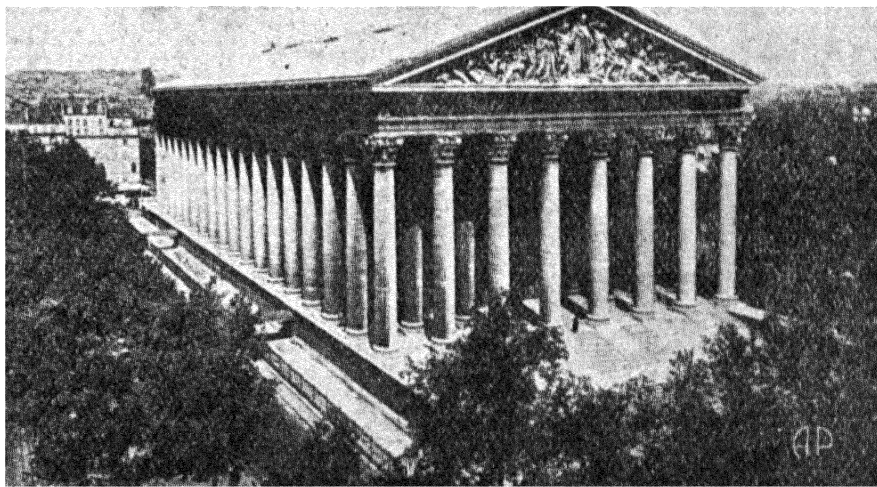
मैदेलीन

कि इसमें यथाश्रद्धा कुछ चढ़ाओ। भिन्न भिन्न संतों के नाम पर दान माँगा जाता है। पूरी मूर्त्तिपूजा हर जगह होती है।
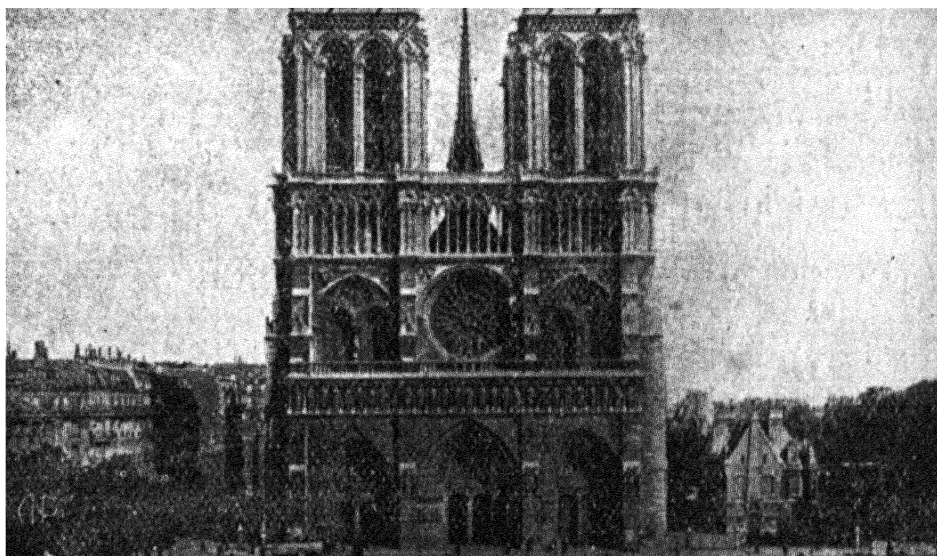
नात्रदम

महंथ लोग बड़े ही ठाठ-बाट से आगे पीछे चोबदार सिपाही लिए

चलते हैं। कुछ लोग मोमबत्ती बाले हुए इनके साथ चलते हैं। मंदिर में भजन गा गाकर लोग झारी से जल चढ़ाते और अंगन्यास करते हैं। इनके अतिरिक्त और बहुत से सुंदर गिरजे हैं।

एक ऊँची पहाड़ी पर म्लामार्च में करीब ४०० सीढ़ियाँ चढ़कर "सेक्राई केअॉव" (Sacrecoeur) बहुत ही सुंदर गिरजाघर है
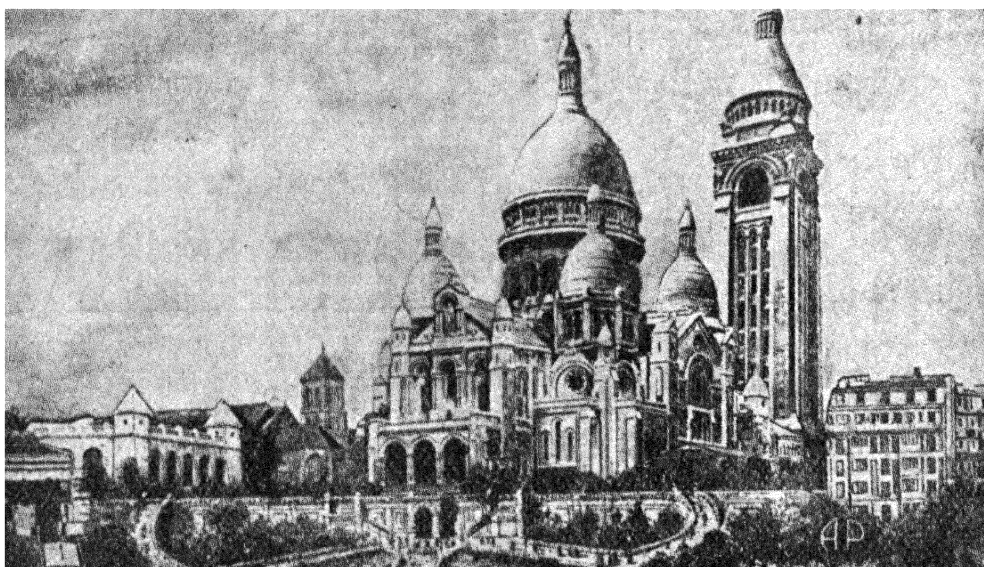
सेक्राई केअॉव

जो ईफ़ूल धरहरे पर से देख पड़ता है। यहाँ लोग बिजली की रेलगाड़ी द्वारा भी जाते हैं और मोटरों के जाने की भी सड़कें हैं। यहाँ से शहर का मनोहर दृश्य देख पड़ता है। यहाँ सुंदर वाटिका, विस्तृत मैदान तथा पक्का चौतरा है। नगर के बहुत से लोग संध्या समय यहाँ घूमते-फिरते तथा विश्राम करते हैं।

लूव्र पैलेस

आपेरा की दूसरी ओर लूव्र महल्ला है। इस महल्ले में इस नाम के होटल, रेस्टोराँ तथा बहुत बड़ी बड़ी दूकानें भी हैं। लूव्र यहाँ के प्राचीन राजाओं का बहुत बड़ा महल था। यह विशाल

भवन तथा वाटिका अब सार्वजनिक बना दी गई है। इसमें बहुत बड़ा अद्भुत संग्रहालय है। इसके विस्तृत हाते में कई जगह फुहारे छूटते रहते हैं। सुंदर वाटिका रंग-बिरंगे फूलों से शोभायमान है। कई बड़े बड़े आँगन हैं और उन आँगनों के चारों ओर कई मंजिल ऊँचे विशाल भवन हैं। फर्श सब पत्थर का है। इस संग्रहालय में दो फ्रांक शुल्क देकर लोग प्रवेश करते हैं। संग्रहालय-संबंधी पुस्तकें भी हैं जिनमें संगृहीत वस्तुओं का वर्णन है।

संसार के बहुत बड़े बड़े अद्भुत संग्रहालयों में इसकी भी गणना की जाती है। इसमें छः साढ़े छः हजार वर्षों तक की पुरानी लाशें मसाले के सहारे सुरक्षित हैं। रोम-साम्राज्य काल के बहुत सामान देखने में आए। भस्म रखने के विचित्र बर्तन, इटली इत्यादि के प्रसिद्ध चित्रकारों की चित्रकारियाँ, पच्चीकारी के काम का सुंदर टेबूल, राथ्सचाइल्ड का दान किया हुआ संग्रह, फ्रांस के चित्रों के संग्रह इत्यादि देखे। इनमें रंगों और छाया की बड़ी कारीगरी देख पड़ती है। प्राचीन काल की ईंटें, दीवार के ढंग पर, सरियाकर रखी हैं। ये चीनी मिट्टी के बर्तन की तरह कलईदार हैं। इन ईंटों पर जानवरों तथा मनुष्यों के चित्र बने हैं। यह भवन चौदहवें तथा पंद्रहवें लूई बादशाह का था।

वर्साई (Versailles)

प्रसिद्ध वर्साई महल पैरिस नगर से नौ मील पर है। मोटरों पर यहाँ की यात्रा का प्रबंध टामस कुक इत्यादि अनेक कंपनियों द्वारा होता है। किंतु हम लोग ट्रामगाड़ी से बहुत सस्ते में गए और दिनभर में देखकर संध्या समय लौट आए। जिसने इसे नहीं देखा उसने फ्रांस में कुछ नहीं देखा। यह वही स्थान है जिसका फ्रांस के इतिहास में बार बार उल्लेख है। इसी महल को चौदहवें

लूई ने बड़े शौक से बनवाया था। यहीं २८ जून सन् १९१९ ईसवी को जर्मन महासमर के बाद संधिपत्र पर हस्ताक्षर हुए थे। इसके
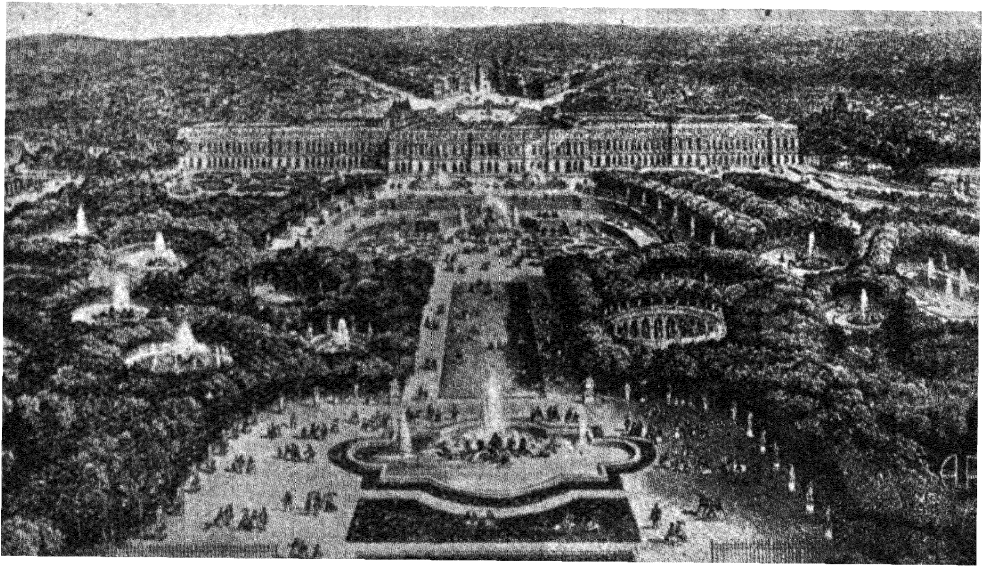
वर्साई महल

वर्णन की भी कई पोथियाँ हैं। इसके मनोहर चित्रों के संग्रह इत्यादि बहुत बिकते हैं।
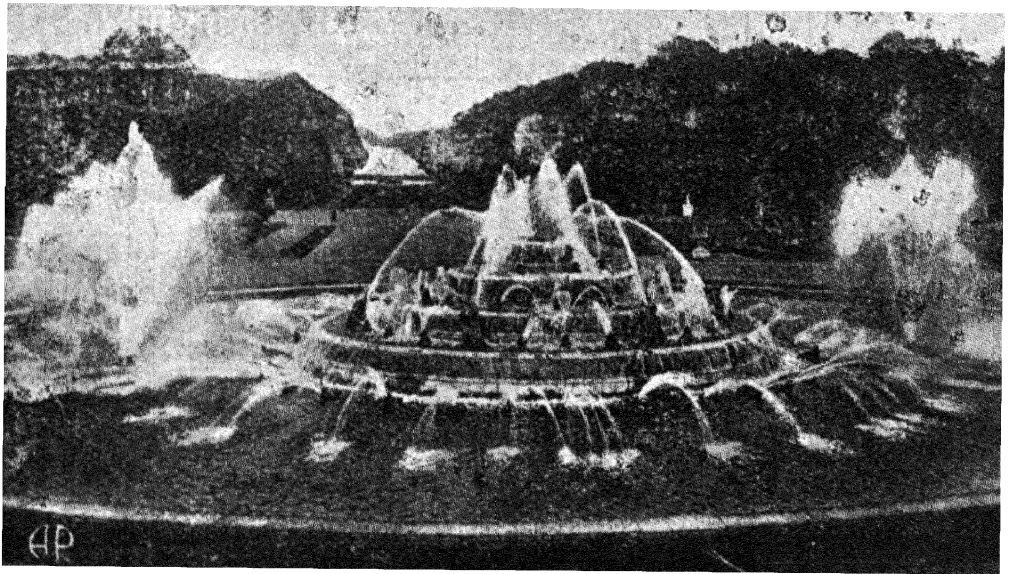
वर्साई का प्रसिद्ध फुहारा

सबेरे १० बजे से जाड़े में ४ और गर्मी में ६ बजे संध्या तक यह खुला रहता है, सोमवार तथा कुछ मुख्य त्योहारों पर बंद रहता है। इसके प्रसिद्ध फुहारे हर रविवार को छूटा करते हैं। इसके विशाल भवन और भीतरी सुंदर राजभवन दर्शनीय हैं और प्राचीन काल के वैभव तथा लूई की विलासिता का प्रमाण देते हैं। इसके कई कमरों में बहुत ही अच्छी तसवीरें हैं। दस-बारह कमरों में लड़ाई की तसवीरें हैं। रंगीन चित्र ऐसे ढंग से बने हैं कि उभरी हुई तसवीरें जान पड़ती हैं। इसमें कई कमरे बड़े अच्छे हैं। एक तो शीशे का चेंबर आव मिरर्ज़ (काँच का महल) है जिसमें बहुत बड़े बड़े शीशों की दीवारें हैं। यह बहुत ही लंबा-चौड़ा कमरा या हाल है।
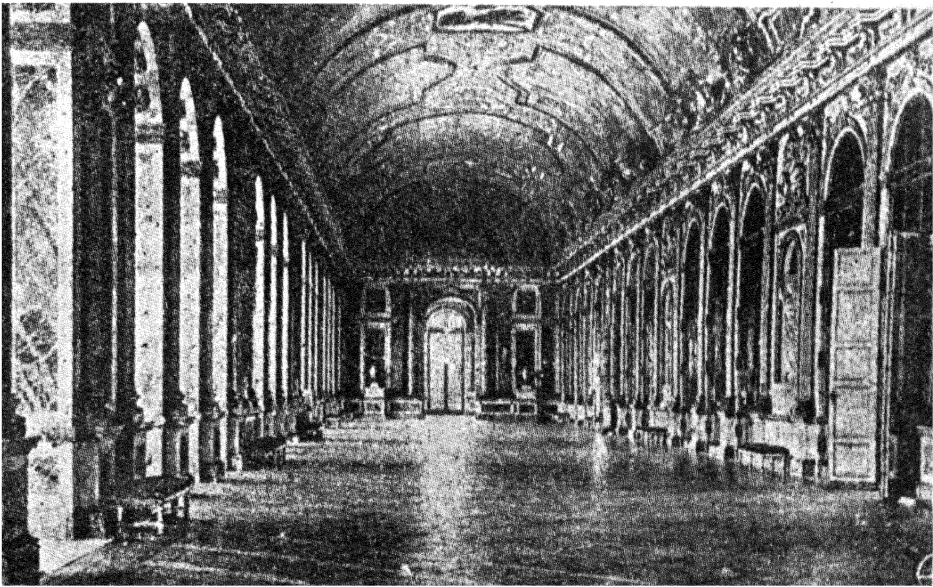
शीशे का महल

इस हाल से बाहर बहुत दूर तक मनोहर बगीचा, झील, कुंड और फुहारों का दृश्य देख पड़ता है जो चित्त को मुग्ध कर देता है। क्या स्वर्ग का वर्णन ऐसे ही स्थान को देखकर कवियों ने किया है? या कवियों के वर्णन से इसकी बनावट का ध्यान आया है?

२८ जून १९१९ ईसवी को जिस टेबुल पर संधिपत्र पर हस्ताक्षर हुए थे वह इसी भवन में रखा है। इसमें रंग-बिरंगे बहुमूल्य मार्बल लगे हैं। इसकी सजावट इंद्रासन के वर्णन को मात करती है। ऊँची और लंबी-चौड़ी विस्तृत दीवार में सुनहरे चौखटों से घिरी तसवीरें इसके कमरों को खूब ही शोभायमान करती हैं। ये तथा अन्य चित्र वर्णन के बाहर हैं। नेपोलियन की लड़ाई के चित्र और मखमली गद्दों की बैठकें अद्भुत हैं। ऐतिहासिक घटनाओं के कई चित्र बहुत ही मनोहर हैं। लड़ाइयों के चित्र नेपोलियन की वीरता को खूब ही प्रदर्शित करते हैं। एक दूसरे बहुत बड़े हाल में लड़ाइयों के अनेक बड़े बड़े चित्र घमासान की जुझान दिखाते हैं; बहु-मूल्य मार्बल अनेक स्थानों पर लगे हैं। बच्चा लिए माता का एक चित्र बहुत ही सुंदर है। कई अंशों में रोम के पोप के महल वैटिकन की टक्कर का यह महल हो सकता है, किंतु वाटिका तथा विस्तार में यह उससे बढ़ा-चढ़ा है।

इस विशाल महल के बाहर हाते में उतार-चढ़ाव पर बड़े सुंदर फूलों की उठी हुई क्यारियाँ और कुंडों में फुहारे ऐसे अच्छे बने हैं कि कश्मीर के शालामार और निशात बाग के सौंदर्य का मुकाबिला कर रहे हैं। दक्षिण ओर हरी पहाड़ी इसकी शोभा को और भी बढ़ा देती है। बगीचे में सुराहीदार कटे हुए वृक्ष तथा हरे वृक्षों पर लाल लाल फूल और घने वृक्षों की छाया खूब ही है। कई मीलों के घेरे में यह इंद्रासन का बगीचा और महल दर्शनीय है। लंबे लंबे सीधे दोतरफा ऊँचे वृक्षों के सघन छायादार लखराँववाले रास्ते बड़े ही सुंदर हैं। बीच बीच में घास के बड़े बड़े मैदान हैं जो गलीचे का भ्रम पैदा करते हैं। चौरस्तों पर अनेक मूर्तियाँ और फुहारों सहित जलाशय उस सौंदर्य को कई गुना बढ़ा देते हैं। इस

बड़े हाते में अनेक स्थानों पर जलपान इत्यादि की दूकानें हैं, जहाँ लोग उपाहार करते और विश्राम लेते हैं।

इस महल की हद से एक मील की दूरी पर "ग्रैंद त्रियानो" महल है जिसे चौदहवें लूई ने उस विशाल महल की तुलना में
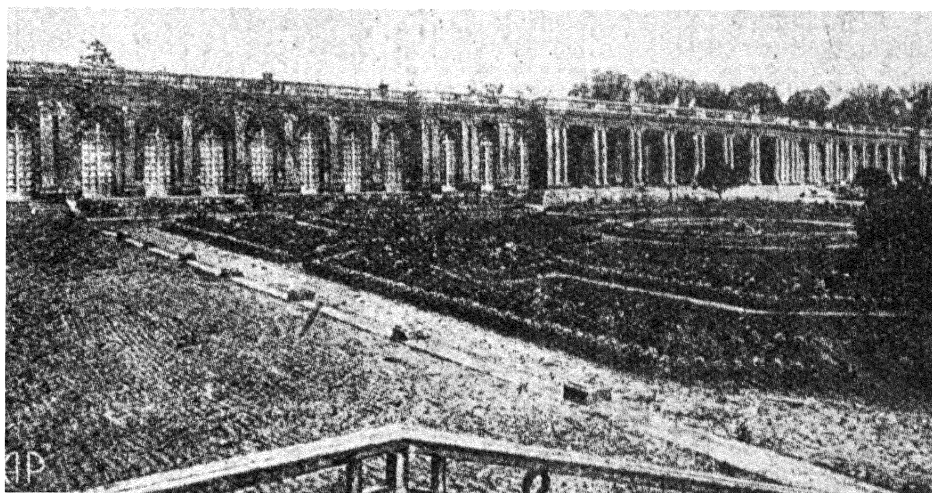
ग्रैंद त्रियानो

"कुटी" कहकर बनवाया था। यह भी एक भारी महल है, चाहे उस विशाल वैभव-युक्त महल की अपेक्षा "कुटी" ही क्यों न कहा जाय। इसमें भी अच्छी सजावट है। इसके भीतर और बाहर बहुत सुंदर, लाल, सफेद और हरे मार्बल के बहुमूल्य और बहुत अच्छे खंभे लगे हैं। इसके साथ ही सुंदर वाटिका भी है।

इससे थोड़ी ही दूर "पेतित (छोटा) त्रियानो" है। यह भी एक सुंदर छोटा महल है जिसे कहा जाता है कि लूई १६वें ने बनवाकर अपनी स्त्री मेरी ऐंताइने को दे दिया था। उस समय के सामान से यह अब तक सुसज्जित है। इसके बाहर भी छोटी सुंदर वाटिका है। नेपोलियन की बहुत बड़ी बड़ी कई बहुमूल्य

गाड़ियों का यहाँ संग्रह है। इनमें से एक गाड़ी का मूल्य चालीस हजार पौंड यानी ५२-५३ लाख रुपए के करीब बताया जाता है।
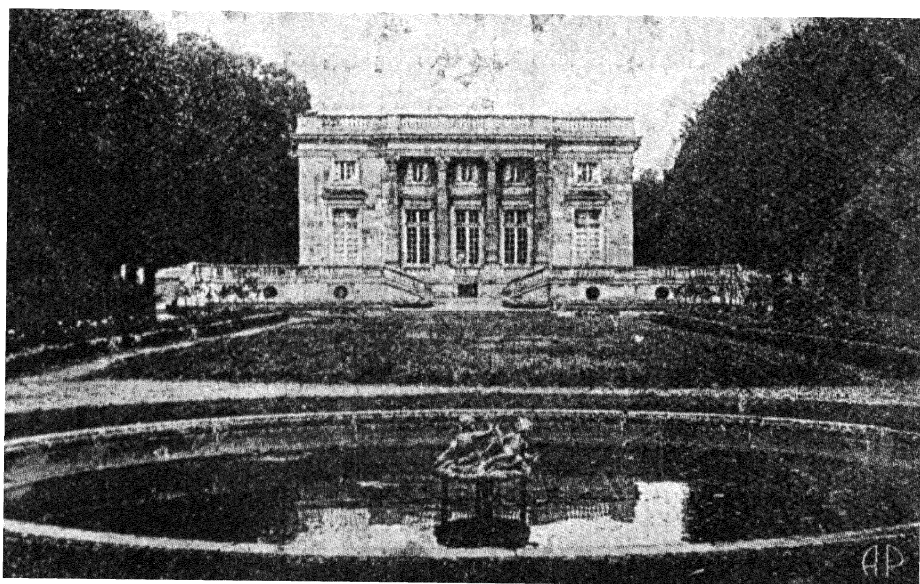
पेतित त्रियानो

इसमें सात राजमुकुट बने हैं। एक गाड़ी सुनहली, एक लड़ाई की, एक नेपोलियन के विवाह के समय की, ऐसी ऐसी सात आठ बहुमूल्य ऐतिहासिक गाड़ियाँ प्रदर्शित हैं। एक बड़ा बगीचा, झील और गिरजाघर-सहित सुंदर जंगल की तरह है, जिसमें देहाती घर, गोशाला, तालाब, नहर इत्यादि बने हैं। वर्साई एक छोटा सा नगर है जहाँ अनेक होटल बाजार इत्यादि हैं। यहाँ सरकारी पलटन भी रहती है।

इनवैलिद

यह भी एक अद्भुत संग्रहालय है जिसमें नेपोलियन की समाधि है। इस बड़े भवन को भी चौदहवें लूई ने बूढ़े तथा घायल और अपाहिज सिपाहियों के निवास-स्थान के लिये बनवाया था। इसमें अब लड़ाई के सामान की प्रदर्शिनी तथा संग्रहालय है। यहाँ प्राचीन

तथा अर्वाचीन हथियारों का भांडार है। अनेक लड़ाइयों में फ्रांस-वालों ने जो दूसरों के झंडे इत्यादि जीते थे उनका भी यहाँ संग्रह
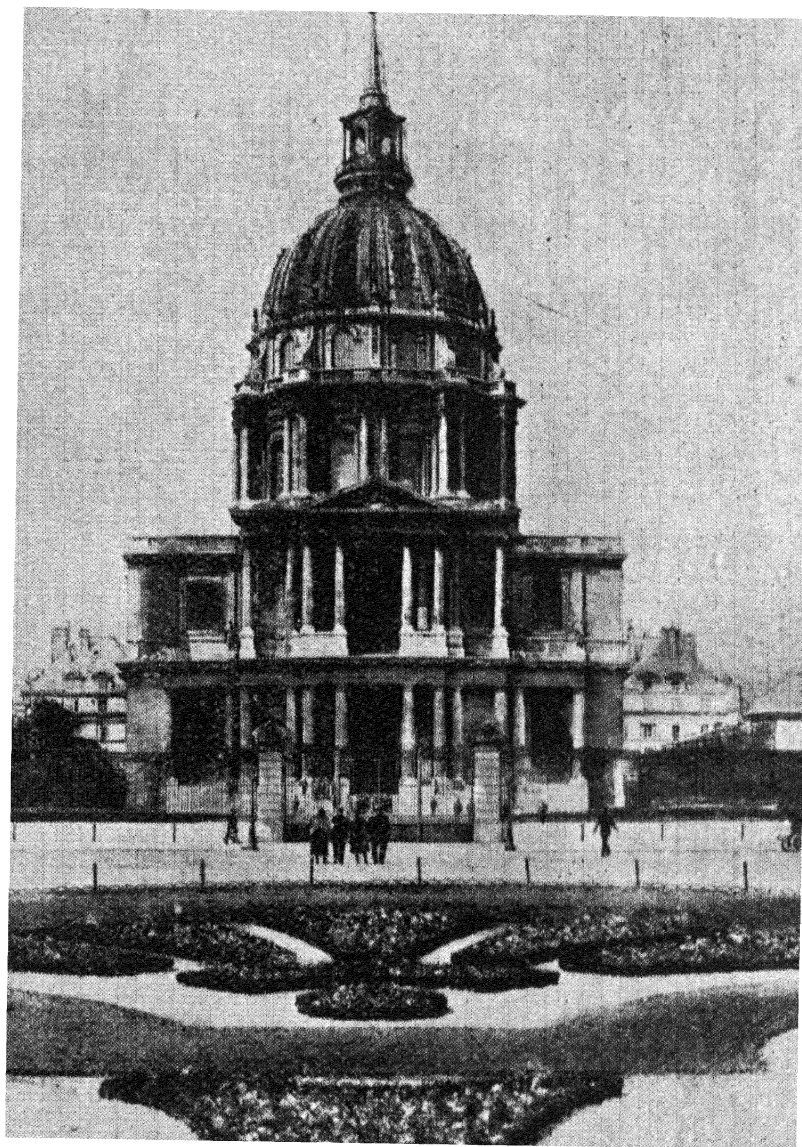
इनवैलिद

है। इसके भीतर बड़ा आँगन है जिसके चारों ओर बड़े बड़े हाल में ये संग्रह तिमंजिले भवन में हैं। इसके बाहर भी विस्तृत मैदान और सुंदर वाटिका है। यहाँ भीतर जाने का शुल्क लगता है।

यहाँ वह गाड़ी भी स्मारक-रूप से सुरक्षित है जिसमें वीर नेपोलियन का शव लाया गया था। इसमें तोपों और बक्तर पहने सिपाहियों की और घोड़ों तथा घोड़सवारों की अनेक मूर्त्तियाँ संगृहीत हैं। दीवारों पर अद्भुत चित्र हैं जिनमें कितने ही लड़ाइयों के हैं।

मालमेजों (Malmaison)

यह भी एक बड़ा सुंदर तिमंजिला महल है। हम लोग मेत्रो-रेल से गए। यह बड़े बगीचे के हाते के भीतर सुंदर वाटिका में है। इसमें चनार के से वृक्षों के लखराँव बहुत सुंदर हैं। यह महारानी
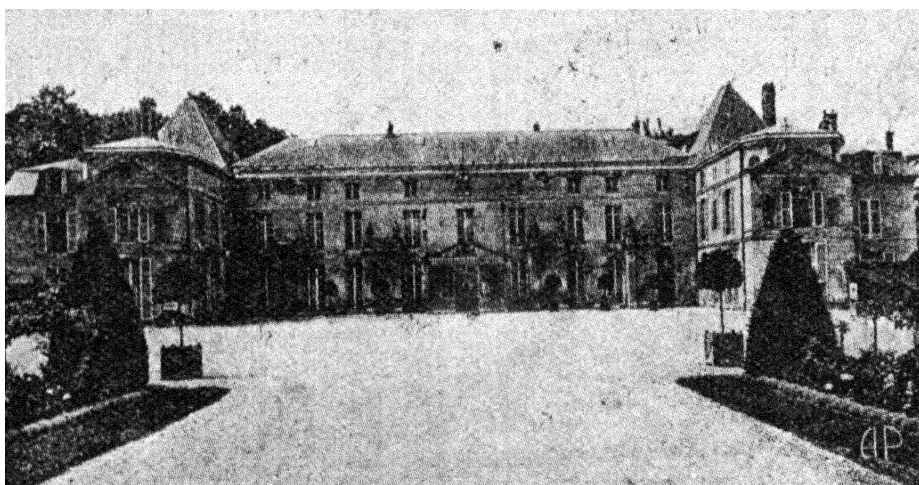
मालमेजों

जोजेफाइन का महल था। यह भी खूब ही सजा है। उक्त महारानी के बैठने उठने, लेटने सोने इत्यादि के कमरे सामान से सजे हैं जिनमें उस समय के वस्त्र, आभूषण इत्यादि भी हैं। इसमें संगृहीत चित्र बड़े ही सुंदर हैं। सन् १८०५, १८०६ तथा १८१४ ईसवी की लड़ाइयों के चित्र बहुत ही अच्छे देख पड़े जिनमें नदी-किनारे पलटनों तथा वृक्षों की परछाहीं जल में बहुत ही अच्छी दिखाई गई है।

नेपोलियन के पदक, वस्त्र, आभूषण इत्यादि अच्छी तरह यहाँ संगृहीत हैं। बहुत ही अच्छा टेबूल, दो बड़े बड़े इटालियन नीले गमले, बहुमूल्य पत्थरों की चीजें, नेपोलियन का घोड़े पर सवार वीर भाव का चित्र, बढ़िया गलीचा, सुवर्ण की घड़ी, शमादान, भोजन परोसने के सुनहरे बर्तनों का गंज टेबूलों पर सजा हुआ, भोजनालय, पुस्तकालय तथा अन्य अनेक वस्तुएँ देखने योग्य हैं। इस महल के बाहर का फूलों से सुसज्जित उद्यान, घूमते नलों के फुहारों से पानी का छिड़काव, उनकी गाड़ियों का संग्रह, सहेलियों-सहित जोजेफाइन और नेपोलियन की बड़ी तसवीर, तीसरे नेपोलियन का अन्यान्य देशों के नृपतियों-सहित घोड़ों पर सवार तथा नेपोलियन के चार पीढ़ी तक के चित्र, सम्राट्-परिवार की प्रदर्शिनी सुंदर वाटिका
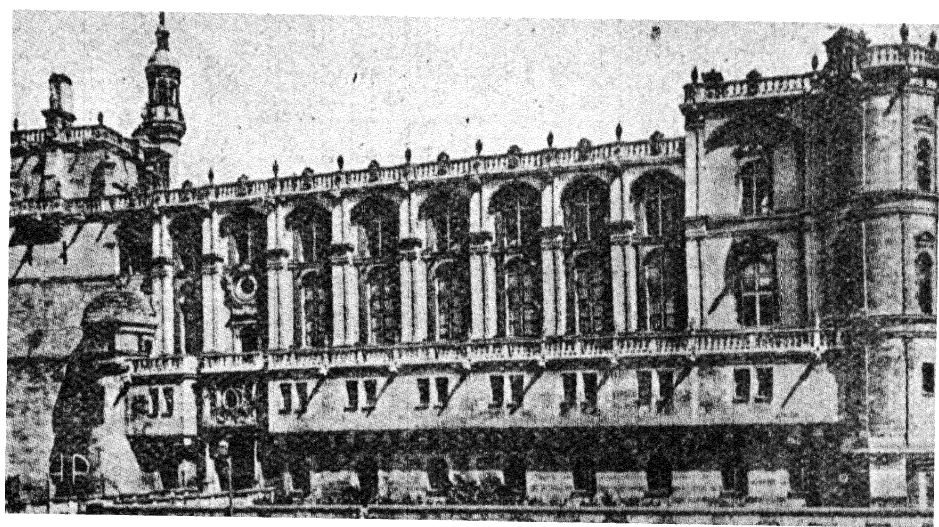
सां जरमें

सहित देखने योग्य हैं। यात्री साथ ही सां जरमें (St. Germain) भवन भी अवश्य देखकर आवें।

कालेज दे फ्रांका

यह यहाँ का बड़ा कालेज है। जहाँ यह कालेज है वहां आसपास सायंस और आर्ट के कई बहुत बड़े बड़े कालेज हैं। आजकल ग्रीष्म के अवकाश के कारण ये विद्यालय बंद थे, किंतु इनकी बड़ी प्रशंसा है। यहाँ उन अनेक विद्वानों की सूची खुदी है जो इन विद्या-मंदिरों में बड़े बड़े आचार्य हो गए हैं।

कासरबोन कालेज भी बहुत बड़ा विद्यालय है। विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा देने के लिये हर विषय के लिये अच्छे अच्छे शिक्षक तथा अन्य साधन यहाँ वर्तमान हैं।
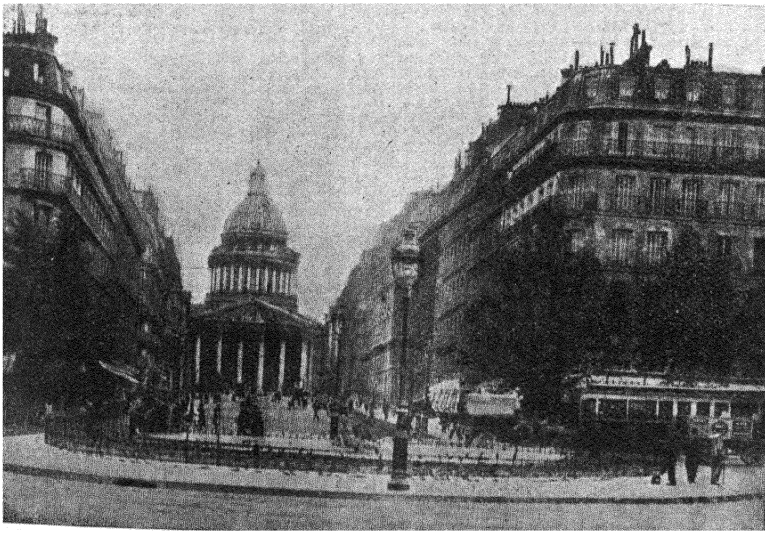
पांतयों गिरजाघर

पास ही पांतयों नाम का बड़ा गिरजाघर है जिसमें ऐतिहासिक पुरुषों की समाधियाँ हैं तथा १९१४—१८ के समर में काम

आए वीरों की बड़ी बड़ी सूचियाँ खुदी हैं। इन पर लोग फूल माला चढ़ाते हैं।

फ्रातर्निती नाम का बहुत बड़ा सार्वजनिक अस्पताल है। इसके सामने की सड़क, दोनों ओर चौड़ी-चौड़ी पटरियों तथा वृक्षावली सहित, बहुत ही सुंदर हैं। पटरियों पर सार्वजनिक पेशाबखाने बने हैं। उनमें तसवीरों द्वारा वेश्यागमन से होनेवाले दुष्परिणाम दर्शाए गए हैं। कई दर्जों में इसका इतिहास तथा इससे उत्पन्न होनेवाले रोगों और उनके रोगियों तथा उनकी दुर्गति दिखाई गई है। ऐसे चित्र प्राय: सभी पेशाबखानों में लगे हैं।

इसके पास ही फूलों की हाट बहुत ही सुंदर है। बहुत बड़ी बड़ी चार लाइनों में काशी के विश्वेश्वरगंज की तरह या बड़े स्टेशनों के मुसाफिरखानों की तरह टीन से छाए हुए लंबे लंबे स्थान हैं जिनमें अनेक दूकानों में मालियों की फूल-पत्तियों की बड़ी बड़ी दूकानें हैं। फूलों की सजावट और उनका संग्रह विचित्र है।

न्यायालय

इसके पास ही सुनहरे फाटक के विस्तृत हाते में विशाल भवन है जिसमें अलग अलग कई न्यायाधीशों की बैठकें हैं। हमने कई अदालतें देखीं। प्राय: तीन तीन जज साथ बैठे पाए गए। यहाँ के बारिस्टरों में स्त्रियाँ भी देख पड़ीं। इनके गौन चुननदार विचित्र बनावट के होते हैं और गले में बैंड भी सफेद चुननदार होते हैं। बारिस्टर लोग चमड़े के बेग में अपने कागज-पत्र लिए हाथ में लटकाए रहते हैं। ये लोग एक प्रकार की काली टोपी पहनते हैं। फौजदारी अदालत के सामने बाहर लिखा है कि दंड अपराध के लिये नहीं दिया जाता है, किन्तु सुधार के

लिये। एक बहुत लंबा चौड़ा हाल मवक्किलों के लिये है जहाँ सैकड़ों बैरिस्टर घूमते-फिरते देख पड़े। यहाँ कई पुराने विद्वान् तथा कानून जाननेवालों की मूर्तियाँ बनी हुई हैं। इसमें बड़ा कोलाहल था। जजों के कमरों के अंदर पीछे की तरफ काठ की दीवार पर तराजू का चित्र बना है। डेनमार्क में हमने देखा कि मजिस्ट्रेटों की कुर्सी की दोनों बाँहों पर काठ के उल्लू बने हुए थे।

सेवर्स संग्रहालय तथा चीनी के बर्तनों का कारखाना

सेन नदी में अनेक स्टीमरों द्वारा लोग इधर उधर जाया करते हैं। इन स्थानों में एक सेवर्स है जहाँ हम लोग स्टीमर द्वारा जल-विहार करते दृश्य देखने गए। यहाँ चीनी के बर्तनों इत्यादि का अपूर्व और जगद्विख्यात सरकारी संग्रहालय तथा ऐसे सामान बनाने का बड़ा कारखाना है। आजकल इसमें बनाने का काम तो कुछ ढीला मालूम पड़ा, किंतु संग्रहालय वास्तव में अद्भुत है। यहाँ रेलगाड़ी और ट्राम से भी लोग जाते हैं। शनिवार तथा छुट्टी के दिनों को छोड़कर यह नित्य १० से ४—५ बजे तक खुला रहता है। कारखाना सोमवार तथा गुरुवार को दो से चार बजे तक देख सकते हैं। यहाँ के प्रधान कार्याध्यक्ष से कहने पर वे दिखा देते हैं। कारखाने में एक कुम्हार स्टूल पर बैठा नीचे की पत्थर की चाक पैर से चलाता है और उसमें लगे हुए किल्ले पर जो चकई ऊपर घूमती रहती है उसी पर सिरेमिक्स (एक प्रकार की मिट्टी) के अनेक रूप के बर्तन इत्यादि गढ़ा करता है।

ऐसे बर्तन बना सुखाकर कई भट्ठियों में सरियाकर पकाए जाते हैं। ये भट्ठियाँ भी बहुत आँचवाली विचित्र बनी हैं। इनमें लकड़ी जलाकर या गैस, कोयले द्वारा १४०० दर्जे तक की गर्मी की आँच आवश्यकतानुसार देते हैं। यहाँ इन बर्तनों पर रँगाई

और बारीक चित्रकारी भी होती है। इसका संग्रहालय-विभाग दो मंजिलों में कई कमरों में अद्भुत सामान से सजा है। ये सामान बहुत बारीक और कला-कौशलयुक्त हैं। बहुत ही अच्छी कारीगरी के सादे, रंगीन, सुनहले, फूल-पत्तियोंवाले नमूने देख पड़ते हैं। यहाँ की बनी चीजें दूसरे देशों के नृपतियों को भेंट में प्रायः दी जाया करती हैं। एक स्त्री का चित्र ऐसा सुंदर बना है कि उसकी महीन साड़ी के भीतर से शरीर का रंग खूब ही झलकता दिखाई देता है। पोर्सलेन की घड़ियाँ, टेबूल, गमले, पांडीचेरी का घोड़सवार, बहुत बड़े बड़े गमले, विचित्र रंगों और चित्रकारियों के तितलियों के से बहुरंगे बर्तन, "नेपचून" वृषभ की काली मूर्ति, छोटे लाकेट में बारीक मूर्तियाँ, चाय पीने के सुनहरे बर्तनों के सेट, झँझरीदार कटाव के काम के सुनहरे रंगोंवाले सेट, "रति और कामदेव" की बहुत ही मनोहारिणी तसवीर, अनेक छोटी बड़ी डिबियाँ, जिन पर मीने का काम बहुत ही सुंदर बना है, देखने योग्य हैं। कुछ सामान दो तीन कमरों में ऐसा सजा है जो बिकता भी है। पूछने पर मालूम हुआ कि दाम भी राजसी है—एक सेट चाय पीने के बर्तनों का दाम साढ़े आठ सौ रुपए (भारतीय मुद्रा) था। इससे भी अधिक दामों की चीजें थीं। इनमें एक भारतीय कब्र चीनी की बनी हुई प्रिंस आव वेल्स की भेंट की हुई रखी है जिस पर अरबी में कलमा लिखा है। यह बंबई की है। कई किलों इत्यादि के नमूने भी पोर्सलेन के बने हुए यहाँ प्रदर्शित हैं। इनकी पुस्तकें फ्रांसीसी भाषा में मिलती हैं।

नगर की शान

पैरिस में कई महल्ले बड़े शानदार हैं। उनमें शाँ एलीजे (Champs Elysees) और प्लस दी ला कानकार्दे (Place de la

Concorde) में सड़कें बड़ी चौड़ी हैं। शाँ एलीजे की शान के मोहल्ले संसार के किसी नगर में नहीं मिलेंगे, वहाँ रात दिन चहल-पहल रहती है।

शाँ एलीजे

हम लोग कुछ तो भाषा की अनभिज्ञता और कुछ समयाभाव, पूरा देख न सके और जो देखा उसका वर्णन करना असंभव है।

लोग कहते हैं कि पैरिस के भोग-विलास का जो दृश्य गुप्त स्थानों में होता है वह भी देखने योग्य है, किंतु हम लोगों में ऐसा कोई न था जो ऐसे दृश्यों का शौकीन होता या उन्हें देखने जाने की हिम्मत करता। सुनने में आया कि भलेमानसों के देखने योग्य ये हैं भी नहीं।

यहाँ भी दौड़ती सीढ़ियोंवाली बहुत सी बड़ी बड़ी दूकानें हैं जिनमें सब सामान मिलता है, ये छः छः आठ आठ मंजिलों की हैं।

हमने तरकारी का भी एक बाजार देखा। वह सबेरे के समय चार से आठ-नौ बजे तक बड़े विस्तृत स्थान में, सोमवार को छोड़कर, नित्य लगता है, जहाँ हर चीज की ढेरी लगी रहती है और जो आठ बजे तक बिक-बिकाकर सब साफ हो जाता है। इस हाट के
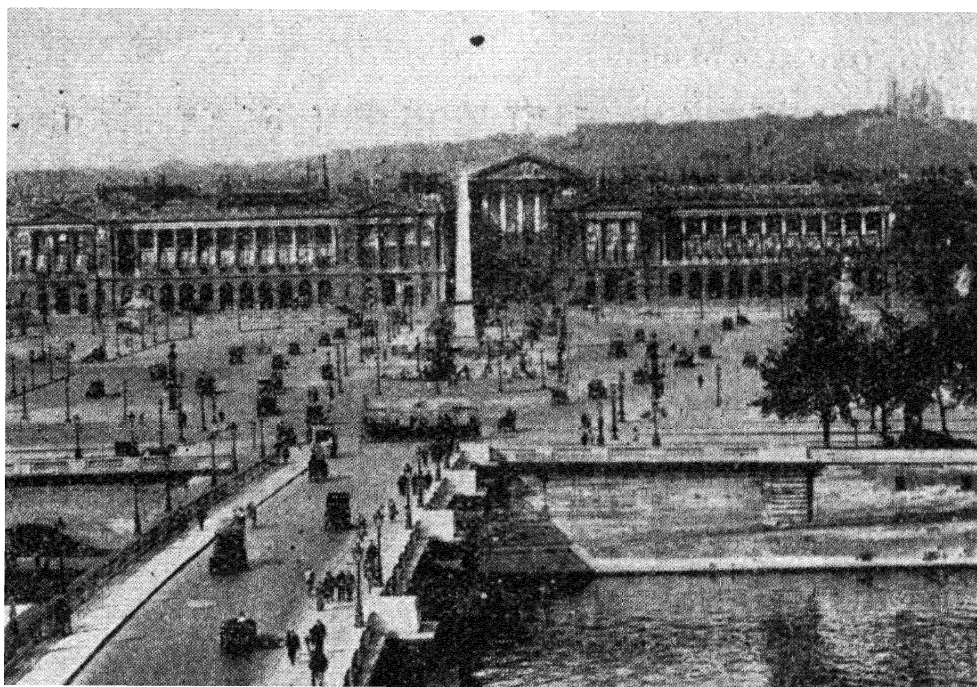
प्लस दी ला कानकार्दे

एक ओर मांस और मछली का भी विभाग है। हम लोगों ने तड़के ही जाकर बहुत सा फल खरबूजा, मूली, शफतालू इत्यादि खरीदा। यहाँ ऐसे कई बाजार हैं। फूलों की बिक्री के लिये भी पैरिस प्रसिद्ध है। हर गली कूँचे में लड़कियाँ फूलों की टोकरी लिए बैठी

मिलती हैं। मित्र लोग एक दूसरे को फूल भेंट करते हैं। यहाँ के लोगों का पुष्पों से प्रेम देखकर चित्त प्रसन्न होता है।

शहर में तथा शहर के बाहर अनेक देखने योग्य स्थान हैं जिनके देखने का प्रबंध कई कंपनियों द्वारा मोटरों में होता है, जिसमें चालीस पचास रुपए रोज तक का व्यय पड़ जाता है। यहाँ काम करनेवाली निजी कंपनियाँ भी कई हैं, किंतु उनके द्वारा कुछ असुविधा होने का डर रहता है।

मुक्तिफौज

यहाँ भी मुक्तिफौजवालों के दो आश्रम देखे। ये यहाँ भी जनता के सहायतार्थ बहुत ही पुनीत काम कर रहे हैं, निःस्वार्थ भाव से गरीब निःसहाय जनता के लिये रहने, पढ़ने और खाने-पीने का सस्ता प्रबंध करते हैं। इनका काम देखकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। इनका काम दान द्वारा चलता है। हमारे भारत में भी दानशील धनी सज्जन बहुत हैं, किंतु दान-प्रणाली बदलकर सच्चे दान-पात्रों की, जिन्हें वास्तव में इस सहायता की आवश्यकता है और जिनकी सेवा द्वारा देश का भला हो सकता है, सेवा में धन लगाना और उनको सहायता पहुँचाना कम देखने में आता है। इन दोनों संस्थाओं के नाम हैं Palais de la Femme (स्त्रियों का महल) और Palais du Peuple (सर्वसाधारण का महल)। यहाँ एक संस्था है जिसके नाम का अँगरेजी अनुवाद है—League of Mercy (दया संघ)। इसके द्वारा गरीबों को मुफ्त में या थोड़े खर्च में शोरबा बाँटा जाता है।

फ्रांस में भाषा न जानने की कठिनाई तो थी ही, बहुत बड़ा कष्ट इस कारण भी हुआ कि लिखे हुए फ्रेंच शब्दों का उच्चारण करना बड़ा कठिन है।

बहुत तैयार की जाती है। इधरवाले भोजन के साथ प्रायः अंगूरी शराब पीते हैं। जल तो माँगने पर ही मिलता है। फ्रांसीसी हद डाँकने के पहले ही पासपार्ट तथा माल की जाँच साधारण रीति से हुई और रात को ८ बजे के बाद जिनीवा स्टेशन पर उतरकर विक्टोरिया होटल में झील के पास ही जा ठहरे।

यह होटल अच्छा है। इसमें ठहरने के लिये ६ फ्रांक तथा जलपान के लिये डेढ़ फ्रांक नित्य के हिसाब से देना तय हुआ। स्नान के लिये दो फ्रांक यानी १=) रोज माँगते थे, अतः यहाँ भी कमरे में जो जल की टोंटी अथरी में लगी थी उसी के द्वारा नित्य स्नान कर लिया करते थे। होटल में भोजन अच्छा मिलता था जिसका एक समय का दाम करीब तीन रुपया पड़ जाता था, इस कारण दिन में जहाँ पहुँचे वहीं खा लिया। इस होटल के पास ही "आलिंपिया" नाम का एक शाकाहारी भोजनालय (वेजिटेरियन रेस्टोराँ) नंबर १२ कोर्स डि राइव महल्ले में है। हम वहाँ प्रायः भोजन किया करते थे। दाम साधारण था और वस्तुएँ इच्छा के अनुसार मिलती थीं। इस बात की जाँच करने की आवश्यकता नहीं रहती थी कि मांस, मछली या अंडा अमुक चीज में है या नहीं।

इस नगर में अँगरेजों तथा अमरीका के यात्रियों का आना बहुत होता है। होटलों में व्यवसाय के कारण अँगरेजी बोलनेवाले मिल जाते हैं। यहाँ सभी देशों के राज्यों के दूत तथा कार्यालय हैं और यहाँ पर सब देशों की राष्ट्रसभा (लीग आव नेशन्स) है, तो भी बाजार में और ट्रामगाड़ी इत्यादि पर अँगरेजी की बड़ी दुर्गति होती है। हम लोगों को अपनी भाषा हिंदी के अतिरिक्त केवल अँगरेजी ही जानने के कारण यहाँ प्रायः लज्जित होना और गूँगे की तरह रहकर

कष्ट उठाना पड़ता था। एक दिन हमें साबुन और लौंग लेने की आवश्यकता हुई। अब इसका जानना बहुत ही कठिन प्रतीत हुआ कि यह कहाँ मिले और कैसे पूछें। यदि होटलवाले से कहें तो वह एक का आठ दाम लेकर कदाचित् मँगा दे। घूमते-घामते एक जगह कुछ सूखे गुलाब के फूलों की शीशियाँ देख, हमने समझा कि यह अपने देश की तरह किसी पंसारी की दूकान है। उसके भीतर जाकर लौंग का अँगरेजी नाम "क्लोव्स" कहकर पूछा, पर वह साहब दूकानदार कुछ न समझ सका। अँगुली से मैंने मुँह की ओर संकेत कर दाँत से चबाकर कड़वी लगने की मुद्रा कर सान बुझाया तब भी उसने न समझा। फिर मैंने पेंसिल से उसका चित्र कागज पर खींचकर दिखाया तब वह समझ गया और लौंग निकाल कर उसने दी। इसी तरह इलायची और साबुन की भी खरीद हुई। यहाँ की घड़ियाँ, बारीक सूई के काम तथा नकाशी के गहने और बर्तन प्रसिद्ध हैं, किंतु बाजार में दूकानों पर दाम बहुत है। हाँ, कारखानेवालों को हजारों की फर्माइश दी जाय तो सस्ता मिले। भारतवर्ष में जाकर ये चीजें यहाँ के फुटकर की अपेक्षा सस्ती पड़ती हैं। नकली जवाहिर के गहने भी बहुत बिकते हैं। यहाँ भी सब दूकानें, डाकखाने, कार्यालय इत्यादि बारह बजे से दो बजे तक भोजन के लिये बंद रहते हैं।

स्विजरलैंड का यह प्रधान नगर बहुत ही सुंदर और स्वच्छ है। यह इसी नाम की जिनीवा झील के दक्षिणी छोर पर बसा है। यहाँ की सफाई लंदन और पैरिस को मात करती है। यह नगर छोटा तो है, किंतु इसकी जनसंख्या एक लाख पैंतीस हजार है। यहाँ का व्यवसाय यात्रियों पर ही निर्भर है। यह देश और नगर इस ताल और निकटवर्ती पहाड़ों के कारण बहुत ही सुंदर है, जिसकी सैर के

लिये यूरोप के सभी देशों तथा अमरीका के यात्री बहुत संख्या में आया करते हैं। यहाँ झील के किनारे भोग-विलासवाले बड़े बड़े होटल हैं और साधारण "पेंशियोनी" (छोटे होटल) भी हैं जहाँ दो तीन फ्रांक रोज में रह सकते हैं। रहन-सहन महँगा है। झील करीब पचास मील लंबी है जिसके एक ओर का बहुत सा भाग फ्रांस का है। यहाँ से एक तरफ हिमाच्छादित मौंट ब्लैंक (Mont Blanc) है, जिसको यहाँ के लोग 'मों ब्लां' कहते हैं, और दूसरी ओर जूरा पर्वत-श्रेणी दिखलाई देती है। इस ताल के किनारे वृक्षों की श्रेणी में छायादार पैदल चलने के रास्ते, उसके बाद स्वच्छ सड़कें और उसके पीछे बड़े बड़े मकान हैं। बिजली की रोशनी यहाँ की शोभा का एक अंग है। इस झील के पास बड़ा सार्वजनिक उद्यान है जो रंग-बिरंगे फूलों तथा हरे-भरे वृक्षों से सुसज्जित तथा अनेक फुहारों और मूर्तियों-सहित बड़ी ही शोभा का स्थान है। यहाँ लोग घूमते, विश्राम करते और शांति प्राप्त करते हैं। यहाँ भी बहुत बड़े बड़े विद्यालय हैं जहाँ भारतीय विद्यार्थी अच्छी तरह अध्ययन करते और कर सकते हैं। इन दिनों यहाँ भी ग्रीष्मावकाश है, सब विद्यालय बंद हैं; किंतु इन छुट्टियों के दिनों में भी लंदन इत्यादि से विद्यार्थी यहाँ अवकाश में विशेष अध्ययन करने के लिये आते हैं। यहाँ कितने ही बड़े बड़े विद्वान् हैं जो भारतवासियों के साथ बड़ी सहानुभूति रखते और निःसंकोच विद्यादान करने के लिये तैयार हैं। रोन नदी पूर्व दिशा से बहती हुई आई है। उसी का बहुत चौड़ा पाट इस झील के आकार में हो गया है और वह पश्चिम दक्षिण को फिर नदी के रूप में बहती हुई चली गई है। इस कारण इस झील का पानी सदैव स्वच्छ रहता है। डाक्टरों की सम्मति है कि यह संसार के बहुत अच्छे जल में से है।

इस झील में स्टीमर दिनभर जहाँ-तहाँ चला करते हैं, और एक सिरे से यात्रियों को लेकर दूसरे सिरे तक की सैर कराया करते हैं। इसमें छोटे स्टीमर और नावें भी बहुत हैं। लोग इस झील में स्नान करने भी बहुत जाते हैं। नहाने के जनाने मर्दाने घाट भी खुले और ढँके बहुत बने हैं जहाँ नहाने का कपड़ा (जाँघिया और चोली) भाड़े पर मिलता है। यूरोपियन घाटिया नहाने के लिये हर प्रकार की सुविधा करता और दक्षिणा लेता है। इस झील पर आर-पार जाने के लिये सात पुल बने हैं जिन पर से ट्रामगाड़ियाँ भी जाती हैं। अन्य बड़े बड़े शहरों की तरह ४ बजे से ही सफाई और देहातों से घोड़ागाड़ियों और मोटरों पर दूध, तरकारी, फल इत्यादि का आना आरंभ हो जाता है। फल-फूल तरकारी-भाजी का बाजार सबेरे ही लगता है और चहल-पहल आरंभ हो जाती है। शहद यहाँ भी बहुत अच्छा मिलता है। यह शहर झील के पूर्व और पश्चिम बसा हुआ है। झील को पार करती हुई लंबी लंबी सड़कें दूर तक चली गई हैं। यहाँ का जल-वायु बहुत ही स्वास्थ्यप्रद है जिसके सेवन के लिये यहाँ तथा इस नगर के बाहर शांत स्थानों में लोग वास करते हैं और लाभ उठाते हैं। यात्रियों की बहुतायत के कारण यहाँ टामस कुक, अमरीकन एक्स्प्रेस तथा अन्य कई पंडों की कंपनियाँ खूब चलती हैं। मोटरों, मोटर-बसों और स्टीमरों द्वारा देखने योग्य स्थानों को नित्य हजारों यात्री जाते आते रहते हैं। यहाँ के तथा निकटवर्ती स्थानों के संबंध में कई छोटी बड़ी पुस्तकें छपी हैं। कई रोजगारी कंपनियाँ भी इस नगर और झील के नकशे तथा पुस्तिकाओं को अपने विज्ञापन-सहित बिना मूल्य बाँटती रहती हैं। इस झील में चलने-वाले जहाजों पर भी इसके नकशे जहाजों के टाइमटेबुल-सहित बिना

मूल्य बँटा करते हैं। झील के किनारे किनारे दोनों ओर रेलें भी चलती रहती हैं। कई नगर इसके किनारे ऐसे हैं जहाँ आप जहाज या रेल द्वारा जा सकते हैं। इन स्थानों में आना-जाना सबेरे से रात तक बराबर लगा रहता है और बड़ी चहल-पहल रहती है।

इस नगर में तथा इसके आसपास फ्रेंच भाषा का ही विशेष व्यवहार है। इस देश का जो भाग जर्मनी से मिला है वहाँ जर्मन तथा जो इटली से मिला है वहाँ इटली की भाषा व्यवहार में आती है। इसके एक भाग में रोमांस भाषा बोली जाती है। यहाँ की कोई निजी भाषा अलग नहीं है। यह देश बहुत प्राचीन समय से ही प्रजासत्तात्मक राज्य (रिपबलिक) चला आता है। कदाचित् यह सबसे पुराना 'रिपबलिक' है। जर्मन महासमर के बाद शांतिस्थापन के लिये 'लीग आव नेशन्स', 'अंतर्राष्ट्रीय सभा' तथा 'अंतर्राष्ट्रीय' मजूरदल संघ की स्थापना हुई है। इनके बड़े बड़े कार्यालयों के भवन बने हैं जिनमें प्राय: सभी देशवाले सम्मिलित हुए हैं। साल में कई बार उनके प्रतिनिधियों की सभाएँ हुआ करती हैं। इन सभाओं के कर्मचारियों और कार्यालयों को भी हम लोगों ने देखा। ये सभा-भवन बड़े विशाल हैं। इनके लिये लकड़ी भारत से आई, चित्रकारी फ्रांस में हुई और रुपया सब देशों ने मिलकर दिया।

यहाँ के कई विख्यात स्थान देखने योग्य हैं। अन्य देशों की तरह यहाँ भी कई संग्रहालय हैं। यहाँ का आपरा हौस (थिएटर) और कई सिनेमा, तमाशा देखनेवालों का चित्त-विनोद किया करते हैं। बाजा, गाना, नाच इत्यादि भी मनोविनोद के साधनों में हैं। इन विषयों (rhythmics) की शिक्षा के लिये यह नगर प्रसिद्ध है।

दक्षिण से आर्वी नदी आकर इस नगर के पश्चिम ओर इस झील से निकलती हुई रोन नदी में मिल गई है। उसके संगम का

स्थान भी बहुत अच्छा है। 'यहाँ का जनरल पोस्ट आफिस विशाल भवन में नगर के पश्चिम भाग में रू डू मों ब्लां सड़क पर है। इसके बाहरी भाग में भिन्न भिन्न देशों की प्रतिनिधि-स्वरूप कई बड़ी बड़ी मूर्तियाँ बनी हैं। उसके पास से मों ब्लां सफेद बर्फ से ढका हुआ, स्वच्छ आकाश रहने की अवस्था में, खूब ही चमकता दीख पड़ता है। उसके पास बड़ा इँगलिश चर्च (गिरजाघर) है। वहाँ से चलकर झील के किनारे आते ही नगर का अपूर्व दृश्य दिखाई देता है। वहाँ से और भी पहाड़ों के दृश्य बड़े मनोहर देख पड़ते हैं। यहाँ के दृश्यों के अलबम, चित्र, पोस्टकार्ड इत्यादि अनेक दूकानों पर बिका करते हैं। एक पुल "मशीन ब्रिज" है जिसमें झील का जल नीचे ऊँचे करने के लिये पेंचों द्वारा फाटक लगे हैं। ऊपरी सतह से नीचे की ओर जल की हरहराती धारा गिरा करती है।
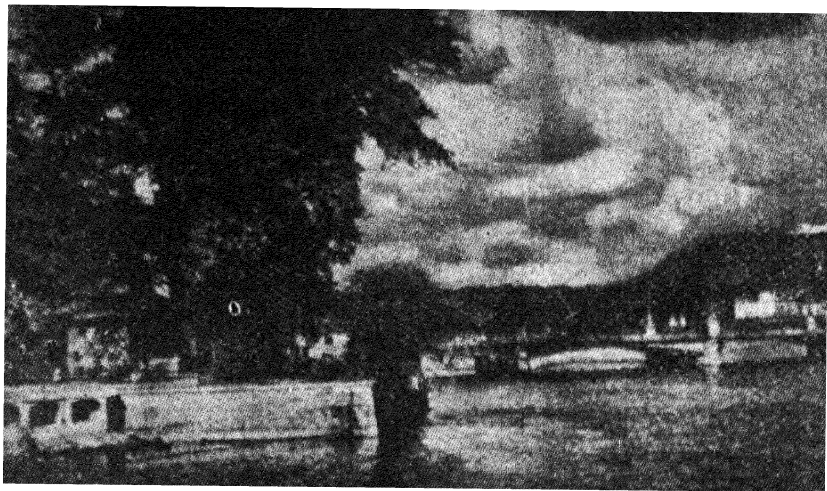
रूसो टापू

कुल सात पुल इस झील-नद पर हैं। एक पुल से इस नद के मध्य भाग में जाकर एक टापू सा बना है जिस पर प्रसिद्ध क्रांतिकारी

ग्रंथकार "जान जाक रूसो" की मूर्त्ति है। यह स्थान बहुत ही शांत तथा मनोरम है। यहाँ विश्राम करने और उपाहार का भी
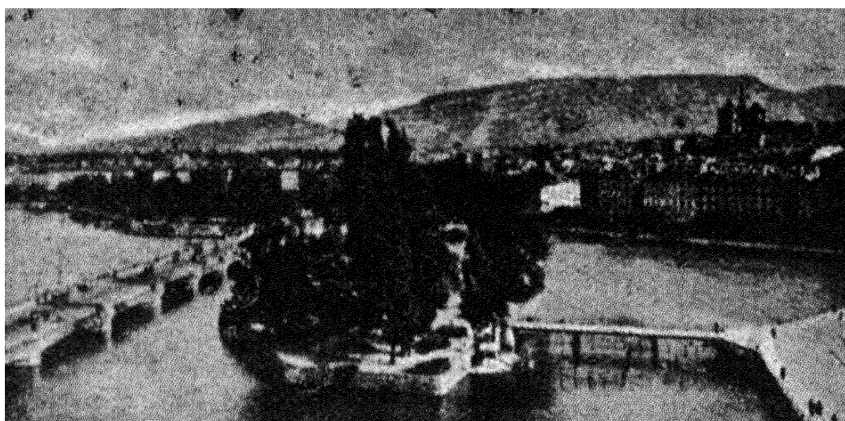
रूसो टापू का दूसरा चित्र

प्रबंध है। कई बड़े बड़े मैदान हैं जिनके आस-पास बड़े बड़े भवन, बगीचे इत्यादि तथा फुहारे हैं जो इस सुंदर स्थान को और भी मनोहर बना देते हैं। एक पुल पर बिजली-घर बना है। एक पर शहर भर में पानी जाने के लिये जल-कल-घर (वाटर-वर्क्स) बना है जिसमें जर्मनी के बने हुए बीस चक्करदार बड़े बड़े पानी के इंजन चला करते हैं। इस नगर के उत्तर ओर झील में बाँध द्वारा बीच तक जाकर एक फुहारा बना है जिसमें बड़े वेग से पानी ऊपर को उठता है। यह पानी करीब दो सौ फुट ऊँचा उठता है। धुनी हुई रूई की तरह छितराकर बड़ी दूर तक जल की फूही उड़ा करती है। यह दृश्य बहुत अद्भुत है। लोग कहते हैं कि संसार में ऐसा ऊँचा फुहारा नहीं है। यह शनिवार, रविवार तथा छुट्टियों के दिन छूटता है। यहाँ एक बहुत विस्तृत मैदान "प्लेन पैले" है जिसके पास एक विशाल "पैले दी एक्स्पोजीशियों" है। कई सौ

गज लंबा चौड़ा यह दो-मंजिला हाल शीशों से छाया हुआ है, जिसमें बीच के भाग में करीब १० हजार मनुष्यों के बैठने का
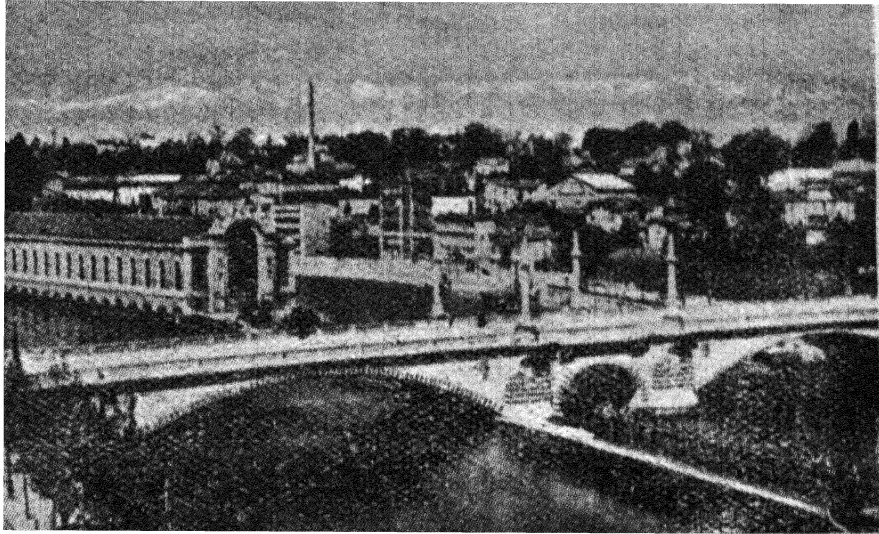
वाटर-वर्क्स

स्थान है। इसमें सार्वभौम शिक्षा-महासभा (दि वर्ल्ड फेडेरेशन आव एडुकेशन असोसिएशन) हुई थी, जिसका हाल आगे दिया जायगा।

इस नगर में देखने योग्य कई स्थान हैं जैसे घड़ी बनाने का स्कूल, फिलिप कंपनी का घड़ी का कारखाना, राथ म्यूजियम, संगीत-विद्यालय, विक्टोरिया हाल, व्यापारिक शिक्षागृह, विश्वविद्यालय, सार्वजनिक पुस्तकालय, जंतु-संग्रहालय, चित्र-संग्रहालय, रासायनिक शिक्षागृह, नाट्य-शिक्षणालय (जहाँ नाट्य-कला की शिक्षा दी जाती है), सिटी हाल कोर्ट, सेंट पीटर गिरजाघर, ऐतिहासिक तथा कला-कौशल-संग्रहालय, रूसी गिरजाघर, अँगरेजी वाटिका (पार्क आक्स वाइवीज), राष्ट्रसंघ का विशाल भवन (झील

के किनारे तथा उससे थोड़ी दूरपर उसी किनारे), इंटर नेशनल लेबर आफिस, विल्सन घाट, म्युनिसिपल कैसिनो थिएटर-

राष्ट्रसभा का भवन
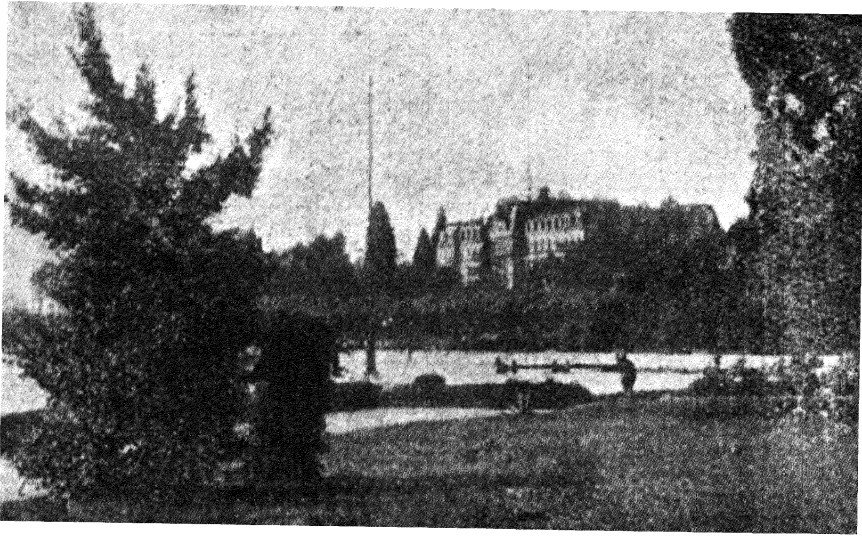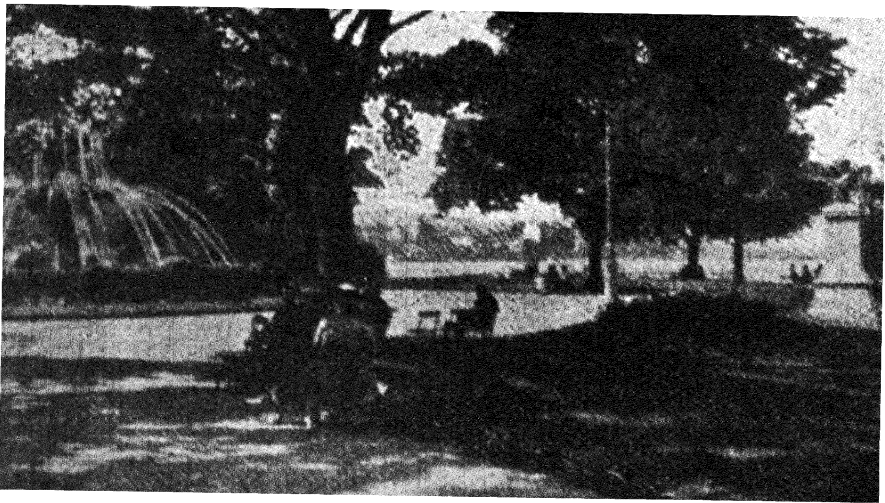
इंगलिश गार्डन

घर, एरियाना पार्क तथा एरियाना म्यूजियम, इंडस्ट्रियल आर्ट स्कूल और घड़ियों का संग्रहालय इत्यादि हैं। Monument

of the Reformation नाम की वाटिका देखने योग्य
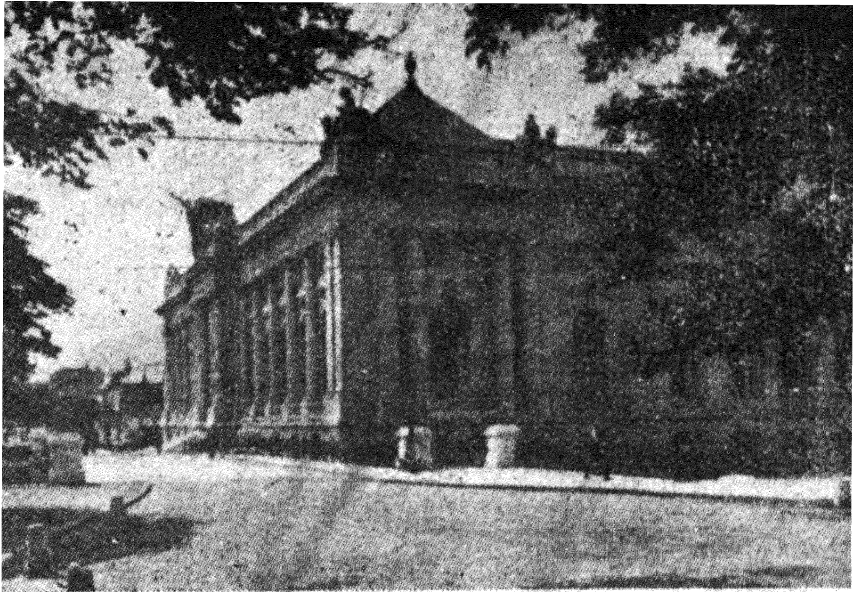
ऐतिहासिक सामग्री का संग्रहालय
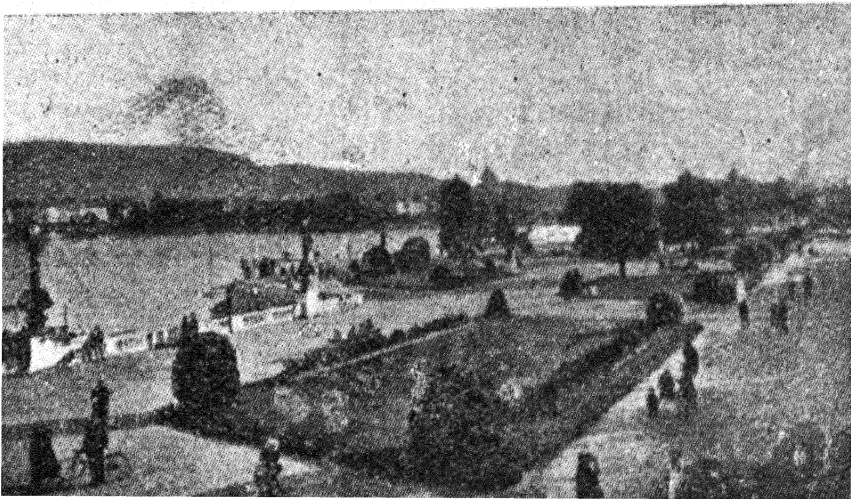
प्रेसिडेंट विल्सन स्मारक घाट

है, क्योंकि उसमें (भारत को छोड़कर) संसार के अनेक सुधारकों की मूर्तियाँ और उनके जीवन-संबंधी चित्र हैं।

शामोनी (Chamonix) पहाड़ तथा नगर

टामस कुक तथा अमरीकन एक्सप्रेस कंपनियों की मोटरों द्वारा यात्री इस मनोहर स्थान को देखने जाते हैं। हम लोग भी कुछ भोजन का सामान साथ लेकर मोटर में २४ जूलाई को सबेरे ८ बजे गए। थोड़ी ही दूर पर इस देश की हद पार कर फ्रांस देश में जा पहुँचे। उसके पहले ही पासपोर्ट की जाँच हुई। ११ बजे शामोनी पर्वत पर पहुँचे। ढाई-तीन घंटे की यात्रा में फ्रांस का
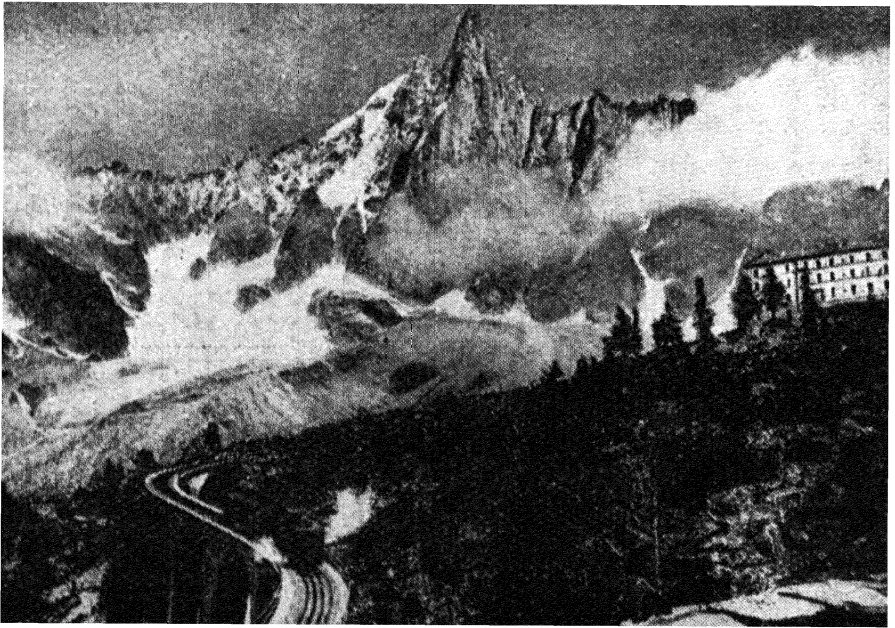
शामोनी पर्वत पर पहाड़ी रेल का मार्ग

भीतरी भाग देखने का सुअवसर मिला। इसमें खेती खूब होती है। यहाँ प्राय: अंगूरों की टट्टियाँ खेती के रूप में लगी हैं। साहब और मेम खेती के काम अपने हाथों से करते देख पड़े। रास्ते में छोटे छोटे कई गाँव पड़े। वहाँ ट्यूब-वेल (नल के कुओं) द्वारा पानी खेतों में देते हैं और गृह-कार्य में भी उसका उपयोग करते हैं। सड़क

के दोनों ओर सुंदर वृक्षावली है। चिकनी साफ सड़क पर मोटरें खूब जाती थीं। मेमें खेतों में फसल काटती और बटोरती-निराती थीं, घास बटोर बटोरकर इकट्ठी करती थीं, खेती का प्राय: सब काम करती थीं और कंधे पर लकड़ी लादे लिए जाती थीं। हाँ, वे गौन और छोटा कोट पहने थीं। उनके पैरों में जूते भी थे। बैलों से हल और गाड़ी का काम लेते देखा गया।

शामोनी पहाड़ पर नगर सुंदर बसा है। वहाँ से मोटर छोड़कर, फ्युनिक्युलर रेलगाड़ी में बैठ ऊपर बहुत ऊँचाई पर चले। बीच बीच में कई सुरंगें पहाड़ों के भीतर पड़ीं। एक इंजिन आगे से खींचता था, दूसरा पीछे से ठेलता था। एक ओर बर्फ से ढँके पहाड़ थे, दूसरी ओर खड्ड की गहराई थी। १२।। बजे ऊपर मांटे नबीरो स्टेशन पर जा
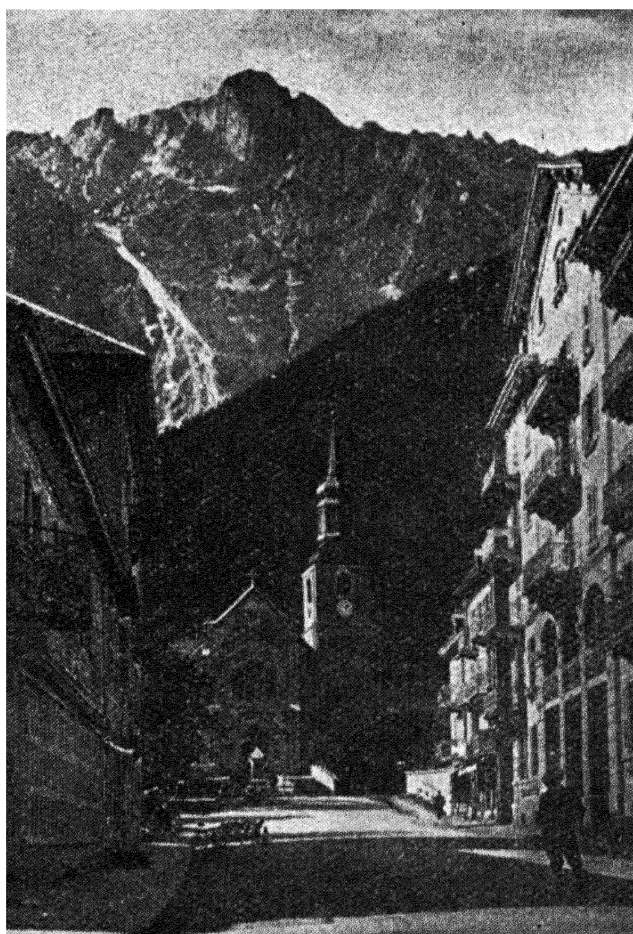
शामोनी मों ब्लां

पहुँचे। वहाँ से नीचे खड्ड में करीब एक मील के जाकर बर्फ-जमी चट्टान पर लोग दौड़ दौड़ कर बर्फ के टुकड़ों से खेलते थे। हम

लोग भी बर्फ पर चले। इसे ग्लेशियर कहते हैं। ऐसे बर्फ-जमे स्थान जिनके नीचे नदी बहती रहती है बद्रीनाथ और केदारनाथ
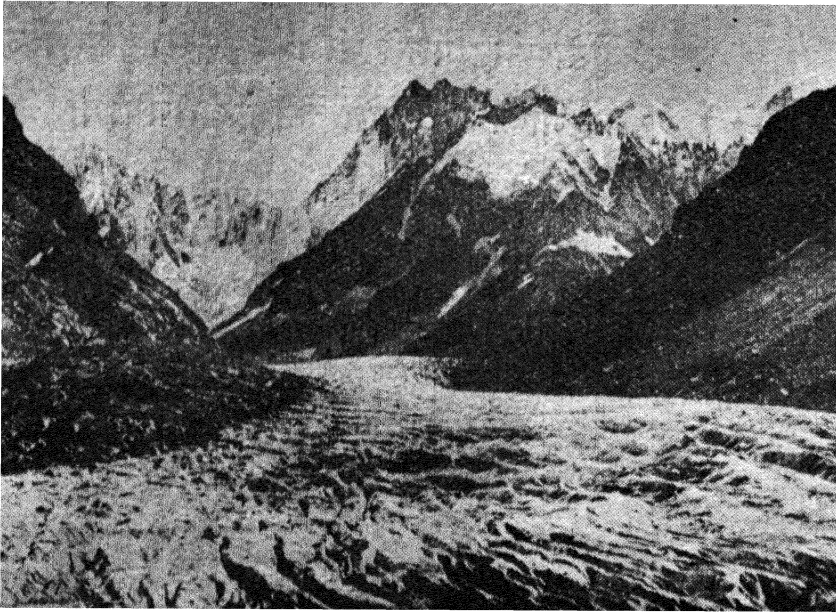
शामोनी पर्वत पर बरफ की नदी

के पहाड़ों पर भी कई जगह पड़ते हैं। यहाँ ऐसे कई स्थान थे। इन बर्फ से ढकी ढालू जगहों पर जूते फिसलते थे और लोग लुढ़कते थे। डर लगता था कि बीच बीच की बड़ी बड़ी दरारों में कहीं पैर धँस जाय और आदमी बर्फ के भीतर समा जाय तो पता भी न लगे। उसी में कितने आदमी दौड़ते और किलोलें करते थे। यहाँ स्टेशन पर हम लोगों ने इधर के दृश्यों के चित्र लिए और प्रायः डेढ़ घंटे तक मनोहर दृश्य देखा। पानी बरसने लगा। इसमें भी लोग बर्फ पर दौड़ते, फिसलते और उँचाई की ढाल पर चढ़ते थे। कई बार गिर गिरकर फिर सफल होकर ही गौरांग युवक-युवतियों ने साँस लिया। घबराकर भाग नहीं आए।

यहाँ से ४ बजे चले और फिर मोटर में बैठकर मनोहर दृश्यों को देखते हुए लौटे जिनमें से शीन (Chene) स्थान और आर्वी (Arve)
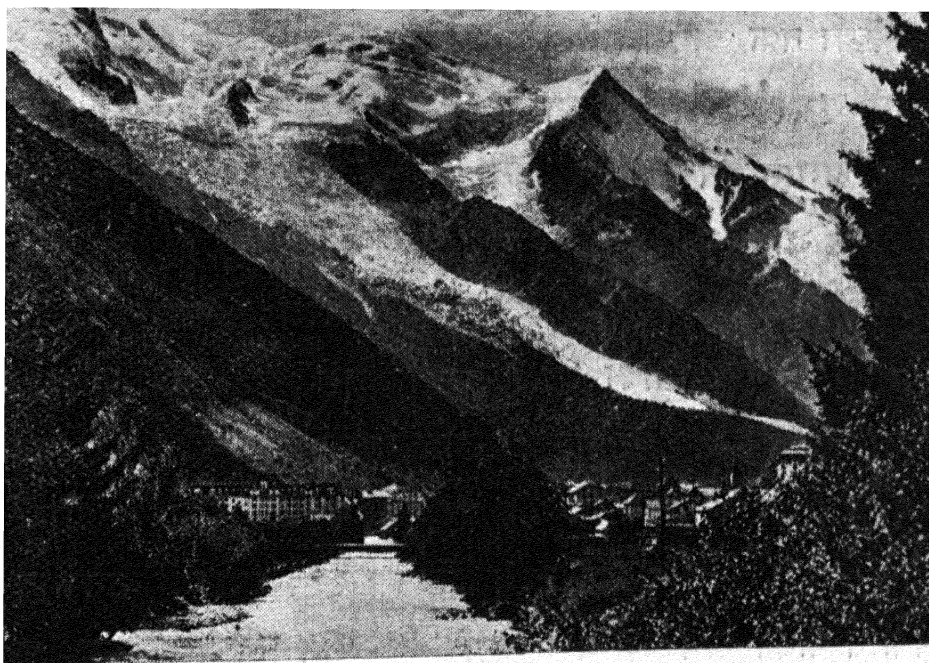
शामोनी का एक दृश्य
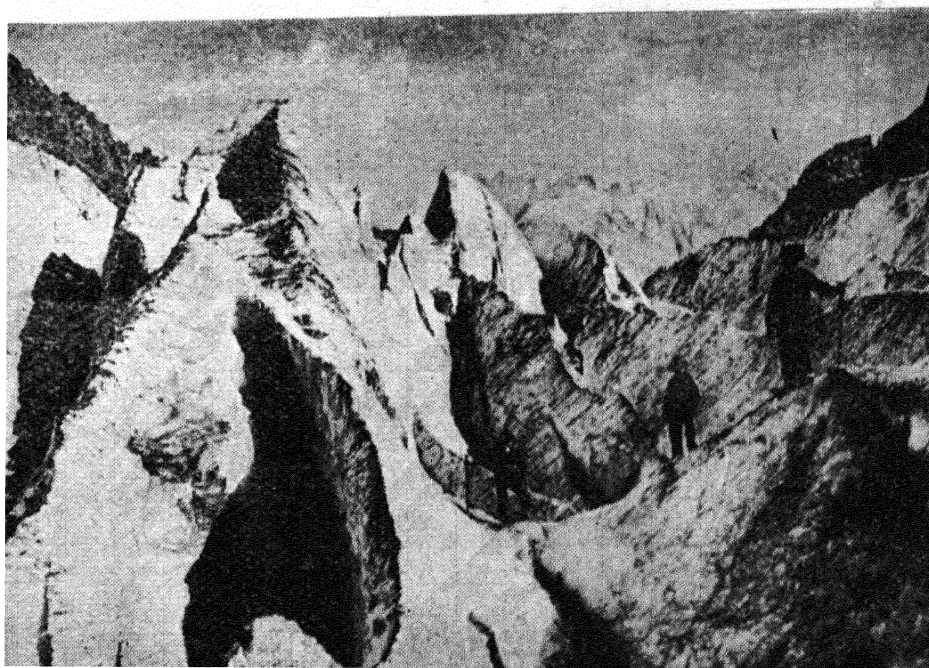
शामोनी का दूसरा दृश्य

नदी की घाटी का दृश्य कभी नहीं भूल सकता। ११वीं शताब्दी में यहाँ ईसाई संन्यासियों का एक मठ था। रास्ते के विश्राम-गृह में गौरांगों ने चाय-काफी पी। हम लोगों ने दूध लिया और सात बजे संध्या तक अपने होटल में आ पहुँचे।

स्वतंत्रता का वार्षिकोत्सव—मांत्रो यात्रा

२ अगस्त को यहाँ स्वतंत्रता का वार्षिकोत्सव मनाया जाता है। वह दिन भी हम लोगों के यहाँ ही रहते पड़ा। इस दिन हम सभी प्रतिनिधियों के लिये एक पूरा जहाज किफायत में शिक्षा-सभावालों ने तय किया था। हम लोग, सब करीब दो हजार आदमी, झील में मांत्रो गए। यह स्थान झील की दूसरी हद पर, करीब चालीस मील की दूरी पर, बहुत ही सुंदर है और बहुत प्राचीन है। रास्ते में सुंदर दृश्य देखते और आपस में बातचीत भेंट-मुलाकात करते सबेरे ९ बजे चलकर करीब एक बजे वहाँ पहुँचे। उतरकर एक बहुत बड़े हाल में, जो झील के तट पर है, सबने भोजन
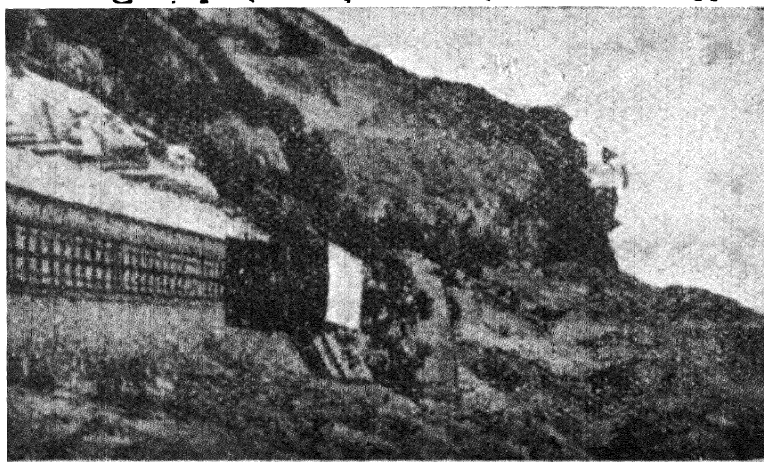
बिजली की पहाड़ी रेल

किया। बहुत से लोग शाकाहारी थे जो हम लोगों की मंडली के साथ बैठे। भोजन के बाद बाजार और नगर देखते ग्लीनो पहाड़ पर एक

बिजलीवाली रेल द्वारा चढ़े। उसके ऊपर से दृश्य देख दूसरी रेल पर उसके भी ऊपर कास पहाड़ पर गए। इन स्थानों से झील तथा उसके किनारे के दृश्य बड़े ही मनोहर देख पड़ते हैं। रास्ते में लाल लाल नाशपातियाँ खूब फली थीं जिनके वृक्षों और फलों से दृश्य और भी अच्छा हो जाता था। यह वैसे ही थे जैसे कश्मीर में शाही चश्मे की ओर जाते हुए रास्ते में लाल लाल सेब फले हुए दोतरफा बगीचों में सुंदर मालूम होते हैं। इन पहाड़ों पर बड़े बड़े भवन और गिरजाघर भी बने हैं। भोजनालय तथा वाटिकाएँ भी हैं। वहाँ से उतरकर प्राचीन शिलाँ (Chillon) का किला देखा जो झील के किनारे तीन मंजिल ऊँचा है। इसके भीतरी भाग में अँगरेजी के प्रसिद्ध कवि बाइरन तथा शेली के ठहरने के स्थान इत्यादि दिखाए गए और उनके लेख तथा हाल बताए गए। एक महिला-प्रदर्शिका सब बताती थी। उस समय के राजा वहाँ कैसे रहते, खाते-पीते थे और कैदी कैसे रखे जाते थे—यह सब बताया गया। उस किले से भी झील का दृश्य बहुत मनोहर देख पड़ता है। वहाँ से करीब ६ बजे लौटे, फिर जहाज पर सवार हो सब लोग वापस चले। जहाज ही में संध्या के भोजन का प्रबंध था। ९ बजे रात को जिनीवा पहुँचे। झील के दोनों ओर जिनीवा शहर में खूब रोशनी हुई थी। बड़ी भारी दीपावली मनाई गई थी। शहर में कई स्थानों पर रात को खान-पान सहित खूब नाच-गाना इत्यादि होता था। जहाज पर भी साहब मेम खूब नाचते, गाते, बाजा बजाते और उत्सव मनाते थे। प्रतिनिधियों का इस दिन इकट्ठा यात्रा करना बहुत ही उपयोगी हुआ। इस अवसर पर बहुतों ने विचार-विनिमय किया। भारतवर्ष-संबंधी बहुत सी बातें हम लोगों से वे बड़े ही उत्सुक होकर पूछते थे और हम लोग उत्तर द्वारा उनका समाधान करते थे।

स्विजरलैंड में कई बड़े ही मनोहर स्थान तथा कला-कौशल के कारखाने हैं जिन्हें देखने के लिये कई महीने का समय चाहिए। इंतरलाकन एक प्रसिद्ध स्थान है जहाँ लकड़ी की ही हर प्रकार की उत्तम पच्चीकारी इत्यादि बनती है। मालूम हुआ कि ये लोग भारतीय विद्यार्थियों को बड़े उत्साह से सिखाने को तैयार हैं। लेजां भी एक प्रसिद्ध स्वास्थ्यकर स्थान है। यहाँ के डाक्टर पीठ के फोड़ों (पक्षाघात) के विशेषज्ञ हैं। उसकी चिकित्सा के वास्ते लोग दूर दूर देशों से वहाँ जाते हैं।

श्यामजी कृष्ण वर्म्मा

रास्ते में जाते हुए भारतीय वेष में देख श्यामजी कृष्ण वर्म्मा ने मुझसे मेरा नाम और स्थान इत्यादि पूछा और अपना परिचय दिया। यह स्वामी दयानंद के साथियों और बड़े भक्तों में थे। इन्होंने अपनी युवावस्था में काशी में धारा-प्रवाह संस्कृत में व्याख्यान भी दिए थे। ये अँगरेजी और संस्कृत के विद्वान् तथा बैरिस्टरी पास हैं। ऑक्स-फोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत के अध्यापक रह चुके हैं। आपने भारत सरकार की खराबी दिखलाते हुए एक पत्र छापना आरंभ किया था, इस कारण अँगरेज सरकार की इन पर वक्र दृष्टि हो गई। ये यहाँ पर अब बस गए हैं। झील के किनारे एक सुंदर गृह में सपत्नीक रहते हैं। ये गुजराती हैं और भारतवर्ष अथवा इँगलैंड नहीं जाने पाते। अपने घर इन्होंने निमंत्रण देकर हम लोगों को जलपान कराया और आत्मकथा सुनाई। इनके पुस्तकालय में अच्छा संग्रह है। इनसे हमने प्रार्थना की कि स्वामी दयानंद सरस्वती का जीवन-चरित्र अपने निजी अनुभव के अनुसार लिखें या लिखावें। इनके पास सामग्री तो बहुत जान पड़ती है। यदि कोई अँगरेजी, संस्कृत और हिंदी का विद्वान् इनके पास रहकर इनकी बताई जीवनी लिखे तो

यह उसको रहने, खाने इत्यादि का व्यय देने के लिये तैयार हैं। सालभर या डेढ़ साल तक इनके साथ काम करने की आवश्यकता है। ये अब वृद्ध हो गए हैं। स्वयं लिखने-पढ़ने की सामर्थ्य इनमें कम है। स्वभाव इनका बड़ा उग्र है। इनसे लोगों से पटती कम है*।

यहाँ से श्री दामोदरदास खंडेलवाल (कलकत्तेवाले) भारतवर्ष लौट जाने के लिये बिदा होकर गए और श्री चंद्रभाल जी तथा श्री श्रीनाथ साह भी दूसरे स्थानों को देखने और फिर अगस्त महीने के अंत में जहाज पर सवार हो भारतवर्ष लौट जाने के लिये प्रस्थान कर गए। यहाँ से हम लोग अब केवल चार आदमी साथ रह गए।

सार्वभौम शिक्षा-महासभा

इस संस्था के संचालक अमरीका के लोग हैं। यह अधिवेशन तृतीय है। सानफ्रांसिस्को में इसका आरंभ हुआ और पहला अधिवेशन सन् १९२५ में एडिनबरा में, दूसरा १९२७ में टारंटों में और तीसरा इस वर्ष जिनीवा में समारोह से हुआ। हर दूसरे वर्ष इसका अधिवेशन होता है। हम लोगों को भारतवर्षीय शिक्षा-संघ ने इसके लिये प्रतिनिधि चुना था। इस नाते हम लोग इसमें सम्मिलित हुए। इसकी बैठक यहाँ २५ जुलाई से ३ अगस्त तक हुई जिसमें दो हजार के करीब प्रतिनिधि थे। संसार के प्रायः सभी देशों की शिक्षा-संबंधी संस्थाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। भारतवर्ष के बारह व्यक्ति थे।

इस सभा के उन्नीस भिन्न भिन्न विभाग होकर उप-सभाएँ बनीं और उनमें अलग अलग विषयों पर वाद-प्रतिवाद और विचार होकर मंतव्य निश्चित हुए। ये मंतव्य प्रस्ताव-समिति में विचार के लिये उपस्थित हुए और फिर बड़ी सभा में विचार तथा वाद-प्रतिवाद के पश्चात् स्वीकृत

---

* इनका अब देहांत हो गया।

हुए। इसके प्रधान अमरीकावाले डाक्टर आगस्टस व टामस हैं और उन्हीं के सभापतित्व में यह सभा हुई। इँगलैंड, स्काटलैंड, अमरीका, जर्मनी, फ्रांस तथा चीन, जापान इत्यादि सभी देशों के प्रसिद्ध प्रसिद्ध विद्या-प्रचारक सम्मिलित थे। इनमें प्राय: दो तिहाई से भी अधिक स्त्रियाँ थीं जो बड़े अनुभव और उत्साह से शिक्षा के पुनीत काम में लगी हुई हैं। सब देशों के प्रतिनिधियों ने अपने अपने देशों के शिक्षा-संबंधी अनुभवों का वर्णन किया और जिस विभाग की उप-सभा में जो प्रतिनिधि विशेष लगन रखता था वह उसमें सम्मिलित होकर काम करता था।

पंडित रामनारायण मिश्र ने "स्वास्थ्य-शिक्षा" विभाग में बराबर काम किया और इनके उद्योग से कई उपयोगी बातों का समावेश हुआ; जैसे पुस्तकों का बड़े टाइप में छापा जाना जिसके द्वारा विद्यार्थियों की आँखों पर व्यर्थ परिश्रम न पड़े, नित्य तथा हर भोजन के बाद दाँतों और मुख का साफ करना इत्यादि जिस पर इन पश्चिमीय देशों के लोगों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हुआ। मित्रों की सलाह से मैंने "निरक्षरता" और "प्रारंभिक शिक्षा" विभाग में काम किया। इसी तरह पर लोगों ने विभाग चुने थे। इन समितियों तथा सभा में काम करने तथा व्याख्यानों के कारण भारतवासियों का इन लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। मुझे मुख्यत: दो व्याख्यान देने का अवसर मिला।

शिक्षा-प्रदर्शिनी

इस महासभा के साथ देश देश की शिक्षा-संबंधी सामग्री इत्यादि की ऊपर के मंजिल में बहुत अच्छी प्रदर्शिनी भी थी। इसमें अमरीका की बहुत सामग्री थी। एक वृद्धा स्त्री चित्रों, लेखों इत्यादि के द्वारा शांति और संसार का मेल प्रदर्शित कर रही थी

उसे हम लोगों ने "मित्रस्य चक्षुषा सर्वं वै समीक्षामहे" तथा "अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्" अँगरेजी में अर्थ सहित दिया। वह बहुत प्रसन्न हुई और उसने दीवारों पर इन लेखों का भी अन्य ऐसे लेखों में समावेश किया। कई देशों में नाना प्रकार के उपयोग, जो बालकों की आरंभिक शिक्षा के साधन होते हैं, बताए गए थे जिनका वर्णन बड़ी पुस्तिका में हो सकता है; किंतु खेद है कि भारतवर्ष में न तो जनता ही शिक्षित है जो ऐसे साधनों को काम में लावे न हमारी सरकार ही इस ओर समुचित ध्यान देती है। कैसे क्या हो? वहाँ तो फौजी प्रबंध और राजद्रोही मुकदमों से न तो अवकाश मिलता है न द्रव्य बचता है।

जिनीवा से डेनमार्क की यात्रा

जिनीवा से फिर उलटे उत्तर की ओर ५ अगस्त को प्रस्थान किया, क्योंकि एलसिनोर (डेनमार्क) में भूमंडल की दूसरी शिक्षासभा "एजुकेशन फेलोशिप" की बैठक ८ से ११ अगस्त तक होनेवाली थी। इसके लिये भी भारतवर्षीय शिक्षा-संघ ने हम लोगों को प्रतिनिधि चुना था। इस कारण हम लोग अन्य स्थानों को छोड़कर फिर उत्तर को चले। स्विजरलैंड की हद तक बराबर एक के बाद दूसरी झील के किनारे से रेलगाड़ी बदली में चली। हरे खेतों, पहाड़ों, फल के वृक्षों और झीलों के किनारे की बस्तियों का मनोहर दृश्य और प्रकृति की छटा देखते और सराहते दोपहर को

जर्मन पुलिस

बाल (Basel) स्टेशन पहुँचे। वहाँ से दूसरी गाड़ी, जिसको जर्मन भाषा में बाहन (Bahn) कहते हैं, बदलकर जर्मनी के देश में

प्रवेश किया। यहाँ देखा कि कुलियों की टोपी नीली है और पुलिस की टोपी के आगे का हिस्सा चमकता है। स्टेशन के कुछ नौकरों को छाती पर लालटेन बाँधे भी देखा। इस स्टेशन पर मटर, आलू, ऐस्परेगस (एक प्रकार की तरकारी), सेम, मक्खन, रोटी, दूध इत्यादि अच्छे मिले। यह निश्चय हुआ कि आज रात भर यात्रा कर सबेरे हमबर्ग उतर दिन-रात वहाँ रहकर दूसरे दिन वहाँ से यात्रा की जाय। जर्मनी देश को भी देखने का अवसर मिला। यहाँ रास्ते में खेती खूब दीख पड़ी। इधर के आदमी अधिक परिश्रमी हैं। देहातों में बहुत सड़कें दिखाई दीं। बैलों से खेत जोतते और गाड़ी का काम लेते देखा। रास्ते में फ्रैंकफोर्ट स्टेशन मिला जहाँ मेट्रोपा कंपनी के आदमी रात के वास्ते भाड़े पर तकिए बाँटते फिरते थे। इस स्टेशन पर कागज के गिलास में दूध मिला। फल और "काले जंगल" का प्रसिद्ध पाचन-शक्ति रखनेवाला जल बोतलों में बिकता था, वह भी लेकर पीया गया। हम लोगों के पास ओवरकोट थे; उनका तकिया लगा, अपने अपने कंबल ओढ़, रात को प्रायः सबने गाड़ी में शयन किया।

हमबर्ग

६ अगस्त को सबेरे हमबर्ग उतरे और स्टेशन के पास ही एक होटल में एक दिन के लिये, पाँच मार्क प्रति व्यक्ति भाड़े पर, ठहर गए। स्नान और भोजन कर दोपहर को स्टेशन से मोटर-बस में दृश्य देखने निकले। यह शहर भी बहुत बड़ा है और दृश्य बहुत अच्छे हैं। यहाँ की जन-संख्या साढ़े दस लाख से अधिक है। स्टेशन पर पहुँचने से पहले ही बहुत तरकारी और फल की बड़ी सट्टी दूर से दीख पड़ी। बड़े बड़े जहाज भी दिखाई पड़े। स्टेशन पर उतरते ही झुंड के झुंड लड़के और लड़कियाँ गाड़ियों से उतरीं जो बाहर से

यहाँ स्कूलों में पढ़ने आई थीं। उनका शरीर बहुत हृष्ट-पुष्ट दीख पड़ा। मोटर द्वारा सारा शहर हम लोग तीन घंटे में घूमे। प्रति यात्री पाँच मार्क देने पड़े। एक मार्क एक शिलिंग के बराबर यानी ग्यारह ग्यारह आने का होता है। जर्मनी का सिक्का मार्क और उसका सौवाँ भाग पीनिंग नाम का होता है। एक मार्क, दो मार्क, तीन मार्क, पाँच मार्क और आधा मार्क चाँदी का, दस, पाँच पीनिंग काँसे का और दो तथा एक पीनिंग ताँबे का होता है। दस, बीस, पचास, सौ, पाँच सौ और हजार मार्क के नोट होते हैं। बड़े बड़े भवन, दूकानें और सुंदर सड़कें इत्यादि रास्ते में दिखाई पड़ीं। समुद्र का किनारा यहाँ से नजदीक है जहाँ जर्मनी के बड़े बड़े जहाजों का

हमबर्ग

बेड़ा तथा जहाज बनाने और मरम्मत [illegible] है। अमरीका के लिये यहाँ से सीधे जहाज जाते और आते

हैं। यह नगर एल्ब नदी के किनारे बसा है। यह नदी चौड़े पाट की है। यहाँ से थोड़ी ही दूर जाकर समुद्र में गिरती है, इसलिये इसे समुद्र का किनारा भी कह सकते हैं और इसी कारण इस नगर की विशेष प्रधानता है। नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे जाने के लिये पानी के नीचे नीचे दोहरी बहुत बड़ी सुरंग बनी है। शहर की सड़क से सुरंग के मुँह तक उतरने-चढ़ने के लिये बहुत बड़े
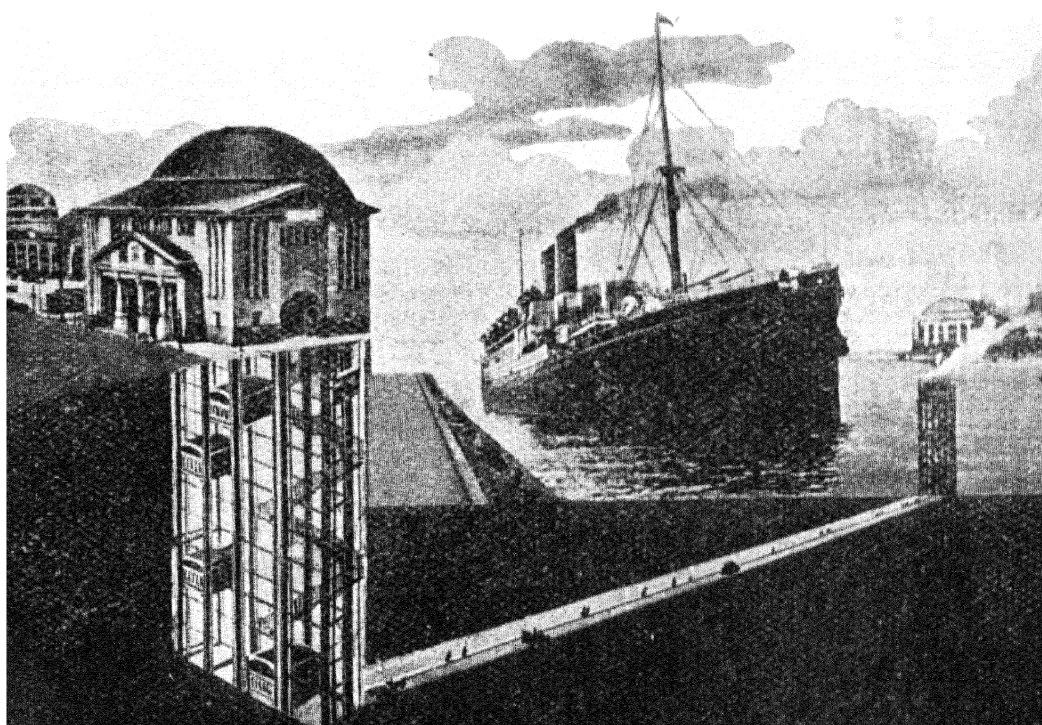
एल्ब नदी की सुरंग

बड़े छः बिजली के पिंजड़े बने हैं जिनके द्वारा आदमी, पशु, मोटर, गाड़ियाँ इत्यादि उतरा और चढ़ा करती हैं। इसी पिंजड़े द्वारा अस्सी फुट नीचे उतरकर साढ़े तेरह सौ फुट लंबी यह दोहरी सुरंग देखी। एक से लोग जाते और दूसरी से आते हैं। यह बहुत ऊँची और गोलाकार है, चमाचम चमकती है। इसमें रात-दिन बिजली जला करती है। इसके ऊपर नदी बहती है जिसमें सैकड़ों बड़े बड़े जहाज,

स्टीमर, नाव श्रौर बेड़े चला करते हैं। इसका दृश्य बहुत श्रद्भुत है। चौड़ी नदी में स्टीमर पर करीब डेढ़ घंटे तक घूमकर बड़े बड़े जहाजों श्रौर उनके कारखानों को देखा।

श्रलसटर झील

जहाज पर चलते ही एक तसवीरवाले ने हम लोगों का फोटो अपनी श्रोर तकाकर उतार लिया श्रौर जब हम लोग जहाज से उतरे तब वह यात्रियों के हाथ एक एक मार्क पर तैयार फोटो बेचता था जिसे कौतूहल की दृष्टि से यात्रियों ने हाथोंहाथ खरीद लिया। यहाँ नदी के उत्तरीय भागवाले शहर में दो बड़ी श्रौर छोटी श्रलसटर झील हैं। इन दोनों के बीच की श्राबादी बहुत सुंदर है। किनारे पर वृक्षावली श्रौर छायादार सड़कें सुरम्य हैं। दिन में श्रौर संध्या समय इन झीलों में स्टीमरों तथा नावों पर हजारों श्रादमी विहार करते श्रौर घूमते हैं। किनारों पर सुंदर घाट कई स्थान पर बने हैं जहाँ फल इत्यादि की

दूकानें हैं और विश्राम करने के लिये बेंच पड़े रहते हैं। सफाई का प्रबंध अच्छा देख पड़ा। कई जगह साहब नौकर पीठ पर टोकरी बाँधे चिमटों से कागज के टुकड़े बीन-बीनकर बटोरते जाते थे। यहाँ का (कार्लहाँगेन वेक का) "जंतु-संग्रहालय उद्यान" प्रसिद्ध है। सन् १६१४ की लड़ाई के समय यह बंद कर दिया गया था, फिर १६२४ से खुल गया। यहाँ जानवर छोटे पिंजड़ों में बंद रखे जाने के बदले यथासंभव प्राकृतिक अवस्था में रखे जाते हैं। चित्र-संग्रहालय, कारीगरी का संग्रहालय, स्थानीय प्राचीन संग्रहालय और बिजमार्क-स्मारक इत्यादि भी देखने योग्य हैं। बिजमार्क का स्थान जर्मनी के महापुरुषों में बहुत ऊँचा है। उन्होंने ही जर्मनी की बिखरी हुई छोटी

बिजमार्क-स्मारक

छोटी रियासतों को एक करके जर्मन साम्राज्य स्थापित किया था। इस देश में उनके अनेक स्मारक मिलते हैं। इस नगर के पास थोड़ी

थोड़ी दूर पर कई प्रसिद्ध देखने योग्य छोटे-बड़े नगर हैं जिन्हें समय और सामर्थ्यवाले यात्री, विशेषकर अमेरिकावाले, अवश्य देखने जाया करते हैं।

जर्मन लोगों में सिर पर छोटे और आगे-पीछे बराबर बाल रखनेवाले अधिक मिले।

डेनमार्क (दानमार्क)

दूसरे दिन सबेरे भोजन कर फिर रेलगाड़ी में बैठ डेनमार्क को चले। हमबर्ग से लुवेक होते वार्न मुंडे तक गाड़ी भूमि पर दौड़ी और वार्न मुंडे से पूरी ट्रेन हम लोगों को लिए दिए बड़े जहाज पर चढ़ा दी गई। समुद्र में करीब दो ढाई घंटे तक ट्रेन को लिए जहाज चलता रहा। हम लोग अपनी अपनी गाड़ियों से उतरकर जहाज की छतों, कमरों, बरामदों में घूमते, सैर करते और उसके होटलों में अपने इच्छानुसार भोजन तथा उपाहार इत्यादि करते चले। यह इस प्रकार का पहला अनुभव हुआ। इससे बड़ी सुविधा भी हुई, नहीं तो असबाब के उतार-चढ़ाव इत्यादि में समय तथा व्यय लगता और दूसरी गाड़ी में चढ़ने इत्यादि का बखेड़ा होता। यह समुद्र जर्मनी के अधिकार में है, जहाज से उतरने के पहले ही पासपोर्ट इत्यादि की जाँच हुई और जेदसर पर जहाज किनारे लगा। फिर तुरंत ही रेलगाड़ी भूमि पर दौड़ने लगी। करीब डेढ़ घंटे चलकर फिर एक छोटा सा समुद्र, इसी तरह जहाज पर ट्रेन लादकर, पार किया गया और उसके बाद फिर जमीन पर चलकर साढ़े सात बजे डेनमार्क की राजधानी कोपिनहेगन में पहुँचे। यहाँ से रेलगाड़ी बदलकर रात को नौ बजे एल्सिनोर उतरे। वहाँ से जहाज पर समुद्र पार कर स्वीडन (स्वर्ये, Sverje) देश के हेल्सिंगबार्ग नगर के मैगनस स्टीनबाक्स स्कूल में हम लोग ठहराए गए। डेनमार्क बहुत ही सुंदर छोटा सा देश है जो ब्रिटिश द्वीप क्या आयरलैंड से

भी छोटा है। यहाँ की खेती प्रसिद्ध है। इधर की गायों का रंग लाल और दूध बहुत होता है। इस देश से भोज्य पदार्थ—मक्खन, पनीर,
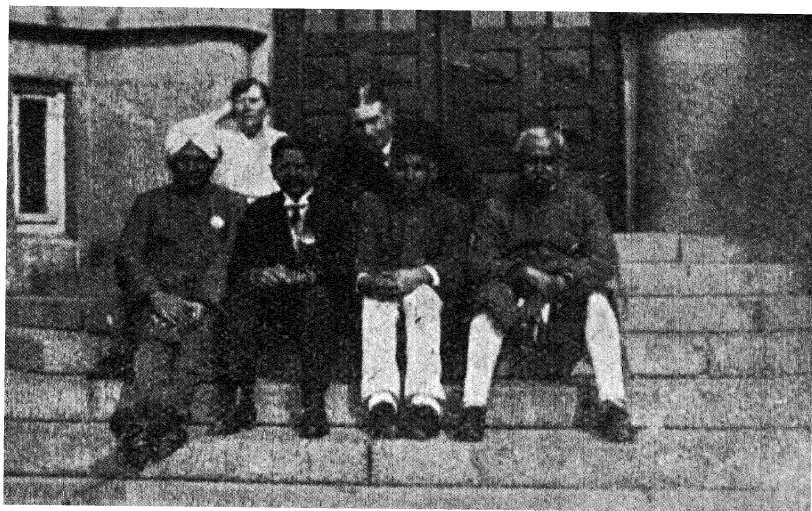
हेल्सिंगबार्ग का मैगनस स्टीनब्राक्स स्कूल जिसमें हम लोग ठहरे

अंडे और सूकर का मांस—अँगरेजों के देश में बहुत जाता है, इस कारण इसका व्यवसाय यहाँ बहुत होता है। यहाँ के तथा स्वीडन और नारवे (नार्ये, Norje) के सिक्के क्रोन कहलाते हैं जो बारह आने के बराबर हैं। इनके सौ भाग करके, जिन्हें ओर कहते हैं, काम में लाते हैं। ये ताँबे, काँसे और चाँदी के होते हैं। इनके ऊपर नोट होते हैं। डेनमार्क के सिक्कों में बीच में छेद होता है। नारवे तथा स्वीडन के सिक्के कुछ अच्छे माने जाते हैं, इस कारण डेनमार्क के नोट स्वीडन तथा नारवे में किंचित् बट्टे पर चलते हैं, किंतु मूल्य तीनों का बराबर है।

कोपेनहेगन

यहाँ के लोग इसको केबनाऽन (Kobnhavn) कहते हैं। यह डेनमार्क देश का प्रधान नगर तथा राजधानी है। यहाँ का राज्य-प्रबंध अँगरेजी ढंग पर राजा और पार्लमेंट के अधिकार में

है। यह देश प्राय: जल से घिरा है और इसमें बहुत-से छोटे-बड़े टापुओं के समूह हैं। यह प्रधान नगर सात लाख मनुष्यों की बस्ती है और हर तरह से लंदन नगर के नमूने पर बसा जान पड़ता है। यहाँ की दूकानें, सड़कें और होटल इत्यादि बहुत स्वच्छ हैं। सड़कें खूब चौड़ी हैं, जिन पर मोटर-बसों और ट्रामगाड़ियों के अतिरिक्त बाइसिकलें बहुत दौड़ा करती हैं। यहाँ की प्रधान सड़कों में विशेषता यह है कि सड़क के दोनों ओर चार छः अंगुल ऊँची बाइसिकल की सड़क है क्योंकि यहाँ पैरगाड़ियों की संख्या बहुत है। लोग इसको बाइसिकलों का नगर कहते हैं। पैदल चलने-वालों के लिये पटरियाँ हैं और तब मकान हैं। यहाँ भी समुद्र का किनारा और जहाजों का अड्डा है। यहाँ कई सार्वजनिक संग्रहालय हैं जैसे दूसरे बड़े बड़े नगरों में हर देश में हैं। अँगरेजी भाषा की इस देश में भी वैसी ही दुर्गति है जैसी फ्रांस इत्यादि में। इस देश की भाषा डेनिश या डूश है। यहाँ के निवासियों की शिक्षा यहीं की भाषा में होती है। केवल वैकल्पिक रूप से कहीं कहीं विदेशी भाषा थोड़ी पढ़ा दी जाती है। यहाँ की भाषा में जो थोड़े अँगरेजी शब्द प्रयुक्त होते भी हैं उनकी लिखावट बहुत भिन्न, किंतु अधिक सुगम तथा उच्चा-

कांसटेब्ल

रण के अनुसार, होती है। जैसे 'रूम' शब्द आर यू एम (Rum) से लिखते हैं न कि आर ओ ओ एम (Room) से। 'फ्री' एफ आर आई (Fri) से लिखते हैं न कि एफ आर ई ई (Free) से। यहाँ का टौनहाल बहुत ही सुंदर तीन चार मंजिल का है जिसके आगे बहुत बड़ा मैदान है जहाँ बड़ा फुहारा छूटा करता है। उसके पास फूलों की दूकानें खूब हैं। यहाँ का एक बड़ा स्कूल "स्कोलेन वेड नैबौडेन" देखा जिसमें सात से १५ वर्ष तक के १५०० लड़के, लड़कियाँ पढ़ते तथा अनेक तरह का हाथ का काम सीखते हैं, जैसे बढ़ई, लोहार, दर्जी का। लड़कियों को भोजन बनाने और सिलाई में बेल-बूटे इत्यादि तथा चित्रण-कला भी सिखाई जाती है। यहाँ की प्रधान अध्यापिका एक देवी हैं जो उस समय भारतीय महिला की तरह गले में मूँगा और सोने के दानों की माला पहने हुए थीं। यहाँ बच्चों को कसरत खूब सिखाई जाती है जो पियानो तथा अन्य बाजे की गत पर नाच के ढँग से कराई जाती है। यहाँ अन्य कई बड़े बड़े विद्यालय भी हैं जो इन दिनों ग्रीष्मावकाश के कारण बंद थे। विश्वविद्यालय में साढ़े तीन हजार विद्यार्थी और सौ अध्यापक हैं। यहाँ की पार्लमेंट का नया भवन बहुत ही सुंदर बना है। इसके बाहर बड़े मैदान में यहाँ के पहले के प्रभावशाली राजा की मूर्ति ऊँचे चौतरे पर बनी है जिसके एक ओर की दीवार में वहाँ की भाषा में जो शब्द खुदे हैं उनका अर्थ है—"प्रजा का प्रेम ही हमारा बल है।" क्या भारत सरकार भी ऐसा कहने के लिये तैयार है या उसका बर्ताव भारतीयों के साथ ऐसा है जिसके नाते यह वाक्य उसके प्रति लागू हो ?

टिवोली उद्यान

यहाँ की यह बहुत बड़ी वाटिका जगत्-प्रसिद्ध है। इसके बाहर कई बड़े शानदार होटल (भोजनालय) हैं जिनमें सबसे बड़ा विभत्र-

युक्त वीवेल रेस्टोरां है जो बहुत मँहगा है। यह उद्यान यहाँ के सबसे बड़े केंद्रीय रेलवे स्टेशन के पास ही है। बहुत विस्तृत बगीचा बहुत ऊँची दीवारों से घिरा हुआ है जिसमें दर्शकों की भीड़ शुल्क देकर बराबर जाती है। संध्या समय अधिक तथा गर्मी के दिनों में और छुट्टी के दिन तो दर्शक बहुत ही अधिक होते हैं। शिक्षा-सभा के सदस्यों के लिये १४ अगस्त को संध्या समय इसमें बिना बाहरी शुल्क दिए ही जाने की आज्ञा हो गई थी। भीतर कई बड़े बड़े रमणीक स्थान, झील, बगीचे, फूलों की क्यारियाँ, अनेक फुहारे, भवन और बच्चों से लेकर बूढ़ों तक के लिये बहुत प्रकार के मनोविनोद की सामग्री है। इसके भीतर भी कई प्रकार के बड़े बड़े भोजनालय हैं जहाँ बाजा बजता रहता है, लोग खाते-पीते हैं। एक स्थान पर मर्दों और औरतों की बाइसिकल पर विलक्षण कसरत और फिर बहुत ऊँचे स्थान से रस्सी के ऊपर झूला झूलते हुए हवा में उड़ान की अद्भुत कलाबाजी होती थी। स्कूल के करीब दो सौ लड़के-लड़कियों की एक बड़ी पलटन लड़ाई के सब सामान—तोप, बंदूक, बाजा इत्यादि—लिए पैदल तथा घोड़ों पर सवार निकली जो बहुत ही सुंदर थी। एक छोटी सी गाड़ी में राजा-रानी बनकर एक लड़का और एक लड़की बैठे थे। दोतरफा सिर झुकाते और नमस्कार करते जाते थे। उनके आगे आगे यह सारी पलटन जाती थी। घोड़े भी बचकाने थे। एक बिजली की रेलगाड़ी बनावटी पहाड़ों, सुरंग इत्यादि में होकर बड़े झटके के साथ ऊपर नीचे जाती थी जिसका शुल्क ।≈) प्रति व्यक्ति लगता था। हम लोग भी इसमें कौतूहल-वश चढ़े थे। कई जगह अनेक प्रकार के जुए तथा निशानेबाजी इत्यादि के खेल हो रहे थे। एक ऐनाघर विचित्र बना था। उसमें जाकर लोग अपनी शकलें छोटी, बड़ी, नाटी, मोटी, दुबली, टेढ़ी-मेढ़ी देखते थे, झील में नौका

की सैर होती थी। पहाड़ के झरनों की नकल जंगल तथा जंगली जानवरों-सहित बहुत अच्छी बनी थी। एक नाटक हो रहा था, जिसके पात्र बिना बोले ही नाटक करते थे जिसे "डम शो" कहते हैं। स्थान स्थान पर बहुत प्रकार के बैंड बजते थे। रात को बिजली की रोशनी बड़ी जगमगाहट के साथ हुई। वृक्षों, लताओं इत्यादि पर रोशनी खूब गुथी हुई थी। सब एकदम से कई रंग के शीशों द्वारा रौशन हो गए थे। यह प्राय: रात भर रहा होगा। इस प्रकार का तमाशा गरमी में करीब पाँच महीने बराबर हुआ करता है और नित्य हजारों आदमियों का मेला रहता है। इसके भीतर की सफाई सराहने योग्य है।

जंतु-संग्रहालय

यहाँ का जंतु-संग्रहालय भी प्रसिद्ध है। और देशों की तरह यहाँ भी अनेक छोटे-बड़े जीव घरों में स्वच्छंदता के साथ घूमते हैं। यहाँ बगीचे के भीतर जाने का ।।।) टिकट लगता है। भीतर भोजनालय भी हैं। लकड़ी का एक धरहरा करीब २०० फुट ऊँचा है जिस पर बिजली के पिंजड़े द्वारा चढ़ने का ।-) और पैदल सीढ़ी द्वारा जाने का =)।। लगता है। ऊपर से सारे बगीचे का, जिसमें झील इत्यादि भी हैं, और सारे नगर का अपूर्व दृश्य यहाँ से देख पड़ता है, बहुत से भवन खपरैल से छाए हुए मालूम पड़ते हैं। यह संग्रहालय सबेरे ९ बजे से संध्या के ७।। बजे तक खुला रहता है। यहाँ के विशेष जानवरों में बड़े बड़े हाथी, अनेक विचित्र प्रकार के बंदर, जंगली ऊदबिलाव, बिल्ली के कुटुंबी किंतु बड़े भयानक मांसाहारी कई प्रकार के व्याघ्र और चीते, गदहे, बकरियाँ, हिरन, भेड़ें, शेटलैंड पोनी (काले रंग का छोटा नाटा टट्टू), भैंस (तिब्बती जिसका नाम यहाँ लामा लिखा है), ऊँची लंबी गर्दन का जिराफ की तरह

का अनोखा जानवर, हिपोपोटेमस, ध्रुव-प्रदेश के सफेद भालू तथा साइबीरिया और तिब्बत के भूरे और काले भालू, जल-व्याघ्र, लाल लंबी चोंच की काली बतक इत्यादि हैं।

कला-भवन-संग्रहालय

समय कम होने से यहाँ के अनेक प्रसिद्ध संग्रहालय बिना देखे ही छोड़ दिए गए। सबसे प्रसिद्ध यहाँ का कलायुक्त चित्रों का संग्रहालय देखा जो वास्तव में बड़े ही अद्भुत चित्रों का भांडार है। यहाँ कई चित्राचार्यों के बनाए अनेक नमूने हैं जिनको देखकर तृप्ति नहीं होती। जो चित्र बहुत अच्छे जान पड़े वे ये हैं—कोपिन-हैगन पर गोलंदाजी जो सन् १८०७ में हुई थी, फूलों का प्राकृतिक दृश्य जिसमें समुद्र, बादल, किला, वृक्ष तथा जहाजी सेना इत्यादि खूब दिखलाए गए हैं, एक बड़ी तसवीर जिसमें सूर्य की किरणों का प्रकाश, शरीर के रंग, पुट्ठे, छाया, प्रभात की लालिमा इत्यादि का बहुत अच्छा चित्रण है, क्लेव के गाँव का दृश्य, जंगल का चित्र जिसमें हरिण और घास का अच्छा दृश्य है, दीवार में बहुत बड़ी ऊँची उभरी हुई मूर्तियों की सामूहिक बनावट जिसमें करीब २० मूर्तियाँ सोनहले इत्यादि चौदह भिन्न भिन्न रंगों के मार्बल पत्थर पर बनी हुई हैं और जो कला का अद्भुत नमूना है। कई चित्रों पर चित्रकला के बड़े-बड़े प्रसिद्ध आचार्यों के नाम अंकित हैं। यह संग्रहालय कई हजार बहुत उत्तम चित्रों से सुसज्जित है। धरातल तथा भूधरी में अनेक प्रकार के बहुमूल्य पत्थरों, पलस्तरों इत्यादि की अच्छे अच्छे ऐतिहासिक व्यक्तियों की बड़ी-बड़ी मूर्तियों का बड़ा संग्रह है। जिस वाटिका में यह संग्रहालय है वह भी बहुत अच्छी है। गुलाब के बहुत बड़े बड़े, मधुर सुगंधवाले, फूलों की क्यारियाँ हरी घास के गलीचों में बहुत ही अच्छी लगती हैं।

राज-वाटिका

इसके बाहर सड़क पार करके एक बड़ा उद्यान, राज-वाटिका, पड़ता है जो बहुत सुंदर तथा स्वच्छ हैं। इसमें सीमेंट की सड़कें हैं, दोनों ओर लंबी वृक्षावली है। स्थान स्थान पर हरी घास के गलीचे और रंग विरंगे फूलों की फुहारों सहित क्यारियाँ हैं। इसमें कई मूर्तियाँ भी स्थान स्थान पर बैठाई हुई हैं। यह बगीचा खूब लंबा-चौड़ा और बहुत मनोहर है। यहाँ ऐसे कई बगीचे और संग्रहालय देखने योग्य बताए गए, किंतु समयाभाव से हम लोग न देख सके। यहाँ तथा इस नगर के बाहर कई प्राचीन प्रसिद्ध राजगढ़ हैं जिनका वर्णन यहाँ की पुस्तकों में है। इन सबको देखने के लिये सप्ताह भर भी कम होगा। बाहर के स्थानों में हम लोगों ने—

फ्रेडरिक्सबर्ग किला

फ्रेडरिक्सबार्ग किला

देखा जो छोटे छोटे तीन टापुओं में, पुलों द्वारा बड़ा घेरा बनाकर, बनाया हुआ है। बीच बीच के जल-भाग खाई का काम देते हैं। यह इस देश के बड़े प्राचीन ऐतिहासिक स्थानों में से मुख्य है। यह राज-भवन था जो अब सार्वजनिक संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया

किले का दूसरा दृश्य

गया है। इसमें यहाँ के दृश्यों के चित्रों का संग्रह भी बिका करता है। इस किले के बाहर पास ही छोटा सा स्वच्छ ग्राम हिलरोड नाम का है जो इस देश के ग्रामों का एक अच्छा नमूना कहा जा सकता है।

फोक स्कूल (प्रौढ़ पाठशाला)

इसके पास ही हम लोग एक फोक स्कूल में गए। इस देश में स्थान स्थान पर छोटे बड़े लड़के-लड़कियों की शिक्षा के लिये

पाठशालाएँ तो हैं ही उनके अतिरिक्त बड़ी अवस्थावाले कामकाजी लोगों के शिक्षणार्थ "फोक स्कूल" भी अनेक हैं, जहाँ नवंबर से मार्च तक पाँच छः महीने, जब खेती इत्यादि का काम बर्फ पड़ने से स्थगित रहता है, युवक आते, रहते और अनेक प्रकार से अपनी ज्ञान-वृद्धि करते हैं। देश भर में सात वर्ष से चौदह वर्ष तक के लिये शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य है। हर बालक-बालिका को सात से चौदह वर्ष की अवस्था तक शिक्षा प्राप्त करनी ही पड़ती है। इसके लिये इस छोटे से देश में पाँच हजार पाठशालाएँ और साढ़े सोलह हजार अध्यापक हैं जिनमें अध्यापिकाएँ बहुत अधिक संख्या में हैं। ये गवर्नमेंट की ओर से हैं। यहाँ अशिक्षितों की संख्या प्रायः नहीं के बराबर है। इनके अतिरिक्त ये "फोक स्कूल", कालेज और बड़े बड़े विद्यालय हैं। इन फोक स्कूलों द्वारा काम-काज करनेवालों में शिक्षा की प्राप्ति और ज्ञान की वृद्धि बहुत होती है। ऐसा ही एक स्कूल हम लोगों ने देखा। यह स्कूल चंदे से चलता है। तीस-पैंतीस वर्ष हुए, इसके संचालक ने परिश्रम करके बनवाया था। इसमें सरकारी सहायता भी मिली, किंतु सरकारी अड़चनें या कोई जकड़बंदी नहीं रही। इसके संचा-लक को पूरी स्वतंत्रता दी गई। सरकारी कर्मचारी केवल देख लेते हैं कि द्रव्य का सदुपयोग हो रहा है, किंतु न तो काम में कुछ हस्तक्षेप करते हैं और न यही देखते हैं कि अध्यापक की नियुक्ति कैसे होती है या पढ़ाई कैसी होती है। इस स्कूल में करीब १०० विद्यार्थी हैं। डेनिश भाषा के साहित्य और इस देश के इतिहास पर यहाँ अधिक जोर दिया जाता है, दो घंटे नित्य इसे पढ़ाते हैं। यहाँ के प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तियों के जीवन-चरित्र द्वारा देश-भक्ति का भाव उनके हृदय में भरा जाता है। भोजन बहुत

साधारण दिया जाता है। लड़कियों को सूई का, चित्रकारी का तथा भोजन बनाने, कपड़ा धोने इत्यादि गृहस्थी का काम विशेष रूप से सिखाया जाता है। अनेक साधारण विषयों पर व्याख्यानों द्वारा शिक्षा दी जाती है। कोई परीक्षा नहीं होती। अप्रैल महीने में फिर वे अपने अपने कामों में जा लगते हैं। गरमी के दिनों में लड़कियों की शिक्षा की बारी होती है। यहाँ का काम छः अध्यापकों और तीन अध्यापिकाओं द्वारा होता है। इन विद्यार्थियों की अवस्था प्रायः १८ से २५ वर्ष तक की होती है। कसरतें खूब सिखाई जाती हैं। इस छोटे से देश में इस प्रकार करीब साठ स्कूल भिन्न भिन्न स्थानों में काम कर रहे हैं। ऐसा ही एक बहुत बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय कालेज

अन्तर्राष्ट्रीय कालेज में विद्यार्थी अपने प्रिन्सिपल
के साथ खेत में काम कर रहे हैं

एल्सिनोर में है, उसे भी देखा। इसमें अनेक देशों के लोग पढ़ते हैं और सबको मिलकर एक घंटा वाटिका में, खेत में अथवा

डेनमार्क देश का अतिथि-सत्कार

एल्सिनोर में "इंटर नेशनल पीपुल्स कालेज" है जहाँ बड़े बड़े लड़के-लड़कियाँ यहाँ के तथा अन्य देशों के आकर रहते और अनेक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करते हैं। यहाँ के प्रिंसिपल श्री मानिके बड़े ही उत्साही कसरती युवक हैं। उन्होंने अपने जन्मस्थान "आल्स्टेड" ग्राम में हम लोगों को न्योता दिया और वे हमें अपने साथ लिवा ले गए। रास्ते का दृश्य बहुत ही सुंदर था। उस गाँव में इनके जन्मस्थानवाले घर में एक पाठशाला है। गाँव के सभी निवासी खेती करते हैं। दो-एक छोटी छोटी दूकानें भी हैं। यहाँ हवा द्वारा एक चक्की चलती है जिसमें लोग आटा पिसवाते हैं। यहाँ रेल का स्टेशन भी है—घर घर ट्यूब-वेल (नलिका-कूप) बना है जिसके द्वारा पीने और खेती के वास्ते अच्छा पानी निकलता है।

यहाँ छोटे छोटे किसानों के घर हैं। सब मिलाकर हम लोग करीब २५ अतिथि उस दिन वहाँ गए थे। इन्होंने वहाँवालों से पहले ही से सलाह कर रखी थी। हम सब अतिथियों को एक एक दो दो करके हर किसान के घर बाँट दिया। हमारी पारी एक कोआपरेटिव स्टोरवाले श्री क्रिस्टेन सेन महाशय के यहाँ पड़ी। इन लोगों ने हम सभों की बड़ी खातिर की। विचित्रता यह थी कि न तो ये लोग हम लोगों की भाषा समझते थे न हम लोग इनमें से किसी की। सबने ईश्वरीय ज्ञान द्वारा ही काम चलाया। यह एक अनोखा अनुभव था—हम लोगों में से कई जर्मन, कुछ अँगरेज, कई जापानी, चीनी, फ्रांसीसी इत्यादि अनेक बोली बोलनेवाले थे। चार आदमी भारतवासी थे किंतु सब तितर-बितर करके ठहराए गए। हम जब बँटवारे में अपने ठहरने की जगह गए तो हमारे सत्कार-कर्त्ता ने बड़े ही स्नेह से स्वागत किया।

उनके घर में एक गाय की अच्छी तसवीर लगी थी। हमने इशारे से पूछा कि यहाँ की गाय कितना दूध देती है? उनकी मेम ने दौड़-कर झट हमारे सामने एक गिलास में दूध लाकर रख दिया। हम क्या बोलें और क्या बहस करें, हमने उठाकर दूध पी लिया। संध्या समय खाने का टेब्ल लगा। हमने बहुत अच्छा मक्खन, रोटी, दूध, मुरब्बा, आलू इत्यादि शाकाहारी भोजन किया। यह जानकर कि मांस, मछली, मदिरा अथवा चाय या अंडा, काफी हम कुछ नहीं लेते और न चुरुट पाते हैं, उन्हें बड़ा ही आश्चर्य हुआ। वह कुटुंब भर चकित तथा खिन्न रहा कि उन्होंने हमारी कोई खातिरदारी नहीं की।

हमें साथ लेकर उन्होंने अपना बगीचा दिखाया। आलूचा, मकोय, आलूबोखारा, सेब इत्यादि तोड़-तोड़कर खिलाया, खेती दिखाई और संध्या समय गाँव के बाहर एक टीले पर सब अतिथियों को ले लेकर गाँववाले इकट्ठे हुए। हम लोगों ने अपने अपने सत्कारकर्त्ता के यहाँ का अपना अपना अनुभव एक दूसरे को बताया। सबने सबकी प्रशंसा की। वहाँ तीन घंटे तक दृश्य देखा; चंद्रमा के प्रकाश में नौ बजे रात तक वार्तालाप, व्याख्यानबाजी, हँसी तथा कसरत भरा नाच होता रहा फिर घर लौटे। रात को अपनी अपनी रुचि के अनुसार दूध, काफी या चाय पीकर ऊपर कोठे पर स्वच्छ स्थान में सोए।

सबेरे उठकर नित्य कृत्य से निपट, जलपान कर, वहाँ के गिरजा-घर में एकत्र होकर सब ने भजन सुना और मोटर में बैठ उस गाँव की कोआपरेटिव डेयरी देखी, जहाँ इंजिन द्वारा दूध मथकर मक्खन, पनीर, क्रीम इत्यादि बनाकर दूर देशों में भेजा जाता है। तलछट दूध सुअरों या बछड़े, बछियों को पिला देते हैं। यहाँ के

कई बड़े बड़े किसानों के कारखाने देखे। दूध के व्यवसाय के लिये गाएँ बहुत पाली जाती हैं। इन्हें अनाज और खली भी देते हैं। मुर्गियों से अंडों का व्यवसाय करते हैं। यहाँ सुअर का भी बड़ा भारी व्यवसाय होता है। पाँच पाँच छः छः हाथ लंबी बहुत ऊँची सफेद सुअरियाँ बहुत सी पाली जाती हैं। इन्हें मक्खन निकाला हुआ तलछट दूध, तरकारी, आलू, गोभी के पत्ते तथा अनाज इत्यादि खिलाते हैं। गंदी चीजें इन्हें नहीं खिलाई जातीं। ये प्रायः घरों या कठघरों में ही पड़ी रहती हैं। इनको बच्चे बहुत पैदा होते हैं जिनको बड़े होने पर मारकर उनका मांस अँगरेजों के देश में, उनके खाने के वास्ते, चालान किया जाता है। इसके द्वारा ये लोग बहुत द्रव्य कमाते हैं। कई किसानों के यहाँ सैकड़ों सफेद सुअरियाँ पली हुई देख पड़ीं। हमारे सत्कारकर्त्ता के घर भी एक बहुत बड़ी सुअरी पली थी जिसे घर के बच्चे बड़े प्रेम से रोटी इत्यादि खिलाते थे।

हम लोग जिस जिस किसान के घर थे उसका व्यवसाय देखने गए। सबों ने दूध, मक्खन, चाय, बिस्कुट द्वारा सत्कार किया और अपना स्वच्छ सुंदर घर दिखाया। यहाँ जौ, गेहूँ के सिवाय जई की खेती बहुत होती है। सभी किसान बड़े सुसंपन्न, शिक्षित, साफ-सुथरे, तथा हमारे भारत के कितने ही धनिकों से भी अच्छे देख पड़े। शिक्षित होने के कारण अपने व्यवसाय द्वारा ये साधारण व्यक्ति की अपेक्षा अधिक द्रव्य उसी काम से पैदा करते और सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं। घोड़ा, गाड़ी, मोटर इत्यादि भी इनके यहाँ हैं। इस छोटे से गाँव में बहुत सफाई थी और सड़कें बहुत अच्छी देख पड़ीं। हर घर के साथ बगीचे और खेत हैं। बिजली की रोशनी और टेलीफोन है। ये सब प्रकार से सुखी प्रतीत होते हैं। यहाँ की गाएँ दस दस, बारह बारह सेर दूध देती हैं। घोड़े

भी बहुत बड़े बड़े होते हैं। इनकी दशा से भारतवर्ष के बेचारे खेतिहरों की अवस्था का मुकाबिला करते हुए रोमांच हो जाता था। मन में परमात्मा से यही पूछता था कि क्या हमारे भारतीय कृषकों की भी अवस्था कभी सुधरेगी! यहाँ के खेतिहर लोग तो सभी लाट साहबी ठाट-बाट से कोट, पतलून और बूट डाटे हुए मुँह में चुरुट दबाए देख पड़े। हमारे भारतीय भाइयों को पेटभर सत्तू खाने के लिये नहीं मिलता। तन ढकने को पूरा वस्त्र नहीं मिलता। जाड़ों में आग तापकर या पुआल में घुसकर रात काटते हैं। यहाँवाले परों से भरे नर्म गद्दे और लिहाफ का उपयोग करते हैं।

अर्वाचीन शिक्षा-संबंधी भूमंडलीय महासभा

अर्वाचीन शिक्षा-संबंधी भूमंडलीय महासभा का पाँचवाँ अधिवेशन डेनमार्क देश के इस सुंदर एल्सिनोर नगर में, तारीख ८ से २१ अगस्त तक, हुआ। इसके कारण इस छोटे नगर में बड़ी चहल-पहल रही। करीब दो हजार प्रतिनिधि संसार भर के प्रायः पचास बड़े बड़े देशों से आए थे। इनमें आधे से अधिक संख्या स्त्रियों की थी जो शिक्षा का कार्य करते हुए इस विषय का विशेष अनुभव प्राप्त कर चुकी और कर रही हैं। इस सभा में अनेक प्रसिद्ध विद्वान् शिक्षक तथा शिक्षा-कार्य में लगे हुए प्रतिनिधि आए थे।

एल्सिनोर का छोटा सा नगर डेनमार्क देश की राजधानी कोपिनहैगन से इस टापू की उत्तरी सीमा पर है। इसके पूर्व-उत्तर पाँच-छः मील समुद्र को पार करके स्वीडन देश का ऐसा ही छोटा सा नगर हेल्सिंगबार्ग है। इन दो नगरों के बीचवाले समुद्र में सबेरे से आधी रात तक जहाज आर-पार चला करता है। रेल की ट्रेनें भी जहाज पर लदकर पार उतरा करती हैं। सब प्रतिनिधियों के

ठहरने के लिये एलिसनोर में पर्याप्त स्थान न होने के कारण बहुत से लोग उस पार हेलिसगबार्ग में ठहराए गए थे।

एक बहुत बड़े स्कूल में पचासों अन्य देश के प्रतिनिधियों के साथ हम लोग भी इसी नगर में टिके थे। यहाँ का प्रतिदिन दो क्रोन (डेढ़ रुपया) शुल्क देना पड़ता था। हर व्यक्ति के लिये एक लोहे के पलँग पर बोरे में पुआल भरा गद्दा और उसी प्रकार का तकिया था जिन पर सफेद चादर और खोली चढ़ी थी। ओढ़ने के लिये भी एक चदरा और एक कंबल था। दो दो तौलिए, टेब्ल, कुर्सी भी थी। सबेरे बहुत अच्छा दूध, मक्खन, और रोटी मिलती थी। दोपहर तथा संध्या का भोजन उस पार ही होता था, जलपान कर सब लोग समुद्र पार जा सभा में सम्मिलित होते और संध्या को या रात को लौटकर यहाँ सोते थे।

इन नगरों में मोटर, ट्राम, घोड़ागाड़ी, बिजली की रोशनी, स्कूल, पुस्तकालय, डाक, तार इत्यादि सहित कई बंक, बड़े बड़े होटल, बाजार इत्यादि सभी हैं। सभा प्राय: यहाँ के प्रसिद्ध प्राचीन राजमहल "क्रानबार्ग कासल" में हुआ करती थी। यह बहुत बड़ा गढ़ है। इसके भीतरी भाग के बीच में बहुत बड़ा आँगन है और दूसरी मंजिल पर बड़े बड़े हाल हैं जिनमें कई हजार आदमी एक साथ बैठ सकते हैं। इन्हीं हालों में बड़ी सभाएँ और अन्य कई हालों में छोटी छोटी सभाएँ होती थीं। स्थान बहुत सुंदर और सुरम्य है। समुद्र-तट के कारण यहाँ के दृश्य बहुत ही मनोहर हैं। अँगरेजी साहित्य के प्रसिद्ध कवि और नाटककार शेक्सपियर ने इसी किले में हैमलेट का स्थान निर्धारित किया है।

इस सभा की नेत्री श्रीमती विएट्रिस एन्सोर हैं। इसका प्रधान कार्यालय इँगलैंड में है। इन्हीं की अध्यक्षता में यह महासभा हुई।

इस संस्था का मुख्य अभिप्राय शिक्षा को सार्थक बनाना, बालकों और बालिकाओं की प्राचीन शिक्षा-प्रणाली में सुधार करना, देश-

क्रानबार्ग कासल

देशांतर के शिक्षकों के अनुभवों को परस्पर मिलाकर उसमें सुधार करना है। भारतवर्ष की प्राचीन गुरुकुल-प्रणाली की ओर इनका झुकाव दिखाई देता है। इसके संबंध की बहुत बड़ी बड़ी पोथियाँ अनेक भाषाओं में छपी हैं जिनके द्वारा इसका पूरा हाल मालूम हो सकता है।

कई प्रसिद्ध शिक्षा-विज्ञान-वेत्ताओं के व्याख्यान शिक्षा के भिन्न भिन्न विभागों पर हुए। श्रीमती डाक्टर मांटिसोरी, श्रीमती मिस

हिलेन पेंकहर्स्ट इत्यादि के मांटिसोरी और डाल्टन-शिक्षा-विधि पर बड़े महत्त्वपूर्ण कई व्याख्यान हुए। इनके अतिरिक्त इँगलैंड,

क्रानबार्ग कासल का दूसरा दृश्य

स्काटलैंड, जर्मनी, फ्रांस, इटली, अमरीका, चीन, जापान, रूस, मिस्र, तुर्किस्तान इत्यादि से आए हुए बड़े बड़े विद्वानों के भी अनेक व्याख्यान हुए। बड़े अधिवेशनों के अतिरिक्त सोलह विभाग-सभाओं में भिन्न-भिन्न शिक्षा-पद्धति पर व्याख्यान और वाद-प्रतिवाद—उन विभागों के विशेषज्ञों की अध्यक्षता में—हुए; जैसे धार्मिक शिक्षा, बालकों के संरक्षक और अध्यापक, शिक्षकों की शिक्षा, बड़ी अवस्थावालों की शिक्षा, संगीत-विद्या, सार्वजनिक शिक्षा, परीक्षा-प्रणाली इत्यादि।

कई बड़ी सभाएँ भिन्न भिन्न देशों के संबंध में शिक्षा-कार्य पर हुईं। दक्षिण अमरीका, निकटवर्त्ती पूर्वीय देशों में शिक्षा, भारतवर्ष में शिक्षा इत्यादि पर व्याख्यानों के अतिरिक्त फोटो, सिनेमा, मैजिक लालटेनों द्वारा जर्मनी, फ्रांस, अमरीका इत्यादि देशों के अनेक विद्वानों ने अपने अपने यहाँ की शिक्षा-संबंधी विधियों को दिखाकर समझाया। कई शिक्षा-संबंधी प्रदर्शिनियाँ सजी थीं जिनमें शिक्षा-सामग्री और शिक्षा-कार्य को दर्शाया गया था। डेनमार्क तथा स्वीडेन के लड़के, लड़कियों तथा बड़ी अवस्थावालों की कसरतें, जिन्हें नृत्य (डांस) कहते हैं, बड़े बड़े मैदानों में दिखाई गईं जिनके द्वारा विद्यार्थियों की शारीरिक शिक्षा का अद्भुत प्रदर्शन हुआ। युवक और युवतियों के हृष्ट-पुष्ट शरीरों का उदाहरण बहुत ही अच्छा देख पड़ा। व्यायाम के बिना शिक्षा पूरी हो ही नहीं सकती—इसको लोगों ने अच्छी तरह सिद्ध किया। शारीरिक शिक्षा पर भावी संतान की पुष्टि, दीर्घ-जीवन, नीरोग होना, कार्यशक्ति, देश और संपत्ति की रक्षा इत्यादि का होना निर्भर है, इसका पूरा प्रमाण दिया गया। ११ अगस्त को अलंपिया के मैदान में स्वीडन-निवासियों की विलक्षण कसरतें देखीं। कसरत द्वारा औरत-मर्द का झगड़ना और फिर मेल कर लेना आदि देखा गया।
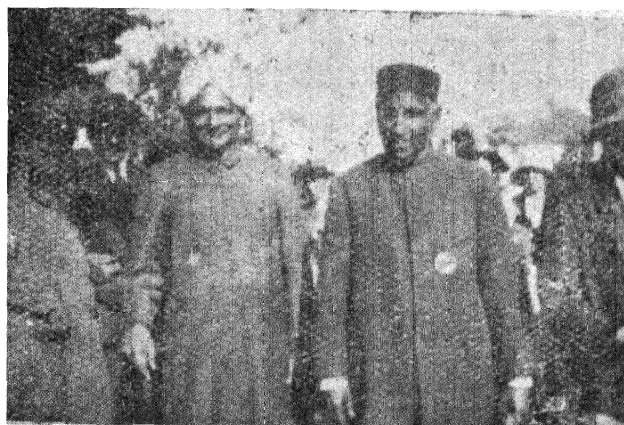
अलंपिया का मैदान

कई सौ लड़के-लड़कियों का एक प्रकार के पहिरावे में बाजे की गत पर या नेता के शब्दों के अनुसार मशीन की तरह कसरतें

करने का दृश्य अपूर्व था। डेनमार्क तथा स्वीडन देशों के राजकुमार तथा मंत्रिगण भी इस सभा में सम्मिलित हुए और उनकी ओर से उन देशों के नगर-सभागृहों (टौनहालों) में प्रतिनिधियों का स्वागत और सत्कार हुआ। स्वीडन देश के किले हेलसिंगबार्ग कारनान के पास पेड़ों के नीचे सीढ़ियों पर भोजन और नाचरंग का प्रबंध था। "भारतवर्ष में शिक्षा" पर भी तारीख १९ अगस्त को बड़ी सार्वजनिक सभा हुई जिसमें प्रधान सभा-संचालिका श्रीमती विएट्रिस एन्सोर थीं। इस सभा में बहुत भीड़ थी। दूर दूर देशों के प्रतिनिधि बड़े मनोयोग से भारतवर्ष की कथा सुनने के लिये आए थे। इस सभा में कई व्याख्यान हुए। श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय
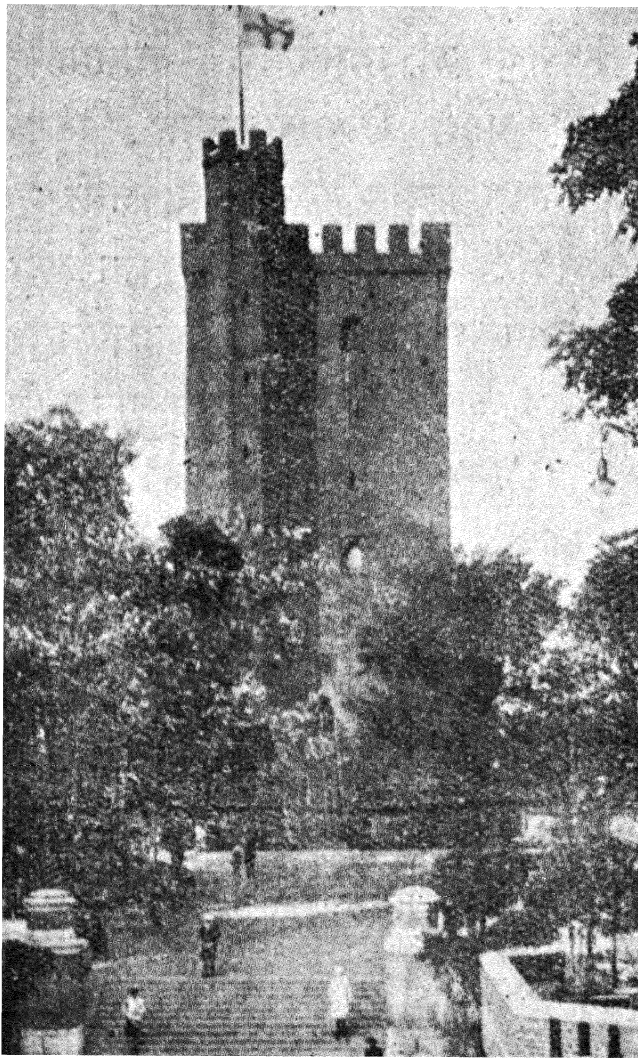
हेलसिंगबार्ग कारनान

"भारतवर्ष में शिक्षा के उद्योग" पर, आचार्य कर्वेजी "भारत में स्त्री-शिक्षा" पर, पंडित रामनारायण मिश्र "काशी-विश्वविद्यालय" पर, श्रीमती पोप "उस्मानिया-विश्वविद्यालय" पर, श्री विनायक मेहता (भावनगरवाले) "भारत में नवीन शिक्षा" पर, श्रीमती मिस्स लो

"मद्रास में शिक्षा" पर और पंडित श्रीराम वाजपेयी "पाठशाला के अतिरिक्त शिक्षा" पर (हिंदी में) बोले जिसका अँगरेजी में अनुवाद श्री गौरीशंकरप्रसाद ने किया। सभानेत्री का अंतिम व्याख्यान होने पर श्री गौरीशंकरप्रसाद ने उन्हें धन्यवाद दिया। भारतीय प्रतिनिधियों का, जिनमें ऊपर लिखे वक्ताओं के अतिरिक्त श्रीमती कृष्णादेवी खन्ना (लखनऊ की) और श्रीमती मिस दत्त (कलकत्ता की) थीं जो लंदन में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, श्रीमती सभानेत्री के साथ चित्र लिया गया।

प्रधान विद्वानों और विदुषियों को भारतीय प्रतिनिधियों की ओर से भोज दिया गया जिनमें श्रीमती एन्सोर, श्रीमती मांटिसोरी, श्रीमती नीव के अतिरिक्त कई अन्य प्रसिद्ध शिक्षा-विज्ञानवेत्ता भी उपस्थित थे। तीस आदमियों का भोज था। एक दैनिक पत्र क्रानबार्ग एविसिन निकलता था। उसमें भारतीय प्रतिनिधियों के लेख भी छपे थे।

रामलोसा में एक मित्र का परिवार

एक दिन हम लोग रामलोसा स्थान देखने गए जहाँ एक चश्मा है जिसका पानी बड़ा स्वास्थ्यप्रद समझा जाता है। इस चश्मे के कारण यहाँ बहुत से होटल बन गए हैं। वहाँ एक सज्जन हम लोगों को अपने परिवार में ले गए और उन्होंने हमारा बड़ा सत्कार किया।

जर्मनी देश में भ्रमण

एलसिनोर (डेनमार्क) से बर्लिन

ता० २२ अगस्त को सबेरे ही हम लोग हेलसिंगबार्ग (स्वीडन) से चल पड़े। समुद्र पार करके एलसिनोर (डेनमार्क) स्टेशन से रेलगाड़ी में सवार हुए और दोपहर के समय कोपेनहेगन में उतरकर स्टेशन के पास होटल टर्मिनस में छठी मंजिल पर साढ़े छ: क्रोन (पाँच रुपया) भाड़े पर एक दिन के लिये ठहर गए। यह होटल बहुत बड़ा है। यहाँ निरामिष भोजन का सामान अच्छा मिला जिसका दाम जलपान के अतिरिक्त अलग देना पड़ा। इस नगर को यथासमय हम लोग पहले देख चुके थे और इस दिन भी हम लोगों ने कुछ देखा जिसका संक्षेप वृत्तांत दिया जा चुका है।

ता० २३ अगस्त को जलपान करके दस बजे दिन की गाड़ी से हम लोगों ने प्रस्थान किया। यहाँ के स्टेशन पर पानी पीने की कल लगी हुई है और उसके पास ही एक काँच की अलमारी में कागज के बहुत से गिलास नीचे ऊपर सरियाकर रक्खे रहते हैं और ताला बंद रहता है। ये गिलास ऐसे बने हैं कि पानी से गलते नहीं। इनमें पानी लेकर पी सकते हैं। मैंने तो चिल्लू से पानी पिया। किंतु जिसकी इच्छा हो उस अलमारी में बने हुए छेद द्वारा एक गिलास का मूल्य जो पाँच पैसे के बराबर है डाल दे, उसी समय एक गिलास निकल आवेगा। अस्तु, हम लोग यहाँ से चलकर रास्ते

में छोटे और बड़े समुद्र को—पूरी रेलगाड़ियों की ट्रेन, असबाब और यात्रियों-सहित—जहाज पर पार करके जर्मनी देश की सुंदर छटा देखते हुए चले। जहाजों पर रेलगाड़ियाँ उसी तरह लादी गईं जैसे हमबर्ग से जाती बेर हुआ था। जहाज पर मैंने प्यास लगने पर एक बार लेमनेड पिया जिसका दाम तेरह आना लगा। निरा-मिष भोजन का भी प्रबंध जहाज के तथा चलती हुई रेलगाड़ी के भोजनालय में था। रास्ते में जंगल, झील इत्यादि के दृश्य बहुत अच्छे थे। खेतों में घोड़ों, बैलों और गायों द्वारा खेती करते हुए साहब किसान देख पड़े। रात को साढ़े आठ बजे बर्लिन स्टेशन पर पहुँचे। वहाँ वाजपेयीजी के पूर्व-परिचित मित्रगण मिले और डाक्टर मंसूर ने हम लोगों को एक छोटे होटल में साढ़े चार मार्क (तीन रुपया) रोज भाड़े पर, जिसमें सबेरे का जलपान (मक्खन, रोटी, दूध, मुरब्बा इत्यादि) मिलता था, टिका दिया। नहाने का दाम भी इसी में शामिल था। यह होटल नालेनडार्फ प्लाट्स सुरंग-रेल के स्टेशन के निकट है। इसकी मालकिन बुढ़िया मेम बड़ी मुस्तैद, कसरती, मेहनती और हँसमुख है। भाषा की कठिनाई के कारण उससे अथवा उसकी मेम सहायिका से सान बुझाकर वस्तुएँ माँगी जाती थीं अथवा जर्मन अँगरेजी कोश द्वारा बात-चीत होती थी।

बर्लिन नगर

योरप के जितने देश हम लोगों ने देखे उनमें जर्मनी देश (जिसे यहाँ के लोग डौकशलेंड कहते हैं) सबसे अच्छा पाया और जितने शहर हम लोगों ने देखे उन सबों में बर्लिन (जिसे जर्मन लोग बर्लीन कहते हैं) शहर सर्वोत्तम प्रतीत हुआ। कई अन्य यात्रियों से पूछने पर भी यही सम्मति पुष्ट हुई। यह नगर तीन सौ चालीस वर्ग-मील में, स्प्री नदी के दोनों किनारे, बसा हुआ है और इसकी

जन-संख्या सवा चालीस लाख है जो बारह लाख पौने सत्तावन हजार घरों में बसी है। जर्मनी देश का यह प्रधान नगर सात आठ सौ वर्ष से भी पुराना कहा जाता है, किंतु इधर डेढ़ सौ वर्ष से इसने नवीन रूप धारण किया है। क्षेत्रफल में यह संसार के सब नगरों से बड़ा है और जन-संख्या में योरप महाद्वीप में सबसे बड़ा है। गत योरोपीय महासमर में इसे बड़ी हानि उठानी पड़ी, दस ही वर्ष में इसने पूर्ति कर ली है। इस बड़े नगर की प्रधानता राजनैतिक दृष्टि से ही नहीं है किंतु व्यापार, कला-कौशल और विद्यापीठ इत्यादि के कारण भी इसका बड़ा महत्त्व है। विज्ञान-शास्त्र में यहाँवालों ने बड़ी उन्नति की है और यहाँ के विद्यालयों में उच्च कोटि की शिक्षा का कार्य होता है। एक्स-रेज़ के आविष्कर्त्ता डाक्टर रांटगेन यहीं के विज्ञानवेत्ता थे। उनकी मूर्त्ति एक स्थान पर हम लोगों ने देखी। इस नगर में तीन हजार दो सौ तो बंक हैं। यहाँ के नागरिक शहर के घने भागों से अलग खुले भागों में निवास-स्थान बनाते जा रहे हैं।

इस नगर में बहुत बड़े बड़े और सभी प्रकार के अनेक होटल और भोजनालय हैं। किसी किसी में एक साथ छः छः सौ तक यात्रियों के ठहरने का प्रबंध है। यहाँ भोजनालयों में दशांश नौकराना जोड़ लिया जाता है। होटलों में यह दस से पंद्रह प्रति सैकड़े लगाया जाता है। बारह चौदह रुपए रोज ठहरने का और बीस रुपए के करीब भोजन, दो रुपए स्नान का सर्वोत्तम होटल का बताया जाता है। यहाँ के लोग बड़े कार्य-कुशल पाए जाते हैं। सड़कों पर घरों की गिनती की संख्या तो लिखी हुई रहती ही है, हर मोड़ के पहले घर पर उस श्रेणी के मकानों की संख्या जैसे १०० से ११५ तक लिखी है और तीर द्वारा यह भी संकेत है कि संख्या किस ओर को जाती है।

बड़ी बड़ी सड़कों पर पुलिसवाले तो रहते ही हैं, पर हर चौमुहानी पर चौमुखड़ा लालटेन ऊपर बीचोबीच लटकती रहती है। हर आधे मिनट पर बिजली की घंटी बजती और रास्ता खुलने का संकेत हरे रंग द्वारा एक ओर हो जाता है और साथ ही विपक्ष रास्ते की ओर लाल रंग द्वारा रास्ता बंद का संकेत हो जाता है। पुलिसवाले से कुछ पूछने के लिये उसके निकट जाइए तो वह पहले हाथ उठाकर सलाम कर लेता है तब आपको उत्तर देता है।

इस नगर में निरामिष भोजनालय भी अनेक हैं जिनमें बहुत तरह के साग, भाजी, मक्खन, क्रीम (पतला मक्खन) इत्यादि सस्ते दाम में मिलते हैं। दही दूध भी मिलता है। एक जगह बड़ी जोन्हरी का भुट्टा (बाल) उबालकर गर्म गर्म मिला, एक जगह जोन्हरी का लावा पागकर बर्फी के आकार का बनाया मिला। अन्य भोजनालयों में भी शाकाहारी पदार्थ मिलते हैं, किन्तु वहाँ कुछ अधिक दाम पड़ता है। हमारे यहाँ रहते "हिंदुस्तान हौस" नाम की एक संस्था श्री शिवप्रसाद गुप्त के शुभ हाथों से खुली जिसमें इस नगर के भारतीय प्रवासी नित्य भोजन करने आते और परस्पर मिलते जुलते हैं। यहाँ हमने भी कई समय भारतीय निरामिष भोजन किया। दाल, भात, पूरी, रोटी, पराठा, कई प्रकार के साग, भाजी, दूध, दही, अचार, चटनी सब मिले। उस समय यह मकान नं० १७६ ऊलैंड स्ट्रासे में था। वहाँ कई भारतीय सज्जनों से भेट हुई जिन्होंने जर्मन देवियों से विवाह कर लिया है और अपने बच्चों के नाम, जो शरीर से बड़े ही हृष्ट-पुष्ट हैं, भारतीय रक्खे हैं।

जर्मनीवालों ने विज्ञान द्वारा बड़ी ही उन्नति की है। ये अनेक प्रकार के सामान बहुत सस्ते दाम में बनाकर दूसरे देशों में बेचते और पुष्कल धन प्राप्त करते हैं। इस देश में रेलों का

एक प्रकार से जाल फैला दिया गया है। कदाचित् ही कोई स्थान ऐसा हो जो रेलवे-स्टेशन से बहुत दूर पड़ता हो। इस नगर में दस रेलवे-स्टेशन हैं। शहर में सुरंग-रेलों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान को बहुत सुगमता से जाते हैं। इनके अतिरिक्त मोटर-बस और ट्रामगाड़ियाँ भी खूब चला करती हैं। १५ फीनिंग (करीब सात पैसे) का टिकट लेकर सवार हो जाइए और जहाँ चाहिए चले जाइए। रास्ते में एक बार उतरकर डेढ़ घंटे के भीतर उसी ओर या दूसरी ओर (किंतु लौटानी या पीछे की ओर नहीं) फिर सवार होकर चले जाइए। सुरंग-रेल का टिकट मोटर-बस और ट्राम में तथा मोटर का लिया टिकट रेल में भी काम आ सकता है। शहर और रेलों के नकशे, जिनसे बड़ी सहायता मिलती है मुफ्त मिलते हैं।

यहाँ की भाषा में कई शब्दों को इकट्ठा समास करके संस्कृत की तरह प्रयोग करते हैं। कई शब्द तो संस्कृत हिंदी से समता रखते पाए गए जैसे चिट्ठियों में अँगरेजी में डेटेड (तिथि) लिखते हैं उस स्थान पर ये "देन" (दिन) शब्द लिखकर तिथि लिखते हैं। गाड़ी को "बाहन" कहते हैं। रेल के स्टेशन को "बाहन हाफ" इत्यादि। अक्षर और अंक तो प्रायः वही हैं जो अँगरेजी भाषाभाषियों में प्रचलित हैं और यही योरप भर में है, किंतु अक्षरों के उच्चारण भिन्न हैं। "ज़ेड" का उच्चारण अँगरेजी में "ज़" है, किंतु जर्मनी में "स" है। इसी तरह "एस" का उच्चारण अँगरेजी में प्रायः "स" और जर्मनी में "ज़" होता है।

यहाँ का "मार्क" सिक्का चाँदी का है जो अँगरेजी एक शिलिंग और भारतीय ग्यारह आने के बराबर होता है। एक मार्क का सौ भाग "फीनिंग" होता है जो प्रायः एक अधेले के बराबर

होता है। तौल नाप वही हैं जो फ्रांस में प्रचलित हैं अर्थात् मीटर, ग्राम और लिटर, और वहीं की तरह दशमलव रीति का प्रयोग होता है। प्राय: योरप भर में यही नाप-जोख प्रचलित है।

यहाँ पैरिस की तरह बनावट नहीं है। रँगे ओंठोंवाली स्त्रियाँ तो केवल पाँच छ: ही दीख पड़ीं जो संभव है पैरिस की ही हों। यहाँ की स्त्रियाँ भी खूब कसरती और गठीले शरीरवाली दीख पड़ती थीं और पहलवानों की तरह चलती थीं।

यहाँ का मुख्य दैनिक समाचार पत्र "मार्गन पोस्ट" दस लाख नित्य छपता है और प्रधान साप्ताहिक "बर्लिना इलस्ट्रियस" बीस लाख निकलता है। यहाँ भी योरप के सभी देशों की तरह शिक्षा अनिवार्य है, कोई भी अनपढ़ कदाचित् ही मिले। साथ ही शारीरिक शिक्षा यहाँ खूब दी जाती है। यहाँ अनेक बड़ी बड़ी संस्थाएँ देखने योग्य हैं, किंतु उनमें से कुछ का—जिन्हें हम लोग देख सके—संक्षेप में हाल बताने का उद्योग किया जायगा।

जंतु-संग्रहालय

"जुओलाजिकल गार्डन" रेलघर के सामने यहाँ का अद्भुत "जंतु-संग्रहालय" है। इसके फाटक के पास घड़ी मिलाने का एक बड़ा यंत्र है। इसमें बड़े अक्षरों के अंकों द्वारा समय का घंटा, मिनट दीख पड़ता है; जैसे ११—२५ ग्यारह बजकर पचीस मिनट पर दीख पड़ेगा। फिर मिनट मिनट पर संख्या बदलती जाती है। इस संग्रहालय में जाने का समय अप्रैल से सितंबर तक सबेरे सात से रात के दसे बजे तक है। नित्य डेढ़ मार्क (एक रुपया) देकर जाना होता है, किंतु रविवार को एक ही मार्क लगता है।

और बड़े शहरों के जंतु-संग्रहालयों की अपेक्षा यहाँ के इस संग्रहालय में संख्या अधिक तो है ही किंतु विशेषता यह है कि उनका

विभाग वैज्ञानिक रीति से श्रेणी बनाकर किया हुआ है। इसलिये जंतु-विद्याध्ययन करनेवालों को विशेष सुविधा हो सकती है। दूसरी विशेषता यह दीख पड़ी कि जहाँ के जंतु हैं उनके उस देश और स्थान की प्राकृतिक रहन-सहन का सा प्रबंध यहाँ किया गया है। जैसे हाथियों के रहने के स्थान भारतीय (बर्मा के) पैगोडा की तरह बने हैं। मूसों के विभाग में अनेक देशों के मूसे एक श्रेणी में रखे गए हैं जिससे उनका तारतम्य सुगमता से देखा जा सकता है। इसी प्रकार सभी जंतुओं का विभाग वैज्ञानिक रीति से बनाया गया है। कुल तीन हजार प्रकार के जंतु यहाँ संगृहीत बताए जाते हैं जिनमें पाँच सौ दूध पिलानेवाले हैं और एक हजार प्रकार के पत्ती हैं। सैकड़ों प्रकार की गानेवाली चिड़ियों का श्रेणीबद्ध संग्रह भी अपूर्व है। इस विस्तृत हाते के भीतर एक स्थान जल-जंतुओं का (ऐके-रियम) है जिसका प्रवेश-शुल्क रविवार को एक मार्क और अन्य दिन डेढ़ मार्क अलग देना पड़ता है, इसका समय गर्मी में सबेरे ९ बजे से संध्या के ८ बजे तक रहता है। यह संसार में सबसे बड़ा और सर्वोत्तम संग्रह है। इसी विभाग में एक बड़ा विभाग भूमि के भीतर घुसकर रहनेवाले जंतुओं का "टिरेरियम" है जैसे सर्प, बिच्छू इत्यादि और एक तीसरा विभाग कीड़े, मकोड़ों का जैसे मकड़े, चींटे इत्यादि का "इन्सेक्टेरियम" है। संयोग-वश जब हम लोग तीसरे पहर इस विभाग को देख रहे थे, इनको भोजन दिया जा रहा था। मकड़े, मकड़ियों के रहने के स्थान काँच के बहुत अच्छे बने थे जिनके भीतर छोटे छोटे डाल, डौंगियाँ लगी थीं। इन पर वे अपने जाले बनाकर विहार करते थे। एक जाली के पिंजड़े में मक्खियाँ लाकर इनके काँचघर में छोड़ दी गई। उन मक्खियों पर ये मकड़े वैसे ही विचित्र ढंग से टूट पड़े

जैसे कोई भी भूखा जीवधारी अपने भोज्य पदार्थ पर टूटता है। जिस जीव-जंतु के विभाग को देखिए, प्राय: सभी देश के उस प्रकार के जंतु वहाँ श्रेणी बनाकर संगृहीत पाए जाते हैं।

इसी हाते में कई भोजनालय भी हैं। इनमें सबसे बड़ा भोजनालय संसार भर में बड़ा कहा जाता है, जिसमें बीस हजार मनुष्य एक साथ भोजन कर सकते हैं। इसका दृश्य भी अपूर्व है। जो लोग इस तड़क-भड़कवाले भोजनालय से परे रहकर भोजन करना चाहते हैं उनके लिये कम दाम का इस बगीचे के मध्य में "वाल्डशेंकी रेस्टोराँ" जन-साधारण के लिये है। इसी भोजनालय में गर्मी के महीनों में, अप्रैल से सितंबर तक, सबेरे सात बजे से दस बजे तक जर्मनी तथा अन्य देशों के प्रसिद्ध गुणकारी जलों द्वारा चिकित्सा होती है। तीसरे पहर चार बजे से खुले मैदान में गाना-बजाना होता रहता है। ऊँट, हाथी आदि जानवरों पर लड़कों को चढ़ाया और उनका मनोविनोद किया जाता है।

तारागृह (प्लैनेटेरियम)

जंतु-संग्रहालय के पास ही यह अद्भुत "तारा-गृह" है। प्रवेश-शुल्क बुधवार को आधा मार्क, अन्य दिन एक मार्क; समय तीसरे पहर चार बजे, छ: बजे और रात के आठ बजे, नित्य तीन बार है। इस प्रकार का वैज्ञानिक दृश्य देखने का प्रबंध अन्यत्र नहीं है। हमारे एक साथी थे जिनसे वहाँ चलने के लिये सलाह हुई। उस दिन बदली थी। उन्होंने कहा—इस बदली में तारे कैसे दीख पड़ेंगे? हमने कहा—जब यह खुला है तब देखना चाहिए। टिकट लेकर हम लोग भीतर गए। उस बड़े गोलाकार ८२ फीट व्यास के हाल (बड़े कमरे) में एकदम अँधेरा कर दिया गया। उसके बीच में एक बहुत बड़ा डमरू के आकार का यंत्र इस ढंग से एक

बड़े ठाठ पर चढ़ाया हुआ था कि वह हर ओर हर बल में घूम सकता था। अँधेरा होते ही जर्मन भाषा में व्याख्यान देनेवाले आचार्यजी उस यंत्र को चला-चलाकर दिखाने और बताने लगे। यह प्राय: एक घंटे तक होता रहा। व्याख्यान तो हम लोग समझ नहीं सके, किंतु जो दृश्य देखा वह अद्भुत था। यहाँ नभ-मंडल का तादृश वास्तविक नमूना इस यंत्र द्वारा दिखलाया जाता है। यह यंत्र कार्ल सेइस जीना (Carl Zeiss, Gena) के प्रसिद्ध दर्शक यंत्रों (दूरबीन इत्यादि) के बनानेवाले कारखाने का बनाया हुआ है। एकदम आकाश का दृश्य दीख पड़ा। एक ओर चंद्रोदय हुआ, सूर्योदय भी हुआ, फिर रात का दृश्य सब तारागणों-सहित विचित्र ही दीख पड़ा। हर समय और हर स्थान से आकाश-मंडल का दृश्य इसके द्वारा दिखाया जा सकता है। सप्तर्षि, ध्रुव तारा, नव-ग्रह, आकाश-गंगा, ग्रहण इत्यादि सब वस्तुत: आकाश की भाँति दिखाए गए और सभी नक्षत्रों को चलते हुए देखा। एक यंत्र द्वारा तीर के आकार का प्रकाश डालकर आचार्यजी नक्षत्रों को दिखाते और समझाते थे। हम लोग इसे देखकर चकित हो गए। यहाँ ज्योतिष-संबंधी यंत्रों का अच्छा संग्रहालय भी है जिसे शनिवार और रविवार को देख सकते हैं। शुल्क आधा मार्क है।

बाजार और दूकान

जैसा विस्तृत और बड़ा यह शहर है उसी ढंग की बहुत बड़ी बड़ी अनेक दूकानें भी खूब सजी हुई हैं। बड़ी बड़ी सड़कों पर—जैसे लाइपजिग स्ट्रासे, पाट्स्डैमर स्ट्रासे, फ्रेडरिक स्ट्रासे—बहुत बड़ी बड़ी हर प्रकार की दूकानें इत्यादि हैं जो दर्शनीय हैं। उनमें से एक लाइपजिग स्ट्रासे में वर्दीम की बहुत ही बड़ी दूकान है। वर्त-

मान समय की चाल के अनुसार हर प्रकार की वस्तुओंवाली इस विराट् दूकान को सन् १८६७ ई० में मास्सेल ने पहले-पहल खोला। समय समय पर इसकी वृद्धि होती गई। अब यह सामानों के विचार से तो जर्मनी में सबसे बड़ी और क्षेत्रफल को ध्यान में रखते हुए संसार में सबसे बड़ी दूकान है। जैसे लंदन में सेलफ्रिज की दूकान है वैसे ही यह बर्लिन में बहुत लंबी-चौड़ी कई मंजिलों की है। आठ हजार आदमी इसमें काम करनेवाले बताए जाते हैं। इसके भीतर उनके लिये भोजनालय इत्यादि भी हैं। ग्राहकों के लिये भी कई भोजनालय हैं। भीतर जाने के कई रास्ते हैं। इसमें ४५ तो बिजली के पिंजड़े नीचे-ऊपर बराबर चला करते हैं, जिनमें १० माल चढ़ाने-उतारने के लिये हैं और ३५ ग्राहकों के चढ़ने-उतरने के लिये। हजारों ग्राहक बराबर घूमा, चढ़ा-उतरा करते हैं। दो स्थानों पर दौड़ती हुई सीढ़ियाँ हैं जिन पर खड़े हो जाने से बिना पैर चलाए आप जिस मंजिल में चाहें जा उतरें। इस दूकान की सजावट और विभाग-क्रम बहुत ही अच्छा है। सबसे ऊपर की मंजिल बगीचा, फूल-पत्ती इत्यादि की है और भू-भाग के आँगन में भी फूलों से सुसज्जित सुंदर हरी घास लगी हुई है जिस पर फुहारे छूट रहे हैं। संसार की प्रत्येक वस्तु प्रायः इसमें मिल सकेगी। इसमें तारघर, डाकघर, बंक, विदेश-यात्रा-प्रबंध, फोटो उतारने का प्रबंध, सिनेमा, थिएटर इत्यादि सभी हैं। टेलीफोन के विभाग में कई मेमों का एक साथ पहरा रहता है जो एक्सचेंज किया करती हैं अर्थात् एक विभागवाला किसी दूसरे विभाग से या किसी कार्यकर्त्ता से कुछ कहना चाहे तो झट उनका संबंध जोड़ देंगी। इस काम में पाँच छः मेमें लगी रहती हैं। यहाँ एक "ट्यूब-पोस्ट"—अर्थात् नली द्वारा डाक

पार्सल भेजने का विचित्र प्रबंध—देखा। किसी ग्राहक ने अपने घर से टेलीफोन में कहकर कोई वस्तु मँगा भेजी। वह आज्ञा उस वस्तु के विभाग में तुरंत टेलीफोन ही द्वारा पहुँचा दी गई। वहाँ से चट उस माँगी हुई वस्तु का पार्सल बनाकर उस पर उन ग्राहक महाशय का पता लिखकर नली में डाल दिया गया और वह नीचे चलानी-विभाग में आ गिरा। यहाँ यह दूसरी नली में डालकर दबा दिया गया और झट उस ग्राहक के घर के पासवाले डाकखाने में पहुँच गया और वहाँ से तुरंत उनके पास पहुँचा दिया गया। इसमें साधारण डाकव्यय के अतिरिक्त कुछ अधिक महसूल लगता है, किंतु बात की बात में वस्तु घर बैठे पहुँच जाती है। इन नलियों में अँटने लायक पार्सल बनते हैं। इन नलियों में हवा नहीं होती इस कारण पार्सल, डालते ही, हवा के दबाव से तुरंत एक मुँह से दूसरे मुँह को खिंच जाता है। यहाँ के मैनेजर ने इस दूकान का पुस्तकाकार छपा नकशा इत्यादि हम लोगों को दिया और उन्होंने बड़े शिष्टाचार के साथ बातचीत की। कई मुख्य विभागों को तो उन्होंने संग जाकर स्वयं दिखलाया। पिंजड़ों में कई बनावटी चिड़ियाँ ऐसी बिकती थीं जो पेंच दबाते ही असली चिड़ियों की तरह बोलती और पर, चोंच इत्यादि हिलाने लगती थीं। पुस्तक-विभाग में एक पुरानी सौ वर्ष की छपी चित्रों सहित, लेफ्टिनेंट कर्नल फारेस्ट की बनाई, पुस्तक थी जो गंगा-यमुना के किनारे यात्रा के संबंध में भारतीय स्थानों के वर्णन और चित्रों की थी। उसका दाम ढाई सौ रुपए के करीब था। पूरा एक दिन केवल घूम-घूमकर इस दूकान को देखने में हम लोगों ने बिताया और कुछ खरीदा भी। फिर दूसरे दिन और चीजें खरीदी गईं। इसमें जाकर संभव नहीं कि बिना कुछ खरीदे आप चले आवें। अनेक भाषा बोलनेवाले

इसमें कई सहायक हैं। आप जिस भाषा में बोलते हों उस भाषा का बोलनेवाला आपके साथ कर दिया जायगा। वह आप को दूकान में घुमावेगा, भीतरी विभागों की दूकानों पर की चीज़ें जो आप पसंद करें खरीद करा देगा और हर तरह से आपकी सहायता करेगा।

प्रदर्शिनी

यहाँ हर साल कई प्रदर्शिनियाँ हुआ करती हैं जिनके द्वारा जर्मन अपने व्यवसाय की अच्छी वृद्धि किया करते हैं। हम लोगों के रहते हुए दो बड़ी प्रदर्शिनियाँ हो रही थीं। इसी काम के लिये बहुत बड़े बड़े करीब चार चार सौ गज लंबे दो भवन दो-मंजिला बने हैं। उनमें कई भोजनालय और उपाहार-गृह भी हैं। विज्ञापनों की एक बहुत बड़ी प्रदर्शिनी हो रही थी। इसमें अनेक कंपनियाँ नए नए ढंग से विज्ञापन देने की रीतियाँ प्रदर्शित कर रही थीं। बिजली की शक्ति का प्रयोग बहुत प्रकार से किया जा रहा था। जहाजों की कंपनी बनावटी समुद्र में खिलौने के जहाज खूब दौड़ा रही थी। अनेक बड़े बड़े प्रसिद्ध शहरों के नमूने बने थे जिन्हें जहाजों द्वारा जाकर यात्री देख सकते हैं। दूसरी प्रदर्शिनी रेडियो (जिससे बिना तार की खबरें और एक शहर के गाने की प्रतिध्वनि मशीनों द्वारा दूसरे दूर-स्थित शहरों में घर बैठे सुन सकते हैं) की हो रही थी। सैकड़ों कंपनियाँ अपनी अपनी मशीनों को दिखलातीं और उनके द्वारा संसार के अनेक शहरों के गाने-बजाने की प्रतिध्वनि सुनाती थीं। मशीनों के कल-पुर्जे भी प्रदर्शित किए जाते थे। इसी हाते में करीब चार सौ फुट ऊँचा एक धरहरा बना था, जिस पर महसूल देकर बिजली के पिंजड़े द्वारा चढ़कर अपूर्व दृश्य दिखाई देता था। इसी हाते में

सिनेमा, थिएटर और अनेक प्रकार के मनोविनोद हो रहे थे। दौड़ती सीढ़ियों द्वारा ऊपरी मंजिल में जाने का प्रबंध था।

शहर के एक दूसरे भाग में हवाई जहाजों का बहुत बड़ा दंगल हो रहा था। वह बहुत विस्तृत मैदान था। उस स्थान पर अनेक हवाई जहाज उड़ रहे थे। पक्का गच का एक हाता बना था। उसमें रेडियो मशीनों द्वारा गाना-बजाना सुना जाता था। कई भोजनालयों में लोग भोजन या जलपान करते थे। हम लोगों को पहुँचने में कुछ विलंब हो गया। सुनने में आया कि हवाई जहाजों के ऊपर से हवा में कलइयाबाजी और शारीरिक व्यायाम की कसरतें उड़ाकू लोग अनेक प्रकार से करते हैं।

जर्मनी देश में भ्रमण

बर्लिन से पाट्सडम को रेल द्वारा तथा स्टीमर या मोटर-बस से जा सकते हैं। यह बहुत प्राचीन तथा छोटा सा सुंदर नगर

पाट्सडम

है। इसमें रमणीक जलाशय, उद्यान तथा भव्य भवन हैं। यदि इसे नहीं देखा तो समझना चाहिए कि जर्मनी नहीं देखा। इस

नगर की जन-संख्या ६६००० है और इर्द-गिर्द की बस्ती मिला ली जाय तो एक लाख दस हजार के करीब है। झील के टापू में
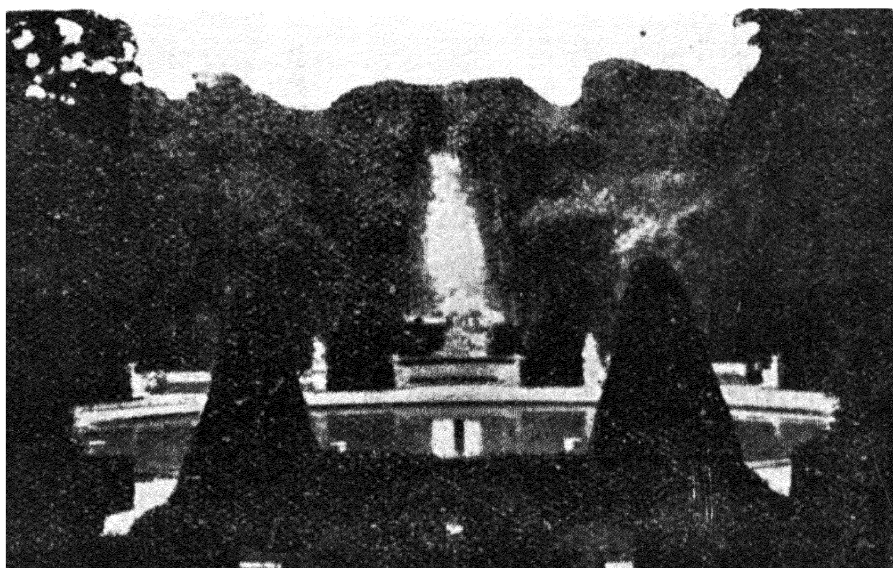
पाटसडम का झरना

यह बसा है। जिन मुख्य मुख्य स्थानों को हम देखने गए उनमें प्रधान और बहुत प्रसिद्ध

सान सुद्सी (अशोक) महल

है। इसे फ्रेडरिक दि ग्रेट ने अपने निवास के लिये बनवाया था। अब यह अद्भुत संग्रहालय सार्वजनिक कर दिया गया है। इसकी तथा इसके सुंदर उद्यान की सजावट यथासंभव उसी समय की सी रहने दी गई है। इसके फाटक के भीतर जाते ही एक बहुत सुंदर उद्यान पड़ता है जिसमें रंगीन फूलों की सुंदर क्यारियाँ हैं। एक बड़ा कुंड है जिसमें ११८ फुट ऊँचा जल का फुहारा छूटता है। इस गोल कुंड का व्यास ४३ गज है। इसके चारों ओर बहुत सुंदर मूर्तियाँ बनी हैं। इसके आगे इस प्रसिद्ध महल का दृश्य अनुपम है।

इस बगीचे से ऊपर महल में जाने के लिये इक्कीस इक्कीस सीढ़ियों की सात श्रेणियाँ हैं, हर श्रेणी के बाद फर्श हैं। हर फर्श के मैदान में सुंदर फलों के वृक्षों की कतारें तथा दीवारों से सटी
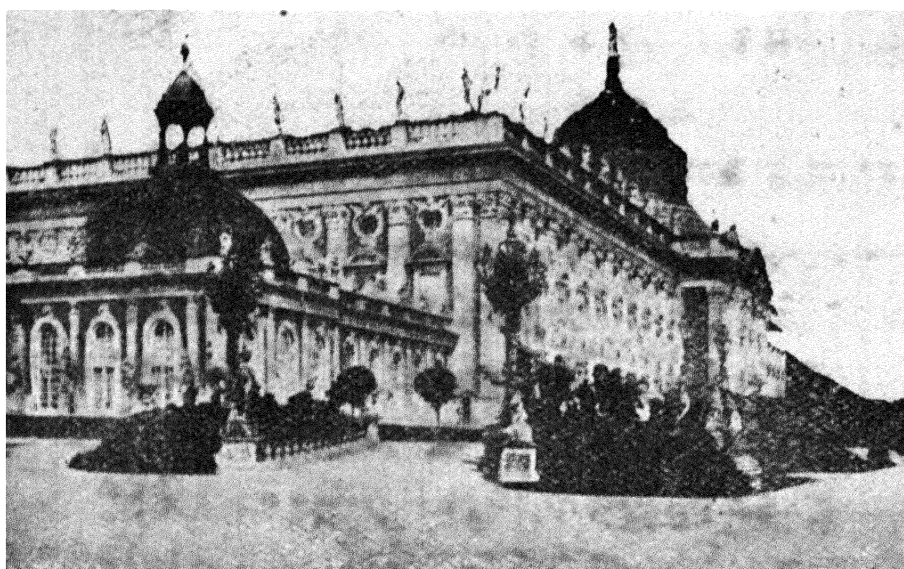
पाट्सडम का अशोक-भवन

लताएँ हैं। सीढ़ियों की एक श्रेणी की समाप्ति पर टमाटो की बेलें हैं तो दूसरी के अंत में अंगूर की। फिर नाशपाती, फिर लाल लाल सेब, शफतालू इत्यादि के फलदार वृक्ष हैं। सबसे ऊपर के मैदान में पहुँचने पर सामने महल दिखाई देता है जिसके ललाट पर फरासीसी भाषा में इसका नाम "सान सुइसी" लिखा है जिसका अर्थ अशोक-भवन है।

बगल में यहाँ के सम्राट् के बारह कुत्तों की समाधियाँ हैं। महल में पीछे के फाटक से एक मार्क शुल्क देकर जाना होता है। इसके भीतर का राजसी सामान बहुमूल्य है और इस बात को प्रमाणित करता है कि यहाँ के रहनेवाले बड़े ही प्रभावशाली तथा विलासी थे। सामान अनेक कमरों में सजा है। पुस्तकालय, भोजनालय तथा शयनागारों में इटली के बहुमूल्य संगमर्मर की

मूर्तियाँ, बड़े बड़े बहुरंगे संगमर्मर के खंभे, टेबूल, चौतरे तथा सुंदर नक्काशी का लकड़ी का सामान दिखाई देता है। छतों तथा दीवारों की चित्रकारी भी अपूर्व है। पीछे की ओर का उद्यान भी बहुत सुंदर है। इसके बाद थोड़ी दूर तक 'जंगल' है जिसके बाद—

आरंजरी (नारंगी-घर)

है। यह शीशे का बड़ा भारी हाल है जिसके बाहर बड़े बड़े लकड़ी
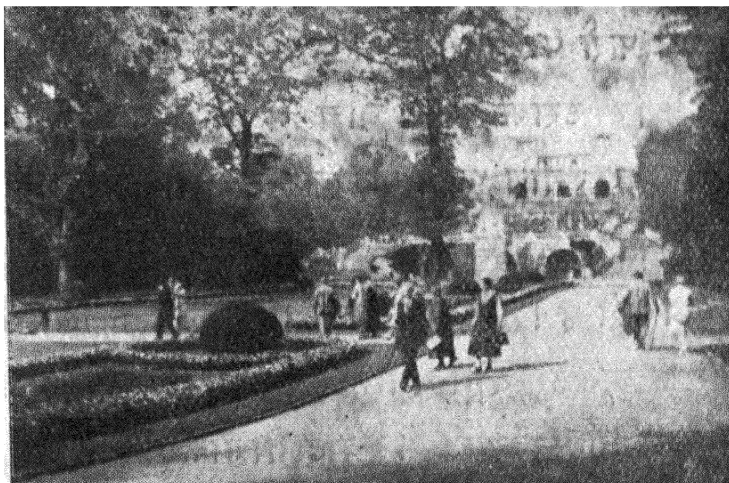
आरंजरी (नारंगी-घर)

के गमलों में नारंगी के सैकड़ों वृक्ष लगे हैं। जाड़ों में पाले से बचाने के लिये ये गमले उठाकर काँचघर में रख दिए जाते हैं।

यह भवन करीब एक हजार फुट लंबा है। इस महल के भीतर का सामान भी राजसी ठाट का है। टिकट लेकर देखने जाना होता है। भीतर का फर्श साधारण जूतों की रगड़ से खराब न हो जाय, इसलिये जूतों पर नमदों के बड़े बड़े जूते पहनकर जाना पड़ता है। इसका टिकट आधा मार्क है। इसके भीतर भी अनेक कमरे खूब सजे हैं। चीनी के बर्तन तथा मूर्तियाँ, सुंदर बहुमूल्य पत्थरों के गमले, पच्चीकारी के काम के टेबूल, अंबर का सामान आदि

दर्शनीय हैं। एक कमरा हरे संगमर्मर के खंभों का हरे रंग के सामान से सजा हुआ है। इसी प्रकार एक नीले, एक सुनहरे, एक लाल खंभे के उसी रंग के सामान से सजा कमरा है। इस महल के ऊपर से इसके उद्यान की शोभा बड़ी मनोहर दिखाई देती है।

इसके बाहर मैदान में फुहारों के दोनों ओर सुंदर फूलों की विविध रंग की क्यारियाँ हैं जो हरी घास पर बहुत ही खुलती हैं। सबसे नीचेवाले फर्श पर बहुत ऊँचा फुहारा धुनी हुई रूई के खंभे की तरह छूटता है। उसके आगे बीच में हरी घास का गलीचा है जिसके चारों ओर रंगीन फूलों के बेल-बूटे हैं। यह बहुत ही भला मालूम होता है। इसके दूसरे सिरे पर फ्रेडरिक दि ग्रेट की अश्वारोही मूर्ति बहुत अच्छी है। इस उद्यान में बैठने के लिये चारों ओर मूर्तियों से सजे अनेक स्थान बने हैं। महारानी की समाधि तथा 'नया महल' छायादार रास्ते के बाद गोलाकार बना है। इसके हाते में भी घास, फूल, फुहारों का अपूर्व दृश्य है। इस भवन के हर बाहरी खंभे पर अनेक मूर्तियाँ बनी हैं।

"वाइल्ड पार्क" का दृश्य भी, जो बीस मील के घेरे का है, बहुत अनुपम है। इसके अतिरिक्त कई उद्यान और हैं जहाँ अनेक महल, मूर्तियाँ इत्यादि देखने योग्य हैं। एक बड़ा गिरजाघर, लड़कों तथा लड़कियों के पृथक् पृथक् अनाथालय, प्राचीन घोड़साल जहाँ हजारों घोड़े रहते थे, देखने योग्य है। इनके अतिरिक्त पाट्सडम के बाहर भी कई दर्शनीय स्थान हैं जिनका वर्णन इस संबंध की पुस्तकों में दिया है। 'वडेकर' कृत "उत्तरी जर्मनी" तो बहुत अच्छी किताब है। उससे छोटी पुस्तक ग्रीवेन की बनाई "बर्लिन और पाट्सडम" में भी संक्षिप्त वर्णन है।

नगर में भ्रमण

यहाँ का केंद्रीय स्थान "उंटरडन लिंडन" बहुत प्रसिद्ध है और यहाँ बड़ी चहल-पहल रहती है। सड़क पूर्व पश्चिम को गई है।
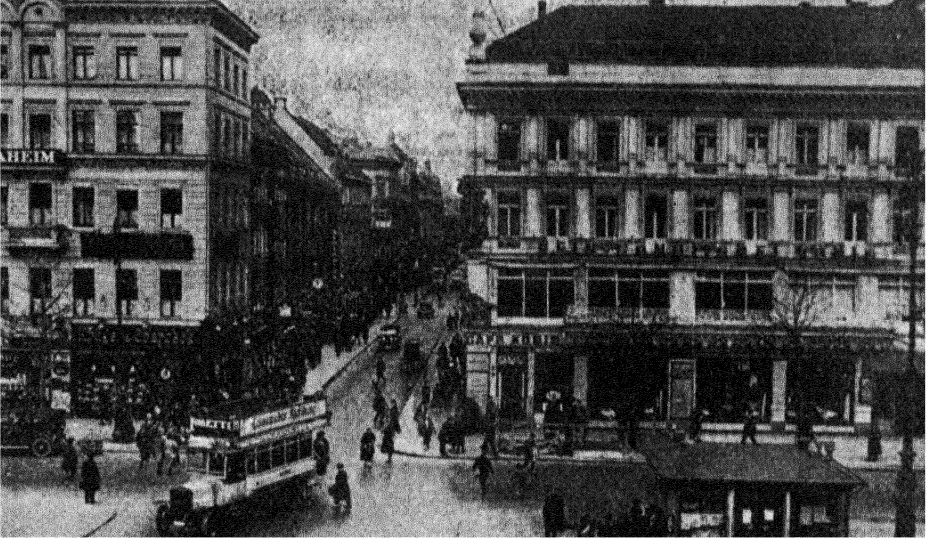
उंटरडन लिंडन

आदमियों के चलने के लिये बीच में बहुत चौड़ा पक्का रास्ता है। इसके दोनों ओर वृक्षों की छाया है। किनारे किनारे छाया में बेंचें रखी हैं जिन पर लोग विश्राम करते और समाचार-पत्र आदि पढ़ते हैं। इसके बाद दोनों ओर बहुत चौड़ी सड़कें हैं जिन पर मोटरगाड़ियाँ इत्यादि दौड़ा करती हैं। इनके बाद बहुत चौड़ी पटरियाँ और तब बहुत ऊँचे ऊँचे भवन हैं जिनमें अनेक दूकानें, बंकघर, कार्यालय तथा होटल इत्यादि हैं।

इसी सड़क के पूर्व ओर जाकर बहुत बड़े बड़े प्राचीन राज-भवन हैं जो अब सार्वजनिक अद्भुत संग्रहालय कर दिए गए हैं। इधर ही यहाँ का बृहत् पुस्तकालय तथा बड़े बड़े विद्यालय भी हैं। आगे जाकर एक बहुत बड़ा सुंदर मैदान है जहाँ अच्छे उद्यान और

फुहारे हैं। मूर्तियाँ भी बहुत अच्छी अच्छी हैं। वहाँ विश्वविद्यालय तथा अनेक बहुत बड़े बड़े सार्वजनिक भवन दर्शनीय हैं। इसी ओर अनेक अद्भुत संग्रहालय भी हैं जिनको शुल्क देकर भीतर तथा ऊपर देख सकते हैं। उन्हीं में से केवल दो हम लोगों ने एक मित्र के साथ जाकर देखे जो अँगरेजी जानते थे और सहायता दे सकते थे। गाइड (प्रदर्शक) भी मिलते हैं।

श्लास संग्रहालय

यह बहुत बड़ा प्राचीन महल है। आँगन के चारों ओर चार मंजिलों में बड़े बड़े कमरों में राजसी सामान संगृहीत तथा प्रदर्शित हैं। इसमें सात सौ कमरे और एक हजार खिड़कियाँ हैं। यह २१० गज लंबा और १२७ गज चौड़ा तथा १०८ फुट ऊँचा है और गुंबज तथा भीतरी गिरजा २३० फुट ऊँचा है। इसके दो बड़े बड़े आँगन हैं जिनमें चौतरफा महल के कमरे हैं। यह भवन करीब पाँच सौ वर्ष का बताया जाता है। फ्रांस से जीतकर लाए हुए बहुत से बहुमूल्य सामान इसमें हैं। इसमें यहाँ के महाराज फ्रेडरिक के निवास के बहुत से घर हैं जो बड़े सुसज्जित हैं। बहुत बारीक नकाशी के बेल-बूटों के लकड़ी के टेबूल बहुत अच्छे हैं। लकड़ी के बहुत महीन कामों की दो उभरी हुई तसवीरें हैं जिनमें फूलों की बारीक पत्तियाँ, चिड़ियों तथा अन्य जानवरों के आकार की बड़ी कारीगरी की है। एक में बिस्तुइया एक भुनगे को पकड़े हुए खूब दिखाई गई है। लकड़ी के बारीक मोर इत्यादि के काम के फर्श जमीन में लगे हैं जिनकी रक्षा के लिये कालीन बिछे हैं। सुनहले तथा रंगीन मीने के काम के अनेक गमले तथा अनेक बर्तन, पंखियाँ इत्यादि हैं। प्रसिद्ध अँगरेज कवि सर वाल्टर स्काट की तथा अन्य बड़े लोगों की मूर्तियाँ बहुत ही अच्छी हैं। बहुरंगे संगमरमर के टेबूल इत्यादि देखने योग्य हैं।

उपाहार-गृह में चीनी के बड़े बहुमूल्य बर्तन तथा खिलौने बहुत बारीक काम के सजे हैं। स्विजरलैंड का चार सौ वर्ष का पुराना किंतु नए के माफिक लकड़ी का बहुत ही बढ़िया टेबुल है। एक स्टाररूम (तारा-गृह) खूब सजा है। उभरे काम की मूर्तियाँ, लता, चिड़ियाँ तथा अन्य जीव-जंतु अच्छे बनाए गए हैं। ऐसे ही एक कांसर्ट (गाने का) कमरा है। शीशमहल, शयन का कमरा, लाल कमरा इत्यादि देखने लायक हैं। मिट्टी के बर्तन बहुत बारीक काम के सजे हैं। ऐसे ही अनेक रंगों के अलग अलग सजे कमरे हैं। सीप के काम का टेबुल बहुत सुंदर है। बहुत बारीक कामों के शीशे के बर्तन, चीनी का महल, लाल संगमर्मर के खंभे, सुवर्ण हाल, हाथीदाँत के बड़े बड़े बर्तन तथा सामान देखने ही योग्य हैं।

ऐतिहासिक संग्रहालय

इसी हाते के दूसरे बहुत बड़े महल में ऐतिहासिक संग्रहालय है जिसमें पहले जर्मन कैसर, जो अब निर्वासित हैं, रहते थे। इसके अनेक बड़े बड़े कमरे सुन्दर बहुमूल्य चित्रों तथा अनेक सामान से सुसज्जित हैं। इसके सामान भी खूब ठाट-बाट के हैं। पुस्तकालय, तारागृह इत्यादि हैं। वह कमरा तथा टेबुल भी देखा जहाँ बैठकर गत महासमर के लिये कैसर ने १ अगस्त सन् १९१४ को युद्ध की आज्ञा दी थी। इस महल में भी अनेक रंगों के अलग अलग कमरों में उन रंगों के ही सामान खूब सजे हैं। महारानी के भी अनेक अलग अलग कमरे खूब सजे हैं। एक कमरे की छत में बारहों राशि के मध्य में कई घोड़ों की गाड़ी पर सूर्य भगवान् की उभरी तसवीर भारतीय ज्योतिष के भावों को प्रदर्शित करती है। भोजन-भवन भी बहुत अच्छा बना है। आसमानी रंग के

संगमर्मर में सफ़ेद धारी के आकार बहुत सुंदर हैं। हरे पत्थरों के गमले तो बहुत ही अच्छे लगे।

डोम चर्च

इसी प्रांत में एक प्रसिद्ध बहुत भारी गिरजाघर है जिसमें कई हजार आदमियों के बैठने का स्थान है। कैसर के बैठने का अलग

बर्लिन का गोलघर

उच्च स्थान बना है। इसके भीतर ९६ कैसरों की कबरें हैं। सैकड़ों फुट ऊँचे चित्तीदार ललाई लिए संगमर्मर के बहुत मोटे मोटे खंभे लगे हैं। ऐसे ही चित्तीदार काले संगमर्मर के चमकीले खंभे लगे हैं। इसकी लागत पचासों लाख की बताई जाती है। इस भवन में यहाँ के प्रसिद्ध धार्मिक सुधारक लूथर की मूर्ति है। मार्टिन लूथर की बहुत बड़ी मूर्ति अन्यत्र भी है। इनके अनुयायियों की भी मूर्तियाँ इनके साथ बनी हैं। इन्होंने बाइबिल के अर्थ का संशोधन कर बड़ी क्रांति फैला दी और रोमन कैथोलिक

ईसाई धर्म को बहुत सुधारा तथा मूर्त्ति-पूजा का खंडन किया जिसके लिये इन्हें बहुत कष्ट भोगना पड़ा।

टियर गार्टन

उंटरडन लिंडन के पूर्वी भाग में देखने योग्य बहुत स्थान हैं। उनको छोड़ अब पश्चिमी भाग का भी थोड़ा दिग्दर्शन करना चाहिए। पश्चिम ओर जाते कई दर का एक बड़ा फाटक है। उसकी पहली सड़क के दोनों ओर बड़े बड़े विद्यालय हैं तथा उनके सामने सड़क के दोनों ओर घास तथा फूलों और फुहारों के बहुत ही मनोहर दृश्य हैं। उसके बाहर जाकर "टियर गार्टन" बहुत विस्तृत है। इसमें अनेक लंबे लंबे वृत्तोंवाली सीधी सड़कें हैं। यह करीब एक वर्गमील से भी अधिक है। यह चार सौ वर्ष का पुराना बताया जाता है। इसके दोनों ओर संगमर्मर की मूर्तियाँ तथा बहुत बड़े बड़े फुहारे बहुत ही शोभायमान हैं। इस विस्तृत उद्यान में हजारों व्यक्ति विश्राम करते और घूमते-फिरते हैं। लंदन का हाइड पार्क तो उजाड़ खुला मैदान है। यह सुंदर वृत्तों और फूलों इत्यादि से बहुत ही मनोहर है।

विक्टरी टावर

इस प्रांत के स्थानों में दो सौ फ़ुट ऊँचा "विक्टरी टावर" धरहरा मुख्य है जिसके शिखर पर विजय-देवी की सुनहरी मूर्ति है और विजयपताका फहरा रही है। २४७ सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर जाने से सारे नगर का अपूर्व दृश्य दिखाई देता है। इसके चारों ओर सुंदर मैदान तथा वाटिका है। इसके बाद पंद्रह सड़कें सीधी और बहुत लंबी चली गई हैं। एक ओर बिस्मार्क की बहुत बड़ी मूर्ति ऊँचे चौतरे पर है। यह यहाँ के बहुत बड़े राजनीतिज्ञ थे। इन्होंने अनेक छोटे छोटे राज्यों को सम्मिलित कर जर्मन-साम्राज्य स्थापित

किया था और इस देश की शक्ति को बहुत बढ़ाया था। इनकी विशाल मूर्ति के पीछे यहाँ का पार्लमेंट भवन है। इसकी दूसरी ओर और प्रसिद्ध पुरुषों की बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ हैं। एक सड़क बहुत लंबी चली गई है जिसकी दोनों पटरियों पर प्रशिया के भूतपूर्व राजाओं की मूर्तियाँ, समय-विभाग के अनुसार उनके सहकारियों के साथ, बनी हैं। मूर्तियों की कुल ३२ मंडलियाँ हैं जो इस लंबी सड़क की दोनों पटरियों को सुशोभित करती हैं।

इनके अतिरिक्त अनेक विद्यालय तथा महल इत्यादि हैं जो कई महीने तक देखने से भी समाप्त नहीं हो सकते। ये सभी बड़े महत्त्व के हैं।

शारीरिक शिक्षा

विश्वविद्यालय, पुस्तकालय तथा ऊँचे दर्जे के सभी विद्यालय, इन दिनों गर्मी की छुट्टी में बंद हैं। इस कारण हम इन्हें नहीं देख सके। किसी किसी बड़े विद्यालय का भवन देख सके। सिनेट हाल इत्यादि देखा। कई स्कूल देखे। यहाँ की शिक्षा का बहुत बड़ा अंग शारीरिक शिक्षा अथवा व्यायाम है। यह लड़के-लड़की, मर्द-औरत सबके लिये सुलभ है। इस शिक्षा के द्वारा, लड़ाई समाप्त होने पर दस वर्ष के भीतर ही, इस देश ने अपना बल बड़ी शीघ्रता से बढ़ा लिया है। सन्धि की शर्तों के अनुसार सेना-संग्रह इत्यादि की तो मनाही हो गई किंतु यहाँ के लोगों ने व्यायाम द्वारा शक्ति-वर्धन किया है। इस प्रकार के दो बहुत बड़े बड़े अखाड़े नगर के बाहर कोसों के घेरे में देखे।

व्यायाम-शिक्षालय

यह बहुत बड़ी व्यायामशाला है। विशाल भवन में शारीरिक शक्ति की जाँच तथा वृद्धि के लिये सभी सामान हैं। एक हृष्ट-पुष्ट

औ इसकी शिक्षा देती है। इसने हम लोगों को अनेक भाँति की कसरतें दिखाई। यहाँ अनेक युवक तथा युवतियाँ कसरत करती
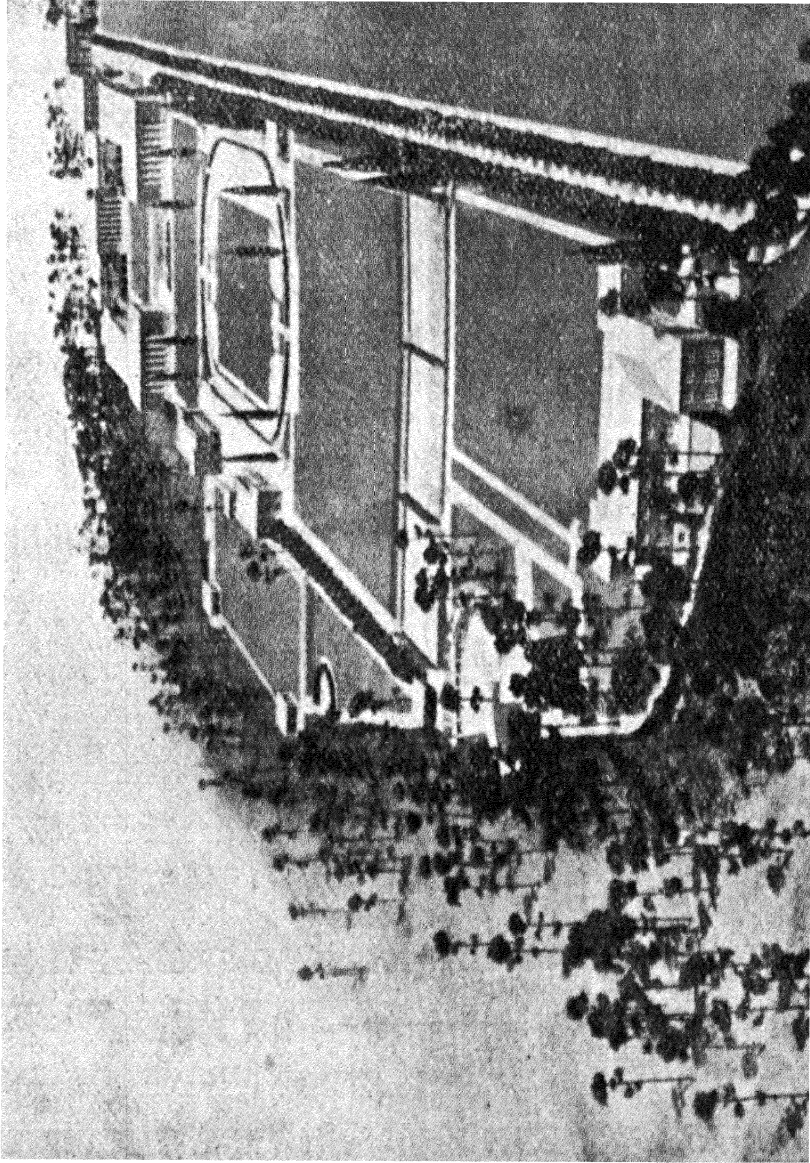
स्पोर्ट फोरम (बर्लिन की प्रधान व्यायाम-शाला)

और सूर्य-किरणों का सेवन करती थीं। विज्ञान की प्रयोगशाला तथा यंत्र भी देखे जिनके द्वारा अंगों की परीक्षा, चिकित्सा इत्यादि होती

है। तैरने का एक बड़ा तालाब ३२८ फुट लंबा और ८६ फुट चौड़ा है। इस कालेज में व्यायामशाला, अनेक कसरतों के सामान-सहित बड़े बड़े कमरे, पुस्तकालय, पाकशाला, भोजनालय, निवास-स्थान इत्यादि कई मंजिलों में हैं। इसके बनाने में
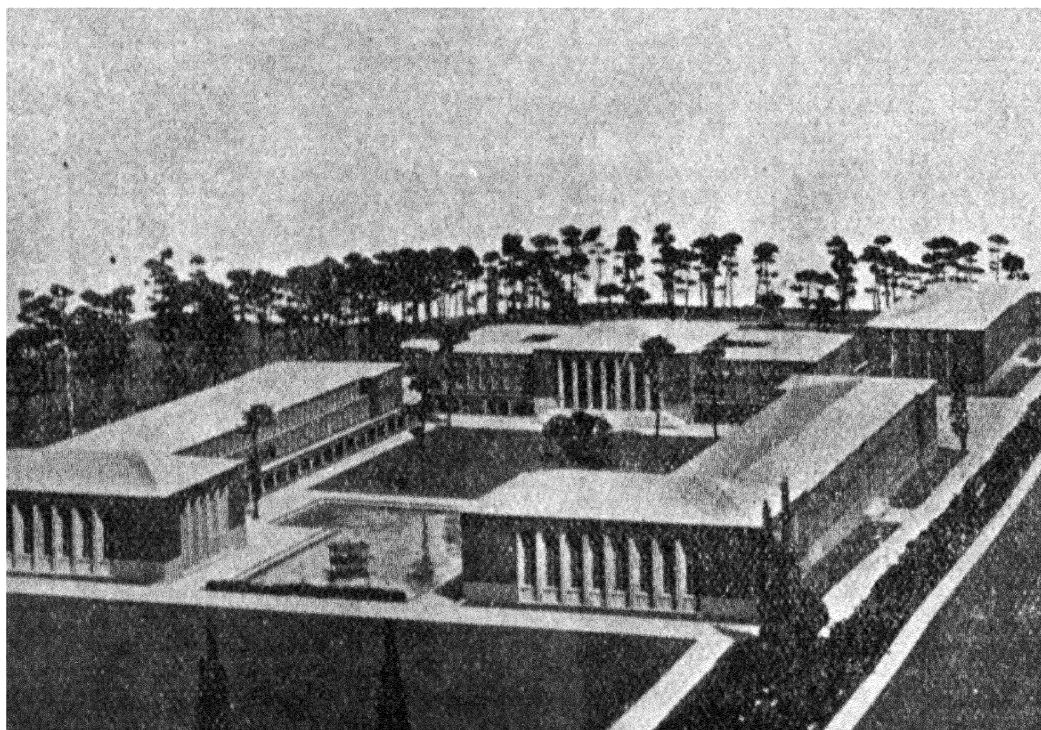
स्पोर्ट फोरम कालेज

पंद्रह लाख रुपया खर्च हुआ है जो चंदा करके जमा किया गया था। एक कमेटी इसका संचालन करती है।

इसके पास ही सरकारी सहायता-प्राप्त दो व्यायाम शालाएँ हैं जो बहुत बड़ी बड़ी हैं। सुरंग के रास्ते से, एक से दूसरी में जाने से, करीब आध मील की दूरी पड़ती है। ऊपर घुड़दौड़ का मैदान

है, इस कारण सुरंग द्वारा रास्ता बनाया गया है। दोनों में बहुत से सामान हैं। हजारों बालक-बालिकाएँ इनमें व्यायाम की
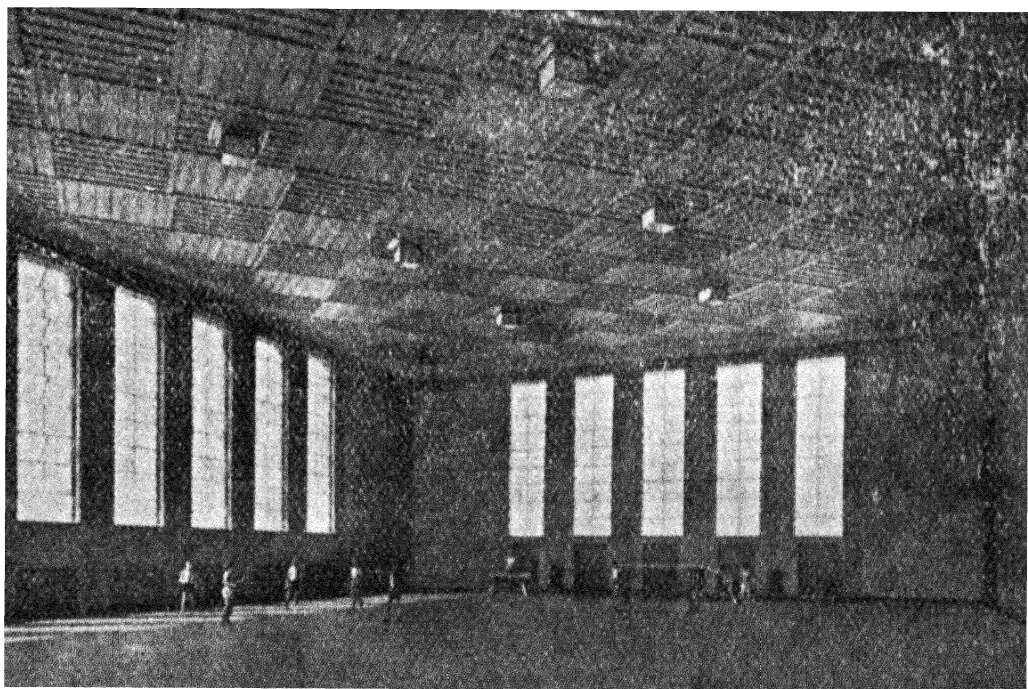
दूसरी व्यायाम-शाला।

शिक्षा प्राप्त करती हैं। नहाने तथा तैरने के बहुत बड़े बड़े कई तालाब बने हैं। दोनों के निवास-स्थान भी अलग अलग बने हैं। कोसों के घेरे में ये सब कार्य होते हैं। आर्थिक अवस्था इस समय शोचनीय होने पर भी ये काम बराबर जारी हैं और इनमें द्रव्य लगाकर इनकी उन्नति की जाती है।

बोडे स्कूल

ारीरिक शिक्षा के कई अखाड़े देश भर में हैं। इनमें से एक बोडे स्कूल बर्लिन और एक म्यूनिक में है। प्रोफेसर बोडे ने

इन्हें चलाया है। इनमें ५५ अध्यापक तथा साढ़े पाँच सौ छात्र हैं। प्यानो बाजे की गत पर लड़कियाँ अनेक रीति से कसरत
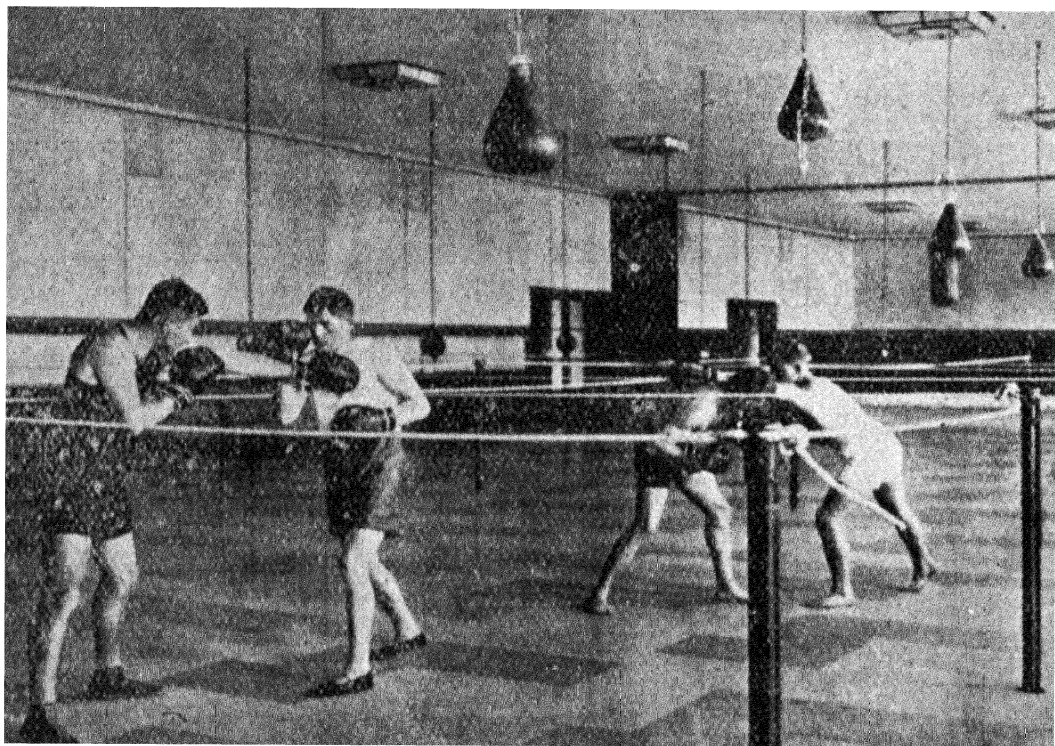
कसरत करने का बड़ा कमरा

करती हैं। हम लोगों ने भी एक दिन रात को इस स्कूल के प्रोफे-सर को प्यानो बजाकर लड़कियों से कसरत कराते देखा। यहाँ इस कसरत को नृत्य कहते हैं। शरीर को तोड़-मरोड़कर अनेक ढंग से ऐसा व्यायाम करते देखा मानो शरीर में हड्डियाँ हैं ही नहीं। ऐसे कई सौ अखाड़े चल रहे हैं।

नग्न व्यायामशाला

यहाँ कई संस्थाएँ ऐसी खुली हैं जहाँ लड़के-लड़कियाँ नग्न होकर एक साथ सूर्य के प्रकाश में व्यायाम करती हैं। ऐसी किसी

काएँ आती हैं जो शिक्षा-संबंधी हैं। विज्ञान के हर अंग की शिक्षा-सामग्री, इतिहास, भूगोल इत्यादि की सामग्री, सब अलग अलग हैं। इसके द्वारा विद्यालयों के संचालकों के आवश्यकतानुसार जानकारी प्राप्त हो सकती है।

किंडर गार्टन स्कूल

कई किंडर गार्टन स्कूल देखे जिनमें छोटे छोटे बच्चे रहते और पढ़ने-लिखने की शिक्षा खेल-कूद द्वारा प्राप्त करते हैं। इनमें स्त्रियाँ शिक्षिका हैं। अनेक बच्चों को उनकी माताएँ स्कूल पहुँचा जाती हैं। दिन भर वे बच्चे यहीं रहते, खाते-खेलते और शिक्षा पाते हैं। इनमें बड़ी बड़ी लड़कियाँ अध्यापिका होने की शिक्षा पाती हैं। इन्हें शिक्षण कला के सभी अंगों की शिक्षा दी जाती है। ऐसी तीन सौ अध्यापिका-विद्यार्थिनें इस स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। इन्हें चित्रकारी, बढ़ईगीरी, सीना-पिरोना, बागबानी, कसरत, खेल, भोजन बनाना, सफाई करना इत्यादि सभी काम सिखाए जाते हैं। बारह बारह बच्चों पर एक एक स्त्री एक एक कमरे में रहती है और हर प्रकार की देख-रेख के साथ शिक्षा देती है, मानो एक एक कुटुंब बना दिया जाता है। कमजोर दिमागवाले बच्चों का अगल ही दर्जा बना दिया गया है। गुड़ियों का सामान हर कमरे में है जिसके उदाहरण द्वारा छोटे बच्चे सब काम सीखते हैं। इनके दर्जे, आसमान साफ रहने पर, वृक्षों के नीचे लगते हैं जहाँ ये पढ़ते-लिखते, चित्र खींचते और खेलते हैं। इस पाठशाला में, कुछ महीनों से लेकर १४ वर्ष तक के चार सौ बालक-बालिकाएँ हैं। ऐसे अनेक स्कूल हर नगर और गाँवों में भी हैं। शिक्षा ६ से १४ वर्ष तक के बच्चों के लिये अनिवार्य है। छोटे बच्चों के ऐसे कई स्कूल देखे जिनमें सभी बच्चे प्रसन्न थे।

सुधारक स्कूल

आचरण-सुधार की कई पाठशालाएँ हैं। इनमें से एक हम लोगों ने देखी। यह स्कूल शहर से दूर है। जंगलों से होकर वहाँ गए। पहले ये बालक जेलखाने की सी ऊँची दीवारों के घेरों के भीतर कैदी की तरह रखे जाते थे, किंतु अब इसमें सुधार किया गया है। इन पर विश्वास किया गया है। ये बहुत अच्छे आचरण के होकर हर प्रकार की शिक्षा पाते हैं। खेती करना, गाय पालना, दूध दुहना तथा गृहस्थी के सभी कामों को सीखते और निपुण होकर काम में लग जाते हैं। इन्हें शारीरिक दंड नहीं दिया जाता। स्वतंत्रता के साथ रखकर समझा-बुझाकर इन्हें ठीक मार्ग पर लाया जाता है। ये गाँव के लड़के हैं इसलिये इन्हें गाँव के ढँग के काम सिखाए जाते हैं। शहर के बालकों के लिये इस ढँग के स्कूल अलग हैं। एक एक छात्रावास में एक एक अध्यापक के सुपुर्द कुछ बालक कर दिए जाते हैं। प्रधान अध्यापक निरीक्षक होता है।

असहाय छात्रावास

जिन बालकों का कोई सहायक नहीं है उनके लिये राज्य की ओर से बोर्डिंग हाउस है। लड़ाई के बाद ये म्युनिसिपैलिटियों को सौंप दिए गए हैं। इनमें अठारह वर्ष की उम्र तक के बालक रखे और पाले जाते हैं। इन्हें इनकी रुचि के अनुसार शिक्षा दी जाती है। १८ वर्ष के होने पर इन्हें किसी न किसी काम में लगा दिया जाता है, जिसके द्वारा ये स्वावलंबी नागरिक होकर जीविका उपार्जन करने लगते हैं। बर्लिन नगर में तथा अन्यत्र ऐसे अनेक छात्रावास हैं जिनके द्वारा निस्सहाय बालकों को अच्छा नागरिक बनाया जाता है।

यहाँ अनेक सिनेमा, थिएटर, गान तथा वाद्य-भवन बहुत सुंदर हैं। रात को हम लोगों ने एक सिनेमा देखा। वह बहुत विशाल भवन कई मंजिल का है। उसकी दीवारें काँच की बनी हैं जिनका रंग बिजली के प्रकाश से बदलता रहता है। ऊपर से सुगंधित जल की बूंदें बरसाकर गर्मी में दर्शकों का दिमाग ठंडा और वायु-मंडल सुगंधित कर दिया जाता है। इसमें विज्ञापन के चित्र भी बहुत अपूर्व दिखाए जाते हैं। प्रसिद्ध हवाई जहाज जेपूलिन की कई तसवीरें दिखाई गईं। एक नीबू के कारखाने के बड़े ही अद्भुत कई चित्र दिखाए गए जिनमें मशीनों द्वारा तथा हाथों से भी मशीनों की फुर्ती के साथ काम हो रहे थे।

संध्या होते ही अनेक भोजनालय बिजली के प्रकाश से जगमगा उठते हैं। इनमें सैकड़ों तथा हजारों मनुष्य अपनी अपनी रुचि तथा व्यय करने की शक्ति के अनुसार जा बैठते हैं। बड़ी रात तक खाते-पीते और गाना-बजाना सुनते रहते हैं। काफी-हौसों में शराब, चाय तो बहुत कम मिलती है पर काफी पीने का सिलसिला जारी रहता है। मित्र-मंडली के साथ इनमें भी लोग दिन भर के परिश्रम के बाद इकट्ठे होकर चित्त-विनोद करते हैं। यहाँ बिना एल्कोहल के अनेक प्रकार के फलों की शराब बिकती है जिससे नशा नहीं होता। माल्ट-काफी एक प्रकार के अनाज से बनाई जाती है। उसमें काफी का दुर्गुण तो नहीं होता किंतु वह वैसे ही स्वाद की पीने की वस्तु होती है। शहर की चहल-पहल देखने से यह कदापि प्रतीत नहीं होता कि जर्मनी दबा हुआ देश है। दस वर्ष के भीतर ही लड़ाई के बाद इन लोगों ने अपूर्व शक्ति संचित कर ली है और उन्नति-पथ पर ये लोग खूब आरूढ़ हैं। व्यापार द्वारा इनको बहुत आय होती है। विज्ञान

में भी ये बहुत से देशों की अपेक्षा बढ़े-चढ़े हैं। कुछ लोगों का कहना है कि अमेरिका इनके विरुद्ध न खड़ा हो जाता तो लड़ाई में ये कदापि न हारते।

बर्लिन से ड्रेसडन

पहले हम लोगों का ध्यान ड्रेसडन की ओर तनिक भी नहीं था। वहाँ का जाना हमारी सूची में भी नहीं था। काशी के म्युनिसिपल बोर्ड ने अपने मंतव्य द्वारा हमारी मंडली भर के लोगों को वहाँ की म्युनिसिपलिटी का कार्य देखने का अनुरोध कर हमें सम्मानित किया था। हम लोगों ने वहाँ की म्युनिसिपलिटी के अध्यक्ष से पत्र-व्यवहार किया। पंडित रामनारायण मिश्र, श्री प्यारेलाल और हम वहाँ गए। बहुत कठिनाई से तीन दिन वहाँ के लिये निकल सके जो उस कार्य के लिये कुछ भी नहीं थे। वाजपेयीजी बर्लिन से रूस की ओर गए।

बर्लिन से ९ सितंबर को तीसरे पहर साढ़े चार बजे चलकर आठ बजे संध्या समय ड्रेसडन पहुँचे। यह नगर बर्लिन तथा कुछ अन्य नगरों से छोटा है, पर है बहुत अच्छा। एल्ब नदी के दोनों किनारों पर बसा है। जनसंख्या छः लाख बारह हज़ार है। नदी धनुषाकार है। हम लोग हाजपिस होटल में, जो बड़े स्टेशन के पास है, चार मार्क रोज पर ठहरे। अपने पहुँचने के समय—तारीख, पता इत्यादि—की सूचना वहाँ की म्युनिसिपलिटी को पहले ही से दे दी थी। दूसरे दिन सबेरे दस बजे एक अँगरेजी बोलनेवाली वृद्धा के साथ घूमने चले। मोटर-बस पर पुराने बाजार के मैदान से होते हुए एल्ब नदी के बीचवाले बड़े पुल के पास थिएटर के मैदान में उतर गए। बहुत बड़े मैदान में कई बड़े बड़े भवन हैं। यह नगर सैक्सनी-राज की राजधानी था।

जर्मनी में प्रजातंत्र राज्य हो जाने से यहाँ के राजा ने भी, जो जर्मन-साम्राज्य के अधीन था, अपना पद त्याग दिया। उसके जितने राज-महल थे वे सब संग्रहालय इत्यादि बना लिए गए हैं।

मैदान में कई बड़े बड़े गिरजाघर हैं। एक ऊँचा धरहरा है जिसके भीतर जाड़े में आग जला दी जाती है तो सुरंग द्वारा आस-पास के सभी महल भीतर भीतर गर्म हो जाते हैं। उसी मैदान में यहाँ सैक्सनी के राजा जौन की बड़ी मूर्ति है। इन्होंने इटाली के प्रसिद्ध कवि दांते की पुस्तक का जर्मन भाषा में अनुवाद किया था। पर अपना नाम प्रकट नहीं किया था। वह अनुवाद जर्मन-साहित्य में उच्च कोटि का माना जाता है।

यहाँ के कई प्रसिद्ध स्थान देखे। उनमें एक जगत्प्रसिद्ध—

चित्र-संग्रहालय

है। एक बहुत बड़े महल में, सैकड़ों कमरों में, पुराने बड़े बड़े प्रसिद्ध हर देश के चित्रकारों के बनाए बहुत ही चित्ताकर्षक चित्रों का संग्रह है जिनकी संख्या कई सहस्र है। इस कला के ज्ञाता ही इसकी बारीकी को भली भाँति समझ सकते हैं।

कई चित्रों के पास चित्रकार बैठे उनकी नकल उतार रहे थे। इनकी संख्या बीसों होगी। चित्रों को देखकर मन मोहित हो गया। बहुत से चित्र ईसामसीह के जीवन-चरित्र तथा बाइबल की कथाओं के संबंध के थे। "वृसीन एम माडेलिना" के चित्र में उसकी सुंदर मूर्ति, उसके कपड़े इत्यादि के रंगों तथा उसके हाथ के नीचे दबी पोथी के पन्नों की उभार बहुत अच्छी तरह चित्रकार ने दिखलाई है। ईसामसीह का जन्म इटाली के प्रसिद्ध चित्रकार कारेग्सियो का पंद्रहवीं शताब्दी का बनाया तथा गुइलियो रोमानो इत्यादि के कई चित्र बहुत अच्छे हैं। देवी मेरी की गोद में

शिशु ईसा का चित्र बहुत ही उत्तम है। कई फलों, फूलों के भी चित्र बहुत अच्छे हैं। एक चित्र में काँच के गिलास में हरी शराब का रंग तथा दूसरे गिलास के टूटे हुए पड़े भाग और खाने की चीजों का बिखरा हुआ भाग बहुत ही उत्तमता से दिखाया है। हर देश के चित्रकारों के चित्र समय-विभाग से अलग अलग दिखाए गए हैं। जर्मनी के चित्रकारों का चित्र-संग्रह भी बहुत अच्छा है। ये चित्र चौदहवीं शताब्दी से संगृहीत हैं।

एक दूसरे भवन में, जो इसके सामने ही है, अर्वाचीन चित्रों का भी संग्रह है। इस संग्रह में भी जल, नाव, पहाड़, चीड़ के वृक्ष, जंगल इत्यादि की बहुत अच्छी तसवीरें हैं। यहाँ बहुतेरे विद्यार्थी चित्रण-कला सीखते हैं। चित्रण-कला पर पुस्तकों का संग्रह भी यहाँ है।

मुद्रा-संग्रहालय

पास ही दूसरे भवन में सिक्कों का संग्रह देखा। संग्रहालय बहुत बड़ा है। सिक्कों में कई तो ढाल की तरह बित्ते बित्ते भर के हैं। प्राय: सभी धातु के सिक्के बहुत अच्छे सजे हैं। संग्रहालय बदला गया है इस कारण सब फिर से सजाए जा रहे हैं। कहा जाता है कि सिक्कों की संख्या डेढ़ लाख के करीब है। इनमें भारतवर्ष के भी बहुत से प्राचीन तथा इस समय के, सभी प्रांतों और भागों के, सिक्के देख पड़े। युद्ध के बाद धनाभाव के कारण यहाँ नए सिक्के नहीं मँगाए जा सके। वहाँ के अध्यक्ष को हमने लखनऊ संग्रहालय का पता बतला दिया जिसमें लेन-देन द्वारा भारतीय सिक्के वहाँ पहुँच सकें।

एल्ब के किनारे

इस नदी के किनारे से हम लोग मनोहर दृश्य देखते चले। यह वही नदी है जो हैम्बर्ग में होती हुई समुद्र में जा मिली है। इसी

नदी के नीचे दोहरा सुरंग हैम्बर्ग में है जिसका वर्णन पहले हो चुका है। यहाँ इस नदी के ऊपर बहुत बड़े बड़े पाँच पुल हैं। इसमें स्टीमरों तथा नावों पर भी लोग सैर करते हैं। जल से करीब पाँच छः हाथ ऊँचाई पर पत्थर की बनी सड़कें हैं जिन पर ट्राम-गाड़ियाँ भी चलती हैं। उससे पचीस हाथ ऊँचा पुश्ता है। इस पर से पैदल का भी रास्ता है और इस पर बहुत से सुंदर भवन, बगीचे इत्यादि बने हैं। कई स्थानों पर वृक्षों की छाया में बैठने के लिये बहुत सी बेंचें रखी हैं जिन पर लोग बैठकर नदी तथा उस पार के दृश्यों को देखते और मनोविनोद करते हैं। कई जगह नीचे उतरने के लिये सीढ़ियाँ और घाट बने हैं जहाँ लोग कूदते, तैरते और नहाते हैं।

कचहरी

यहाँ की कचहरी इन दिनों सबेरे ८ बजे से दिन के १ बजे तक होती है। इसका भवन तीन मंजिल का बहुत अच्छा है। संग-मर्मर पत्थरों का काम अच्छा है। सफेद संगमर्मर के बीच हर मंजिल तथा सीढ़ियों के दोनों ओर मुडेरों में लाल सफेद चित्ती के पत्थरों की रेलिंग बहुत सुंदर देख पड़ती हैं। यहाँ हर न्याय-गृह में तथा अन्यत्र जर्मन भाषा में लिखा है कि भूमि पर मत थूको। थूकने के लिये बर्तन कई जगह रखे हैं। इससे प्रतीत होता है कि यहाँ लोगों को थूकने की बान है। जज की कुर्सी एक सीढ़ी ऊँची भूमि पर रहती है। उनके आगे टेबूल के दोनों ओर पेशकार और टाइप से लिखनेवाले बैठे रहते और काम करते हैं।

पहाड़

ट्राम पर "लाशविटस" गए। बिजली की रेल द्वारा करीब दं सौ फुट ऊँचे पहाड़ पर चढ़े। वहाँ सड़कें, बाग, मकान अच्छे ब

हैं। कोसों की लंबाई-चौड़ाई की बस्ती है। वहाँ एक बड़े होटल की छत पर जाकर सारे नगर का मनोहर दृश्य देखा। वहाँ का साहब नौकर पूछने आया कि क्या लाऊँ। मैंने कहा कि हम लोग मांस, मछली, अंडा, शराब इत्यादि नहीं लेते। शाकाहारी भोजन दूध इत्यादि ले सकते हैं। वह बीच ही में बोल उठा, जी हाँ, मैं जानता हूँ। एक बड़ी पुस्तक लाकर उसने भारतीयों के हस्ताक्षर दिखाए। हम लोगों से भी हस्ताक्षर कराया और बहुत ही सुंदर स्वादिष्ठ शाका-हारी भोजन दिया। उसने गुच्छी, गोभी, गाजर, आलू, मटर, सेम, मक्खन, रोटी, दूध, मिठाई, क्रीम इत्यादि द्वारा हम लोगों को संतुष्ट किया। वहाँ से दूर के कई स्थान दिखाए गए जिनमें श्मशान का स्थान बताकर यह कहा गया कि जर्मनी में आधे से अधिक मुर्दों को लोग जलाने लग गए हैं। इतनी जमीन नहीं है कि कब्रिस्तान बनावें। फिर गड़े मुर्दों के सड़ने से स्वास्थ्य को हानि भी पहुँचती है। वहाँ से उतर थोड़ा आगे जाकर

लटकती रेलगाड़ी (Schwebe)

में सवार होकर दूसरे पहाड़ पर चढ़े। यह पहला ही अनुभव है। लोहे के तिकोने खंभों पर दोनों ओर, बाँह की तरह, गाटर निकले हैं। उन पर लंबे लंबे गाटर जड़े हैं। उन गाटरों पर रेल की पटरी लगी है। पटरी पर पहिया चलता है। उन्हीं पहियों के धुरों से पूरी रेलगाड़ी लटकती रहती है। उसमें हम लोग बैठे। एक बार करीब १०० यात्री बैठते हैं। सीढ़ी की तरह बेंचें लगी हैं। बिजली के बल से ऊपरवाले पहिए चलते हैं और जमीन को न छूकर गाड़ी ऊपर नीचे को दौड़ती और दूसरी ओर से भी इसी तरह जाती-आती है। इस पर ऊपर जाने का प्रति आदमी २० फीनिंग ≈)। और उतरने का आधा लगता है।

ऊपर जाकर उस सुंदर नगर में डाक्टर वेडनर का स्वास्थ्य-भवन (सैनिटेरियम) देखा। यह एक बहुत सुंदर स्वच्छ स्थान है। इसमें साँस और छूतवाले रोगियों को छोड़ अन्य रोगी लिए जाते हैं, तीन बड़े बड़े डाक्टर तथा कई औरत मर्द सहायक काम करते हैं। सैकड़ों रोगियों के लिये स्थान है। २६ से लेकर ४० मार्क तक अर्थात् १८) से २६) तक, जैसा रोग हो, प्रति दिन सब मिलाकर लिया जाता है। रहने के कमरे सब तरह के सुभीतेवाले हैं। गर्म-ठंडे पानी के फुहारे, बिजली और भाप से भिन्न भिन्न प्रकार के स्नान आदि का बड़ा अच्छा प्रबंध है। स्थान ऐसा स्वच्छ और स्वास्थ्यकर है कि यहाँ रहने से ही आधा रोग दूर हो जाता होगा। ऐसे कई स्वास्थ्य-भवन योरप में हैं जहाँ रोगी जाते और अच्छे हो जाते हैं।

स्वामी ज्ञानानंद

वहाँ से लौटकर मद्रास प्रांत निवासी आंध्र देश के रहनेवाले स्वामी ज्ञानानंदजी से मिले। यह कई वर्ष तक हिमालय में रहकर बहुत अध्ययन तथा योगाभ्यास के बाद दो वर्ष से यहाँ हैं। आध्यात्मिक विज्ञान पर इन्होंने बहुत अन्वेषण किया है। भारतवर्ष के संबंध में अच्छे अच्छे व्याख्यानों द्वारा लोगों के भ्रम को यह दूर करते हैं। इन्होंने अँगरेजी में एक "पूर्ण सूत्र" पुस्तिका लिखी है। इसमें ज्ञान की अच्छी अच्छी बातें हैं। यह और भी पुस्तकें तैयार कर रहे हैं। भारतवर्ष में उपयुक्त प्रयोग तथा अन्वेषण-शाला न होने से यह इस कार्य को यहाँ अच्छी तरह कर रहे हैं। फिर यह भारतवर्ष जाकर अपनी पुस्तकों को पूरा करेंगे और छपवावेंगे। यह अभी तीस-बत्तीस वर्ष की उमर के एकांतवासी विद्यानुरागी सज्जन हैं। भारतमाता के अच्छे होनहार पुत्र हैं।

बाहरी दृश्य

स्टेशन से मोटर-बस में, नौ नौ मार्क भाड़ा देकर, साढ़े दस बजे बैठे। शहर का दृश्य दिखाते, जर्मन-भाषा में बताते, बारह बजे के करीब मोटरवाले ने "स्टाल पेन" नगर में हम लोगों को पहुँचाया। रास्ते में सड़कें चिकनी और स्वच्छ थीं, दोतरफा सेब, नाशपाती के लखराँव फल से लदे वृक्षों की शोभा बहुत अच्छी थी। वहाँ पहाड़ी पर एक इसी नाम का बहुत ऊँचा किला है जिसके ऊपरी भाग गिर गए हैं। वहाँ प्राचीन काल की तोप, बंदूक, गोले तथा अन्य हथियारों की प्रदर्शिनी है। किले के तीनों मंजिल अब भी वर्तमान हैं। यह आठ सौ वर्ष का पुराना बताया जाता है। इसके नीचे बंदी-गृह बिलकुल अँधेरा है। केवल एक मुक्के की राह से हवा और प्रकाश आने लायक है। इसमें उस समय के राजा कैदियों को बंद कर दिया करते थे। इसके पीछे जंगल तथा मैदान का अच्छा दृश्य है।

'होइन्स्टीन' गाँव के होटल में पहुँचकर भोजन किया। यहाँ भी एक पुराना बड़ा चौमंजिला किला है जिसमें जेलखाना था। यह युवक-संस्था को दे दिया गया है। यहाँ बाहर के स्कूलों के सैकड़ों युवक-युवतियाँ, अध्यापकों अध्यापिकाओं के साथ, आती हैं। लड़कों तथा लड़कियों के निवास-स्थान अलग अलग हैं। उनमें वे रहते, पढ़ते, खाते-पीते और दो एक दिन दृश्य देखकर चले जाते हैं। भोजन सस्ता एक मार्क ।॥) में मिलता है। ओढ़ना, बिछौना सब यहाँ रहता और मिलता है। ऐसे आनेवालों के लिये यह सुंदर स्वास्थ्यकर स्थान है। ऐसे स्थान तथा ऐसी संस्थाएँ जर्मनी में सैकड़ों हैं। यहाँ का सब सामान दान द्वारा मिला है। बिछाने के लिये लोहे और लकड़ी के पलँग हैं जिन पर पुआल भरे मोटे गद्दे, तकिये, चदरे और दो दो कंबल हैं। ऐसी जगहों में घूमने से

उन्हें नए-नए स्थानों का ऐतिहासिक परिचय, बाहर जाने और रहने का अभ्यास तथा स्वास्थ्य की उन्नति होती है।

वहाँ से साढ़े तीन बजे चले। रास्ते के अच्छे दृश्य देखते दूसरे पहाड़ पर मोटर गई। इसका नाम "बस्तेई" है। यह स्थान एल्ब नदी से कई सौ फुट की ऊँचाई पर है। आस-पास पहाड़ों, जंगलों का दृश्य बहुत ही अच्छा है। यहाँ के होटल में लोगों ने चाय-पानी किया। हम लोगों ने नीबू का शर्बत पिया। दो घंटे तक खूब घूम फिरकर सैर की। जेकोस्लोवाकिया तथा स्विजरलैंड की सरहद को दूर से देखा। पौने छः बजे मोटर चली और सात बजे ड्रेसडन पहुँच गई। रास्ते में कई कारखाने भी बताए गए।

स्नान-गृह

म्युनिसिपलिटी के अध्यक्ष लार्ड मेयर ने कृपा कर तीसरे दिन एक अँगरेजी जाननेवाली सेक्रेटरी देकर वहाँ के स्नानालय तथा स्कूल दिखाने का प्रबंध करा दिया। यह भी उन्होंने कहा कि हमारा मतलब ठीक नहीं समझा गया इससे भ्रम में पड़कर बहुत सी म्युनिसिपलिटियों ने पत्र भेजे हैं। हमने तो जर्मन भाषा जाननेवाले उन विद्यार्थियों के लिये कहा था जो उस भाषा में पुस्तकें पढ़कर समझ सकें और छः महीने तक रहकर काम देखें और समझें। तो भी हमारे पहुँच जाने पर उन्होंने सत्कार किया। हम लोग स्नान-भवन में गए। यहाँ म्युनिसिपलिटी की ओर से बहुत बड़ा भवन बनाकर स्नान का प्रबंध किया गया है। इसमें कई लाख रुपए व्यय हुए होंगे। जनाना और मर्दाना विभाग अलग अलग है। एक व्यक्ति का एक दिन का साठ फिनिंग, छः आने के करीब, लिया जाता है। हम लोग मर्दाना विभाग में गए। सैकड़ों आदमियों को कई जगह अनेक प्रकार से नहाते देखा। कुछ लोग नंगे भी नहा रहे थे।

एक बड़ा तालाब चौकोर स्वच्छ जल से भरा है, जिसके एक भाग में कम और बाकी में गहरा जल है जिसमें लोग कूदते-तैरते थे। ऊपर काँच से पटा है, जिसके द्वारा प्रकाश पूरा पड़ता और ऊपर से फूही बरसाने की भी कल लगी है। चारों ओर कपड़े बदलने के लिये छोटे छोटे कमरे बने हैं। एक बड़े कमरे में लेटकर नहाने लायक बहुत लंबे कठौते (टब) बने हैं जिनमें ठंढा या गर्म जल भरकर नहानेवाला लेटकर नहाता था। एक बड़े कमरे में खूब गर्म भाप भरी थी, उसमें भी लोग वाष्प-स्नान कर रहे थे। एक में कम गर्म भाप में स्नान होता था। एक स्थान पर बिजली के बक्स में कई रंग के काँच द्वारा (जैसा डाक्टर बतावे) उष्ण स्नान होता था। उसमें स्टूल पर बैठाकर गर्दन तक बंद कर दिया जाता है। एक जगह, सूर्य की तीव्र किरण की तरह, बिजली के प्रकाश को पूरे शरीर पर डालकर कई रंग के शीशों द्वारा प्रकाश-स्नान हो रहा था। उसी भवन के दूसरे भाग में हर अंग के लिये अलग बक्स बने हैं, जिनमें जिस अंग में विशेष बिजली की शक्ति या संचालन करना आवश्यक होता है किया जाता है। यह सब डाक्टरों के निरीक्षण में होता है। एक भाग में स्नान के बाद विश्राम करने के लिये ओढ़ने बिछौने सहित पलँग लगे थे। उसी भवन के एक भाग में भोजनालय भी हैं जहाँ स्नान के बाद लोग भोजन करते हैं। इस स्नानागार में कई लाख रुपयों का सालाना आय-व्यय होता है।

खुला स्नान

इसके बाद एक बड़े हाते में गए। वहाँ खुले मैदान में एक बहुत बड़ा लंबा-चौड़ा पक्का तालाब है जिसमें स्वच्छ जल भरा है। बराबर बहता पानी चलता रहता है। १५ मई से पाँच महीने तक

यहाँ नित्य हजारों मर्द, औरत, लड़के, लड़कियाँ स्नान करते हैं। मुख्य अंग ढके रहते हैं। बाहर फुहारे में साबुन लगाकर शरीर धोकर इस तालाब में कूदते-तैरते रहते हैं। कूदने के लिये चार मंजिल तक के ऊँचे मचान बने हैं। जिस ऊँचाई से चाहिए कूदिए। डाक्टरी परीक्षा यहाँ भीतर जाने से पहले हो जाती है कि कोई रोग तो नहीं है। यहाँ नहाने का शुल्क बीस वर्ष से ऊपरवालों का ३० फीनिग, दस से बीस तक का २० फीनिग और छोटे बच्चों का दस फीनिग यानी ।) =) -)॥ समझिए। नहाकर लोग यहाँ अनेक प्रकार के व्यायाम तथा सूर्य के प्रकाश का सेवन करते हैं। खाने-पीने का भी प्रबंध है। एक ओर पर एक बड़े पहलवान की मूर्ति एक भारी गोला लिए बहुत अच्छे गठीले शरीर और पुट्ठों की वैसी ही बनी है जैसी भारतवर्ष के अखाड़ों में बजरंगबली की मूर्ति रखी जाया करती है।

स्कूल तथा छात्राहार-गृह

इसके बाद म्युनिसिपलिटी की दो पाठशालाएँ दिखाई गईं। एक हाई स्कूल, दूसरा प्रारंभिक स्कूल। इनमें सभी विषयों की पढ़ाई होती है। लड़के-लड़कियों के लिये आठ वर्ष तक, यानी छः से चौदह वर्ष की उम्र तक, शिक्षा प्राप्त करना कानूनन अनिवार्य है। प्रारंभिक पाठशालाओं में लड़के लड़कियाँ दोनों पढ़ाए जाते हैं। ऊँचे दर्जे में अलग अलग स्कूल हैं। हाथ के काम की, बढ़ई इत्यादि की भी शिक्षा दी जाती है। एक स्थान में व्यावसायिक शिक्षा के कई स्कूल हैं। उसी के पास एक पँच-मंजिला बड़ा भवन है जहाँ करीब १५०० विद्यार्थी सस्ता भोजन पाते हैं। भोजन खर्च ।॥) रोज लगता है। यह प्रबंध लड़ाई के बाद इसलिये कर दिया गया है कि गरीबी के कारण उनका पढ़ना न छूट

जाय। इसमें म्युनिसिपलिटी तथा व्यवसायी कंपनियाँ सहायता करती हैं। पढ़नेवालों को कुछ छोटा मोटा काम दिला दिया जाता है। भोजनालय में गरीब विद्यार्थियों को बिना मूल्य भोजन दिया जाता है। बाहर के या निराश्रय विद्यार्थियों के रहने का इसमें स्थान है और कुछ ऐसे विद्यार्थी यहाँ रहते भी हैं। व्यय में जो कमी पड़ती है उसे म्युनिसिपलिटी पूरा कर दिया करती है। ऐसी संस्थाएँ इस देश में प्राय: प्रत्येक विद्या-केंद्र में हैं।

ड्रेसडन नगर बहुत ही स्वच्छ है। इसमें और कई संग्रहालय दर्शनीय हैं। शहर के बाहर थोड़ी दूर पर काँच और चीनी के बर्तन का कारखाना है जहाँ बहुत बारीक कारीगरी के काम बनते हैं। शहर में इन बर्तनों की बहुत बड़ी बड़ी दूकानें हैं जहाँ बारीक कारीगरी के कामों के सामान बहुत दाम के मिलते हैं। यहाँ तथा जर्मनी के अन्य स्थानों में भारतवर्ष से विद्यार्थी अच्छी शिक्षा प्राप्त करके, विशेषकर गणित तथा रसायन और भौतिक विज्ञान पढ़कर, आवें तो बहुत अच्छी शिक्षा और काम करने की शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ व्यवसाय के बहुत बड़े बड़े कई केंद्र हैं। कोरी विद्या से काम नहीं चल सकता। जो हाई स्कूल हम लोगों ने देखा वहाँ बाहर जर्मन भाषा में मोटे मोटे अक्षरों में लिखा था "शिक्षा के लिये जीवन और जीवन के लिये शिक्षा है" या "शिक्षा प्राप्त करने के लिये जीना चाहिए और जीने के लिये शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।"

यहाँ बहुत स्थान देखने योग्य हैं। बाजार इत्यादि सुंदर हैं। फुटकर सामान की बिक्री के लिये बहुत बड़ी बड़ी दूकानें ऐसी हैं जहाँ हर प्रकार के सामान मिलते हैं। बगीचे उद्यान

इत्यादि दर्शनीय हैं। समयाभाव से हम लोग बहुत देखने योग्य स्थानों को न देख सके। रात को सामान ठीककर तारीख १३ सितंबर को सबेरे ही चल पड़े।

ड्रेसडन से कोलोन

हम लोगों ने तारीख १३ सितंबर को साढ़े सात बजे की गाड़ी से कोलोन के लिये प्रस्थान किया। रास्ते में जर्मनी का एक अच्छा प्रसिद्ध स्थान लाइपज़िग (६३७००० जन-संख्यावाला) मिला जहाँ गाड़ी बदली। स्टेशन पर ही आध घंटे के करीब ठहरना पड़ा। गत मास वहाँ एक प्रदर्शिनी हुई थी किंतु हम लोग उसमें न जा सके। आज भी समयाभाव से इस स्थान को देखने नहीं गए। स्टेशन पर ही यहाँ के चित्र लिए। यहाँ से दूसरी गाड़ी में चले और पाँच बजे यहाँ के दूसरे प्रसिद्ध नगर फ्रांकफोर्ट (४७५००० जन-संख्यावाला) पहुँचे। यहाँ से फिर गाड़ी बदली और तुरंत ही माइंस जानेवाली गाड़ी में बैठे।

यहाँ से रास्ते के दृश्य कुछ और भी सुंदर देख पड़े। रास्ते भर खेतों में साहबों और मेमों को खेती का काम बड़ी मुस्तैदी से करते देखा। वे कहीं खाद फेंकते थे, कहीं खेत जोतते थे, कहीं घास काटते थे और कहीं गाड़ी, हल इत्यादि चलाते थे। साहबों के बाबा लोग पतलून कोट या कमीज पहने गाय बकरी चराते, घास पर लेटे या छड़ी लिए हाँकते थे। यहाँ गाय को भी जोतते देखा गया। जैसे घोड़ी से काम लिया जाता है वैसे गाय से भी, किंतु कम। बैलों की गाड़ियाँ तो अनेक देखने में आईं। इधर भी घोड़ों ही से अधिक काम लिया जाता है। डेनमार्क की ओर प्रायः सभी लाल रंग की गाएँ थीं। यहाँ की गाएँ काली, कुछ भाग सफ़ेद, रंग-वाली थीं। इधर की मिट्टी बलुई होती है, पर उपजाऊ प्रतीत

होती है। माइंस से हम लोगों को स्टीमर द्वारा राइन नदी में इधर के जगत्प्रसिद्ध दृश्य देखने जाना था। इस कारण हम लोग स्टीमर घाट के पास कार्फेन होटल में, पाँच मार्क प्रति व्यक्ति देकर, रात भर के लिये ठहरे। तीनों आदमियों के लिये एक ही बड़ा कमरा मिल सका जिसमें दो-दो टोंटी की दो अथरियाँ थीं जिससे सुविधा थी। होटल में पहुँचते ही एक झोंक पानी बरस गया। राइन नदी के किनारों के दृश्य प्रसिद्ध हैं जिन्हें देखने के लिये बहुत यात्री आते हैं। इसलिये होटलों इत्यादि में बहुत भीड़ रहती है। जैसे भारत के तीर्थस्थानों में यात्रियों से सभी लोग कुछ विशेष प्राप्ति करते हैं वैसे ही यहाँ का भी हाल पाया गया।

जर्मनी में फ्रांकफोर्ट नाम के दो नगर हैं। एक पूर्व में है जो फ्रांकफोर्ट ही कहलाता है। दूसरा यह "फ्रांकफोर्ट आन माइंस"
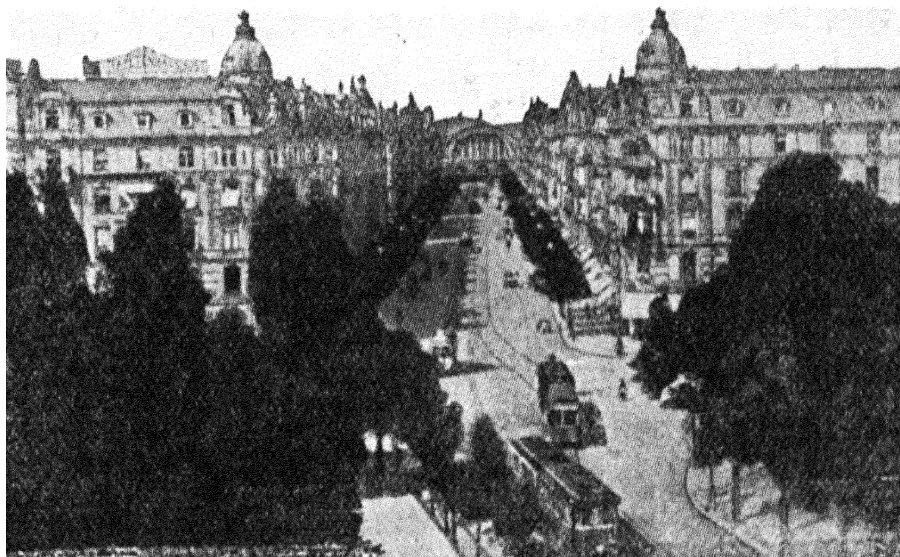
दूसरे फ्रांकफोर्ट का मुख्य बाजार

कहलाता है। यह माइंस नदी के किनारे है। यह नदी माइंस नगर (१०१३०० जन-संख्या) के पास राइन नदी में गिरती है और राइन नदी के किनारों के मनोहर दृश्य इसी माइंस नगर और

कोलोन के मध्य में हैं। इस नदी में १५ मई से १५ सितंबर तक कई स्टीमर आते-जाते हैं जिन पर से यात्री दृश्य देखते हैं। यों तो इस नदी के दोनों किनारों से होते हुए रेलगाड़ियाँ भी दौड़ा करती हैं किंतु दृश्य स्टीमर से ही अच्छे दीख पड़ते हैं। इस साल १५ सितंबर को रविवार पड़ गया। इस कारण हम लोगों को और भी जल्दी करके १४ सितंबर को ही इस नदी में यात्रा करनी पड़ी। माइंस से कोलोन सवा सौ मील के करीब है जिसे स्टीमर प्राय: नौ घंटे में तै करते हैं। दिन भर दोनों ओर से थोड़ी थोड़ी देर बाद अनेक स्टीमर यात्रियों को लिए आते-जाते रहते हैं। माल लदे स्टीमर भी कम नहीं होते। रेलगाड़ियाँ दोनों किनारे प्राय: दो दो तीन तीन मिनट पर आती-जाती रहती हैं। आप कोई मनोहर दृश्य देखने या उसका चित्र लेने लगे और चट रेल-गाड़ी बीच में हरहराती आई और निकल गई। स्टीमर पर नदी के दोनों किनारों के दृश्यों और विशेष स्थानों के अलग अलग रंगीन तथा फोटो के चित्र बिकते हैं। यहाँ के संबंध की पुस्तकें भी बिकती हैं। राइन की भूमि की अनेक कहानियाँ हैं और इन कहानियों की पुस्तकों को लोग बड़े चाव से पढ़ते हैं।

किनारों पर अनेक छोटे-बड़े नगर बसे हैं जिनमें सुंदर मकान, होटल, गिरजाघर, कारखाने इत्यादि हैं। कई जगह ऊँचे पहाड़ों और टीलों पर पुराने किले हैं। दोनों किनारों पर पहाड़ बहुत हैं, जो हरी वनस्पति से पूर्ण और सुंदर दीख पड़ते हैं। उनकी ढालों पर खेती, विशेषकर अंगूर की, होती है।

इधर के लोग प्राय: रोमन कैथलिक ईसाई हैं जिनके गिरजाघर इस नदी के दोनों तटों के नगरों में और पहाड़ों पर बहुत दीख पड़े। कई प्राचीन ऐतिहासिक मूर्तियाँ भी हैं। किनारे के नगरों में पाठ-

शालाओं के बालक-बालिकाएँ खेलते, कसरत करते और देश-प्रेम के भजन गाते रहते हैं। यह वही राइन-तट है जिसका जर्मनी को गर्व है और जिसे लड़ाई के बाद फ्रांस, इँगलैंड तथा बेल्जियमवालों ने अपने कब्जे में कर लिया है। समाचार-पत्रों से मालूम हुआ कि इन तटस्थ नगरों के पीछे अनेक ऐसे स्थान हैं जहाँ और भी अधिक मनोहर दृश्य, जल-प्रपात आदि हैं जिन्हें देखने के लिये लोग तटवाले नगरों में ठहर ठहरकर देखने जाया करते हैं।

इस दिन बदली और कोहरा था। इस कारण हम लोग दूर तक के दृश्य स्पष्ट नहीं देख सकते थे पर जो देख सके वह भी सराहने के योग्य था। भारतवर्ष में ऐसी तथा इससे भी बड़ी अनेक नदियाँ हैं और उनके तट पर भी अनेक छोटे-बड़े नगर बसे हैं जिनके दृश्यों को पाश्चात्य यात्री देखते और सराहते हैं किंतु हमारा देश गरीब होने के कारण उन स्थानों को न तो बना सकता है न प्राकृतिक सौंदर्य की उन्नति कर सकता है। विद्या न होने से इस ओर अनुराग भी नहीं है और सबसे बढ़कर बात तो यह है कि शासन विदेशियों के हाथ में है जिन्हें देश से तथा उसकी उन्नति से सहानुभूति नहीं है। जिस समय देश में अपना शासन था उस समय की कथाएँ तथा कविताएँ उसके सौंदर्य और उसकी छटा के प्रमाण-स्वरूप अब भी वर्तमान हैं।

दोपहर के करीब जहाज का होटलवाला भोजन के लिये पूछ गया। उसे शाकाहारी वस्तुओं का नाम बता दिया गया। डेढ़ बजे हम लोगों को हरा मटर, गाजर, सेम, पालक का साग, आलू, गोभी, सब मक्खन में बनाया हुआ, तथा मक्खन, रोटी और दूध अच्छा मिला। प्रति व्यक्ति चार चार रुपया बैठ गया। इधर की प्रथा यह है कि तैयार सामान में से यदि आप इच्छानुसार चुन-

कर भोजन लें तो कम दाम पड़ता है और यदि विशेष वस्तु बनाने के लिये कहें तो मनमाना दाम ले लेते हैं।

इस नदी के तटवाले नगरों में माइंस १,१०,०००; कावलेंस ६००००; बान एक लाख; कोलोन सात लाख और विस्वाडेन सवा लाख की आबादी के बड़े बड़े नगर हैं। इनसे छोटे तो अनेक हैं। बान और कोलोन विद्या के केंद्र हैं। यहाँ के विश्व-विद्यालय प्रसिद्ध हैं। इस नदी में दोनों ओर से बड़ी छोटी कई नदियाँ गिरी हैं जिनके मुहानों के दृश्य, तथा उन पर बसे नगर भी, सुंदर हैं। इस पर बहुत पुल बने हैं जिनके द्वारा मनुष्य तथा गाड़ियाँ, ट्राम और रेल आर-पार आती जाती हैं। नदी के बीच में कई जगह छोटे-बड़े टापू हैं जिन पर नगर, भवन तथा उद्यान हैं। इनके भी दृश्य अपूर्व हैं। इन नगरों के निवासी छोटी छोटी नौका पर स्वयं डाँड़ा खेते, अकेले या साथियों सहित, विहार करते रहते हैं। नगरों के पास नदी-किनारे, वृक्षों की श्रेणी-सहित, सड़कें बहुत भली मालूम होती हैं। सफाई भी सराहने के योग्य है। इन्हें देखने से काशी के पवित्र घाट और उनकी दुर्दशा तथा उनकी गंदगी का स्मरण हो आता है। इन दृश्यों को देखते साढ़े छः बजे शाम को कोलोन पहुँचे। वहाँ की जगमगाती सड़कों से होते मोटरगाड़ी हम लोगों को हंसारिंग महल्ले के "रिटर" होटल में ले गई। इस होटल को हमारे मित्र स्वामी सत्यदेवजी ने साढ़े चार मार्क रोज प्रति व्यक्ति पर तै कर रखा था, वहीं हम लोग ठहरे। ठहरने के लिये कमरे अलग अलग मिले।

कोलोन (जर्मन कोल्न Koln)

यह नगर राइन नदी के दोनों किनारों पर बसा हुआ सबसे बड़ा और जर्मनी में तृतीय स्थान रखनेवाला है। जन-संख्या

सात लाख चालीस हज़ार है। नगर बहुत प्राचीन है। सन् १८१५ में यह प्रशियन (जर्मन) साम्राज्य के अधिकार में आया। यहाँ की भाषा जर्मन है। यहाँ के तथा इसके निकटस्थ स्थानों के निवासी रोमन कैथलिक मूर्तिपूजक ईसाई हैं। इस नाते से फ्रांस-वालों ने इसे अपनाना चाहा और बहुत उद्योग भी किया पर धार्मिक विचारों की एकता को दूर रखकर भाषा की एकता को इन्होंने बराबर प्रधानता दी। यहाँ के लोग जर्मन भाषा में नीचे लिखे भाव का गीत गाया करते हैं—

जर्मन हमारा गीत है, मद जर्मनी हमने पिया।
राहिन रहेगा जर्मनी, है जर्मनी इसका हिया॥

इन लोगों के इस भाव को देखकर भारतवर्ष के मुसलमानों की अवस्था पर दुःख होता है। वे अपना धार्मिक नाता भारतवर्ष से बाहर रखकर भारतमाता को अपनी माता नहीं समझते या उससे अपना प्रगाढ़ संबंध नहीं रखते। भारत की नदियों और पहाड़ों-संबंधी जो कथाएँ हैं उनके हृदय को गद्गद नहीं कर देतीं, पर राइन का प्रत्येक जर्मन को अभिमान है।

रोमन कैथलिक और प्रोटेस्टेंट ईसाइयों के दो संप्रदाय हैं। दोनों में धार्मिक झगड़ा रहते हुए भी उसे वे देश की उन्नति के लिये एकदम अलग रखकर एक शासन के सूत्र में स्वदेश-प्रेम के साथ बँधे हैं। इसी तरह क्या हिंदू मुसलमान तथा अन्य धर्मावलंबी, भारतीय के नाते से, एक नहीं हो सकते? कुछ स्वार्थी लोग इस धार्मिक भेद को प्रधानता देकर भिन्न मतावलंबियों के बीच झगड़ा बढ़ा दिया करते हैं। पर लोग अब चेत रहे हैं।

यहाँ भी कई अनाजी तथा शाकाहारी भोजनालय हैं, जहाँ जर्मन लोग बड़े प्रेम से निरामिष भोजन करते हैं। हम लोगों ने

वहाँ जा भोजन किया। टोमाटो सूप, कढ़ी, गाजर, मटर, आलू, मक्खन, रोटी, पालक का साग इत्यादि अच्छा मिला। १२ बजे मोटर-बस पर, साढ़े तीन तीन मार्क भाड़ा देकर, नगर-भ्रमण किया।

कोलोन में हम लोग भ्रमण के लिए तय्यार

राइन नदी के किनारे कई कोस तक छायादार वृक्षों के लखराँव में पैदल का रास्ता और इसके किनारे किनारे समानांतर लंबी सीधी सड़क है। राइन नदी के संबंध में स्वामी सत्यदेवजी ने, नदी-किनारे बैठ, गाकर अपनी यह कविता सुनाई—

जस मातु गंगे भावना, हिंदू हृदय में रम रही।
तस जनक राहिन-नाद से, गूँजे सबल जर्मन मही॥
पर्वत वनों के बीच में, लज्जावती राहिन नदी।
बहती बड़ी गंभीर हो, जलयान यानों से लदी॥

है भव्य भवनों की छटा, दोनों किनारे सोहती।
सड़कें सघन पादपमयी, मन प्रेमियों के मोहती॥
काफी-घरों की धूम है, हर दाम के होटल खुले।
हो जेब में पैसा अगर, राहिन-किनारे सुख मिले॥

कोलोन नगर में यों तो पुराने तथा नए कई गिरजाघर हैं किंतु सबसे प्रधान और महत्त्वपूर्ण यहाँ का "डोम" कथीड्रल है। यह ५२० फुट ऊँचा, बहुत विशाल भवन है। इसके बाहर और भीतर मूर्तियाँ, बेल-बूटे, नक्काशी के कटाव के काम पत्थरों में बड़े ही बारीक बने हैं। इसकी लागत दो करोड़ रुपए बताई जाती है। इसके ऊपर के कँगूरों को देखने के लिये सिर उठाने में टोपी नीचे गिर जाती है। यहाँ भी भीतर, रोम की तरह, विचित्र मूर्ति-पूजा होती थी। माला लिए भक्त लोग घुटनों के बल मूर्ति के सामने खड़े जप कर रहे थे। एक कोने में ऊँचे सिंहासन पर देवी मेरी, गोद में शिशु ईसा को लिए, खड़ी हैं। दोनों के सिर पर ताज है। बड़ा चमकीला लबादा पहने हैं। अनेक प्रकार के आभूषण धारण किए हैं। बिजली का प्रकाश उन पर पड़ रहा है। माला जपकर भक्त उठे, उन्होंने मूर्ति का चरण छूकर चूमा और द्रव्य चढ़ाया।

मोटरवाले ने अनेक प्राचीन भवन, नया और पुराना बाजार, अद्भुत संग्रहालय, एक्सेलसियर होटल, बड़े बड़े बंकघर, कानून पेशावालों और डाक्टरों का महल्ला, रोमन साम्राज्य के समय का पुराना नगर, प्राचीनतम मकान, टौनहाल, प्राचीन किले, पुराने सम्राटों की कई स्मारक-रूप मूर्तियाँ, हिंडनबर्ग पार्क (उद्यान), कला विद्यालय जहाँ से सात ओर को लंबी लंबी सड़कें जाती हैं, आपरा हाउस, एक उद्यान जिसमें सुंदर फूलों के बेल-बूटों सहित हरी घास के बगीचे लगे

हैं और जल का बहुत ऊँचा फुहारा कुंड में छूटता है, सोलह मंजिलों का करीब दो सौ फुट ऊँचा एक भवन तथा अन्य बड़े बड़े स्थान दिखाए और बताए। यहाँ का विश्वविद्यालय दिखाया जिसमें छः हजार विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। ड्रेसडन की तरह यहाँ भी स्नान के बड़े बड़े स्थान हैं।

प्रदर्शिनी

एक बड़े पुल से टहलते हुए तीसरे पहर उस पार गए। यह लोहे का बहुत बड़ा चौड़ा पुल है। पैदल के रास्ते अलग, ट्रामगाड़ियों के लिये अलग, रेलगाड़ियों के लिये छः जोड़ सड़कें अलग, बनी हैं। उस पार जाकर प्रदर्शिनी के हाते में गए। प्रदर्शिनी के लिये यहाँ बहुत बड़ा भवन अलग घेरे में बना है जिसमें टिकट लेकर भीतर जाना होता है। इसके एक कोने पर बहुत ऊँचा ईंटों का धरहरा बना है जिस पर चढ़कर नगर का दृश्य दिखाई पड़ता है। उसके आगे एक और बहुत ही विस्तृत उद्यान है। इसमें भी टिकट लेकर जाना होता है। यहाँ अनेक प्रकार के खेल, तमाशे, भोजनालय, बाजा गान इत्यादि चित्त-विनोद के वैसे ही ढंग के सामान हैं जैसे कोपनहेगन के टिवोली उद्यान में देखे थे, किंतु कई बातें कम हैं। यहाँ की बिजली की रेलगाड़ी कई मंजिल ऊँचे कठहरे तथा रेलिंग पर नीचे ऊपर झटके से दौड़ती है। यहाँ भी निशानेबाजी आदि के जुए बहुत होते थे किंतु टिवोली से कम। एक बहुत बड़े गोल कुंड के चारों ओर से जल के फुहारे, भीतर केंद्र की ओर हजारों धाराओं से, छूटते थे और उसके पास चारों ओर घास तथा फूलों की शोभा बहुत मनोहर थी। यहाँ चित्त-विनोद करने के लिये बड़ी भीड़ एकत्र थी। रविवार होने के कारण बहुत लोग थे।

बाजार

यहाँ के नए तथा पुराने बाजार में बहुत भीड़ रहती है। दोनों में बड़े बड़े मैदान हैं जिसके चारों ओर दूकानें हैं। दूसरी सड़कों पर भी अनेक सुसज्जित खूब बड़ी बड़ी दूकानें हैं। अन्य बड़े बड़े नगरों की भाँति यहाँ भी फुटकर बिक्री की बड़ी दूकानें हैं। एक दूकान टीटूस की बहुत बड़ी, कई मंजिल ऊँची दौड़ती सीढ़ियों तथा बिजली के पिंजड़ों द्वारा चढ़ने के साधनों सहित है। कहा जाता है कि इसमें चार हजार आदमी, जिनमें बहुत सी स्त्रियाँ देख पड़ीं, काम करते हैं। इसमें हम लोग गए तो थे कोई मामूली सी वस्तु लेने, किंतु जा पड़ने पर कई वस्तुएँ लेनी पड़ीं।

अन्य देशों की यात्रा छूट गई

हम लोगों की इच्छा थी कि बेल्जियम तथा हालैंड भी देखें किंतु समय बहुत कम रह गया और जहाज में स्थान ठीक कर भाड़ा इत्यादि दे दिया गया था। इस कारण फिर पश्चिम की ओर न जा सके और उन देशों को लंदन नगर से लौटते समय न देख सके। लंदन में रहते आयर्लैंड और स्काटलैंड न जा सके और वहाँ से लौटती बार इन दो देशों को नहीं देखते आए। जब इटली में हम लोग उतरे थे तभी वीनिस का प्राचीन नगर देखते आना था। उसे छोड़ आए। पीछे विएना होकर वहाँ जाना पड़ा। वहाँ से सिकंदरिया होकर मिस्र देश गए। यात्रियों को चाहिए कि यूरोप आती बार मिस्र देखते आवें और जाती बार पूर्वी यूरोप देखते जायँ, नहीं तो समय व्यर्थ जायगा और व्यय अधिक पड़ेगा या एक भाग देखना छूट जायगा। अस्तु, अब हम लोग कोलोन से पूर्व-दक्षिण की ओर

लौट पड़े। यहाँ से चलकर बौन नगर में एक दिन के वास्ते उतर गए।

बौन (Bonn) नगर

यह छोटा सा अच्छा स्वच्छ नगर है। कोलोन से चलकर यहाँ एक दिन ठहर गए। यहाँ का गिरजाघर तथा प्रसिद्ध विश्वविद्यालय देखा। इसमें दो सहस्र विद्यार्थी अनेक विषय पढ़ते हैं। धर्मशास्त्र (थियोलोजी) की प्रधानता है। पुस्तकालय भी बहुत बड़ा है। विद्यार्थियों के रहने के लिये अनेक बोर्डिंग हाउस, होटल की तरह, हैं जहाँ सस्ते दाम में रहने का प्रबंध है अर्थात् साढ़े तीन चार रुपए रोज में काम चल जाता है। यह नगर भी बड़े नगरों के नमूने का, एक लाख जन-संख्यावाला, राइन नदी के किनारे बसा है। उद्यान तथा नदी-तट के वृक्षों की छायावाली सड़कें बहुत सुंदर हैं। यहाँ एक कानून की डाक्टरी उपाधि प्राप्त तथा धर्मशास्त्र के विद्यार्थी डाक्टर वर्नर वेकर मिले जिनके द्वारा हम लोगों को बड़ी सुविधा हुई। यह सज्जन अँगरेजी भी बोलते हैं। इनके जीवन का उद्देश्य रुपया कमाना नहीं है किंतु विद्योपार्जन ही है। इनके साथ हम लोग यहाँ से थोड़ी दूर पर रेल तथा मोटर-बस द्वारा १७ सितंबर को

मेरिया लाख मठ (Maria Laach)

देखने गए। यह पहाड़ पर, झील के किनारे, एक सघन वृक्षावली में प्राचीन विहार (मठ) है। इसका भवन तथा उद्यान प्राचीन काल के तपस्या के मठों के ढंग का है। इसमें डेढ़ सौ के करीब ईसाई संन्यासी रहते हैं जिन्हें मांक कहते हैं। ये रोमन कैथलिक संप्रदाय के हैं जिसका इधर बहुत आधिपत्य है। इसके गिरजाघर में प्रातःकाल साढ़े चार, साढ़े सात और नौ बजे, ढाई बजे दिन तथा संध्या समय

आध आध घंटे ये साधु, तीस-बत्तीस की संख्या में, एकत्र होकर अंगन्यास, प्रार्थना, स्तुति, भजन और ईसामसीह की मूर्ति को

मेरिया लाख मठ

प्रणाम करते हैं जिसकी कई मुद्राएँ होती हैं। ये विवाह नहीं करते। यहीं रहते और अध्ययन करते हैं। यहाँ के पुस्तकालय में साठ
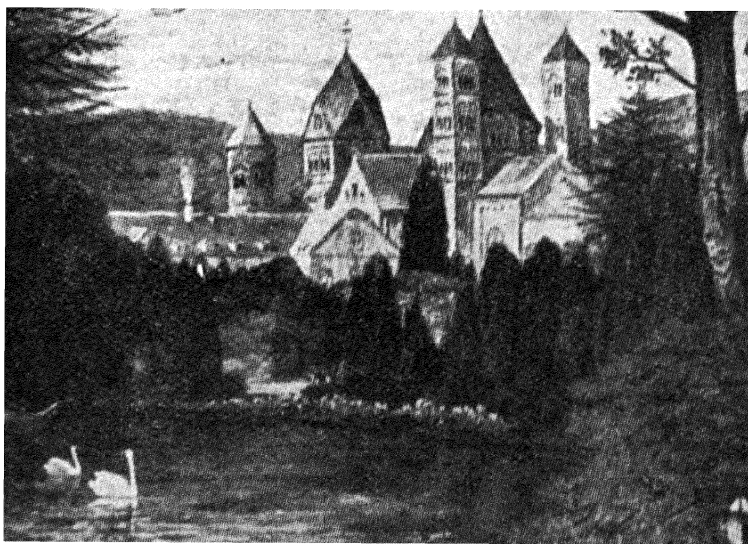
मेरिया लाख में झील आदि का दृश्य

हजार पुस्तकें हैं। बाइबूल की अनेक भाषाओं की बहुत

प्राचीन प्रतियों का संग्रह है, स्थान बहुत ही रमणीक है, ताल के किनारे पहाड़ सघन वृक्षों के साथ हैं और जल तथा पहाड़ के बीच सड़कें हैं। यहाँ कई अच्छे अच्छे होटल हैं। हम लोगों को शाकाहारी भोजन बहुत अच्छा मिला। ढाई बजेवाली पूजा को हम लोगों ने देखा और इन साधुओं के निवास-स्थान तथा इस मठ के भीतरी भाग भी देखे। एक साधु से झील के किनारे बैठकर, प्राय: एक घंटा, धार्मिक विषयों पर बातें हुईं।

विर्उर्सबर्ग (Wurzbur.)

बोन से चलकर विउर्सबर्ग नगर में उतर गए। यह माइन नदी के किनारे एक छोटा सा अच्छा नगर है। यहाँ की बस्ती करीब एक लाख की है। पहाड़ों का दृश्य यहाँ का बहुत अच्छा है। यहाँ कीनिंग बावर कंपनी का, छापे की मशीन बनाने का, बड़ा कारखाना देखा। प्रयाग के "लीडर" छापाखाने ने इसी कारखाने से रोटरी प्रेस, जिसमें घंटे भर में पचीस-तीस हजार अखबार छपकर तह लगकर तैयार हो जाते हैं, मोल लिया है। इनके यहाँ से अमरीका इत्यादि के लिये भी ऐसी मशीनें बनकर जाती हैं। इस नगर में पोप का बड़ा महत्त्व था। उनका प्राचीन महल, उद्यानों-सहित, बहुत बड़ा है जो अब संग्रहालय कर दिया गया है। यहाँ पचीसों गिरजाघर हैं जिनमें बीस के करीब रोमन कैथलिक हैं। यहाँ का प्राचीन विश्वविद्यालय-भवन पुस्तकालय कर दिया गया है जिसकी पुस्तकों की संख्या करीब एक लाख के बताई जाती है। नवीन विश्वविद्यालय-भवन भी बड़ा है जिसमें दो हजार विद्यार्थी पढ़ते हैं, अनेक विषयों का अध्ययन होता है। कानून, धर्मशास्त्र, फिलासोफी इत्यादि की

प्रधानता है। यहाँ संस्कृत के एक विद्वान् हैं। उनके बीमार होने के कारण हम उनसे मिल न सके। यहाँ से पैंतीस मील की दूरी पर

किस्सिंगेन स्पा (Kissingen)

है। वहाँ मोटर द्वारा १९ सितंबर को गए। लोग रेलों द्वारा भी जाते हैं। यहाँ जल के विचित्र सोते हैं। जल सेवन करने को यहाँ अनेक रोगी आते हैं। यह स्थान बहुत ही रमणीक है। जल के सोतों को बहुत सुंदर रूप देकर पानी पिलाने का प्रबंध किया गया है। उसके निकट बड़े अच्छे भवन इत्यादि उद्यानों सहित बने हैं। लिवर, गुर्दा तथा पाचन के विकारों के लिये यहाँ तीन प्रकार के सोते हैं। पहाड़ी स्थान है। एक छोटी नदी बहती है। जल का स्वाद भिन्न भिन्न है। काँच के गिलास में जल दस फीनिंग -)। दाम पर मिलता है। एक स्थान पर सोडावाटर की तरह के स्वाद का पानी है। वहाँ काँच का बड़ा भारी भवन बना है जिसके चारों ओर इस जल की टोटियाँ लगी हैं। वहाँ के साहब चपरासी गिलास साफ करके पानी देते और पैसे लेते हैं। दूसरी ओर लोहे का अंश मिला हुआ फीका जल है। वहाँ भी ऐसा ही प्रबंध है।

अनेक होटल तथा भोजनालय और बाजार हैं। दृश्य बहुत ही अनुपम है, नगर बहुत स्वच्छ सुंदर है। रहन-सहन मँहगा है। हमारे सामने कई सौ आदमी जल ले लेकर पीते और घूमते थे। यहाँ का महत्त्व यों तो बारहों महीना है किंतु पहली मई से अगस्त के अन्त तक जल सेवन करने के लिये तीस-पैंतीस हजार रोगी यहाँ आते और रहते हैं। स्नान के भी भवन बहुत अच्छे अच्छे बने हैं। भोजनालयों में खूब भीड़ लगी रहती है। इस प्रकार के, जल-चिकित्सा के, अनेक स्थान जर्मनी और इसके निकटस्थ

देशों में प्रसिद्ध हैं। यहाँ मनोविनोद के लिये बाजा, गाना, थिएटर, खेल इत्यादि के भी अनेक साधन हैं। चिकित्सकों के निरीक्षण में पीने और नहाने के जल का विश्लेषण तथा प्रबंध होता है। यहाँ के होटल मँहगे जरूर हैं किंतु स्थान के महत्त्व को देखते इनका मूल्य अन्य नगरों की अपेक्षा कम है।

दक्षिण जर्मनी

विउर्सबर्ग से २० सितंबर को चलकर आग्सबर्ग (Augsburg) गए। यहाँ की एक महिला, जो लड़कियों की उच्च पाठशाला की अध्यापिका हैं, हम को जिनीवा सभा में मिली थीं। इन्होंने अपना स्कूल देखने के लिये आमंत्रित किया था। इसी निमंत्रण पर हम लोग वहाँ गए।

यह सुंदर नगर (Lech) लेख नदी के किनारे बसा है। जन-संख्या करीब पौने दो लाख है। रास्ते में गायों द्वारा हल तथा गाड़ी चलाते, गाय के साथ घोड़ा जोते हल चलाते देखा। इतना परि-श्रम लिए जाने पर भी यहाँ की गाएँ प्रसन्न देख पड़ती थीं।

यहाँ हम लोग एक बजे पहुँचे और "ड्रेई मोहरेन" होटल में ठहरे। यह यहाँ का सर्वोच्च और जर्मनी के बहुत बड़े होटलों में से एक है। यह बहुत बड़े भवन में है। सबसे ऊपर चौथे मंजिल में, पाँच मार्क रोज के हिसाब से, अलग अलग कमरा एक एक के लिये मिला जिनमें बहते जल की टोटियाँ थीं। नहाने का प्रति दिन एक आदमी का दो मार्क यानी डेढ़ रुपया लगता था। विउर्सबर्ग के होटलवाले ने भी इसी हिसाब से दाम लिया था। वहाँ समझा गया था कि भाड़े में नहाना भी शामिल है इसलिये यहाँ पहले से पूछ लिया गया। हम कमरे की अथरी में ही गर्म तथा ठंढे पानी से स्नान कर लिया करते थे।

उक्त महिला ने अपने यहाँ स्वादिष्ट निरामिष भोजन कराया। वे स्वयं भी शाकाहारी हैं। उनकी वृद्धा माता तथा उन्होंने भारतवर्ष की रहन-सहन, खान-पान आदि के संबंध में कई प्रश्न किए जिनके उत्तर सुनकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। यहाँ की कन्या पाठशाला, एक उद्यान में, चार मंजिल के बड़े भवन में, है जिसमें उच्च श्रेणी (हाई स्कूल) तक की शिक्षा दी जाती है। पाँच सौ बालिकाएँ पढ़ती हैं। २१ सितम्बर को पानी बरसते हुए भी सब दौड़ी हुई आईं, ठीक समय पर सबेरे ८ बजे से कुछ मिनट पहले, पहुँच गईं और अपने अपने दर्जे में जा पढ़ने लगीं। हम लोगों को वह महिला अपने दर्जे में ले गईं और उन्होंने अँगरेजी की पढ़ाई दिखलाई। पंडित रामनारायण मिश्र ने दर्जे में अहिंसा के संबंध में भारतवर्ष की कुछ बातें बताईं।

यहाँ एक बहुत रमणीक जंगल है जो पाँच छः मील के घेरे में है। इसका नाम है साइ बुटिश वाल्ड (Sei beutisch wald) अर्थात् सात बेंचों का जंगल। उसके भीतर कई सुंदर सड़कें सीधी चली गई हैं। एक नदी बहती हुई उसमें से जाती है जिससे सारे नगर को जल पहुँचाया जाता है। इसी जंगल में नदी के जल-कल के पास बहुत बड़ा मैदान है। वहाँ सुंदर भवन में भोजनालय है। इस नगर में कई कल-कारखाने तथा देखने-योग्य स्थान हैं जो सुंदर और प्राचीन हैं। यहाँ का टाउनहाल, गिरजाघर इत्यादि दर्शनीय हैं। वहाँ से २२ सितंबर को एक बजे दिन की गाड़ी से चलकर पाँच बजे संध्या समय हम लोग बायरों पहुँचे।

बायरों (Beurou)

यह रोमन कैथलिक संप्रदाय का प्रधान मठ है। उसी में हम लोग अतिथि होकर ठहरे। यह बिहार प्राय: एक हजार वर्ष

पुराना है। इस समय के विशाल भवन में यह तीन सौ वर्ष से है। इसमें ढाई सौ पादरी रहते हैं। इसमें स्त्रियाँ नहीं जाने पातीं। यहाँ के पादरियों ने अपना घरबार सब त्याग दिया है और मठ को अपना सर्वस्व मान लिया है। ये विवाह नहीं करते, पढ़ते-पढ़ाते और मठ का ही काम करते हैं। यह मठ एक छोटा सा नगर मालूम होता है। पादरियों की आवश्यकता की सब चीजें यहीं हैं। इसमें साठ हजार से अधिक पुस्तकों का पुस्तकालय है जिसमें भगवद्गीता, वेदों का अनुवाद और भारतवर्ष संबंधी अनेक संस्कृत पुस्तकें भी हैं।
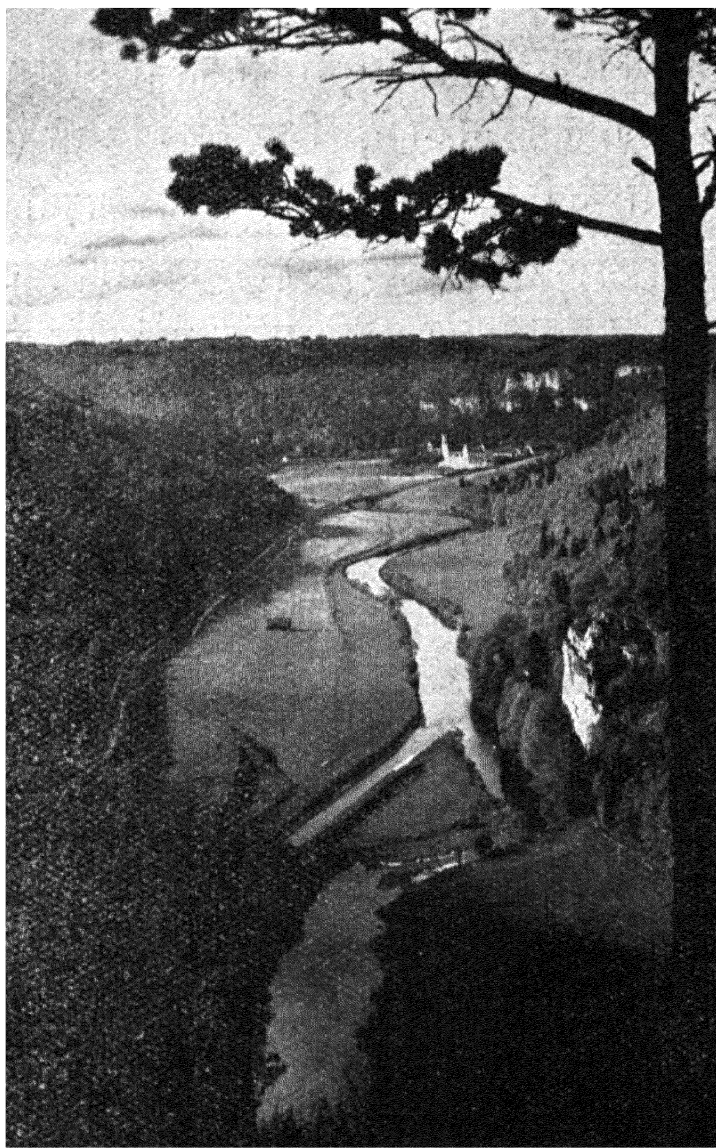
बायरा

बढ़ई का, लोहार का, मूर्तियों तथा चित्रों पर सोने का पानी चढ़ाने, दर्जी, चित्रकारी, पुस्तकें छापने, जिल्द बाँधने, फोटो उतारने और आटा

पीसने का तथा मूर्तियाँ, जूता, दूध, मक्खन, भोजन इत्यादि बनाने का श्रौर खेती-बारी का सब काम इस में होता है। पहाड़ श्रौर जंगल के
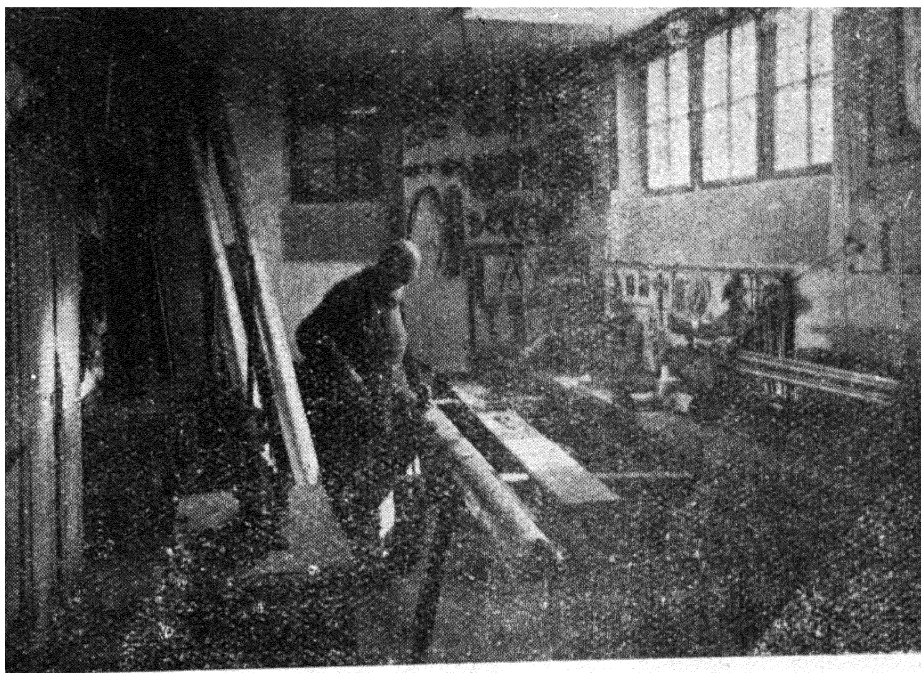
बायरों का कला विभाग

बायरों का कृषि विभाग

निकट डैन्यूब नदी के किनारे यह आठ मंजिल का रमणीक
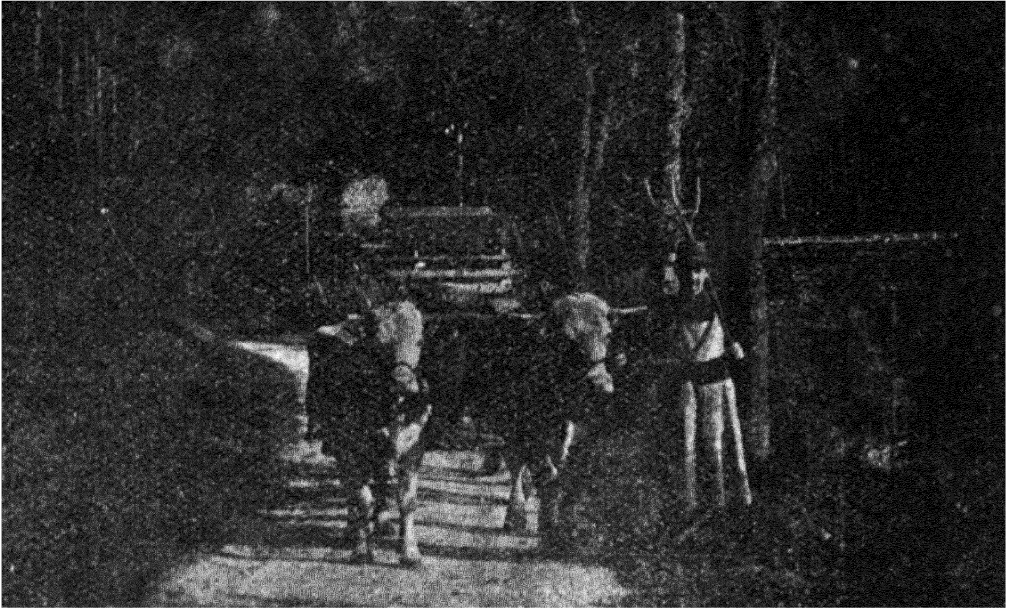
कृषिविभाग का दूसरा दृश्य

विस्तृत मठ है। इसके उद्यानों में सेब, नाशपाती, अंगूर बहुत

बायरों का गिर्जाघर

होते हैं। इसके गिरजाघर में प्रभु ईसामसीह तथा उनके अनुयायी

संतों की मूर्तियों की पूजा होती है। पादरी लोग अंगन्यास करते, जल छिड़कते और प्रार्थना स्तुति करते हैं और मोमबत्ती जलाकर मूर्तियों के सामने अनेक मुद्राओं से प्रणाम करते और पूजा किया करते हैं। इनकी प्रार्थना इत्यादि लैटिन भाषा में तथा कथाएँ जर्मन में होती हैं। मठ के अधीन विस्तृत भूमि है जिसमें खेती-बारी होती है। भवन बहुत स्वच्छ है। सब विभाग भिन्न भिन्न पादरियों के, जो स्वयं काम करते हैं, निरीक्षण में हैं।

बायरों से दो-ढाई मील पर जंगल में, सड़क के किनारे, एक छोटा सा गिरजाघर संट मारस चापेल है जो चित्रकारी के लिये प्रसिद्ध है। यहीं के एक साधु ने ये चित्र बनाए थे। यहाँ पीने के जल की एक टोंटी सदा बहा करती है जिससे यात्रियों को सुविधा होती है। इस स्थान पर हम लोगों के साथ वहाँ के एक पादरी श्री P. Oddo थे जो उर्टनबर्ग राज्य को त्यागकर इस आश्रम में प्रविष्ट हो गए हैं और जिनके द्वारा हमें बहुत सहायता मिली, और श्रीमती आइडा काउडेन हावे भी थीं जिन्होंने हमें इस स्थान को देखने के लिये प्रबंध कर दिया था और जो फिलासोफी अध्ययन करती हैं। ये साधु मांस, मदिरा खाते-पीते हैं। वियर (अनाज से बनाई शराब) पीने का रिवाज अधिक है।

इन लोगों से निरामिष भोजन, भारतीय धर्म, रहन-सहन, संस्कृति आदि पर अच्छी तरह बातचीत हुई जिसका इन पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। हम लोगों के लिये बहुत अच्छे निरामिष भोजन का विशेष प्रबन्ध किया गया था। इनकी गोशाला में बहुत अच्छी अच्छी साठ गाएँ हैं। प्रत्येक प्राय: दस पंद्रह सेर दूध नित्य देने-वाली है और वर्ष में नौ दस महीने तक दुधार रहती है। बच्चा देने के बाद दो तीन महीने में ही गर्भवती हो जाती हैं और बच्चा

देने से महीने डेढ़ महीने पहले तक दूध दिया करती हैं। यहाँ तसवीरें, मूर्तियाँ, धर्म-पुस्तकें इत्यादि बनाकर बेचने का व्यापार भी होता है। यहाँ के साधुओं में कई साइंस जानने-वाले हैं, जिन्होंने अनेक आविष्कार किए हैं। इन का बिजली की रोशनी तथा जलकल का अपना ही प्रबंध है। इन सज्जनों ने बड़े ही सत्कार तथा श्रद्धा से हम भारतीयों का आतिथ्य किया और भारतवर्ष के संबंध में बहुत उच्च भाव प्रकट किए।

म्यूनिक (जर्मन मुंशेन)

२४ सितंबर को दोपहर के समय बायरों से चलकर संध्या के छः बजे म्यूनिक पहुँचे। बड़े स्टेशन के पास ही कैसर हाफ होटल में चौथे मंजिल पर पाँच मार्क रोज भाड़े पर अलग अलग कमरे लेकर ठहर गए। कमरों में बहते पानी की टोटियाँ थीं।

यह नगर भी बहुत सुंदर और स्वच्छ है। जन-संख्या सात लाख है। यह जर्मनी के बवेरिया सूबे का प्रधान नगर है और कारीगरी के लिये प्रसिद्ध है। इसार नदी के किनारों पर बसा है। सड़कें बहुत सीधी, चौड़ी और लंबी हैं—अनेक मैदान, वृक्ष, वाटिका और बड़े बड़े फुहारे इसके सौंदर्य को कई गुना बढ़ा देते हैं। साहब लोग सड़कों और पटरियों को खूब साफ करते रहते हैं। बाँस में ऊपर की ओर खुर्पी और नीचे झाऊ का झाड़ू रहता है। मोटरों द्वारा सड़कें छिड़की जाती हैं।

टाउनहाल बहुत सुन्दर है। इस नगर में विविध विषयों के लिये बड़े बड़े विद्यालय तथा एक विश्वविद्यालय है। ग्रीष्मावकाश के कारण विद्यालय बंद थे तो भी विशाल भवन देखा। हैदराबाद के निजाम सरकार ने अपने इंजीनियर श्रीराजू को यहाँ "जलवल" विद्या

(हाइड्रालिक) सीखने के लिये भेजा है। उनकी सहायता से हम लोगों ने उनका तथा साइंस के अन्य भिन्न भिन्न विद्यालय देखे। यहाँ प्राय: पाँच हजार विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं जिनमें कुछ भारतीय भी हैं। मालूम हुआ कि यहाँ के विज्ञानवेत्ता भारत-

म्यूनिक
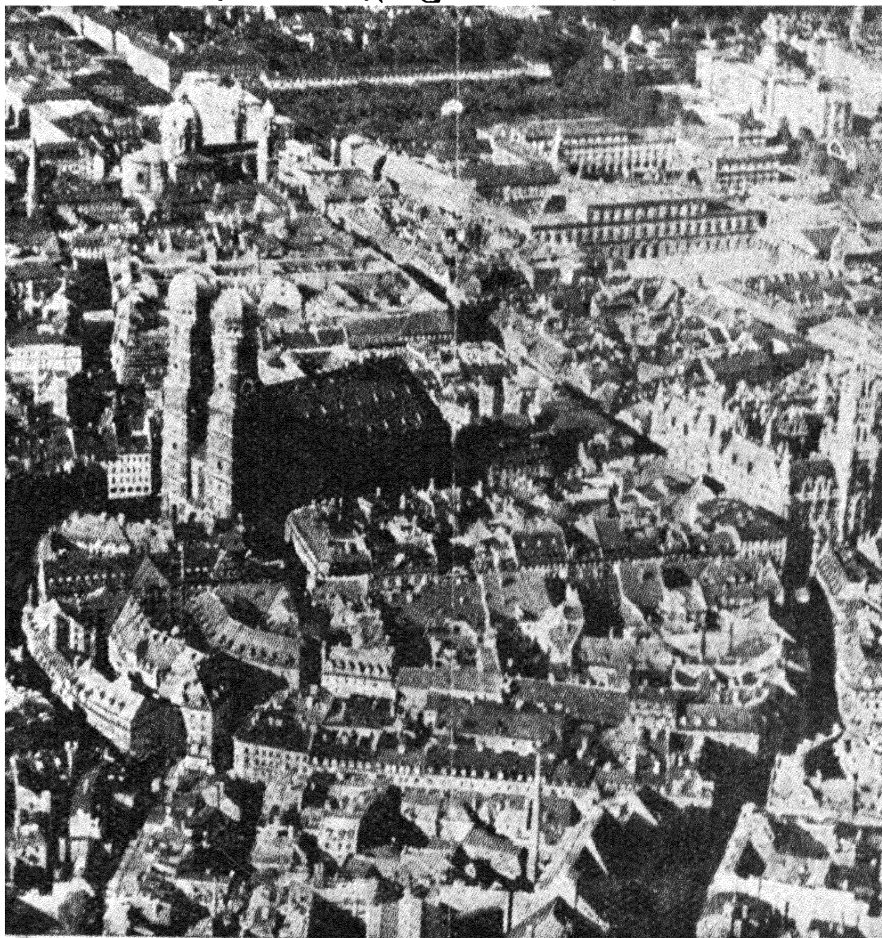
वासी विद्यार्थियों को विशेष प्रेम से पढ़ाते हैं—यहाँ साइंस के सभी विभागों की अच्छी अच्छी प्रयोगशालाएँ हैं, जिनके द्वारा बहुत सुगमता से अध्ययन होता है। हाइड्रालिक (जलबल) विद्यालय तथा साइंस के सभी अंग के विद्यालय हैं।

एक कारखाना हवाई जहाज बनाने का है जहाँ हमने काम बनते देखा। म्यूनिक का यह टेकनिकल विश्वविद्यालय जर्मनी में प्रसिद्ध है। यहाँ अनेक संग्रहालय देखने योग्य हैं किंतु समयाभाव से हम लोगों ने मुख्य मुख्य ही देखे।

प्राचीन संग्रहालय

इसमें प्रसिद्ध चित्रकारों के अच्छे अच्छे चित्रों का बड़ा संग्रह है। सैकड़ों कमरों में कई हजार चित्र हैं, जिनमें ईसाई धर्म-संबंधा बहुत हैं। क्रानाक का बनाया सिकंदर (अलेकजेंडर दि ग्रेट) की लड़ाई का, वीनस और किउपिड (रति कामदेव) का तथा महीन वस्त्र पहने हुए एक महिला का चित्र बहुत सुंदर है। कई चित्र बड़े चित्ताकर्षक देख पड़े। नीचे के खंड में प्राचीन मिट्टी के बर्तन, काँच तथा चीनी के बहुत प्राचीन काल के बर्तन, गहने इत्यादि रखे हैं। उसके पास ही नया संग्रहालय है जिसमें अर्वाचीन कारीगरी की चीजें हैं।

म्यूनिक का टौनहाल और गिरजाघर

वाले कैसे काम करते हैं आदि सब बातें दिखलाई गई हैं। दूसरा "यान" विभाग है जिसमें सड़कें, रेलवे, सुरंग, पुल इत्यादि सैकड़ों प्रकार के बनाए हुए हैं। अनेक देशों की भिन्न भिन्न प्रकार की प्रचलित तथा प्राचीन सवारियाँ भी दिखाई गई हैं। जहाजों के बहुत अच्छे अच्छे नमूने, असली पैमाने पर तथा छोटे बड़े हैं। हवाई जहाजों के बड़े बड़े नमूने भी दिखलाए गए हैं। तीसरा विभाग "गणित, भौतिक तथा रसायन" का है। अनेक प्रकार के कल, पुर्जे,
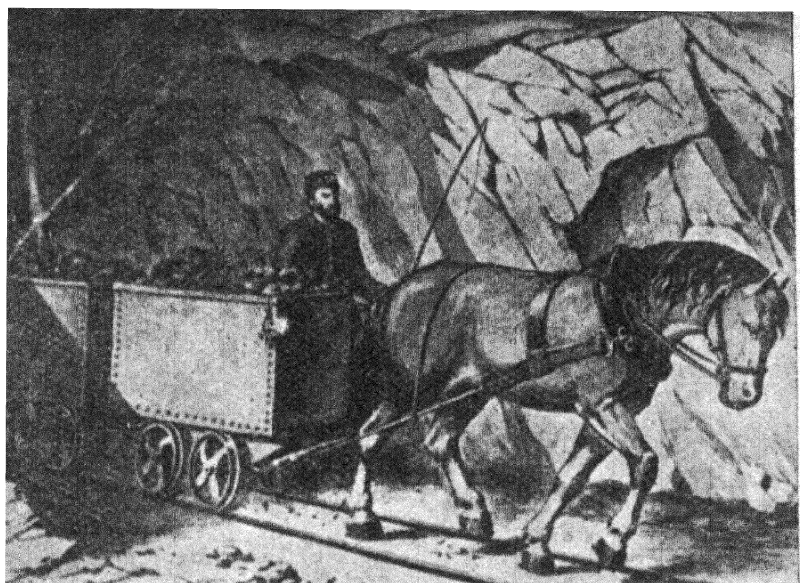
संग्रहालय के तहखाने में कोयले की खान का नमूना

दूरदर्शक, सूक्ष्मदर्शक, फोटोग्राफी आदि के यंत्र, वह मशीन जिससे दूर का समाचार, गाना, बाजा बजना बिना तार के सुनाई देता है इत्यादि दिखाए गए हैं। जर्मनी रंग बनाने में प्रसिद्ध है। विविध प्रकार के रंग किस तरह बनते हैं, यह बहुत अच्छी तरह दिखलाया गया है। चौथा विभाग "भवन" का है। इसमें मकान बनाने के ढंग, मकानों के नमूने, बनाने के मसाले, सामान, रोशनी, गैस, बिजली, पानी की कल इत्यादि बहुत ब्योरे के साथ दिखलाया

है। पाँचवाँ विभाग ज्योतिष, गणित इत्यादि का है। बर्लिन में नक्षत्रों की चाल का जैसा बड़ा "तारा-गृह" है वैसा ही, पर उससे
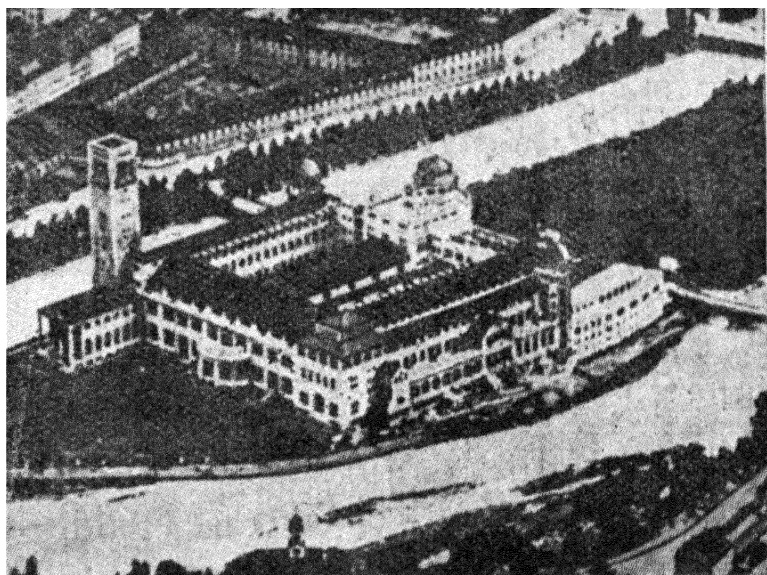
जर्मन संग्रहालय का दृश्य (हवाई जहाज पर से)

छोटा, यहाँ का तारा-गृह है। यहाँ का यंत्र दूसरे ढंग का पर उसी "कार्ल सेइस जीना" कारखाने का बना है जिसके द्वारा नभ-मंडल के तारागणों की चाल इत्यादि व्याख्यान के साथ दिखलाई जाती है। यह टालेमी के सिद्धांतानुसार है। दूसरा नभ-मंडल "कोपर्निकस" के सिद्धांतानुसार भी दिखलाया जाता है। सूर्य तथा चंद्रग्रहण और सभी नक्षत्रों की चाल दिखलाई जाती है। इसी विभाग में कपड़ा बुनना, कागज बनाना, छापना, खेती, शराब चुआना इत्यादि की अनेक रीतियाँ बहुत ब्योरे के साथ कलों द्वारा दिखाई जाती हैं। अनेक व्यवसायों का काम बहुत अच्छी तरह दिखाया जाता है। छठा विभाग पुस्तकालय है जिसमें कहते हैं कि एक लाख पुस्तकें हैं। यह संख्या हस्तलिखित पुस्तकों, नकशों इत्यादि के अलावे है। यहाँ हर प्रकार की साइंस और विशेषकर औद्यो-

गिक साइंस की प्राचीन तथा नवीन पुस्तकें हैं। बड़े बड़े वैज्ञानिकों और विद्वानों की मूर्तियाँ भी हैं।

सन् १४९२ ई० में कोलंबस जिस जहाज पर गए थे उसका नमूना और आधुनिक जहाजों का नमूना मुकाबले के लिये दिखलाया गया है। "हेंबर्ग अमेरिकन" लाइन जहाज की कंपनी के जहाजों का भीतरी प्रबंध, कल-पुर्जे, रहने इत्यादि के कमरे, खाने-पीने का, राजसी ठाट-बाट का सामान आदि भी दिखाया गया है। जर्मन वीर "ड्राईगाल्स" सन् १९०१ से १९०३ तक दक्षिणी ध्रुव की खोज में गए थे। उनका सामान तथा कामों का बहुत अच्छा चित्र बना है। बर्फ में जहाज कैसे कहाँ तक पहुँचा, फिर बर्फ पर कुत्तों इत्यादि के साथ कैसे गए आदि सब ब्योरेवार दिखाया गया है।

हाल का प्रसिद्ध जेपलिन हवाई जहाज, जिसकी गति सौ मील फी घंटा है, और सन् १८४७ का पाँच मील फी घंटा जानेवाला जहाज, दोनों मुकाबले के लिये दिखाए गए हैं। धीरे धीरे अधिक वेगवाले जहाज कब क़ब बनते गए यह भी दिखलाया गया है।

यह संग्रहालय बहुत ही बड़ा है और लंदन के संग्रहालयों से कई अंश में बढ़ा-चढ़ा है। जैसा कि एक पुस्तकवाले ने लिखा है, संसार भर में अपने ढंग का यह सर्वोत्तम संग्रहालय है। साधारणतया दर्शक तो देखकर ही चले जाते हैं, पर उच्च कोटि के विद्यार्थी अनेक विषयों को लेकर अध्ययन करते हैं; उनको प्रयोग रूप में यहाँ स्वयं देखते हैं और अनुभव प्राप्त करते हैं। इसके साइंस-विभाग में छः सौ प्रयोग (एक्सपेरिमेंट) लगाए हुए तैयार रखे हैं, जो चाहे चला-कर देखे और काम का अनुभव प्राप्त करे।

न्यायालय

जर्मनी का उच्चतम न्यायालय लाइपज़िग में है। म्यूनिक में जो

न्यायालय है वह बवेरिया सूबे का है। यह हमारे होटल के पीछे ही एक बहुत बड़े पचमंजिले भवन में है। इस सुंदर विशाल भवन में सब मंजिलों को मिलाकर करीब चार सौ कमरे हैं। जजों की संख्या बीस है। सप्ताह में दो-तीन बार इजलास पर बैठकर इन्हें काम करना पड़ता है। इनका वेतन पाँच छ: सौ रुपए मासिक पड़ता है। एक जज के नाम परिचय-पत्र मिल गया था जिससे न्यायालय देखने में सुभीता हुआ और उसके संबंध का सब हाल मालूम हुआ। ये ही महाशय हम लोगों को एक इजलास में लिवा ले गए। इनके जाने पर उस इजलास में कोई भी आदमी खड़ा नहीं हुआ। हम लोगों के साथ ये भी साधारण दर्शक की तरह एक बेंच पर बैठ गए। वहाँ एडवोकेट लोग भी बटनदार काले लंबे गाउन पहने हुए थे। गाउन का गला बंद था। गले के चारों ओर नर्म नीले रंग का मखमल लगा था। बाहें पूरी थीं, पहुँचे के पास भी मखमल था। तीन जज वैसे ही गाउन और गोल मखमली टोपी पहने थे। दो जूरर साधारण कोट-पतलून पहने नंगे सिर कमरे से निकलकर इजलास पर आए। इनके आने पर भी कोई खड़ा नहीं हुआ। चोरी के एक मुकदमे की अपील पर विचार हो चुका था। प्रधान जज ने फैसला पढ़कर सुनाया और पुलिसवाले अभियुक्तों को बाहर लिवा ले गए। मालूम हुआ कि जज और जूरर मिलकर बहुमत से निर्णय करते हैं। अपील में भी सब गवाह उपस्थित रहते हैं। न्यायाधीश की इच्छा हो तो वह किसी से भी कुछ पूछ सकता है। यदि कभी कोई मुकदमा समाप्त ही करना हुआ तो रात के तीन तीन बजे तक इजलास होता रहता है। एडवोकेट तथा सरकारी वकील के होते हुए भी जज लोग पहले

से मुकदमे में तैयार रहते हैं। उन्हें रोज प्रायः आठ घंटे काम करना पड़ता है।

छात्र-भवन

यहाँ एक बहुत बड़ा छात्र-भवन (स्टूडिएन हाउस) है। इसमें छात्रों की एक सभा है जिसका कार्यालय उसी में है। इसका पता ऐकैडेमिश श्रौस लैंडस्टेल, लुइसेन स्ट्रासे, नंबर ६७ म्यूनिक है। इसके मंत्री के साथ पत्र-व्यवहार करने से विद्यार्थियों तथा विद्याप्रेमी आगंतुकों को सहायता मिल सकती है। ये विद्यार्थियों के लिये पढ़ाई तथा निवासस्थान का पता लगाकर सब प्रबंध करते हैं। इनको लिखने से यहाँ के विद्यालयों का प्रास्पेक्टस इत्यादि अँगरेजी भाषा में भी मिल सकता है।

गर्मी में मई, जून, जूलाई तीन महीने और जाड़े में नवंबर से मार्च तक पाँच महीने पढ़ाई होती है। जर्मन भाषा सीखकर और अपने देश से कम से कम हाईस्कूल परीक्षा पास कर यहाँ भरती होने की दरख्वास्त देनी चाहिए। साधारण पढ़ाई तथा रहने इत्यादि का मासिक व्यय कम से कम सौ, सवा सौ रुपए होता है। उपयोगी शिक्षा के लिये यहाँ अच्छे साधन हैं।

दोपहर के समय विद्यालयों में भोजन के लिये दो तीन घंटे का अवकाश दिया जाता है। ऐसा अवकाश यहाँ सब कार्यालयों में मिलता है। इस अवकाश में इस छात्र-भवन में प्रायः तीन हजार विद्यार्थियों को नित्य बहुत सस्ता भोजन दिया जाता है। मांसाहारी ६० फीनिंग, करीब सात आने में तथा शाकाहारी उसके आधे दाम में यहाँ एक समय भोजन कर सकता है। बाहरी होटल में इसी भोजन के लिये दूना तिगुना दाम लगता है। इस संस्था में सभा, सिनेमा, थिएटर इत्यादि के लिये भी बड़े बड़े

हाल हैं। इस संस्था से हम लोगों को बहुत सहायता मिली। विभिन्न स्थान दिखाने के लिये हम लोगों के साथ यहाँ के एक सज्जन बराबर जाते थे। उन्होंने घूम घूमकर विभिन्न विद्यालय दिखाए, विशेष निमंत्रण देकर बहुत अच्छा शाकाहारी भोजन कराया और बाहर के लिये पत्रादि द्वारा सहायता दी। विद्यालय बंद रहने की हालत में भी इस भवन का कार्य्यालय तथा भोजनालय खुला रहता है।

रेजिडेंट संग्रहालय

अन्य बड़े बड़े नगरों की तरह यहाँ भी अनेक संग्रहालय हैं किंतु यह सबमें प्रधान और बड़े महत्त्व का है। इसी के नाम का एक बहुत बड़ा महल्ला तथा बहुत लंबी सड़क है। इसके विशाल भवन के पीछे एक बड़ी वाटिका है जो नाना प्रकार के वृक्षों, पौधों तथा फुहारों से सुशोभित है। उसमें उपाहार-गृह भी है। दूसरी ओर बड़ा मैदान है। इसके पास ही बहुत बड़ा थिएटर-घर है।

इस संग्रहालय को देखने का समय दिन के नौ बजे से बारह बजे तक और तीन बजे से छः बजे तक है। साधारण विभाग के लिये प्रवेश-शुल्क एक मार्क तथा विशेष विभागों के लिये कुल मिलाकर डेढ़ मार्क लगता है। इसमें १७७ हाल और कमरे हैं। यह यहाँ के राजा के (बवेरिया सूबे के) रहने का महल था जो अब जनता के लिये संग्रहालय बना दिया गया है। इसके कमरों की बनावट, सजावट तथा सामग्री देखकर इसमें निवास करनेवाले नरपतियों के वैभव तथा भोग-विलास का अनुमान हो सकता है। न मालूम कितने व्यय से यह बनाया और सजाया गया होगा।

हम लोगों ने रोम नगर का वैटिकन, पैरिस का लूव्र महल, वर्साई अद्भुत महल, बर्लिन का श्लास देखा और इसे भी देखा किंतु

यह कहना हमारी शक्ति के बाहर है कि इनमें कौन सा सर्वोत्तम है। सभी अपने अपने ढंग के निराले हैं। उनमें से एक को उत्तम कहना दूसरे की अप्रतिष्ठा करना है। लंदन में ऐसा कोई महल देखने को नहीं मिला।

सौंदर्य तथा बारीक कारीगरी के लिये इटली प्राचीन काल से प्रसिद्ध है। वहाँ की कारीगरी की अनेक वस्तुएँ यहाँ सजी हुई हैं। अनेक विचित्र रंगों के संगममर खंभों और दीवारों इत्यादि में लगे हैं। कई कमरों में बहुत ही सुंदर टेबूल रखे हैं। इनमें पच्चीकारी का सुंदर बारीक काम है जो ऐसी कारीगरी के साथ बना है कि बिलकुल रंगसाजी का काम मालूम होता है। इनमें रंग-बिरंगे पत्थर, मोती की सीप इत्यादि के टुकड़ों को जड़कर बेल-बूटों के अतिरिक्त जानवरों के भी अनेक चित्र बनाए गए हैं। इसी प्रकार रंगीन संगमर्मर की दीवारों पर भी बहुत अच्छा पच्चीकारी का काम है। एक स्थान पर पच्चीकारी के अनेक चित्रों में सफेद झबरे कुत्ते का चित्र बहुत ही सुंदर है। ऐसे ही फूल, पत्तियों और पक्षियों के चित्र भी बने हैं। एक स्थान पर दोनों ओर छिलकों के साथ अनार के टुकड़े का बहुत ही सुंदर पच्चीकारी का चित्र है।

सुनहरे कटाव के फ्रेम में नीले रंग के बहुत अच्छे पत्थर के बर्तनों का सेट (गिलास, रिकाबी आदि चाय के बर्तन) रखा हुआ था जो बिलकुल नीलम का मालूम होता था। चीनी के बर्तन पर बहुत बारीक रंगीन काम था और उभड़े हुए बेल-बूटे तथा पत्तियाँ बनी थीं। चीनी (पोर्सलेन) की कई सौ तसवीरें बहुत बारीक काम की थीं। इनमें बहुत सी तो प्राचीन चित्र-संग्रहालय की नकलें हैं जिन्हें प्रसिद्ध चित्रकार उस्टलिक ने १८६२ के लगभग तैयार किया था। टेपेस्ट्री (मोटे कपड़े के ढंग की बुनावट) में भी रंग-बिरंगी चित्र-

कारी का बहुत अच्छा काम है। ये दीवारों पर टँगी हैं और बहुत लंबी-चौड़ी हैं। इन्हें दूर से देखने से मालूम होता है कि कलम (कूँची) से रंगसाजी की गई है। बुनावट में इतने रंगों की ऐसी अच्छी चित्रकारी करना बड़ी ही कारीगरी का काम है। कितने ही स्थानों में दीवारों पर साधारण रंग से ऐतिहासिक लड़ाइयों के बहुत ही अच्छे चित्र बने हैं। जान पड़ता है कि ये हाल के बने हैं।

सबसे ऊपर सुवर्ण-भवन है जहाँ के प्रायः सभी काम सोने के जान पड़ते हैं। छतों की बनावट तथा चित्रकारी सराहने योग्य है। अनेक कमरों के फर्श लकड़ी के हैं जिन पर निराले ही ढंग की पच्चीकारी की हुई है। लकड़ी का एक बहुत ही सुंदर टेबल है जिस पर पच्चीकारी का काम है। एक बहुत बड़ा रिसेप्शन हाल (दरबार का) है जिसमें बारह राजाओं की विशाल सुनहली मूर्तियाँ हैं। एक दीवार के पास राजा का आसन (कुर्सी) है। एक कमरे में प्रथम लडोविक राजा की अनेक प्रेम-पात्रियों की तसवीरें टँगी हैं जिनकी संख्या कई दर्जन है। नेपोलियन के साथ और उसके विरुद्ध की गई दो लड़ाइयों के चित्र बहुत अच्छे हैं जो दीवारों पर टँगे हैं। इन विलासी राजाओं के गरमी में निवास करने के सुरम्य स्थान निंफेनबर्ग के महल, जलाशय, वाटिका इत्यादि के बहुत अच्छे अच्छे चित्र हैं।

यह स्थान इस नगर से बाहर है जहाँ रेल द्वारा आधे घंटे में पहुँच सकते हैं किन्तु समयाभाव के कारण वहाँ जाना न हो सका। इस नगर के भी कई दर्जन दर्शनीय स्थान, जिनकी संख्या बहुत अधिक है, छोड़ देने पड़े। लंबी सूची यहाँ के संबंध की पुस्तकों में दी हुई है। यहाँ प्राचीन तथा अर्वाचीन कला-कौशल इत्यादि के

कितने ही सार्वजनिक सरकारी संग्रहालय हैं। उनके अतिरिक्त कई बड़े बड़े कारखानेवालों ने प्रदर्शन के लिये भी संग्रहालय खोल रखे हैं जिन्हें जनता देख सकती है।

निंफेनबर्ग में पोर्सलेन (चीनी) का कारखाना है। म्यूनिक में एक बहुत बड़ा काँचघर (क्रिस्टल पैलेस) है जिसमें कारीगरी की प्रदर्शिनी हो रही है। वे सब देखने योग्य हैं। म्यूनिक के बाहर भी अनेक स्थान दर्शनीय हैं और उत्तम जल-वायु के लिये प्रसिद्ध हैं। यहाँ स्वास्थ्य-लाभ के लिये लोग प्रायः आया करते हैं।

बवेरिया सूबे में अन्य कई स्थानों में बड़े बड़े सुंदर किले देखने योग्य हैं। यहाँ की बियर (अनाज से बनाई शराब) बहुत प्रसिद्ध है। इसके बनाने के बहुत से कारखाने जमीन के नीचे तह-खानों में बने हुए हैं। यहाँ के लोग इसे बहुत पीते हैं। खाने के समय प्रायः सादा जल नहीं मिलता। यह शराब सोडा, लेमोनेड से सस्ती पड़ती है। इस प्रदेश को भली भाँति देखने के लिये महीनों का समय चाहिए।

आस्ट्रिया देश का वर्णन

विएना (वीन Wein)

२७ सितंबर को सबेरे ८ बजकर ५५ मिनट पर विएना जाने-वाली रेलगाड़ी में सवार हुए और ग्यारह बजे के करीब जर्मनी की सीमा पार कर आस्ट्रिया में प्रवेश किया। पासपोर्ट और असबाब की साधारण जाँच इसके पहले ही गाड़ी में हो गई थी।

मार्ग में पहले साल्सबर्ग नगर पड़ा। यह आस्ट्रिया का छोटा किंतु सुंदर नगर है। वहाँ से दोपहर को गाड़ी चली। रास्ते में देखने से यह देश बिलकुल जर्मनी की ही तरह जान पड़ा। यहाँ की भाषा और रंग-ढंग जर्मनी जैसा ही है। गत युद्ध में इस देश ने जर्मनी का ही साथ दिया था। लड़ाई के कारण इस देश ने अपना बहुत बड़ा भाग तथा मुख्य मुख्य स्थान खो दिए। इसके पास अब कोई समुद्र-तटवर्ती स्थान या जहाज भी नहीं रह गया है। यह देश अब बहुत छोटा हो गया है। यहाँवाले इस बात के लिये बहुत उत्सुक हैं कि यह देश जर्मनी में मिला लिया जाय किंतु अन्य देश-समूह ऐसा नहीं करने देते। आस्ट्रिया एक समय बहुत बड़ा साम्राज्य था जिसके अंतर्गत इटली आदि कितने ही राज्य थे किंतु अब इसका ह्रास हो गया। वर्तमान अवस्था में भी जो भाग बच गया है वह सुंदर और दर्शनीय है।

इसका प्रधान नगर विएना, जिसे यहाँवाले "वीन" कहते हैं, विस्तार में यूरप भर में सबसे बड़ा करीब १०८ वर्ग मील का है। यह नगर डेन्यूब नदी के किनारे बसा है। इसकी जन-संख्या बीस लाख के करीब है। जन-संख्या के विचार से यूरप में इसका

तीसरा स्थान है। देश भर की जन-संख्या करीब साठ लाख है अर्थात् देश के एक तिहाई आदमी इस नगर में रहते हैं। यह देश प्रायः पहाड़ी है; यहाँ के लोग अब गरीब हो गए हैं। पर नागरिकों में टीमटाम की मात्रा, लखनऊवालों की तरह, अब भी बहुत बढ़ी-चढ़ी है।

इस नगर में कई विस्तृत, खुले, सुंदर उद्यान और सार्वजनिक भवनों की श्रेणियाँ हैं। सड़कें बहुत सुंदर और जल-प्रबंध बहुत अच्छा है। पुलिस, सफाई इत्यादि के लिये भी इसकी महत्ता है। रास्ता चलते हुए मैंने सड़क पर कागज का एक टुकड़ा गिरा दिया। तुरंत मुझे सावधान कर बताया गया कि बिजली की लालटेन के खंभे में लगी हुई टोकरी में उसे फेंको। मैंने खेद प्रकट करके वैसा ही किया। प्रायः सभी तार तथा रोशनी के खंभों में लोहे की जालीदार टोकरियाँ जड़ी हुई हैं जिनमें कागज इत्यादि फेक सकते हैं। सफाई विभागवाले सड़कों और पटरियों को बराबर साफ करते और कूड़ा-करकट हटाया करते हैं। अँगरेजी पढ़े हुए विद्यार्थियों के अध्ययन के लिये यहाँ विशेष सुविधा है किंतु जर्मन भाषा जानना बहुत ही उपयोगी तथा आवश्यक है। मनोविनोद के लिये तो यह नगर पेरिस के टक्कर का है किंतु थिएटर तथा गाने बजाने में उससे भी बढ़ा-चढ़ा बताया जाता है। हाँ, रात्रि-विलास के लिये पेरिस का ही नंबर पहला है। यह मत मेरा नहीं, अनुभवी पुस्तक-रचयिता एलेकजांडर का है। आपकी पुस्तक "वियेना, कल और आज" बहुत अच्छी है।

ऐतिहासिक महत्त्व की दृष्टि से भी केवल रोम का ही नाम इसके पहले लिया जा सकता है किंतु कला-कौशल की बात आने पर विशेष छान-बीन करने की आवश्यकता पड़ेगी। यहाँ की मूर्तियों तथा चित्रों का संग्रह बड़े ही मार्के का है। यहाँ की दूकानें बहुत

बड़ी बड़ी और दूसरे बड़े बड़े नगरों की अपेक्षा अधिक सुविधाजनक हैं। यहाँ का चमड़े का सामान और जवाहिर बनाने का काम प्रसिद्ध है। यहाँ हर श्रेणी के बहुत से होटल हैं। फ्रांस के शहरों की अपेक्षा यहाँ का रहन-सहन कुछ महँगा है पर इटली, जर्मनी और इँगलैंड से सस्ता है। अमेरिका के यात्री यहाँ बहुत आते हैं। यहाँ का मुख्य सिक्का चाँदी का है जो सवा छः आने के बराबर होता है। शिलिंग में सौ ग्रोशेन होते हैं। एक, दो ग्रोशेन के ताँबे के, दस ग्रोशेन के निकल के और आधे तथा एक शिलिंग के चाँदी के सिक्के होते हैं। पाँच, दस या इससे अधिक शिलिंग के नोट होते हैं।

विश्वविद्यालय

यहाँ का विश्वविद्यालय यूरप के बहुत प्राचीन विद्यापीठों में है। यहाँ ग्यारह बारह हजार विद्यार्थी विभिन्न विषयों में
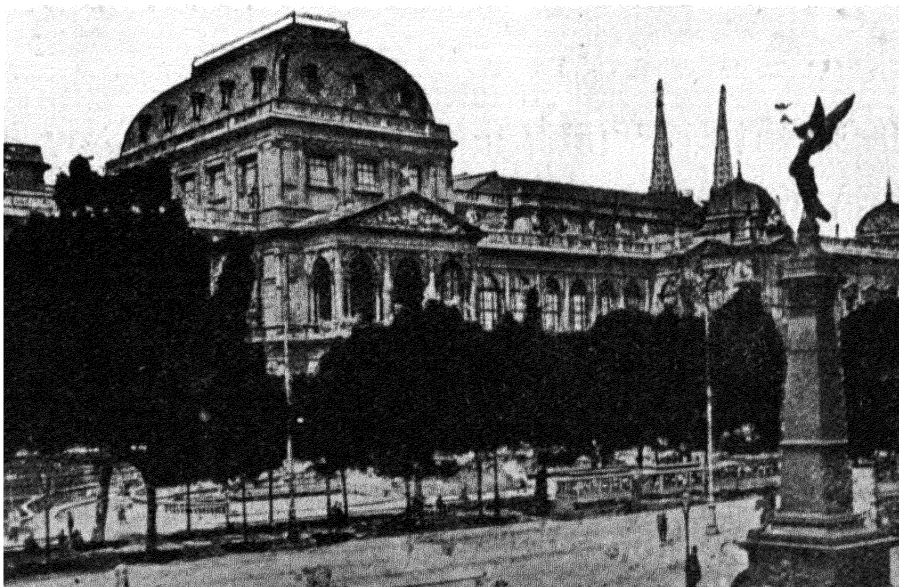
विएना का विश्वविद्यालय

उच्च कोटि की शिक्षा पा रहे हैं, अनेक विषयों के प्रसिद्ध प्रसिद्ध

आचार्य हैं। यहाँ की विशेषता चिकित्सा-शास्त्र है। यहाँ बहुत बड़े बड़े डाक्टर हैं। चीर-फाड़ बड़ी कारीगरी के साथ की जाती है। विभिन्न अंगों के रोगों के लिये बड़े बड़े विशेषज्ञ हैं। कोई गले के रोगों के आचार्य हैं, तो कोई कान के, कोई आँखों के तो कोई उदर के। डाक्टरी सीखने के लिये भारतीय विद्यार्थी यहाँ आते हैं। इस समय भी दस-पंद्रह भारतीय विद्यार्थी यहाँ हैं। इनमें कई तो भारतीय परीक्षाएँ पास हैं और पोस्ट आचार्य होने के

विएना में भारतीय विद्यार्थी

लिये यहाँ विशेष अनुभव प्राप्त कर रहे हैं। भारत से आने-वाले विद्यार्थियों की सुविधा के लिये "हिंदुस्तान एसोसियेशन, वीन" नाम की एक संस्था हमारे सामने यहाँ स्थापित हुई। इस संस्था से पत्र-व्यवहार द्वारा यहाँ के संबंध में जानकारी प्राप्त हो सकती है। योरप में भारतीय सब अपने को भारत (United India) का प्रतिनिधि समझते हैं। हिंदू, मुसल्मान का या पंजाबी, मद्रासी का भाव मन में नहीं आने पाता।

बाल-चिकित्सालय

बाल-चिकित्सा का विश्वविद्यालय में एक विशेष विभाग है और बालक बालिकाओं के लिये अलग अस्पताल हैं। विश्वविद्यालय के

कार्यालय से आज्ञा प्राप्त कर हम लोग इस उपयोगी संस्था को २८ सितंबर को देखने गए।
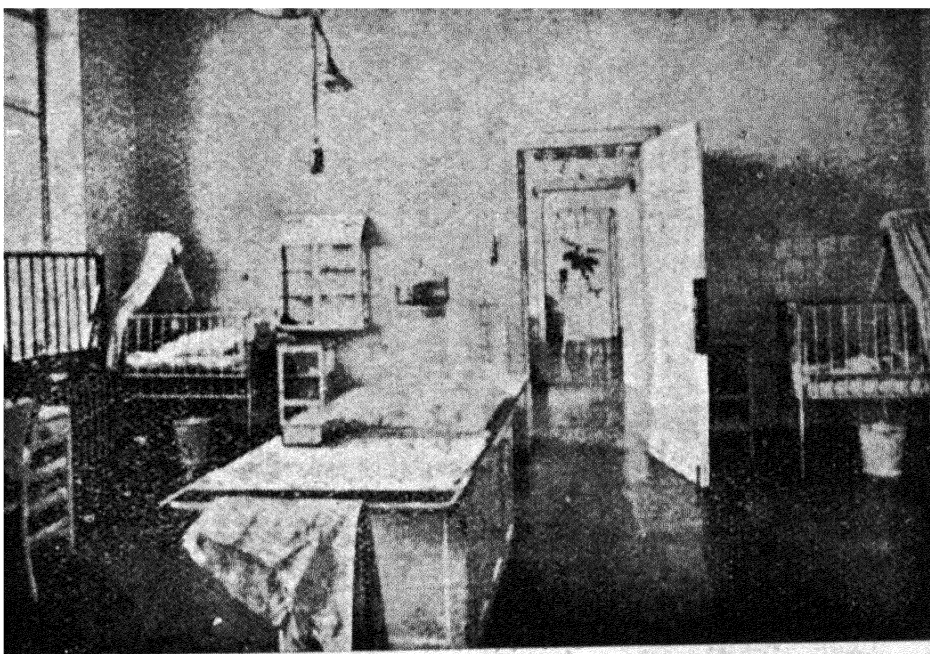
दुधमुँहे रोगी बच्चों का विभाग

लकड़ी का कटहरा, जो आवश्यकता पड़ने पर खिड़की में बैठा दिया जाता है

एक बहुत बड़े हाते के भीतर कई बड़े बड़े अस्पताल हैं। उनमें से एक बड़ा अस्पताल बच्चों के लिये है। यह बड़े चौमंजिले भवन

छत पर बगीचा

में है। इसमें बीस के करीब वैतनिक और अनेक अवैतनिक डाक्टर हैं जो अनुभव प्राप्त करने के लिये काम करते हैं। सत्तर दाइयाँ
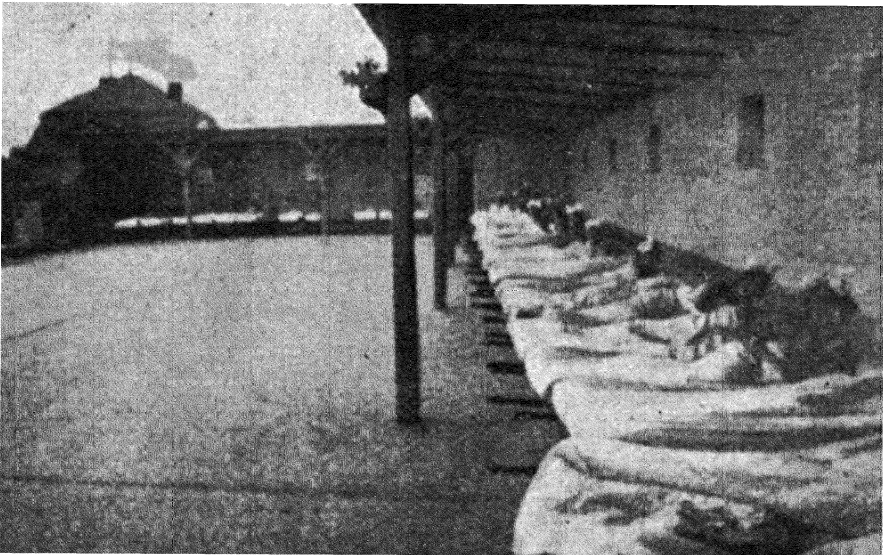
छत पर दूसरा बगीचा

(नर्स) हैं। कई सौ रोगी लड़के-लड़कियाँ हैं। क्षय रोग के बच्चे सबसे ऊपरवाली छत पर अलग अलग पलँग पर स्वच्छ वायु तथा सूर्य-किरण का सेवन करते हैं। वहाँ फूल-पत्तियों का बगीचा
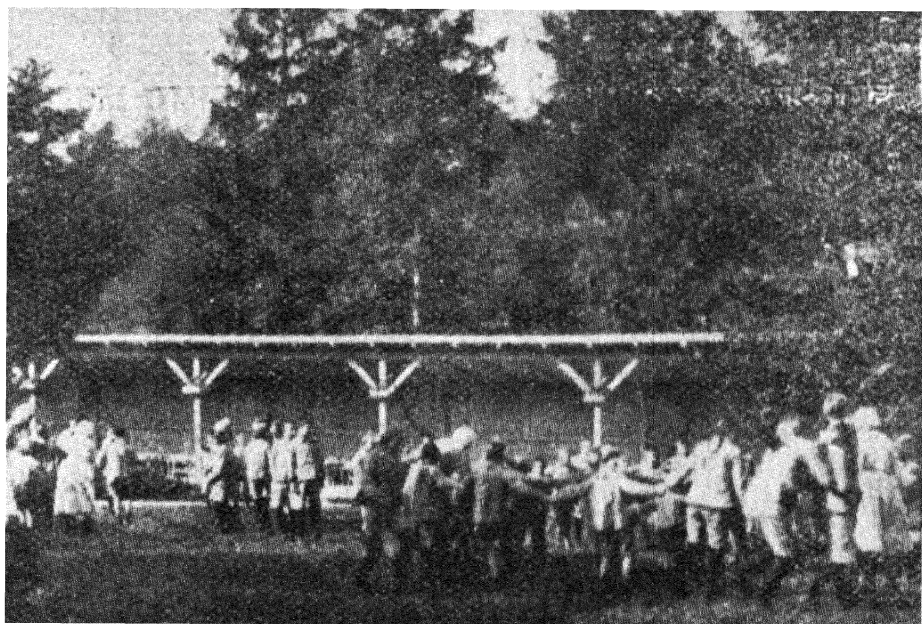
चिकित्सालय के अन्दर जगल

भी है। इनके मनोविनोदार्थ अनेक प्रकार के खिलौने भी हैं। इसी तरह विभिन्न रोगों के अलग अलग विभागों में बच्चों की चिकित्सा होती है। एक विभाग में हर बच्चे के लिये काँच के अलग अलग कमरे बने हैं जिनके भीतर एक एक का पलँग लगा है। उसके भीतर चिमनी द्वारा हवा आने-जाने का प्रबंध है। दाइयाँ तथा डाक्टर बाहरी दरवाजे से स्वच्छ होकर जाते और देख-भाल करते हैं। ऐसी कोठरियों की दो श्रेणियों के बीच अन्य लोगों के आने-जाने का रास्ता बना है। रोगी बच्चों के माता-पिता या संबंधी केवल काँच की दीवार के बाहर से ही उनको देख

सकते हैं। हाते के अन्दर बड़ा सुन्दर जंगल भी है। रोगी बच्चे उसको खिड़कियों में से भी देख सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर खिड़की में कटहरे बैठा दिए जाते हैं जो बाहर की तरफ निकले रहते हैं और जिन पर इतना स्थान रहता है कि रोगी कुर्सी रख कर बैठ जाए।

इसी प्रकार भिन्न भिन्न रोगों के लिये अलग अलग कई अस्पताल बने हैं जिनमें चिकित्सा होती है और उस शास्त्र के उच्च श्रेणी के विद्यार्थी विशेष अनुभव भी प्राप्त करते रहते हैं।

जंगल का दूसरा दृश्य

आपरा तथा सड़कें

यहाँ का केंद्रीय स्थान आपरा है जहाँ से चारों ओर का दृश्य दिखाई देता है और क्रय-विक्रय के स्थान निकट पड़ते हैं। यहाँ से सैर करनेवाली मोटर-बसें भाड़े पर यात्रियो को लेकर घुमाने

ओर दृश्य दिखाने जाती हैं। उनके साथ अँगरेजी बोलनेवाले प्रदर्शक भी रहते हैं। दो घंटे की यात्रा का पाँच शिलिंग और अधिक समय का अधिक लगता है। नगर भर में ट्रामगाड़ियाँ हैं जो बराबर चला करती हैं। इनका भाड़ा बत्तीस ग्रोशेन यानी दो आना बँधा है, चाहे जितनी दूर चले जाइए। एक घंटे के भीतर ट्रामगाड़ी बदल भी सकते हैं। मोटरगाड़ियाँ भी यहाँ बहुत चलती हैं। इसी केंद्रीय स्थान के इर्द-गिर्द बहुत बड़े बड़े सार्वजनिक भवन हैं। यहाँ बहुत बड़ी गोलाकार भीतरी और बाहरी सड़कें हैं, जिन्हें रिंग कहते हैं। कई स्थानों पर बर्लिन के उंटरडन लिंडन की तरह बहुत चौड़ी सड़कें हैं जिनमें पैदल चलनेवालों के लिये बीच में वृक्षों की छायावाला मार्ग है और दोनों ओर मोटरों इत्यादि के लिये रास्ते हैं और तब चौड़ी पटरियाँ हैं। इस सड़क पर सुंदर भवनों की श्रेणियाँ हैं। बीचवाली छायादार सड़क के दोनों किनारों पर विश्राम करने के लिये बेंचें रक्खी हैं। यहाँ की छाया बर्लिन से भी सघन और मनोरम है। एक सड़क बारह नवंबर के नाम से है। सन् १९१८ की उस तारीख को वहाँ प्रजातंत्र राज्य की स्थापना हुई थी।

सड़कों के किनारे गगनस्पर्शी सुंदर भवनों की श्रेणियाँ देखने योग्य हैं। भवनों की बनावट विशेष ढंग की है। धनी-मानी लोगों के मकान एक खास महल्ले में हैं। यहाँ की म्युनिसिपैलिटी ने कोआपरेटिव सिद्धांत पर गरीबों के लिये हजारों मकान बनवा दिए हैं। गरीबों से चार छः आना मासिक भाड़ा लेकर इन घरों में उन्हें स्थान दिया जाता है। यह भाड़ा उन घरों की मरम्मत, सुधार इत्यादि के काम आता है। ये घर हवादार स्थान में, स्वास्थ्य के सिद्धांतों के अनुसार, बनाए गए हैं।

गिरजाघर

यहाँ भी अनेक छोटे-बड़े, नए-पुराने गिरजाघर हैं। प्रधान गिरजाघर में बाहर की ओर दो ४०८ फुट ऊँचे कँगूरे बने हैं जो बहुत दूर से दिखाई देते हैं। इस गिरजाघर के भीतर भी खूब मूर्ति-पूजा होती है। प्रभु ईसा मसीह, उनकी कुमारी माता और इस संप्रदाय के संतों की पूजा की जाती है। कई सज्जन हाथ जोड़े मूर्ति के सामने धीरे धीरे प्रार्थना करते दिखाई दिए। कई घुटनों के बल खड़े माला जपते थे। मूर्तियाँ सुसज्जित थीं। पत्थर की एक बड़ी अथरी में 'पवित्र' जल रखा था जिसे लोग अपने सिर में लगाते और शरीर पर छिड़क लिया करते थे। मूर्तियों के सामने लंबी मोटी मोमबत्तियाँ तथा अखंड दीप जलते रहते हैं। भक्त लोग भी मोमबत्तियाँ लाते और जलाकर वहाँ खोंस दिया करते हैं। द्रव्य इत्यादि भी चढ़ा करता है।

विद्या-प्रचार तथा विश्वविद्यालय

इस देश में भी शिक्षा अनिवार्य है। साधारण शिक्षा के साथ साथ अनेक व्यवसायों की शिक्षा भी दी जाती है जिससे विद्यालय से निकलते ही विद्यार्थी कमाने-खाने लायक हो जाता है। जिस समय हम वहाँ पहुँचे उस समय वहाँ का विश्वविद्यालय खुलनेवाला ही था। विद्यार्थियों की भीड़ लगी थी। विश्वविद्यालय का भवन विशाल है। भीतर आँगन के चारों ओर दालानों में प्रसिद्ध विद्वानों की मूर्तियाँ बनी हैं। उनके पास दीवारों में उनके समय और विषय का उल्लेख है। साधारण विषयों के अतिरिक्त गान, वाद्य, चित्रण-कला, इंजिनियरी इत्यादि की भी शिक्षा दी जाती है। चिकित्सा-शास्त्र तो यहाँ का मुख्य विषय है ही।

बालिका-विद्यालय तथा निवासस्थान

शिक्षा-सचिव से आज्ञा प्राप्त कर इस बड़ी संस्था को देखा। इसका घेरा बहुत बड़ा है जिसमें कई विशाल भवन हैं। इसमें छोटे छोटे बच्चों को खेल-कूद के साथ साथ शिक्षा देने के लिये किंडर गार्टन पाठशाला है। बाजों की गत पर बच्चे दौड़ते और शारीरिक व्यायाम करते हैं। कई सौ युवतियाँ यहाँ रहती, व्यायाम करती और अध्यापन कार्य सीखती हैं। अध्यापन के सभी अंगों की शिक्षा इन्हें प्राप्त करनी होती है। चित्रण-कला, कागज काटकर अनेक चित्रों के आकार बनाना, बहुरंगे कागज के टुकड़ों को उपयुक्त स्थानों पर साट साटकर उनके द्वारा मनुष्य, जीव-जंतु, फूल-पत्ती, वृक्ष आदि के आकार बनाना, बढ़ई, दर्जी का सभी काम सीखना और बालकों को सिखाना होता है। इस विद्यालय में स्नान-गृह, तैरने के लिये तालाब, व्यायामशाला इत्यादि भी हैं।

युवक-बंदीगृह

यहाँ का युवक-बंदीगृह भी बहुत प्रसिद्ध है। स्त्रियों का बंदी-गृह अलग है। इन्हें देखने की आज्ञा नहीं मिलती। यह सिद्धांत के विरुद्ध माना जाता है कि बाहरी लोग जाकर इन्हें देखें। इन सबका प्रबंध प्रशंसनीय है। इन्हें भी उपयुक्त शिक्षा देने और कोई कला सिखाने का प्रबंध है जिससे यहाँ से निकलने पर ये फिर कोई अपराध न करें और जीविका उपार्जन कर सकें।

बिजली द्वारा दूकानदारी

यहाँ की विचित्र बातों में बिजली द्वारा दूकानदारी भी एक है। घूमते हुए खानेदार थालों में अनेक प्रकार का भोजन बिकता है। दाम लिखा रहता है और दाम छेद में डाल देने से चीज अपने आप सामने आ जाती है। ऐसी अनेक दूकानें थीं जहाँ खूब भीड़ लगी रहती थी।

अन्य सार्वजनिक भवन

विश्वविद्यालय के पास ही राठहाउस (टौनहाल) है जो बहुत बड़ा और सुंदर है। यह चौमंजिला है। इसका कँगूरा नक्काशीदार है और दस मंजिलों का है। इसमें एक बहुत बड़ी घड़ी लगी है। चारों ओर की उद्यान-वाटिका भी बहुत ही सुरम्य है। इसके पास ही पार्लमेंट-भवन है। इसके बाहर भी बड़ी बड़ी सुंदर मूर्तियाँ बनी हैं। "म्यूजियम आव फाइन आर्ट्स" अर्थात् ललित-कला-संग्रहालय में प्रसिद्ध चित्रकारों के चित्रों का संग्रह है। इसके सामने प्राकृतिक ऐतिहासिक संग्रहालय है। इन दोनों के बीच का मैदान बहुत ही सुंदर है जिसमें वाटिका और अनेक मूर्तियाँ हैं। सम्राट् गढ़ी होफबर्ग यहाँ के भूतपूर्व सम्राट् का जाड़े में रहने का महल है। यह पचमंजिला और बहुत सुंदर है। यह चौथाई मील लंबा है। यहाँ के सम्राटों का सात सौ वर्ष तक इसमें निवास था। इसके बाहरी भाग में सम्राटों की विशाल अश्वारूढ़ मूर्तियाँ हैं जो बहुत अच्छी बनी हैं। इसके भीतर चारों ओर पचमंजिले विशाल सुंदर भवन हैं। एक स्थान पर महामारी का विशाल स्मारक है। यहाँ प्लेग इत्यादि कई रोगों का कुछ दिनों तक प्रकोप था। बड़े उद्योग के पश्चात् ये रोग दूर हुए। उसी के स्मारक स्वरूप यह मूर्ति बनी है।

उद्योग-धंधे का संग्रहालय तथा कार्यालय, महल, गान, नृत्य-भवन (जिसमें काँच का फर्श लगा है और बिजली की रोशनी से दीवारों छतों के साथ भूमि भी नीचे से प्रकाशमय हो जाती है) और ललित-कला-संग्रहालय आदि दर्शनीय हैं। संग्राम-संग्रहालय में लड़ाई का प्राचीन सामान प्रदर्शित है। एक बहुत बड़े हाते में प्रदर्शिनी-भवन है। इसमें तीन सौ फुट ऊँचा धरहरा है जिस पर चढ़ने से नगर का अपूर्व दृश्य दिखाई देता है।

विनोद-स्थल

अन्य बड़े बड़े नगरों की तरह यहाँ भी आमोद-प्रमोद के लिये एक बहुत बड़ा मैदान है जहाँ चित्त-विनोद के सैकड़ों प्रकार के साधन हैं। यहाँ आधी रात तक तो अवश्य ही खेल, तमाशे हुआ

विनोद-स्थल (प्रेटर) में नीचे-ऊपर चलनेवाली चर्खी

करते हैं। यहाँ की दो-तीन चीजें उल्लेख योग्य हैं। एक बहुत ऊँचा गोलाकार खड़ा पहिया है जो पुलों की तरह बहुत मजबूत

लोहे का है। इसकी ऊँचाई दो सौ फुट के करीब है। इस पहिए में करीब पचास गाड़ियाँ, जो मोटर-बस की तरह हैं, लटकती रहती हैं। हर गाड़ी में पचीस तीस आदमी बैठ सकते हैं। नीचेवाली गाड़ी में लोगों के बैठ जाने पर चक्र चला। पहली गाड़ी ऊपर गई और दूसरी जब चौतरे की सीध में आई तो उसमें लोग चढ़े। इसी तरह चक्र चलता जाता है। पहली गाड़ी जब सबसे ऊपर पहुँच जाती है तब वहाँ से सारे नगर का दृश्य दिखाई देता है। फिर पहली गाड़ी धीरे धीरे नीचे उतरती है और उसमें बैठे हुए लोग उतर जाते हैं।

एक स्थान पर रेल की लाइनों पर पहिएदार नौका झटके से नीचे ऊपर जाती है। उसमें लोग चढ़े होते हैं। एक बड़े ढालू स्थान पर ऊपर से पानी की धारा रंगीन काँच पर से होती हुई बहती है। बिजली के प्रकाश में जल-धारा रंगबिरंगी दिखाई देती है जिस पर से होती हुई नौका झटके के साथ नीचे को रेलवे लाइन पर फिसलती है और नीचे पानी की झील में छपाका मारते हुए दूसरी ओर ऊँचाई पर चढ़ जाती है। ऐसी ही रेलगाड़ियाँ बनावटी पहाड़ों पर सुरंगों इत्यादि के भीतर से झटके के साथ जाती हैं। इसी हाते में एक सर्कस का मैदान है जिसमें घोड़ागाड़ियाँ गोलाई में चलती हैं जिनमें बैठकर लड़के या युवक सैर करते हैं। निशानेबाजी के भी अनेक खेल-तमाशे हैं। मोटरों की दौड़ भी हुआ करती है। यहाँ बहुत भीड़ रहती है।

शोनब्रुन महल

शहर के बाहरी भाग में एक बड़े मैदान में यहाँ के भूतपूर्व सम्राट् का महल है जो अब सार्वजनिक संग्रहालय बना दिया गया है। जनता इसे देखने जा सकती है। यों तो नित्य ही लोग इसे

देखने जाया करते हैं, किंतु रविवार को दर्शकों की विशेष भीड़ रहती है। इसके सामने बहुत सुंदर मैदान और वृक्षावली है। इसके
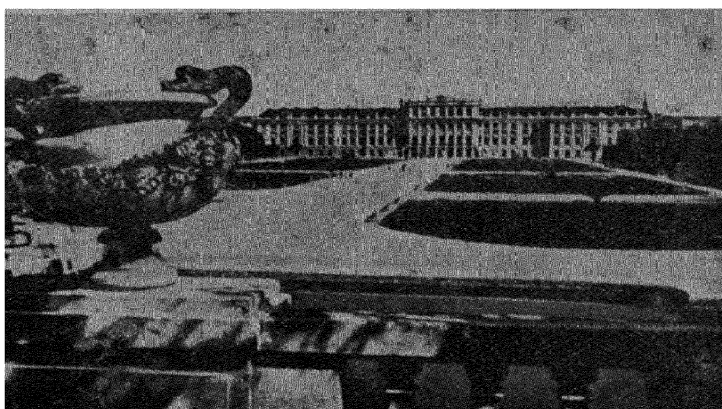
शोनब्रुन का दृश्य

पीछे की ओर मनोहर घास पर बहुरंगे फूलों से सजी हुई क्यारियाँ हैं जिनमें फुहारे हैं। इसके पश्चिम ओर ऊँची पहाड़ी है जिसके ऊपर ऊँचा भवन बना है। पहाड़ी पर जाकर इसके शिखर पर चढ़ने से सारे शहर का मनोहर दृश्य देख सकते हैं। इस महल के चारों ओर की सघन सुंदर वृक्षावली का दृश्य भी बहुत अच्छा है। स्थान स्थान पर अनेक मूर्तियाँ हैं। फुहारे जलाशयों के सौंदर्य को बढ़ा देते हैं। इस महल में जाने के लिये एक शिलिंग टिकट लगता है। प्रदर्शक साथ जाकर दिखाता है।

यह तीन मंजिल का महल है जिसके बिचले मंजिल के कमरे ही दिखाए जाते हैं। इनकी संख्या चालीस के करीब है। इन कमरों की बनावट और सजावट राजसी है। इनमें बहुमूल्य सामान संगृहीत हैं। अनेक कमरों की सफेद दीवारें और छतें सुनहले बेल-बूटों से सजी हैं। छतों तथा दीवारों की चित्रकारी बहुत अच्छी

है। किरमिच पर अच्छे अच्छे तैलचित्र बने हैं जो दीवारों की लंबाई-चौड़ाई के बराबर हैं।
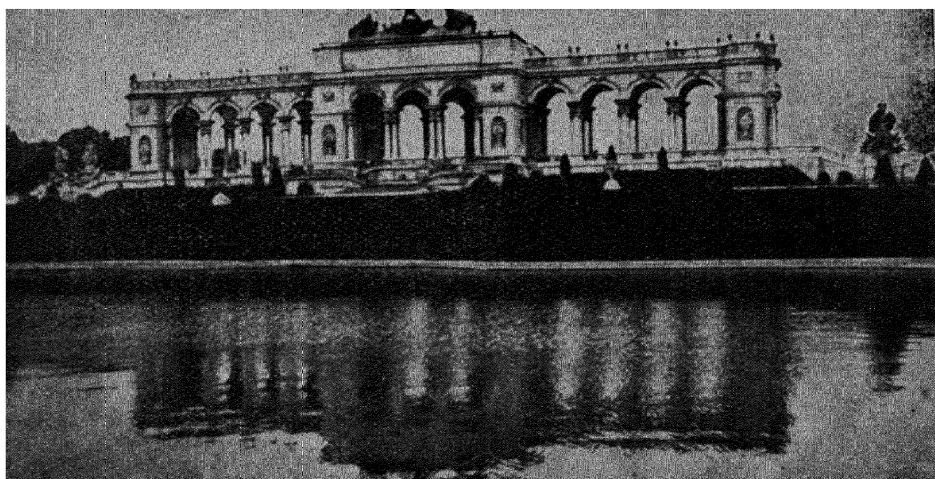
शोनब्रुन महल

नीले कमरे में नीले रंग का सब सामान सजा है। फ्लारेंटाइन मोजेइक पच्चीकारी के कई सुंदर बहुमूल्य टेबूल हैं। नेपोलियन का कमरा बहुत अच्छी तरह सजा है। इस देश पर जब नेपोलियन का अधिकार हुआ तब वह इसी कमरे में ठहरा था। तीसवीं संख्या का कमरा भारतीय भवन कहलाता है जिसमें अनेक भारतीय दृश्य चित्रित हैं। सजे कमरे में लाल चीनी लकड़ी सुनहली डार से दीवारों में लगी बहुत ही भली दीखती है। फ्रांसिस जोजेफ का एक बहुत बड़ा चित्र तथा महारानी का सकुटुंब सुंदर चित्र भी बहुत अच्छा है। पेरिस के पास का वर्सेई का महल तो इससे बड़ा और बहुत अच्छा है किंतु लोगों का कहना है कि उसका प्रभाव इस महल पर बहुत पड़ा है। उसकी कारीगरी की झलक

इसमें आई है। इसके पीछे के पहाड़ के ऊपर-नीचे—इस ओर उस ओर—बड़े बड़े जलाशय हैं और जंगलों की अपूर्व छटा है।

यह महल ऐतिहासिक है। हंगरी तथा तुर्कीवालों ने जब जब इस नगर पर अधिकार किया तब तब इसको मटियामेट किया किंतु शीघ्र ही यह फिर बनवा दिया जाता था। इस समय का भवन दो सौ वर्ष का पुराना है। महारानी मेरिया थेरीसा ने इसे अपना निवास-स्थान बनाया और इसमें सौंदर्य की उन्नति की जिसको डेढ़ सौ वर्ष से अधिक हुए। कहा जाता है कि उस रानी के हृदय में वर्सेई का सौंदर्य बैठा हुआ था और वह सदा इसको उसी की भाँति बनाने में सचेष्ट रहती थी।

कावेंस्ल गढ़ी और महल

यह महल ऊँची पहाड़ी पर शहर के बाहर की ओर है। जहाँ ट्रामगाड़ी खतम हो जाती है वहाँ से मोटर-बस ऊपर पहाड़ पर जाती है। वहाँ तीसरे पहर उजाले में जाना चाहिए और संध्या को शहर में बिजली की जगमगाहट हो जाने पर दृश्य देखकर लौटना चाहिए। इस पहाड़ की सड़कें बहुत स्वच्छ और चिकनी हैं। ऊपर जाकर एक बहुत बड़ा महल है जिसमें अब बहुत बड़ा होटल है जो विलासिता के सामान से सुसज्जित है। जल-वायु सेवन करने के अभिप्राय से भी लोग यहाँ आकर टिकते हैं। चारों ओर घासवाले स्वच्छ एकांत मैदान हैं जहाँ इच्छानुसार भ्रमण कर सकते हैं। इसकी वाटिका भी बहुत सुंदर है। इस होटल पर से नगर का अपूर्व दृश्य दिखाई देता है। प्रसिद्ध गिरजाघर, विनोद-स्थल का विशाल चक्र, डेन्यूब नदी, शोनब्रुन का महल तथा पीछे की पहाड़ी इत्यादि की छटा यहाँ से दिखाई देती है। रात के अँधेरे में पंद्रह मील लंबा और आठ मील चौड़ा जगमगाता शहर विचित्र दिखाई देता है। इस होटल के पास

ही एक उपाहार-गृह है। ऊपर से उतरती बार टहलते हुए दृश्यों को देखते और आनंद लेते आना अच्छा होता है।

रात्रि-भ्रमण

विएना का नगर-दर्शन रात्रि-भ्रमण बिना अपूर्ण रह जाता है। इसके लिये भी मोटर-बसवाले भाड़ा लेकर लिवा जाते हैं। रात्रि-भ्रमण के लिये रात ८ बजे ब्यालू करने के बाद निकलते और ११ बजे लौट आते हैं। ६ शिलिंग प्रति व्यक्ति भाड़ा लगता है। यदि कोई साथी स्थान से परिचित हो तो आप उसके साथ भी घूम सकते हैं।

मुख्य बाजार से जगमगाती हुई दूकानें देखते डैन्यूब नदी के किनारे जाइए और "फाक्सप्राटर" नाम का सार्वजनिक विनोद-स्थल देखिए। यहाँ से डैन्यूब नहर के किनारे से होते हुए इसके पुल पर से चारों ओर के दृश्य का आनंद लीजिए। यदि मोटर-बस से आए हों तो वह "कावेंस्ल" पहाड़ी पर भी ले जायगी और ऊपर से जगमगाते नगर का दृश्य तथा डैन्यूब नदी की चमकती रेखा को दिखाएगी। लौटती बार अनेक कलवरियाँ (काफी हाउस) पड़ेंगी जहाँ लोग हजारों की संख्या में शराब पीते, नाचते-गाते दिखाई देंगे। यदि नाच-गाना, थिएटर इत्यादि देखने की इच्छा हो तो यह भी अनेक स्थानों पर होता है। होटलवाले प्राय: दस बजे फाटक बंद कर लेते हैं। उसके बाद फाटक खोलवाने को कुछ दो चार आना देना पड़ता है। जितनी देर हो जाय उतनी अधिक फाटक खोलाई लेते हैं। किसी किसी होटल में यह प्रथा नहीं भी है।

अमेरिका का मूल-निवासी

३० सितंबर को रास्ते में जाते हुए एक दूकान पर बहुत भीड़ देखी। अंदर गए तो एक बृहत्‌काय अमेरिका का मूल-निवासी,

जिसे रेड-इंडियन कहते हैं, दिखाई दिया। यह हम लोगों से शरीर में दूना और लंबाई में सवाया था। अँगरेजी बोलता था। इसके गले में कौड़ी, रुद्राक्ष इत्यादि की माला थी। सिर पर लंबे पंखों का मुकुट था। यह अपने को जगद्गुरु, धार्मिक मिनिस्टर और पुरोहित कहता था। संसार में शांति स्थापित करना वह अपने जीवन का उद्देश्य बताता था। इच्छानुसार मांस मदिरा ग्रहण करना तथा एक परमात्मा को मानना अपना धर्म समझता था। लोग कुतूहलवश इसे देखने के लिये इकट्ठे हुए थे। फोटो-वालों ने फोटो लिए, दूकानवालों ने जलपान कराया और कुछ खिलौने भेंट किए। इस दूकान पर केवल खिलौने ही बिकते थे। भीड़ होने के कारण लोगों का अन्दर जाना बन्द कर दिया गया था परन्तु हम लोगों को अन्दर जाने से किसी ने नहीं रोका। हम को देखते ही रेड इंडियन महाशय ने हाथ मिलाया और कहा "मैं तुम्हारे गाँधी को जानता हूँ"। ऐसा मालूम होता था कि उस समय वह कुछ नशे में था।

अन्य बातें

विएना तो बहुत प्राचीन और सुंदर नगर है। इसे देखने और पूरा आनंद प्राप्त करने के लिये महीनों का समय चाहिए। हम लोग यहाँ से पहली अक्तूबर को ही रवाना होनेवाले थे किंतु एक दिन और ठहर गए। इस नगर में देखने योग्य अनेक संग्रहालय, विद्यालय, बाजार, दूकानें, होटल इत्यादि हैं। यहाँ का जल-वायु बहुत अच्छा बताया जाता है। यहाँ कई निरामिष भोजनालय हैं जहाँ उत्तम शाकाहारी तथा फलाहारी भोजन सस्ते दामों में मिलता है। इनके अतिरिक्त अन्य होटलों और उपाहार-गृहों में भी निरा-मिष भोजन मिल सकता है। यहाँ पर भी निरामिष भोजन की

ओर बहुत लोगों का झुकाव दिखाई दिया। शहर के बाहर थोड़ी ही दूर पर सुंदर पहाड़ी तथा जंगली स्थान हैं जिन्हें देखने के लिये यात्री जाया करते हैं। कई स्थान जल-सेवन के लिये प्रसिद्ध हैं। वहाँ रोगी और मनमौजी यात्री बड़ी संख्या में जाते और निवास करते हैं। यहाँ चीर-फाड़ (आपरेशन) के रोगी बाहर से बहुत आते हैं और विशेषज्ञ डाक्टरों से चिकित्सा कराकर नीरोग हो जाया करते हैं।

समयाभाव से लाचार होकर २ अक्तूबर को ही सबेरे ७॥ बजे की गाड़ी से हम लोग वेनिस (इटली) के लिये रवाना हुए। विएना के होटल में नित्य स्नान का दो शिलिंग तथा कमरे का साढ़े पाँच शिलिंग कुल ३) रोज देते थे, भोजन का खर्च अलग था। जहाँ खाया वहाँ दिया। वहाँ से चलनेवाले दिन जलपान तथा दिन का भोजन रेलगाड़ी के होटल में हुआ। इसमें संतोषप्रद निरामिष शाकाहारी भोजन मिला। संध्या के करीब ५ बजे आस्ट्रिया देश की हद पारकर इटली की सीमा पर पहुँचे। रास्ते का दृश्य अच्छा था।

वेनिस (इटालियन विनेत्सिया)

२ अक्तूबर की संध्या को ५ बजे इटली की सीमा पर रेल-गाड़ी पहुँचते ही हम लोगों के पासपोर्ट तथा असबाब की कड़ी जाँच हुई। यह कहने और सबूत देने पर भी कि हमारे पास का फोटो उतारने का कैमरा तथा दूरदर्शक यंत्र (दूरबीन) बराबर काम में आते हैं वहाँवालों ने एक न सुनी और तीन सौ छः लीरा (पैंतालीस रुपए) चुंगी का ले ही लिया। वहाँ जल्दी में स्टेशन पर लीरा की भँजाई भी अधिक लग गई। साधारण व्यय के लिये थोड़ा सा लीरा तो साथ में विएना से ही ले चले थे। एक लीरा प्राय: सवा दो आने के बराबर होता है। एक लीरा के सौ भाग (सेंटिम) करके व्यवहार होता है। पाँच और दस सेंटिम के ताँबे के, बीस और पचास सेंटिम के तथा एक और दो लीरों के निकेल के और पाँच तथा दस लीरों के चाँदी के सिक्के होते हैं। पचास, सौ, पाँच सौ, एक हजार इत्यादि लीरों के नोट होते हैं।

रात के ग्यारह बजे के करीब गाड़ी वेनिस पहुँची। यहाँ खोजने के बाद स्टेशन की बगल में ही होटल टर्मिनस में अठारह लीरा रोज के भाड़े पर एक एक आदमी के लिये अलग अलग पानी के टोंटीदार कमरे मिल गए। रात को दूध पीकर सो रहे। यहाँ गर्मी मालूम हुई। मच्छड़ों ने भी स्वागत किया। यह नगर सैकड़ों टापुओं के समूह में, जिनके बीच डेढ़ सौ जल से भरे नाले हैं, समुद्र में बसा है। गलियों में समुद्र का जल भरा है। बहुत चौड़े ग्रैंड कैनाल (बड़ी नहर) के एक किनारे रेल का स्टेशन है। रेल-गाड़ी भी यहाँ तक पुलों पर से सवा दो मील चलकर आती है।

यहाँ मोटर, घोड़ा या गाड़ा नाममात्र के लिये भी नहीं है और न हड़हड़ाहट, पटपटाहट है। हाँ, बड़ी नहर में दस दस, पाँच पाँच मिनट पर स्टीमर आते-जाते रहते हैं और सैकड़ों यात्रियों को एक से दूसरे स्थान को ले आया करते हैं। जैसे बड़े शहरों में ट्राम और मोटर-बसें चलती हैं वैसे यहाँ स्टीमर चलते हैं। मोटर-टैक्सी की जगह मोटर-बोट दो तीन चार आदमियों को लिए फक फक करते चलते हैं और एक्के, टाँगे या घोड़ागाड़ियों की जगह छोटी नौकाएँ (जिन्हें गंडोला कहते हैं) डाँड़े से साहब मल्लाह खेते हैं। लोग नावों पर ही छोटी छोटी गलियों में पानी पर जाते हैं; नावों पर तरकारी तथा अन्य खाद्य पदार्थ, लकड़ी, कोयला लिए गलियों में फेरी करते और बेचते रहते हैं। बड़ी नहर पर
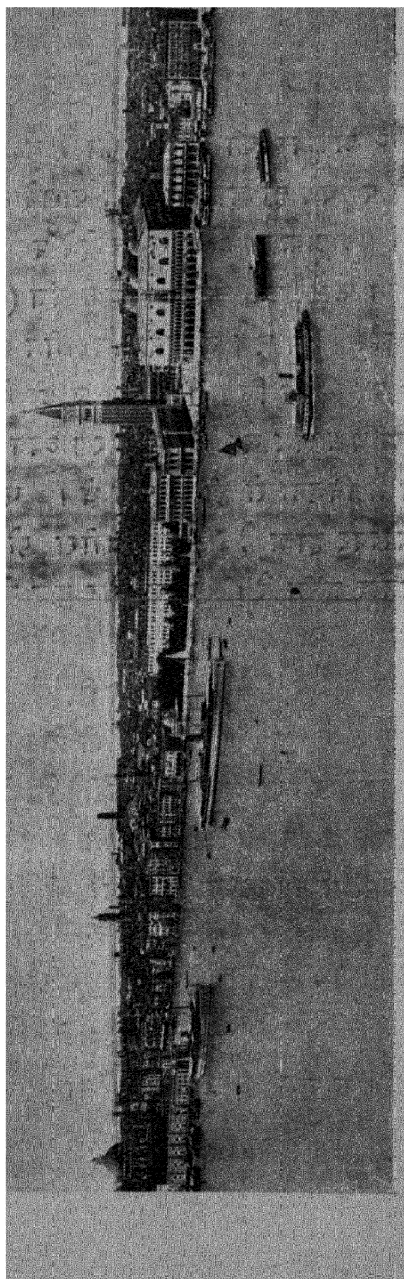
वेनिस नगर का दिग्दर्शन

एक पत्थर का और दो बड़े लोहे के पुल बने हैं। पत्थरवाले पुल को रियाल्टो ब्रिज कहते हैं। इस पर भी दूकानें बनी हैं। नगर

रियाल्टो ब्रिज

भर में करीब चार सौ पुल बताए जाते हैं। यहाँ की जल-भरी गलियों को देखकर वह दृश्य याद आता है जो काशी के बंगाली टोले की गलियों में गंगाजी की बाढ़ के समय देखने में आया था। इस नगर की जन-संख्या एक लाख बानबे हजार यानी काशी के बराबर ही है। बीच बीच में जहाँ जहाँ स्थान मिल गया है, गिरजाघर तथा उसके सामने मैदान बना दिया गया है। यहाँ भी धर्ममंदिर (गिरजाघर) गली गली हैं जिनमें सबेरे संध्या घंटे बजा करते हैं। यहाँ की पथप्रदर्शिका पुस्तिका अँगरेजी में १९२ पेज की इस नगर के मानचित्र सहित चार लीरा (नौ आने) को मिलती है। हमारे होटलवाले ने सात लीरा दाम ले लिया था जिसे फिर लौटाना पड़ा। इस

पुस्तिका में यहाँ के गिरजाघरों की संख्या अठासी दी हुई है। ये सब रोमन कैथलिक संप्रदाय के हैं। इनमें प्रसिद्ध सेंट मार्क कथीड्रल है जो इसी नाम के बड़े विस्तृत मैदान में समुद्र के किनारे है। इस मैदान को "पियाजा सेंट मार्को" कहते हैं। यह यहाँ का प्रधान

सेंट मार्क का दृश्य

स्थान है जो बहुत ही सुंदर है। इसी पियाजा (मैदान) के चारों ओर बड़ी बड़ी दूकानें और यात्रियों का प्रबंध करनेवाली कंपनियों के कार्यालय इत्यादि हैं। गलियाँ प्राय: काशी की तरह बहुत सँकरी हैं और इनमें दोनों ओर ऊँचे मकान काशी की समता को और भी बढ़ा देते हैं। यहाँ की सैर करने के लिये घंटे के हिसाब से भाड़ा तय करके "गंडोला" पर नालों में घूमना अच्छा होता है, बड़ी नहर के किनारेवाले बड़े बड़े भवनों में कितने ही संग्रहालय इत्यादि हैं और कई प्राचीन प्रसिद्ध भवन हैं जिन्हें गंडोलावाले या प्रदर्शक बताते जाते हैं।

यह नगर प्राचीन कला-कौशल और सौंदर्य के लिये बहुत प्रसिद्ध है। पहले यहाँ प्रजातंत्र (रिपबलिक) राज्य था। इस पर

सेंट मार्क का दूसरा दृश्य

निकटवर्ती देशवाले समय समय पर चढ़ाई करते और अपना दखल जमाया करते थे। यहाँ के वीर पुरुष उन्हें भगाते और उन पर आक्रमण करते थे। अब बहुत दिनों से यह इटली राज्य के अंतर्गत है। यहाँ की भाषा भी इटालियन है। यहाँ के लोग रोमन कैथलिक ईसाई हैं और गिरजाघर भी इसी संप्रदाय के हैं। अपने प्राचीन कला-कौशल को इसने बचा रखा है और हाथ के काँच, चीनी तथा सूई के काम अब भी बहुत बारीक, सुंदर तथा आश्चर्यजनक होते हैं।

"सेंट मार्क" गिरजाघर

इसी नाम के बड़े सुंदर मैदान में पूर्व की ओर पश्चिमाभिमुख यह बड़ा गिरजाघर है। इसके बाहरी भाग के फाटक पर अर्ध-

चंद्राकार सात मेहराब बने हैं, जिनके ऊपर मंदिरों की तरह मूर्तियाँ तथा मंदिरों के आकार के छोटे छोटे किंतु सुंदर गिरजाघर हैं। बीचवाले फाटक पर बहुत बड़े आकार के चार घोड़े बने हैं। ये घोड़े कांसे के हैं। पहले ये रोम में थे जहाँ से तुर्क लोग ले गए और वहाँ से सात सौ वर्ष हुए यहाँवाले ले आए। मेहराबों के भीतरी भाग तथा दालान में ऊपर छतों पर पच्चीकारी (मोजेइक) की सुनहरी जमीन और रंगीन मूर्तियाँ बहुत सुंदर बनी हैं जो अब तक चमाचम चमकती हैं। भीतर की भी कारीगरी बहुत ही प्रशंसनीय है। ईसा मसीह का जो मुख्य चबूतरा है उसके पीछे मूर्तियों की चित्रकारी-सहित मोती, जवाहिरों से जड़ी हुई सोने की बहुत बड़ी चादर लगी है जिसके देखने के लिये नियत समय पर विशेष शुल्क देकर जाना होता है। इसी के पिछवाड़े एक शांति-गृह (सैक्रिस्टी) बहुत ही सुंदर बना है। इसकी छत में सुनहरी तथा रंगीन मोजेइक की पच्चीकारी का बहुत सुंदर काम बना है। यह कारीगरी प्रसिद्ध कला-कोविद टिटियन के बनाए नमूने पर की गई है। इस गिरजाघर में अनेक चित्र आदि प्रसिद्ध चित्राचार्य टिंटोरेटो के नमूने पर बने हैं। यह गिरजाघर एक हजार वर्ष का बना हुआ बताया गया है और सौंदर्य में यूरोप के सर्वोत्तम गिरजाघरों में गिना जाता है।

धरहरा

इस गिरजाघर के सामने दक्षिण भाग में एक चौकोर ईंटों का सवा तीन सौ फुट ऊँचा धरहरा है जिसे सेंट मार्को का कैंपेनाइल कहते हैं। इसके भीतर ही बिजली का बड़ा पिंजड़ा बना है जिस पर शुल्क देकर चढ़ते हैं। ऊपरी भाग में चारों ओर घूमने के लिये छड़ों से सुरक्षित मैदान है जहाँ से नगर, निकट और दूर के टापू,

समुद्र, रेल का पुल इत्यादि बहुत अच्छी तरह दिखाई देता है। इस स्थान से दृश्य बहुत मनोहर देख पड़ता है। सबेरे ९ से १२ बजे तक और तीसरे पहर २ से ७ बजे तक इसके ऊपर जा सकते हैं। तीन लीरा यानी सात आना टिकट का देना पड़ता है।

अधिकारियों का महल

इस गिरजाघर के दक्खिन ओर पूर्व तक एक बहुत बड़ा चौमंजिला महल है जिसे "पैलेस्सो डुकेली" कहते हैं। इसके भीतर
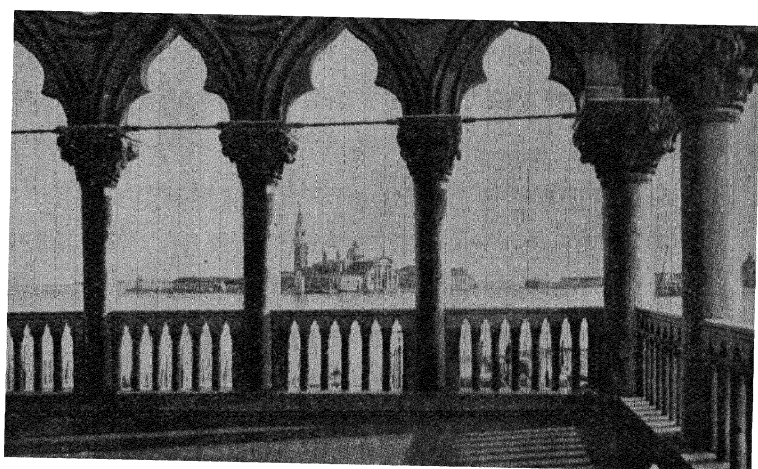
डुकेली

बड़ा आँगन है जिसके चारों ओर बहुत लंबे बड़े बड़े हाल हैं। इनमें अनेक कमरे तथा संग्रहालय हैं। यह छः सौ वर्ष का पुराना है और कारीगरी के लिये प्रसिद्ध है। यह महल ऐसा है कि इसकी नकल चित्रकार लोग किया करते हैं। इसके दक्षिणी भाग में बाहरी बीस खंभे बहुत बड़े लगे हैं जिनमें हर एक पर भिन्न भिन्न मूर्तियाँ बनी हैं। इसके दक्षिण पत्थर का बड़ा लंबा-चौड़ा चबूतरा है जो

समुद्र के किनारे दूर तक चला गया है। इस पर राजा की एक बहुत विशाल मूर्ति घोड़े पर सवार है जिसके चबूतरे की दीवारों में आस्ट्रिया और इटली की लड़ाई के चित्र बने हैं। इस महल का पूर्वी भाग नहर के पुल द्वारा बंदीगृह से मिला हुआ है। इस पुल का नाम "ब्रिज आव साइज" (आहों का पुल) है। कहा जाता है कि इस बंदीगृह में जो बँधुआ जाता था वह उसी में समाप्त हो जाता था। इसी कारण इस पुल का नाम आहों का पुल है।

सेंट मार्क का मैदान

इस मैदान के उत्तरीय भाग में एक बहुत पुरानी बड़ी घड़ी बनी है। यह कई सौ वर्ष पुरानी इटली की पहली घड़ी बताई जाती है। इस बड़े मैदान में गिरजाघर के सामने तीन बहुत ऊँचे खंभों पर सुवर्ण की उड़ाकू सिंह की मूर्तियाँ बनी हैं। इस मैदान में हजारों कबूतर हैं जिन्हें लोग दाना खिलाया करते हैं। आध पाव जोन्हरी और अन्य अनाज की पुड़िया एक लीरा की मिलती है। लोगों के हाथ पर चढ़कर कबूतर दाना खाने लगते हैं। इस मैदान के उत्तर, दक्खिन और पश्चिम ओर तिमंजले लंबे लंबे राजभवन बने हैं जिनके निचले भाग में बहुत बड़ी बड़ी दूकानें तथा भोजनालय हैं। यों तो दिन भर यहाँ भीड़ लगी रहती है पर तीसरे पहर, संध्या और कुछ रात तक बहुत रहती है। हर प्रकार के स्त्री-पुरुष अच्छे अच्छे वस्त्र-आभूषण इत्यादि से सुसज्जित घूमते पाए जाते हैं। दूकानें भी बिजली के प्रकाश में अपूर्व छटा दिखलाती हैं। यहाँ का घूमना भी एक बहुत बड़ी प्रदर्शिनी देखना है। हर प्रकार की बारीक कारीगरी की झलक यहाँ दिखाई देती है। जौह-रियों की दूकानों पर अनेक बहुमूल्य जवाहिरों के आभूषण, काँच की दीवारों के भीतर से प्रदर्शित, रहते हैं जिनको देखने के लिये भीड़

सुई की बेल तथा चित्रकारी

यहाँ की सुई के बेल-बूटों की कारीगरी भी बहुत प्रसिद्ध है। इसके कई कारखाने और स्कूल यहाँ हैं। हम लोगों ने दो-तीन देखे। हाथ के बहुत बारीक काम लड़कियाँ बना रही थीं। जिनीवा (स्विजरलैंड) में भी इस प्रकार के कुछ काम देखने में आए थे किंतु यहाँ यह बहुत बड़े पैमाने पर होता है। टेबूल पर बिछाने का सामान बारह सौ, पंद्रह सौ लीरा (दो दो तीन तीन सौ रुपए) का देखने में आया। मेमों के ओढ़ने के रूमाल हजार हजार, डेढ़ डेढ़ हजार लीरा के देखे गए। ये सामान अमेरिका तथा अन्यत्र के धनी लोगों के लिये उपयुक्त हैं। इसी तरह चमड़े के सामान हर प्रकार की बहुत बारीक कारीगरी के बड़े बड़े दामों के यहाँ बनते और बिकते हैं।

अन्य दर्शनीय स्थान

संट फ्रांसिस गिरजाघर में रंगीन मार्बल पर अनेक रंगों के पत्थरों की पच्चीकारी में बेल-बूटे, चित्र आदि बहुत अच्छे बने हैं। यहाँ छोटे छोटे मंदिरों में प्रभु ईसा मसीह तथा कुमारी मेरी की चमक-दमकवाली मूर्तियाँ हैं जिनकी पूजा होती है। यों तो बहुत गिरजा-घर हैं जिनके देखने के लिये बाहरी लोग भी धार्मिक भाव से बहुत आया करते हैं। स्टेशन की बगल में एक बड़ा गिरजा है जहाँ संध्या समय एक स्वर से लोग भजन गाते और स्तुति करते देख पड़ते थे। "पवित्र" जल माथे और शरीर में लगाते लोग चले जाते थे।

बार्थोलोम्यु कोलियोनि जेनरल (योद्धा) की मूर्ति घोड़े पर सवार बहुत ऊँचे चौतरे पर बहुत अच्छी है। इसकी प्रशंसा अँगरेज लेखक तथा कला के समीक्षक रस्किन ने की है। संसार की अद्भुत कारीगरी में इसकी गणना है। इसके पास ही एक

जानी पोलो गिरजाघर है जिसमें इटली के प्रसिद्ध लोगों की समाधियाँ हैं। यह यहाँ का वैसा ही स्थान बताया जाता है जैसा लंदन का वेस्टमिनिस्टर ऐबी है। यहाँ अनेक संग्रहालय, पुस्तकालय इत्यादि देखने योग्य हैं। कई तो बड़ी नहर के किनारे पर हैं। फल, तरकारी और मछली का हाट नहर के किनारे बड़े जोरों से सबेरे लगता है। कई प्राचीन ऐतिहासिक महल हैं। यहाँ भी हम लोगों को निरामिष भोजन होटलवाले बराबर देते रहे। किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ। जो चुंगी हम लोगों से इस देश में आने से पहले ही ली गई थी उसको लौटाने के लिये विशेष उद्योग करना पड़ा। यहाँ से चलने के पहले कस्टम हाउस (चुंगीघर) में उन चीजों को लेकर जाना पड़ा और कई स्थान पर रुकना पड़ा। कुछ घाटा भी सहना पड़ा किन्तु दाम वापस मिल गया। यहाँ की भाषा न जानने के कारण एक टूटी-फूटी अँगरेजी बोलनेवाला साथ लिया गया था। तीन दिन तक उसने कई घंटे रोज साथ दिया; चुंगी की वापसी में भी काम किया जिसका कुल पुरस्कार उसे एक सौ बीस लीरा (अठारह रुपए के करीब) दिया गया।

यूरोप से बिदाई

५ अक्तूबर को चुंगी लौटा, होटलवाले का बिल चुका, असबाब ले, 'हेलुआन' जहाज पर दोपहर को हम लोग सवार हुए। इसका तीसरे दरजे का टिकट चौदह पौंड प्रति व्यक्ति (करीब एक सौ नब्बे रुपया) बर्लिन नगर में ही देकर स्थान सुरक्षित कर लिया गया था। यह यात्रा मिस्र देश के प्राचीन बंदरगाह सिकंदरिया तक के लिये ठीक की गई थी। दूसरे दर्जे का चौबीस पौंड यानी सवा तीन सौ रुपए देकर, हमारे साथियों में से, एक सज्जन के वास्ते एक टिकट लिया गया था। चुंगीवाले ने उन चीजों

सहित जहाज पर बैठा दिया। इसी शर्त पर वापसी हुई थी। यह जहाज "लाइड ट्रेस्टीनो" कंपनी का है। यह भी एक बड़ी कंपनी है जिसके पचीस-तीस जहाज मिस्र, तुर्की, यूनान, भारतवर्ष, लंदन इत्यादि आया जाया करते हैं। इसका मुख्य स्थान 'ट्रीएस्टी' बंदरगाह, इटली में है। यह बंदरगाह तथा इस कंपनी के जहाज पहले आस्ट्रिया देश के थे। किंतु गत विध्वंसकारी युद्ध के बाद आस्ट्रिया से छीनकर इटली को दे दिए गए। यह जहाज "ओरामा" के आधे के बराबर है। इसमें कुल पाँच सौ के करीब यात्री थे। सब स्थान महीनों पहले से रिजर्व हो चुका था। इसमें चार दरजे हैं। पहला दरजा तो बहुत सुख का है, दूसरे और तीसरे में साधारण अंतर है। तीसरे दरजे में भी कमरा, मचान, गद्दा इत्यादि मिलता है। कमरे में जल की टोंटी लगी है। जो कमरा हम लोगों को मिला था उसमें नौ यात्रियों के लिये स्थान था। सब भरा था। कमरा बड़ा था इससे कोई कष्ट नहीं हुआ। निरामिष भोजन बराबर मिलता रहा। ऊपर टहलने का स्थान पाँच सौ फुट लंबा है और बैठने, लिखने-पढ़ने इत्यादि का कमरा दूसरे और तीसरे दरजेवालों के लिये एक ही में है। चुरुट, काफी इत्यादि पीने का कमरा दोनों दरजों के लिये एक ही में है। ये कमरे मखमली गद्देदार कुर्सियों तथा कोचों से सजे और बिजली की रोशनी तथा पंखों से यथेष्ट सुखप्रद हैं। चौतरफा खिड़कियों से हवा और रोशनी अच्छी आती थी। इसके ऊपर की मंजिल में भी काँच की दीवारों द्वारा सुरक्षित एक हवादार कमरा है जिसमें भाड़े की कुर्सियाँ लेकर यात्री विश्राम करते रहते थे।

सबेरे ७ से ९ बजे तक चाय, काफी, दूध, मक्खन, रोटी और मुरब्बा मिलता था तथा १२ बजे भोजन में कई तरकारियाँ, रोटी, मक्खन, फल,

दूध। फिर चार बजे मक्खन, रोटी, चाय, काफी और दूध मिलता था। संध्या के ६॥ बजे ब्यालू में तरकारी का रसा (सूप), रोटी, मक्खन, पनीर (दूध से बना हुआ), कई तरकारियाँ, दूध की बर्फ, दूध और मिठाई इत्यादि मिलती थी। रात को साढ़े आठ, पौने नौ बजे से सिनेमा का तमाशा नित्य होता था। इसमें यात्रियों की संख्या तीन सौ के करीब थी जो सभी मिस्र जाते थे। ओरामा की जैसी भीड़ तथा नाच-गाना नहीं था। स्नान का प्रबंध भी संतोषजनक था। चौथे दरजेवालों का भाड़ा तो नौ पौंड (सवा सौ रुपए के करीब) था किंतु इस दरजेवालों को बहुत कष्ट था। बंद जगह में अपने ही साथ के ओढ़ने बिछौने लिए जहाँ स्थान पाया वहीं भर दिए गए। वहीं गोदाम है, अँधेरा है, हवा भी नहीं आती या कम आती है और बेचारे पड़े हैं। खाने का भी प्रबंध इन्हें स्वयं करना पड़ता है। इनमें से कुछ तो साहब नौकरों से मिलकर यदि कहीं तीसरे दर्जे में कोई स्थान खाली मिला तो उसमें रात बिताते थे।

ब्रिंडिसी

६ अक्तूबर की दोपहर को जहाज ब्रिंडिसी स्थान पर दो घंटे के लिये ठहरा। यात्री लोग नगर घूमने और कुछ फल, समाचार-पत्र आदि लेने के लिये उतर पड़े। यहाँ डाक और माल का उतार-चढ़ाव हुआ। हम लोग भी घूमने निकल गए। घाट पर मोटर-टैक्सी और घोड़ागाड़ी अनेक यात्रियों ने भाड़े पर ली। यहाँ के घोड़े दुर्बल और छोटे थे। यूरोप में ऐसे घोड़े यहीं पहले-पहल देख पड़े। यह नगर तो छोटा है किंतु है प्राचीन बंदरगाह। यहाँ बड़ी गंदगी है। पहले लंदन तथा यूरोप में अन्यत्र जानेवाले लोग यहाँ उतरकर रेल द्वारा जाया करते थे। अनेक बंदरगाहों के हो जाने से इसका पुराना महत्त्व अब कम हो गया है। समुद्र-तट से सीधी

सड़क शहर की ओर चली गई है। दोतरफा दूकानें हैं। आध मील दूर जाकर एक छोटा सा मैदान पड़ता है जहाँ बीच में फुहारा छूटता रहता है। चारों ओर बैठने के लिये पत्थर की बेंचें पड़ी हैं और खजूर इत्यादि के वृक्ष लगे हैं। यहाँ से यात्रियों ने लंबे दाने-वाले और काले रंग के गोल दानेवाले अंगूर तथा सेब इत्यादि मोल लिए और लौटकर वे जहाज पर सवार हो गए। डेढ़ बजे जहाज चल पड़ा और भूमि से थोड़ी ही दूर पर एड्रियाटिक समुद्र में बराबर चलता रहा। इसके बाद फिर आयोनियन सागर में चला।

७ तारीख को सबेरे ग्रीस देश का किनारा दूर से बाएँ हाथ की ओर देख पड़ा। भूमध्यसागर में थोड़ी दूर बाद बड़ा टापू क्रीट बाएँ हाथ की ओर दूर से दिखाई दिया। इसके किनारों पर कुछ मकान और वृक्ष, पहाड़ इत्यादि देख पड़े। हमारा जहाज बराबर दक्षिण-पूर्व को चलता रहा। घड़ी का समय भी धीरे धीरे बदलता चला अर्थात् सुई आगे बढ़ानी पड़ती थी। ८ अक्तूबर को भोजन के बाद उतरने के लिये यात्री सामान ठीक करने लगे और तीसरे पहर २ बजे जहाज प्राचीन मिस्र देश के बंदरगाह सिकंदरिया (एलेक्जांड्रिया) में पहुँच गया।

मिस्र देश का हाल

सिकंदरिया घाट से कुछ दूर समुद्र में ही जहाज रुका रहा। मिस्र (ईजिप्ट) देश के डाक्टर तथा अन्य कर्मचारीगण जहाज ही पर आए। हम लोगों के पासपोर्ट की जाँच हुई और डाक्टरी परीक्षा की फीस छः पियास्टर प्रति व्यक्ति ली गई। यही डाक्टरी जाँच थी। जहाज चार बजे तीसरे पहर किनारे लगा। मिस्र देश का सिक्का पियास्टर कहलाता है जो सवा दो आने के बराबर होता है और इसका दशांश मिलियम कहलाता है। एक सौ पियास्टर का यहाँ एक पौंड कहलाता है। बीस, दस, पाँच और दो पियास्टरों के सिक्के चाँदी के, और एक पियास्टर या दस मिलियम, पाँच, दो, एक मिलियम के निकेल के होते हैं। एक सौ, पाँच सौ, एक हजार पियास्टरों के नोट होते हैं। अँगरेजी एक पौंड के बदले बंकों की दर साढ़े सत्तानबे पियास्टर समाचार-पत्रों में छपती है किन्तु भँजाने पर होटलों इत्यादि में पूरे सत्तानबे ही मिलते हैं। जहाज पर आती बार हमने उतरते ही व्यय के लिये एक पौंड का नोट भँजाया था जिसके, जहाजवाले ने, पंचानबे ही पियास्टर दिए थे। कुछ पुराने छोटे सिक्के ताँबे के भी हैं। नयों पर इस समय के बादशाह फौआद का चित्र बना है। पुरानों पर अरबी में लिखा हुआ है।

मिस्र देश अफरीका महाद्वीप के उत्तर-पूर्व का भाग है। यूरोप के द्वार पर होने के कारण इसका महत्त्व बहुत है। इस पर अन्य देशवालों की चढ़ाई बहुत प्राचीन समय से होती आई है। अब

ज़गलूल पाशा, जिन्होंने मिस्र देश को नवजीवन प्रदान किया

इस पर अँगरेज सरकार का प्रभाव तथा संरक्षण है। यहाँ अँगरेजी सेना भी है। अँगरेज सरकार ने अपना पंजा इस समय कुछ ढीला कर दिया है और यहाँ के राजा को शासन के कुछ विशेष अधिकार प्रदान किए गए हैं, जिसके लिये लोग स्वर्गीय जगलूल पाशा को धन्यवाद देते हैं और उनकी स्मृति को पूजते हैं। यहाँ के रहनेवाले अरबी बोलते हैं और इसलाम धर्म के अनुयायी हैं। यूरोप के द्वार पर होने तथा यूरोपवालों के आक्रमण होते रहने के कारण यूरोप के प्रायः सभी देशवाले यहाँ बहुत पाए जाते हैं। उनमें यूनान और इटलीवाले, जो यहाँ के नगीची हैं, अधिक संख्या में हैं। यहाँ की दूकानों, सड़कों, गलियों में फ्रांसीसी भाषा में नाम लिखे हैं क्योंकि फ्रांसवालों का अधिकार इस देश पर बहुत समय तक था।
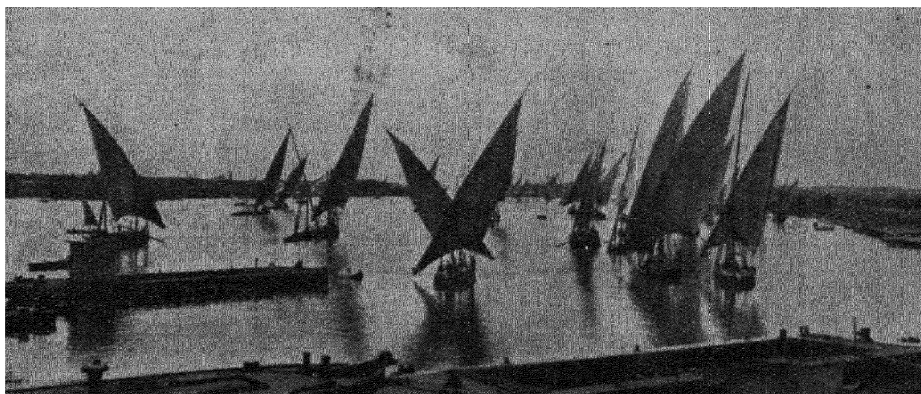
काहिरा में नील नदी

यहाँ का रहन-सहन भारतवर्ष के पश्चिमी पंजाब से बहुत समता रखता है। यहाँ के लोग भूमि से आठ दस अंगुल ऊँचा लम्बा झूल पहनते हैं और सिर पर सटी हुई टोपी के ऊपर एक

रूमाल या अँगोछा बाँधते हैं। हाँ, पढ़े लिखों का पहिरावा कोट, पत-लून, कालर, नेकटाई के साथ झब्बेदार लाल तुर्की टोपी है। भारत-वासी (सिंधी) सज्जनों की दूकानें प्रायः सभी नगरों में हैं। इनके पास जाने से भारतीय यात्रियों को ये लोग बड़ी सहानुभूति के साथ सहायता देते हैं। यहाँ के आदिम निवासियों का रहन-सहन भारतीय मुसलमानों की भाँति है। अंतर यह है कि यहाँ वाले दाढ़ी मुड़वाते हैं। कदाचित् ही हजार में एक दाढ़ी रखे मिल जायँ। मिस्र देश की जन-संख्या एक करोड़ चालीस लाख के लगभग बताई जाती है, जिसमें ईसाइयों की संख्या दस लाख है, बाकी प्रायः सब मुसलमान हैं। देश तो बड़ा है, किंतु प्रसिद्ध मरुभूमि इसके बहुत बड़े भाग में है। नील नदी, जिसे अँगरेजी में नाइल कहते हैं, दक्षिण से उत्तर को बहती है और यहाँ का जीवनाधार है। इसके दोनों किनारों पर कोसों की चौड़ाई में इसकी नहरों द्वारा भी भूमि सींची जाती है और खेती अच्छी होती है। बाढ़ आने पर इसका जल बहुत दूर दूर तक फैल जाता है और समुद्र की तरह दिखाई देता है। इस बाढ़ के जल को रोककर भूमि को लोग खूब तर कर लेते हैं और पानी हट या सूख जाने पर इस भाग में भी अच्छी खेती होती है। रुई, ऊख, मकई, गेहूँ, जौ, धान इत्यादि प्रायः सभी चीजों की उपज होती है। यहाँ की हाथ की कारीगरी प्रसिद्ध है। यहाँ ईसाइयों के भी प्रसिद्ध स्थान हैं जिन्हें देखने के लिये यूरोप और अमरीका के धनी यात्री बहुत आते रहते हैं। फिलस्तीन (जेरुसलम), जो प्रभु ईसा मसीह का मुख्य स्थान था, इस देश के उत्तर ओर पड़ता है। पश्चिमी देशों के यात्री यहाँ से होकर वहाँ जाते हैं; इस कारण यात्री यहाँ बहुत आते हैं।

बहुत बड़ी बड़ी पूर्वी कारीगरी की वस्तुओं के बेचने की अनेक दूकानें यहाँ प्राय: सभी शहरों में हैं। यहाँ के लोग बाहरी यात्रियों से अनेक रीतियों से पैसा पैदा करने का उद्योग करते हैं; चोरी, जेबकटी इत्यादि होती है और गंदगी भी बहुत है। इन कारणों से यहाँ आनेवालों को पुस्तकों तथा अन्य देश के यात्रियों द्वारा सावधान रहने की चेतावनी मिलती है। होटलों, दूकानों इत्यादि में बहुत मोल-भाव होता है। यदि आप के साथ कोई गाइड या प्रदर्शक है तो आपकी खरीदी हुई वस्तु में उसका हिस्सा बढ़ाकर दूकानवाले बहुत दाम ले लेते हैं, फिर पीछे से जाकर गाइड अपना भाग उगाह लाते हैं। इसलिये यथासंभव स्वावलंबी होना यहाँ के लिये अच्छा है। यहाँ आने से पहले अरबी भाषा की थोड़ी जानकारी आवश्यक है। बोल-चाल की अरबी जानने के लिये अँगरेजी में कई पुस्तकें छपी हैं, जिनके द्वारा साधारण जानकारी भी प्राप्त हो सकती है। अनजान भारतीयों को यहाँ के भारतीय दूकानदारों की सहायता बहुत ही रक्षाप्रद होती है। इनके द्वारा होटलों में ठहरने का बंदोबस्त करना तथा अन्य काम करना सस्ता है।

इस देश में होटल भी बहुत समझ-बूझकर ठीक करना चाहिए। या तो बहुत मँहगे होटलों में बहुत दाम देकर रहने का अपने आप बन्दोबस्त करना चाहिए या जानकारों द्वारा। किसी सस्ते होटल में भूला-भटका यात्री जा पड़ता है तो उसे बहुत हानि उठाने का डर रहता है। यहाँ के गाइड (प्रदर्शक) लोग बड़े महात्मा होते हैं। उनसे बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है। यह देश गर्म है। यहाँ वर्षा बहुत कम या प्राय: नहीं होती है। खाने के लिये अनाजी, शाकाहारी, निरामिष सामान मिलता है पर सफाई की कमी

रहती है। यहाँ मक्खियों और मच्छरों की भी अधिकता है। जाड़े के दिनों में कदाचित् कम हों।

बड़े नगरों में मोटर और ट्रामगाड़ियाँ खूब दौड़ती हैं। घोड़ों की गाड़ियाँ (फिटन, खुली हुई) बहुत मिलती हैं। यहाँ ऊँटों और गदहों की विशेषता है। उन पर बड़ी कारीगरी के चारजामे कसे रहते हैं। छोटी छोटी गाड़ियों में भी गधे बहुत जोते जाते हैं। खेतों में ऊँटों, बैलों, भैंसों, घोड़ों और खच्चरों द्वारा हल इत्यादि चलाने का काम लिया जाता है। इस काम में गधे नहीं लगाए जाते। पूछने पर मालूम हुआ कि उनमें बल कम होता है, इस कारण वे खेती के लिये उपयुक्त नहीं होते। भैंस का ही दूध-मक्खन प्राय: मिलता है। पूछने पर बड़े बड़े होटलों में भी लोग दूध गाय का ही कह देते हैं, विशेषकर जब उन्हें यह पता लग जाता है कि आप गाय का दूध चाहते हैं। फल और तरकारियाँ प्राय: सभी प्रकार की मिलती हैं। ताजे अंगूर, अनार तथा छुहारे और अंजीर बहुत सस्ते मिलते हैं। भारतवर्ष की तरह गोल फूली हुई रोटियाँ गाड़ियों पर लादकर नानबाई बेचते फिरते हैं। शायद ये रोटियाँ तंदूर की पकी होती हैं। यहाँवाले गेहूँ के आटे की बहुत मोटी मोटी भारी रोटी और मसालेदार तरकारी भारतवर्ष की तरह बनाते हैं। पानी रखने के मिट्टी के बर्तनों पर प्राय: काई लगी हुई देख पड़ी। यहाँवाले नारियल और मिट्टी की फर्शी का हुक्का पीते हैं।

अन्य मुसलमानी देशों की तरह यहाँ भी स्त्रियों में पर्दा था और अब भी एक प्रकार का है। किंतु यूरोप के अधिक संपर्क के कारण उठता जाता है। बाजार या हाट-बाट में स्त्रियाँ देख पड़ती हैं, मोल-भाव और क्रय-विक्रय पर्दे के द्वारा भली भाँति करती हैं। यह पर्दा विचित्र और नाम-मात्र का ही है। स्त्रियों का कपड़ा बिलकुल काले

रंग का सिर से पैर तक, झूल की तरह, होता है। सिर ढका रहता है, किंतु उस झूल में मुँह का भाग खुला रहता

मिस्र देश की महिला, पुरानी पोशाक में

है। काले रंग का एक जालीदार लंबा कपड़ा, कदाचित् रेशमी, एक बालिश्त चौड़ा और हाथ डेढ़ हाथ लंबा आँख छोड़ कर नाक

पर से नीचे की ओर लटकता और आँखों को छोड़कर मुँह के बाकी बचे भाग को ढके रहता है, यद्यपि उसकी झँझरियों द्वारा हवा और रोशनी उस भाग पर भी अच्छी तरह जाती है। इस जाली के बीच एक पतली डोरी बँधी रहती है जो नाक पर से होती हुई सिर में जाकर कहीं बाँध या फँसा दी जाती है ताकि उस जाली को वह नीचे न गिरने दे। परंतु यह डोरी उस जाली को ऊपर भी अधिक न खींच ले और आँखें भी न ढक जायँ, इसलिये तीन अंगुल लंबी गड़ारीदार चाँदी या किसी अन्य धातु की प्राय: सोने की कलई चढ़ी या हाथीदाँत या किसी दूसरी हड्डी की एक फोंफी उस जाली के पास वाली डोरी के सिरे में लगी होती है। इसी फोंफी के भीतर से डोरी सिर पर जाती है। यह फोंफी नाक पर और ललाट के निचले भाग पर रहती है और जाली तथा उसकी बागडोर को नियत स्थान पर ठहराए रहती है। आँखें बिलकुल खुली रहती हैं और नाक के छेद तथा मुख जाली के भीतर से काम करते हैं। इस प्रकार की पर्देदार स्त्रियों के फोटो होटलों तथा दूकानों में अन्य चित्रों के साथ बहुत बिका करते हैं। अन्य देशों से आए हुए यात्री इन चित्रों को कौतूहल-वश अपने अपने देशों को ले जाया करते हैं।

यहाँ भी जमींदार काश्तकार की प्रथा है। जमींदार, महाजन और सौदागर धनी हैं, किंतु वास्तविक खेती करनेवाले गरीब हैं। अधिकांश जनता प्राय: गरीब ही है। लोगों को जूता साफ करनेवाले बहुत घेरे रहते हैं और जूते साफ करके पैसा पैदा करते हैं। जूतों के साफ रहते हुए भी ये चट साफ करने लगते हैं। पूछ पूछकर नाकों दम कर देते हैं।

सिकंदरिया (एलेकजेंड्रिया)

इस नगर की जनसंख्या पाँच लाख के करीब है। यह समुद्र

के किनारे बसा है और बहुत पुराना नगर है। आठ अक्तूबर को तीसरे पहर चार बजे यहाँ हम लोग जहाज से उतरे। होटलवाले एजेंटों की भरमार थी। टामस कुक ने रेजिना पैलेस होटल में ठहरने की सलाह दी थी और सचेत रहने के लिये कई सज्जनों ने कहा था। इस कारण इसी होटलवाले आदमी को साथ लेकर चले। चुंगीघर में असबाब की जाँच हुई। कोई कष्ट नहीं हुआ। एक बक्स खोलवाकर देख लिया गया और सिगार-सिगरेट के बारे में पूछा गया। हर बक्स का चार पियास्टर (नौ आना) देना पड़ा और छुट्टी मिल गई। रेजिना पैलेस होटल समुद्र-किनारे दूसरी ओर है। यह बड़ा होटल है किंतु बहुत महँगा है। इसमें केवल ठहरने का प्रति व्यक्ति पचास पियास्टर और दशांश नौकरी का अर्थात् पचपन पियास्टर (पौने नौ रुपया) रोज देना पड़ा। ठंढे पानी का स्नान बिना अधिक दाम के उसी में था। संध्या के भोजन का प्रति व्यक्ति पौने तीन रुपया लगा। साग, भाजी और थोड़ी मक्खन-रोटी थी। तीन छटाँक के करीब एक पियाली दूध का दाम चार पियास्टर (नौ आना), सबेरे के जलपान का ग्यारह पियास्टर (डेढ़ रुपया)। इसलिये इन दो भोजनों के बाद हम लोगों ने बाजार से फल, मेवा लेकर तथा अन्य उपाहार-गृहों में खाया।

इस होटल में पहुँचते ही एक शानदार गाइड महाशय ने आ घेरा और अपनी बातों की झड़ी द्वारा धरती-आकाश एक कर दिया। एक सौ साठ पियास्टर (साढ़े बाईस रुपया) मय सवारी इत्यादि खर्च के वहाँ का दृश्य दिखाने का उनसे तै हुआ। होटल-वाले ने भी इसे ठीक बताया। ये लोग प्राय: मौसेरे भाई होते हैं। एक दूसरे की प्रशंसा करके बाहरी यात्रियों को फँसाने में मदद करते हैं। हम लोगों को ये मोटरटैक्सी में लिवा गए। ९ अक्तूबर

मिस्त्र देश के सम्राट प्रथम फाऊद

को यहाँ के राजा सम्राट् फाऊद के राज्याभिषेक का वार्षिकोत्सव था। इसके उपलक्ष्य में इस देश के अन्य स्थानों से बहुत रईस तथा धनी-मानी लोग अभिवादन करने आए थे। ८वीं की संध्या को भी जाँच की दृष्टि से बिजली की रोशनी शहर भर में हुई थी और समुद्र-किनारे की सड़कों पर, जहाँ हम लोग टिके थे, रोशनी ख़ूब जगमगाती थी। ९ को सबेरे से ही लोग राजभवन में जाकर भेंट इत्यादि देने लगे। हमारे गाइड महाशय ने भी हमारी मोटर महल के द्वार से ले जाकर एक झलक दिखा दी।

वहाँ से बाजार में होते एक बगीचे में गए। इसके भीतर पांपी पिलर (पांपी का स्तंभ) देखा। चालीस फुट ऊँचे स्थान पर यह अठासी फुट ऊँचा एक पत्थर का स्तंभ खड़ा है, जिसके सिर पर एक चौरस पत्थर है। यह स्तंभ नौ फुट गोल ललछहूँ रंग के चित्तीदार (ग्रेनाइट) पत्थर का है। साढ़े सोलह सौ वर्ष हुए, यह उस समय के सम्राट् डायोक्लीशियन के स्मारक-स्वरूप वहाँ खड़ा किया गया था। इसके चौतरे के बाहरी भाग में अनेक देशों के यात्रियों ने अपने अपने नाम और पते लिख या खोद दिए हैं। इसके पास ही पूरब की तरफ दो पत्थर के स्फिंक्स चौतरों पर बने हैं। पशु के शरीर पर मनुष्य का मुँह और सिर सुंदर लाल ग्रेनाइट पत्थर के हैं। इसके निकट ही भूधरी में उतरकर गुफा में जाना होता है। उसकी दोनों दीवारों में उस समय की समाधियों के चिह्न हैं। कहा जाता है कि इन गुफाओं में उस समय के यूनानी और मिस्री पूजा इत्यादि किया करते थे। जब यहाँ पर ईसाई धर्म का प्रचार आरंभ हुआ तब, मूर्तिपूजा का अंत करने के अभिप्राय से, आग लगाकर ये स्थान जला दिए गए। इस हाते में प्राचीन पत्थर की अनेक मूर्तियाँ कुछ टूटी और कुछ ठीक पड़ी हैं।

केमेल शोगाफा की समाधि

पांपी से पश्चिम थोड़ी दूर पर यह समाधि है। भूधरी में तीन तह का यह एक महल है जो चट्टानों में खोदकर उसी खोदाई के काम में बना हुआ है। भूमि के ऊपर एक तह पर इसके भीतर जाने का द्वार और फाटक है। भीतर की खोदाई की बड़ी प्रशंसा है। जिन्होंने बंबई के पास एलिफेंटा भूधरी इत्यादि देखे हैं वे इसका अनुमान कर सकते हैं। सन् १९०० में इसका पता लगा और तब खोदा गया और इसके भीतरी भाग के साफ करके देखा गया। इसके पहले यह दबा-दबाया अज्ञात था। अनुमान है कि यह अठारह उन्नीस सौ वर्ष का पुराना है, इसके सबसे नीचे-वाली तह में प्राय: पानी भरा रहता है जो भीतर आता है। इसके भीतरी भागों में सुरंग की तरह बना है जिसके कमरों में समाधियाँ और उनके चिह्न तथा आकार हैं। भीतर की कारीगरी, चित्रकारी और बनावट सराहने योग्य हैं। हमारे प्रदर्शक महोदय ने इसे नहीं दिखलाया, भुलावा देकर इसे छोड़ दिया। इसका ब्योरा तथा इसकी प्रशंसा प्रदर्शिका पुस्तिका के नौ पन्नों में है जिसे उस समय तक हम नहीं देख सके थे। इसके छूट जाने का पश्चा-त्ताप रह गया।

अद्‌भुत संग्रहालय

यहाँ भी एक संग्रहालय ग्रीको-रोमन नाम का है। ९ तारीख को गर्मी थी और राजोत्सव के कारण यह तीसरे पहर बंद था, इस कारण प्रदर्शक महाशय इसे न दिखा सके। हम लोग १० तारीख को सबेरे स्वतंत्र इसे देखने गए। सबेरे ९ से १२ बजे तक और तीसरे पहर ३ से ५ बजे तक जाड़े में तथा ४ से ६ बजे तक गर्मी में यह खुला रहता है। जाड़े में दाे और गर्मी में एक

पियास्टर शुल्क लगता है। ट्रामगाड़ी में या पैदल जा सकते हैं। २२ बड़े बड़े कमरों में प्राचीन मूर्तियाँ तथा शव और सामान इत्यादि संगृहीत तथा प्रदर्शित हैं। प्रसिद्ध ऐतिहासिक सम्राट् और वक्ता "मार्कस ओरीलियस" की सफेद संगमर्मर की सात फ़ुट ऊँची सुंदर मूर्ति एक कमरे में खड़ी है। एक स्थान पर मिस्र के प्राचीन देवता ऐपिस—साँड़—की सुंदर मूर्ति काले पत्थर की साढ़े छः फुट ऊँची है। दोनों सींगों के बीच इसके मस्तक पर सूर्यमुखी चक्र मुकुट की भाँति शोभायमान है। इस देश के लोग भारतीयों की भाँति, कृषक होने के कारण या चाहे जिस कारण से, इसे बड़ी श्रद्धा-भक्ति से पवित्र मानते और पूजते थे। एक कमरे के बीच में एक बहुत बड़े गिद्ध की मूर्ति है। दो-तीन कमरों में कई हजार बरसों के पुराने शव रखे हुए हैं। इतनी पुरानी अस्थि होने पर भी दाँत, नख, सिर के बाल इत्यादि सब ज्यों के त्यों हैं। जिस मसाले से इन मृतक-शरीरों को उस समय के लोग सुरक्षित कर देते थे उसका पता अब तक नहीं लग सका है। प्राचीन मिस्र-निवासियों का विश्वास था कि पाँच सौ वर्ष बाद इन्हीं शरीरों में आत्मा का प्रवेश फिर से हो जायगा, इसलिये अँतड़ी इत्यादि निकालकर शरीर की कोठरी को मसाला द्वारा सुरक्षित करके रत्न-आभूषण सहित बक्स के भीतर रखकर इन्हें संचित करते थे। उस समय के उनके पुरोहितों और धर्मशिक्षकों का कहाँ तक इस प्रथा में हाथ था और उनको इसके द्वारा क्या क्या प्राप्त होता था, यह इतिहासों के पढ़ने और जाननेवाले बता सकेंगे। कहा जाता है कि इन शवों पर उसी समय के कपड़े की पट्टियाँ लपेटी हुई हैं। कई के पास कपड़े के जूते उस समय के ही सुरक्षित रखे हुए हैं। इन कमरों में प्राचीन काल के अनेक और सामान भी प्रदर्शित

हैं। बाहर कमरों के बीच एक आँगन है। यहाँ भी प्राचीन मूर्तियाँ हैं।

प्रसिद्ध पुस्तकालय

प्राचीन काल में यहाँ दो लाख हस्तलिखित पुस्तकों का, संसार भर में कदाचित् अद्वितीय, संग्रह था। यहाँ के राजा "प्रथम टालेमी" ने बहुत व्यय और परिश्रम से इन पुस्तकों को इकट्ठा किया था। सन् ६४० ईसवी में इस देश को एक मुसलमान सेनापति ने चढ़ाई करके जीता था। उस समय इस विद्या के भांडार को उन्होंने जला दिया। खलीफा उमर ने उनको लिखा था कि "यदि ये पुस्तकें कुरान का समर्थन करती हैं तो व्यर्थ हैं, जला दी जायँ; यदि ये क़ुरान के विरुद्ध हैं तो ये हमारे पवित्र पुस्तक के प्रतिकूल हैं अतः जला दी जायँ।" छः महीने तक ये पुस्तकें चार हजार हम्मामों (स्नानागारों) का पानी गरम करने में लगाई गईं और इनमें लिखी विद्या से संसार सदैव के लिये वंचित रखा गया।

अन्य बातें

नील नद की नहर, नमक बनाने का कारखाना तथा जंतु-संग्रहालय देखने योग्य हैं। संग्रहालय है तो छोटा, परंतु यहाँ के लिये अच्छा है। सूदान देश का बालोंवाला भारी सूअर तथा सफेद बारहसिंगा यहाँ के जंतु-विशेष देख पड़े।

चुरुट बनाने का यहाँ बहुत बड़ा कारखाना है। सिगरेट और सिगार यहाँ के बने संसार भर में प्रसिद्ध हैं। पीनेवाले ही इसके स्वाद तथा भेद को जान सकते हैं। लंदन, पैरिस, बर्लिन, विएना इत्यादि सभी बड़े बड़े नगरों में यहाँ के बने हुए चुरुटों का विज्ञापन बड़े जोरों के साथ देखने में आता है।

सुंदर छोटा ग्राम 'अबूकीर' समुद्र किनारे बसा है। यह भी दर्शनीय है। नगर का "रामले" भाग तथा उद्यान और किला और 'नौजा' उद्यान, जो नब्बे एकड़ में है, देखने योग्य हैं। इनके अतिरिक्त और भी अनेक दर्शनीय स्थान पथ-प्रदर्शिका पुस्तक में गिनाए गए हैं जिनको देखने के लिये समय तथा साधन आवश्यक है।

बादशाह का जुलूस

बादशाह फाऊद के राज्याभिषेक का ६ अक्तूबर को वार्षिकोत्सव था। सारा नगर सजाया गया था और बिजली की रोशनी से जगमगाता था। संध्या समय साढ़े छः बजे मोटर पर बादशाह की सवारी धीरे धीरे निकली। उनके पीछे मोटरों तथा गाड़ियों में अफसर इत्यादि थे। सड़कों के किनारे दर्शकों की भीड़ थी। कई स्थानों पर कुर्सियाँ तथा बेंचें रखी थीं जिन पर लोग भाड़ा देकर बैठे प्रतीक्षा करते थे। हाथ उठा उठाकर जनता के सलाम का बादशाह उत्तर देते चले जाते थे। दर्शकों का हर जगह बहुत बड़ा समारोह था। खाने-पीने की चीजें अनेक दूकानों पर, जो गाड़ियों और ठेलों में लगी हुई थीं, बराबर बिक रही थीं। शर्बत और पानी वाले कटोरे बजाते, लोगों को पिलाते, पैसे लेते, चले जाते थे।

काहिरा (कैरो)

१० अक्तूबर को हमारे प्रदर्शक महाशय होटल में पहुँच गए और स्टेशन पर गाड़ी में बैठाने की उन्होंने कृपा की। जाने से
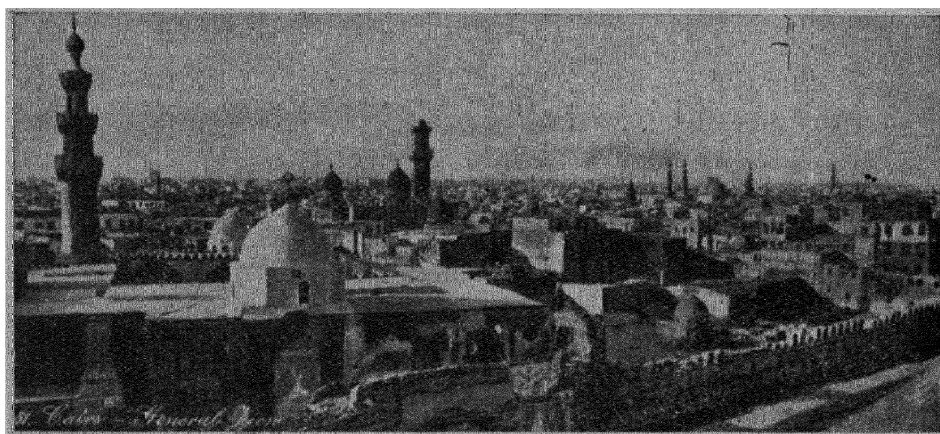
काहिरा

पहले वे अपनी फीस माँगने लगे। अंत में पंद्रह पियास्टर लेकर ही छोड़ा। दोपहर की गाड़ी से हम लोग सिकंदरिया से चले और साढ़े तीन बजे काहिरा उतरे। यहाँ भी स्टेशन पर अनेक होटल-वालों ने घेरा, किंतु एक यहूदी दूकानदार ने, जो सिकंदरिया तक जहाज में साथ आए थे, ब्रिस्टल होटल बता दिया था और एक प्रदर्शक को भी वहाँ हम लोगों से मिलने और हमें यहाँ के दृश्य दिखाने के लिये सहेज दिया था। बस, हम लोग उसी होटल में जा ठहरे। हर एक के लिये अलग-अलग कमरा पानी की टोंटी

सहित पचीस पियास्टर (साढ़े तीन रुपए) रोज पर ठीक हुआ। ठंढे पानी का स्नान भी उसी मूल्य में सम्मिलित था। सब समय के भोजन का पैंतीस पियास्टर यानी कुल साठ पियास्टर (साढ़े आठ रुपया) रोज तय हुआ। प्रदर्शक महाशय से भी दृश्य दिखाने का छ: पौंड (अस्सी रुपया) सवारी इत्यादि सहित तारीख ११ और १२ के लिये ठीक हुआ। १० को संध्या समय हवा खाने का भी इसी में ठहरा था। यह सज्जन बिना पढ़े-लिखे किंतु फर्राटे की अँगरेजी बोलनेवाले व्यवसायी प्रदर्शक हैं। हज कर चुके हैं। दाढ़ी मुड़ाए भूल पहने धार्मिक पुरुष हैं। इनके साथ हम लोगों ने नगर के प्राय: सभी प्रसिद्ध स्थान देखे। फिर १४ को भी विशेष दृश्यों के देखने का दो सौ तिहत्तर पियास्टर (साढ़े अड़तीस रुपए) और तय हुआ। इसी में मोटर का भाड़ा इत्यादि भी सम्मिलित था यह नगर मिस्र देश का प्रधान स्थान है और नील नदी के किनारे पर बसा है। इसकी जनसंख्या दस लाख है। यह ढाई हजार वर्ष का पुराना शहर है। यहाँ प्राय: सभी स्थान, बाजार, होटल, दूकानें और मकान इत्यादि यूरोप की तरह के हैं। यहाँ अनेक होटल तथा उपाहार-गृह बड़े बड़े हैं। मोटरों तथा घोड़ागाड़ियों के अतिरिक्त ट्रामगाड़ियाँ, मोटर-बसें, गदहों की गाड़ियाँ इत्यादि खूब दौड़ा करती हैं। हमारे होटल के पास रात के दो-तीन बजे तक बहुत शोरगुल रहा करता था। पीछे से मालूम हुआ कि यह महल्ला बहुत अच्छा नहीं है, किंतु ठहर जाने पर उस होटल को बदलना अनुचित सा जान पड़ा। इसलिये उसी में रह गए। मुसलमानी संसार के बड़े शहरों में कुस्तुनतुनिया के बाद इसी का नाम गिना जाता है। यह इस्लामी सभ्यता का द्वितीय केंद्र स्थान है। अक्तूबर से अप्रैल तक यहाँ का ऋतु अच्छा रहता है। मई से अगस्त तक बहुत गर्मी रहती है। यह नगर बहुत

बड़ा है। नील नदी की कई शाखाएँ हैं, उनके बीच के स्थान में तथा सभी किनारों पर यह बसा है। यहाँ की छपी पुस्तक-प्रदर्शिकाएँ कई ग्रंथकारों ने लिखी हैं। उनमें हर प्रकार की सूचनाएँ मिलती हैं। उनमें यहाँ के गाइडों (प्रदर्शकों) से भी बहुत सावधान रहने की सलाह दी गई है। सवारियों का भाड़ा स्थानों की दूरी इत्यादि सब जान सकते हैं। हमारे प्रदर्शक महाशय ने पहले दिन संध्या समय जोड़ी की फिटन पर हम लोगों को शहर घुमाया और नील नद के किनारों के दृश्य दिखाए। गर्मी में यह बहुत भला मालूम हुआ। इस बड़े नद पर तीन बड़े बड़े पुल हैं और इसकी शाखाओं और नहरों पर भी कई हैं। इस नदी में बड़ी बड़ी दो दो और तीन तीन तह ऊँची नावें हैं, जिन्हें नौकाघर (हौस-बोट) कहते हैं। इसमें विहार करने के वास्ते लोग रहते हैं। ये नावें वैसी ही हैं जैसी श्रीनगर (काश्मीर) में होती हैं। इनमें भी हर प्रकार के भोग-विलास का घर का सा प्रबंध रहता है। धनी यात्री इन नावों में इस नदी के किनारे के दृश्य देखने तथा इसके ऊपरी भागों के किनारे बसे अनेक नगरों की सैर करने के लिये जाया करते हैं। उनकी ऐसी यात्रा का प्रबंध यहाँ की यात्रा-कंपनियाँ किया करती हैं। यहाँ की प्राचीन सभ्यता का स्थान पश्चिमी (यूरोपीय) सभ्यता बड़ी शीघ्रता के साथ ग्रहण करती जा रही है। बिजली की रोशनी सारे शहर को प्रकाशित करती है। यहाँ की दूकानों पर भी फ्रांसीसी भाषा में अधिक सूचनाएँ लिखी मिलती हैं। दूकानों पर विज्ञापन भी यूरोप की तरह चित्ताकर्षक हुआ करते हैं। भारतीय (सिंधी) सज्जनों की कई बड़ी बड़ी दूकानें भारतीय तथा मिस्री कारीगरी की चीजों की हैं जिनमें अच्छा संग्रह है। ये भाई भी भारतीय यात्रियों की

सहायता करने में सचेष्ट रहते हैं। इनकी दूकानों पर भारतीय नाम देखकर हम लोग इनके यहाँ गए और परस्पर वार्तालाप से जानकारी हुई। इन्होंने बड़े हर्ष से हमारी सहायता करने का वचन दिया।

गीजा स्तूप (पिरेमिड)

बाल्यावस्था से पुस्तकों में यहाँ के प्राचीन स्तूप (पिरेमिड) का उल्लेख पढ़ते आते थे किंतु देखने और उसके वास्तविक
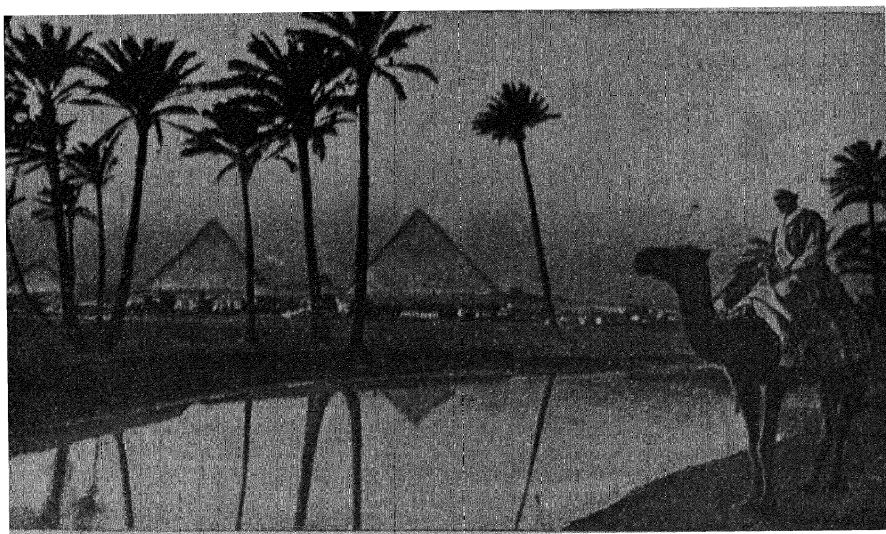
गीजा स्तूप का दृश्य

रूप का ज्ञान प्राप्त करने का यही अवसर मिला। होटल से मोटर-बस में जाकर (ट्रामगाड़ी में भी जा सकते हैं) "गीजा" स्थान पर ट्राम नंबर १४ में सवार होकर पहाड़ी के निकट उतरे। वहाँ अनेक ऊँट तथा गदहे और खच्चर जीन (काठी) कसे सवारी के लिये प्रस्तुत थे। ऊँटों पर चढ़कर हम लोग ऊपर गए।

दूरी अधिक न थी। पैदल भी सुगमता से जा सकते थे किंतु प्रदर्शक के ठीके में ऊँट पर चढ़ना भी सम्मिलित था। ऊपर जाकर प्रसिद्ध प्राचीन स्तूप तथा सहारा की प्रसिद्ध मरुभूमि (रेगिस्तान) का एक छोर देखा। आगे बढ़कर "स्फिक्स" के पास गए। लौटकर पिरेमिड के पास सवारी छोड़ दी गई और पैदल ट्राम तक आए।

पिरेमिड कई हैं। ये पाँच हजार वर्ष से भी अधिक पुराने हैं। इनमें से सबसे बड़ा और प्राचीनतम ईसा से ३७३३ वर्ष पहले का अर्थात् ५६६२ वर्ष का है। इसे "खियाप्स या खुफू" ने अपनी समाधि के निमित्त बनवाया था। ये यहाँ के प्रसिद्ध "फेरो" राजा थे। इस स्तूप में चालीस चालीस घन फुट के पत्थरों की तेईस लाख चट्टानें लगी हैं। इसके बनाने में एक लाख मनुष्यों ने हर साल तीन तीन महीने बीस साल तक काम किया था। इसकी खड़ी ऊँचाई साढ़े चार सौ फुट है। चारों ओर की ढालुआँ भुजाओं की ऊँचाई हर एक की पाँच सौ अड़सठ फुट है। इसकी लंबाई सात सौ चौंसठ फुट है। तेरह एकड़ भूमि पर यह खड़ा है और नौ करोड़ बीस लाख घन फुट पत्थर इसमें लगे हैं। इसके ऊपर भी बिना विशेष कठिनाई के पंद्रह मिनट में चढ़ सकते हैं, किंतु ठंढे समय में इस पर चढ़ना चाहिए। चढ़ने में स्थानीय तीन आदमियों की सहायता लेनी पड़ती है। दो हाथ पकड़े आगे को खींचते हैं और तीसरा पीछे से सहारा देकर आगे को बढ़ाता जाता है। सबसे ऊपर का चौरस चौतरा १२ गज लंबा और इतना ही चौड़ा है। वहाँ से सारे शहर तथा नील नद का दृश्य बहुत अच्छा दीख पड़ता है। दूसरी तरफ मरुभूमि का विस्तृत मैदान है जिसमें पेड़-

पत्ता या जल नहीं है केवल बालू ही बालू है। इसके भीतर गुफा है जिसमें बहुत झुककर जाना होता है। भूमि से थोड़ी ही ऊँचाई पर चढ़कर गुफा में भीतर जाने का रास्ता है। दो अरबी मनुष्य मोमबत्ती जलाए हाथ में लिए साथ आगे-पीछे भीतर जाते हैं। भीतर या ऊपर जाने का दस दस पियास्टर लगता है और टिकट वहीं मिलता है। भीतर ही भीतर कुछ ढालू स्थान और डेढ़ सौ सीढ़ियों पर चढ़ने के बाद एक बड़ा कमरा दीख पड़ा जहाँ खड़े हो सके। यहाँ पर उस समय के राजा की समाधि है। मैगनीसियम का पट्टा जलाकर चाँदनी के प्रकाश में इस स्थान को प्रदर्शक ने दिखाया। वह भीतर चलने के लिये कहता था, किंतु हम लोग यहीं से बाहर लौट आए और स्वच्छ वायु में खड़े हो हम लोगों ने साँस ली।

इसके निकट ही दो और ऐसे ही, पर कुछ छोटे और थोड़े बाद के बने, स्तूप हैं जिनमें उक्त राजा के नातेदारों की समाधियाँ हैं। इसके आगे बालू के टूहों के पास एक बहुत बड़ा पत्थर का "स्फिक्स" (पशु के शरीर पर मनुष्य का सिर) है। यह भी पाँच हजार वर्ष का बना है। न-जाने क्यों यह बनाया गया था। भूमि से छासठ फुट ऊँचा है। पूँछ से अगले पंजे तक एक सौ सत्तासी फुट लंबा है। इसके कान साढ़े चार चार फुट लंबे, नाक पाँच फुट सात इंच और हँसता हुआ मुख सात फुट सात इंच लंबा है। समूचे चेहरे की लंबाई तेरह फुट आठ इंच है। इस बृहत् आकार की यह विचित्र मूर्ति किस अभिप्राय से यहाँ खड़ी की गई थी, अब तक पता नहीं लग सका। किसी समय इसका धड़ बालू में ढक गया था, केवल सिर ऊपर दीख पड़ता था। यहाँ एक मंदिर है जिसके भीतर भूधरी में पुजारी रहा करते थे। इस मूर्ति के
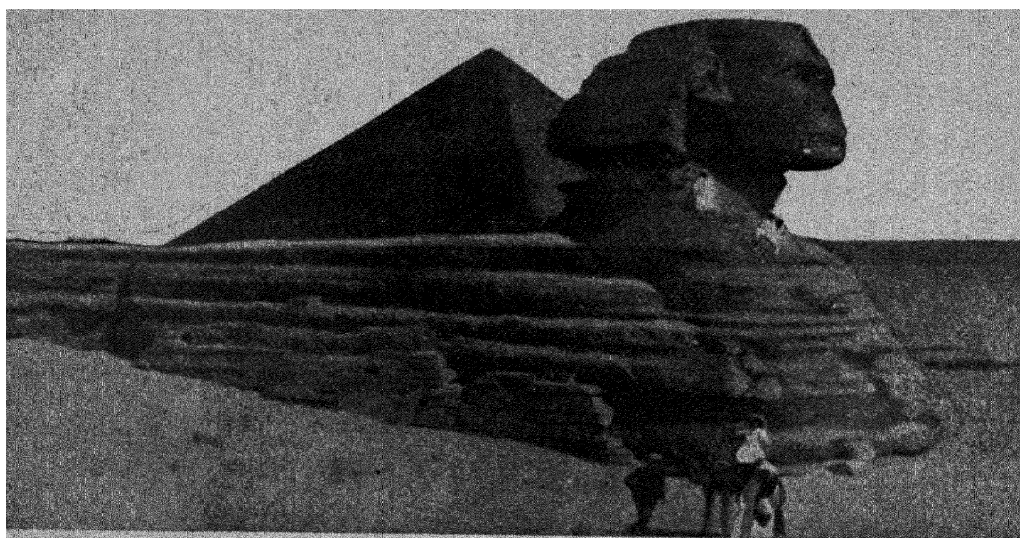
स्फिंक्स और पिरेमिड

ऊँट की सवारी

पास फोटो खींचनेवाला एक यूनानी अपना सामान लिए मिला। उसने हम तीनों के ऊँटों पर चढ़े हुए फोटो की छ प्रतियाँ डेढ़ सौ पियास्टर पर देने के लिये कहा। पीछे पचहत्तर पियास्टर (साढ़े दस रुपए) पर तीन बड़े और छोटे आकार के फोटो उसने देना स्वीकार किया और दूसरे दिन होटल में आकर वह दे गया। पचीस पियास्टर (साढ़े तीन रुपए) पर चित्र का मूल काँच (नेगेटिव) भी उसने दे दिया।

यहाँ और भी कई पुरानी समाधियाँ हैं। इस स्थान से छः मील उत्तर "अबूगोआश" के कई स्तूप हैं और आठ मील दक्खिन भी "अबू सीर" के १४ स्तूप थे जिनमें से ४ अब तक हैं। इन्हें देखने जाने के लिये आधा आधा दिन और भी चाहिए। यहाँ से दस दस पियास्टर पर ऊँट या गदहे की सवारी पर बालू में जा सकते हैं, परंतु इन स्तूपों को देखने के बाद औरों को देखने का कष्ट उठाना व्यर्थ है। इसके पास ही पाँच हजार वर्ष पुरानी भूधरी में एक समाधि मिली थी, जिसमें सोने का गृहस्थी का सामान तथा अन्य बहुत चीजें थीं।

जंतु-संग्रहालय

इन स्तूपों को देखकर हम लोग नगर की ओर लौटे। १४ नंबर की ट्रामगाड़ी से उतरने पर थोड़ी ही दूर पर यह जंतु-संग्रहालय रास्ते में ही, एक बहुत बड़े बगीचे के भीतर, मिला। इसका क्षेत्रफल बावन एकड़ है। गीजावाली ट्राम या मोटर-बस में यहाँ जा सकते हैं। भीतर जाने का शुल्क आधा पियास्टर लगता है। यहाँ अफरीका के जंतुओं का संग्रह है जो प्रायः तीन सौ अस्सी प्रकार के हैं। इनके अतिरिक्त सुंदर रंगीन पंखवाले तोते तथा

अन्य पक्षी, अनेक प्रकार के बंदर, सर्प, बिच्छू इत्यादि हैं। सर्पादि एक गर्म काँचघर में संगृहीत हैं जिसके भीतर जाने का एक पियास्टर टिकट और लगता है। तालाब में हिपोपटेमस और कई नाक और घड़ियाल हैं। इनके संरक्षक को आधा या एक पियास्टर देने से इन्हें बुलाकर वह खिलाता है और इनके भारी गुफा जैसे मुख को दिखाता है। यह सब तीसरे पहर से संध्या तक देखने का है। यहाँ भी बड़े बड़े अन्य ऐसे संग्रहालयों की तरह हर प्रकार के अनेक जंतु हैं। सर्पों में कुछ ऐसे हैं जो बालू के भीतर ही घुसे रहते हैं, इसी प्रकार के बिच्छू भी हैं। कई चलते-फिरते कछुए हैं। कहा जाता है कि ये दो सौ वर्ष के हैं। इस बगीचे में कई बनावटी पहाड़ और झरने हैं जिनसे पानी गिरा और बहा करता है। 'बबून' नाम के लंबे मुँहवाले बंदर हैं जिनके लाल मुँह पर सफेद धारी है। बाघ भी कई तरह के हैं। गर्मी के मारे ये सब जानवर व्याकुल थे। इस बगीचे में भोजनालय भी है।

मसजिदें

यहाँ कई बहुत प्राचीन और विशाल मसजिदें हैं। इनका प्रबंध वक्फ़ कमेटी के अधीन है। इनको देखने के लिये चार पियास्टर (नौ आने) का एक टिकट वक्फ़ कार्यालय से या होटलों के दरबान से ले सकते हैं। इसी एक टिकट द्वारा सभी मसजिदों को देख सकते हैं। मसजिदों में जूता उतारकर या जूते के ऊपर वहाँ का दूसरा जूता पहनकर जा सकते हैं। वहाँवाले जूते पर जूता पहनाकर फीते से बाँध देते हैं और लौटती बार उतार लेते हैं। एक या आधा पियास्टर "बखशीश" पाते हैं।

इनमें तेरह सौ वर्ष की सबसे पुरानी मसजिद सन् ६४२ ईस्वी में "अम्र इब्न इल अस्सी" की बनवाई हुई है। प्राचीनता और पवित्रता में मक्का के बाद इसी की गणना होती है, किंतु यह बहुत
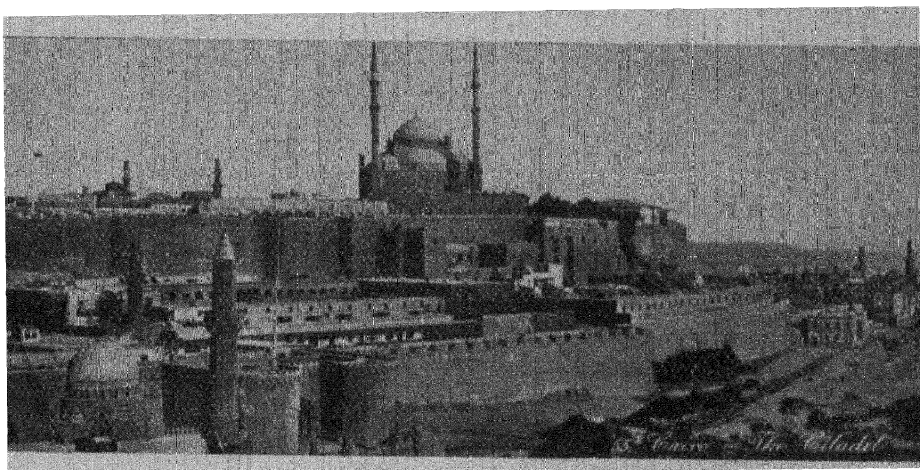
काहिरा का किला

बेमरम्मत है। इसमें पत्थर के ३६६ खंभे हैं। कहा जाता है कि भिन्न भिन्न देशों के गिरजाघरों से ये खंभे यहाँ लाकर लगाए गए थे। इनमें से छोटे छोटे दो खंभों में रुधिर के चिह्न हैं और बहुत गहरे लंबे लाल गड्ढे हो गए हैं। बीमार लोग अच्छे होने की इच्छा से इन खंभों को इतनी देर तक जीभ से चाटते थे, कि रुधिर बहने लगता था। अब ऐसा करना बंद कर दिया गया है। ये खंभे लोहे के छड़ों से घेर दिए गए हैं। पश्चिम के दालान में दो ऊँचे खंभे एक बीते के अंदाज की जगह बीच में छोड़कर लगे हैं। यहाँवालों का विश्वास था कि जो मनुष्य इन खंभों के बीच

से निकल जाय वह ईमानदार है। यदि दुर्भाग्यवश वह मोटे शरीर का हुआ और न निकल सका तो बेईमान समझा जाता था। यह प्रथा भी बंद कर दी गई। बीच का भाग ईंटों से बंद करके खंभे लोहे के छड़ से घेर दिए गए हैं।
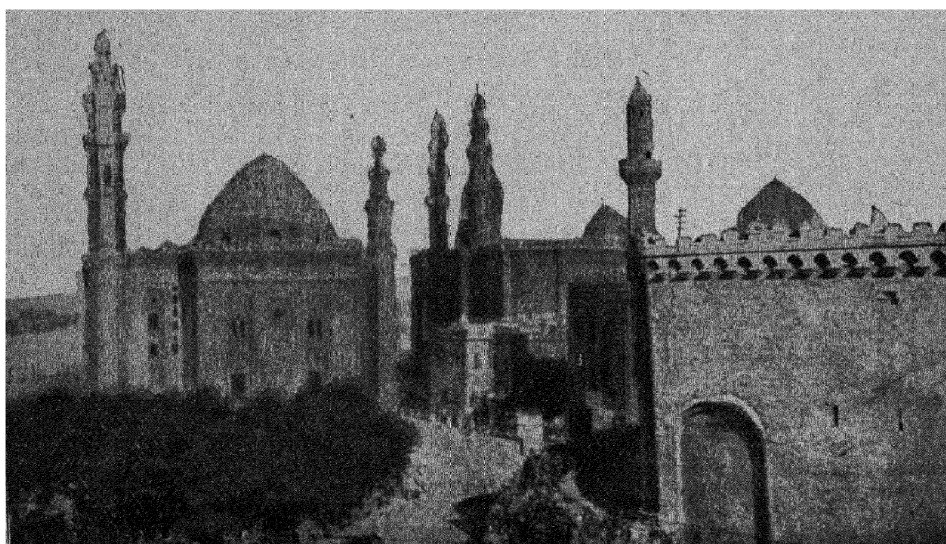
मस्जिद सुलतान हसन

कई और बहुत बड़ी बड़ी मसजिदें लाखों रुपए की लागत से बड़ी कारीगरी के साथ बनाई गई हैं। "सुल्तान हसन" नाम की मसजिद में १३२ बड़े बड़े कमरे हैं। कारीगरी अपूर्व है। २८५ फुट ऊँचा गुंबज है। लकड़ी में नक्काशी का काम बहुत सुंदर है। ऐसी ही "रेफाई" मसजिद है जिसमें अलाबास्टर पत्थर की दीवारें और बहुत सुंदर खंभे हैं। काहिरा की पुस्तिका में पचीसों प्रसिद्ध मसजिदों का वर्णन है। हमारे प्रदर्शक ने भी हमें छः सात

मसजिदें दिखलाईं जिनसे इन विशाल धर्म-भवनों का अनुमान हो गया। इनमें प्राय: प्रसिद्ध इसलाम धर्म-प्रवर्तकों तथा राजाओं की समाधियाँ भी हैं। शहर से बाहर दो-तीन मील दूर उजाड़ में बहुत
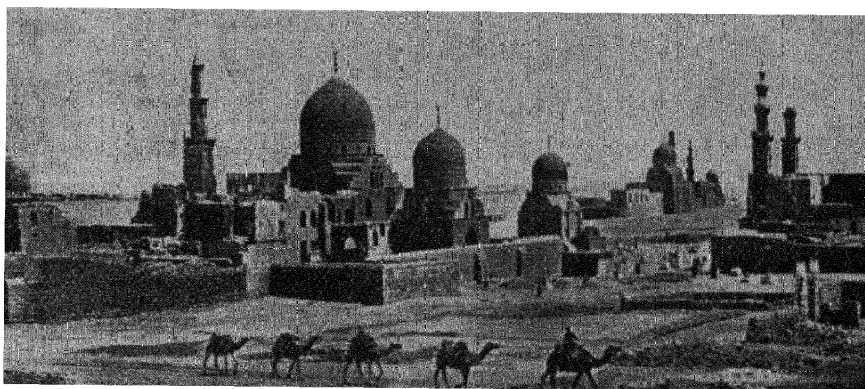
खलीफा लोगों की कब्रें

बड़ा कब्रिस्तान है। यह कोसों के घेरे में है। एक एक हाते में एक एक घर के लोगों की कब्रें हैं। एक बड़े हाते में बादशाहों की और दूसरे में उन कई खलीफाओं की कब्रें हैं जो यहाँ प्राचीन मूर्ति-पूजकों से धर्म-प्रचार के हेतु लड़े थे और मारे गए थे। यहाँ लोगों के छोटे छोटे घर भी हैं जिनमें कुटुंबी आकर एक दिन रहते, कब्रों की पूजा करते और फिर अपने घर को लौट जाया करते हैं। ये घर प्राय: बंद पड़े रहते हैं।

अरबी विश्वविद्यालय

यहाँ की प्राचीन तथा प्रधान संस्थाओं में यह बहुत बड़ा विद्यालय है। इसमें जाने के लिये भी वही नियम है जो अन्य मसजिदों के लिये है। जूते पर जूता चढ़ाकर उसी टिकट में जाना होता

है। अँगरेजी टोपीवालों को टोपी उतार लेनी होती है। यह भी एक मसजिद है। इसका नाम "जामेउल् अज़हर" या "एल् अज़हर" है। इसका बहुत बड़ा आँगन है जिसके चारों ओर लंबे-चौड़े दालान हैं। फाटक के सामने का दालान बहुत ही लंबा-चौड़ा है, और बड़े बड़े खंभों पर छत पटी हुई है। इसमें चटाइयाँ बिछी हैं। इस विश्वविद्यालय में—जो अपने ढंग का निराला है—पंद्रह हजार विद्यार्थी पढ़ते हैं। यहाँ की पाठ-विधि पूरे सत्रह वर्ष की है। जो विद्यार्थी बाहर से पढ़कर आते हैं वे थोड़े समय तक रहकर भी पढ़ सकते हैं। यहाँ कुरान तथा अरबी के अन्य ग्रंथों के अतिरिक्त कुछ भूगोल और अंकगणित इत्यादि की भी पढ़ाई होती है। हमारे यहाँ की प्राचीन पद्धति की तरह यहाँ भी पलथी मारकर भूमि पर बैठ मौलवी लोग पढ़ाते रहते हैं। यहाँ पढ़ने के लिये देश-देशांतर से बड़ी बड़ी अवस्था के लोग भी आते हैं। देश के अनुसार इनकी श्रेणियाँ भी बनाई जाती हैं। चार सौ के करीब अध्यापक हैं। इसका व्यय वक्फ़ (देवोत्तर संपत्ति) से चलता है जिसकी वार्षिक आय साढ़े सात लाख रुपए के करीब है। विद्यार्थियों को कुछ छात्रवृत्तियाँ भी दी जाती हैं। दो भारतीय विद्यार्थी यहाँ हमसे बड़े प्रेम के साथ मिले। एक नोआखाली (बंगाल) के युवक हैं और दूसरे अफगानी पठान जो बरेली में रहते थे और वहाँ से यहाँ विद्याध्ययन के लिये आए हैं। पूछने से जान पड़ा कि यहाँ मसजिदों के सामने, सड़कों पर गाते, बाजा बजाते जाने में कोई आपत्ति नहीं की जाती। नमाज पढ़नेवाले मसजिद में नमाज पढ़ा करते हैं; चाहे बाहर कोई बाजा बजावे या गावे, उनसे कोई मतलब नहीं। दाढ़ी रखना भी धर्म की दृष्टि से आवश्यक नहीं है।

सक्कारा स्तूप तथा समाधियाँ

सक्कारा, हेलियोपोलिस तथा मटरिया की यात्रा के लिये गाइड से साढ़े अड़तीस रुपया तय हुआ था। सक्कारा की यात्रा में हम लोगों को वे मोटर-टैक्सी में लिवा गए। उसके मीटर द्वारा भाड़ा तो बहुत होता था किंतु उन्होंने उससे थोड़े में तय कर लिया था। पचीस मील के करीब जाना और उतना ही आना पड़ा। यह यात्रा बहुत थोड़े व्यय में हो सकती है। एक रास्ता "मीना हौस होटल" से गीजा के बड़े स्तूप के पास तक है। वहाँ से ऊँट या गदहों पर चढ़कर जा सकते हैं। दूसरा रास्ता काहिरा और गीजा से मोटर में जाने का है जिससे कम समय लगने के विचार से हम लोग गए थे। तीसरा रास्ता कम व्यय का, किंतु एक दिन लगाने का, काहिरा से रेल द्वारा वह है जो "लुक्सर आसवान" की ओर नील नदी के किनारे होते हुए जाता है। बद्रेशीन स्टेशन पर उतरते ही ऊँट, गदहे इत्यादि काठी कसे मिलते हैं। पंद्रह पियास्टर सक्कारा जाने-आने का भाड़ा लगता है, ऊपर से कुछ बखशीश भी देनी होती है। गदहेवाला सब दिखाकर स्टेशन पहुँचा देता है। सबेरे की गाड़ी से कुछ भोजन तथा पीने का पानी साथ में लेकर जाना चाहिए। मिस्र देश की प्राचीन राजधानी 'मेम्फिस' थी जो अब उजाड़ पड़ी है। वह इस समय एक छोटा सा गाँव है। रास्ते में ही यह पड़ता है। यहाँ के उस समय के राजाओं की समाधियाँ सक्कारा के स्तूपों और भूधरियों में थीं और हैं। साथ में मोमबत्ती, दियासलाई तथा मैगनीशियम का तार या फीता भूधरी के भीतर देखने के लिये ले जाना चाहिए। वहाँ के रहनेवालों के पास भी ये चीज़ें मिल जाती हैं जिनके लिये बखशीश दी जाती है। सक्कारा चार मील लंबा और चौथाई मील चौड़ा, रेगिस्तान में है

जहाँ मनुष्यों और उन जंतुओं की समाधियाँ हैं जो पवित्र माने जाते थे, जैसे साँड़, कुत्ते और बिल्लियाँ। जाते हुए रास्ते में मेमूफिस के उजाड़ मैदान में द्वितीय "रामसिस" नाम के प्राचीन राजा की चित्तीदार ग्रेनाइट पत्थर की छब्बीस फुट लंबी मूर्त्ति चित्त पड़ी है। इसका मुकुट ६॥ फुट का अलग सिरहाने पड़ा है। इसके थोड़ी दूर पर गंदे पानी के एक गड्ढे में अलाबास्टर पत्थर की २६ फुट
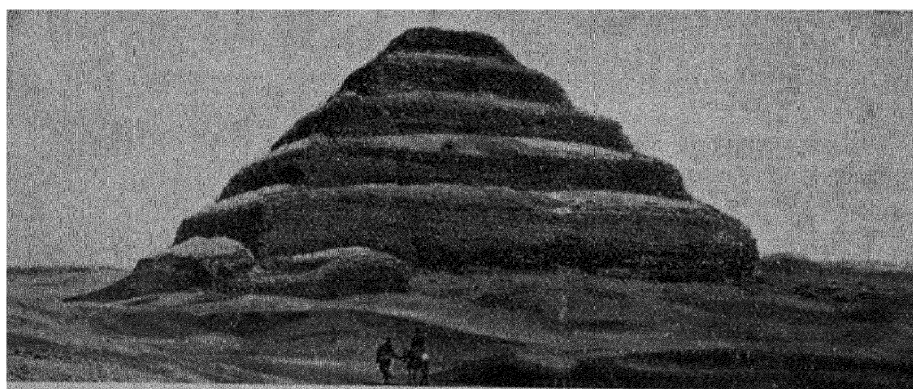
सक्कारा स्तूप (पिरेमिड)

लंबी और १४ फुट ऊँची 'स्फिंक्स' की मूर्त्ति है। उससे थोड़ी ही दूर पर एक कच्ची चहारदीवारी के भीतर उसी राजा 'द्वितीय रामसिस' की दूसरी विशाल मूर्त्ति ४२ फुट लंबी है जिसके कई भाग टूट गए हैं।

यहाँ से सक्कारा जाने के दो रास्ते हैं। एक पश्चिम की ओर से, जो सुगम है, दूसरा उत्तर की ओर से। सक्कारा मरुभूमि के किनारे पर है जहाँ बहुत ही प्राचीन समय के ग्यारह स्तूप हैं। ये गीजावालों से भी पुराने बताए जाते हैं। यहाँ इसी बालू के समुद्र में, नीचे, पत्थरों की चट्टानें हैं जिनमें कई भूधरियाँ हैं। इन भूधरियों के भीतर समा-

धियाँ हैं। एक के भीतर दीवारों पर उस समय के सामाजिक दृश्यों के चित्र खुदे और रँगे हैं। एक दूसरी भूधरी में, जिसे 'सिरापियम' या वृषभों की समाधियाँ कहते हैं, पवित्र साँड़ों की पचीस समाधियाँ हैं। इसके भीतर सुरंग का लंबा-चौड़ा बंद रास्ता चट्टानों में भीतर भीतर खुदा हुआ चला गया है। इसी सुरंग के दोनों ओर वृषभों की समाधियाँ बहुत बड़े बड़े पत्थरों के बक्सों में थीं। ये बक्स बड़े बड़े बैलों के पूरे अँट जाने के बराबर मय ढक्कनों के हैं जिनके भीतर का सामान आक्रमणकारियों ने लूट लिया है और ये बक्स ज्यों के त्यों वहीं पड़े हैं। आश्चर्य है कि इतने नीचे भूधरी में इतने विशाल पत्थरों के बक्स कैसे गए या बने या रखे गए थे। उनका टसकाना बहुत भारी बात है। एक तीसरी भूधरी में बहुत झुककर जाना होता है। उसमें झुके हुए, घुटनों पर हाथ टेके, दूर तक जाने के बाद एक ऊँचा कमरा मिलता है जहाँ खड़े होने का स्थान है। वहाँ प्राचीन काल की कब्रें हैं। यह भी पत्थर की चट्टानों में खोदकर बनाया हुआ है। यह सब तथा अन्य बड़े आश्चर्य के काम यहाँ देखकर प्राचीन काल की कारीगरी पर 'ध्यान देते हुए साधारण लोगों की कौन कहे बड़े बड़े इंजीनियर और वैज्ञानिक लोग हैरान हैं।

प्राचीन नगर तथा गिरजाघर

काहिरा के प्राचीन नगर का भाग, जो चार हजार वर्ष का बताया जाता है, अब भी अपनी असली, किंतु बेमरम्मत, अवस्था में विद्यमान है। पुरानी चाल के फाटक अब भी लगे हैं। इस फाटकबंदी के भीतर गरीबों के पुराने घर हैं जिनमें आदिम ईसाई, जिन्हें 'काप्ट' कहते हैं, रहते हैं। ये लोग शरीर पर, प्रायः बाँह में,

वस्थिका की तरह चौशूल का गोदना गोदाते हैं। ये बड़े ग़रीब हैं। ।।हरी आदमी को देखकर "बखशीश" माँगते हैं। इनका एक ।ाचीन गिरजाघर भी इसी महल्ले में है। इस गिरजाघर के पीछे भूधरी है। कहा जाता है कि माता कुमारी 'मेरी' ईसा मसीह को, जब वे तीन महीने के थे, लेकर इसी भूधरी में छिपी थीं। इसमें इस समय नदी की बाढ़ के कारण पानी भरा है। मोमबत्ती जलाकर भीतर देखते हैं। इसी महल्ले में प्राचीन यहूदियों की आबादी तथा उनका गिरजाघर भी है। इसमें गिजाल के चमड़े पर हिब्रू भाषा में लिखा हुआ प्राचीन बाइ-बिल धर्म-ग्रंथ गोल लपेटा हुआ गोलाकार खड़ी अलमारी के से बने बक्स में रखा है। यहाँ तेल का अखण्ड दीप जला करता है। इसके पीछे, नीचे, जल का पवित्र कुंड है जिसमें लोग नहाते और तैरते हैं। इनके धर्म-प्रवर्तक पैगंबर मूसा माने जाते हैं जिनके द्वारा ईश्वर ने ज्ञानोपदेश किया था।

सूर्य्यनगर (हेलियापोलिस)

तीस वर्ष के करीब का बना हुआ यह नया नगर शहर से सात-आठ मील पर मरुभूमि के किनारे शुद्ध वायु में बसाया गया है। यहाँ बिजली की रेलगाड़ी द्वारा जा सकते हैं। बहुत स्वच्छ सुंदर गगनस्पर्शी मकान यहाँ बने हैं। यह स्थान काहिरा से डेढ़ सौ फुट की ऊँचाई पर है। इस नवीन नगर में काहिरा के धनी-मानी लोग रहते हैं। यहाँ के घर सहस्र-रजनी-चरित्र (अलिफ लैला) की कथा में वर्णित भवनों की तरह हैं। यह नगर बहुत ही स्वच्छ है और यहाँ का जल-वायु स्वास्थ्यकर है। हर प्रकार की दूकानें भी हैं। बहुत बड़ा सुख-संपन्न "हेलियोपोलिस पैलेस होटल" तथा

छोटा "हेलियोपोलिस हौस" हैं। बहुत अच्छे उद्यान तथा वाटिकाएँ हैं। रविवार को बहुत लोग चित्त-विनोद के लिये भी तथा जलवायु परिवर्तन करने काहिरा से आते हैं। बर्लिन की तरह "लूना पार्क" है जिसमें आमोद-प्रमोद का बहुत सामान है। काहिरा के अतिरिक्त अन्य स्थानों के लोग भी चित्त-विनोद के निमित्त आ
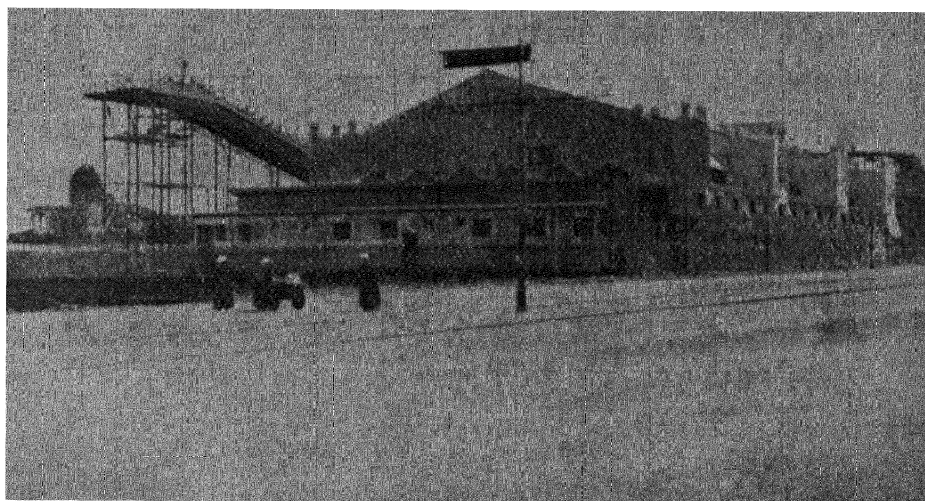
हेलियोपोलिस, लूनापार्क

जाते हैं। सफेद रंग की ट्रामगाड़ियाँ भी इस नगर को काहिरा से जाती हैं। यह नवीन नगर दर्शनीय है।

पुराना हेलियापोलिस तथा मटरिया

काहिरा से रेल द्वारा मटरिया जा सकते हैं। नवीन हेलियापोलिस से भी मटरिया (प्राचीन हेलियापोलिस) के लिये ट्रामगाड़ियाँ जाती हैं। ठंढा रहने की अवस्था में पैदल भी जा सकते हैं।

मटरिया स्टेशन से पश्चिम करीब एक मील दूर खेतों में एक चौपहल पत्थर का खंभा, जिसे "औवलिस्क" कहते हैं, गड़ा है। यह स्थान प्राचीन "हेलियापोलिस" (सूर्यनगर) का स्थल है, जहाँ कई हजार वर्ष पहले सूर्य की पूजा होती थी। इस खंभे की ऊँचाई ६६ फुट है। इसे चार हजार साढ़े तीन सौ वर्ष पूर्व उस समय के राजा ने गाड़ा था। इस पर यहाँ की हिरोग्लिफिक्स लिपि (चित्रों के रूप में अक्षरों) में यह सब वृत्तांत खुदा हुआ है। इसकी जड़ में नील नदी की बाढ़ का जल भर आता है। भूमि के नीचे १७ फुट वह खंभा गड़ा है और इसकी जड़ चार चार फुट की चौपहल है।

संत जोजेफ गिरजाघर तथा दो हजार वर्ष का वृक्ष

स्टेशन से पूरब मटरिया का ईसाई रोमन कैथलिक गिरजाघर है जो सेंट जोजेफ चर्च कहलाता है। इसमें कुमारी मेरी, ईसा मसीह तथा संत यूसुफ की मूर्तियों की पूजा होती है। दीवारों पर बाइबिल की तथा ईसा मसीह के जीवन की कथाएँ चित्रित हैं। इसके पास ही कच्ची चहारदीवारी से घिरे बगीचे में दो हजार वर्ष से भी अधिक का पुराना गूलर का वह वृक्ष है जिसके नीचे कुमारी मेरी ने शिशु ईसा को गोद में लिए विश्राम किया था। इस वृक्ष की केवल एक डाल का ऊपरी भाग हरा है जिसमें गूलर (अंजीर) के फल तथा पत्तियाँ लगी हैं। बाकी सब ठूँठ सूखा पड़ा है। इसके खुरथों में चिथड़े लपेटे हुए हैं। ऐसा करना धर्म माना जाता है। इसी बगीचे में एक पुराना कूप है जिसका जल पीने लायक मीठा है और पवित्र माना जाता है। कहा जाता है कि

इसका जल पहले खारा था। जब ईसा मसीह यहाँ पधारे तब उनके लिये इसका जल मीठा हो गया।

पाठशालाएँ

विद्या-प्रचार में यह देश भी बहुत पिछड़ा हुआ है। पढ़-लिख सकनेवालों की संख्या सौ में केवल दस बताई जाती है। तो भी भारतवर्ष से, जहाँ की संख्या सौ में साढ़े सात ही है, मिस्र में अच्छी है। हमारे सूबे संयुक्तप्रांत से तो, जिसकी संख्या प्रति सैकड़े केवल पौने चार ही है, यह बहुत ही बढ़ा-चढ़ा है। क्या यह बात सही है कि अँगरेजी राज्य की जहाँ जितनी अधिक जकड़बंदी है वहाँ उसी हिसाब से अविद्यादेवी का राज्य अधिक है? दो तीन वर्ष हुए, श्रीमती जकिया सुलेमान, यहाँ की एक विदुषी देवी, भारतवर्ष के कई नगरों में, काशी में भी, गई थीं और वहाँ टौनहाल में उनका व्याख्यान भी हुआ था। इन दिनों ये काहिरा के "कस्र उल दोवारा" किंडर गार्टन पाठशाला की प्रधान अध्यापिका हैं। इनकी कृपा से हम लोगों ने इनका तथा अन्य कई विद्यालय देखे। इनकी पाठशाला में ४॥ से ७॥ वर्ष तक की अवस्था के ३०० बालक, बालिकाएँ शिक्षा पाती हैं। बारह सुशिक्षिता अध्यापिकाएँ हैं। सब बच्चे एक प्रकार के कपड़े पहनते हैं। लड़के, लड़कियों को पहिचान करना कठिन है। इसी अभिप्राय से ऐसा पहनावा रखा गया है। हर बच्चे के पास एक रूमाल आँख के लिये और दूसरा नाक के लिये खूब साफ रहता है। सब बच्चों को नर्स नित्य देखकर रोगियों को छाँट लेती हैं। जिनको किसी साधारण दवा की आँख इत्यादि के लिये आवश्यकता होती है, दे देती हैं। सब बच्चे उछलते-कूदते पियानो बाजे की गत पर आकर बड़े हाल

में इकट्ठे हो जाते हैं और वहाँ सब मिलकर जातीय गीत गाते हैं और कसरतें करते हैं। बड़ी शांति के साथ सब कतार बाँधकर आते और जाते हैं। चित्रों तथा मूर्तियों इत्यादि द्वारा उन्हें खेलाते हुए शिक्षा दी जाती है। ये बच्चे सबेरे आठ बजे यहाँ आते, यहीं खाते विश्राम करते और सन्ध्या समय घर चले जाते हैं। यहाँ की शिक्षा समाप्त कर वे प्रारंभिक पाठशालाओं (प्राइमरी स्कूलों) में पढ़ने के लिये भरती हो जाते हैं। यहाँ की सफाई, मुस्तैदी तथा चेतनता इत्यादि देखकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। यह सब श्रीमती जकिया सुलेमान के नेतृत्व का फल दीख पड़ा। हाते भर में कहीं रद्दी कागज का टुकड़ा इत्यादि नहीं पाया जाता, न कोई यों फेंकता है। यदि कहीं दीख पड़ा तो वह तुरंत हटा दिया जाता है।

इन्होंने यहाँ के शिक्षा-विभाग के इंसपेक्टर महोदय द्वारा अन्य पाठशालाओं के देखने का कृपाकर प्रबंध कर दिया था। उनके साथ हम लोगों ने "सानिया ट्रेनिंग कालेज" तथा उसके साथ संलग्न प्रारंभिक पाठशाला भी देखी। यहाँ तीन सौ बच्चे पढ़ते हैं। बड़ी उम्रवाली कन्याएँ प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर यहाँ तीन वर्ष तक साधारण ऊँचे दर्जे की शिक्षा पाती हैं। उसके बाद जिनकी इच्छा होती है वे ऊँचे विद्यालयों में पढ़ने लगती हैं और जो इतना ही पढ़ने के बाद अध्यापिका होना चाहती हैं उन्हें और दो वर्ष तक अध्यापन का कार्य सिखा दिया जाता है। इनके अध्यापन के प्रयोग तथा अभ्यास के लिये एक पाठशाला साथ में और भी है।

लड़कों का हाई स्कूल "सैदिया स्कूल" भी हम लोगों ने देखा। इसमें साढ़े आठ सौ विद्यार्थी पढ़ते हैं। चार महीने की छुट्टियों के बाद अभी स्कूल खुला है। इसमें बारह सौ तक संख्या हो जाती है।

दो सौ के करीब बोर्डर भी रहते हैं। इसका हाता तथा भवन बहुत बड़ा है। दोपहर के समय भोजन के लिए छुट्टी होती है और यहीं सब साथ भोजन करते हैं। मिस्री प्रधान अध्यापक के अधीन अँगरेज मास्टर हैं जो दूसरे अध्यापकों की तरह तुर्की टोपा पहनते और काम करते हैं। वक्फ संपत्ति की आय द्वारा संचालित हाई स्कूल भी हम लोगों ने देखा जिसमें पाँच वर्ष की पढ़ाई और साढ़े पाँच सौ लड़के हैं। इसमें लड़कों को तीन सौ रुपए के करीब सालाना फीस देनी होती है। उसी में पढ़ाई, दोपहर का भोजन तथा पुस्तकें, कापियाँ इत्यादि दी जाती हैं। सौ में करीब पचहत्तर गरीब बालकों को वक्फ संपत्ति निधि से सहायता दी जाती है। सब स्कूलों में पढ़ाई अरबी भाषा द्वारा होती है। सब लड़के और अध्यापकगण तुर्की टोपी पहनते हैं। इसमें दो अँगरेज मास्टर अँगरेजी भाषा पढ़ाने के लिये हैं। वे भी वैसी ही तुर्की टोपी पहनते और यहाँवालों के अधीन रहकर काम करते हैं। इनका वेतन चार साढ़े चार सौ रुपया मासिक है। इन स्कूलों में जून से सितंबर तक चार महीने लगातार लंबी छुट्टी रहती है। इन सब स्कूलों में संचालकों तथा अन्य प्रतिष्ठित मुहम्मदी धर्माव-लंबियों से मसजिद के सामने बाजावाले प्रश्न पर सम्मति ली गई। सभों ने बताया कि ऐसी कोई बात इस धर्म में नहीं है जिसके लिये अनोखी बातें उठाकर भारतवर्ष में दंगा-फसाद किया जाता है।

मिस्री संग्रहालय

यहाँ का संग्रहालय अद्भुत है। इसका तीस लाख रुपए की लागत का सुंदर विशाल तिमंजिला भवन एक अच्छे बगीचे में है जिसमें इस प्राचीन देश की वस्तुएँ संगृहीत तथा प्रदर्शित हैं। बहुत

प्राचीन सभ्यता के तीन ही देश संसार में गिने जाते हैं—भारतवर्ष, चीन और मिस्र। ऐतिहासिक दृष्टि से यह कहना कठिन है कि इन तीनों में सबसे प्राचीन कौन है। मिस्र देश की समाधियों, कब्रों तथा उनमें मिली हुई सामग्रियों से आधुनिक पश्चिम देश के लोग मिस्र देश की सभ्यता को छः साढ़े छः हजार वर्ष पुरानी तो अवश्य ही मानने लग गए हैं। भारतवर्ष में तो सदा से ही शव जलाने की प्रथा रही है, इस कारण न तो यहाँ कब्रें हैं न मिस्र की सी सामग्रियाँ हैं। बौद्धकाल की मूर्तियाँ तथा स्तूप इत्यादि पुराने समय के मिलते हैं। आक्रमण करनेवालों ने हमारे यहाँ के प्राचीन धर्म और साहित्य के ग्रंथों तथा अनेक मंदिरों इत्यादि का संहार करने में कोई बात उठा नहीं रखी। सौभाग्यवश भारतवर्ष के आचार्यों ने ग्रंथों को, जिनमें पवित्र विद्या के भांडार वेद हैं, कंठाग्र करने की प्रथा चलाई थी जिसके द्वारा ये बच बचा गए। इनके द्वारा विद्वानों ने भारत की सभ्यता को प्राचीनतम अवश्य बताया है। अस्तु, ये बातें तो इतिहास तथा पुरातत्त्ववेत्ताओं के लिये हैं।

खोज द्वारा मिस्र देश का जो पुराना सामान पहले प्राप्त हुआ था उसके अतिरिक्त सन् १९२२ ईसवी में तुताखानम की, जिसे अँगरेजी पुस्तकों में तुताँख आमेन लिखा है, कब्र मिली। इसमें सोने की तथा अन्य बहुमूल्य धातुओं, रत्नों इत्यादि की अनेक सामग्री मिली। इसके द्वारा इस देश के प्राचीन समय की जानकारी और प्रसिद्धि बढ़ गई। यह सामग्री भी संग्रहालय में है। यह कब्र लुक्सर में है। यहाँ से उत्तर तेरह-चौदह घंटे, रेल के रास्ते से चलकर वहाँ लोग जाते हैं। वहाँ और भी अनेक कब्रें हैं। सुनने में आया कि वहाँ की मिली सामग्री वहीं के संग्रहालय में इकट्ठी करके रखी जायगी और काहिरा से फिर वहीं भेज दी जायगी।

लुक्सर का संग्रहालय तथा वहाँ की प्राचीन कब्रें देखने योग्य हैं। परंतु हम लोगों के स्वदेश लौटने का जहाज ठीक हो चुका था, उसका भाड़ा पहले ही से जमा कर दिया गया था, इसलिये हम लोग वहाँ न जा सके। काहिरा के संग्रहालय में ही प्राचीन काल के सामान देखकर चकित हो गए। सबसे नीचे तथा बीच-वाले भागों में स्फिंक्स, वृषभ, मनुष्य इत्यादि की पत्थर की विशाल मूर्त्तियाँ और पत्थर के ही बहुत बड़े बड़े बक्स हैं जिनमें मुर्दों के शरीर अन्य बक्सों में रखकर गाड़ दिए जाते थे। इन बक्सों में कुछ तो आठ-दस अंगुल मोटे चिकने चमकते अलाबास्टर पत्थर के हैं जो एक पत्थर में खोदकर बनाए गए हैं और उनका ढकना अलग उसी पत्थर का वैसा ही मोटा उनके ऊपर रखा हुआ है। ऊपरवाली मंजिल में मुर्दों की मसाला लगी ठठरियाँ और उनके रखने के लकड़ी, सोने तथा अन्य वस्तुओं के बक्स चित्रकारी सहित बने हुए हैं। एक बक्स दूसरे बड़े बक्स में रखा है और दूसरा बक्स उससे भी बड़े बक्स में रखा है जिससे साफ जान पड़ता है कि बक्सों के अन्दर बक्सों में मुर्दे सुरक्षित करके रख दिए जाते थे।

सोने के पत्तरों के बने हुए पलँग, चौकियाँ, तामजान, कुर्सी, गाड़ी तथा गाड़ी के पहिए, बैलों के कंधे पर रखने के जुए इत्यादि अनेक सामान हैं। सोने, चाँदी, जवाहिरों के जड़ाऊ मर्दाने और जनाने गहने, उनके रखने के बक्स तथा अलमारियाँ, सोने के जूते, सुराहियाँ, अलाबास्टर पत्थर की सुराहियाँ, गमले इत्यादि अनेक बड़े बड़े कमरों में प्रदर्शित हैं जिनकी कारीगरी और चित्रण-कला इस समय के बड़े बड़े निपुण कला-कोविदों को चकित करती हैं। लकड़ी, हाथी-दाँत, अलाबास्टर पत्थर इत्यादि के अन्य बहुत सामान हैं। उस समय की तलवारें, तीर, धनुष, बरछे इत्यादि अनेक हथियार हैं।

गहनों इत्यादि पर मीने का काम भी बना हुआ है, सोने की सिकड़ियाँ, कान में पहनने के भारी भारी गहने, अँगुलियों में पहनने की सादी तथा जड़ाऊ अँगूठियाँ और अंगुश्ताने इत्यादि कई कमरों में काँच के बक्सों में सजे प्रदर्शित हैं। भिन्न भिन्न राजाओं की मोहरें, पत्थरों की मूर्त्तियाँ तथा धातु पर खुदी हुई और उनके समय के अनेक प्रकार के, धातुओं के, भिन्न भिन्न सिक्के भी बहुत हैं। हेरोग्लिफिक (चित्रों द्वारा लेखन) के लेख एक प्रकार के भोजपत्र सरीखे लंबे-चौड़े पत्रों पर बहुत प्राचीन काल के हैं जो काँच के बक्सों में प्रदर्शित हैं।

देखने योग्य अन्य स्थान

काहिरा में तथा मिस्र के अन्य स्थानों में महीनों तक देखने योग्य अनेक दृश्य-स्थान तथा संस्थाएँ हैं। हम लोग समयाभाव से उन्हें देखने का उद्योग भी नहीं कर सके। स्वयं काहिरा में अरबी संग्रहालय और मिस्री पुस्तकालय है। इस पुस्तकालय में एक लाख तेरह हजार लिखी और छपी पुस्तकें हैं, जिनमें इक्यावन हजार अरबी और अन्य पूर्वी भाषाओं की हैं और बासठ हजार यूरोपीय भाषाओं की। सबसे पुरानी हाथ की लिखी पोथी सन् ८७८ ईसवी की है। बहुत प्राचीन पुस्तक-भांडार को तो सिकंदरिया में खलीफा साहब ने भस्मीभूत करा ही दिया था। इस पुस्तकालय में हजार बारह सौ वर्ष की लिखी हुई कुरान की अनेक सुंदर प्रतियाँ हैं और चार हजार के करीब मिस्र के मुसलमान बादशाहों के समय के सिक्कों का संग्रह है। नील नदी के किनारे तथा इसकी दोआबवाली भूमि में, जो इस नदी की शाखाएँ हो जाने से टापू के रूप में बन गई है, बहुत अच्छे अच्छे भवन, वाटिकाएँ तथा सुंदर स्थान हैं। इसके अतिरिक्त और भी कई सुंदर उद्यान इत्यादि हैं। छाया-

दार वृक्षों के मनोहर लखराँव वाली कई ठंढी सड़कें नदी के किनारे हैं। काहिरा के बाहर नजदीक तथा दूर भी अनेक स्थान हैं जिन्हें देखने और नदी में विहार करने के लिये यात्री लोग नावों और स्टीमरों में महीनों यात्रा करते हैं। यह यात्रा स्वास्थ्य के लिये भी लाभदायक बताई गई है। लुक्सर तो प्राचीन राजाओं की समाधियों के लिये बहुत ही प्रसिद्ध है। आस्वान तथा अन्य स्थान भी बहुत प्रसिद्ध हैं। इन स्थानों को देखने के लिये लोग रेलगाड़ियों पर भी जाते हैं।

पोर्ट सईद

१५ अक्तूबर को ११ बजे दिन की गाड़ी से हम लोग पोर्ट सईद (सय्यद) के लिये चले। हम लोगों का जहाज १७ को भारतवर्ष के लिये वहाँ से जानेवाला था, इस कारण एक दिन और भी पहले
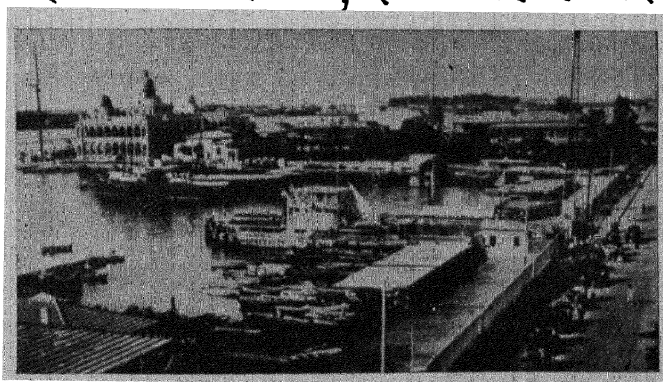
पोर्ट सय्यद

पहुँच जाना निश्चित किया गया। रास्ते में गाँव और कुछ दूर तक नदी की तरी के सहारे की गई खेती इत्यादि देख पड़ी। किंतु आगे चलकर अरबी मरुभूमि से हम लोगों की गाड़ी चली। दोनों ओर कहीं पेड़, पत्ते, घास, फूस का नाम नहीं था। मनुष्य की तो

कोई बात ही नहीं, सिवा बालू के कुछ देख ही नहीं पड़ता था। बालू उड़कर गाड़ी में भर जाता था और शरीर भी बालू बालू हो जाता था। एक भारतीय सिंधी सज्जन गाड़ी में ही मिले। वे अफरीका के अन्य देशों में तथा दक्षिणी यूरोप में व्यवसाय करते हैं और घर जा रहे थे। रास्ते में इस्माइलिया स्टेशन का बड़ा नगर मिला। वहाँ फल (अंजीर), मूँगफली और खाने की दूसरी चीजें मिलीं। आगे चलकर नहर मिली और बालू से पीछा छूटा। कंतारा नाम का एक स्टेशन मिला, जहाँ से रेलगाड़ी फिलिस्तीन इत्यादि की ओर जाती है। दो ढाई बजे से बाएँ हाथ की ओर समुद्र का विस्तृत जल और दाहिने नील नद की नहर पड़ी जिसमें बड़ी नावें और स्टीमर चलते थे। समुद्र और नहर के बीच गाड़ी दौड़ती चली और हवा भी कुछ ठंढी मिली। तीन बजे के बाद पोर्ट सईद स्टेशन पर पहुँचे। वहाँ गाड़ी ठहरते ही होटलों के दलालों ने झमेला मचाया। किसी तरह शहर में पहुँचे। टामस कुक के यहाँ से डाक ली। उसमें

पोर्ट सय्यद का बाज़ार

एक पत्र द्वारा समाचार मिला कि मेरे भाई हीरालाल का, जो मुझसे तीन वर्ष छोटे थे, शरीरांत हो गया। इस समाचार ने हम

सब लोगों को शोक-समुद्र में डाल दिया। किसी तरह एक मँहगे होटल में सुरक्षित स्थान पाने के अभिप्राय से जा ठहरे। रात भर व्याकुलता से समय कटा। बराबर कई दिन तक इस वज्राघात से चित्त व्याकुल रहा। जी बहलाने के लिये बाजार में तथा समुद्र-

पोर्ट सय्यद, समुद्रतट

किनारे घूमने चले जाया करते थे। यहाँ भी कई भारतीय भाई (सिंधी) दूकानदार मिले जिनसे वार्तालाप हुआ। इन्होंने बहुत ही स्नेह प्रदर्शित किया। एक यूनानी की दूकान पर बहुत अच्छा दही मिला। गर्मी में दही का भोजन बहुत ही संतोषदायक था और सस्ता भी था। तीन छटाँक दही का पियाला एक पियास्टर (नौ पैसे) में मिलता था।

पोर्ट सईद से बंबई

समय का अनुमान करके जहाज का टिकट पहले से ले लिया गया था। "सिटी लाइन" कंपनी के "सिटी आव शिमला" जहाज में, जो ५ अक्तूबर को लिवरपूल से चलकर १७ अक्तूबर को पोर्ट सईद से बंबई को जानेवाला था, दोयम दर्जे का टिकट बत्तीस पौंड (चार सौ सत्ताईस रुपयों) का लिया गया था। मार्च,

अप्रेल और मई में भारतवर्ष से योरप की ओर जानेवालों की भीड़ होती है और जहाजों में स्थान नहीं मिलता। इसलिये कई महीने पहले से टिकट लेकर स्थान सुरक्षित कर लिया जाता है। उसी तरह सितंबर, अक्तूबर, और नवंबर में उधर से लौटनेवालों की भीड़ होती है, इसलियं उधर से आने के लिये भी कई महीने पहले से स्थान सुरक्षित कर लिया जाता है। बाकी बचे हुए महीनों में जहाजों में बहुत कम यात्री होते हैं। भाड़ा भी उन महीनों में बहुत कम हो जाता है। जहाजों की ऐसी अनेक कंपनियाँ हैं जिनके बड़े बड़े जहाज बराबर निश्चित तारीखों को आया जाया करते हैं। "पी ऐंड ओ" कम्पनी के जहाज भारतवर्ष और विलायत के बीच हर सप्ताह आते-जाते हैं। इन्हीं जहाजों में सरकारी डाक, सरकारी अफसर और बड़े बड़े धनी-मानी लोग आया-जाया करते हैं। इस कंपनी के जहाजों में भाड़ा अधिक और समय कम लगता है। "ओरियंट लाइन" के जहाज आस्ट्रेलिया से कोलंबो होते हुए विलायत जाते और उसी रास्ते आते हैं। उसी के "ओरामा' जहाज में हम लोग कोलंबो से गए थे। 'सिटी लाइन' के जहाज हैं। इसके जहाज भी प्राय: हर सप्ताह आते-जाते हैं। विलायत से बंबई होते कराची तक जाते और इसी रास्ते लौटते हैं। "मेरि टाइम मेसेजरी" लाइन और "लाइड ट्रेस्टीनो" लाइन के भी जहाज बहुत आते-जाते हैं। यात्रा के लियं जाने या आने का समय निश्चित करके यात्रावाली कंपनियों से लिखा-पढ़ी करने पर भाड़ा, तिथि, दर्जा और जहाज तै हो सकता है।

पोर्ट सईद में पूछने पर पहले तो यही मालूम हुआ कि हमारा जहाज १७ तारीख को सबेरे ६ बजे पहुँचेगा और तीन घंटे ठहर-

कर माल-मुसाफिर ले नौ-दस बजे चल देगा। फिर १६ तारीख को संध्या के समय मालूम हुआ कि १७ तारीख को दोपहर के १२ बजे जहाज आएगा और ४ बजे जायगा। इसलिये हम लोगों ने १६ तारीख की रात में कपड़े साफ कर डाले और १७ तारीख को सबेरे सब असबाब बाँधकर हम जहाज की प्रतीक्षा करने लगे। दोपहर को समाचार मिला कि जहाज आ गया। असबाब लेकर कस्टम हाउस होते घाट पर गए। यहाँ से जानेवालों से प्रति व्यक्ति पंद्रह पियास्टर (दो रुपया दो आना) कर लिया जाता है। वह देकर तथा अपने पंडा टामस कुक को पचीस पियास्टर (साढ़े तीन रुपए) प्रति व्यक्ति असबाब सहित जहाज पर पहुँचा देने का पुरस्कार देकर हम लोग २॥ बजे जहाज पर जा पहुँचे।

दूसरे दर्जे का दस नंबर का एक कमरा हम लोगों को मिला जिसमें तीनों साथियों के लिये तीन बिस्तरे लगे थे। मोटा गद्दा, साफ चादर, दो दो तकिये, दो दो कंबल और ओढ़ने की दो दो चादरें हर एक पर मौजूद थी। पानी की टोंटी कमरे में थी। हर एक के लिये दो दो तौलिया, साबुन, पानी पीने का अलग अलग गिलास, कपड़ा टाँगने की खूँटियाँ, अलमारी, बिजली का पंखा, रोशनी, नौकर बुलाने की घंटी बजाने का बटन इत्यादि सब ठीक था। इस जहाज में यों तो हर प्रकार का काम करनेवाले साहब लोग थे ही, किंतु भारतवासी भी बहुत थे। यह जहाज 'ओरामा' से बहुत छोटा था। साढ़े नौ सौ टन का ही था। इसमें औवल और दोयम दो ही दरजे थे। घूमने-फिरने, टहलने का भी स्थान छोटा था। यात्री भी तीन सौ के करीब थे। किंतु स्थान सब भरा था। अनिश्चित यात्री के लिये एक स्थान भी नहीं था। आते ही अपना असबाब कमरे में रखवाकर हम लोग जहाज खुलने की प्रतीक्षा करने लगे। माल का

उतार-पतार हुआ। मीठा पानी जहाज में भरा गया। पोर्ट सईद के व्यापारी दूकानदार अनेक प्रकार का सामान जहाज पर लाकर दूकान की तरह फैलाकर बेचते थे।

अन्त में पाँच बजे जहाज ने लंगर उठाया। धीरे धीरे पोर्ट सईद का किनारा हम लोगों से दूर भागने लगा। हम लोगों ने पाँच पाँच शिलिंग (साढ़े तीन रुपए) भाड़े पर एक एक डेक-चेयर (किरमिच की कुर्सी) यात्रा भर के वास्ते लेकर अपने अपने नाम का चिट उनमें बाँध दिया। निरामिष भोजन मिलने का प्रबन्ध किया गया। यात्रियों की संख्या अधिक होने के कारण एक बार में सब यात्री भोजनालय में नहीं बैठ सकते थे। इसलिये हम लोगों के दर्जे में भी दो पंगत होती थीं। हम लोगों की पारी दूसरी पंगत में रखी गई। नित्य पाँच बेर भोजन मिलने का प्रबंध था। सबेरे सात बजे चाय, दूध, बिस्कुट और सेब; नौ बजे जलपान में मक्खन, रोटी, दूध में पकी गेहूँ की दलिया, कई प्रकार का मुरब्बा, दूध और चीनी; फिर एक बजे भोजन जिसमें दाल, भात, तरकारी, मक्खन, रोटी, कई प्रकार के अचार, पनीर, पनीर के सेवड़े, कई प्रकार के बिस्कुट, फल, दूध की जमी बर्फ, दूध इत्यादि; फिर चार बजे चाय दूध, बिस्कुट इत्यादि और सात बजे संध्या समय ब्यालू जिसमें रसे-दार तरकारी, कई प्रकार की सिंकी हुई मोटी या टिकरी की तरह मठुली की सी कुरकुरी रोटियाँ या बिस्कुट, कच्ची तरकारी, टमाटो के कतरे, सलाद, बाँस, अदरक इत्यादि के मुरब्बे, अचार, चटनी, मक्खन, पनीर, खीर, दूध, सूखे मेवे (बादाम, अखरोट इत्यादि) मिलते थे। गर्म देश होने के कारण हम लोग सबेरे प्रायः फल खा लेते थे और तीसरे पहर कुछ न खाते थे। बाकी तीन बार भोजन किया करते थे। तरकारी मक्खन में बनाई जाती थी। नहाने इत्यादि का

प्रबंध संतोषजनक था। ऊपर लिखने-पढ़ने का एक कमरा था जिसमें बिजली की रोशनी और पंखे लगे थे। पचास-साठ पुस्तकें एक अलमारी में थीं। कई समाचार-पत्र भी थे। कलम, दावात सहित लिखने का टेबूल लगा था। उसी के बगल में दूसरा कमरा चुरुट पीनेवालों के लिये अलग था। बिना तार के समाचार भेजने और पाने का भी प्रबंध था। भूमंडल की मुख्य मुख्य खबरें बेतार द्वारा प्राप्त कर टाइप करके नित्य बड़े कमरे में टाँग दी जाती थीं। जहाज चलने की दूरी पर बाजी लगाकर साहब लोग जूआ खेलते थे।
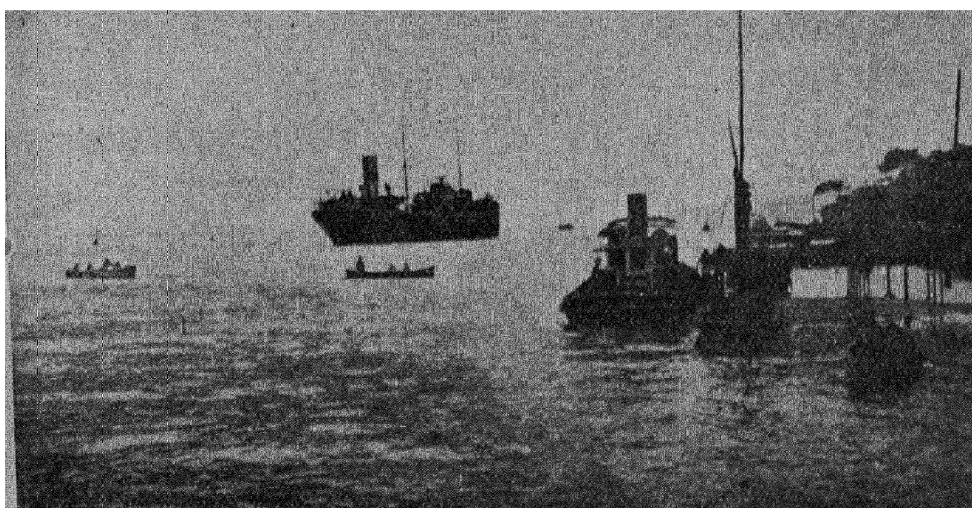
पोर्ट टेरोफिक्स—स्वेज नहर का अंत

जहाज पर थिएटर, और सिनेमा तो नहीं होता था, किंतु मेम और साहब लोग दिन में टेनिस, कसरत, तथा अन्य खेल खेला करते

थे और रात को भोजन के बाद बाल डांस (नाच) इत्यादि ग्यारह बारह बजे तक करते थे। कई प्रकार के दूसरे आमोद-प्रमोद भी थे। १७ तारीख को रात भर धीरे धीरे स्वेज नहर में जहाज चलता रहा।

जहाज सबेरे स्वेज पहुँचा और एक घंटा ठहरकर वहाँ से चल पड़ा। इसकी गति तेरह मील प्रति घंटे के हिसाब से थी। दोपहर के समय गत चौबीस घंटों में जितनी दूर जहाज चल चुका रहता था उसकी संख्या, अक्षांश तथा देशांतर रेखाओं की गिनती सहित, नकशे के पास कागज पर लिखकर लगा दी जाती थी। उसी नकशे पर उस समय तक जहाँ जहाज पहुँचा होता था उस स्थान पर लाल पताकावाली आलपीन खोंसकर लगा दी जाती थी।

१८ अक्तूबर को सबेरे ही प्रसिद्ध लालसागर में जहाज चला और तारीख २२ को सबेरे लालसागर से बाहर हुआ। इन चार दिनों में बहुत गर्मी का सामना करना पड़ा। हम लोग और कई अन्य यात्री कमरे छोड़ छोड़ छत पर बिछौना बिछवाकर सोते रहे। यात्रियों में कई पादरी भारतवर्ष जा रहे थे। ये नाच में भाग नहीं लेते थे। बातचीत होने पर इन्होंने इसके विरुद्ध मत प्रकट किया और इसे सिद्धांत-विरुद्ध बताया। रविवार के दिन यथासंभव लोगों को एकत्र कर ये लोग सामूहिक रूप से ईश-वंदना और भजन करते-कराते थे और उतनी देर के लिये आमोद-प्रमोद से उन लोगों का चित्त हटाकर इस ओर लगाने का उद्योग करते थे।

२२ अक्तूबर को दोपहर के समय दूर से ही अदन नगर दिखाई दिया। सैकड़ों खपरैल के मकान और कुछ पक्के मकान दिखाई देते थे। दूरदर्शक यंत्र (दूरबीन) के सहारे प्रायः सभी यात्री रास्ते के दृश्य देखा करते थे। विशेष रूप में जब कहीं कोई टापू या पहाड़

निकट होता था तो उसे बड़ी उत्सुकता से देखते थे। कई दिन बदली उठी, कुछ वर्षा भी हुई, किंतु जहाज बराबर बेखटके चलता रहा। गर्मी
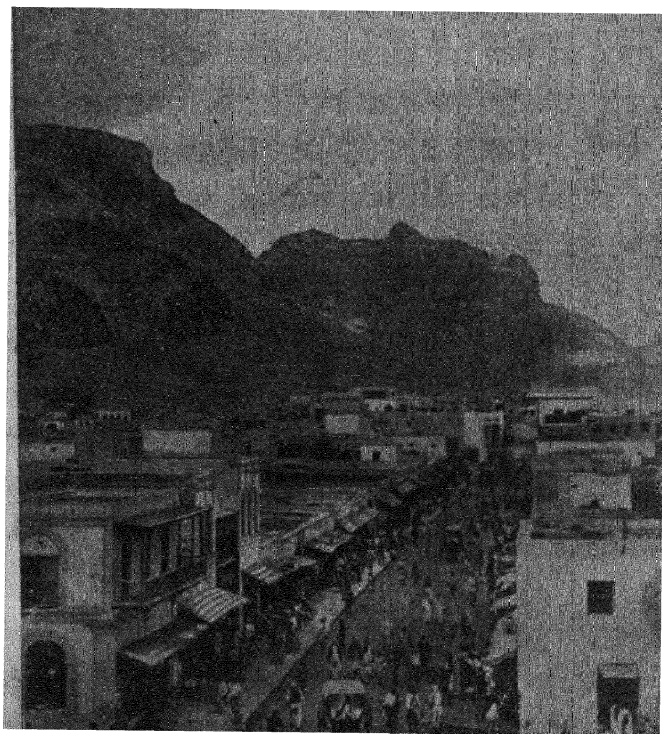
अदन का दृश्य

के कारण साहब लोग भी कमीज पतलून पहने घूमते थे। दिन में कसरतें और रात में प्राय: आधी रात तक उनका नाच हुआ करता था।

लाल सागर से बाहर होते ही हवा बदली और कुछ ठंढक मालूम होने लगी। उमस और गर्मी से छुटकारा मिला। रास्ते भर समुद्र के जल से प्राय: नित्य दोनों समय स्नान होता था। उसके बाद शुद्धोदक स्नान भी हुआ करता था। श्वेतांगों के नित्य नए खेल हुआ

करते थे। एक दिन पहले और दूसरे दर्जे के यात्रियों में रस्सा खिंचाई हुई जिसमें पहले दर्जेवाले ही जीते। टेनिस और बैडमिंटन प्राय: नित्य हुआ करते थे। एक दिन एक पटरे पर बिना पूँछ के गदहे का चित्र बनाया गया और प्रत्येक यात्री आँख में पट्टी बाँधकर एक सफेद फीता उसकी पूँछ की जगह पर लगाने का उद्योग करता था, किंतु सिवा एक के सभी असफल हुए। लड़कों की दौड़ और अनेक प्रकार के व्यायाम होते थे। उन्हें पारितोषिक देने के लिये हम लोगों ने भी चंदा दिया। छोटे छोटे लड़के लड़कियों को अनेक प्रकार के खिलौने इत्यादि बाँटे गए।
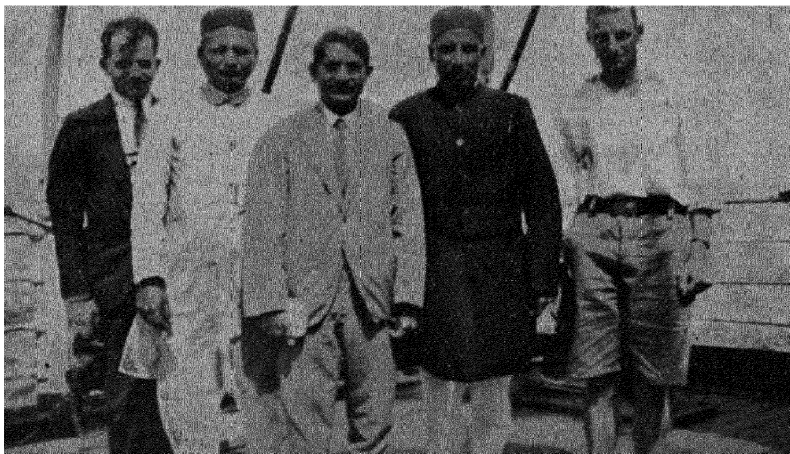
सिटि आव शिमला जहाज पर मित्रगण

इस यात्रा में भी हम लोगों से कई श्वेतांग यात्रियों से विशेष प्रेम और परिचय हो गया। परस्पर पता-ठिकाना लिख लिया गया और फोटो भी लिया गया।

ज्यों ज्यों जहाज पूरब की ओर बढ़ता जाता था, घड़ी भी नित्य बढ़ा दी जाती थी। २७ अक्तूबर को दोपहर के समय बताया

जहाज पर साथियों के साथ

गया कि बंबई १३० मील रह गया है। सभी यात्री शीघ्र बंबई पहुँचने के लिये उत्सुक थे। जहाज सोमवार को सबेरे बंबई किनारे लगनेवाला था इसलिए इसकी चाल कुछ धीमी कर दी गई थी। संध्या समय दूर से ही बंबई की बिजली के प्रकाश का प्रतिबिंब आकाश पर दिखाई देने लगा और प्रकाश-स्तंभ भी दूर से जगमगाने लगा। सभी यात्री इस दृश्य को देखने के लिये उपयुक्त स्थान पर आ गए और बड़े उत्साह से देखने और दिखाने लगे। आधी रात के करीब बंबई के किनारे से थोड़ी दूर पर ही जहाज ने लंगर डाल दिया। यात्रियों ने अपना असबाब इत्यादि बाँधकर दिन में ही ठीक कर लिया था। रात को निद्रा बहुत कम आई। तीन बजे ही उठकर, स्नानादि से निश्चित हो, कपड़े पहन, जलपान कर ऊपर जा खड़े हुए।

जहाज ६ बजे किनारे लगा। दूरदर्शक यंत्र द्वारा सब यात्री अपने अपने मित्रों को देखने लगे। काशी से आए हुए श्री रामनारायण दूबे और श्रीशचन्द्र को हम लोगों ने दूर से देखा। परस्पर हर्ष प्राप्त हुआ। जहाज से उतरते ही उनके गले लगे।
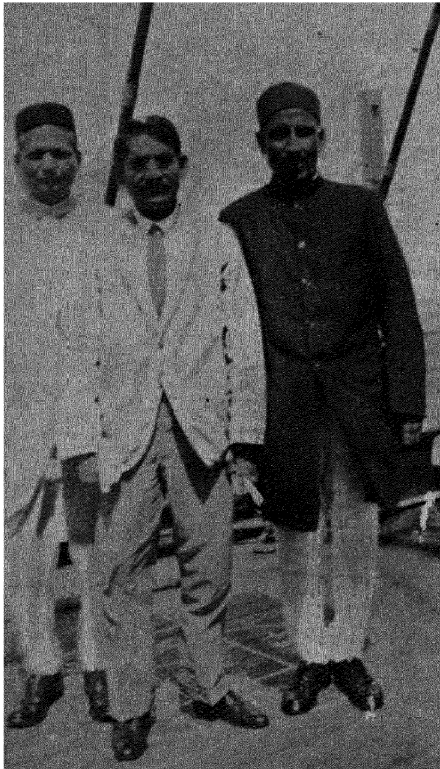
जहाज छोड़ रहे हैं

दो दिन पहले ही से चुंगी का छपा नकशा भरकर दे दिया गया था। जहाज से सामान उतारकर चुंगीघर में उसकी जाँच हुई। प्रति बक्स एक रुपया उतराई और गोदाम का और नई वस्तुओं पर महसूल दिया गया।

बंबई

२८ अक्तूबर को सबेरे काशी से आए हुए मित्रों के साथ हम लोग माधवबाग के पास गुरमुखराय सुखानंद की धर्मशाला में ठहरे। टामस कुक के कार्य्यालय में जाकर डाक ली और रुपए-पैसे का भुगतान किया। यहाँ गर्मी बहुत थी। कई मित्रों से भेंट हुई। लड़कों के लिये कुछ खिलौने इत्यादि खरीदे गए। दूसरे दिन सबेरे बावलनाथ के मंदिर और उसके पास की ऊँची पहाड़ी से समुद्र का दृश्य देखा। वहाँ

े नगर के पहाड़ी भाग, मालाबार, में गए। उसका हैंगिंग गार्डन (लटका हुआ बगीचा) देखा। इसके नीचे जल-कल के तालाब हैं और ऊपर बहुत सुंदर बगीचा लगा है। यहाँ के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ नेता और म्युनिसिपैलिटी के भूतपूर्व ज़बर्दस्त सभापति सर फीरोजशाह मेहता के स्मारकस्वरूप यह बना है। वहाँ से लौट, रास्ते में कई स्थान देखते, स्टेशन के पास स्वदेशी भंडार में तथा अन्यत्र कुछ सामान खरीदा। असबाब ठीक किया और धर्मशाला के पास ही भोजनालय में भोजन-कर कलकत्ता जानेवाली डाकगाड़ी में २६ अक्तूबर को संध्या समय सवार हुए। बंबई नगर की दीपावली की सजावट और बिजली की जगमगाहट रास्ते में देखते स्टेशन आए थे। तीसरे दर्जे की गाड़ी में पर्याप्त स्थान मिल गया। साढ़े नौ बजे रात को गाड़ी चल पड़ी। मित्रों से बिदाई ली। उन्हें वहाँ की सहायता के लिये धन्यवाद दे काशी की ओर चले।

३० तारीख को आधी रात के बाद गाड़ी मोगलसराय पहुँची। उस समय अनेक कुटुंबियों और मित्रों ने मोगलसराय में ही दर्शन दिया। हम लोग उसी रात सकुशल अपने घर पहुँचे। इस तरह छः महीने की यात्रा सकुशल समाप्त हुई।